# "वर्षे अर्ने शाप्ति।" रविषे रविषे वर्षे भप्ति, अन्य अस आश्रुन।"



स्था किन स्मनाध (DMC 2-69)

# याबामिक मुठीशव।

# '(कार्डिक रहेटक हिंख भर्याखं)

व्यक्तिम् ।	ন্ধচৰিতা।	<b>761.</b> 1
च्याबर्क्स्यार्क	श्री প্রভাত কুমার মুখোপাখ্যার	***
क्रांग्शायुवा	और्यमास्यर्	<b>P</b> \$4
সাগরতলার গ্রীপশ্মী	जीनरत्रक्षिणात्र वर्षा	7*50
আমার লাগিয়া (কবিতা)	अञ्चलसारमारम मामलख	>-\$>
উদয়াদিতা (কবিতা)	शिविजरीत मञ्चलका	
উত্তান্ত প্রেমিক	जीभन्ररक्यांत त्मनश्र	
উত্তরায়ণে গল্পান	श्रीमिक्शित्रश्याती (पर्वी	>*42
উचित्र सूक्रमिन	श्रीगीरममहत्त्व स्थान	2
ঔপভাগিক বিবাহ	औसर्यात त्यायात	111
किविद उद्य-पश्चाक	शित्रदमन्द्रस्य क्षेत्रः शित्रदमन्द्रस्य क्षेत्रश्चे	
क्रमता (तोकशावा)		704
स्थानित करवात्र स्थानित ।	शिवाशाकाक कर	
JUNE 18 TO A STREET	. शिक्नीक्याच यात्र	
	THE PROPERTY OF THE PARTY.	
का वामाना मान	ACONTRAIN ACOUNTS	
THE RESIDENCE OF THE PARTY.	AND THE COLUMN C	

# [ > ]

বিষয় ,	রচ্মিতা 🕽	शृष्ठी ।
काशानी वीव	भी अर्वक्षात्री (मवी	926
देशनधर्य		463
জীবন সঙ্গীত	औरमदबसनार्थ (अन	\$85
ডুমুনী ও তাহার পতিপুত্র	शिनी तमष्ठक (मन	१८४
ভীৰ্থাত্ৰা	जीनजीनहस्र मूर्यापाधार	406
' थिर्योदा नहती	🗐 त्रामहक्त वैस्	>•२२
भक्रों	छीठाऋठऋ वत्मााभाषाष	3778
नात्राव्यी	बिकीर्त्राम श्रमाम विश्वाविष	लांग १५,
• •	۶۰۹, ۵۵۰, ۵۰ <u>۰</u> ۵, ۵۵	36, . seb
नियंत्र	প্রীললিত মোহন মিত্র	929
(भो ७ वर्षन	•••	969
भन्नी कननी	শ্রীরমণীমোহন ঘোষ	<b>bb</b> 8
প্রাচীন ভারতের বাণিজ	শ্রীসতীশচন্ত্র মিত্র	>>•¢
প্রাভিমোক	শ্রীসতীশচন্দ্র বিস্থাভূষণ	8444
বন্ধাতা (কবিতা)…	গ্রীরমণীমোহন ঘোষ	. >>७१
<b>Cबरा</b> পृथिवीत्र পতि	🕮 विश्रूरमथत्र माजी	924
বেদে পৃথিবীয় গতি	পর্যাবেক্ষক, কণ্ণিলাশ্রম	7.59
बाजना श्खरकत्र विवत्र	जीमीरन न हक्क रमन	aea, >•98
विभटनत्र श्राज	औरमदिखनाथ (मन	24
यदेन ज जनरङ्ग	अविषयुष्ठा मञ्चमायु	- >>৩২
ৰসম্ভ (কবিতা)	ः वीविषय्यातः मञ्जूषमात्र	_ >>>
जांबरजब नांग्रेजना जैब्र	না-পদ্ধতি খ্রীজ্যোতিরিজনাথ ঠাকু	, હંવલ
ৰাহিতার প্ৰতি (কবিতা)	) . গ্রীগঙ্গাচরণ দাসগুপ্ত	>>>E
ভাষার গঠন ও উন্নতি	<b>क्री</b> हां क्रिक्ट वर्त्याभाषात्र	568

# 

বিষয়।		3	চ্যিত।	शृष्ठी।
ভোরের স্বপ্ন			শ্রিছপেন্দ্রনাথ দাস	6866
মাতৃহীনের প্রার্থ	নি	•••	শ্রীগঙ্গাচরণ দাসগুপ্ত	9>>
মোদ্লেম জগতে	বিজ্ঞানচর্চা	•••	শ্ৰীইমদাত্ল হক্ ৯৪৩,	, >•s <b>~</b>
রত্নাবুলী	• • • •	•••	°শ্ৰীসতীশচন্দ্ৰ বিত্যাভূষণ	9•2
রোমান ইতিইার	সর একপৃষ্ঠা	•••		<b>bb</b> 6
শ্রীমন্তগবদগীতা	•		শ্রীসত্যেন্দ্রনাথ ঠাকুর	७२३
শীতের পদ্মী		• • •	শীদীনেক্রমার রায়	864
শহর দর্শন ও সা	ধনতত্ত্	•••	শীসীতানাথ তত্ত্ত্যণ	> 9 9 9
•			শ্রীপ্রভাতকুমার মুখোপাধ্যায়	<b>484</b>
দেনাপতি কালী	•••	• • •	শ্ৰীসতীশচন্ত্ৰ মিত্ৰ	404
<b>मक्झ</b>	•	•	শ্রীগঙ্গাচুরণ দাসগুপ্ত	<b>とわも</b>
হরিহর বাইতি	• • •		वीमीत्महक (मन	><>>
ক্ষকার	• • •	• • •	শ্ৰীসভীশচন্ত্ৰ বিষ্ণাভূষণ	<b>७६</b> ६

## তৃতীয় অধ্যায়

অর্জন তথন জিজ্ঞা করিলেন, যদি কর্মযোগ অপেকা জ্ঞান-যোগ শ্রেষ্ঠ, তবে আমার্কি কেন এই যোর কর্মে নিয়োজিত করিতেছেন ?

শীকৃষ্ণ কহিলেন, লোকে কর্ম না করিয়া কথনই নিশ্চেষ্ট হইয়া থাকিতে পারে না—স্ব স্ব প্রকৃতির গুণে বাধ্য হইয়া কর্ম করিতেই হইবে। শরীর-যাত্রা নির্বাহের জন্য কর্ম আবশ্যক। যজ্ঞার্থে কর্ম প্রয়োজন। সেই হজ্ঞকর্ম সকল স্বার্থসাধন জন্ম নয়, কিন্তু দেবতাদের প্রীত্যর্থ অনুষ্ঠিত হইলে তাহাতে শ্রেরোলাভ হয়। তন্তির লোকশিকার জন্য কর্ম করা উচিত, স্বরং স্থার কর্মোদ্যমে নিযুক্ত। কিন্তু যে ব্যক্তি আহা-তৃপ্ত, আপনাতে আপনি সম্বন্ধ, তাহার কোন কার্য্য নাই। যতদিন সেই নৈদ্ধর্মের অবহা না হইবে, ততদিন নিদ্ধামভাবে কর্ম করিতে হইবে। ইন্দ্রিয় ব্যক্তি করিতেছে, আমি কর্ত্ত। নহি, স্বার্থাভিমান পরিত্যাগ করিয়া এইরূপ নির্বিপ্রভাবে কার্য্য করিবে। স্বর্ধ্মানুক্রপ কর্ম করিবে। পরধর্ম যেমনই হউক না কেন, ভ্রাহ্মধেক্ক ক্ষমধর্ম শ্রেষ্ঠ হইতে পারে—তুথাপি ক্ষত্রিরের কর্ম্ম যে ধর্মযুদ্ধ করা, ভূমি তাহাতে ব্রতী হও।

"वधार्य निधन खात्र, शत्रधर्य खत्रा क्या कि ।"

কামনাই লোকের শাস্তজান, আত্মজ্ঞান অভিভূত করে, অতএব এই মহারিপু সংহার করিয়া কর্ত্তব্যুক্ষ সাধন করু।

#### কর্ম-যোগ।

#### অর্জ্জন।

কর্ম হতে বৃদ্ধি বৃদ্ধ, বল যদি তুমি, জনার্দ্ধন, তবে কি অঘোর কৃত্যে মজাইলে আমারে এখন। ১ ছার্থবাক্য বলি কেন কর মোর বৃদ্ধি কল্মিত,' এক পথ ৰলে দেও, শ্রেম যহি লভিব নিশ্চিত। ২

# শ্রীমন্তগরদগীতা।

## তৃতীয় অধ্যায়

অর্জুন তথন জিজ্ঞসা করিলেন, যদি কর্মযোগ অপেক। জ্ঞান-যোগ শ্রেষ্ঠ, তবে আমার্কে কেন এই ঘোর কর্মে নিয়োজিত করিতেছেন ?

শীক্ষ কহিলেন, লোকে কর্ম না করিয়া কথনই নিশ্চেষ্ট হইয়া থাকিতে পারে না—ৰ ৰ প্রকৃতির গুণে বাধ্য হইয়া কর্ম করিতেই হইবে। শরীর-যাত্রা নির্বাহের জন্ম কর্ম আবেশ্যক। যজ্ঞার্থে কর্ম প্রয়োজন। সেই সজ্ঞকর্ম সকল স্বার্থসাধন জন্ম নয়, কিন্তু দেবতাদের প্রীত্যর্থ অনুষ্ঠিত হইলে তাহাতে শ্রেয়োলাভ হয়। তদ্তির লোকশিক্ষার জন্যপ্র কর্ম করা উচিত, বয়ং স্বর কর্মোদ্যমে নিযুক্ত। কিন্তু বে ব্যক্তি আয়-তৃপ্ত, আপনাতে আপনি সম্ভষ্ট, তাহার কোন কার্য্য নাই। যতদিন সেই নেন্ধর্ম্যের অবস্থা না হইবে, ততদিন নিক্ষামভাবে কর্ম করিতে হইবে। ইন্দ্রিম ইন্দ্রিয়ের কার্য্য করিতেছে, আমি কর্ত্তা নহি, স্বার্থাভিমান পরিত্যাগ করিয়া এইরূপ নির্লিপ্রভাবে কার্য্য করিবে। স্বর্ধ্যা করিবে। স্বর্ধ্য যেমনই হউক না কেন, —রাহ্মণের ক্ষমাধর্ম শ্রেষ্ঠ হইতে পারে—তুথাপি ক্ষত্রিরের কর্ম যে ধর্মযুদ্ধ করা, তুমি তাহাতে ব্রতী হও।

"প্রধর্মে নিধন শ্রেয়, পরধর্ম জয়াবহ অতি।"

কামনাই লোকের শাস্তজ্ঞান, আত্মজ্ঞান অভিভূত করে, অতএব এই মহারিপু নংহার করিয়া কর্ত্তব্য কর্ম সাধন করু।

#### কর্ম-যোগ।

#### অৰ্জ্জুন।

কর্মাতহতে বৃদ্ধি বৃদ্ধ, বল যদি তুমি, জনার্দান, তবে কি অঘোর কৃত্যে মজাইলে আমারে এখন। ১ ঘার্থবাকা বলি কেন কর মোর বৃদ্ধি কল্বিত, এক পথ ৰলে দেও, শ্রের যহি লভিব নিশ্চিত। ২

#### विकृषः।

সাংখ্য-যোগ লোকের দিবিধ নিষ্ঠা হয়েছে কৰিড, , कर्य-(यात्र) क्रान्त्वात्त्र, कर्यत्यात्त्र, व्रव्ह नमाश्रिक। छानरगारा সেই निष्ठा गर्छ छानिगन, कर्य-(यात्र लप्ड यात्री भाक-भन्नाम्। ७ कर्य-अयूष्ठीन विना कह ना कथन " निवृद्धि-गिथदा, भार्थ, कदा आदाहण। আসক্তি তেয়াগি চিত্ত-ওদ্ধি না হইলে मन्नाम अहरा नििक क्ष्र नाहि मिला। কৰ্ম ছাড়ি কণকাল থাকা নাহি যার, স্বাভাবিক গুণে কুর্ম আপনি করার। कर्ष्मा जिन्न मः यमान कति मान मन ় বিষয়ে প্রমন্ত থাকা কপটা লক্ষণ। ৬ मानि इ जियुग्न क्रिया मःबद् আসক্তি ছাড়িয়া যেই রহে কর্মে রত, क्लाकाका मृश्च यात्र कत्रम छेताम, त्मरे रुत्र, धनक्षत्र, **श**ांगीत উख्य। १ इंख कर्ची, कर्चवान् जूना कान् अन, কৰ্ম বিনা দেহধাতা চলে কভকণ ১৮ यकार्थ माधिश कर्स जरत जीवशन, वक कार्या खम ভবে रक्तन-क्षेत्रण ; বৈ যে কর্ম আঁচরিবে, ইথে তুমি, পার্থ, निकाम चळार्थ कति वछ शूक्रवार्थ। >

বজ্ঞসহ প্রজাসৃষ্টি ক্রি কছে গ্রেজাপতি, প্রা, েকামধুক যজ্ঞ এই, বৃদ্ধি হোক্ ইজে ৰহন্তা।" >•

## . छा, कार्डिक, ১৩১० । श्रीमहन्नवमंत्री छ।।

"দেবতার মর যজে, তোমাদের শ্বস্তুণ দেবতা, . উভয়ে লভিবে শ্ৰেয় পরস্পর ধরিয়ে মমতা।" ১১ "বজ্ঞতৃপ্ত দেবগণ धन आंख जित्तुन नवादत्र, न। पिरा देनर्वका प्रत्व •ভুঞ্লে যেই চৌর বলি তারে।" ১২ যক্ত কৰ্ম অবশিষ্ট अन्न পাन- विद्याहन, পাপ ফল ভোগে নর - স্বার্থে করি উদর পূরণ। ১৩ ন্ন হতে জন্মে জীব, বৃষ্টি হতে ফ্লাক্সের সম্ভব, यक श्टा इत वृष्टि, কর্ম হতে যজের উদ্ভব। ১৪ কৰ্ম ব্ৰহ্মান্তৰ জেলো, ব্ৰহ্মাক্ষর হইতে উদিত, তেঁই সর্বগত ব্রহ্ম, यरक इन निजा প্রতিষ্ঠিত। ১৫ হেম প্ৰবৰ্ত্তিত চত্ৰশ ट्यांत्र ए नाहि अस्मदत, সেই পাপী বেচ্ছাচারী, वृथा दृथा अ जनम धरत। ०७ • আত্মায় যাহার প্রীতি, আত্মাতেই রীতি, -আত্মায় সম্ভষ্ট সদা যেই ভুজমতি, না চাহে অপন্ন কিছু পাৰ্থিব হো ধন, घूट यात्र गर जात्र कत्रम रकम्। >१

कृ ठाकू उठ छेमानीन विष्ठ स्वाधीन, আশ্রম না চাহে কারে:, ন।হি রাথে খণ; অনাসক্ত সাধ কাৰ্য্য ফুাই বলি, পাৰ্থ, निकाम कत्रम-बङी लए পुरुषार्थ। ১৮-১৯ জनकामि कद्राय लिखना मिकि-गम, লে।কস্থিতি কর্মোপরি—লোকে কর্মবল। २० छ। नीत्र वाहात प्रिथ हल भा व्यथत्त्र, সে যাহা প্রমাণ করে তাই অমুসরে ি ২১ 🕐 जिलाक कि एथ, পार्थ, कर्डवा यामात्र, ্ স্বয়ং **ঈশ্বর** কি আছে পাই নি যাহা, আছে কি পাবার গ कर्माभीता। जब यिन ज्याशीन कर्म नाशि कति, लाक यात्र अधः भाष्ठ (महे भव धित । १२-२० আমি না করিলে কর্ম সবে কর্ম ছাড়ে, कर्मालात्भ धर्मालाभ इष् এ मःभात्त, वत्रण मक्दतः इयं जहे ध्राकृल---कर्षां उ लेग छ यह वनर्थं त मृत। २८ कल कामनभू यथा लोकिक अर्छ।न यानक रहेगा करत कर्म बर्छान, . লোক-রক্ষা হেতু তথা বিদান যে জন वनामक स्टान कर्त्र कर्ड्या-शालन। २० नाना उर्क विठार्कत अस्या क्रिया वल, क नो केत्रित कन्त्रीतित मिछ विश्वासन, कर्णानात्म इत्य सुकामित्रन उत्त कतिर्वन कर्य क्षक अकान मानदान मू गरन कैत्र कार्या अक्रिंड इ अल, অহকারে "আমি কর্তা" ভাবে মনে ম শুণ কর্ম ভাগু করি যথা পরিমাণ, उष्छानी ছाफ़ि प्रम कर्व्शिक्मान

## ভা, কার্ত্তিক, ১৩১০ ] শ্রীমন্তগবদগীতা।

इिलाय देखिय कर्य, श्थक् जानिक्र आश्रीन नित्रस्व कार्किश शिकिश। २१-२৮ মৃঢ়মতি প্রকৃতির গুণে বিমোহিত, আসক্তি ধরিয়া রহে বিষয় বাাপৃত, এ সব ভ্ৰমকো নরে বিদ্বান যে জন नितर्थक किंচनिं ना करत कथन। २० আমাতেই দৰ্ঘ কৰ্ম করি দমর্পণ, व्यथाञ्च ज्ञात्नत त्यात्भ व्यविष्ठ मन, কামনা, মমতা, শোক করি পরিহার, মাত এ সমরে, বীর, কি কহিব আর। ৩০ এ আদেশে ধরি শ্রন্ধা অস্থা বজিত, করম-বন্ধন মুক্ত হইবে নিশ্চিত; माय पृष्टे युक्ति सम ना कति शहन मम्रल चिनान शाग्न मृष् चरहजन। ७১-७२ সভাব যাহার যাহা, শুন ধনীঞ্জয়, কর্পের গতিও তার তাই অবিকল, প্রকৃতিই বলবতী সকল সমুত্র, নিগ্ৰহে সহত্ৰ চেষ্টা হইবে বিফল। ৩৩ रे लिय विषय एउटम जत्म असूत्रींग, व्यथका व्यवृद्धि-करण जनस्य विद्वाग,. ব্লাগ দ্বেষ উভয়ই মোক বিশ্বকর, না হয় তাদের বশ মুমুকু যে নর 🕈 ৩৪

স্বধর্ম পরধর্ম। পরধর্ম হ্রথসেব্য

হয় যদ্ভি সর্বাঙ্গ-স্কর,
তাহাও জাজিবে ত্যাজ্য,
নহে তাহা কভু ভ্যেয়কর।
ক্থর্ম যদিও হয় অসহীন,
না ছাড়ে স্ক্রিক,

यथार्थ निधन जान, পরধর্ম ভয়ানম অতি। ৩৫ क्रार्ड्जून।

মানুষে যে করে পাপ, কে তাহে কুরে প্রবর্ত্তন, ষেচ্ছার বিরুদ্ধে, প্রভু, সবলে করি আকর্ষণ ১ ৩৬

রজোগুণোম্ভব কাম কৃষ্ণ-সাপ

কাম রিপু।

কভু আদে ক্রোধ রূপ ধরি, দৰ্বভুক্ ছুষ্পুর দে মহাপাপ, তাহার সমান নাই অরি। ৩৭ বহি যথা ধুমাচ্ছন্ন, অাদর্শ বা কলক্ষে আবৃত,

জরায়ু-আবৃত গর্ভ,

এই পাপে জগত ছাদিত। ১৮

यनावृक्षि मर्का<u>ल</u> क्रिया (म॰ व्यक्षिष्ठ। न,

ত্নপুর অনল সম তার ভূষা মেটে কিরে? জ্ঞানীর সে চিরশক্র ক্রানেরে আসিয়া ঘিরে। মোহ-পাশে ফেলি নানে দেহীর বিবেক-জ্ঞান। ৩৯-৪০

> आश्रिक अध्यि । जारे रे लिय-निष्य, পাপরপী কাম-রিপু কর পরাজয়— (यह तिर्भू, भीनव-क्षम्प्य कति वान, শান্তভান, আত্মজান, উভে করে নাশু। క पिरापि विषय भारत है लिय धवत,

আতা গরীয়ান। তেমনি ইন্সিয় হতে, মন মহন্তর, বুদ্ধি-অমুগত মন, বুদ্ধিই এধান, वृक्ति रुख, वृष करर, आञ्चा नैतीयान्। ४२

गत्रीयान् जानि व्याचा

আত্মাতে করি নির্ভর, কাম যে ছর্ম্বর অরি হান তারে বীরবর। ৪৩

रेजि जुजीसार्थायः।

### हिश्रनी।

সকীষরপী প্রকৃতিই কার্য্য করে, পুরুষ কর্তৃত্বাভিমানে ভাবে "আমি কর্ত্তা," उद्यानी राष्टि आशार्क देखिय ও कर्य इरेड पृथक् जानिया এर অভিমান পরিত্যাগ পূর্বক বিষয়ে অনাসক্ত থাকেন।

७२ च्या = পরগুণে দোষারোপ করা।

৩৪—যে যে শিষয় ইন্সিয়ের অনুকুল, তত্তবিষয়ে সেই সেই ইন্সিয়ের অনুরাগ ও প্রতিকূল বিষয়ে বিদ্বেষ। এই রাগদ্বেষ উভয়ই মোক্ষাভিলাষা ব্যক্তির বিরোধী, ্বীতএব উভয় বর্জনীয়।

৪০—ই ক্রিয় মন বুদ্ধিতে কামনার অধিষ্ঠান।

কামনা উদ্রেকের পূর্কে ইন্দ্রিয় প্রত্যক্ষ করে, মন সঞ্চল করে, বুদ্ধি বিবেচনা করিয়া স্থির করে। এইহেতু এই তিনেতেই কামনার অধিষ্ঠান বলা হইয়াছে।

82-80—ই क्रिय़गं प्रकामि विषय्त्रत श्रकामक, এজনা দেহাদি विषय इटें ए ই क्रिश (अर्थ । भन ই क्रिश्र गर्भ कर्भ अर्थ करत कर्म भन निश्रका, ই क्रिश मरनत अधीन, এজন্য ইন্দ্রিয় অপেক্ষা মন গ্রেষ্ঠ। বুদ্ধির সদসৎ-বিচার ও গ্রহণশক্তি আছে, এজন্য সংকল্পাত্মক মন হইতে বুদ্ধি শ্ৰেষ্ঠ। আত্মা প্রমার্থ তত্ত্বদর্শী, এজন্য বুদ্ধি হইতেও গরীয়ান্। এই আত্মার আশ্রয়ে সর্ব্ধ সংহারক ক্রিরিপু দমন করিবেক।

## बीमर जिल्लाश ठाकूत।

## তীর্থযাত্রা।

क्रिन श्र्व बीयुक व्यक्त स्मात रिम्द्वित महाभरत्र 'नीजाताम' भाठ कति। त्वथक हिन्द्राका भौजात्राम त्रारत्रत्र त्राक्तथानी অহমাপ্রের উপর নব্যবঙ্গের অশ্রদ্ধার বিষয় উল্লেখ করিয়া লিখিয়াছেন य, वाकानी এकरण रम्भलमण উर्फिष्म मार्किनिङ् । भिन्ना भमन करतन, किन्ध रय श्राप्त मां ए। हरन छ। हान नगां किनक स्थी छ इस, तमह

বাঙ্গালীর বীরত্বের লীলাভূমি মৃহস্মদপুর দুর্শনের ইচ্ছা ভ্রমেও
মনে উদয় হয় না। কথা কয়টী প্রামার হৃদয়ে আঘাত করে,
সঙ্কল করি একবার এই পবিত্র স্থান দর্শন করিয়া চকু সার্থক তাই আমার জীবনের প্রথম তীর্থযাত্রা বাঙ্গাণার এই পুণা ত

যাইন ঠিক করিলাম বটে, কিন্তু মহম্মদপুর কোথায়, কোই যাইতে হয়, কিছুই জানা ছিল না। সৌভাগ্যক্রমে যথোহর নিবাসী আমার এক সহাধ্যায়ী মহাশয়কে এই সঙ্করের কথা তিনি এ বিষয়ে কিছু সংবাদ দিলেন। মহম্মদপুর তাঁহার ই মাসালিয়া গ্রাম হইতে ১৬০১২ ক্রোশ। তিনি বৃদ্ধ লোকের সীতারামের গল্প শুনিয়াছেন, কিন্তু তিনি বলিলেন মহম্মদপুর ঘন জনলে আবৃত এবং ব্যাঘ্রবর্গ্যাদি হিংল্র জন্তর আবাস তবে বন্ধুবর আমরা তুই তিন জন যাইলে আমাদের সঙ্গে স্মৃত হইলেন।

এই সংবাদে অনেকটাশ দিখিয়া গেলাম। তাহার পর বন্ধা মধ্যে যাহার নিকটই এই প্রস্তাব উত্থাপন করি, তিনিই বলেন, সেথানে কি মানুষে যায়—হয় বাঘে খানে, না হয় সাপে কামছ আবার আজকাল পলীগ্রামে ভয়ানক কলেরা, ম্যালেরিয়া ত চিহ বন্দোবস্ত ফবিয়াছে, আমরা ভাই, প্রাণের মায়া এখনও সম্পূর্ণ বিসর্জন করিতে পারি নাই। (বন্ধ্বর নব বিবাহিত)।

যাহা হউক, আনেক চেন্টার পর একজন প্রাণের মুম্ভাশৃশু সহ
লাভ হইল, তাঁহার বাড়ীর দরওয়ানও তাঁহার সল ইল। আম
ধশোহরণ্ডিত বৃদ্ধ পূর্বেই দেশে গিয়াছিলেন। কথা ছিল আ
প্রথমে তাঁহার বাড়ী যাইব।

वात्र >• छात्र (भाषानम स्मर्ग উठिनाम। अथस्य कुमात्रशानित छिन् করি, দেখান হইতে কাদিরপুরে আশাদের এক পরিচিত ভদ্রলোহে वाँ वाहै वाद कथा इत्र, छिनि आमामित्र मामानित्रा भगास (नोका छा कत्रिया मिर्वम ।

রাত্রি তৃই ঘণ্টা থাকিতে গাড়ী আমাদের তিনজনকৈ কুমারখালি नामारैया मिन्। (हेन्दन वित्रया त्रांबिहेकू व्याञ्चाहिक कतित हरे वाफ़ी इरेट किंहू कलशावात नरेश शिवाहिनाम, ভारात महावह "করিয়া কাদিরপুরাভিমুথে যাত্রা করিলাম। থোকসায় নামি আমাদের স্থবিধা হইত, কিন্তু রেল গাড়ী সেথানে থামে না, তহ কুমারথালির টিকিট করিতে হইয়াছিল ৯ সেথান হইতে কাদির **आय ६ मार्ग १व ।** 

উচ্চ রেলের রাশ্ব্য ধরিয়া উভয় পার্শ্বে বিস্তৃত প্রান্তরশো সন্দর্শন করিতে করিতে পথ অভিবাহন অড়ুই মনোরম। অধিক (कर्वरे कृषक लाक्रम मिर्डिह, कान कान कान बाजा वानाहाय হইয়া পুল্পশোভিত হইয়াছে, মধ্যে কেন্দ্রও কেতে ইফুর চারা ে यांग्रेट्टि। क्रिटि এक्টा (क्रिट्व এथन । श्रम कांग्रे श्रम नांग्रे, डार्शाः याथा (मानाहेश या आयामित এक है अलार्थना कतिन। निच এको वित्न कठक छना माइत्रामः भाषी छे एता छे एत्र इति ह हों मात्रिटाहिन। द्याराय मधा इट्रेंड क्युकिन, साम्बन, भा প্রভৃতি সমবেত চেষ্টার্ম্ম ঐক্যতান বাদন আরম্ভ করিয়া দিল। প্রা मभौतं व त्रिया विषय भिष्णार्थक वावनाशास्त्र कनखिन जेयर माना व्यामारमुत्र ठामत्रै क्रक्त कतिया উड़ाह्या मिट्डिइन। स्थान ह पाकात्मन आखनीयात्र भागभनाभित्र गारू श्रायम (३था आयम व्य (यायना कबिएजिएन।

क्षित्रभूट्य कुछटमारकत्र वाफी. भोहियात्र किन्न भरते कर

वाजानीत वीत्रावत नीनां ज्या गृरयानभूत पर्णामत रेष्ट्रा जाया जीहाराय मत्न उनम्र र्म मर। कथा कम्री आभात स्माप व्यापाछ कर्त्र, खबनहै সঙ্গল করি একবার এই পবিত্র স্থান দর্শন করিয়া চকু সার্থক করিব। তাই আমার জীবনের প্রথম তীর্থযাত্রা বাঙ্গাধার এই পুণা তীর্থাত্তি-मूरथरे रहेशै। हिल।

याद्या ठिक कतिलाम वरहे, किन्छ महत्रमभूत काथाम, कार्न भरध - যাইতে হয়, কিছুই জানা ছিল না। সৌভাগ্যক্রমে যথোহর জেলা নিবাদী আমার এক সহাধাায়ী মহাশয়কে এই সঙ্কল্পের কথা বলিলে जिनि এ विषय किছू मःवाम मिल्ना। মহম्মদপুর তাঁহাঁর জন্মভূমি मामानिया श्राम इटेंड ১५.४> क्लाम। जिनि वृक्ष लात्कत मूर्थ সীতারামের গল্প শুনিয়াছেন, কিন্তু তিনি বলিলেন মহম্মদপুর এক্ষণে ঘন জঙ্গলে আবৃত এবং ব্যাঘ্রবরাহাদি হিংদ্র জন্তর আবাস স্থান। তবে বন্ধুবর আমরা তুই তিন জন যাইলে আমাদের দক্ষে যাইতে সশ্বত হইলেন।

এই সংবাদে অনেকটাশ দফিয়া গেলাম। তাহার পর বন্ধান্ধবের मधा गैंशत निकि। वह श्रेष्ठाव उथावन कति, जिनिहे वरमन, आदि সেখানে কি মানুষে যায়—হয় বাহে খ'েন, না হয় সাপে কামড়াবে। আধার আজকাল পশীগ্রামে ভয়ানক কলেবা, ম্যালেরিয়া ভ চিরস্থায়ী বনোবস্ত জ নিয়াছে, ত্যামরা ভাই, পাণের গায়া এখনও সম্পূর্ণরূপে विमर्जन कतिए भाति नाई। (वस्वत नव विवाहि )।

শাহা হউক, অনেক চেন্তার পর একজন প্রাণের মৃত্তাপৃত্ত সহযাত্রী লাভ হইল, তাঁহার বাড়ীর দরওয়ানও তাঁহার সক চইল। আমাদের यत्नाहत्रिण वृक् शृर्किर (मदन शिम्नाहित्यन। कर्णा हिन् जामस প্রথমে তাঁহার বাড়ী যাইব।

वात्र २०छात भाषांगण त्यरमे छित्रगाम । अथरम कुमात्रवाणित छिविछे कत्रि, मिथान रहेए कामित्रशूर्त कामामित এक পরিচিত ভদ্রলোকের वीं विश्वात कथा इत्र, जिमि जामामित्र मामानित्रा भर्गान लोका जाका कतित्रा मिरवन।

वाि छ्रे घणे। थािकरूज गाफ़ी जाभारमत जिन्छनरक कुभात्रशािनरज् नामाहैया मिन्। (हेम्दन वित्रया त्रांबिह्रेक् चिवाहिक कतिस्क रहेन। वाफ़ी इटेंट किছू कनशावात नहेंश शिवाहिनाम, ভाशांत महावहांत "-করিয়া কাদিরপুরাভিমূথে যাত্রা করিলাম। থোকসায় নামিলেই व्यामात्मत्र श्विविधा इटेज, किन्छ त्रिम गाफ़ी मिथात्म थारम नां, एक्ज ग क्यात्रशामित िकि किति किति इंदेशिष्ट्रिक, भिथान इटेट कामित्रश्र शांत्र ६ मारेग भर्ष ।

উচ্চ রেলের রাষ্ট্র ধরিয়া উভয় পার্শে বিভৃত প্রান্তরশোভা-সন্দর্শন করিতে করিতে পথ অতিবাহন বড়ই মনোরম। অধিকাংশ (कर्वरे कृषक लाकन मिर्डिह, कान कान क्वा जाताहां पूर्व হইয়া পুল্পশোভিত হইয়াছে, মধ্যে কেন্তিও কেতে ইকুর চারা দেখা মাথা দোলাইয়া যা আমাদের একটু অভ্যর্থনা করিল। নিকটস্থ একটা বিলে কভকতলা মাছ্য়াল। পাখী উড়িয়া উড়িয়া হঠাৎ হলে हों मात्रिएकिंग। स्वार्थित मधा श्रेष्ठ क्यकिंग, मिख्नि, भाषिया প্রভৃতি সমবেত চেষ্টার ঐক্যতান বাদন আরম্ভ করিয়া দিল। প্রাতঃ-ममीत्रंग तिह्या तिह्या भिष्णार्थक वावनाभाष्ट्रत कमर्खान नेवर मानाहेश व्यामारमुत्र ठामत्रै क्रक्त कतिया উड़ारेया मिरडिइंग। शाम शाम चाक्राम्ब आस्मीमात्र भाषभत्राणित गाए शामण (१था आस्मत्र चरिष र्यायमा कतिरङ्कि ।

- विवित्रभूदत कुल्याला वाजी लोहियात किहू भद्रके खड़ानक

अज़्बृष्टि आत्रष्ठ श्रेमा , आभारमत्र त्रिमेन आत्र त्रोकादत्राह्य रहेन मा।

' দেদিন তাঁহাদের বাড়ী গৃইজন পুরীর পাগুতিস্থি অতিধি इरेब्राहित्नन, उँशितारे आयापित शांक कतिया नित्नन। अनिनाम তনিকন্ত সমস্ত গ্রামেই এই সকল পাণ্ডাগণ জগুরাপক্ষেত্রের বাজী সংগ্রহ कत्रिवात् ज्ञ चूतिया (वज़ान, नकत्वरे छार्शांमशत्क आमत्र कित्रिया ু ত্ই তিন দিনের জন্ম গৃহে স্থান দেন। পাঞা ঠাকুর অনেকটা দেশী हरेया शिया हिन- - जिनि वाकाणा लिथा पड़ा कार्निन धवर मार्गि वियाय-ভোগেন। পার্ষবর্তী সমুদায় গ্রামের ভদ্রলোকের নাম ও সম্পর্ক डाँशत्र कर्ष्ट्र। मर्था अक्स्न इहे लाक भाषा मरहानत्रत्रभाक महा विभाग किना किना केश्वा अकाममीत छेभर्यास्त्र भोग्नानिक रेजिहान विनिष्ठ अञ्चलक हरेया, अन्नक अन्नः नग्न अनाभ विक्रा অজ্ঞানতা গোপন করিবার অয়াস পাইরাছিলেন।

পরদিন প্রত্যুষে গাত্রোখান করিয়া থোকসার ঘাটে নৌকারোহণ कतिनाम, नाजनवाध পर्याख-लाए। रहेन এक छाका। यथुमजीत मृ দেখিতে দেখিতে এবং পরস্পার কণাবার্ত্তায় কর্মাবিহীন ঘণ্টা কর্মটা काछान रंगन। मध्यजी भगात्र माथाविष्म्य, ইহাতে জোয়ার ভাটা নাই কেবল নীচেরদিকে একটানা স্রোত। নদীটি কলিকাতার নিকটস্থ ভাগীর্থীর অপেকা কিছু কম প্রশস্ত, কিন্তু এই গ্রীমকালে ইছার এক চতুর্থাংশ মাত্র জল; অবশিষ্ট ভাগে চঞা পড়িয়াছে। ইহাতে কুমারের বেশ প্রাহ্রতাব, অমেরা একস্থানে তুইটা কুমারকে চড়ায় ভইমা रवोज পোहाইट इ मिथिनामन नमीत अफ कान उ साम धूरकवादत थाएं।, मिथात्न में ज में मानिक्ति वाना, आठीत्रशास्त्र भाषत्रक्त स्थारमञ्ज ন্থার দেখার; স্থানে স্থানে পরিত্যক্ত নীলক্সির ভগ্ন অন্তালিকা নদীলতে अर्कनिमांक्विल रहेमा काल्य महिमा केविन कविरक्ष । त्या क्षीम

श्रद्वत मगत त्नोक। नांकनेदाश त्नीहिन्। नांकनेदाश करेत खात क्रान थारनक भथ शांक्रिया मारिननिष्य वसूत्र वाष्ट्रा यहिंद्रा विकास त्मित्र कुलियात्र, यामानियात्र राठे बरेट्ड मिकानि भगाति क्रि रांकि गाबाय कतिया, दक्र रांक कार्य, क्रिश शक्त शाकीय मरक वाड़ो फिबिटिट । जिन ठात्र क्लाम मूरत्रत्र वामवामीत्राध अहे हाडे করিয়া পারী। বুহস্পতিবার ও রবিবার হাট বসিয়া থাকে।

বন্ধুর বাটী একদির বিশ্রাম করিয়া মহম্মপুর অভিমুখে রওনা -रहेगाम, এইথানে इहे একটা কৃষকের সহিত পরিচয় হয়। বান্ধণ, काम्रङ् প্রভৃতি সন্ত্রাম্ভ পরিবার আপনারা চাষ করেন না, মুসলমান वा ठ छान हा वा मिल्ड व्याधाव्याधि वथतात्र व्युमि विनि क त्रित्रा था किन। এই চাষারা দেনায় फू'বয়া আছে, ভাল ফসল হইলেও ছয় মাসের অধিক আহার সংগ্রহ হয় না—এক বংসর অজন্মা হইলে ইহারা দাঁড়াইয়া यात्रा याहेरव। এ अक्षरम हिन्दूभूमैनमान द्वन मखीिक मिथा यात्र। আমার বন্ধর এক মুদলমান প্রজার প্রভুক্তক্তি দেখিয়া বিশ্বিত হইয়া-हिनाम। तम नाठित्थना कात्न, तकू ठाहात्र निक्र नाठित्थना निथित्छ চায়। किन्द मि किहू एउरे दाकि रहेन ना—किवन राम जात वरन, "वाशनि मूनिव—वाशनात शार्य वाष्ट्रि मात्रव काँगिवाहै।"

व अक्ट व शामवानी दित्र विवय याश - दिश्याम ७ वक्त निक्र खनिणाम ভाহाতে বড় ছ: ध रहेण ?° প্রতিবেশিগঁণের মধ্যে সূদ্রাব নাই — नक्लिरे ज्ञारत्त्र मञ्चा क्षित्र शास्त्र । भिथा भाक्षमा माबाहेर् ७ भरत्र कूरमा ब्रहाहेर् मकरमहे स्पर्।

किहूमिन পूर्दिक गाठि नैफुकि नहेशा एनवक रहेशा आप्य आप्य माना रहेड, একণে পুলিসের শাসনে সকলে লাঠি ছাড়িয়া মোকৃদ্যা थवित्राद्ध। किहमिन भूदर्स এই अन्तित्र ठारात्रा ज्ञानात्री नीमकत्र-क्तियर ममदम मगरम नार्टगोर्शय जाना क्रिक, क्रिक स्वत्र, वाकानी दन

बीर्या अन्यमः श्रीराहिष्ट । यादा शहेकं इंडेमड स्थात शृत्कं त्य এই দেশের লোক নবাবের সহিত্যাদ के রিয়াছিল ভাষা বেশ বিশাস (यानाः अकः वृष्टिम नवर्गयम्हे कामामित अमनहे मास्मिरान ताचिश (इन (य, आंशारित मंश्रेष्ठ (मोर्गावीमः अक्तार्व**्लाभ भाहेर्ड विमिश्नार्**ड শনিবার ভোব গালিকে গালিকে কিন্তুরী মাজরার পণ ধরিলাম এक ने ,तक मार्थ भाव करेंगा कुमार- के कित स्त्री करेंनाम P भट এक भार्य जन कर्यक (काला এक काला याद्यांद्री कालाइ दिनिट्डर्ड् দেখিলাম। এথানকার ক্ষকেরা এই াপড় পরিয়া পাকে। এই সময়ে জগৎপ্রসিদ্ধ বাঙ্গালার বস্তুবাবসাং একালে এইকা হীন দ্ প্রাপ্ত হর্টয়াছে—অথচ ভারাতে আমাদের মুগামব্যাপী নিয়ার কোনং वाशिक घटि नाहे। भत्रभात अत्मारक दक्षा कत्रने।

ঘাটে আসিয়া দেখি চাল্যিছীন একখান একখাত্ত দাভ্ৰিনিশি নৌকায় পাটনী দাঁড়াইয়া ত্যাছে। নাসালিয়ার বন্ধ ভাহাতে পিয় विनिद्धित, आंग्रज्ञां मांगानियात श्लानित्रं — खिन्या लाउँ । जार भोका हा जिया विशा वाश्वनात काटक हिलेश (शहर एका कामाई स्यां भा मह्या नी (महे क र्ष्ट्रमण होलाहेया है ए ज हाल डिखरबंद्र कांस् করিয়া আমাদের পার করিয়া দিকেন— নাকাটা টানিয়া কালাঃ व्याएक देश ताथिया मिलाने। अनिकाय এই পাটনী निक्टेव ही आध्यह ভদ্রপরিবারের নিকট হইতে প্রতি বংসর এবং বিবাহ শ্রাদ্ধাদি উপলক্ষে আট আনা এক টাকা করিয়া বিদায় পাইয়া থাকে—যখন এই পরি-वाद्वत कान आक वा जाशामृत कृष्ट्रेय नमीभाव इस, भावनी তাহাদের বিনাপরসায় নৌতা ছাড়িয়া क्रियो চলিয়া श्रीय। व्यवश्र समी व्यथम् ना बहेटन एहेक्न र छुत्रा अम्खर।

विञ्छ-ठाराब - (करळात्र मृथा - मित्रा, कथन वा आत्मत्र नाच मित्रा, চাষাদের মাগুরার পথ জিজাসা করিতে করিতে আমরা অঞ্জনর হইতে

লাগিলাম। ক্রমে স্থোর উদ্ভাপ প্রথম হইমা উঠিল, ছোট ছোট চাষার ছেলে বড় বড় বাঁফ কাঁথে করিয়া ক্ষেতে চাষার জন্ত ভাত ভাল লইয়া চলিতে লাগিল। তথাপি মাজরা আর আসে না, সকলেই বড় রাস্ত হইয়া পড়িলাম। আমার অন্তত্তর বন্ধু মনের হুংথে গান ধরিলেন,

সাধের তরণী আমার কে দিল তরকে

'গগনে গরক্তে ঘন

বহে থর সমীরণ

कून जानि धनाम (कन मित्रिक चाज्र ।'

মাসালিয়ার বন্ধ বলিলেন 'এত যদি ভয় তবে বাড়ী ছেড়ে এলে কেন ?' গায়ক গাহিলেন—

> 'ভাসল एकी সকাল বেলা, ভাবিলাম এ জল খেলা মধুর বহুৰৈ বায়ু ভেসে যাব রজে।'

যাহ। হউক অবশেষে উক্লেশ পর্যন্ত তললে ভ্রাইরা পার হইরা
মাগুরার হাটে উপস্থিত হইলাম। মাগুরা এই স্থানের মহকুমা আদালত,
এন্ট্রান্স স্থল প্রভৃতি করেকথানি কোঠাবাড়ী দেখিতে পাওয়া যার—
এ অঞ্চলে কোঠা বাড়ী বড়ই হল্ল — কুঁড়েম্বরগুলিও কেবল ছাঁচা
বেড়ার—মাটির প্রাচীর নাই। এই গ্রাম্বর্গলে গ্রামে প্রায়ই স্থানে
স্থানে অগ্নিকাণ্ড হইয়া অনেক ক্ষত্রি কল্প। থোলার চালের ঘর
হইলে ও মাটার প্রাচীর দিলে অগ্নি টুইতে বিশ্বেষ অনিষ্ট
হয় না।

এক হোটেলে আমরা আশ্রু লইলাম। দশ পরসা দিয়া নামু মাত্র মংস্তর্ভুক্ত মোটা চালের ভাত উদরস্থ করিতে হইল, আবার পুর্ম বলের অভিরিক্ত লহা, কলিকাভার জিহ্বাকে কৈছু প্রপীড়িত করিল। আমার কলিকাভার বন্ধ স্থবর্ণবিশ্বি-সম্প্রদায়ভূক্ত; এই সম্প্রদায় অন্নাহারী বিশিয়া প্রসিদ্ধ। তিনি ত আহারের যোগাড় দেখিয়া নাম মাত্র হাতে মুখে করিলেন।, আমরা ঠাটা করিয়া বলিলাম, 'এইরূপ बाहात कतित्वहे जुमि এक बन | योत हहेश छिटिय।' उठ्छत्त वक् विलिलन, 'छ। वृत्रि कान ना, ध्वाककानकात मित्न व्यक्तीशती वार्डिंश वीत्र इत्र। जाशानीत्मत्र तम्थ न। ?'

मगाद्भ (महे (हाएएल विसाम क्रिया देकाल वित्नामभूता जिमूर्थ যাত্রা করিলাম। মাগুরা হইতে মহম্মদপুর পর্যান্ত মাইলটোনযুক্ত পাকা রাস্তা দৈর্ঘ্যে ১৪ মাইল। তথাকার লোকের মতে মাসালিয়া भथ।

ति इंग्रें विकाति प्रानिक विकास का জামাদের সঙ্গ লইলেন। তিনি বোধ হয় এক বার রজপুরে পিয়াছিলেন —তাই কথায় কথায় তিনি বলিতেন, 'য়াাধার্নে এমন, কিন্তু রঙ্পুরে এই রকম।' তারপর যথক তিনি গুনিলেন আমরা নিরাশ্রয় অবস্থার বিনোদপুরে যাইতেছি, তাঁহার বোধ হইল আমরা তাঁহার বাড়ী উপস্থিত হইব—তিনি রান্তার মধ্যে •কোন স্থানে বসিয়া রহিলেন—কিছু পরে वाफ़ी शहरवन। आमत्रा ठिनिटिं नाशिनाम। भर्ष এक्खन काँछा ছধ বিক্রম্ন করিতে যাইতেছিল, তাহার নিকট হইতে প্রাম্ন ছই সের क्ष, इत्र भन्नमात्र किनिया जिनकत्न वाहेनाम।

প্রায় সন্ধার সময় কুষারনদ পুনরার পার হইয়া বিনোদপুর পৌছিলাম। मिथारन मानालियात এक बाकारणत कूर्ष वान करतन, डांशक नाममाळ काना हिन। माद्र পড়িয়া তাঁহারই हाড़ी অভিথি হইলাম। ভিনি কেখন অপ্রসন্নভাবে আমাদের কিছু মৃড়ি, কিছু কথাবার্ভার পর কিছু हिए ७ वाजांना, मिरनम, (এशान हेश्हे इहेएजए जनराम) ७ अक्षा বর খুলিয়া 'দিয়া বাড়ীর ভিত্র চলিয়া গেলেন। ভাহার এইসপ बावशंत्र मामाणियात वक्त विरवहनाम निंठांख जाडद्वाहिंड (भन्नीकारम

কোনও ভদ্রলোক এরপ কজেন না )—কিন্ত আমি ভাবিলাম তবুত আশ্রুর পাইয়াছি—তজ্জন্ত তাঁহাকৈ ধন্তবাদ দিতে হয়।

• পর্যালন প্রত্যুবে গাত্যোপান করিয় সহম্মপ্রের পাঁকা রাস্তা ধরিলাম। ইহারই মধ্যে হুই একজন ক্বক, ক্ষেত্রে আসিয়া হলচালনা আরম্ভ করিয়াছে। রাস্তার উভর পার্বের বিস্তীর্ণ মাঠ দেবিয়া মনে হুই তে লাগিল, একদিন এই সকল স্থানেই বাঙ্গালা ও মোগছে, ভীবণ বুর হুইয়া গিয়াছে।—কিন্তু এক্ষণে ভাহার চিহ্নমাত্র লোপ পাইয়াছে। ঐ যে ক্বকে আপনার মনে চাষ দিতেছে, উহাকেও জিজ্ঞান্য করিলে সে সাভারান্তমর কাহিনী বলিবে ও সেই স্বাধীন রাঞার প্রশংসা করিবে। কিন্তু ভাহার মনে কোনও ভাবতুরক্ষ উঠিবে না—বাঙ্গালী স্বাধীনভার মর্ব্যাদা বুঝে না। আমাদের উদ্ধাম কর্মনার কিন্তু মহম্মদ-প্রের সেই দিন সম্বৃত্তে দেখিতে পাইলাম, যে দিনের বিষয় কবি অবস্থান্তরে লিথিয়াছেন—

> এসেছে সে একদিন।
>
> লক পরাণে, শকা না জানে
>
> না রাথে কাহারও ধণ।
> জীবন মৃত্যু পারের ভূত্য চিত্ত ভাবনা হীন।
>
> পক নুদীর কিবি দশ ত্বীর
>
> এসেছে সে এক দিন!

এই সকল মাঠ যেন স্বাধীনতার সমরক্ষেত্র বলিয়া বোধ হইতে লাগিল, বৃষ্ৎস্থ বীৰ্ঞানকে যেন চক্ষেত্ৰ সন্মুখে দেখিতে লাগিলাম—শক্ষ-বিদ্দি বিশ্বাধী বীরের সিংহনাদ যেন কর্ণে প্রবেশ করিয়া দারীয় ক্টিকিউ করিয়া দিল—দেশ-কাল-পাত্র বিশ্বত হইলায়, অজ্ঞাত্নারে সামাদের মুখ হইতে 'পুর রাজা শীতারাম কি পুরু গুলু রাহির বিশ্বাধী বিশ্

বেলা দশটার সমর, একহারা একটা বালের বৈদ্ধ পান বিদ্বাদিন উপন্থিত হইলাম। এই 'প্রামে অকটা 'তালার করে—কিন্ত হোটেলের মত কিছুই নাই। স্বত্যাং, এবাতে আমরা হানীর ভদ্রলোকের আতিথেরতার উপর নির্ভর করিলা আমাদের পরিচিত কোন ব্যক্তির এক আত্মীর মাসালিয়ার উত্তর্যক চাকদহ গ্রামে বাস করিতেন। চাকদহ ইইতেই তাহার সাম আম তানিয়াছিলাম—এক্ষণে তাহারই বাটা অতিথি হইলাম'। দশ্য মহাত্তথন পীড়িত, তাহার স্ত্রীও তথন ক্রামেন্তার। তথাপি তিনি আমাদে পিতৃত্লা স্বেহের সহিত যেরপ স্থলর আহাহের ও বিশ্রাম্য আরোজ করিয়াছিলেন—ভাহাতে আমরা মৃত্র হইয়া গোলাম। যাহার পলীগ্রামে কিছুদিন লমণ করিয়াছেন, তাহারাই জানেন—ভদ্রলোকের বাড়ীতে অতিথির কিরপ যত্র হইয়া থাকে। এই কারণেই হোটেল না গাকিলেও গ্রামে প্রামে লমুণ করিতে বিশেষ বিষ্ট হয় না।

আমাদের মহম্মদপুর আগমনের উদ্দেশ্য জানিতে পারিয়া, তিনি তথাকার পোষ্টমান্টার শ্রীযুক্ত বাবু বরদাকাস্ত দে মহাশয়ের পাধিত এবং যশোহরের হিন্দু পত্রিকায় প্রকাশিত 'সীতারাম' প্রবন্ধ পাঠ করিতে দিলেন, তাহাতে স্থানীয় অনেক প্রবাদ সংগ্রহ করিয়া দে মহাশয় আমাদের ক্রতজ্ঞতার পাত্র হইয়াছেন। কিছুক্ষণ পরে, দে মহাশয়ের সঙ্গে আমাদের পরিচয় হইল, তিলি আমাদের সহ্দেশ্রের প্রশংসা করিয়া কন্তিসীকারপূর্বক সেই হিন্দু রাজয়্লানীর ধ্বংসাবশেষ সমৃত্দেশ্রেয়া দিলেন।

মহম্মপুর এককালে, বহুজনাকীর্ সমৃদ্ধ নগৃদ্ধ ছিল। রাজা সীতারাম রায়ের উদ্ধেশ্য ছিল যে, এই নগরের মধ্যেই সমৃদার সম্প্রায়ের লোক বাস করিবে, যাহাতে কিছুকাল মোগলকর্ত্ক তবক্তী হইনা থাকিলেও, সমাজের মধ্যে কোন বিষয়ের অভাব অনুভূত আনরন করিবা বছপুনিক নিক রাজধানীর মধ্যে বাস করাইরাজিলেন।
এখনও মহম্মপুরে, নানা সম্প্রদারের বাজালী প্রাক্তি, উত্তর্গার্থী,
দক্ষিণ রাটা, বারেজ্ঞ, ও বঙ্গজ এই চারি প্রকার কারত, রাজপুরু,
কনৌজি প্রাক্তি, নানা জাতীর শিলী প্রভৃতি দেখা বার । চতুর্দিকে
প্রবিশী ধনন করিয়া, নানা স্বদৃশ্য সৌধ ও মন্দিরাদি নির্দ্ধাণ করিয়া
তিনি এই স্থানটা পরমন্ত্রমণীয় করিয়া তুলেন। চতুর্দিকে গড় নির্দ্ধাণ
করিয়া ও মৃথায় প্রাচীর তুলিয়া তিনি ইহাকে শক্তর অভেজ করিয়াছিলেন। সৈই গড় এখনও বর্তমান আছে।

যথন এই স্বাধীন নগর মুসলামনকবলে পতিত হইল, তথন নবাব
মুরসিদকুলি থাঁ এই স্থান তাঁহার দেওয়ান নাটোর-রাজ রম্মুনন্দনকে
জারগীরস্বরূপ প্রদান করেন। এই সময় হইতে মহম্মুপুরেই এই
সঞ্চলের নাটোরের সদর কাছারি হইয়া আসিতেছে। তথনও নগরের
সমৃদ্ধির কোন হানি হয় নাই। পরে উনবিংশতি শতান্ধার মধ্যভাগে
এক মহামারী আসিয়া জনাকীর্ণ রাজধানীকে হিংল্র জন্তর আবাসভূমিতে
পরিণত করিয়াছে। একণে জলল অনেকটা প্রিকার করা হইয়াছে—
বাসস্থানও সংখ্যার বাড়িয়াছে। বাঘ এখনও দেখিতে পাঙরা বায়
বটে, কিন্ত ভাহারা মান্ত্য পায় না।

একণে জন্তব্যের মধ্যে আছে রামসাগর, রুফ্যাগর প্রভৃতিত করেকটী
ভাত প্রকাণ্ড পৃষ্ণরিণী, নগরপ্রদক্ষিণকারী গড়খাই একং করেকটী
ভগ্ন মন্দির এবং রাজবাটীর ভগাব্দশ্য মাত্র। •

त्रामगृतातत्र गँ७ श्रकाश भूकतियो नौकि निमयं आप नारे।
व्यापा पृद्ध नीत्रामनाभिक (मनाराजीत जीत यजपूर गिक्काक्रिक, जाराव प्रक्रिक भव प्रवक्षम कतिया এर भूकतियो पनन कता रहा। व्याप्तत्र (य गमाय এर प्रकार द्वजाराज पानि, ज्यम-नतीत भाषात्री क्षेत्रकार

বেলা দশটার্থ সময়, একহারা একটা বানের সেতু পার হইয়া महत्रामभूत आरम डिभिष्ठि हहेगाम। धरे आरम धर्मी द्वार वाजात्र वहन-किस (शांटिरगढु में किहूरे नारे। स्थार, जानारक শামরা স্থানীয় ভদ্রলোকের আভিথেয়তার টুপর নির্ভন্ন করিলাম। আমাদের পশ্লিচিত কোন বাক্তির এক আত্মীয় মাসালিয়ার উত্তরবর্তী ठाकमर् शास्य वाम कदिएज। ठाकमर ईरेएडरे छोरात नाम नामता গুনিরাছিলাম-একণে তাঁহারই বাটা অতিথি হইলামা গড় মহাশয় ত্থন পীড়িত, তাঁহার স্ত্রীও তথন রুগ্নাবস্থায়। তথাপি তিনি আমাদের পিতৃত্ব্য সেহের সহিত ধেরপ স্থনর আহারের ও বিশ্রামের আয়োজন করিয়াছিলেন—ভাহাতে আমরা মুগ্ধ হইয়া গেলাম। যাঁহারা পলীগ্রামে কিছুদিন ভ্রমণ করিয়াছেন, তাঁহারাই কানেন—ভদ্রলোকের বাড়ীতে অতিথির কিরূপ যত্ন হইয়া থাকে। এই কারণেই থোটেল না थाकिरमञ् वारम वारम जम्म कतिर्छ विरम्भ कहे ।

আমাদের মহম্মদপুর আগমনের উদ্দেশ্ত জানিতে পারিয়া, তিনি তথাকার পোষ্টমান্তার শ্রীযুক্ত বাবু বরদাকান্ত দে মহাশয়ের গাধিত এবং যশোহরের হিন্দু পত্রিকায় প্রকাশিত 'সীতারাম' প্রবন্ধ পাঠ করিতে मिलान, তাহাতে স্থানীয় অনেক প্রবাদ সংগ্রহ করিয়া দে ম**হা**শম আমাদের ক্তজ্তার পাত্ত হইরাছেন। কিছুক্ষণ পরে, দে মহাশ্রের मरङ आंगामित পরিচর হইল, তিজি আখাদের সহক্ষেশ্রের ও শংসা कतिया कष्टेशीकात्रशृर्वक म्ह हिन् ताकक्षानीत स्वरमावर्णम ममूह मिथारेश मित्नन।

মহম্মপুর এককালে, বহুজনাকীর্ 'সমূদ্ধ নগার্গ ছিল। দীতারাম রামের উদ্ধেশ্র ছিল যে, এই নগরের মধ্যেই সমুদার সম্পারের লোক বাস করিবে, যাহাতে কিছুকাল মোগলকর্ত্ক অবস্থা হটুলা थाकित्वल, नमात्वत मध्य क्वांन विवासत कालान कालान

रहेटम ना। जिमि मानाशन रहेटच निक्रो, नेकिस, त्यांको आसी जानका करिया प्रश्निक जिन प्रावधीशीय घटवा यात्र कराहिशाहित्या विषय विश्वानगुदेश, जाना मर्यामारमञ्जूषाणांणी वाचन, जिस्से महा मिक्न त्राही, बादबञ्ज, ७ यक्क এই চারি প্রকার কার্য, রাজক্ত, करनोषि वाष्मा, नाना बाजीय निषी अव्ि जिल्ला वार्षे। क्ल्मिंटक श्क्रियो बनन कत्रिया, नाना छम्छ मोध ७ मनियामि निर्माण कत्रिया তিনি এই স্থানটা পরমণরমণীয় করিয়া তুলেন। চতুর্দিকে গড় নির্মাণ °করিয়া ও মৃথার প্রাচীর তুলিয়া তিনি ইহাকে শক্রর অভেন্ত করিয়া-ছিলেন। সৈই গড় এখনও বর্ত্তমান আছে।

यथन এই স্বাধীন নগর মুদলামনকবলে পতিত হইল, তথন নহাব यूत्रिमकूणि थे। এই शान डाँशांत्र मिश्रान नाष्टीत्र-त्राक त्रयूनमनरक অঞ্চের নাটোরের সদর কাছারি হইয়া আসিওেছে। তথনও নগরের ममुक्तित्र कान शानि श्र नारे। পরে উনবিংশতি শতাকীর মধ্যভাগে এक यहायात्री व्यानिया बनाकीर्ग त्राव्यधानीर किश्य बद्धत्र व्यावानकृषिएक পরিণত করিয়াছে। একণে জঙ্গল অনেকটা পরিকার করা হইয়াছে---বাসস্থানও সংখ্যার বাড়িরাছে। বাঘ এখনও দেখিতে পাঙ্কা যাত্র বটে, কিন্তু ভাহারা মানুষ খায় না।

अकरण अहरवात्र मरश चार्ट त्राममाशत, कृष्णमश्तत अकृष्णि करत्रक्री चि छका अपूर्ण त्री, नगत्र अपिक्व काती गण्याहे अवर करवकी ভध मिना व्यर बाजवाजित ज्ञाकवाजित । •

बायमागदबन येंड शकाख ग्रहिनी नीकि निम्नदक साम माहै। व्यवाम चार्ट न्वीत्रत्मनाभिक त्यनार्दिकोत कीत्र यक्षेत्र विकासिक कार्या व्यक्ति गथ व्यवच्य कतिया अहे श्रुक्तिये चयन करा हत। देव जगरम करे जाकरण हवड़ा हैटक जानि, ज्यम मिनी नार्यको क्रीलि

चित्र नर्तव वर्ष्ट जनाचार। यानानियपि जानवा व्यक्तनानिया कत्न यान कतियाष्ट्रियाम जार्क कथी मत्न स्ट्रेश ज्यास प्रणा स्या किछ त्राममागदतत्र कन्गार्थ क्रममभूदत्रत्र लाक वष्ट्रेस्ट जार्ट हेश्त जगरे जारापित भान, भान ७ भाष्क्रत अक्साज ७ कांक खेखम ে অবলম্বন। অনেক দিন পর রামসাগরের জল থাইয়া (ছোট পুকুরের क्रम थाक्षत्रात्र ) अभूर्स ज्थिगां क्रिनां क्रिमां क्रेम वरमत्र शिक रहेग वक्षत्र এक श्वाधीन त्रीका প্রकामश्रमीत উপকারের अञ्च य महम्पूर्धान করিয়া গিয়াছেন, আজও শত শত লোক তদ্বারা উপক্বত, সেই স্বর্গগত, মহাপুরুষের পুণাকাহিনা ঘোষণা করিতেছে। পৃথিবীর এক সভাতা-ভিমানী জাতি একণে বঙ্গের শাসনকার্য্যে নিযুক্ত, কিন্তু জিজ্ঞাসা করি ं এই कृषि-वहन 'ও जनकष्टेशी ড়িত দেশে তাঁহারা কর্মনী খাল বা কর্মনী পুকরিণী খনন করিয়া প্রজার কন্ত নিবারণ ক্রিতে চেষ্টা করিয়াছেন পু वब्रक्ष दिनाव विखात कविया जार्जाविक जननिकारणत्र भथ वस कित्रा দেশে गामित्रा जाकिया जानियाह्न।

বড়ই ছঃখের বিষয় এই, রামসাগর যক্নাভাবে ক্রমশই থারাপ হইয়া याहेटज्र । इकूर्फिटकत्र भार एत जनन जरन भिष्यार — स्थाभा अहे बल काथफ काहिएछए, लाटक এই कत्न गक्न बांभाहेरछए ( नाज्याह (७८ছ)। यर्त्रामभूत ७ ७ जित्रकेवर्जी सान- मीजातायशास (मरवास्त्र-সম্পত্তির স্বন্ধর্গত, নাটোরের বড় তর্ফের রাজ্য জগদিলানাথ রাম এক্তে त्मवाहेर। डाँशत कर्यातिवर्शत लाख ध्यमन छेभकाती । ध्रमन अभिक जनामम नहे हर्ड विमिमारह, भि विस्त्य जामना अरममहिरानी महाबादमञ्ज मृष्टि जाकर्षण कित्र।

एश् वाममागव रकन, क्रंकमागव, भग्रभ्विनी; अवशागव षात्रां एक छित्र क्षणां मन् - त्यु रे श्वादक्षां क महावादक के विकित्तक वर्षमान द्रशिष्ट्। श्रवाष्ट्र, आर्ष्ट्—महाद्राद्भव मुद्रम

২২০০ কোঁড়বার অর্থাৎ পুঁকরিণীখননন্তারী থাকিত—বুরাজিনামে অথবা যশোর-পাবনাব্যাপী বিভ্ত-রোজ্যপরিদর্শনে অথন করিলে বেখানেই কলীভাব দেখিতেন তথারই পুকরিণী খনন করাইরা দিতেন। মাসালিরার সিকটেও তাঁহার থনিত একটা জলাশর দেখিতে পাওরা যার।

স্বস্থির, নগরের বহির্ভাগে অবস্থিত। ইহার মধ্যস্থলে মহারাজের গ্রীম্মকালের বিশ্রাম প্রাসাদ (হিম গৃহ) ছিল—এক্ষণে পু্দরিণীর নধ্যভাগে একটী জঙ্গলময় দ্বাপ দেখা যায় মাত্র।

এই স্থলাগর ও স্থলব রাজপুরী দেখাইরা, জনরব, মহাত্মা সীতারামকে বিলাসী বলিয়া প্রতিপন্ন করিতে তাহে। আমার বোধ হয়
এ অঞ্চলের লোক কখনও রাজপ্রাসাদ দেখে নাই, তাই, সীতারামের
রাজৈখার্য দেখিয়৷ তাঁহাকে বিলাসপরায়ণ বলিয়া ঠিক কঁরিয়াছে।
তিনি যে চতুর্দশ বংসর নবাবের সহিত ঘোর মুদ্ধে ব্যস্ত থাকিয়া বিলাসপরায়ণ ছিলেন এরূপ কিছুতেই বোধ হয় না।

সেই দিন বৈকালে আমরা সীতারামের রাজপুরী দেখিতে বাহির হইলাম। বাজার হইতে একটা রাস্তা সেই রাজপুরী অভিমুখে গিরাছে। রাস্তার উভর পার্যেই জলল—মাঝে মাঝে বছকালের ভগ্ন প্রাচীর গাছের ভিতর হইতে উ কি মারিওছে। রাস্তার শৈবে রাজপ্রানার ইউকপ্রাচীর প্রথনও সম্পূর্ণর ভগ্নশার বর্তমান আছে, রাজপুরীর ইউকপ্রাচীর প্রথনও সম্পূর্ণরূপে ধূলিসাই হয় নাই। তোরণসমূথে দাঁড়াইলে দক্ষিণ দিকে স্বর্গ্ন পোলমঞ্চ এবং বাম দিকে রাণী ও ক্লাণীর কড়া রাণী তারা ঠাকুরাণীর প্রতিষ্ঠিত রামচজ্রের অনোরম মন্দির দেখিতে বড়ই স্কল্পর। ক্লিক আমুলা ক্রথন এ সকল দেখিতেছিলাম না। পবিখাতনামা সেনা-পতি মেনাছাতী সমন্ত দিন নগর-রক্ষার ক্রেলাবন্ত করিছা, সৈভবিগতে ক্রিক ক্রিলার করিছা বাইলেন।

यामार्पत मिखरिक उथन এই काशि काशि किल, यामारमन कपरम বোগে বক্ত প্রবাহিত হইতেছিল।।\*

পুরী প্রবেশ করিয়া গুটিকয়ৈক ভগ্ন অট্রালিকা ও মন্দির পীর হুইপ্না ७ मणज्यात मिनद्वत मणूर्थ अवङ इहेगाम। "हहात निक्टिह नाकि जकी निवमनित्र (अकी खाफ वाकाना) हिन—डाहा **अकरन जा**डाह ভগ্নশারী। এই দশভুজার প্রতিমাসম্বন্ধে একটি গল ভনিতে শাওয়া রাজা সীতারাম শিল্পী প্রভৃতি লোকের-বড়ই আদর করিতেন। मण्डात वर्गम्यो मृर्छि निर्माण कतिवात खन्न यथन जिनि णिन्निश्निष्क আহ্বান করিলেন, তথন এক যুবক বলিল, 'মগ্রারাভ ৷ আশি আপনার মনোমত মূর্ত্তি গড়িয়া দিব•়• তবে আমার এক 🕏 বক্তব্য আছে, আমি व्याथनात व्यक्षां जगादि मम्मत्र वर्ग চूति कतिय।' महात्रांक विनित्नन, "কিন্তু যদি তুমি ধরা পড় তোমার যথোচিত "শান্তি হইবে।' শিলী তাহাতেই সমত হইল। প্রতিদিন রাজবাটাতে আসিয়া কাজ করে, বাইবার সময় দাররক্ষক তাহাকে বিশেষভাবে পরীক্ষা করিয়া দেখে কিছ नरेशा यारेटकहा कि ना॰ शद्र, मृद्धि मार्ग्न हरेन ध्वरः व्यक्तिस्कन्न পর বিগ্রহের প্রতিষ্ঠা হটুল। রাজা শিল্পীকে বলিলেন, "কৈ, জুমি ভ এক রতি স্বর্ণও চুরি করিতে পারিলে না।" শিল্পী বিনীতভাবে विनन, "महाताक ममूनमू सर्व रे जामि हृति कतिमाहि। अवादन रामन বংশর শৃত্তি প্রস্তুত করিতাম, বাটাতে ঠিক তদমুদ্ধপ পিত্তবের এক मूर्खि निर्माण कितिकाम्। विश्वह অভিষেকের দিন আমিই রামসাগরে मुर्खिनान कत्राहेन वानि। य शान वर्गमन मुर्खि निमक्तिक कति, क्याम পূर्वाद्ध भिडनमंत्री मृद्धि पुराहेत्रा दाविवाहिनाम, कूनियात्र ममन चटर्नत्र भित्रवर्ख भिष्टलात मृद्धि छेशाहेलाम। किह मत्मह कतिए भारित मा मिट क्य वर्षमान मण्डाम् कि शिख्रानत् ।'

महाताम मीणात्राम देव अस हिट्नन, जाहात जुकाविक विकास निवा

দেখিতে পাওয়া যায়। সেই সকল বিগ্রাহের দেবোঁতর সম্পত্তিও বিস্তর। এই একমাত্র হুর্গমিন্দির—ইহারও শুনিল্বাম দেবোঁতর নাই (?) শ আমার বোধ হয়, শাক্ত এজাগণের মনোরঞ্জনার্থ শেষে তিনি এই মন্দির প্রক্তিতি করেন—দেবোতরের বন্দোবস্ত করিবার সময় পান নাই।

ইশ্বর পরেই ৺গন্ধীনারারণ জীর অইকোণ বিভল শালির।
এই বিগ্রহপ্রাপ্তির পর হইতেই শুনা যায়—সীন্তারামের ভাগ্যোদর
হয়। এত দেবোত্তর সম্বেও জীর্ণসংস্থারের অভাবে মন্দিরের মধ্যে
জল পড়ে।•

মন্দিরের পার্শন্থ এক ইপ্তকন্ত পে দেখিলাম কারুকার্যাযুক্ত সুন্দর ইপ্তক পড়িরা রহিরাছে—আমরা আগ্রহের সহিত কতকগুলি সংগ্রহ করিয়া লইলাম। এই•ত্বার্থদর্শনের স্থতিচিহ্নস্রূপ আমরা সেগুলি স্বত্বে বাড়ীতে বহন করিয়া আনির্মাছ।

সেই ইপ্তকন্ত পের উপর উঠিলে রাজান্ত:পুরের ভয়াবশেষ দেখিতে
পাওয়া যায়। খন জললের মাঝে মাঝে এক, একটা ভয় দালান, ভয়
গৃহ দেখিতে পাইলাম। কিন্তু সেই বিস্তীর্ণ জলল দেখিয়া অনুমান
হয়, এক সময় ভথায় অনেক অট্টালিকা বিরাজ করিত। মন্দিরের
পশ্চাতে অন্ত:পুরের প্রুত্তিনীর পার্শ্বদেশ ও তলদেশ ইপ্তক বাঁধান
রহিয়াছে। ইহারই মধ্যে মহারাজের ওপ্ত কোর্যাগার ছিল্লু। এক
সময়ে ইহার চতুর্দিকে অলোকমালা শোভা পাইত—জলাশয়ে ভাহার
প্রতিবিশ্ব পড়িয়া অন্ত:পুরে স্বর্গের ল্লী আনমন করিত। স্বরম্য অট্টালিকারাজি এক দিন প্রালনার সোন্দর্যালোকে উত্তাসিত ও মধুর
কলকর্ছে মুখিরিত ছিল। এই শ্রশানের মধ্যে দাড়াইয়া আমরা সেই
দিনের শ্বর্থ দেখিতে গাগিলাম।

त्रामग्री, रहेटच প্रक्रायर्जनপूर्यक जागना मर्यमग्रद्यन निक्षेष

कानाहेनगत्र और अहरत्रक्य सार्वत भानत प्रिया टानाम। (य व्राक्ता शिववा आंगर ंहे । जिल्लाम ॰ ंंक 'त्रांत व्राक्ता' वरन-वर्ण-गांबात गमम এই भाष । जांग. । जांग এह अकां अ अबी तामा হইয়াছে, দেখিলাম—ছঃথেব বিষ্ণ প্রাঞ্জিতা স্থাত স্থাত স্থাত , हुई ५०% शीन हि । तिह्या । यमभूत (मान-हुर्गाएमव সমস্ত किन्तू পালপাर्का एक भाग के हैं । था कि महा का कि नी अवारमत नांकि এইরপ ব্যবস্থা আছে।

অপরাহুকালে আমরা কানাইনগরের মন্দিরে উপস্থিত হইলাম।.. মন্দিরটী এক কালে যে অতি স্থন্দর কারুকার্য্যে খচিত ছিল, ভাছার প্রমাণ এখনও পাওয়া যায়়৷ পাঁচটি চূড়ার মধ্যে ছটা ভিনটা ভাকিয়া গিয়াছে, অবশিষ্টগুলিও কথন ভাঙ্গিয় যাইবে ভাহার পরামর্শ করিতেছে। একটি চূড়া ভাঙ্গিবার সঙ্গে, রাজা দীতারামের সংস্কৃত শ্লোকান্ধিত শিলালিপি পড়িয়া যায়, তাহ। একণে ম**হম্মদপুরে**র কাছারিতে রক্ষিত আছে, দেখিয়া আসিয়াছি। ভাঙ্গা মন্দিরের মধ্যে দলে দলে পায়রা বাসা কুরিয়া বড়ই অপরিয়ত করিয়াছে। এরূপ অযত্ত্বে আর কিছুকাল থাকিলে স্বাধীন রাজা সীতারামের শেষ স্মৃতি-हिन् पंशिष्ठ त्नाभ भाइर्दि !

পার্থে বলরামজির মন্দির; এটি সীতারামের পরে অক্ত কোনও লোকের দারা প্রতিষ্ঠিত। তুইজন উড়িয়া ব্রাহ্মণ এই মন্দিরের দেব-সেবাকার্য্যে নিযুক্ত। অন্যান্য মন্দিরেও উড়িয়া ব্রাহ্মণ দেখিতে পাওয়া যায়। আমরা সেদিনকার রাত্তির জন্য এই মন্দিরেই বেগার দিলাম—অর্থাৎ সে রাত্তি দেখানে প্রসাদ পাইবার জন্য পাতাঠাকুরের निक्छे व्याद्यमन किंद्रिमाम। भाषाठाकूत्र शृङ्गीत्रमूर्थ व्यामार्गित विमाद्ध বলিয়া চলিয়া গেলেন। কিন্ত বসিবার আসন কোথায় ? অগভ্যা আমাদের সমভিব্যাহারী মহম্মপুরেক এক মিস্তীর পরামর্শ মতে আমরা

দীতারাম এই স্থানে বিতীয় কুদাবন নির্মাণ করিবার ইচ্ছা করিয়াছিলেন, তাই • এই কানাইনগরে বৃদ্ধাবনের স্থায় তিনি গোপপল্লী
স্থাপন করিয়াছিলেন; চতু:পার্যন্ত গ্রামগুলির নাম রাথিয়াছিলেন—
মথুরানগর, গোপালপুর ইত্যাদি।

এই শমর প্রতিগ্রামে চৈত্রসংক্রণন্তির উৎসব। কোনও বিগ্রহ বা শিবলিক দেখিতৈ পাওয়া যায় না। একথও কারকার্যাযুক্ত কার্চের উপর একটি ত্রিশ্ব প্রোধিত করিয়া তাহাকেই মহাদেবের আসন বলিয়া পূজা করা হয়। গ্রামা ক্রযকগণের কয়দিন ধরিয়া বড়ই আমোদ প্রমোদ দৃষ্ট হয়। তবে কলিকাভায় যেমন কাঁটাঝাঁপ, বাঁটঝাঁপ প্রভৃতি হইয়া থাকে সেরপ কিছু হয় না। বর্দ্ধমান অঞ্চলের মত চৈত্রসংক্রান্তির উপলক্ষে আত্রসবাজিও পোড়ান হয় না। তবে এখানে নৃত্যগীতের খ্ব ধ্ম। ছই প্রকারের গীত ভানতে পাওয়া যায়—এক, বয়য় প্রমণ ঢাকের বাত্মের দক্ষে হয় করিয়া হয়পার্মতীসম্বনীয় কবিতা আ্বার্ত্তি করিতে থাকেল আর এক প্রকার আছে, ক্রযকরালকগণ স্থী সাজিয়া রাধার বিরহসকীত গান করে।

গোপভবনে যাইয়া দেখিলাম, তাহাদের সেখানে বিরহসঙ্গীত হইতেছে। গোপকর্তা আসিয়া আমাদের খাতির করিয়া বসাইলেন। যখন স্বল্লভ্ষণ নটান্ধপী কৃষকবালকগণ, গ্রাম্য নৃত্যগীতে স্বল্লসস্তই, সরলচিত্ত ক্ষরক শ্রোত্বর্গের আনন্দবিধান করিতেছিল, তখন আমাদের হৃদরে প্রীতির রাজ্য প্রসারিত হৃইতেছিল, এবং সেই ষৎসামান্ত নৃত্যগীতও আমাদের নিকট ইদ্বের স্বাভাবিক সঙ্গীতরাপে প্রতিভাত হুইয়াছিল।

ি কুক্ষণ পরে আমরা মন্দিরে প্রসাদ পাইয়া আসিলাম। এই দন্দিরগুলির বন্দোবস্ত বড়ই শোচনীয়। স্থানীয় ভক্তলোকের নিকট क्षारा । महावा मिलाइव मीकावामकार वानक (परवाखन मन्निह আছে। পূর্বে অনেক ভাল অভিথিয় সেখা হইত, একণে অভিথিয় প্রতি যত্নভাবে আর কেহ আছে না, কাছারির আহলাবর্গুই এপ্ন নিয়মিতরপে প্রসাদ পাহ্যা থাকে। আমার বিশ্বাস যদি ভদ্রলোকে এই স্থানপরিদর্শনে আসেন, তাঁহারা হুই এক দিন এই সকল মন্দিরে श्रमाम পाইতে পারেন, এবং তাহা হইলেই লজ্জার পড়িরা আটোরের মহারাজার কর্মচারীয়া স্ক্রন্দোবন্তের প্রতি লক্ষ্য করিবেন।

সে রাত্রে দত্ত মহাশয়েশ বাড়ী নিদা গেলাম। পরদিন প্রাতে মহম্মদপুর হইতে এক মাইল দূরবর্তী মধুমতী নদী দেখিতে পেলাম। वांगारात व्यानकवां नमी भाव श्रेटिक श्रेमिन। अहे राम नमी-वहन-आक्रमनकाती रिमरग्रंत शक्ष क राम उप क्रिका वर्षाकारन যথন মাঠ জলে ডুবিয়া যায়, তথন যুদ্ধ করা এক্রন্ধ অসম্ভব। একণ नमो
ी नीर्वकाश ७ भाखकु जावा-धरे वर्खमान वक्र प्रमालक मे मे । किन्छ এक मभरत्र वजतात भन्न वन्त्रता भागमिन जानत्रन कतित्र। এ নদীটীকে ভীষণ মূর্ত্তি দান করিয়াছিল। করির কথা মনে পড়িল—

সহ কত সেনা ত্ৰ জলকলোল গরজিল সে দিন যমূনে (ও)।

তৎপরে আমরা বারশ্রেষ মেনাহাতীর সমাধিস্থান দেখিতে চলিলাম। এটা कि एः थ्वत्र विषय, ভাবিয়া দেখুন धा, মহম্মদপুরের অর্দ্ধেক লোককে জিজ্ঞাসা করিয়া দেখিয়াছি তাহারা কেহই সমাধিস্থান ঠিক করিয়া বলিতে পারে নাই। যাহা হউক, অনেক অমুসন্ধানের পর, এক বুদ ধোপা একটি স্থান দেখাইয়া দিয়া বলিল—"আমরা ছেলেধকার এই স্থানে क्षत्र (मिथ्रमाष्ट्रि, भद्र जाजा दें छे खिल श्वाद्यत्र लाटक लहे जा निवादक, जांका त উপর দিয়া রাস্তা তৈয়ারি হইয়াছে।" বৃদ্ধের কথায় অবিশ্বাস করিবার किছूरे नारे, आंत्र प्ररे जिन्ही वृक्षांक जारात्र कथात ममर्थन कतिना

মহারাজ সীতারামের চতুর্দশবর্ষবাপী ভীষণ স্বাধীনতার সময়ে যিনি
তাঁহার দক্ষিণহন্তস্বরূপ, থাঁহার অসাধারণ শৌর্য্যে নবাব-জামাতঃ
ভাবতেরাপ সদৈতে প্রাণ্ হারাইয়াছিল, বাঙ্গালীর স্বাধীনতা রক্ষা
করিতে গিয়া, যিনি ঘাতুরকের গুপু অল্লাঘাতে যন্ত্রণাময় মৃত্যুকে আনিজন
করিয়াছিলেন, মহারাজ সীতারামের প্রিয়তম সেই দেশপ্রসিদ্ধন
মুসলম্বান্স বীরের সমাধির এইরূপ ইন্দশা দেখিয়া কি চকু ফাটিয়া জল
বাহির হয় নী ? যে দেশ বীরের আদর করিতে শিখিল না ভাহাদের
ভার উয়তির আশা কোথায় ?

আমি জানিনা ইহা সম্ভব হইবে কি না, আমার বন্ধ প্রস্তাব করেন যে, দেশের লোকের নিকট চাঁদা সংগ্রহ করিয়া মেনাহাতির কবরটা পুনঃ নির্মাণ করা উচিত। স্থোগ্য পাঠক এ বিষয়ে চিস্তা করিবেন।

আমাদের নিকট ভ্রক্তাপহার কিছুই ছিল না, কেবল নিকটস্ বিল হইতে কর্মটী রক্তকমল তুলিয়া আনিয়াছিলাম,। হৃদয়ের ভক্তি ও ক্তজ্ঞতার যৎসামান্ত বাহ্যনিদর্শনশ্বরূপ আমরা সেই কর্মটী কমল কবরের উপর স্থাপন করিলাম।

দে দিন মধ্যাহে দশভ্জার মন্দিরে প্রসাদ পাইলাম। পূর্বের রাণী ও রাণীর বিধবা কন্তা রাণা তারার প্রতিষ্ঠিত রামচন্দ্রের মন্দিরের কথা উল্লেখ করিয়াছি। তাহারই দালানে এক্ষরণ নাটোরের কাছারি হইয়া থাকে। অলোকসামান্তা স্থলরী বিধবার প্রতিষ্ঠিত রথন ইন্দ্রিয়ুলালসামন্ত নিরাজ্দোলা পাপদৃষ্টিনিক্ষেপ করে, তখন তাহার হস্ত হইতে রক্ষা পাইবার জন্ত তারা ঠাকুরাণী এই মন্দিরে শুপ্তভাবে অবস্থান করেন। সেই কাছারির এক আমিনের মহিত আমাদের বড় তার হইল। তিনি আশ্র্যা হইয়া বলিতে লাগিলের, আপনাদের মত ইংরাজী জানা লোক, আমাদের সঙ্গেতএক্বপ ভাবে মিশিতেছেন, ইহাতে আমি অবাক হইয়াছি—আমাদের দেশে ত ছটা একটা ইংরাজী পাশ

मिर्टन, (म जांत्र कांहात्र अ मर्क खगरत करा क्या मा।" जाम्मा जल हां हिंद्रा या नियाहि अनिया विनित्नन "मैं एनि महानय, धम, ध, भान इतन আপনারা পাল্কি না হলে এক.পা যেতে, পারিবেন না \*\* ধসই ভঞ লেকের আগ্রহাতিশয়ে আমরা সেরাত্রি কাছারিতে আহার ও শয়ন ৎ করিলাম।

त्म त्रांच तायहरक्त याक्तित विषया क्रम्पय (यक्तन कविष्यत क्रिक्राम অমুভব করিয়াছিলাম, আমার ভাষায় এরূপ দক্ষতা নাই যে, ठाहा वर्गना कति। (क्यारमात्नातक सम्बन्ध मिन्द्रिक क्रिक्ट क्रिंड ছিল, বদস্তানিল প্রাঙ্গনরোপিত জুঁই ও বেল ফুলের গক্ষে মনঃপ্রাণ স্নিগ্ধ করিতেছিল। দঙ্গে, দৃঙ্গে আমার মন কয় শত বৎদর অভিক্রম করিয়া তারা ঠাকুরাণীব সৌন্দর্য্য অবলোকন করিতেছিল। একদিকে ° **म्हिल्ल क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्** মহোরগের স্থায় মাণা কুটাফুটি করিতেছে, আর অস্থাদিকে শুক্লবসনা ব্রহ্মচারিণী স্বর্গগত স্থীয় স্বামীকে ইষ্টদেবতারূপে পূজা করিতেছেন। (वालविधवा जातात सामीत नाम ছिल तामहत्व लाहिएी, डाहातह নামামুদারে, যেন তাঁহারই প্রতিমৃত্তিম্বরূপ রাণী তারা রামচক্রবিগ্রহ প্রতিষ্ঠিত করেন।)

পরদিন প্রতৃষে আমর। বাড়ী রওনা হইলাম। চারি জোশ পথ हाँछित्र। जामता य उर्होगेत्र शिमादत हिं जिलाम। जैरे भथरे माका। ঘাইবার সময় বড় ঘুরিয়া গিয়াছিলাম।

দে দিন ১৩১০ সালের ১লা বৈশাখ। এই নববর্ষের প্রথম প্রাতে श्रांखा हिनिट हिनिट बाग्रा এक है। विष्णू मृश्र क्षिमाम। वक्षे ভাগাড়ে একটা মরা গরু পড়িয়া রহিয়াছে, তুই তিনটা কুকুর ভাহাই . बाहर उट्ह, এक है। कूकूत्र जाहा हिर्गंत इहेगा को कि मिरजट्ह। अक्यार त धक्यां मक्नी विमिन्ना आहि, किन्न मिट टिनिनान क्षूरन अर्करमे

ও তাড়নার অগ্রসর হইতে পারিতেছে न। এমন সমর একটা শৃগাল এক গ্রাদ মাংস চুরি করিবার আশার লুকাইয়া গরুটার কাছে আসিল, किन्न जीशत (म मार्थ वान পড़िन। " कोकिनात मार्ट्य विवय विकास তাহাকে অনেক দূর পর্যান্ত তাড়াইয়া আসিল। এই দৃশ্য দে পিয়া लाडी वर्डमान मानवनमार्कत कािंठि कािंठि (थर्गारथिति कथा মনে •পড়িল। বোধ হইল অতীতের মহিমামণ্ডিত কবিত্বময় স্মাদপুর তাাগ করিয়া স্বার্থপর-বিবাদপরায়ণ বর্ত্তমান জগতে আসিধা পড়িয়াছি।

বেলা আটটার সময় 'গণেশ' ষ্টীমারে উঠিলাম। সে দিন বড় গরম, তাহাতে সাবার এঞ্জিনের তাপ। তুপুর বেলায় দ্বীমার হইতে নড়াইলের হোটেলে ভাত থাইয়া লইলাম। সন্ধ্যাব্র সময় 'গণেশ' দৌলভপুরের (थूननात्र व्यारात्र रहेमरन) घार्छ (शैहिन। व्यायापित्र इर्जागुक्रस्य 'গণেশ' সে দিন গজেক্রগুমনে চলিতে আরম্ভ করিয়া, আমাদিগকে ৫টার धकार धन् एवेन धति एक मिन मा। कार्क्ट मन्द्रोत एवेन क्र छ छ । विमिश्रा थाकिए इहेम।

ष्टिमत्न वड़ क्रूधाईस्थात्र উদ্রেক হইন, কিন্তু থাবার জল পাইব কোথার ? একজন ভদ্রলোক (পরে শুনিলাম তিনি ছুতরের কাজ कर्त्रन) रिष्टेमरन (विज़ाहेरिकहिएनन, छाँश्रांत्र निक्रे छन চाहिएन छिनि পরষ সমাদরে আমাদিগকে তাঁহার বাসীয় লইয়া গিয়া এক রাশি कांकूफ, हिनि ও जन दिया পরিতৃপ্ত করিলেন। । আমি বহুকে জিজাসা করিলাম, এই সকল ঔদ্রলোকের উপকারের কি প্রত্যুপকার আমরা कति । जामाति मार्क जांकाति व व जांक जांका व करें कि व नाका व करेंदिन। वस् विलिश्निन "आद्या क्रिक ब्लाहारमञ्जू छिशकात्र ना कतिएक भाति, কিন্ত আমুরা আরও ভাল এক কাজ করিতে পারি, যাহাতে সমগ্র यानानी जाजित्र উत्रजि इत्र मिटे जर्ज जागता भत्रियम कत्रिए भारि ।"

वाजि नाएक मन्नाव नमन गाफी इक्निमं, ट्यावदनाम निनानमर

পৌছিলাম। এক দিন ও এক রাত্তির মধ্যে মহলদপুর হইতে कनिकाछ। এবং कनिकाछ। इटेट महम्मभूत याख्या याम, धवः छाद्रि क्लात्मत्र अधिक है। टिए इस ना छानित्न, आमात्मत्र याहेवात ममस कर्ड স্থবিধা হইত। যদি কোন ভদ্রলোক মহম্মদপুর দেখিতে আইসেন, তিনি 'मर्डिं এই রাস্তা ধরিয়া আসিতে পারেন। অবশ্র মহমাদপুরে ভদ্রলোকের আহার ও বাসের ভাল বন্দোবস্ত নাই সত্য, কিন্তু পাঁচজন लाक जामित्व जामित्वहें क्राय मयस वत्नावस स्वाभना हहेत्व हहेत्व । मात् अत्रान्धात ऋषे ठाँशत क्रगिवशांच नज्जिन क्रनमानवण्च, क्रजनमत्र । কয়টীস্থানের বর্ণনা করিবার পর, দলে দলে লোক সেই সকল স্থান मिश्रिक व्यामित्व नाशिन। किष्ठू कात्नत मस्थारे त्मरे मत श्राम त्रिन. ষ্ঠীমার, হোটেল প্রভৃতির আবির্ভাব হইল।

श्रीमकौगठनः गृंदशाशाश्राश्र।

## ख्योर्कर्-जन्- अञ्दन अक्दनना।

**ा** निक किन इटेट পরামর্শ इटेग्ना ছিল, আজ आमता द्वेगां कि र्ज-वन- এ ज्न (मिश्ट वाहेस। व्यामत्रा मनि विष् कृष मिह,--लक्ष मूर्थ हाई पिया क्रिएकन नव-नावी।

প্রাত্রাশের পর আমরা পুরুষরা ধুমপান করিতে লাগিলাম;—. মেরেরা পথের উপযোগী খাদ্যসামগ্রী सংগ্রহ করিতে ব্যুক্ত হইলেন। বেলা ১১টা ৫০ মিনিটে আমাদের ট্রেণ ছাড়িবে, পথে পুরা জিন ঘণ্টা; স্থতরাং গাড়ীতেই আমাদের মধ্যাহভোজন সমাধা করিতে श्रेट्र । गाःम, ডिम, आधूमित्, -- अंश्म (त्राम्,-- तित्र, द्वेटम्-শেরার্ ক্রীম্,' ইত্যাদি ইত্যাদি, ছই প্রকার পানীয় ( জলটা ধরিলে

তিন প্রকার)—দেখিতে দেখিতে আমাদের হ্যাম্পর্টি পূর্ণ হইরা উঠিল; পথে অপর চুর্দিব যাহাই ঘটুক্, কুৎপিপার্গার প্রাণত্যাগের আর কোনই বস্তাবনঃ রহিল না।

আরোজন শেষ হট্টবার সঙ্গে সঙ্গেই, ট্রেণেরও সময় উপস্থিত হইল।
আমরা ছয়জনে প্যাডিংটন্ প্রেশনে গিয়া গাড়ীতে উঠিলাম। যথাসময়ে,
ট্রেণ ছ্লাড়িয়া দিল।

পাঠকের কলনাশক্তির সাহায্যকলে, —আমার সঙ্গীদের একটি 'मःकिश वर्गना' (मध्या व्यावशकः। পूक्ष व्यामवा इहेबन माज,—किश्व 'ladies first।' यिम् च—, ইনিই বলিতে গেলে আমাদের পথ-थानिका। इनि পूर्व्स करत्रकवात्र द्वाार्कार्छ नित्राह्म, —कथन वा (त्राल, कथन व वा वार्रेनिक्ता भिम् অ-कथात्र वार्तात्र अकार পरीयमी,—माहिতात्रमञ्चाहिनी,—এवः स्वयः हेश्त्रांकि ও कर्मान भवानिष्ठ अवस ७ लिथिया थारकन। यिम् फि-, द्वेनि कथा राजी करहन ना,-किन्न गंभीत्र को जूश्लात महिल मकल बिनियंत्र बालाहनात्र यञ्चवती। मूथथानि मनारे शिम रामि। इषि वानू मिम् म—; वर्षि जजास ক্ষীণপ্রাণ,—অসহায় লভাটির মত। ছোটটি ঠিক ইহার বিপরীত, উৎসাহে উদ্যামে পরিপূর্ণ। কোথাও যাইতে হইলে ইনিই সর্বাত্যে প্রস্তুত হইয়া 'হলে' অপেকা করিয়া থাকেন—কিছু দেখিতে গেলে,— আর পাঁচজনে যাহা দেখিয়া আসিয়াছে, ইনি তাহার অনেক অধিক मिथिया व्यामिया लाकटक हम एक कि विद्या स्निन्। हिनिहे व्यामारमत मरणत नर्ककिनिष्ठा।—शुक्रवशरक मिष्ठेत् व—, देनि এकि हिम्याधात्री यूवक,—किकिए को क्रक अत्रा, लाकि - वाहारक, वरन jolly good fellow,— এवः कीवत्नव প্रতিविक्षिण (यथात्न, এक के बारमाम बारह, —সমস্ত নিফাসিত করিয়া লইতে দুদ্প্রতিজ্ঞ।

्डिणन हाणियां, गाणी **অ**टनकपूत्र भर्याख मखरनद्र नशक्तीयां

वाजिक्य कतिए भातिम ना। यथन मधरनव वनका ७ को नामिक ধুমোদগার পশ্চাতে ফেলিয়া আমরা বাহিধের বিশুদ মুক্তবায়ুতে প্রাহেশ क्त्रिलाम, — यथन व्याना गृहमातित्र পরিবর্তে ছই পার্ষে मध्य माठ दिन्स গেল,—তথন আমাদের জীবাত্মা বেন বলিয়া উঠিল—বাচিলাম। পথে তিন ঘণ্টা সংবাদ পত্ৰ ও সচিত্ৰ মাসিক পত্ৰ পড়িয়া, প্ৰাকৃতিক দৃশ্য দেখিয়া, গল্প করিয়া কাটিয়া গেল। ভোজন ব্যাপারে হিভাজ অল্প সময় যায় নাই। আমাদের পরস্পরের স্বাস্থ্যপান করিবার পর, আমি মিদ্ অ'-র নাম প্রস্তাব করিলাম-"Our Guide, Philosopher and Friend."

यथन गाफ़ी द्वोर्छक्ट व्यानियां थामिन, उथन जिन्हां वास्त्रिया नियादि । मिन त्या त्रोज-शीषाणे अकर्रे अवन हिन। स्याप्तरमञ অনাবশুক গাত্ৰস্তাদি এবং থাবারের হ্যাম্পর্ ক্লোক্রুমে ক্লাথিয়া আমরা বাহির হইয়া পড়িলাম।

কিন্তু প্রথমেই একটা নিরাশা,—এত নুত্র অট্টালিকা কেন প আমি প্রাচীনতার অন্বেষণে আসিয়াছি;—আমি শেক্ষপীয়রের ই্রাট্ফর্ড দেখিব,—তিনশত বৎসরের পুরাতন একথানি গ্রাম,—যাহার প্রত্যেক বৃক্ষ প্রত্যেক প্রস্তর আমাকে শেক্ষপীয়রের সংবাদ বলৈতে পারিবে! গ্রামে প্রবেশমাত্র এই একালের গৃহগুলি যেন আমার ছইটি চক্লুকে সকোরে আসিয়া আঘাত করিল।.

शांमशानि कृत,— (क्षेमन পরিভ্যাগের প্রচমিনিট পরেই হেন্লি हीरिं श्राटिंग कित्रिकाम। এই दिनिंग हीरिंहे (नक्तिमादवर समागृह। পথ মাত্রকে আমরা রাজপথ বলিয়া থাকি। হয়ত ইহাকে কবিপথ विनिद्ध व्यनगांत्र श्रेटव हो।

পথে প্রবেশ করিবার এক মিনিট পরেই শেক্ষপীররের গৃত্তের সমূলে উপস্থিত হইলাম। হা,—এই বাজীখানি পুরাতন বটে! सात्र, वार

বাড়গটির উপরিভাগ, সেকালের প্রশ্না অহুসারে নির্মিত। সমুধে তিনটি "গেব ল্",—প্রভাক গেব্রের মাঝখানে একটি করিয়া ক্ষ জানালা। বাড়ীট ছই তালা। বহির্ভাগ "চুণবালি ধরান"—কালক্রমে প্রায় ক্ষেবর্ণ হইরা আসিয়াছে। স্থানে স্থানে কাঠের প্রায় দিরা দৃঢ়ীক্বত। কঠিও ঘ্যের ক্ষেবর্ণ ধারণ করিয়াছে। প্রবেশের দ্বারটি বাড়ীর মধ্যভাগে নহে,—বাড়ীর বামদিক খেসিয়া। দ্বারটি বেশী উচ্চ নহে, মাথাটি হয়ত একটু নীচু করিয়া ঢুকিতে হয়।

মিষ্টর ব—একটু পশ্চাতে পড়িয়াছিলেন। আমাদের নিকট আসিয়া চশমাটি চক্ষে লামাইয়া, গৃহথানির প্রতি নেত্রপাত করিয়া বলিলেম—
"Wasn't it good of him to be born in this poky little hole."—কি আশ্চর্যা! লোকটার মনে কি ভক্তির. লেশমাত্র নাই ?—
ইনি যদি আমাদের ভারতবর্ষে জন্মিতেন, তবে নিশ্চয় বলিতে পারি, ইনি দেবতা ব্রাহ্মণ মানিতেন না এবং ১৯রুপুরোহিতকে "ভক্তফূল" উপাধিতে ভ্ষিত করিতেন।

সেদিন আমাদের মত অনেক যাত্রী দর্শনার্থী; বস্তুতঃ, আমরা যে ট্রেণে আদিয়াছি তাহা একথানি Excursion Train; ট্রেণস্থ দকলেই দর্শনার্থী। অনেক লোকের সঙ্গে আমরাও প্রবেশ, করিলাম। এক সিলিং দিয়া হইথালি টিকিট কিনিলাম;—একথানি জন্মকক্ষের জয়, একথানি মিউজিয়ম ও প্রেক্ট্রাগারের জয়।

বে ককটিতে আমরা প্রথমে প্রবেশ করিলাম—অর্থাৎ বেধানে টিকিট ক্রম করিলায়, সেটি নাকি পূর্বের রন্ধনশালা ছিল। এই কক্ষটির মধ্যে বিবেশ করিলে, সন্মুথে একটি এবং দক্ষিণ্ড হস্তে একটি ছয়ার দেখা যায়। সুথের ছয়ারটি পার হইলে, বিনবার হয়। এই কক্ষের কোণে একটি সিঁড়ি আছে, তাহা দিয়া জন্মকৃক্ষে উঠিতে হয়। রান্নাঘরের অপর ছয়ারটি পার হইলে, পরে পরে গুইটি কক্ষ, সে গুইটি মিউজিয়াম। মিউজিয়মের প্রথম কক্ষটির প্রান্তে সিঁড়ি আছে, তাহা দিয়া উঠিলে উপরে শহিত্রেরির ত্ইটি কক্ষ পাওয়া যায়।

আমরা দেখিলাম, জনস্রোত জন্মকক্ষের প্রতি ধাবিত হইতেছে; ञ्च जत्राः, • পরামর্শ করিলাম, এই বেলা মিউজিয়ম ও লাইরেরি একটু नितिविनिट ए पिश्रा नरे, -- পরে জন্মকক্ষে যাওয়া যাইবে। মিউজিয়মে শেক্ষপীয়রের জীবনকালের অনেক দ্রব্য সংরক্ষিত আছে। ১৮২০ यृष्टोरक 'अवािनः छन् वार्ভिः এই মিউজিयम দেখিয়া **ভাহার** "ক্ষেচ্বুকে" वर्गना निभिवक क्रियाष्ट्रन्। मिथाम जिनि क्जक्खनि जानप्रवास উল্লেখ করিয়াছেন,—যথা শেক্ষপীয়রের, হরিণমারা বৃন্দুক প্রভৃতি, সে मकल এथन স্থানান্তরিত হইয়াছে। যে সমস্ত দ্রব্য সংশয়ের দায়মুক্ত তাহাই কেবল এখন রশিত আছে। বিষয় হয়ান্তর সন্তন্ধীয় দলিল পত্র, W. S. অন্ধিত একটি অঙ্গুরীয়,—কয়েক থানি পুস্তকের প্রথম সংস্করণ, সেকালের থিয়েটারের প্রোগ্রাম প্রভৃতি। একথও কাষ্ঠ वाह्न, हेश भिक्षशीयदात अश्य-श्वाधिक मनदिति त्रक इहेरिक কর্তিত। একটি কোণে একটি পুরাতন ডেস্ক আছে। প্রবাদ, ইহা পঠিশালায় বালক শেক্ষপীয়র কর্তৃক ব্যবহৃত হইত। আর্ভিং যখন ह्याहिक्ड (मिथिवाहित्मत, उथन देश "গ্রামার স্লে" সংরক্ষিত ছিল। ा दा दिन हरेड आनिया এथन हेट्टा मिडिकिय्य त्रिक हरेब्राइ। জেস্কটির অবস্থা অতীব শোচনীয়। প্রেথমতঃ, ইহা দেখিতে অত্যস্ত ছুল, ষেন "দরে তৈরিকরা" গোছ। তাহার পর ইহার পায়াটায়া अधिकाश्यरे लाभ भारेशार्छ; —रेश् यथन ऋला हिन, ख्यन रेशारक (लक्ष्णीयदाद एक कानिया, पर्नकर्गण देशद कार्छ अकरे कार्डिया शृंद्ध नहेत्रा याहेज। हेशत मर्व्हाटन वानकशटनत नाम ट्यानाहे कता ;

কন্ত অনেকক্ষণ ধরিয়া অন্বেষণ করিলাম, W. S. খুঁজিয়া পাইলাম না। হয়ত বালক শেকপীয়র ভাবিয়াছিলেন,—অমর হইবার এই পন্থা

যুক্তা না করিলেও তাঁহার চলিবে।

নিউজিয়মের উপর পথে ত্ইটি কক্ষ, তাহা লাইত্রেরি। এখানে
শক্ষপীয়রের গ্রন্থানী সম্বন্ধে বহুদংখ্যক পুস্তক সংগৃহীত আছে।
ভিত্তিগান্তর, দে কালের খোদিত, অনেক চিত্রাদি। একটি বৃদ্ধী এই
ক্ষেরদের দর্শয়িত্রী স্বরূপ, নিযুক্ত। তাহাকে দেখিয়া, আভিং বর্ণিড
garrulous old lady"-টির কথা মনে পড়িল। এই বৃদ্ধা হয়ত
গই বৃদ্ধারই বংশধরী!

দিতীয় কক্ষটিতে একটি ওক-কাষ্ঠনির্দ্মিত ধ্রাতন চেয়ার রক্ষিত।

থিত আছে, ইহাতে শেক্ষপীয়র উপবেশন করিতেন। দর্শকগণ

ই চেয়ারটিতে ইচ্ছা করিব্রে একবার বিসিত্তে পায়। আমার সন্ধিগণ
কে একে সকলেই একবার বিসিয়া লইলেন। আমি এদিকে
তকগুলি পুস্তক দেখিতেছিলাম, ফিরিয়া দেখিলাম, মিষ্টর ব—চেয়ার
নিতে বিদয়া রহিয়াছেন । জিজ্ঞাসা কিমলাম—"কি রক্ম মনে

চচ ?" ব—বলিলেন—"মনে হচ্চে, আমি হ্যামলেট্।"—বলিয়াই,
র্দ্ রবর্টসনের \* অফুকরণে আরম্ভ করিলেন,—"To be or not
be, that is the question." মিষ্টর ব—উঠিলে, ছোট সিস্
—তথায় উপবেশন করিলেন। তাহাকে জিজ্ঞান্দা করিলাম—"তুমি

গো ? জুলিয়েট্ না মিয়াণ্ডা ?"

भिन् भ— अञ्च गञ्जीत जादि विद्यान— "अधि त्विष्ठ भाक्रवर्।" সর্বনাশ!

ध कक (मृश्विमा, अन्त नकत्न अनुम ककाँगेटि किशित्तुन। आमि ⇒ वर्षमान नमाम देशनाथन तकमाम, कर्तन् तवर्षमासन वानन, नत् रहमित आर्थिः राज्ञ । देश हामान हामान किमान कि দিঁ ড়ি আছে, তাহা দিয়া জন্মকক্ষে উঠিতে হঁয়। রায়াঘরের অপর হয়ারটি পার হইলে, পরে পরে হইটি কক্ষ, দে হইটি মিউজিয়াম। মিউজিয়মের প্রথম কক্ষটির প্রাস্থে দিঁ ড়ি আছে, তাহা দিয়া উঠিলে উপরৈ লাইত্রেরির হইটি কক্ষ পাওয়া যায়।

আমরা দেখিলাম, জনস্রোত জন্মকক্ষের প্রতি ধাবিত হইতেছে; ञ्चत्राः, त्नतामर्न कतिनाम, এই বেলা मिউজियम ও नाইবোর 'একটু नितिविलिट ए पिथा लहे, --- পत् जन्मकरक या अग्रे याहेरव । निजे जित्र শেক্ষপীয়রের জীবনকালের অনেক দ্রব্য সংরক্ষিত আছে। ১৮২০ থুষ্টাব্দে ওয়ানিংটন্ আর্ভিং এই মিউজিয়ম দেথিয়া তাঁহা**র "**ক্ষেচবুকে" বর্ণনা লিপিবর্দ্ধ করিয়াছেন। দেখানে তিনি কতকগুলি জালদ্রব্যের উল্লেখ করিয়াছেন,—যথা শেক্ষপীয়রের হরিণমারা বৃন্দুক প্রভৃতি, সে দকল এখন স্থানান্তরিত হইয়াছে। যে দমন্ত দ্রী সংশ্রের দায়মুক্ত তাহাই কেবল এখন রক্ষিত আছে। বিষয় হয়ান্তর সন্তন্ধীয় দলিল পত্র, W. S. অন্ধিত একটি অঙ্গুরীয়,—কয়েক থানি পুস্তকের প্রথম সংস্করণ, সেকালের থিয়েটাংরের প্রোগ্রাম প্রভৃতি। একথণ্ড কাষ্ঠ আছে, ইহা শেক্ষপীয়রের সহস্ত-প্রোথিত মলবেরি বৃক্ষ হইতে কর্ত্তিত। একটি কোণে একটি পুরাতন ডেম্ব আছে। প্রবাদ, ইহা পাঠশালায় বালক শেক্ষপীয়র কর্তৃক ব্যবহৃত হইত। আর্ভিং যথন द्वािष्ठ (निथिवािहत्नत, তथन देश "গ্রামার-স্লে" সংরক্ষিত ছিল। त्र द्यान इट्ट आनिया এथन ट्या मिडिकिय्राम त्रिक्ठ इट्यारह। ডেস্কটির অবস্থা অতীব শোচনীয়। প্রথমতঃ, ইহা দেখিতে অত্যস্ত সুল, ষেন "ঘরে তৈরিকরা" গোছ। তোহার পর ইহার পারাটারা अधिकाः भरे लाभ भारेगार ; - रेश गथन ऋत्म हिन, ख्यन रेशारक (अक्षीयदात एक कानिया, पर्नकर्गण इंशत कार्छ अक्रू अक्रू कार्डिया शृंद्ध नहेंगा साहेंछ। हेशत मर्कात्म वानकशर्भत्र नाम स्थानाहे कता; কৈন্ত অনেককণ ধরিয়া অন্বেষণ করিলাম, W. S. খুঁজিয়া পাইলাম না। হয়ত বালক শেকপীয়র ভাবিয়াছিলেন,—অমর হইবার এই পন্থা গ্রহণ না করিলেও তাঁহার চলিবে।

মিউলিয়মের উপর 'যে ছুইটি কক্ষ, ভাহা লাইব্রেরি। এখানে শেক্ষপীয়রের গ্রন্থাকী সম্বন্ধে বহুদংখ্যক পুস্তক সংগৃহীত আছে। ভিত্তিগার্ডের, দে কালের খোদিত, অনেক চিত্রাদি। একটি বৃদ্ধা এই কক্ষরয়ের দর্শয়িত্রী স্বরূপ, নিযুক্ত। তাহাকে দেখিয়া, আভিং বর্ণিড "garrulous old lady"-টির কথা মনে পড়িল। এই বৃদ্ধা হয়ত দেই বৃদ্ধারই বংশধরী!

দিতীয় ৰক্ষটিতে এবটি ওক-কাষ্ঠনির্মিত প্রাতন চেয়ার রক্ষিত।
কথিত আছে, ইহাতে শেক্ষপীয়র উপবেশন করিতেন। দর্শকগণ
এই চেয়ায়টিতে ইচ্ছা করিল্লে একবার বিসত্তে পায়। আমার সঙ্গিগণ
একে একে সকলেই একবার বিসয়া লইলেনু। আমি এদিকে
কতকগুলি পুস্তক দেখিতেছিলাম, ফিরিয়া দেখিলাম, মিষ্টর ব—চেয়ার
খানিতে বিসয়া রহিয়াছেন। জিজ্ঞাসা কঞ্জিলাম—"কি রক্ষ মনে
হচ্চে ?" ব—বলিলেন—"মনে হচ্চে, আমি হ্যামলেট্।"—বলিয়াই,
ফর্বস্ রবর্টসনের \* অনুকরণে আরম্ভ করিলেন,—"To be or not
to be, that is the question." মিষ্টর ব—উঠিলে, ছোট মিস্
শ—তথায় উপবেশন করিলেন। তাঁহাকে জিজ্ঞানা করিলাম—"তুমি
কে গো ? জুলিয়েট্ না মিয়াতা ?"

মিদ্ শ— অত্যন্ত গন্তীরভাবে বলিদেন—"অধমি লেডি ম্যাক্বেথ্।" সর্কনাশ!

এ কক্ষ দেখিয়া, অপর সকলে প্রথম কক্ষটিতে ফিরিছেন। আমি

<sup>\*</sup> वर्षमान नमरम देश्नात्थत त्रज्ञमरक, फर्वम् त्रवर्षमात्र व्यामन, मत् रहनति व्यार्खिः सम् विषये। काहात्र शामरनारे-व्यक्तिम शाम श्रीमद्या ।— स्थय ।

তথনও কতকগুলি পুস্তক ৎদ্যতিছিলাম। পূর্ককথিক বৃদ্ধাটি ধীরে धीत यामात काष्ट्र यामिया मधायमान रहेन।

"মশায়,—আপনি চেয়ারটিতে একবার বদেছেন কি?" "Al 1"

"ও চেয়ারটিতে দর্শকদের আম্রা বদঙ্গে দিই।" वामि क्वनमाज विनाम—"७:।"—विना वामि वर्ग शुक्रक

मिथिट नाशिनाम।

किन्छ वृक्षा ছाড়িবার পাত্রী নহে।—"মশায়, আপনি একবার বসবেন না ?"

आमि তाहात मूर्थत पारन किन्धिः पृष्टि कतिया विल्लाम-"ना।"

"मकलाई वरम किछ।"—দেখিলাম, বৃদ্ধার আগ্রহ প্রবল। আর,— আমি বাদতেছি না বলিয়া, তাহার মনে কিঞ্চিৎ কোভ উপস্থিত হইয়াছে। তথন একটু হাসিয়া তাহাকে বলিলাম—"দেখ, আমি এ চেয়ারে বসব না। অ'মি শুধু টুপী খুলে এ চেয়ারকে সসমান अভিবাদন করছি।" · •

वृक्षा कि ভाविन विलि छं भावि न। छविन श्यूष्ठ, "(भाविनकः" জাতিগণের চরিত্রই স্বতন্ত্র!

লাইবেরিতে, লেক আনিতে আরম্ভ করিতেছে দেখিয়া আমরা मकरण बामिया राणाम। मिडेजियम পात • रहेगा, "तामाचत्र" भात रहेशा, "विभिवात घरत" উপস্থिত रहेलाम। "पिथिनाम, এই कक अथन उ लाटक लाकात्रण। • त्यथात्म कामक क छित्रेवात्र मिष्, त्यथात्म थाहती मांफाहेश चाहि। कु फ़ोजन करित्रा लाक गिन्सा देश देशिए मिटलहा । जारात्री नामित्रा जानितन करन जानात्र क्षेत्रमनक छिटल मिट्डिह। जामता मिरे कनजात मध्या माण्डिया जामाद्यत भाषा প্রতীকা করিতে লাগিলাম।

জানালা দিয়া, বাটার পশ্চাতে একথানি বাগান দেখা যাইতে লাগিন। এই বাগানে, শেক্ষপীয়রের গ্রন্থে উল্লিখিত সমস্ত বৃক্ষলতাদি জনাইবার ঠেটা করা হইয়া থাকে।

বিলয় দেখিয়া, জনতার গ্রীত্মে, ব—সত্যন্ত অসহিচ্চু হইয়া উঠিলেন। বিলনে—"চল, যাওয়া যাক্—কি হবে জন্মকক্ষ দেখে? এই রক্ষই একটা ঘরত । তল, পালান যাক্।"

আমি ব—র মুখপাৰে কটাক্ষ করিলাম। বলিলাম—"কি জন্তে এনেছ?"

জনতাপেরিত ব—, ক্রক্ঞিত করিয়া বলিলেন—"আমি কি তোমার শেক্ষায়র দৈথ্তে এসেছি? আমি এসেছি একটু ফাকা হাওয়ায় 'বেড়াতে।''

আমি রাগ করিয়া বলিশ্য — "তুমি গিয়ে ফাঁকা হাওয়ায় বেড়াতে পার। আমি না দেখে যাচিচনে।"

ব—আগাকে "Sentimental ass" বলিয়া গালি দিয়া, "গোঁজ" ইব্য় দড়োইয়া রহিল। দে ভিড় ঠেলিয়া বাহির হইবার সাধ্যও তাহার হইল না। যথাসময়ে, হোঁচটে পড়িয়া "গঙ্গাভাভও" হইয়া

আমরা সিঁড়ি উঠিয়া, জন্মকক্ষে প্রবেশ করিয়াম। এ কক্ষটিতে ব্রাতন হই চারিটি আসবাব মাত্র রক্ষিত আছে—তাহা ছাড়া, ইহাক বারে থালি। বোধ হয় কর্তৃপক্ষণণ ইচ্ছা করিয়াই ইহাকে থালি বিসাছেন—অভান্ত ত্রব্যাদি থাকিলে দর্শকচিত্তকে অযথা উদ্ভাত্ত বিরবে মাত্র।

करकत ठाकिछि (मञ्जान, धर्मरकत नाम खाकरत शक्तिश्र्न। पृत्र हैं एं मिदिन माक एमात जारनत में महिमा (अम्बन खाके बहैं देशाजन। यथन (मञ्जान शूर्न इहेशा (अन,—जिन त्राचितात सामें যথন আর রহিল নাঁ, কর্ক্পক্ষগণ তথন নাম লেথার বিরুদ্ধে নিয়ম ঘোষণা করিলেন। "দর্শকের পুস্তক" আছে—তাহাতেই নাম লিখিয়া এখনকার যাত্রিগণ মনোক্ষোও নিবারণ করিয়া থাকেন

জानालात काटा, शेतक निया वह मध्याक' नाम (थानिङ আছে। ভাষার মধ্যে সর্ ওয়াল্টার স্কট, বায়রণ, ও ওয়াসিংটন্ আভিংয়ের নাম দেখা গেল।

ষথন রেল ছিল না,—তথনও প্রত্যাহ এই কক্ষদর্শন করিবার জন্ম পৃথিবীর সর্বা হইতে ভক্তসমাগম হইত। তথন এথনকার মত ভিড় হইত না। তথন অনেকে, রক্ষকগণকে পারিতোযিক দিয়া, এক রাত্রি এই কক্ষেশয়ন করিয়া যাইত।

কতলোক, এই কক্ষে প্রবেশ করিবামাত্র, ঝর ঝর করিয়া অশ্রুত্যাগ করিয়াছে। কতলোক, প্রবেশুমাত্র, নুর্তজামু হইয়া এই কক্ষের মেঝেকে চুম্বন করিয়াছে'।

অগ্নিহানের উপরিভাগে, ওক-নির্দ্মিত "ম্যাণ্টেল্পিদ্।" তাহার একটি কোণ কাটা।—ইহা একটি আমেরিকান্ মহিলার কীর্ত্তি। সে বছনংসরের কথা, তথুন রেল খোলে নাই। তুইটি আমেরিকান্ মহিলা ট্রাট্ফর্ড দেখিতে আসিয়াছিলেন। দর্শয়িত্রী তুইজনকে উপরে দেখাইতে আনিল। একজুন একটা ছুতা করিয়া, দর্শয়িত্রীকে নিয়ে লইয়া গেলেন। যিনি বক্ষে বহিলেম,—তিনি তৎক্ষণাৎ বস্তমধ্যে ল্কাইভ একটি কুদ্র করাৎ বাহির করিয়া, ক্ষিপ্রহস্তে উক্ত কেণিটি কাটিয়া লইলেন।—সেই অবধি রক্ষকগণ সাবধনে হইয়াছেভ্—আর কাহাকেপ্ত সে কক্ষে একাকী রাথিয়া যায় না।

এই ক্রুকটি "প্রায়াঘরের" উপরিছিত। "বসিবার ঘরের" উপরিছিত ' কক্ষের নাম "চিত্রকক্ষ"। এটি পূর্বে বালক শেকপীরবের শ্রনকক্ষ ছিল। আমরা অবিকক্ষণ থাকিতে পারিলাম ন। নিমে কতলোক অপেকা করিয়া আছে। আমাদিগকে অবতরণ করিতে হইল।

এই গৃহ হহঁতে বাহির হইয়া ভাবিতে লাগিলাম,—হ্যালিওয়েলকে ধন্তবাদ,—আর একটু ছইলেই,—এ গৃহদর্শন আমার ভাগ্যে ঘটিত না। আর একটু হইলেই,—ইংলও হইতে এই গৃহ বিদায়লাভ করিয়াছিল। ধবংদ হইত বলিতেছি না,—ইংলও হইতে অদৃশু হইত। আমেরিকান্গর্গ দিব্য যোগাড়্যস্তুটি করিয়া তুলিয়াছিল। শেক্ষপীয়েরের মূত্যুর পরে এই গৃহ তাঁহার একটি ভগ্নীর সম্পত্তি হয়। সে অবধি এই সম্পত্তি দেই ভগ্নীর বংশধরগণের হস্তে থাকে। ১৮৪৭ খুটান্দে ইহা বিক্রয়ার্থ বিজ্ঞাপিত হয়। ইহা শুনিয়া আমেরিকানগণ পরামর্শ করিল,—আমরা ইহা ক্রয় করিয়া,—স্বস্ক্র উঠাইয়া জাহাজে করিয়া নিউ-ইয়র্কে লইয়া আদির।"—এই সংবাদ পাইবামাত্র, বিখ্যাত শেক্ষপীরীয় টীকাকার হ্যালিওয়েল্, উভ্যোক্তা হইয়া, চাঁদা তুলিয়া, এই গৃহ কিনিয়া ফেলেন। \*

হেন্লি ট্রাট্ ছাড়িয়া আমরা ক্রমে ব্রিজ্ এটাটে পড়িলাম। এত্ন্
নদীর নিকটবর্ত্তী হইতে লাগিলাম। নদীতীরে একটি নবনির্মিত
অট্রালিকা। ইহার নাম "মেমোরিয়ল্ থিয়েটর"—শেক্ষপীয়েরর ম্মরণার্থ
প্রিশে বংসর হইল ইহা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। কবিবরের জন্মসপ্তাহে
প্রতিবংসর এথানে তাঁহার নাটকের অভিনয় ও অক্রান্ত উংসত্ত হইয়া
থাকে। তাহা ছাড়া, একটি চিত্রশালা ও লাইব্রেরী আছে। চিত্রশালার
শেক্ষপী বির ছবি,—বিখ্যাত শেক্ষ্পীরীয় অভিনেত্গণের ছবি, এবং

<sup>\*</sup> সম্রাষ্টি আমেরিকানগণ, Dickens কর্ত্ক অমরীকৃত "Old Curiosity Shop" নামক লওনের পুরাতন দোকানটা কিনিয়া ফেলিয়াছে। স্থিছ উপাড়িয়া লাইয়া আমেরিকায় গিয়া ভাষা পুভিবার বন্দোশন্ত করিতে এখন ভাষারা বান্ত আছে।—লেখক।

শেক্ষপীয়রের নাটকের গল্পের চিত্রাবলী রক্ষিত আছে। লাইব্রেরিতের শেক্ষপীয়রের গ্রন্থের যত প্রকার সংস্করণ হইয়াছে, তৎসমূদয় সংগৃহীত আছে। তাহা ছাড়া, পৃথিধীর অস্থান্ত ভাষায় শেক্ষপীয়রের যত অশ্বনদ হইয়াছে, তাহাও সংগৃহীত আছে। এই লাইব্রেরীতে রক্ষিত বাস্থানা শেক্ষপীয়রের একটি তালিকা নিমে দিলাম।

Tempest—ঝটকা, ৩ ভাগ। প্রকৃতি নাটক। নলিনী বদস্ত।

Macbeth – कर्वीत। क्रज्ञान नाउक।

Merchant of Venice—স্থরণতা নাটক।

Comedy of Errors—ভ্ৰান্তিবিলাস।

Midsummer Nights Dream—শরৎশশী নাটক।

Hamlet—जगत्रिश्र।

Twelsth Night – স্থালা চক্ৰকে হু ৷ •

Cymbeline—कुध्यक्यात्री नाष्ठि। स्थीला वीत्रिः इ नाष्ट्रक ।

Alls Well That Ends Well—ভীষক্তহিতা উপহাস।

Romeo and Juliet—রোমিও জুলিয়েট উপস্থাস।

শেকপীয়রের গল্প প্রথম ভাগ ।\*

সেমারিয়ল শির্টর দেখিয়া নদীর তীরে তারে আমরা হোলি ট্রিনিটি চর্চ্চ দেখিতে অগ্রহর হইলাম। এই মন্দিরের অভ্যন্তরে শেক্ষপীয়ুরের সমাগ্রিআছে।

<sup>\*</sup> এই তালিকা দেখিলে বুঝা যায়, সংগ্রত সম্পূর্ণ নছে। সেক্ষণীয়রের অনুবাদ আরও অনেক বাস্থা গ্রন্থ দেখিয়াছি। যদি কোনও গ্রন্থকার বা তাছার বংশধনগণ স্বীয় অথবা পূর্ব্বপুদ্ধর রচিত শেল্পীয়রের অনুবাদ এই তালিকায় নিদেখিতে পান,—তবে তিনি সে পুশুক—"To the Librarian, Shakespears Memorial Theatre, Stratford on Avon"—এই ঠিকানায় পাঠাইতে পারেন গ্রন্থের মলাটি ইংরাজী অক্ষরে গ্রন্থের নীম, কোন্ গ্রন্থের অনুবাদ, তাছার নাম ইত্যারি লিখিয়া দেওয়া আবশ্যক, কারণ লাইব্রেরীতে বলভাষাভিত্ত কেছ আছেন বলিয়া বোধ হয় না।—লেখক।

नमीषि जाजाय कृषा जामारमत रमर्म काम कममी এछ कृष হইলে ভূগোলে বা মানচিত্রে স্থান পায় না

• নদীর উভয়তীর বৃক্ষসারির দারা ছায়াক্সত। আমরা ছায়ার ছায়ায় ক্রমে চর্চের নিকট উপস্থিত হইলাম। অঙ্গনে প্রবেশ করিয়া দেখিলাম, একটি স্থানে ঘাদের মধ্যে বিস্তর "ডেজি" ফুল ফুটিয়া त्रिवार्छ । वामत्रा व्यानकश्चिल क्ष हत्रन कतिया लहेनाम।

মন্দিরদারে আসিয়া দেখি,—উপাদনা আরম্ভ হইবার দময় উপস্থিত। এখন কোনও যাত্রী প্রবেশ করিয়া বেড়াইয়া বেড়াইতে 

স্থতরাং আমাদিগকে ফিরিতে হইল।

চর্চ হইতে বাহির হইয়া একটুকু আসিয়াই প্রদিদ্ধ উপগ্রাসলেথিকা 'भित्रि करतिनित शृश् (मिथिटि भिष्टिमाम। शृश्यानि न्एन, किन्न পুরাতনের ছাঁচে নির্দ্মিত। মেরিং করেলি এই নিভ্ত গ্রামে বসিয়া निर्ज्जात माश्जिरिया कत्रिया थारकन । ह्या देक ई जैशा क्रमशान नरह । जिन कराकंवरमत इहें उ स्विष्ठाक्राय এই তীর্থবাদ করিয়াছেন। ঠাহার জানালাগুলি লাল পদা দিয়া আবৃত্ত। সেই একটি পদার অম্বরালে বনিয়া হয়ত তিনি দেই মুহূর্ত্তেই লেখনীচালনায় ব্যাপ্ত ছিলেন। কি লিখিতেছিলেন? সেই ক্ষুদ্র গৃহটিতে বদিয়া তিনি याहा निथि टिक्टिन, जाहा (वाध-हर्य कित्रवन्नमाध)हे ममस পृथित त উপর ব্যাপ্ত হইয়া পড়িবে।\*

কিয়দুর আদিয়া "গ্রামার স্কুল" দর্শন করিলাম। এই পাঠশালার বালক শেক্ষপীরত্ত শিক্ষালাভ করেন। ইহা এখনও একটি পাঠশালা,—

<sup>\*</sup> এই ভাগাৰতী ললনার শেষ উপৰ্যাস "Temporal Power" প্রথম সংস্করণে একলক বিংশ সহত্র থণ্ড নুজিত হইয়াছিল। এপুনও একবৎসর হয় নাই,—ইতিমধ্যেই "ছিতীয় সংকরণ বন্তস্থ।"

ड्रेगांठेकर्जवामी 'वालक्ष्मण প্राज्य विष्ट प्रांति विष्या अथाति भिष्टि जारम। वर्खमान देशमरखंत उमीयमान कवि, "পा ध्रा ७ मारकिया" প্রভৃতি প্রণেত। প্রীভ্ন ফিলিপস্ও এই পাঠশালার্য ক ০থ শিকা क्रियाছिएन।

আর কিছুদূরে আসিয়া একটি বাগান দেথিলাম,—ইহার নাম "নিউ প্লেদ্"। এইথানে একটি বাড়ী ছিল,—মধ্যবয়দে শেকপীয়ুর ভাহা নিজ বসবাদের জন্ম ক্রেন। সেই বাড়ীতেই তাঁহার মৃত্যু হয়। সেই বাড়ীর পশ্চাতেই তাঁহার সহস্তপ্রোথিত মল্বেরি রুক্টি ছিল,— \* যাহার একথণ্ড কার্চ জনাগৃহের মিউজিয়মে আছে বলিয়া উল্লেখ করিয়াছি।

वाफ़ीं एकाथाय ?—नां, আমেরিকানরা উপাড়িয়া লইয়া যায় नारे। তাহার ইতিহাদ বলিতেছি।

শেকপীয়রের মৃত্যুর পুর, এই •গৃহ তাঁহার বংশধরগণের হত্তে थांक। २१०० माल हेश विक्य इहेम्रा यात्र। दिखात्र धक्, গ্যাছেল নামক একজন ধাৰ্মিক ব্যক্তি বাড়ীটি. ক্রম করিয়া, ভাহাতে বদবাদ করিতে আরম্ভ করেন।

কিন্তু শেক্ষপীয়র-প্রোথিত সেই মলবেরি বৃক্টিই তাঁহার কাল হইল। ভাঁহার (অ)শুভ গৃহপ্রবেশের প্রদিনই, পৃথিবীর কোন্ অংশ হইতে জानि ना, এक राक्ति जानिया विलिल- "ठाकूत. अनाय इहे।"

"জন্ন হোক। কি চাও বাপু ?"

"আজে সেই মলবেরি গাছটি একবার দেখতে এসেছি।"

"গাছ দেখ্বে ? বেশত, এস।"

কিন্ত গাছ দেখান একদিনেই শেষ হইল না। দিনের পর দিন ক্রমাগত যাত্রী আদিয়া বলিতে লাগিল—"আজে, গাছটি\* একবার দেখতে পাই কি?"—তাহারা শুধু গাছটি দেখিয়াই ক্ষান্ত

হইত না,—গাছটির জীবনচীরত সম্বন্ধে বেচারি গাছেলকৈ সহস্র প্রশ্ন করিত। ব্রাহ্মণপঞ্জিতের মেজাজে আর কত সহে ? এক দিন উদ্বাস্ত্র ইইয়া,—গরাগের মাথায়,—গ্যান্ত্রেল্ তাঁহার ভূতাগণকে বলিলেন— "ওরে, নিয়ে আয় তাএকটা কুড়ুল। ফ্যাল্ গাছ কেটে। গাছের জালায় কি আমি দেশতাাগী হব ?"

নেথিতে দেখিতে বৃক্ষ ভূমিদাই হইয়া গেল।\* কিন্তু খ্যাষ্ট্রেলের জালা কমিল না.—বাড়িয়া গেল। গ্রামের লোক এই সংবাদ শুনিয়া আগুন হইয়া উঠিল। পথে বাহির হইলে তাঁহার গায়ে তাহারা ধূলা দিতে লাগিল। শেষে গ্যাষ্ট্রেলকে দেশত্যাগীই হইতে হইল, গ্রাম হইতে পলায়ন করিয়া তবে তিনি নিস্কৃতি প্রাইলেন।

গ্রাম ত্যাগ করিলেন বটে, কিন্তু বাড়ীট তাঁহারই রহিল। বিক্রম করিলে মাথা নীচু করা হয়; স্থতরাং, বাড়ী তিনি বিক্রম করিতে পারিলেন না। অথচ রীতিমত ট্যাফা গণিয়া যাইতে হুইল। কয়েক বংসর পরে

\* এই বৃক্টি ট্রাট্ফর্ডবাসী একজন ঘড়িমেরামতকারী তৎক্ষণাৎ কিনিরা লয়।
নে, নেই কাঠ হইতে হোট বড় বহুসংখ্যক নানা প্রকার দ্রব্য প্রস্তুত করিয়া, কয়েক
বৎসর ধরিয়া ধনী যাত্রিগণের নিক্ট উচ্চমূল্যে বিক্রয় করিয়াছিল। কালক্রমে সেই
সমস্ত দ্রব্য পৃথিবীর নানা স্থানে ব্যাপ্ত হইরাছে।

আর্ভিং তাঁহার পূর্বোলিখিত প্রবন্ধ বলিয়াছেন "পৃথিবীর অনেক স্থানেই ত শুনা বার, সেই মলবেরিণকাঠের টুকরা আছে—সে সকল কথনই বথার্থ হইতে পারে না, অংশতঃ জাল।" ঘড়িংমরামতকারীর এই ব্যবসারবৃদ্ধিটুক্র সংবাদ আর্ভিং পাইরাছিলেন কি না জানি না, পাইলে হরত ব্রুতে পারিতেন, একটি মলবেরি রক্ষের অংশ পৃথিবীমর কি করিরা ছড়াইরা পড়িল। আমি এই বৃত্তান্ত ব্রিটিশ্ নিউজিরমে একথানি পুরাতন পুত্তকে পাঠ করিয়াছি। পুত্তকখানির নাম "Stratford Upon Avon Guide," published by Whittaker & Co., London. পুত্তকখানিতে তাঁরিখ নাই। তবে তাহাতে ১৮০৭ সালের কথা লিখিত আছে—মৃত্রাং তাহা ঐ তারিখের পর মৃজিত। ইহা আর্ভিংরের প্রবন্ধরচনার অন্ততঃ ১৭ বংসর পরে প্রকাশিত। তিটিশ নিউজিরমের ছাপ দেখিরাজ্যানিতে পারিলাম, পৃত্তকখানি তথার ১৮৫০ সালে সংগৃহীত হইরাছিল।—লেখক।

পাড়াপ্রতিবেশারা আসিয়া হাঁ করিয়া পড়িশ। **ভাছায়া ব**ি —"এ বাড়ী ভেঙ্গ না। আমরা কিন্ব।"

भगार्ष्ट्रम हिन्नू तरकवर्ग किन्निया विनित्नि—"यागि विहव मा।" "मार्द्यह मा विहर्ष ;— किन्नु ये वाड़ी डान्नर्ड भारव मा।"

গাছেল বলিলেন—"তোমরা কে হে হল। এ বাড়ী আমার-থুদী আমি ভাঙ্গব। আমার ভাগল, আমি লেজের দিকে কাট্ট তোমাদের কি ?"

বাড়ী রক্ষা পাইল না।, তাহাকে টুকরা টুকরা করিয়া ভাঙ্গিত তবে গাড়েল নিশ্চিম্ভ হইলেন।

নিউপ্লেদ্ বাগানের মধ্যে প্রবেশ করিও আনরা কি কিং বেড়.ইলাম তথা হইতে বাহির হইয়। পরামর্শ করা গেল,—চা পান করিয়া আবাহ গিজ্জার অভিমুখে বাত্যা যাউক।

রৌদ্রে ঘুরিয়া ঘুরিয়া মোমরা সকলেই ক্রান্ত হইয়া পড়িয়াছিলাম।
চায়ের স্থানে গিয়া,—একে একে আমরা সাধান জলের রীতিমত
সন্থাবহার করিয়া চা পান করিতে বসিলাম।

ছোট মিদ্ শ—সর্ক প্রথমে চা পান সমাধা করিয়া বলিলেন—"চল।"
আনু না একটু ত্বা করিয়া শেষ করিলাম। মিদ্ অ—বলিলেন—
"আমি ভারি ক্লান্ত হয়ে পড়েছি—তোমরা দেখে এদ,—আমি ততক্ষণ
এইথানে থাকি।"

. जाहा खनिया मिष्टेत द--निलितन-"कांगि । थादिनं।"

আমি বলিলাম--"কি আশ্চর্যা! তুমি যাবে না? মিস্ অ— অনেকবার দেখেছেন না হয়,—তুমি ত কথনও দেখ নি! গ্রেম এস।" পাষ্ড [লোকটা একটুকুরা কেক্ মুখের নিকট ধারণ করিয়া অনায়াসে বলিল—"আরে কি হবে সমাধি দেখে? আছো পাগল তত্ত্বণ আমরা নদীতে বোট নিয়ে একটু বেড়াইগে।"

कश इहैंन, आमत्र। नमाधि पिथिम फित्रिशाटि याहेब,—डॉइर्डिश (महेथारन आमिर्यन । তथन नकरण मिणिका हिम्मरन रक्ता याहेर्ब।

আমি মিদ্ ডি—ও ছটি মিদ্ শ—কে লইয়া বাহির হইয়া পড়িলাম। অল্লকেণ্টি চর্চের মধ্যে প্রবেশ করিলাম।

চর্চটি বছ পুরাতন—নর্দাণদের আমজের। ভিতরে প্রবেশ করিয়া প্রথমেই দেখিলাম একটি গ্লাসকেসের মধ্যে ছই খানি দেকালের প্যারিশ্ রেজিওর খোলা রহিয়াছে। একথানি দীক্ষার (Baptism) এবং একথানি সমাধির। প্রথম খানিতে রাম, শ্লাম, হরির সহিত নবজাত শেক্ষপীয়রের দীক্ষা ও নামকরণের তারিথ লিপিবদ্ধ রহিয়াছে:—

## 1564.

April 26. Güljelmüs Filius Johannes Shakspere—

অথাৎ অদ্য অমুকে মাসি অমুকে দিবসৈ John Shakespeareএর
নবকুমারের দীকা ও 'William' নামকরণ হইল।

অপর পুতকথানিতে পৃষ্ঠাভরা বিস্মৃতগণের সমাধি তারিখের সহিত রহিয়াছে:—

## 1616.

April 25. Will Shakspere, gent.

—ডিউকও নহেন, আলতি নহেন, লর্ডও নহেন, কেবলমাত্র জেণ্টল্মান্—একটি মধ্যবিত্ত লোক।

ইহা দেখিয়া আমরা ভিতরের দ্বিকে অগ্রসর হইলাম। পুরাতন ফাউণ্ট—অর্থাং প্রস্তর নির্দ্ধিত পবিত্র জলাধার, যেখানে শিশু শেক্ষ-

शीयवरक नामकवरणव शृर्क सान कवान हरेग्राह्म, जारा विक्छ আছে, তাহা এখন ভাঙ্গা,—জল ঢালিলে গড়াইয়া পড়ে। এখনকার শিগুগণকে তাহাতে আর স্থান করান হয় না।

यनिरंद्रद (नवनोगांत्र "ठात्मन्।" वामिर्क, किथि উচ्চ, <শেকপীয়রের একটি প্রস্তরমূর্ত্তি রক্ষিত আছে। জেরার্ড জন্সন্ নামক একজন ভাসর শেক্ষপীয়রের জীবিতকালে ইং। প্রস্তুত করে। কবিবরের মৃত্যুর পর 🗝 টি এখানে আনিয়া বদান হয়। তাহার নিমে থোদিত আছে:—

Judicio Pylium Genio Socratem, arte Maronem Terra tegit, populus Mæret, Olympus habet.

Stay passenger,\* why goest thou by so fast,

Read, if thov cans't, whom envious death hath plas Within this monvment, Shakespeare, with whome Qvick nature dide; whose name doth deck ys. tombe Far more than cost, sich all yt. writt,

Leaves living are but page to serve his witt.

Obüt ano. Doi 1616; Ætatis 53, die 23 Ap.

এই প্রতিমৃত্তির নিয়ে, মেঝের উপর, চঙ্গাক্ষতি অনেকগুলি मभाधि। ध्राथमहि कर्विरात्रत छोत्र; विछोत्रिछ छैदात निष्क्रत, তৎপরের श्रीम क्या, कामां अञ्चि পরিবারবর্গের।

আমি শেকপীয়রের সমাধির উপর আমার দৃষ্টি ব্লকরিয়া নত-মন্তকে দাঁড়াইয়া রাহলাম।

<sup>\*</sup> পাঠকগণ, মাইকেলের সমাধির উপর "দাঁড়াও প্রিক্বর" স্মরণ ক্রুন।---(नथक।

ण, काष्टिक, ३, २० ] द्वारिकर्छ-णन्-अन्त अव दिना १

প্রস্তরফলকটির উপরু নিয়লিখিত করেকটি পংজি খোদিত বহিয়াছে:—

GOOD FREND FOR JESVS SAKE FORBEARE

TO DIGG THE DVST ENCLOSED HEARE

BLESE BE YE MAN YT SPARES THES STONES

AND CVRST BE HE YT MOVES MY BONES.

এই করেঁকটি পংক্তি লইয়া বছকালাবধি পিছুতিগণের মধ্যে বাদামু-বাদ চলিয়াছিল। কেহ কেহ এই কবিতাকে doggerel আখ্যা দিতে ক্রটে করেন নাই। ভ্বনবিজন্ধী কবির সমাধির উপর একি অপরূপ কবিতা। তাঁহারা বলিতেন, শেকপীয়রের মৃত্যুর পর, কোনও গ্রাম্য কবি এই "উচ্চদরের" কবিতাটি "ভণিয়া" দেন,—কেবল কতকভলা বাজে শক্ষের অক্ষরসমষ্টি।

কিন্তু বিশ বংসর হইতে এই বাদানুত্বাদ কতকটা নিরস্ত হইয়াছে
অর্ফর্ডের বড্লিয়ন্ লাইব্রেরীতে সপ্তদশ শতাকার শেষভাগে লিখিত
একখানি চিঠি আবিষ্কৃত হইয়াছে। অব্লুফর্ডের একটি ছাত্র ব্রাটফর্ড্
দর্শন করিয়া তাঁহার বন্ধকে চিঠিতে বংনা লিখিতেছেন। তাঁহার
পত্রের মর্ম এই,—"গির্জ্জার একটি স্থানে একটি ঘর আছে, তাহার মধ্যে
রাশি রাশি মন্ম্যান্তি। এই অস্থিভুলি প্র্রাতন কবর খুঁড়িয়া বাহির
করা। (গির্জ্জা ও ভাহার অপনে স্থান পরিমিত। শত শত বংসর
ধরিয়া সমস্ত কবর বৃদ্ধি যথাস্থানে থাকিতে দেওয়া যায়, ভাহা হইলে
নবাগতগণের জন্ম আর স্থান থাকে না। সেই কারণে বহু শতাকী
ধরিয়া এই গির্জ্জার প্রথা যে, কবর খুর প্রাতন হইলে তাহা খুঁড়িয়া
হাড় তুলিয়া রাথা হয়়।) পাছে শেক্ষপীয়রের হাড় ভবিস্ততে কেহ
এইরূপ খুঁড়িয়া স্থানান্তরিত করে, এই আশক্ষায় কবিবর জীবিতকালে
স্বীয় সমাধির জন্ম এই অভিশাপ রচনা করিয়া যান। খননকারী ইতর

ব্যক্তিরা যাহাতে বুঝিতে পারে এই ভাশ্রিয়েই ক্রিড়ড়ামণি ওরূপ ক্রিয়া রচনা ক্রিয়াছিলেন।\*"

অক্সার্ডের ছাত্র পত্রে এই যাহা লিখিয়াছেন, ভাহা আসলৈ সভা হটক বা মিথা হউক,—সপ্তদশ শতাকীর শেষে খ্রাটফর্ডের জনশ্রুতির যে ইহা অবিকল বর্ণনা, তাহার আর সন্দেহ নাই। কবিবরের মৃত্যুর পর তথন দ্বুত বংসর মাত্র অতীত ইয়াছে। তাহার বংশধরের আমেই তথন বাস করিতেছেন। স্তরাং ইহা সত্য হুইবারই সন্তাবনা।—মৃতের অস্থি খনন করার সম্বন্ধে শেক্ষপীয়রের যে কিরপ আপতি ছিল, তাহার প্রমাণ হ্যামলেট্ এবং রোমিও ও জুলিয়েট্ গ্রন্থে আছে।

্রিড্নিল তাহার নব-প্রকাণিত লেকপায় বেব জাবনচরিতে, অক্সকট ছাতের এই পরোদ্ধের করিতে গিয়া একটু ভূগ করিয়াছেন। কিন লিখা ছন, এই পরের একটি প্রতিলিপি ১৮৮৪ সালে "লগুনে প্রকাশিত হইয়াছে।"—ভাহা ঠিক নহে। এই পত্র জাবিক্ষত হইবার পর হ্যালিওরেল্ বর্জুসমাজে বিতরপের জন্ম ব্রাহটন্ নগরে ৫০ থানি "privately" মৃত্রিত কর্মেন, তাহা ১৮৮৪ সালেই বটে। এই পকাশখানির একথানি তিনি ব্রিটিশ্ মিউজিয়নে দান করেন । আমি ব্রিটিশ্ মিউজিয়নের ভালিক। পুরাত্রপুর্বারূপে অবেষণ করিয়াছি। Act of l'arliament অনুসারে, United নিলেপ্রতালে প্রকাশিত প্রত্যেক প্রশ্ব বা কাগজ ব্রিটিশ্ মিউজিয়ন একথানি পাইয়া থাকেন। এ পত্র যদি প্রকাশিত হইত, তবে ব্রিটেশ্ মিউজিয়ন একথানি পাইয়া

আমি বিটিশ মিউজিংমের নৈই পুন্তক হইতে উক্ত পত্তের আবস্থাক আশ্লুকু নাকল করিয়া আনিয়াছি। তাহা এইরূপ:—"Dear Neddy.......There is in this church a place which they cal' the bone-house, a repository of all bones they dig up, which are so many that they would load a great number of waggons. The poet, being willing to preserve his bones unmoved and haveing to do with clerks and sextons for the most part a very ignorant sort of people, he descends to the meanest of their capacitys and disrobes himself of that art which none of his contemporaries were in greater perfection."

Extract from a letter written by William Hall of Queen's College, Oxford to Edward Thwaites (the well-known Anglo-Saxon scholar). Undated. But supposed from extraneous evidence to have been written about December 1694.— (2014)

কবিবরের সমাধির সমশ্যে কিছুক্ষণ নতনেত্রে দীড়াইয়া থাকিয়া, সঙ্গে যে "ডেজি" ফুল ছিল,—তাহাই কয়েকটি দিয়া পূজা করিয়া আমরা বিদায় লইলাম।

আনুমরী চারিজনে ফেরিলাটে যখন আসিলান, তথন ৭টা বাজিতে আর ২০ মিনিট নাত্র আছে;—৭টার সময় গাড়ী ছাড়িবে। কিন্তু তাহারা কোথায়?—মিদ্ অ—এবং ব—র ত কোন চিহ্নই দেখা যাইতেছে রা! তবে কি তাহারা আমাদের বিলম্ব দেখিনা, প্রেশন অভিমুখে অগ্রবন্তী হইরাছে?

মিস্ ডি—বলিলেন—এরপ অবস্থায় ষ্টেশনই যথার্থ সন্মিলনস্থান —স্তরাং ষ্টেশনে গিয়া দেখা যাউক।

ষ্টেশনে আদিলাম, তাহারা কৈ ? ওপারে ট্রেণ প্রস্তুত হইয়া দাঁড়াইয়া আছে ;—এজিন হইতে ব্রেকভ্যান পর্যান্ত খুঁজিলাম, তাহায়া কোথায় ?

তথন আমরা চারিজনে গাড়ীতে উঠিলাম। সাতটা বাজিতে আর পাঁচ মিনিট মাত্র বাকা—আর ছই মিনিট—আর এক মিনিট মাত্র আছে। ঐ তাহারা আসিল। প্রপাক্ষের প্লাটফর্মে তাহাদিগকে দেখিতে পাইলাম। তাহারা চঞ্চনেত্রে আমাদ্রিকে খুঁজিতেছে!

ইচ্ছা হইল, জানালা হইতে মুখ বাড়াইয়া, তুই হাত সজোরে লিছিয়া সপ্তামু বলি "আরে শিগুলির এস, শেগ্গির এস''—কিন্তু মনে পড়িল ইহা ভারতবর্ষ নহে—যুরোপ। স্বতরাং শিশ দিয়া তাহাদিগকে সক্ষেত করিলাম মাত্র।

্ কিন্ত তাহারা পৌছিবার পূর্কে গাড়ী ছাড়িয়া দিল। আমাদের দেশের মুক্ত এদেশে সমারোহ করিয়া 'ছাড়িবার ঘণ্টা' পড়ে না। যথা- সময় হইলে নিঃশব্দে গাড়ীট ছাড়িয়া বাম। গাড়ী চলিতে লানিল নথন ব্রিজের সিঁড়ির কাছে অ(সিলাম, তথন দেখিলাম ব—সম্বাদ্ধি গজেলগমনে নামিতেছেন।

মনে মনে বলিলাম—্যেমন কম্ম তেম ন কলা! ব—ভূমি আমাদের শেক্ষপীয়রকে তাচ্ছিলা ক্রিয়াছিলে — বেশ ইয়াছে—বেশ ইয়াছে!

উত্তেজনা কতকটা প্রশ্নিত হইলে,—বন্ধ্বিচ্ছেদশোকে স্থামরা অত্যন্ত বিহ্বল ইইয়া কেবল হাসিতে লাগিলাম। সেই গভীর শোকের মধ্যেও, তাহাদের অংশের শাস্তদ্রব্যগুলি বাধা হইয়া আমানিগকেই শেষ করিতে ইইল।—ক্রনে শ্রম আমরা অক্ষড় পার ইইলাম,— আকাশে চন্দ্র উঠিল,—তথুন শোকভবে আমি শ্রমার স্নিনীগণকে গান গাহিতে অন্রোধ করিলাম। সে কামরায় আমরা ভিন্ন আর কেইই ছিল না—স্ক্রমাং আমাদের শোকচক্রার কোনহ ব্যাহাত হটে নাই।

পরের গাড়ীতে তাহার শাসিয়া পৌছিলেন।—বলিলেন—গাড়ী
'মিস্' হইল দৈথিয়া আবার তাহারা নদীতে ফিরিয়া গিল বোট লইয়া
একটু সান্ধাবায়ু সেবন করিয়াছিলেন। আমশা যতক্ষণ তাহাদের অভ্ন
শোকে বিলাপ করিতেছিলাম,—ঠালারা ততক্ষণ এইয়পে কালাতিপাত
করিয়াছেন !—সেটা কি তাঁহাদের উচিত হইয়াছিল ?

श्रीश्राक्षणात्र मुत्थाभाषाय ।

সকল দেশের সাহিত্যে ও নাটোর রচনা-পদ্ধতিতে কতকগুলি সাধারণ ও কতকগুলি বিশেষ লক্ষণ পরিলক্ষিত হয়।

नाडेक विलाल आमता माधात्रविः कि वृत्रिया थाकि ? नाडेक काशांक वरण ? यथन, कवि निक्रमूर्थ किছू वर्गना ना कित्रिया, कान •আথাায়িকায় কতকগুলি পাত্রকে কোন কার্য্যে প্রবৃত্ত করাইয়া, তাহাদের निজমুথে নিজকণা কথোপকথনচ্চলে ব্যক্ত করান, তথনই তাহা নাটকের আকার ধারণ করে। কিন্তু উহা কেবল নাটকের বাহ্ আকার মাত্র। ঐ সকল পাত্রগণ পরস্পরের সহিত এমন ভাবেও কথা কহিতে পারে, যাহাতে পরস্পরের মনে কোন প্রকার বিকার উৎপন্ন 'হয় না—উহাকে কি নাটক বলা যাইতে পাত্রে? "তুমি কেমন আছ? —আমি ভাল আছি" ইত্যাকার কথাবার্ত্তায় নাটকীয় ভাব প্রকাশ পায় ना—উহাকে नाটक वला यात्र ना। এই প্রকার কথোপকখন, অঞ্চ हिमादि यज्हे यत्नात्रम रुष्ठेक ना, नाष्ट्रक्त हिमादि छेहा कनश्रम नह्ह। প্রধান পাত্রদিগের পরস্পরের মনে কোন প্রকার বিকার উৎপাদন করাই নাটকের প্রধান কার্য্য, এবং ভাহার উপরেই নাটকের নাটকন্ত নির্ভর करत। এই गानिकि विकारतत्र भैगष्टि मसूर्यात् প্রকৃত জীবন। এই ञ्चथ्रःथमम् कौरतन, मास्कञ्चथरक जानिक्रन ও इःथरक পরিহার করিবার জন্ম সতত চেষ্টা করে, এবং ভবিতুব্যতার সহিত সংগ্রাম করিয়া, নিজ পুরুষকার প্রকটিত করে। এই মানসিক জীবন-সংগ্রামে মানুষ উচ্চতর উদ্দেশ্য সাধ্নের জন্ম, নিজ স্বার্থকেও বিসর্জন দিতে কুটিত হয় না। তारे, नाउँक वामन्ना দেখিতে পारे, मान्य পরস্পরের সহিত নানা मयरक वक रहेशा, कथन मज्ञाति, कथ्म मिज्ञाति भव्याति भव्या

ব্যবহার করিভেছে। এই কার্যাশীলতাই নাটকের প্রাণ। নাট্য-কাঁ
জীবনের সামান্ত দৈনিক ঘটনাগুলি বাদ দিয়া, যে গুলি প্রধান ঘটনা
যাহা পরস্পরের মনোবিকার উৎপাদনে সমর্থ—তাহাই নিদিষ্ট পা
সরের মধ্যে, মুখারূপে প্রদর্শন করেন এবং এমন ভাবে প্রদর্শন করে।
যাহাতে তাঁহার নাটকীয় উদ্দেশ্ত সিদ্ধ হইতে পারে। ইহার উপরে
নাট্য-করির গুণপনা নির্ভর করে।

वाधूनिक উপग्रामिड এইরূপ কথোপকথন, মধ্যে মধ্যে থাকে বটে, किन्छ मिटे कथावार्जात्र मधा कथन कथन य काँक পড়িয়া यात्र, आशान-কবি তাহা নিজ কথায় পূরণ করিয়া দেন; অর্থাৎ সেই আহুষজিক व्यवश्रा । शहेता छो होत निष मूत्य वर्गना करत्न। किन्न नांग्र-किव এরপ উপায় অবলম্বন করেন না। ভিনি সকল স্থলেই ভাঁহার পাত্রগণকে জীবন্ত ব্যক্তিরূপে দাজাইয়া আসরে আনয়ন করেন; এবং তাহাদের ব্যবস্থার অমুরূপ কথাবার্ত্তা তাহাদের নিজের मूथ मिश्रार्ट वाक करवन। উপग्राम ও नाउँ कित तहनात्र এই मूथ्र প্রভেদটি স্পষ্টরূপে উপলব্ধি হয়। এই জন্মই রঙ্গণীঠের আবশ্রকভা। অভিনয় প্রদর্শন করাই নাটকের মুখা উদ্দেশ্র। অমুকরণরতিই অভিনয়ের মূল। কোন নাট্য-রচনাকে ত্ই হিসাবে বিচার ও পরীকা। করা যাইতে পারে। এফ, উহার কাব্যাংশ লইয়া, আর এক, উহার माँगाः म शुरुषा। नाष्ट्रक मृभा-कार्तात्रं असर्गतः, अञ्जित्रहे उद्यात साम। উৎক্ষু নাটক মাত্রই কতকটা কাব্যরসাত্মকণ এ হলে শুধু চন্দোবজ লেখাকেই আমি কবিতা, বলিতেছি লা। কি গতা, কি পতা, উভয়েভেই কাব্য-রস থাকিতে পারে। নাট্য-রচনার ভাবে ও বস্তু-কল্পনার মধ্যে যে কাব্য-রস প্রকাশ পায়, তাহা কাব্যাংশেরই সামিল। নাটকের नांगुक्ना वित्निषक्रात्थ किम्ब हिभन्न निर्कत करत ? यथन नम्स नांग्रेटक्न মধ্যে একটি অবিচ্ছিন্ন অথও সসম্পূৰ্ণ যোগ প্ৰকাশ পান, ভ্ৰমই উহা

कनात्र मर्था পরিগণিত হয়। भिन्नकना भाजেत्रहे এইরপ প্রস্তৃতি। প্রত্যেক ললিত কলার বিশেষ সৌন্দর্য্য একএকটি বিশেষ-বিশেষ আকারে অভিব্যক্ত হইয়া থাকে। এই আকার-রচনা, এই রূপ কলনা প্রত্যেক কলা-বিন্তার ভিত্তিভূমি। যথন কোন কলা-কবি স্বকীয় কোন ञ्चलत्र मानून-প্রতিমাকে বাহিরে মৃত্তিমান করিয়া প্রকাশ করেন, তথনই তাহা লিলিত কুলার অন্তর্গত হয়। তাজমহলের গঠনে যে রূপ-কল্পনা লক্ষিত হয়, ভাহার বিচিত্রতার মধ্যেও একটি স্থন্দর একতা আছে। °এই বিচিত্রতার মধ্যে স্থলর সামঞ্জদ্য ও একতা রক্ষিত হইয়াছে বলিয়াই, তাঁহার শিল্প-নৈপুণ্যের এত প্রশংসা। গ্রীশদেশীয় নাট্য-সমালোচকগণ এইজন্ম নাট্য-কলার তিনটি একতার প্রয়োজনীয়তা প্রতিপাদন করেন। প্রথম—কালের একতা, দ্বিতীয়—স্থানের একতা, তৃতীয়—আখ্যান-বস্তর একতা। কিন্তু সেকাপিয়ার প্রভৃতি কত্কগুলি युर्त्राभीय नाऐरक मिनकालित এकछा छछछ। त्रिक्छ इय ना । आधुनिक যুরোপীয় সমালোচকগণ, বস্তগত একতা ও উদ্দেশ্যগত একতাকেই विष्य প্রাধান্ত দিয়া থাকেন। আমাদের সাহিত্য-দর্পণও কতকটা এই মতের পক্ষপাতা। সাহিত্য-দর্পণ বলেন--- •

> "বিচ্ছিন্নাবস্ত রৈ- কার্থঃ কিঞ্চিৎ সংলগ্ধবিন্দুকঃ। যুক্তোন বছুভিঃ কার্যার্থীজসংক্ষতিমান্ন চ॥"

অর্থাৎ "নাটকের বিচ্ছিন্ন অবাস্তর অংশগুলির মধ্যে মূল উদ্দেশ্তের সমতা রক্ষিত হওয়া চাই; বিলুগুলি—অর্থাৎ মূখ্য ঘটনার অংশগুলিও কিঞ্চিৎ সংলগ্ন হুওয়া চাই; নাটকে বহু ব্যাপাদ্ধ থাকা সকত নহে এবং বীজ অর্থাৎ গ্রন্থের প্রকৃতিরূপ মূল কারণেই ঘাহাতে সংহার না হয়, তৎপ্রতি দৃষ্টি রাখা চাই।" নাটকের উদ্দেশ্য ও প্রকৃতি সম্বন্ধে আধুনিক মুরোগীয় সমালোচকগণ বাহা বলেন; আমাদের প্রাচীন সমালোচকগণও ঠিক তাহাই প্রতিপাদন করেন।

পূর্বে উক্ত হইয়াছে অভিনয়ই নাট্যকলার প্রাণ। নাট্যশা চারি প্রকার অভিনয়ের উল্লেখ পাওয়া যায়,—বাচিক, আহা माखिक ও আঞ্চিক। গগ্য পদাদির দারা অর্থযুক্ত রচিত বাক্যের দা যে অভিনয় হয়, তাহাকে বাচিক অভিনয় বলে। নেপথ্য-বিধানে बात्रा (म অভিনয় হয়, তাহাকে আহার্য্য, অভিনয় বলে। নেপথ্য-বি চারি প্রিকার,—পুস্ত, অলফার, সংজীব ও অঙ্গ-রচনা। শৈল, যান বিমান, চর্মা, বর্মা, অন্ত্র, ধ্বজ, পতাকা, এই সকলের নাম পুস্ত। মাল व्याज्यन ५ वद्यानि वाता यथार्यागाक्राप वक्षानि ভृषिত कर्त्रारक वनकातः নেপথ্য কহে। নেপথ্য হইতে যে প্রাণী প্রবেশ হয়, ভাহার নাম সংজীব। পুর্ব্ধেক্ত শোগাভরণাদি ও বিবিধ বর্ণের দ্বারা সাজানকে অঙ্গরচনা বলে। স্থগ্ঃখাদি মনোবিকারকে সত্ত বলে। এই मानिकात्र वाषे अकात् । यथा,—खख, त्यत्र, त्त्रामाक, खत्राज्यन, त्वभथू, विवर्ग छ।, श्रम्भ ଓ প্रवस्र। विशे मकल जाव প্रकान कवित्रा य अजिनस्र হয়, তাহাকে সাত্ত্বিক অভিনয় বলে i

वक्ष वो हर्मानि हार्त्री एव मृना निर्माण कर्ना यात्र, ভाहात नाम माकिया; मिरे मृणा एपि यञ्चचित्र ज्य, তবে তাহাকে ভिक्रिया वर्ण; य पृणा ८ हियान थारक छारा ८ हियान। हेरांत्र यक्षा मिछ पृष्णात কোন উল্লেখ নাই।, কেহ কেহু বলেন, পূর্বে চিত্রপটের দৃশ্রও রকালমে" ব্যবহাত ইইত; তাঁহারা বলেন যৈ, ভবভূতীর "উত্তর রাম-চরিতে," দীতাকে লক্ষণ তাঁহাদের পূর্বতন ভ্রমণ-পথের যে চিত্র প্রদর্শন कतियाছिलन, তाহাতেই প্রমাণ ইয় যে সেকালে সচিত্র দৃশাও ছিল। किस এই यে চিত্র প্রদর্শিত হইয়াছিল, তাহা আখ্যান-বস্তরই অসীভূত, তाश नाछान्त्थत हिमार्व अनिर्भित इत्र नाहे। जार्च धक कथा, मिकारणद ि विक्रांत व्यानक निमर्गन भा उसा यात्र वर्छ, किन्छ मूत्र निक्छा-সূচক পরিপ্রেক্ষিত চিত্রলৈথা-পদ্ধতি জানা ছিল কি না, কিয়া

প্রচলিত ছিল কি না, সে বিষুষ্ণে বিলক্ষণ সন্দেহ আছে। বাস্তবের कडकछ। অञ्चर्कत्रण कत्रित्रा, पर्नाटकत्र हिख-विदीय উৎপाদন कत्राहे अভि-नरश्वत এक मि मूथा छ दिना। किन्न य मृगा-ित मूत्र देनक छात्र को नन প্রকটিত না হয়, তাহা বাস্তবিক বলিয়া ভ্রম হইবার কোন সম্ভাবনা নাই। এই জন্মই বোধ হয়, তথনকার নাট্যাভিনয়ে সচিত্র দৃশ্যের ব্যবহার ছিল্প না। রথ, বিমান, জীরজন্ত প্রভৃতি রঙ্গণীঠে আনীত হইত, কিন্তু কে। এক বার সচিত্র দৃশ্য প্রদর্শিত হইত না। এক স্থান হইতে স্থানান্তরে যাইবার আবশ্যক হইলে দৃশ্য পরিবর্ত্তনের আবশ্যক হইত না—রঙ্গণীঠের উপর চতুর্দিকে পরিক্রমণ করিয়াই তাহা স্থচিত হইত। ফলকথা এথনকার স্থায় সেকালে দৃশ্যাদির আড়ম্বর ছিল ना, चानकि। पर्भकापत कल्लनात छेशद्रारे निर्धित कता रहेल। এकाल, দর্বদেশের রঙ্গালয়েই দৃশ্য প্রদর্শনের আড়ম্বর বাড়িতেছে এবং প্রকৃত অভিনয়ের ক্রমশই অবনর্তি হইতেছে। প্রাচীন ভারতের রঙ্গালয়ে ছিল। অভিনয়-বিদ্যার কভটা উন্নতি হইয়াছিল, তাহা ভরতের नाष्ट्राभाञ्ज পार्ठ कत्रिष्टा উপল कि श्र। आर्थुनिक यूर्त्राभीय माहिर्डा expression—অর্থাৎ অমুভাব সম্বন্ধে অনেক উৎকৃষ্ট গ্রন্থ বাহির रहेश्राष्ट्र, किन्छ व्याभाष्यत्र नाष्ट्राभाष्ट्रात्र ভাবপ্রকাশের ব্যাপারসমূহ বেরপ পূজামুপুজরুরে বিবৃত হটুয়াছে, সেরা আর কোথাও দৃষ্ট र्य ना। जामामित्र नाष्ट्राभारत जावश्रकाभमश्रीस विकानिक स्मा पर्यत्नेत्र विवक्त পরিচয় পাওয়া যায়। नाष्ट्राभाखित আলোচনা-পদ্ধতিও অতি বিশুদ্ধ। "উহাতে ঝিভাব, ভাব, অমুভাব ও রস এই চারিটি তথ্য অমুদ্রণ করিয়া অভিনয়-বিদ্যার তত্ত্ব সকল নিরূপিত হুইয়াছে।

विভाव कि ?—ना, य वार्श व्यवसा ও घटेना इहेट असूराइनरम ভাব উদ্দীপিত হয় তাহাই বিভাব; এবং এই হৃদয়-ভাবের বাহ্

লক্ষণ সকল যাহা মুখাদি অকপ্রত্যকে প্রকটিত হয়, তাহাই অমুভাব। ভাব ও রসে বিশেষ কিছু প্রভেদ নাই। ভাবগুলি যথন উপভোগ করা যায়, অথবা আস্বাদন কুরা যায়, তথনই তাহা রক্ষনামে অভিহিত হয়। নাট্যব্যাপারে এই রস, স্বাভাবিক অভিনয়ের দারা, প্রেক্ষক-মণ্ডলীর হৃদয়ে সঞ্চারিত হয়: যে ভাবের অভিনয় হইতেছে, সেই ভাব যথন উপস্থিত দর্শক মণ্ডলীর•মনে উদ্দীপিত হয় সেই আভিনয়কেই উৎকৃষ্ট অভিনয়,—সরস অভিনয় বলা যায়। নাট্যশাল্ডোল্লিখিত এই রস আট প্রকার,—শৃঙ্গার, হাস্ত, করুণ, রৌদ্র, বীর, ভয়ানক, বীভৎস ও অদুত; এবং ইহারই অনুরূপ আট প্রকার স্থায়ী ভাব, যথা:---রতি, হাস, শোক, ক্রোধ উৎসাহ, ভয়, জুগুপ্সা ও বিশ্বয়। নাট্যশাস্ত্র वलन, "रयमन मञ्चरात मेर्या ताका, निर्यात मर्था छक, ममछ ভাবের मधाः श्रामां ভাব গুলি সেই রূপ। ধেমন রাজা বহু জন-পরিবৃত হইলেও वाका এই नाम পारेया थाद्कन, অञ्च कान পুরুষ তাহা পায় না, সেইরপ বিভাব ও ব্যভিচারী-পরিবৃত স্থায়ী ভাবই রসন্ত লাভ করিয়া थारक।" এই मक्न शामी ভाব হইতে যে সক্ল গোণভাব অবস্থামুসারে উৎপন্ন হয় তাহাদিগকে ব্যভিচারী বা সঞ্চারীভাব বলা যায়। নির্ফোদ, भ्रानि, भक्षा, अरुवा, यम, अय, आमञ्ज, देनग्र, हिन्छा, स्वाह, च्रुडि, ব্রীড়া, চপলতা, হর্ষ, আবেগ, জড়তা, গর্ব্ব, বিষাদ, ঔৎস্কুকা, নিজা, আপসার, স্থপ্তি, জাগরণ, অমর্য, অবহিন্ত, উগ্রতাং মতি, ব্যাধি, উন্মাদ, শরণ, ত্রাস ও বিভর্ক এইগুলি ব্যভিচারী ভবে। এইগুলি সর্বসমেত ভেত্তিশটি। সাধিক ভাব আটটি, যথা:—ন্তজ্ঞ, স্বেদ, রোমাঞ্চ, স্বরভন্ধ, कम्म, टिवगा, अक ও প্রলয়। কিন্ত আখার বিবেটনায়, এই সাভিক ভাবগুলিকে অমুভাবের শ্রেণীতে ধরিলেই সঙ্গত হইত; শারণ, এই मकन ভাবও ভাবেরই শারীরিক ব্লাহ্য লক্ষণ মাত্র। বিভাব, অনুভাব, अ वाजिठात्री जारवत्र मः यार्शिह त्रमित्र निष्णि इहेगा थारक। अत्रज्यूनि

বলেন, "বেমন নান। ব্যঞ্জন ও ঔ্বধিজ্ব্যু সংশ্রোগে রসের স্মাবেশ হয়, সেইরূপ স্থায়ীভাব সকল মানা ভাব দ্বারা অন্থগত হইয়া রসম্ব প্রশিষ্ট হইয়া থাকে। রস কিরুপ—না, যায়া আখাদ্য। বেমন লাকে নানা বাঞ্জন যুক্ত স্থসংশ্বত অয়ভোজন করিয়া রস আখাদ্য করে, সেইরূপ মনস্বী নাট্যদর্শকেরা নানা ভাবাভিনয়-প্রকাশিত স্থায়ীভাব-দকল স্বাস্থাদন করিয়া থাকেন। ভাবহীন রস নাই, এবং ভাবও রসহীন নহে; অভিনরে উভয়ের সিদ্ধি পরস্পরকৃত জানিবে। যেমন ব্যঞ্জন ও ওয়ধি সংযোগে অয় স্বাহ্ণ হয়, রসভাবকে সেইরূপ জানিবে; ফলতঃ এই হই অনুখান্তাপেক।" ভরতমুনি বলেন, শৃক্ষায়, রৌজ, বীর ও বীভংস এই চারিটি মন্তান্ত রসের মূল। শৃক্ষায় হইতে হাস্য, রৌজ হইতে করুণ, বীর হইতে অন্তুত, এবং বীভংস হইতে ভয়ানক উৎপন্ধ হয়। শৃক্ষারের বাহা কার্য্য তাহা হাজ্ব; রৌজের যাহা কার্য্য তাহা করুণ, বীরের যাহা কার্য্য তাহা অন্তুত; মারু যাহা বীভংসদর্শন তাহা ভয়ানক।

এই সকল বিভাব, ভাব, ও অমুভাব অনুসরণ করিয়া নাট্যশালে নাট্যভিনরের কিরূপ উপদেশ দেওয়া হইয়ছে; তাহার ছই একটি দৃষ্টান্ত এইখানে উক্ত করি,—তাহা হইতেই বুঝা যাইবে, অভিনর সম্বন্ধে নাট্যশাল্ডকারের কতটা স্ক্লদৃশিতা ছিল। শোক-অভিনরের এইরূপ উপদেশ আছে:—"প্রিশ্ব-বিয়োগ, বিভব-নাশ, বই বন্ধন ইত্যাদি বিভাব হইতে শোক জয়ে। অশ্রুপাত, বিলাপ, পরিদেবন, বিবর্ণতা, সমভঙ্গ, দেহ-শৈথিলা, ভূমিপাত, ক্রন্ধন, দীর্ঘ-নিঃখাস্ইত্যাদি অমুভাব বারা ইহার অভিনয় করিবে। রোদন তিন প্রকার :— আনন্দ্রাক্ত তারাভাকনিত, ও মর্যাক্ত। তয়ধ্যে যাহা আনন্দ্র তাহাতে গও হর্ষে উৎকুল, এবং অমুসারণহৈত অপান্ধ হইতে অশ্রুপাত ও রোমাঞ্চাদি হয়। যাহা কাত্রতা-ক্রিত, তাহাতে পর্যায়ক্কপে অঞ্জ্পাত ও

মুক্তকণ্ঠতা, অহাইড়দেছের নানারূপ চেষ্টা, ভূমিসাত, ও বিশাপাদি হয়। ্যাহা স্ত্রীলোকের ঈর্যাক্ত তাহাতে পাও ও ওঠ ক্রুণ, শির:কম্প, क्रकृष्टि, ও क्षेट्रांक्य कूष्टिनका हेन्या क्रिशा थारक ? क्रेड ए नी उ-প্রকৃতি মনুষ্যের তুঃধজ শোক হয়; উত্তম ও অধ্যমের ধৈর্য্যের সহিত এবং নীচের রোদনের সহিত ইহার অভিব্যক্তি হইবে।"

ক্রোধ সম্বন্ধে, ভরতমুনি এইরূপ বলিয়াছেন:—"বিবাদ, কুলহ ও প্রতিকূলাচরণাদিদ্বারা ক্রোধ জন্মে। শত্রু নির্য্যাতন **করিবার সম**য়ে কোধে মুথ কুটিল ও উৎকট হইবে, কর-পরামর্যণ, ঘনঘন ভুজদত্তে দৃষ্টি নিক্ষেপ, ও দন্ত প্রকাশ করিবে। কোন গুরুলোকের উপর কোধ হইলে দৃষ্টিটা কিঞ্চিৎ অধোমুথ হইবে, দেহের অল্প অল্প ঘর্ম্ম মুছিতে থাকিবে, এবং কঠোর চেষ্টা অব্যক্ত রাথিবে। কোন প্রণয়ীর ক্রোধ হইলে বিচরণ সম্লতর হইবে, অপাঙ্গ বিক্ষেপের সহিত অশ্রুপাত, জকুটি ও ওষ্ঠক্ষরণ করিছে। পরিজনের উপর ক্রোধ হইলে কুরতা-রহিত হইয়া তর্জন, ভর্ণনা, নেত্র-বিষ্ণারণ ও বিবিধ প্রকরার দৃষ্টিপাত করিবে।" বাহুল্যভয়ে আর উদ্ত করিলাম না। এই তুইটি দৃষ্টাস্ত श्रेट डिशनिक श्रेटिन, नाष्ट्राभाक्षकाद्भित कछ्ण जूर्यापर्नन छ देवछानिक विदल्लयग-निक हिल।

একণে, প্রাচীন ভারতে নাটা রচনাপদ্ধতি কিরপ ছিল তাহার আলোচনা করা যাউক ৭

पृथ ও প্রাব্য ভেদে কারা ছই প্রকার। দৃশ্রকাবাই অভিনয়ের যোগ্য। দৃশুকাব্যকে রূপক বলে; কারণ তাহার পাত্রাদিতে ব্যক্তি विश्नारम् क्र कार्याभ क्र इश्वा क्र भिष्टि । क्र भिष्टि । क्र क्र जि । नार्षेक, প্রকরণ, ভাণ, ব্যায়োগ, সমবকার, ডিম, ঈহামৃগ, অঙ্গ, বীথী, প্রহসন--এই দশ প্রকার। উপরূপক এইগুলি:—নাটিকা, তোটক, গোষ্ঠি, সম্ভক, নাট্যবাসক, প্রস্থান, উল্লাপ্য, কাব্য, প্রেম্বান, রাসক, সংলাপক, জীগদিত,

শিয়ক, বিলাসিকা, হর্মালকা, প্রকরণী, হল্লীশা, ও ভানিক;—এই অস্টাদশ উপরপক। এই উপদ্ধাপক ও রূপক স্বরপতঃ একই, এবং নাটকো প্রভৃতি নাটকাদিরই মত। আমুমরা এই প্রবন্ধে নাটকেরই সাধারণলক্ষণগুলি বির্ত্ত করিব। রূপকের সমস্ত ভেদগুলির বিশেষ লক্ষণ বির্ত্ত করিতে হইলে বাহলা হইয়া পড়িবে, সেইজন্ম এই প্রবন্ধে বিরত হুইলাম।

কোন প্রাসিদ্ধ বৃত্তান্ত লইয়া নাটক রচিত হয়। স্বকপোল-কল্পিভ বুতান্ত লইয়া নাটক রচিত হয় না। ইহা পঞ্চান্ধিযুক্ত; বিলাস, ঋদি, বিভূতি আদি শুণ ইহাতে থাকা চাই। বিলাস, অর্থাৎ ধীরদৃষ্টি, বিচিত্র গতি, সন্মিত বাক্য,—এই প্রকারযুক্ত পুরুষের গুণ। ঋদ্ধি-আদি কি?— না, অভাুন্নতি, ধৈগ্য, গান্তীগ্য প্রভৃতি। বিভূতি কি ?—না, কথন সুথ, কথন ত্রংথ উদ্ভূত হইয়া নানাপ্রকার রুরসের আবির্ভাব। নাটকে পাঁচ হইতে দশ অন্ধ থাকে। ইহার নায়ক, গুণুবান, প্রখ্যাতবংশ, প্রভাপ-वान, धीत्रामांख, त्राकिष्, यथा इश्वराम ; मिया नामक, यथा श्वीकृष्णाम ; দিব্যাদিব্য নায়ক অর্থাৎ নরাভিমানী দেবতা নায়ক, যথা রামচক্রাদি। হয় শৃঙ্গার, নয় বীর-এই তুই রসের মধ্যে একটি রস ইহাতে षकी वर्थार श्रधान इट्टाव ; वात्र ममछ तम इटीत वक, वर्थार महकाती হইবে। আর নির্বহণ, অর্থাৎ উপসংহার ক্লালে ইহার কার্য্য অন্তুত হওয়া চাই। ইহার মুখ্যপাত্র-অর্থাৎ কার্য্য-ব্যাপৃত পুরুষ চারিটি কিষা পাঁচটি হইবে। ইহার আকার গোপুছাদির জায়, অর্থাৎ ইহার অভগুলি ক্রমস্ক্র হইবে। কেহ বলেন, যেমল গোপুছের কভকগুলি লৌম দীর্ঘ ও কতকগুলি হ্রস—ইহাও সেইরপ नाउँ कि नायक-চরিত্র প্রত্যক্ষবৎ প্রতীয়মান হইবে, রসভাব সমুজ্জল रहेर्द, भकार्थ न्लिष्ठ ७ अतिशृष्ठ रहेर्द। कूम हूर्वक-वर्षाৎ मध्य यदश आक्रम भण्छ मनिविष्ठें शाकित्व। विक्रिन क्या खन कश्मश्रीवान

মধ্যে মূল উদ্দেশ্যের রমতা রক্ষিত হইবে। বিল্পুলি, অর্থাৎ প্রধান ঘটনাগুলিও কিঞ্চিৎ সংলগ্ন হইবে। ইহাতে বহু বাাপার থাকা সঙ্গত নহে। বীজ অর্থাৎ প্রকৃতিরূপ মূলকারণের সংহার না ইর, তংপ্রতিও দৃষ্টি রাখিতে হইবে। নানা বিধান-সংযুক্ত হইবে। পদ্যের অতি প্রাচ্যা না থাকে, আবশ্যক কার্য্যের কোন ব্যাঘাত না হয় তাহাও দেখিতে হইবে, যে আথানে বা কথা অনেক দিনে সম্পাদিত না হয়, সেইরূপ আথান বা কথা ইহাতে সংযুক্ত হইবে। ইহাতে নায়ক আদর অথবা সমীপবর্ত্তী থাকা চাই, এবং তিন চারিটি পাত্রও, ইহাতে সরিবেশিত করা চাই। দ্রাহ্বান, বধ, যুদ্ধ, য়াজাদেশাদির বিপ্লব, বিবাহ, ভোজন শাপ, উংসর্গ, মৃত্যু, রতি, দম্ভচেদন, যাহা ব্রীড়াজনক, শয়ন, অধরপান, নগরাদি অবরোধ, স্নান, অম্বলেপনাদি ইহাতে বিবর্জিত হইবে। অঞ্জের শেষে সমক্ষ পাত্র নিজ্ঞান্ত হইবে। (অঙ্কের এই নির্মটি করাষ্ট্রী নাটকের বিশেষত্ব)।

নাটকের প্রথমেই পূর্করঙ্গ; তারপর সভাপ্তা অর্থাৎ সভাপ্রশংসন; তারপর কবির নামাদি কীর্ত্তন, তাহার পর প্রস্তাবনা নিবদ্ধ
করিবে। নাট্যবস্তর পূর্কে নটেরা যাহা করে তাহাকে পূর্করঙ্গ অথবা
মঙ্গলাচরণ রলে। পূর্করঙ্গে বিদ্যোপশাস্তির জন্ত নান্দী অবশুক্তব্য।
দেব বিজ নূপ প্রভৃতিরু আনন্দায়িনী স্তুতি কিম্বা আশীর্কাদকেই
মান্দী বলে।

পূর্ববিধান সমাধা করিয়া স্তধর রক্ষণ্থলৈ ফিরিয়া আইসেন।
ফিরিয়া আসিয়া তিনি কাব্যন্থাপনা করেন, বীজ, মুখ বা পাত্রের স্চনা
করেন; উপস্থিত অভিনয়ের প্রশংসা করিয়া প্রোত্রির্গের প্ররোচনা
করেন। যিনি এই সুকল কার্য্য করেন, তিনি স্থাপক নামেন আভিহিত
হিয়া থাকেন। স্তধর কিম্বা স্থাপকের সহকারীকে পারিপার্শিক ক্ষে
— তাহার নীচে নট।

স্ত্রধরের বাক্যে যথন কোন পাত্র প্রবেশ করে, তথন ভাহাকে কথোদনাং কহে। যদি এক প্রয়োগে অন্ত প্রয়োগ প্রয়োজিত হয় এবং সেই বিভীয় প্রবেশ পাত্রের প্রবেশ হয়, তাহাকে প্রয়োগাতিশয় কহে। উপস্থিত কালুকে আশ্রয় করিয়া স্ত্রধার যে বর্ণনা করে, সেই বর্ণনা অবলম্বন করিয়া যথন কোন পাত্র প্রবেশ করে, তথন তাহাকে প্রবর্ত্তক কহে সাদৃশ্র উল্লোবনা হইতে যথন পাত্র প্রবেশরূপ অন্ত কার্য্য সাধিত হয়, তথন তাহাকে আসাগিত কহে। নেপথ্যভাবিত ও আকাশভাষিত অবলম্বন করিয়া প্রস্তাবনা কর্ত্তর্য। প্রস্তাবনা করিয়া স্ত্রধর রঙ্গভূমি হইতে প্রস্থান করে, তাহার পর বস্তু আরম্ভ হয়।

এই বস্ত হই প্রকার; এক আধিকারিক, আর এক প্রাসঙ্গিক।
আধিকারিক অর্থাৎ মুখ্য ইতিবৃত্তের আমুবন্ধিক যে চরিত বর্ণিত হয়,
তাহাই প্রাসন্ধিক।

কোন এক কাগ্য চিস্তা করিবার সময়, তাহার লক্ষণায়িত অশ্ব কার্য্য আগন্তক ভাবে—অতর্কিত ভাবে প্রযোজিত হইলে ভাহাকে পতাকায়ান কহে।

যে কার্য্য সম্পূর্ণ একদিবসের মধ্যে সম্পাদিত হয় সেইথানে অশ্বচ্ছেদ করিয়া, দিবাবদানে অর্থোপক্ষেপে বাক্যু প্রযুক্ত হয়। কার্য্যের উপক্ষেপ পাঁচটী:—বিষম্ভক, প্রবেশক, চুলিকা, অশ্বাবতার ও অশ্বমুধ।

অতীত কিলা আগামী কথাংশের সূচনা করিয়া অকের প্রথমে যাহা সংক্ষেপে উক্ত হয়, সেই কথাবিভাগকে বিদ্বন্তক কহে। নীচ পাত্র প্রয়োজিত প্রাকৃতি ভাষার রচিত কথাবিভাগকে প্রবেশক কহে। উহা কূই অক্ষের মধ্যস্থলে বিদ্বন্তের ভায় সংক্ষেপে উক্ত হয়। যবনিকার অস্তরাল হইতে যে কার্য্যের স্থচনা হয় তাহাকে চুলিকা কলে। কোন অক্ষের অক্ষে, সেই অক্ষের অবিচ্ছেদে অর্থাৎ যোগ রক্ষা করিয়া, পাত্রাদি স্চিত হইলে ভাহাকে অক্ষাবতার কহে। যে অক্ষের মধ্যে সমন্ত অক্টের মূল ঘটনা অর্থাৎ সমস্ত নাটকের বীজার্থ স্থচিত হয়, তাহাকে षक्रमूथ करह।

वीक, विन्तू, भठाका, शक्त्री, ७ काया पुरे भौठि वर्धश्रक्षां অর্থাৎ প্রয়োজন-সিদ্ধি-হেতু।

- (১) যে মূল ঘটনার উপর সমস্ত আখ্যান-বস্তু স্থাপিত, তাহাকে वीज करहे।
- (২) নাটকের অবাস্তর বিচ্ছেদ হলগুলির শেষে যে অবিচ্ছেদের কারণ विनामान थारक जर्थाए य घटना छिन थाकाम ममस ना टेरक मरधा উদ্দেশ্যগত অবিচ্ছিন্নত। ও যোগ রক্ষিত হয়, তাহাকেই বিন্দু কহে।
- (৩) নির্ক্তণ অর্থাং উপসংহারপর্যাস্তস্থায়ী প্রাসঙ্গিক চরিতকে পতাকা কহে; যথা রাম চরিতে—স্থগ্রীবাদি, শুকুস্তলায়—বিদ্যকাদি।
- (৪) যে সাধনীয় ব্যাপার আকান্খিত ও অপেক্ষিত, যাহা প্রাসক্ষিক নহে, যাহার সিদ্ধির জন্ম আরম্ভ, উদ্যোগ ও উপসংহার হইয়া থাকে তাহাই নাটকের কার্য্য।

এই কার্য্যের পঞ্চ অবস্থা:—আরম্ভ, যত্ন, প্রত্যাশা নিয়তাপ্তি ও कलाग्य।

নিয়তাপ্তি কি ?—না, বিশ্বের অপগমে নিশ্চিত প্রাপ্তি অর্থাৎ ক্ষুলাভ। এই অবস্থার, বিশ্নেরই প্রধান্ত স্থচিত হয়। এই কার্য্যগত পঞ্চ অবস্থার যোগে আখ্যানবস্তুর পঞ্চ সন্ধি অর্থাৎ পঞ্চ প্রকার বিভাগ কল্লিত হইরাছে। যথা:—মুখ, প্রতিমুখ, গর্জ, বিমর্ষ ও উপসংজ্তি।

- (১) যেখানে বীজের অর্থাৎ মূল কারণের উৎপঞ্জি ভাহাকে মুখ-मिक करह।
- (२) श्रिशान जेशारत्र श्रिशान कट्नित्र राथान क्रेसर উद्धिन इत्र, जाहारक প্রতি মুথ কছে।

- (৩) সেই উপায় ঈষং প্রকাশিত হইয়া এখন পুনঃপুনঃ তিরোছিত ও স্থাবার তাহার সন্ধান পাওয়া যায়, তখন তাহাকে গর্ভসন্ধি কহে।
- ্(৪) যথন সেই প্রধান উপায় গর্ভ ইইতে উদ্ভিন্ন হইয়া, সাম্ভরায় অর্থাৎ সবিদ্ন হয় তথন তাহাকে বিমর্থ কহে।
- (e) युथन म्थानि नकन मुक्तिश्वनि এक প্রয়োজনসাধনে পর্য্যবসিত হয়, তীহাকে নির্কাহণ কহে।

এই পঞ্চান্ধি সর্বাজার নাটকের স্বাভাবিক মুখ্য বিভাগ।

এমন কি কোন যুরোপীর নাটককে বিশ্লেষণ করিয়া দেখিলে এই পঞ্চ

সন্ধি প্রাপ্ত ইওয়া যায়। রোমীও জুলিয়েট নাটককে বিশ্লেষণ করিলে

দেখা যায়, ক্যাপুলেটের গৃহে নৃত্য-ব্যাপায়ই৽উক্ত নাটকের মুখসিরি;

জুলিয়েটের সহিত রোমিওর সাক্ষাৎকারই প্রতিমুখসনির; প্যারিসের

সহিত বিবাহে জুলিয়েটের বাহিক সন্মতি—ইহাই গর্ভসনির; জুলিয়েটের

প্রকৃত প্রেমনিষ্ঠা রক্ষা করিবার জন্ম যে কৌশল অবুলম্বিত হয়,

তাহাতে রোমিওর যে নৈরাশ্র—তাহাই বিমর্ব সন্ধি; তাহার পর, যে

শেষফল হইল, তাহাই উপসংস্তি। প্রেমিক অর্থপ্রকৃতির সহিত

কার্য্যের পঞ্চ অবস্থা, ও পঞ্চসন্ধির কিরূপে মিল্ল আছে, ঐ তিনটীকে

উপযুর্গিরি বিশ্বস্ত করিলেই তাহা সহজ্বে উপলন্ধি হইবে।

অর্থপ্রকৃতি।—বীজ, বিন্দু, পূতাকা, প্রকরী, কার্যা।
পঞ্চাবস্থা।—আরম্ভ, যত্ন, প্রত্যাশা, নিয়তাপ্রিক্লাগম।
পঞ্চদন্ধি।—মুথ, প্রতিমুথ, গর্ভ, বিমর্ষ, উপদংকৃতি।

জীজ্যোতিরিন্দ্র নাথ ঠাকুর।

# किश्वि९ উত্তম-মধ্যম।

#### (विलाजी घूमि वनाम (मनी किल।)

বি বলেন:—"কেন ডর, ভীক, কর সাহস আত্রর"। এই

ক বিবাক্য অনেক সময় সত্য বলিয়াই বোধ হয়। কেহে বল

না থাকিলেও অনেক সময় অনেকে অনেক অসম-সাহসিক কার্যাও

সম্পন্ন করিয়া থাকেন। বাঙ্গালীর সাহস নাই বলিয়া বাঙ্গালী "ভীক কাপুরুষ" বলিয়া পাশ্চাত্য জাতির নিকট অভিহিত হইতেছেন; নচেৎ বাঙ্গালী যে বলহীন একথা আমারা স্বীকার করিতে পারি না। কেন

না, দোখ্যাছি বলপ্রকাশের স্থলে যে কেহ কার্যাক্ষেত্রে অবতীর্ণ হইয়াছে, সেখানে সে ব্যক্তি কখন অকৃতকার্য্য হয় নাই। এরূপ ঘটনা বঙ্গ-দেশে বিরল নহে। নিয়ের লিখিত গুটা ঘটনা আমাদের একথা সমর্থন করিতেছে:—

১। "চাবুক-পরিপাক"—ইলবার্ট বিল পাস হইবার পর হইতেই সাদায় কালায় যেন আদায় কাঁচকলার সমর দাঁড়াইরাছে। আপিসে, রেলওয়ে, ট্রামওয়ে, চা-বাগানে, পথে-লাটে-মাঠে সর্ব্বেই শেতাুল শুরুরা সেই অবধি কথারা কথার নেটাভ-বিদ্নেষের পরিচয় দিতেছেন। উক্ত বিল্পাস হইবার কিছুকাল পরে গড়ের মাঠে একদিন আমরা উইল্সন্ সাহেবের সার্কাস দেখিতে যাই। সাকীসের স্থাধিকারী একদিন তংকালীন রাজপ্রতিনিধি মহোদয়কে সার্কাস দেখিবুর জল্প আমন্ত্রণ করিয়াছিলেন। সার্কাসের তাঁবুও তাহার আশ পাশ লোকে লোকারণা। সার্কাস-প্রবেশপথে পদ্শিকগণের ভ্রানক ভীড়। সকলেই প্র্বাহেটিকিট ক্রয় করিয়। ভীড়, ঠেলিয়া সার্কাসে প্রবেশ করিবার চেষ্টা করিতেছে। সার্কাস আরক্ত হইবার বড় বিলম্ব নাই;

এমন সময় দেই স্থানে কতকগুলি ফিরিন্সীনন্দন আগমন করিয়া वनभूर्वक প্রবেশ করিবার চেষ্টা করিতে লাগিল এবং ভজ্জন্ত অকারণে मकैनक दीश्रीकदिए नाशिन, कथन वो छूटे रूख दादा शाका विद्या व्यथवा कशूरवन खँठा मिन्ना वाजानी मर्नकवृत्मक व्यक्ति कविर् नानिन। लाकानाम वाचि वानित (यमन नकतन खरम वाडिवास इहेम भनावन कब्रिटा थार्टिक, धरकर व उठिक स्मर्रेक्षेत्र रहेर्ड मात्रिम। महम मरम वाकालो भलायनभाव इटेल टेउदिनियात्नत्र वः भरद्रत्रा हानित कामात्रा ্তুলিতে লাগিল। এমন সময় জনৈক বাঙ্গালী যুবক সাহসে ভর कत्रिया व्यास्त्रिन छो। हेया कियम, त व्यामत इटेल, खरेनक कित्रिकीनसन কালা নেটিভের এভাদৃশ সাহস দেখিয়া সুক্রোধে তাঁহাকে আক্রমণ कत्रिवात अग्र (यमन डाँशांत निक्रवेखी इहेन, अमनि वाक्रांनी यूवकी रुखिष्ठ বেত্রদারা "সপাং" স্পাং" করিয়া ২। ৪ ঘা দিলেন। সাহে বটীর <u> এবিশ্বধ তুর্দিশা</u> দেখিয়া তাহার সহযাত্রী **আ**রও জনকয়েক তাহার माश्यार्थ (निधे युवकरक बाक्रमन कत्रिवात डेनक्रम कत्रिल, युवकी তাহাদের মধ্যে অতি নিকটবর্তী ছুইজনকে প্রহারের স্থবিধা ও অবসর ना मित्रा, ভाহ্যদেরই উপর ছড়ির সদাবহার করিতে লাগিলেন। এই ব্যাপারে সেথানকার লোকতরঙ্গ যেন কিয়ৎ কালের জন্ম স্বন্ধিত रहेल। तम रूड़ार्हाफ् ठिलाठिलि भाताभाति कश्त नाहे! मानाय कालाय मः पर्व विषम वााभाव विद्वहनाम वाव्यक्ति मध्या याँशा वाकावीत তাঁহারা সমস্ত জাতিকে বিদেশীয়ের নিকট "ভীক্ কাপুরুষ" বলিয়া প্রতিপন্ন করিবার জন্মই যেন তথা হুইতে সরিষ্ধা পড়িলেন। রাহলেন 🔅 'কেবল কতকগুলি স্বলের ছেলে আর যুবকের আত্মীয়গণ। সাহেবেরা পদিগণের এবুজুত ত্র্দশা দেখিয়া ক্রোধে লজায় ও ক্রপায় সার্কাস-ক্ষেত্র প্রবেশ করিল। অন্তান্ত দর্শকগণও তাহাদের অনুসরণ করিল। আর সেই वीत यूवक छथन एवन निश्विक्षी वीदात गुात बाबीयग्रा नम्डियाहादत

সার্কাসক্ষেত্রে প্রবর্গ করিয়া আসন গ্রহণ করিলেন। সার্কাস শেষ হইবার অব্যবহিত পূর্ব্বে যুবকের আত্মীয়গণ সাহেবপুসবদের ভাব ভঙ্গী বৃঝিতে পারিয়া যুক্তকে লইয়া সরিয়া পাঁড়লেন। হার! ইউরোপের কামজ সন্তানগণ সার্কাস ভাঙ্গিবরি পর যুবককে সপ্তর্বণী কর্ত্ত্বক বালক বীর অভিমন্তার বধের ন্তায় বধ করিবেন বলিয়া, এভক্ষণ মনে মন্তন "শিয়ালের যুক্তি" আঁটিতেছিলেন, বস্তুতঃ ভাহা যুক্তি মাত্রেই পর্যাবসিত হইল! অধিকন্ত ভাঁহারা সর্ব্বজনসমক্ষে কালা আদমি কর্ত্বক যে লাঞ্ছিত অপমানিত ও উত্তম-মধ্যমরূপে প্রহণ্ড হইলেন, তাহার প্রতিশোধ লইতে না পারিয়া অগত্যা নেটাভের "চাবুক্ত পরিপাক" করিলেন।

সহদয় পাঠক! এই যুবক কে জানেন ? ইনি এক্ষণে সার্কাস ব্যবসামে বিলক্ষণ তু পয়সা উপার্জ্জন করিকেছেন। এই পর্য্যন্ত বলিলেই ইহার যথেষ্ঠ পরিচম দেওয়া হয়।

২। "ঠন্ঠনের নিমকী"—চক্রনাথ চট্টোপাধ্যার নামক জনৈক তেজস্বী ব্রাহ্মণ, ক্কলিকাতার কোন সওদাগরী আপিসে জেটী সরকারী কাজ করিতেন। আপিসের বড় সাহেব তাঁহাকে বড় ভাল বাসিতেন এবং তাঁহার সমগ্র নামটী উচ্চারণ করিতে পারিতেন না বিলয়া তাঁহাকে "চট্টু" বলিয়া ডাকিতেন। আপিসের লোকে তাঁহাকে "চাটুর্য্যে মশাই" বলিত। আমরা এই আখ্যায়িকায় তাঁহাকে "চাটুর্য্যে মশাই" বলিয়া অভিহিত ক্মিব। সরকারীগিরী কাজে তাঁহার প্রশংসাও বড় কম ছিল না। প্রায় ২০৷৯৫ বৎসর কাজ করিতেছেন কিছ এ পর্যান্ত তাঁহার কাজে কেহ কখন কোন গলদ বাহির করিতে পারেন নাই; বিশেষতঃ তিনি বে কাজে ছুঁচ মা চলে, সে কাজে বেটে চালাইয়া কাজ হাঁসিল করিতেন। এজন্ম বড় সাহেব তাঁহাকে আপিসের হেড সরকার। করিয়া • দিয়াছিলেন। চাটুর্য্যে মশাইও

"धाড़ी" ना यात्रिया गाभात्रीमिरगत्र निक्छे विकक्ष प्रभाग द्राक्य गात्र করিতেন; এজনা তাঁহার হাতে হু'পর্যাও ছিল। একবার বড় সাহ্ব তাঁহার স্থাপিস চালাইবার জন্য অপুর একটা সাহেবকে রাথিয়া श्चिमाञ्घाजा करत्रन। । এই नवागञ नाष्ट्वित नाम तिह्मछ। ि। एय अक्ष नवामी नाष्ट्रकालिन इहेन क्लिका जात्र आतिशाहन। আপিদের কার্যাভ্কন এহণ করিয়াই •প্রথমে পরীব কেরাণী-নির্ঘ্যাভনে यस्नानिय्न कर्त्रन। विष्युष्ठः जाँशत्र नाना উপদর্शের यक्ष्य "জুতাতক্ব" নামক মহা উপদর্গটী গরীব কেরাণীকুলকে আকুল করিতে লাগিল। তিনি তাঁহার থাস চাপরাশিকে ছুকুম দিলেন, যে কেরাণী জুতা পায়ে দিয়া আমার গৃহে প্রবেশ করিবে তাহার কাণ ধরিয়া আপিদ হইতে বহিষ্কৃত করিয়া দিবে। চাপরাশি প্রথম প্রথম তাঁহার এই অভদ্রেটিত অমুজ্ঞাপালনে ইতস্ততঃ করিত। সাহেব একথা বুঝিতে পারিয়া তাহাঁকে প্রথম প্রথমু জরিমানা শেষে বিলক্ষণ প্রহার করিয়াছিলেন। শেষে সাহেব-নির্য্যাভদ হইতে আপদাকে রক্ষা করিবার জন্ম চাপরাশি স্নাহেবের হুকুম তামিল করিতে কিছুমাত্র कुछि उ इरेज ना। आ शिरित्र क्रिजा शिक्ष जाविया यहा आकूल इरेल। বড় সাহেবের আসিতে এখনও বিলম্ব আছে, এত দিন কিরূপে তাঁহারা সম্রম বাঁচাইয়া চলিবেন, সেই ভাবনায় তাঁহাদের পেটের ভাত চাল रुटेट नाशिन। आमापित हार्देश मनारे किन्न मार्ट्यत এই वर्वत व्याप्तम গ্রাহ্ম করিতেন না। তিনি বড়ু সাহেবের পেয়ারের লোক, বাজে সাহেবকে তিনি গ্রাহ্য করিবেন কেন ? তাহাতে সাহেবও মনে यत्न यश व्यवस्थ । वाशिश्वत वर्ष वावू श्रांष्ठ याश्वत वात्म भित्रा-ধর্যা ক্রিতে কুণ্ঠিত হন না, সে আদেশ একজন জেটী-সরকার অমাগ্র করিবে? বিশেষত: সে চটী জুড়াঁ পায়ে দিয়া ফটর্ ফটর্ করিয়া ধুলা উড়ায় এবং ভজ্জন্ত তাহার পা ছ্থানি সর্বদাই ধূলা কাদার মাথামাথি। 'এরপ, অসভ্য লোককে শোমার বরে চুকিতে দেওর কথনই উচিত নয়। এই বেয়াড়া ঘেয়াদব্কে শাসন না করিলে কি আর রক্ষা আছে! এই ভাবিয়া সাহেব তাঁহার ছিদ্ধারেশ্ব করিছে লাগিলেন, উদ্দেশ্ব, বড় সাহেব আসিবার পূর্কের চাটুর্য্যে মশাইকে আফিল হইতে তাড়াইতে হইবে। চাটুয্যে মশাই করিছি ব্রিয়াছিলেন, তাই সর্বাদার করিছা বলিতেন হে "আমার করে, আয়ুখন গলুদার নাই তখন আমার তাড়ার কাহার সাধ্য।" এই ভবসায় তিনি বাঁতেরর স্থায় আফালন করিয়া বেড়াইতেন।

একদিন বিচ্যও সাহেব আপিসে আসিয়া বেজায় বাড়াবাড়ি করিতে লাগিলেন; সন্তবতঃ দেদিন কিছু মাত্রার আধিক্য হইয়া থাকিবে। मायाज्य मायाज्य (कार्य (क्रवागी) क्रियाना क्रियाना क्रियाना। कथन कथन काशांक वा जाड़ा क निया मात्रिक উञ्च इहेलन। সাহেবের ঘরে যাইতে আজ কাহারও সাহস হইতেছে না। চাপরাশির দারা চিঠিপত্র সমস্তই সহি হইতেছে। চাটুর্য্যেশাই তথনও পর্যাস্ত আপিদে আইদেন নাই, পরে আদিয়া সমস্ত ব্যাপার অবগত হইয়া বলিলেন " তোমরা মায়ের ত্ধ থেয়ে মানুষ হও নাই। সাহেবের ঘরে ষাইতে আমাদের এত ভয় কি।" এমন সময় সাহেবের পিয়াদা जानिया वानन ''मार्ट्स, ञाश्रका वानाजा हाय"। এই विनया চাপরাশি চলিরা গেল। চাটুর্যোমশংই বীরের ন্তায় বুক ফুলাহয়া সেই এক হাঁটু পুলাপায়ে চটি জুতা ফটর ফটর করিতে করিতে সাহেবের चरत প্রবেশ করিলেন। চাটুয্যেমশাইকে চটি জুতা পায়ে দিয়া তাহার ঘরে প্রবেশ করিতে দেখিয়া সাহেব মহাজুদ্ধ হইলেন। চাটুর্গ্যেমশাই সাহেবের রাগের কোন কারণ খুঁজিয়া না পাইয়া বুলিলেন "নাছেব রাগ करत्रन (कन ? ভদ্রলোকের ছেলে জ্তাপায়ে না দিয়া এক পা ষে शैंडिएक भाति ना। वर्ष मार्ट्य एका व नियम कथन"—कथाय याथा मित्रा

সাহেব ৰলিল "বেয়াদৰ ব্ৰাহ্মণ । আমার উপর কথা । আর নেটাভরা ইংরাজ মনিবের সাম্নে জুতা পায়ে দিয়া আসিবে কেন ?'' চাটুর্য্যেমশাই উত্তে कि करत श्वितित्वन "आगारित क्र्जा, शास मिर्ड मार्थ कि ? रेश्ताक-तारका अगन काल नियम नारे, यदाता निरिष्ठता कुछा भारत ना मिय्रा (वर्णाष्ट्रित।" नाष्ट्रव मर्काक्ष विनन "काना आमि आवात्र জুতা পারে দিবে কেন্ ?'' এই বলিয়া স্বীয় পা হইতে জুতা খুলিয়া চাপ্রাশিকে বলিল এই "বেয়াদব্ লোকটার মাথায় জুতা রাখিয়া সারা আপিদ ঘুরাইয়া লইয়া আইস।" চাপরাশি চাটুর্যো মশাইকে বিলক্ষণ জানিত। নীচ জাতীয় লোকের গায়ে হাজার বল থাকিলেও সহসা ভদ্রলোককে অপমান করিতে সাহস করে না। একারণ সে ইতস্ততঃ করিতেছিল দেখিয়া সাহেবপুঙ্গব গালি দিতে দিতে জুতা লইয়া তাহাকে তাড়ো করিয়া গেলেন। চাপরাশি প্রাণভয়ে উর্দ্ধানে দৌড় দিল। সাহেব চাপরাশিকে প্রহার করিতে না পাইয়া ठापूर्यामभारेक भामन कतिवात উদ্দেশে তাহার দিকে ধাবিত হইল। তেজম্বী ব্রাহ্মণও ভবিষ্যৎ না ভাবিয়া পায়ের জুতা হাতে তুলিয়া विष्टिन "मार्ट्य वार्पत ग्राप्त मिन्य भिन्य भिन्य विषय এ আপিদে আমার চুল পাকিয়াছে। ব্রাহ্মণ বলিয়া সকলে সন্মানও করিত, কিন্তু আজ তোমা হ'তে আমার সে মান, সে তেজ নষ্ট হইয়াছে। লইতে পারিতাম; কিন্তু এদেশের লোক বিশেষতঃ ব্রাহ্মণে আদালতে यां अप्रांदक भाभ खान करत, भत्रख এथनकांत्र मिर्टन, তোমांत्र ग्राम অভদ্রলোকের প্রতাপ-বৃদ্ধির দিনে, লোকের প্রথমে স্বহন্তে শাসন ভার-লওয়াভিচিত। ত্র্বল হস্তই আদাদতের সাহায্য প্রার্থনা করে। ( চটি জ্তাদহ इंहे इस जूनिया ) चामात्र এই इस इर्सन नरह। ভোমার স্থার অভদ সাহেবকে শাসন করিতে, এবং ভোমার 'জুভাড্ক'

রোগ বিদ্রিতি করিতে ( ত্ই হস্তে ছুইথানি চটিছুতা ভুলিয়া ধরিয়
ঠন্ঠনের এই নিমকীই মহা মহোষধ"!

চাটুর্য্যে মশাইয়ের সেই৽উগ্রমূর্ত্তি দেখিয়া বোধ বা সাহৈব ভালি

"এ বড় কঠিন ঠাই" এবং এইজন্ত দ্বিরুক্তি না করিয়া আপন চেয়ার

গিয়া বিদল। চাটুর্য্যে মশাই শেষে বলিলেন "তুমি এ আপিসেঃ

ঘতদিন কর্ত্তা থাকিবে, ততদিন আর এখানে আসিব না, আবার মনিং
আসে তখন আসিব।" এই বলিতে বলিতে তেজন্মী ব্রাহ্মণ নিজ্ঞার

ইলেন।

#### - শ্রীরমেশ চন্দ্র বস্থ।

( २ )

১। গত মার্চ মাসে একজন ডাক্লারং বাবু দার্জিলিং মেলে উত্তর বঙ্গে যাইতেছিলেন। সারাঘাট প্রেশনে তিনি দার্জিলিং মেলে উত্তরা বিদিয়া আছেন, এমন সময় একজন ইম্পিরিয়াল এ্যাংলো ইণ্ডিয়ান আসিয়া ডাক্তার বাবুকু ছকুম করিলেন 'ভূমি গাড়ী হইতে নাম'—ডাক্তার বাবুই সম্মুথে বসিয়াছিলেন। ডাক্তার বাবু কারণ জিজ্ঞাসা করায় জানিতে পারিলেন যে, ছজুর স্বয়ং সেই গাড়ীতে যাইবেন; রাজার জাতি 'নেটিলের' সহিত একাসনে বসিয়া যাইবে কেমন করিয়া? তাই তাঁহাকে সেই গাড়ী হইতে নামিয়া যাইবে কেমন করিয়া? তাই তাঁহাকে সেই গাড়ী হইতে নামিয়া যাইতে হইবে! ডাক্তার বাবু কিন্তু এই ভায়সঙ্গত কারণ হলয়ন্তম করিলে আপনি সম্জন্দে যাইতে পারেন, কিন্তু তাই বলিয়া আমি নামিতে বাধ্য নই।" নেটিভের এত বড় আবাধ্যতা, এত বড় আম্পার্চা সাহেব সিহ্ন করিছে গারিল না। ডাক্তার বাবুর উপর এক ঘুসি চালাইল। ছঃখের বিষয় ডাক্তার বাবু সাধারণ নেটিভের ভ্যায় ঘুসি হজম না করিয়া তাহা স্বাম্ব

স্থান প্রত্যর্পণ করিলেন। সাহেবের কপাল কাটিয়া দর দর ধারে রক্ত পড়িত লাগিল। অনেক লোক জমিল; হল্সুল পড়িয়া গেল। সাহেব যাত্রীরাও আদিয়া জুটিল। আহত সাহেবটা জাতভাইদিগকে দেখিয়া দ্বিগুণ উৎসাহে পুনরায় গাড়ীর ফুট বোর্ডের পাদানের উপর উঠিয়া ডাক্তার वावू क थूव शामाशानि मिट नाशिन এवुः वनिष्ठ नाशिन "Coward! just come out and I shall see you." ডাক্তার বাবু বীহিরে ভদ্রলোক তাঁহাকে জোর করিয়া গাড়ীর মধ্যে ধরিয়া রাখিলেন—তাঁহারা তাঁহাকে किছুতেই বাহির হইতে দিবেন না। ডাক্তার বাবু বলিতে लाशिलन "यशानम, वागारक ছाড়िम्रा मिन, रैकोरमद्र निष्ठि यादिमा মারিয়া আম্পর্কা বাড়িয়া গিয়াছে। আপনারা আমাকে ছাড়িয়া मिय्रा (मथून (विहादक जागि कि कति। आगारक (मथिय्रा আপনারা বুঝিতে, পারিতেছেন না যে I can simply kill him ?" কিন্তু তাঁহারা কিছুতেই তাঁহাকে ছাড়িয়া দিলেন না। এদিকে সাহেব গাড়ীর পাদানের উপর দাঁড়াইয় শ্বৈ লম্ফ ঝম্ফ দিতে लांशिल এবং মধ্যে মধ্যে মুথ খিঁচাইতে লাগিল। ডাক্তার বাবু ঐ রকম অবস্থায় থাকিতে থাকিতে দরজার জানালার ফাঁক দিয়া সাহেবের বক্ষে এক ভীষ্ণ পদাঘাত করিলৈন এবং সঙ্গে সঙ্গে গাড়ীর সাওেল চ্যুত হইয়া সাহেব ও ভূপতিত হইলেন। সাহেব কণ্ঠে আজ্বসংবরণ क्तिलिन किन्न भूष्थ कथा नारे এक्वार्त्त निर्काक। क्रिक्नन কলেজের ছাত্র উপস্থিত ছিলেন তাঁহীরা সাহেক যাত্রীদিগকে প্রকৃত घष्टेना व्याह्या मिला, डाहाया यथाञ्चात ठिलमा शिलान। পরে छिनन मार्ट्यक मिट्रे गाफ़ीर्डि छेठारेया मिर्निन। मार्ट्य क्रमान जिकारेया 

অথবা "টাস" পূর্বোক্ত সাহেবকে ডাক্তার বাবুর বিরুদ্ধে সাহায্য করিছে আসিয়াছিল কিন্ত একজন বাঙ্গালী টিকেট কলেক্টর প্রকারাভ্তরে ভাঁহাদিগকে সরাইয়া লইয়া যাইয়া থব ভদ্রতা প্রকাশ করিয়াছিলেন।

- ২। মণীক্রনাথ বস্থ নামক একজন ভদ্রলোক দেওঘর যাইতেছিলেন

  —সঙ্গে তাঁহার পরিবারস্থ কয়জন মহিলা ছিলেন। আসানুশোল প্রেশনে

  ছইজন গোরা সেই গাড়ীতে উঠিতে যাওয়ায় ভদ্রল্যেকটা বাঁধা দিয়া
  বলিলেন 'এ গাড়ীতে স্ত্রীলোক আছে, অন্ত গাড়ীতে য'দ তাঁহারা যান
  ভাহা হইলে স্থাধা হয়।' কিন্তু "চোরা না শোনে ধশ্মের কাহিনী ;"
  তাহারা ঐ গাড়ীতেই উঠিবে। ভদ্রলোকটা যেমন দরজার সম্মুখে
  দাঁড়াইয়া বাবা প্রদান ফারিবেন অমনি তাঁহার বক্ষে এক বিলাতী ঘুসি
  পতিত হইল। তিনি আত্মসম্বরণ করিয়া বলিলেন 'সাহেব এইবার
  দেশী চড় একটা থাও দেখি।' এই বলিস্থাই সাহেবের গণ্ডদেশে এক
  দারুণ চপেটাঘাত করিলেন। সাহেব চড় থাইয়া, জগৎ অন্ধলারমন্ত্র
  দেখিল এবং তৎক্ষণাৎ গাড়ী হইতে নামিয়া পড়িল। এমন সমন্ত্র
  ট্রোও ছাড়িয়া দিল। যি সাহেবটি গাড়ার উপর রহিল, সে তথন
  বাব্টীর হস্তমন্দন করিয়া তাঁহাকে বন্ধু বলিয়া সংঘাধন করিয়া ক্ষমা
  প্রার্থনা করিল এবং উভয়ে একই গাড়ীতে বন্ধুজনোচিত গ্লা করিতে

  করিতে যাইতে লাশিল।
- ত। কিছুদিন পূর্বে স্থমর চটোপাধ্যার নামক একজন কলেজের
  ছাত্র চাট্গাঁ মেলে তাঁহার একজন বন্ধু আসিবেন বলিয়া শিরালদহ ষ্টেশনে
  গিয়াছিলেন। প্লাটফর্মে যে বসিবার রেঞ্চ আছে, ভাহার একথানিতে
  তিনি এবং আর একথানিতে আর ৩৪ জন বাঙ্গালী, ভুত্রলোক স্বিসাছিলেন। একজন সাহেক (ডাইলুসন ১০নং) আসিয়া নিভান্ত
  অভ্যোচিত ভাষার তাঁহাদিগকে উঠিয়া যাইতে ভুকুম করিল এবং
  ইহাও বলিল যে এই বসিবার স্থান তাঁহাদের জন্ত নর। স্থমর বারু

ভাহার এ হকুম ততটা গ্রাহ্ম করিলেন ন। ক্সিন্ত আর কর্টী ভদ্রলোক विना वाकावरम तम शान পरिष्ठाांग कित्रमा ठिलिमा त्यालन । करमक्कन (निष्ठि वर्णामाण छ्कूम जामिल कत्रिल, जात्र এक्जन कत्रिल ना, এ প্রদ্ধত্য সাহেবের নিকট বড়ই বিসদৃশ বোধ হইল। সে স্থময় বাবুর निकछ देकि किय़ ९ ठा हिल (य, (कन এ ७ कन छ कूम छा मिल कन्ना इन्न ना है এবং এতকণ এথান হইতে না যাওয়ার অর্থ কি ? তাঁহার ভউত্তরটা সাহেবের শ্রুতিস্থকর হইল ন।। সে স্থ্যময় বাবুর গগুদেশে একটী ৰিগাতী ঘুসি চালাইল। স্থেরে বিষয় স্থময় বাবু খুব বলিষ্ঠ এবং একজন রীত্মত জিমনাষ্ট্র। তিনিও বিলাতী ঘুদি প্রাপ্তিমাত্র গোটাকতক দেশী किलात विनिमन कतिलान। मार्ट्यत निक हे व विनिमन लाज्जनक বোধ হইল না। দে আঁ। আঁ। শব্দে চাংকার করিতে করিতে ৫।৭ হাত দূরে शिया मां ए। हेन এवः "পোनिष পোनिम" वनिया ही काब कब्रिए नाशिन। প্রথমতঃ তুইজন কনষ্টেবল আসিয়া স্থময় বাবুকে ধরিতে চেষ্টা করিল কিন্তু তাহারা বিশেষরূপে আহত হইল, পরে আরও ৩।৪ জন আসিয়া (याग मिल। ইতিমধ্যে স্থময় বাবুর পরিশেয় বস্ত্র আকর্ষিত হইল, कार्जिरे वाथा इरेब्रा छाँ हार्क रात्रि मानिए इरेब्रा। इरेब्रन कनर्ष्टेवन उँशिक धित्रमा थाकिन। ठाउँगा भिन जामितन भागिमञ्जातमञ्ज भान मिषिया शिवा; পরে তাঁছাকে কনষ্টেষলদম ভিশন মান্তারের নিকট लहेश राम। रमथारन व्यरनक वाकामी रकतानी उपिक्कि हिन। একজন বলিল 'কিছে, কভখানি মদ খাওয়া হ'য়েছিল ?' আর একজন বলিল 'তোমার কুপাল ভাল যে তুমিঞান্ত কোন সাহেবের হাতে পড়নি।' व्यत्न व्यत्नक त्रक्म विलिए नाशिन। एक्ट एक्ट भन्नामर्भ किन 'मार्टिद् निक्र कमा প्रार्थना कत्र, मुव চुकिया याट्द ।' स्थम्य वाबू व उत्तरम् उत्रकु मन्न कत्रिम् निश्व उत्तरम् विश्व विश्व हाम्बर् त्राथिया मिण। भरत जीयुक रहत्रच रेमज महानय कामिन इहेग्रा डाइंटिक

महेशा आहेरमन। ऋथमक वाव्रक डिकीम वाात्रिष्ठात्र भगास किन. করিতে হইয়াছিল কিন্তু কি কারণে জানি না রেলওয়ে কর্তৃপুক মোকৰ্দমা চালাইতে মত দিলেন না। সব গোল মিটিয়া গেল।

- ৪। গত বৎসর মোহন বাগান ও মেডিক্যাল কলেজে যে ফুটবল भाह रम जाराज मार्ट्यता रातिमा याम्। करमक জन वाकाली पर्णकं ইহা লংশা একটু উপহাস করে। সাহেবেরা উত্তেজিত হইয়া ধাঙ্গালী-দিগকে প্রহার করিতে আরম্ভ করে। তথন সব বাঙ্গালী পৃষ্ঠপ্রদর্শন করিল, কেবল পূর্কোক্ত স্থ্যম বাবু, রবীক্রনাথ মল্লিক এবং আরও ২।১ জন কলেজের ছাত্র পৃষ্ঠপ্রদর্শন না করিয়া আত্মসম্মান রক্ষার্থ চেষ্টা করিয়াছিলেন এবং কতকটা কৃতকার্য্যও হইয়াছিলেন।
- ७०। একবার ময়দানে একটা বড় নিলাম হইতেছিল। চতুর্দিকে লোক ঘিরিয়া দাঁড়াইয়াছে ভিতরে প্রবেশ করা ছ:সাধ্য। এমন সময় একজন সাহেব যেদিরে নেটিভ ভদ্রলোকেরা দাঁড়াইয়াছিলেন সেই দিকে আসিয়া মুষ্ট্যাঘাত-পদাঘাত দাঁত থিচানী প্রভাতর সাহায্যে রাস্তা করিয়া ভিতরে প্রবেশ ক্লিতে লাগিল। এমন সময় একজন বাঙ্গালী বলিষ্ঠকায় যুবক এক লন্ফে আসিয়া এক হাতে সাহেবের এক কাণ অন্ত হাতে সাহেবের এক হাত ধরিয়া সাহেবকে চুই তিন পাক দিয়া विनिन "भार्ट्र, এই ভদ্রলোকাদিগকে কেন অপমানিত করিভেছ বল দেখি ?", সাহেবত তাবাক্! পরক্ষেই আরুও অনেক সাহেব জুটিয়া গেল—সকলে যুবকটাকে আক্রমণ করিবে এই ইচ্ছা। যুবকটা বলিল "দেখ, তোমরা অনেক, আমি একাকী; উপস্থিত দেশীয়েরা কেহই আমাকে সাহায্য করিধে না ইহা নিশ্চয়। তোমরা যদি কাপুরুষ না হও, একে একে আইস, এক সঙ্গে আক্রমণ ক্রেরিও না " সাহেবেরাও তাহাতেই স্বীকৃত্ব 'হইল এবং প্রথম পালা সেই অপমানিত मार्ट्रित छे भत्रे भिष्म । व्युक कि क्रूक्ग्लात मरश्रे मिट मार्ट्यक

বিশেষরূপে আহত করিল। তথন অক্তান্ত স্থাহেবেরা 'Oh, he really did injustice to the native gentlemen,' विषया भीदा धीदा প্রস্থান করিলেন ।

७। একদিন গ্রহ তিন জন কলেজের ছাত্র ময়দানে বেড়াইতে গিয়াছিলেন। চৌরঙ্গী দিয়া ফিরিয়া আসিতেছেন এমন সময় একজন গোরা দৈনিকপুরুষ একই ফুটপথে দিয়া অপরদিক হইতে স্থাসিতে-ছিল। যেমন নিকটে আসিয়াছে অমনি সৈনিকপুরুষ হারুভিত বেত্র •ম্বারা যুবকদিগের একজনের পৃষ্ঠদেশে সপাৎ করিয়া একঘা বসাইয়া দিল। যুবকটা কারণ জিজ্ঞাসা করায় সৈনিকপুরুষটা সহাত্যে উত্তর দিলেন 'nothing but a practical joke.' যুবকটাও এক লম্ফে সৈনিকপুরুষের শুগালপুচ্ছবৎ লম্বমান গুল্ফযুগ চুই হাতে ধরিয়া সজোরে আকর্ষণ করিতে লাগিলেন। সাহেব 'ত্রাহি' 'ত্রাহি' ডাকিতে লাগিল। তথন যুবকটা বলিল 'never mind, this is a practical joke ্ৰি সাহেব ক্ষমা চাহিয়া নিষ্কৃতি পাইল এবং হাণ্ডশেক করিয়া যুব-সমুদ্রে বন্ধু বলিয়া সন্তাষণ করিল। পরে অনেক বার যুবকের সহিত তত্তাবলী। माकार इहेग्राছिल,—यथनहे माकार इहेज जथनहे मिनिकश्रक्य रिছ्लिन ব্রিকা 'Good morning, Mr. Hercules.'

बीञ्चदानहन्द होधुती।

# त्रश्रवनौ ।

সংস্কৃত সাহিত্যে রত্নাবলী নাটকা স্থবিদিত। ইহার রচারতা ও প্রণয়নকালসম্বন্ধে প্রত্তত্ত্বিদ্গণের মধ্যে ঘোর মতভেদ দৃষ্ট হয়। পণ্ডিতের মতে ইহা খৃষ্টীয় ১২ শু শতাক্ষীর প্রারম্ভে কাশ্মীরের রাজা প্রতিত ইইয়াছিল। কেহ বলেন খুষ্টায় • ৭ম শভাদীক প্রারম্ভে কান্যকুজরাজ হর্ষবর্জন রত্নাবলী প্রণয়ন করিয়াছিলেন। কাহারও মতে নৈষ্করিত প্রণেতা শ্রীহর্ষই রত্নাবলীর রচ্মিতা। কেহ चरनम इक्रावनो व । अर्छेत रनथमी अष्ठ। आहीन किः वन श्री अञ्चारत्र कान। यात्र धावक कवि इङ्गीवनी त्रहना कत्रिव्राहित्नन। এই नकन মতের মধ্যে কোন্টা ঠিক তাহ। নির্ণয় কর নিতাপ্ত গ্রহ। সংপ্রতি त्रज्ञावनौ नार्षिका कनिकाञ। विश्वविद्यानस्त्रत्र वि, ५, भन्नीकात व्यग्रज्ञ मिर्क अ शुष्ठक, \* निर्मिष्ठ इ ७ व्राप्त देशत আलाहना ममिषक तृष्कि आख করিয়া ছি। আমার মতে এই গ্রন্থের রচনাকাল নির্দারণ করিবার विविष्ठकारं श्रिथान छेपात्र अर्हे—कान् कान् श्राह्म त्रकान् चिना वा অন্ত হার্টেশ রটনা বর্ণিত আছে ? উক্ত ঘটনা সমূহের আপেক্ষিক প্রাচীনত विका भ कति । भाति । विकास निवास करा निवास करा बाहरत। এই উদ্দেশ্তে আমি निমে দিব্যাবদান, কথাসরিৎসাগর, কর্পরমঞ্জরী প্রভৃতি গ্রন্থের মূল ঘটনা বিবৃত্ত করিলাম। রত্নাবলী नाष्टिकात घडेना ३ व्यत्नरकत काना नाहे। এই ह्यू मर्सार्थ डाहात मःकिथ गर्म थानान कंत्रिनाम। भितिर्वास, त्रवात्नीत त्रव्याकान मयद्य य मक्न माकार প्रमान আছে তাহা বিবৃত করিব।

<sup>\*</sup> সংপ্রতি আমি বি.এ, পরীকাণী ছাত্রবৃন্দের নিমিত্ত "Notes on Ratnavali" দামে এক প্তক বাহির করিয়াছি। ইহাতে রতাবগীসংক্রান্ত সমস্ত জ্ঞাত্তব্য বিবন্ধ আছে। ইংরেলী অমুবাদ, বঙ্গামুবাদ ইত্যাদিও আছে।

### त्रक्षावली भाषिकात्र घष्टेना।

(क्रोनाशीय वाक्षां छेमयन-वर्भवाद्यव मह निःह्टलव वाक्क्शा রত্নাবলীর বিবাহ, রত্নাবলী নাটিকার অভিনেতব্য বিষয়। কোন সিদ্ধ-পুরুষ বলিয়াভিলেন, "ঘিনি রত্নাবলীর পাণিগ্রহণ করিবেন তিনি मार्क्स छोगू त्राका इरेटवन।". এই मिक्तवहरन विश्वाम कतिया उपयत्नित প্রধান অমাত্র যৌগন্ধরায়ণ স্বীয় প্রভুর সহ র'ব্লার বিবাহ সংঘটনে कु छ न इस । इ छि पूर्व छ छ बिनो त बाका छ ७ - यहार मान व क छा বাসবদত্তার সহ উদয়নের আর এক বিবাহ হইয়াছিল। পাছে বাসব-দত্তার মনোবেদনা উপস্থিত হয় এই আশক্ষায় সিংহলেশ্বর উদয়নকে স্বীয় কক্সা সম্প্রদান করিতে সমত হইলেন না। তদনস্তর, "দেবী বাসবদত্তা অগ্নদাহে দ্গ্ধ হইয়াছেন," এই প্রবাদ প্রচারিত করিয়া योगसत्राय्र निःश्टल अक पृष्ठ (প্ররণ করেন। তথন সিংश्लেশর উদয়নকৈ কন্তা সম্প্রদান করিতে সন্মত হইলৈন। তিনি স্বীয় অমাতা বস্তৃতির সহ রত্নাবলীকে কৌশাদ্বীতে পাঠাইয়া দেন। কিন্তু সমুদ্রে यान ভগ্ন इ अवाय त्र त्रावनी । প্রভৃতি জলমল হন। দৈবযোগে রক্নাবলী ও বস্তৃতির প্রাণরকা হয়। সাগর হইতে টুদ্ধার লাভ করিয়াছিলেন विद्या त्रज्ञावनी এই সময়ে সাগরিকা নামে পরিচিতা হন। সাগরিকা কৌশাখীতে উপস্থিত হইলে যৌগন্ধপ্নায়ণ তাঁহার রক্ষণাবেক্ষণের ভার বাদবদত্তার হত্তে অর্পণ করেন। যথন সাগক্ষিকা অন্তঃপুরে অবস্থিতি করিতেছিলেন তথন তাঁহার দহ উদীয়নের গুপ্ত প্রণয় জন্মে। এক मिन यमन-ए वर्म्भीएक माग्रिका॰ वामवमखात्र (वन भतिशान कतियाँ উন্নান্তিত কদলীগৃহে উদয়নের সহ কথোপকথন করিতেছেন এমন সময়ে বাস্বদ্তা স্বয়ং সেপানে উপস্থিত হন। উদয়ন বাস্দ্তার চরণে ' निপতिত रहेमा उँ। हाटक श्रमन करमन, किन्छ वामवन्छ। मागतिकाटक निगए वक कवित्रा खरुःभूद्व बाधित्रा तन। এই সমঙ্গে वागवल्खा

वा উদয়ন কেহই সাগরিকার বংশর্ত্তান্ত জানিতেন না। এক দিন উজ্জাবিনী হইতে সম্বরসিদ্ধি নামক এক্সজালিক কোশামীতে আগমন করে। রাজা উদয়ন ও রাজ্ঞী বাসবদত্তা উভয়ে তহিার প্রদর্শিত বহুবিধ ইন্দ্রজাল দেখিতেছেন, এমন সময়ে, সিংহলরাজের অমাত্য বস্থভূতি সেই স্থানে উপস্থিত হন। উদয়নু ঐক্রজালিককে প্রতিনিবৃত্ত हरेट विनिया वस्त्र जिल्ला करा कथा नाम व्यात्र करतन । **वहे 'न**मस्य উक ঐक्रकानिका कोगान कोगानी नगतीर यशि खनिया উঠে। রাজা উদয়ন অগ্নি নির্বাণ করিবার জন্ম অন্তঃপুরে প্রবেশ করেন। সেথানে তাঁহার সহ সাগরিকার সাক্ষাৎকার লাভ হয়। ঐক্রজালিক স্বীয় কৌশল প্রতিনিবৃত্ত করিয়া লইলে শীঘ্রই অগ্নি নিবিয়া গেল। সিংহলরাজের অমাত্য বস্তুত্তি রত্নমালাসাদৃশ্রে সাগরিকাকে রত্নাবলী বলিয়া চিনিতে পারিলেন। বাসবদত্তাও তাঁহাকে সিংহলরাজের কন্তা বলিয়া জানিতে পাশ্লিয়া, তাঁহার বন্ধন উন্মোচন করিলেন। সর্বসমতিক্রমে ও বাসবদন্তার অনুজ্ঞায় এবং যৌগন্ধরায়ণের উত্যোগে উদয়নের সহ রত্নাবলীর বিব্যু ইল।

### मिन्यानमान् উल्लिथिङ शङ्ग।

भिवागविषान अरह डिझिथिड शैन्न नित्म लिथिड इहेल। पिवागविषान श्रष्ट अञ्जाहीन। वृष्टीय २य, ७य ७ ४० मैठाकीट इंशत ७ म অধ্যায় চারিবার চীন ভাষায় অমুবাদিত হইয়াছিল। এই গ্রন্থে উদয়ন-বৎসরাজের সম্বন্ধে যে গল **•**লিপিব্দ আছে •ভাহাই বোধ হয় সর্ব্য প্রাচীন। দিব্যাবদানের গল এইরাপ—এক সময়ে ভুগুরান वृक्ष क्रम জनপদের কল্মাধদমা নগতর বিহার করিভেছিলেন। ঐ নগরে মাকন্দিক নামে এক পরিব্রাজক বাস করিতেন। তাঁহার পত्नीत नाम भाकि। छाँशास्त्र अञ्चलमा नात्म এक প्रम त्रम्नी

क्या बत्य। উक क्या क्य क्या डियोड ७ वर्षिड इरेग। মাকন্দিক ভাবিলেন "আমার ক্যা অভিক্লীপা, দর্শনীয়া, প্রাসাদিকা ও দীর্বাঙ্গপ্রভাঙ্গেরপতা; ইহার অন্থিসকলু ক্ষম ও স্কুক্ষা; সৌন্দর্য্যে इंशात्र मह काहात्र उ उक्षमा हम ना। आभि वरत्र कूल, धन वा विश्वा দেখিয়া কন্তা সম্প্রদান করিব না; যে যুবক রূপে ইহার তুলা বা অধিকু হইবে তাহাকেই কন্তা অর্পণকরিব।"

এই সমধ্যে বুদ্ধদেব কল্মাষদম্য নগরে বিহার করিতেছিলেন। उँग्हात প্রাদাদিক, প্রদর্শনীয়, ও সর্বজনমনোহারী রূপ দেখিয়া মাকন্দিক ভাঁহার সহ স্বায় কগ্রার বিবাহ দিবার সঙ্কল্ল করিলেন। তিনি গৃহে यानिया পत्नीत्क विनित्नन, "ভদ্রে, স্থ্যোগ্য জামাতা পাইয়াছি, অমুপমাকে অলম্বারে ভূষিত কর।" মাকন্দিক কন্তাকে অলম্বারে विভূষিত করিয়। বুদ্ধের সমীপে উপস্থিত হইয়া বলিলেন, "ভগবন, আমার কন্তার প্রতি একবার দৃষ্টিপাত কুরুন। রূপবতী, অলঙ্কতা, कामार्थिनो ও প্রফুলবদন। এই কন্তা আপনাকে অর্প্ব - করিতেছি। আকাশে চক্র বেমন রোহিণীর সহ বিচরণ করেন, আপনিও সেইরূপ এই कञ्चात्र मह वाम कक्न।" जगवान् वृक्ष मःमात्रवक्षन এकেवाद्र ছिन्न করিয়াছেন, তিনি পার্থিব স্থথে নিমগ্ন হইবার নহেন। তিনি ভাবিলেন যদি আমি অমুপমাকে সবিনয়ে বলি, আমি সুংসারত্যাগী লোক, আমার কামস্থে অনুরাগ •নাই, আপনি আমার নিকট হইতে প্রতিনির্ভ হউন; তাহা হইলে হয়ত: অনুপ্যা আ্যার প্রতি আরও অনুরাগিণী হইবেন এবং পরিশেষে ব্যর্থ অনুরাগ বশতঃ স্বিন্নকলেবরে প্রাণত্যাগ করিবেন। অভএব আমি কর্কশ বাক্যে মাকন্দিক ও অনুপমাকে क्रिया याहेर्ड विन। এই क्रिया क्रिया जगवान् विनिन-"ए विश्र, आिं जानक कमर्श्हिं । जाशांक সামার রতি বা তৃষ্ণা উৎপন্ন হয় নাই। রূপরসাদি বিষয়ে আমার

(कान প্रकात आमिकि नारे। অতএব আপনার এই म्जপ্রীবপূর্ণ कञ्चात गर जामि कथा विवार्ड ७ रेक्स् कित्र मा ।" माकिक जनवारमञ्ज वाका खवन कत्रिया विनित्नन—"आयात এই कन्ना किन्हीनानिनी, नी क्रপগুণবিহানা? काমভোগী লোক যেমন বিবিক্তভাবে মনোনিবেশ করে না, সেইরূপ আপনিও এই চারুরূপা কন্তার অভিনাষ করিতেছেন न।। ইহার কারণ কি ?" ভগবান্ উত্তর করিলেন—"হে বিজ্ঞা, ষাহার। বিষয়াসক্ত সেই মৃঢ় লোক সকল আপনার এই কন্তার জন্ত প্রার্থী হইতে পারে। আমি বুদ্ধ, মুনিসত্তম ও কৃতী। আমি সর্বোত্তম ও यक्षणभत्र वृक्षणणां कतिवाहि। भग यमन कलिक् दात्रा निश्च इत्र ना, मिरेक्रभ वाभित्र विलिश्चादि এই সংসারে বিচরণ করিভেছি।" अञ्चलमा, जनवारनद्र वाका अवन कदिया विषक्षा इट्टलन। वृक्षान्व वथन অমুপমাকে প্রত্যাখ্যান করিতেছিলেন উখন তাত্তার কোন শিষ্য (একটা বৃদ্ধ ভিকু ) মাকন্দিকের নিকট আসিয়া বলিল, "মহাশয়, আমার সহ আপনার কন্তার বিবাহ দেন।" মাকন্দিক বিরক্ত হইয়া বলিলেন 'হে বৃদ্ধ ভিক্ষু, আমি ভোমাকে আমার করার দিকে ভাকাইতেও िव ना, विवाह छ मृत्द्रद्र कथा।" এই कथा **अनिया मिट जिस्**द्र सन এমন ধিক্কার জিন্মল খেঁ, সে তৎক্ষণাং উষ্ণ শোণিত বমন করিয়া প্রাণ্ড্যাগ করিল।

দেই সময়ে সেথানে থে সকল বৌদ্ধ শিষ্য বসিয়াছিলেন তাঁহার।
বিশারাপর ইইয়া সকল সংশয়ের উচ্ছেদক ভগবান বৃদ্ধদেবকৈ জিজ্ঞাসা
করিলেন, "ভগবন, এই ভিক্ষু অমুপমার প্রতি অমুরাগ প্রকাশ করিরা
অকালে প্রাণত্যাগ করিল, ইহার কারণ কি ?"। ভগবান উত্তর
করিলেন, "পূর্বজন্মেও এ ব্যক্তি অমুপমার রূপে আরুট্ট হইয়ালাক্ষ্য

পূর্বকালে মহাসমৃদ্ধ সিংহকলা নগরীতে সিংহকেশরী নামে এক

थार्षिक त्राका त्राक्षपं कतिराज्य । त्यरे नगदीरज् निः क नात्य अक महा बाह्य मार्थवार वाम कति । मिश्रह कि मिश्र म नाम এक भूक জল্ম। ধিংহল, বাণিজ্য করিবার আশরে সমুদ্রবাত্তা করিবার অভি-লাষ করেন। তাঁহার প্রিতা তাঁহাকে বলেন, "বৎস, আমার প্রভূত ধন আছে, যদি তুমি তিল-তপুল-কুলংথ ইত্যাদি ভোগ্য বস্তু ক্রয় করিয়া আমার রত্নরাশি অজ্ঞ ব্যয় করিতে থাক, তবুও উহা কথনও ক্ষয় পাইবে না 

অতএব যতদিন আমি বাঁচিয়া থাকি, ক্রীড়া কর, কৌতুক কর, ইতস্ততঃ বিচরণ কর, আমার মৃত্যুর পর ধন উপার্জন করিতে চাও, করিও।" সিংহল পিতার কথা না শুনিয়া পাঁচ শত বণিক্ পুত্র সহ সমুদ্রথাত্র। করিলেন। তাঁহারা অনেক রাষ্ট্র, নগর, গ্রাম ইত্যাদি পরিভ্রমণ করিয়া লক্ষাদীপের সমীপে সমুদ্রতারে কিয়ৎকাল অবস্থিতি করিলেন। লঙ্গার রাক্ষী সমূহ নানা উপায়ে উক্ত বণিক্ পুত্রগণকে বশীভূত করিয়া উহাদিগকে বিবাহ করিল। তাঁখারা অচিরাৎ রাক্ষণীসমূহ দ্বারা ভক্ষিত হইলেন। কেবল সিংধ্ল রাক্ষদীমায়ায় বদাভূত হন, নাই। তিনি একাকী নির্বিল্লে ভারতবর্ষে উপস্থিত হন। যে রাক্ষদী এতকাল সিংহলকৈ বিমৃঢ় করিবার চেষ্টা क्रिशाहिल, তাহাকে সম্বোধন ক্রিয়া অন্ত রাক্ষসীগণ বলিল—"ভগিনি, অ।মরা সকলেই নিজ নিজ স্বামী ভক্ষণ ক্রিয়া ফেলিয়াছি, তুমিই কেবল তোমার স্বামীকে নির্বাহিত্ব করিতে পার নাই।" এই কথা গুনিয়া সেই রাক্ষনী পর্ম ভাষণরূপ ধারণ করিয়া সিংহল পার্থবাহের ममक्क উপস্থিত হইল, किन्छ তাঁহার নিষ্ণোশ অসি দেখিয়া ভয়ে পলায়ন করিল • তদনন্তর দে মনোরম রূপ ধারণ করিয়া সিংছ -ক্রেক্সক্রী-রাজার নিকট গমন করিল। রাজা তাহার রূপযৌবন দর্শন कत्रणः विमुध रुरेया জिल्हामां कतिरैलन, "जूमि (कं १ काथा रुरेज वानियाह ? এथानে वानगनित अध्याकन कि ?" ताकनी छेक दाकात

পাদদেশে নিলতিত হইয়া নিবেদন ক্রিল—"আমিট্রা হাইতা, আমার পিতা আমার বিবাহের নিমিন্ত আমাকে সিংহল নামক বিনিকের নিকট প্রেরণ করিয়াছিলেন; উক্ত বাণকের যানপাত্র মহা-সম্প্রে নর হওয়ায় তিনি আমার প্রতি ক্লিণ্ড ইইয়া আমাকে ত্র্তাগিনা মতা করিয়া তাড়াইত দিয়াছেন। শাহ অনেক কটে আপনার নিকট উপস্থিত হইয়াছ। রাজা স্পার রূপে বিমেন্ত্রিত হইয়া উহাকে বিশাস কবিলেন। সে অনাত্রিগন্থে পরম ইতরব রূপ ধারণ করিয়া তাঁহাকে ভক্ষণ করিয়া ফেলিল। বৃদ্ধদেব তখন শিশ্বমগুলীকে বলিলেন,—"আপনারা যে সিংহল বিশিকের কথা তনিলেন, আমি স্বরংই প্রকালে উক্ত বণিক্রপে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলাম; যে রূদ্ধ ভিক্ অমুপমার রূপে বিমৃঢ় হেইয়া প্রাণত্যাগ করিল, সে প্রকালে রাজা সিংহকেশরী নামে পরিচিত ছিল। যে রাক্ষসীর মায়ায় সিংহ কেশরীর প্রাণাত্যয় ঘটিয়াছে, সেই রাক্ষসীই সংপ্রতি অমুপমারূপে জন্মগ্রহণ করিয়াছে।"

পরিত্রাজক মাকন্দিক তথন অনুপমাকে গ্রেয়া কৌশাখী নগরীতে গমন করেন। কৌশাখীর রাজা উদয়ন-রংসরাজ অনুপমার রূপলাবণ্য দর্শন করিয়া আন্দিপ্ত হৃদয়ে উক্ত পরিত্রাজককে জিল্লাসা কবিলেন, "এই কন্তাটী কাহার ?" মাকন্ধিক উত্তর করিলেন, "মহারাজ, এটা আমার ছহিতা, অপর কাহারও নহে।" রাজা বলিলেক "আমাকে সম্প্রদান করন।" মাকন্দিক উত্তর করিলেন "বেশ"। অমুপমার সহ উদয়নের বিবাহ হইল। ইতিপুর্কে উদয়ন যে সকল দারপরিগ্রহ করিয়াছিলেন, তল্মধ্য শ্রেমাবতী শ্রেষ্ঠা। একণে উক্ত শ্রামাবতী ও অমুপমা এতহভয়ই উদয়নের অলা কিন্তি। হইলেন। ইতিপুর্কে তাঁহার যৌগন্ধরায়ণ ও ঘোষল নামে হই প্রধান অমাত্য ছিল। একণে মাকন্দিক তৃতীয় প্রধান অমাত্য মিবুক্ত

খীনাবতী বলিলেন, "বৃদ্ধদেবের নমন্ধার।" অনুপ্রমা বলিলেন "মহারাজ উনয়নের নথকার।" তদনস্তর অনুপ্রমা উদয়নের নিকট বলিলেন "মহারাজ, শুসাবতী আপনার অন্নে প্রতিপালিত, কিন্তু বৃদ্ধের নুমস্কার করে।" তথন উদয়ন বলিলেন, "অনুপ্রম, তৃত্রি ওরপ ভাবিওনা, শুমোবতী উপাদিকা, এইহেত্ বৃদ্ধদেবকে নমন্ধার করে।" এইরপ নানা কুল্র কুল ঘটনার শুমোবতীর প্রতি অনুপ্রমার ঘোর কর্ম্যা প্রকাশ পাইরাছিল।

ভাহার পর এক সময়ে স্ত্রী, পুত্র, অমাত্যাদি রাজধানীতে রাথিয়া उत्रयन विद्यानिशास ग्रमन कर्त्रन! এই সময়ে श्रामावजीक वध করিবার জন্ম অমুপমা মাকন্দিককৈ অমুরোধ করেন। মাকন্দিক নানা বিতর্কের পর ভীত হইয়া অগত্যা কল্পার ইচ্ছাপূর্ণ করিতে প্রয়াস क्रिल्न। , भाकिमिक णाभावजीत निक्रे गारेमा क्रिकांना क्रिल्न, "আপনার কোন দ্রব্যের অভাব আছে ক্রি?" গ্রামাবতী উত্তর করিলেন—"আমার ছাত্রীগণ রাত্রিতে বুদ্ধবচন পাঠ করে, তজ্জগু ভূর্জ, टिन, जूना, यित्र, कनम हेजामि करमकी प्रवाद श्राधन।" মাকন্দিক বলিলেন ''বেশ, আমি সম্স্তই অানিয়া দিতেছি।" শীঘ্ৰই शामावजोत्र गृहर প्राप्त भित्रमारण जूना, जूर्ज, उ टेजन आनी इ रहेन। রাত্রিতে মাকন্দিক সেই স্থূহে অগ্নিসংযোগ্ধ করিয়া দিলেন। উদয়নের श्रामावही अञ्डि भांठ मंड जी उल्क्लां ज्योज्ड रहेमा शिन। 'মৃত্যু কালে প্রামাবতী বলিলেন "অস্তরীকে, সমুদ্রমধ্যে বা পর্বত-व्यापका राम कान नार एथारन कर्ष लाकरक अञ्चल ना করে।" অনস্তর ভগবান্ বুদ্ধ শিশুগণ সমভিব্যাহারে সেখানে जानिया विनिद्यान, "এই সেই পাঁচশত স্ত্রী-কলেবর; উদয়ন-বৎসরাজ এত দিন এই। পাঁচশৃত দেহে রক্ত সক্ত গুঞ অখিত ও মুক্তিত হইয়া व्यविष्ठि कत्रिट्डिल्या । ' এक्ट (कर् अरे मकल प्रमुख भाग बाबाख স্পর্শ করে না। অতএব হে শিশ্বগণ, দগ্ধকান্ত ও বিজ্ঞানুষয় শরীর উভয়কেই সমজ্ঞান করিবে। ইহার কিছুতেই অমুরক্ত বা বিরক্ত হইবে না।

অনস্তর কৌশাস্বীর জনগণ বলিতে লাগিল "মহারাজ উদ্বয়নের গৃহ मक्ष रुरेग्नाष्ट्, जाभूलामि विनष्टे रुरेग्नाष्ट्; এই स्थाविभम्-मःवाम उंशिक (क विविद ?" जथन এकजन वृक्ष त्राक्क्जा ममस वृङ्खि পত্रে निथिन এবং উদয়নের নিকট লোক পাঠাইয়া বলিল "মহারাজ আমি অমুক দেশের রাজা; আমার পুজের মৃত্যু হইয়াছে; আমি যমের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করিব; আমাকে সাহায্য করুন।" তথন উদয়ন তাহাকে ভাকিয়া বলিলেন ''তুমি মৃশ', যমের সহ কি কেহ যুদ্ধ করিতে পারে ?" তথন সেই লোক বলিল "আমি রাজাও নহি, রাজপুত্রও নহি, অপ্রিম সংবাদ আপনাকে বলিবার জন্ত আমি এইরূপ ভাব ধারণ করিয়াছি। যম যদি অজেয় হয়, তাহা হইলে এই পত্রধানি পাঠ করুন। উদয়ন পত্র পাঠ করিয়া হঃথসাগরে নিমগ্ন হইলেন। রাজা কোশাদ্বীতে ফিরিয়া আসিলেন এখং সমস্ত বৃত্তান্ত অবগত হহয়া যৌগন্ধরায়ণকে विलिलन "माकिनिक ও অনুপমাকে যন্ত্ৰগৃহে আবদ্ধ করিয়া মারিয়া क्ला।" योगक्षत्रायण উহাদিগকে गुज्जगृष्ट् वह ना कत्रिया, व्यभन्न এक ही জ्यिश्दर्भवाथिया मिल्नन, मार्जानन भदा উन्द्रानत भाक मृत इहेन। তিনি বিগতশোক হইয়া বলিলেন ''অমুপমা কোথায় ? যৌগন্ধরায়ণ অমুশমাকে বধ করিয়াছে, আমি ধৌগন্ধবায়ণকে প্রিকাসিত করিয়া षिटिक ।" योगकतायन विवासन "महोत्राक, भाष्ट्र व्याभनि क्<u>मश्रमार</u>क পুনরায় দেখিতে চান, এইজগু আমি উহাঁকে বধ না করিয়া ভূমি-शृद्ध दाथिया नियाष्ट्र। तिथि, উनि निविज जाएक मि ना ?

তথন বৌগদ্ধরারণ অর্পমানে ভূমিগৃহ হইতে, বাহিরে আনিলেন।
অর্পমা পূর্বের স্তার অমানশরীরে অবস্থিতি করিতেছিলেন। উদরন
সংসারের কুটিলভা দেখিয়া অর্পমার সূহ বৃদ্ধদেবের ধর্মের আশ্রম
লইলেন।"

[ ক্রমশঃ ]

'बीमजीमहन्द विमाम्भ्यन

# गाज्शेदनत आर्थना।

মোরা মাতৃহীন!

তাই এই জগতের পথপাশে পড়ে আছি এত দীনহীন!
বহুদিন পাই নাই জননীর অঞ্চল বাতাস,
বহুদিন স্তম্মরেদ মিটে নাই হৃদয় তিয়াঁষ,—
ক্ষায় ক্ষিপ্তের মত তাই নিজ রক্ত মাংস করিতেছি গ্রাস
একি সর্বনাশ!

মোরা মাতৃহীন !

ভিক্ষা ঝুলি নিয়ে সবে বাহিরিছি রাজপথে, নহে বছদিন, ওগেঁঃ সবে বিশ্বজন, চেয়ে দেখ মোদের শরীরে, ঢাকা শত বিদেশের শেতপীত বছজীর্ণ চীরে, এখনো রয়েছে চিহ্ন হেথা জেখা, যাহে মনে পড়ে জননীরে এ জন্ধ তিমিরে! শোরা মাতৃহান!

সবে থিলি' সাজিয়াছি বিচিত্র নির্ণংশ মাঝে ভিথারী নবীন ;
ছিল সাধ রাজভারে নানা ছন্দে মৃষ্টি ভিক্ষা করি'।
শতছলে মেগে' ল'ব বছরত্ব, প্রাসাদ, নগরী;
সে স্বপ্ন ভাজিয়া গেছে, হার কৃষি' রহিয়াছে রাজার প্রহরী।

মোরা মাতৃহীন!

হাসে তাই বিশ্ববাসী মোদেরে দেখিয়া এত বিরূপ, মলিন;
উপেক্ষা করেছি কত জননীরে মন্ত দেহ বলে;—
সেই পাপে—্ণৃতরূপে লুটাইয়া সর্বাপদত্তি
মরিতেছি দারে দারে অনশনে অপমানে প্রতি পলে পলে
তথ্য অশুক্রলে

্রুমারা কুলীর্ন-

এই গর্বে, ক্ষাতবক্ষে ভূলেছিমু মাতৃসেবা পবিত্র প্রাচীন;
জননী মরিয়া গেছে; ঘনায়েছে অন্ধকার রাতি,
একে একে নিবে' গেছে কক্ষে কৈকে তৈলহীন বাতি;
মর্দ্মে মর্দ্মে ব্ঝিতেছি নহি শুধু মাতৃহীন—মোরা মাতৃঘাতী
অভিনব জাতি।

"মা ভূমি কোথায় ?"

দ্র দিথলয় থুড়ি' আসিয়াছে অনলরাশি গ্রাসিতে ধরায়;
ধক্ ধক্ বাইুশিখা চারিভিতে মেলিছে রলনা,
ভয়াতুর মোরা সবে করিতেছি প্রলম রচনা,—
য়ুরিতেছি দিখিদিক্ প্রতিপ্রে আপনারে ডুবায়ে আপনা
হারায়ে চেতনা!

ट्र मोगा जननि !.

তর পুত্র-পৌত্রগণ পরস্পর না চিনিয়া ডুবায় ধরণী; সবল ওবিক্ল রক্ত শতবাহু পুরুত্ত সম, তুর্বলেরে পাকে পাকে শতবন্ধে করিয়া বেন্টন; এরজ্ব পিপাসা মাগো! নিবাও নিবাও দেবি! নয় এ ভূতল যায় রসাভল !

করগো আহ্বান

वानिय जननी कर्छ, मत्रन स्वरहत वरन मकन मस्रान; জननौत मार्कालोग পतिপूर्ग क्रमुद्र तरल সকলে ডাকিয়া আন জগতের এক সমতলে উঠুক সকগ কঠে 'জননি! জননি!' खर्नि, একাকাশতলে জাগুক্ সকলে।

."(काथाय जननी ?"

वार्डकर्छ এइ किन् छाकि छिছ छाय गाला, निवन तक नी; মোদেরে রাথিয়াছিলে জগতের রত্নবৈদীবুকে, বছরত্ন মুকুতায় সাজাইয়া দেবশিশুরূপে দে উচ্চ আসন হ'তে ভিন্ন হয়ে', ভ্ৰষ্ট হ'রৈ' কোটি **অন্ধ**কুপে ( আজ ) भित्र हूर पुरुष !

"কোথায় জননী ?"

यामित्र के आर्खनाम करिंगा, वाशिक्षित्र कात्रक त्रमणे। তোমাদের কাছে চাহি জননীর অঞ্চল অভয়; ° অবিরাম ক্রীর ধারে পৃষ্ঠ কর বিশুফ হাদয়; थाळोत्रात्भ, माज्रुत्रात्भ, छ्रिजा-ভित्रिमीत्रात्भ ज्यान वदां छत्र श्रुतियां श्रुपत्र । তোমরা জননী !

অগ্নিপিওসম তপ্ত অমূল্য হৃদয় বলে শিশুর ধমনী যেমনি পুরিয়া দিতে মহাত্রত মাত্যুদ্রবা রদে, শিশুরা যেমন করি মন্ত হ'ত সংগ্রাম রভদে, ঢोनগো আবার দেবি! সেই তেজ আমাদের হৃদয় কলসৈ উত্মন্ত হরুষে !

मां अलग्न ;

তোমরা জননী জাতি; তোমাদের স্থাভরা জননী সদয়; युगारखत जनाशात कनाशात कनर्या भन्नत, পশিষাছে বহু বিষ, বহুরোগ সর্বদেহ মনে : প্রাণপণ শুশ্রষায় মোদের মানুষ কর জীবনে মরণে রণে, গৃহান্ধনে !

মা তোরা সবার

শত শত জীর্ণতরী; এথনো লজ্বিতে হবে বহু পারাবার মাগো তোরা কত আর র'বি পড়ে অলস শয়নে · সর্ণ প্রতিমার মত প্রাণহীন ক্ষুদ্র গৃহকোণে, रक्'ल मिरम्' बाधनान त्रथाती, जवन, ग्रुष्ट कां जि अ्लग्रान विवादम वामत्न।

তোমরা জননী।

উদার ললাটততে নির্মাল সিন্দুর রাগে সাজিয়া খেমনি মৃত্যুরে করিয়া দিতে নিরঞ্জন, সহজ, স্থলার; তেমনি শিখাও দেবি, আত্ম'পরে করিয়া নির্ভর रिम भारा जका जरत प्रसं छ मत्र ग जो रथं ह'र र ज जा जा ज

रहेरगा जामन ।

ভারত রমণি !

এ বোর ছদিনে ওগো, ভোমরা ভরসা শুধু, আশার তরণী;
মাগো আর দিন নাহি, দেখ চাহি খুলিয়া নয়ন;
এ নব গোধুলি লগে দীকা দাও মন্ত্রে সঞ্জীবন;
পারি যেন প্রাণপণে কমনীয় মরণেরে করিতে বরণ—
সর্ব্ব সম্পূর্ণ;

তোমরা জননীরূপে ধন্তা হও; পান্ন যেন তব পুত্রগণ মরুণে জীবন।

গ্রীগঙ্গাচরণ দাসগুপ্ত।

## নারায়ণী।

#### অবতরণিকা।

( )

টনাগপুরের ভিতরে জনার জলল প্রসিদ্ধ। কলিকাতা হইতে প্রুলিয়ার পথ নিয়। লাঁচি যাইতে হইলে, এই জনার জললের পার্ধ তেদ করিয়। যাইতে হয়়। আগে পথে বড়ই বাঘের উপদ্রব ছিল, এখন এ চরকম নাই বলিলেই হয়,—মাঝে মাঝে হই একটা উপদ্রবের কথা গুলু যায় এইমাত্র। প্রায় দশ বংসর পূর্বের এইরূপ একটা উপদ্রব ঘটিয়াছিল। একটা নরখাদক ব্যাক্রের শ্রের বির্যান্ত্রা দিন করেক পথিকের এই পথে চলা ভার হইয়াছিল।

. त्रांतित अकन शकिम मार्ट्य, रमुटे गांच भीकारत कुठमक्त रून। जिनि कठकश्रमि र्काम चस्त्रत, ७ शोंचोक्रतक कूक्त महेन्ना चनात ন১৬ ভারতী। ভারতী হইয়া ভারতীয় তীরস্থ একটা স্থানে উপস্থিত হুইলে, সহসা সাহেবের কুকুরগুরু। ही कात कतिया उठिन। वहार खत मिश्चान **खरूमान कतिया मारक** ज्ञाखनारक कात्रगिर्कात्रण जाएम कत्रितन्। जञ्जकान कत्रिरङ शहिषा भागवा काल विकठे हो कात्र कतिया मूर्किङ हरेया পिड़िल। লছুয়া বিকৃত মন্তিকের ভাব দেখাইল, আর কুকয়া কিয়ৎক্ষপের জন্ম (वावा इहेग्रा (गल। मारहव इस्प्रिपृष्ठि ছिल्नन,—इस्रो अस्मा अस्न বিরত হইল। মাহুতের প্রহার অগ্রাহ্য করিয়া এক স্থানে দাঁড়াইয়া শুও তুলিয়া প্রহারজনিত কাতরতা দেখাইতে লাগিল।

श्रेण कि! वाधरे यि वाश्रित श्रेमा थाक छ म वाध काथाम ? সমুথে স্থবর্ণরেথাব জল তর তর করিয়া বহিয়া যাইতেছে—বাঘ কই ? भार्ष य उन्त्र (नथा यात्र, (नथा शिन (कवन) वित्रन-मन्निविष्ठे स्वर्गत्त्रथा-তौत-(भाजी भागछक। अपृत्व वाध्यत अश्विष वृक्षा (शंग ना।

मार्ट्स र्ध्य विश्विष्ठ रहेलान ना, किছू विभन्न रहेलान । कुकूत-গুলা সমভাবে চীংকার, করিতেছিল। মাতক্ষেরও ওওচালনের বিরাম ছিল না। দোমরা তথনও উঠে নাই, সেই ভাবেই মুর্চিছ্ত হইয়া পভিয়া আছে। কুরুয়ার তথনও পর্যান্ত বাক্যক্ষুর্ভি হয় নাই শহুয়াবও প্রকৃতি-পরিবর্তনের লক্ষণ দেখা যাইতেছিল না। কারণ-भिकात्रावा क्रम मार्यं वसूरकत या अग्राक कतिर्दंग। वसूरकत भरक मामनात्र भःखा कितिन।

मार्ट्य माग्रतारक मुर्छिछ रहेवात कात्रण किख्युमा कतिरागन। छेखत्र ना कतिया (म (कवन अत्रूनि निर्दिष्ण मार्ट्वरक এको। श्रकाश्व भौगगोह (मथारेम। সাह्द (मूथिएनन त्र्कहृद्ध भन्नभावनिष् শাধার বেষ্টনে ঘন পতাবর্ধে বতকগুলি নরকল্বাল অবস্থিত बर्शिट्र।

সাহেব কারণনির্দারণে সমর্থ হইয়া তদ্ভতেই প্রফুলতার কিঞ্ছিৎ ভাষ দেখাইলেন, অর্থাৎ এক বিকট হাস্তে এবং সেই হাস্তর্বের বিকটতর প্রতিধ্বনিতে সহসা সেই বনভূমি বিকম্পিত করিয়া তুলিলেন। কুকুরগুলা মৃহুর্ত্তমধো নীরব, মাতঙ্গ-শুগু ভূমিসংলগ্ন। হতভাগ্য काम खनाव पूर्व प्रमा প্रजूत এ অত্যুৎकृष्टे जान स्मिव जाश्म ভোগে वित्र छ रहेन ना । नार्ट्व रुडी रहेर्ड व्यवज्यन कत्रियां जाराम्य (वक्राचार्ड अर्जिति कि कि विलास । श्रेशित मिनियां इरेशि मकरण प्रकारियां इन कतिल।

किन्छ वह ८५ छ। एउ । जा विद्या किन्न পাবিল ना।

व्यग्रा मार्य निष्क वृक्षार्वाम्य कवित्वन। कक्षामश्रीलरक इक्कां कतिवाव (छष्टे। क्विंग्ना (छष्टे। निक्वं इहेन। जार्हरवव বোধ হইল যেন তস্তবকর্ত্বক অপজত হইবাবী ভূয়ে বৃক্ষ জনমুমণি-अलिक वाछवली दावा मुध्कर्प व्यावक कतिया द्राथियारह।

শাখাছেদনোপযোগী অন্ত্র তিনি সঙ্গে লইয়া গিয়াছিলেন। তদ্বারা ১তকগুলি শাথা ছিন্ন করিলেন এবং কন্ধালগুলিকৈ বুক্ষ হইতে পৃথক नित्रा ज्यानित्वन।

**ठांत्रि** ने वककारमय मर्था जिन्ही अञ्चलावरक अमनि जारव विष्ठि चैवित्राष्ट्रिल (य সাহেব শত চেষ্টারও সে গুলিকে পৃথক ক্লব্লিভে ারিলেন না। যে কঞ্চালটী পৃথক, তাহার কটিতটে এক গাছি স্ক্র र्वर्ण्यानमञ्ज अक्टो ज्ञानात् िष्णा । क्वाट्व प्रिया वज्हे विश्व इंट्रेलन। ডिপাটी थूलिलन। ভাহার ভিতর হইতে অহিফেনের कि वार्ष्ट्र रहेन।

मार्ट्रिय को जूरम उपीक्ष रहेशा छिठिन। जिनि जाभन कक्षाम अगिएक किছू ना किছू मिरण कि ना प्रिश्वांत्र कश्च मकान कांत्रक कतिराने। मक्षात्मत्र मध्म जिनि अकी कहारमत्र अनुमिर्ड अकी श्चर्य अनुतीय, আর একটার গলদেশে বছমূলা মণিমুর হার দেখিতে পাইলেন। সেই অপুর্ক কণ্ঠভূষণের মধ্যমণি তথনও পর্যান্ত সমুজ্জল ছিল। অপরটীর অঙ্গে কিছুই ছিল না। তবে ভাহার অঙ্গুলিছমে সংলগ্ন এক টুকরা জীর্ণকাগজ তথনও পর্যাস্ত ধারণের দৃঢ়ভার পরিচয় मिट्डिइन।

मार्ट्य ভावित्यम এकि अष्टु आविष्ठात्र। उँशित्र विश्वप्रविकात्रिङ नग्रत्नत्र नमरक वात्रवा উপন্যাসের সমস্ত ছবিশুলা যেন যুগপৎ জাগিয়া উঠিল। বেখানের যে জিনিষ্টী তদবস্থায় রাখিয়া সাহেব কন্ধাল-श्वनिक गृह जानितनः।

( 2 )

এই कक्षान ह ब्रेंश दाँ हि नगदी कि वक्ष एक क्षान ह नम्द्री कतिया कृतिम। कर्मिननंत्र मार्ट्स्ट्रित हाजी देशामत मक्षा এको। কন্ধালের আন্ত্রাণ লইবামাত্র বিকট চাংকার করিতে করিতে প্রাণ विमर्कन कतिल। मकेल खिनिल। नाना कत्न नाना कथा कहिए माशिल। क्यिमनत् मार्ट्य इट्रेंट आत्रेख कतिया এक है। कूछ कान-त्रभगे পर्गाष्ठ ककाल मश्रक्त किছू ना किছू गद्ध कत्रियाहिन। (कर् श्रीमश्रीहिल, (कर अंक्षेत्र अञ्चवर्षण कतिश्रीहिल, (कर्नवा कक्रात्मत्र উদেশ্বে প্রণাম করিয়াছিল। কাহারাও ধা আপনাআপনির ভিতরে ছ দশটা ভূতের গল্প তুলিয়া মনের আবেগ মিটাইরাছিল।

ताँ कि अमन इक्रेम (कन १ क्क्कानकृष्ट्रीयत कि अमन देवका किक अकि हिल ? এ ककाल काशामत ?

প্রতত্ত্বিৎ কতকগুলি পথিত সেই সময়ে কোলাভাতির আদি श्रुक्य निर्कात्रपत्र क्य ছোটनीगश्रुद्र गित्राছिलन। छोहात्रा नामगरपुत्र शांबाफ क्टेट जिंबाना अकाछ शाधन कूफ़ारेना, जिंह बानाई ट्यान-

वाजित वाषिभूत्रदेवत जन्नावर्षिय वित्र कतिन जाहात जन्न उक्नाकि र्विष्टिहिर्द्वान। अधि एक हिर्णन, जाहात्र जिज्दत्र जीवन-विह्न अक्की याज्ञ क् निक चाहि कि ना। नकरन र्जान रहेर्ड शाहेर्ड हिल्लन, এমন সময়ে সেই ককালচভুপ্তয়ের গন্ধ তাঁহাদের নাসিকারদ্ধে প্রবেশ করিলু। আনন্দেৎেফুল্ল হইয়া তাঁহারা রাঁচি আগমন করিলেন।

প্রবর্ণবেগে প্ররীক্ষা চলিল। কেহ কন্ধালহদয়াভ্যন্তরে গোলোকের गान छनिट्य भारेमन। किर वा सम्मानंति मिथितन, व्यक्ति छिउदा बागिवक कम्भन नवजात्व ना रहेग्रा व्याए रहेर्डएह। स्वार हैरा গান नम्न जानि কোলের প্রতিভার আলোক। কোন মহাত্মা তুষার-সন্নিভ অস্থি-অঙ্গে মদীবর্ণের ছায়া দেখিতে পাইলেন।

তথন স্থির হইল, স্বতন্ত্রাবস্থিত কম্বালটীই কোলজাভির আদি পুरूष, नहेल माणात्र भिकेल वाँधा क्रभात्र ডिवा इहेट आफिय्यत्र शक्क वाहित श्रेट्व किन ? ककान गाष्ट् উठिन किमन कत्रियः १ अमन श्रा। नहिल श्रव छ जित्व दिन १ ছाउनाशश्रद्ध त्रांगात्र थनि ककालत्र গাধে লাগিয়া রাসায়ণিক প্রক্রিয়ায় শিকল হইয়া দৈবঘোগে শালবীঞে अफ़ारेग़ाছिन। (नर्य मृक्तिन (जन कत्रिम्नः गार्ह्य मह्म भीद्र भीद्र উপরে উঠিয়াছে। সকলে সব দেখিল, কিন্তু মূর্য যদি কেই সেখানে थाकिंठ, छाश इरेल (मुश्चिष्ठ भारेठ (य शाष्ट्र पूर्वा गंकारेग्नाष्ट्र। किहू দিন পরে কলিকাতার এক বিশিষ্ট ইংরাজী সংবাদপত্তে একটী বিসমকর मश्वाम প্রকাশিত হয়। 'আমরা নিমে তাহার বলামুবাদ দিলাম।

"এতদিন পন্ধে অনন্তপুরের বিজোহী রাজা বীরচন্দ্র সাহীদেবের कड़ान साविष्ठ रहेन। जनात्र जीवन कक्टन এक ही श्रकां ज भानत्क-माथाम এই कदानी विज्ञाधिक छिन। त्राँठित জ--- मार्ट्य भीकात করিতে যাইয়া কলালটাকে দেখিতে পান ৭ হতভাগ্যের মুখে নিষ্ঠুন্নতার हिन्न अथम अ विश्वमान । भाभिष्ठित कत्राकृणि-कक्षात्वत्र भागिजिक

এথনও সমৃক্ বিলুপ্ত হয় নাই। ত্রিশ্ব বংসরের ধারাবর্ষণেও সে কলক প্রকালিত করিতে পারে নাই। বিক্বত বদনের বিকট দন্তবিশাশ অবলোকন করিয়া, সাহসী বারপ্রক্ষ হইলেও আবিদ্যারককে ভদ্ধ পাইতে হইয়াছিল। হতভাগ্য দিন কয়েক বড়ই উপদ্রব করিয়াছিল। দিন কয়েক হোটনাগপুরস্থ ইংরাজ পুরুষ ও মহিলাগণের প্রোণে উদ্বেগ তুলিয়া সহতে প্রজ্ঞাত অনলে আপনাকে আত্তি দিয়াছিল।

"এই সঙ্গে আরও তিনটা কল্পাল আবিদ্ধৃত চইয়াছে। বড়ই বিশ্বয়ের কথা কলালত্রয় পরম্পার বিজ্ঞ ছিল! তুইটা স্ত্রীলোকের বিলার অমুনত হয়! অপরটা পুরুবের। কিন্তু দেশীয়ের নয়। তাহার অমুলি-কল্পালে থে অমুরীয় ছিল, তাহাতে ইংবাজী অক্ষর আবিদ্ধৃত হইয়াছে। একটা অক্ষর সি, বোধ চয় চাব্ল্সের আয়েক্ষর। অপরটা এরূপ ক্ষর প্রাপ্ত হইয়াছে যে, তাহা হইতে কোনও কিছু রহস্ত উদ্বাটিত হইল না। কেহ কেহ অমুমান করেন, ইহা সেই নিরুদ্ধিই চার্ল্স ব্রাউন। ব্রাউন বিলাতের প্রাস্কির লর্ড—এর ভাগিনেয়। সিপাহীবিদ্রোহের ইতিহাস লিখিতে তথ্যসংগ্রহের জন্ম তিনি ভারতে আসিয়াছিলেন। তাঁকার খুড়া অমুক ব্রাউন তথন ছোটনাগপুরের কমিলনর। ব্রাউন খুড়ার গৃহেই অতিথি ছিলেন। সহসা একদিন তিনি নিরুদ্ধিই হন। আর তাঁহার সন্ধান মেলে নাই। বুঝি এত্রাজন পরে মিলিল। কিন্তু ব্রাউন রন্পীরয় বিজ্ঞিত হইয়া কেমন করিয়া গাছে উঠিল প বড়ই বিশ্বয়ের কথা।"

আর একথানি সংবাদপত্তে এইরপ সংবাদ প্রকাশিত হইয়াছিল:
"ধন্ত প্রেম! ধন্ত তোমার মহিমা! তুমি মাম্বকে কতই না উচ্চ
করিতে পাব! তোমার কুপার মহাত্মা ব্রাউনের দেহ মাটা ছাছিয়া
জিশ হাত উপরে উঠিয়াছিল।" গাছের ডালে বাধা না পাইলে এতদিক
ব্রাজন কত উপরে উঠিতেন, তাহা কে বলিতে পারে ?" ইত্যাদি।

তৃতীয় আর একখানি পত্রিকায় এইরূপ লিখিত ছিল ---

"রমণী ভোমার প্রেমের कি এতই তাকর্ষণ! যে ইহার জন্ত একজন বারপুরুষ কন্ধালাবশিষ্ট হইয়াও ত্রিশ বংসর ধরিয়া একটা গাছের ডালে ঝুলিতেছিল !...কিন্তু এ মহিলা কে ? অবশ্র তিনি সম্রান্ত বংশীয়া। কেন না তাঁহার কণ্ঠে মণিময় হার ছিল। রমণীর প্রেমের কি এতই উত্তাপ! এই অজ্ঞাতনায়ী প্রেমময়ীর কঞ্চলাবশিষ্ট ক্লমোত্তাপে দেই অপূর্ক হার এবং তৎসংলগ্ন মহামূল্য মণি অঙ্গারে পরিণত হহয়া গিয়াছে। মিথ্যাবাদী হতভাগ্য ক্বফাঙ্গঞা বোধ হয় এ তত্ত্বে বিশ্বাস করিবে না। তাহারা হয়ত বলিবে, আবিষারক হারগাছটা আত্মগাৎ করিয়াছে। ঈশ্বর এই মিথ্যাবাদীগুলাকে রক্ষা कक्रन।"

আমরা এই ঘটনাটাসম্বন্ধে যে একটা গল শুনিয়াছ, তাহাই আজ পাঠকবর্গকে উপহার দিলাম

#### প্রথম পরিচ্ছেদ।

ছোটনাগপুরের অন্তর্গত অনন্তপুর একটা পার্কত্য গ্রাম। এই প্রামে বারচন্দ্র সাহীদেব বলিয়া একজন বড় জমীদার ছিলেন। তাঁহার শপতির তিন লক্ষ টাকার আয় ছিল। বীরচক্র সাহী পূর্বের নাগপুরের মহারাষ্ট্রীয় রাজা ভোঁদেলার একজন - সামস্ত রাজা ছিলেন। যুদ্ধ-বিগ্রহ উপস্থিত ধ্ইলে তাঁহাকে নাগপুরাধিপতির জন্ত দৈন্ত সরবরাহ করিতে रहेंछ। निष्कंत क्रगांनात्रीत मधा छाहात প্रकामानत्नत्र अधिकात्र हिल। ञ्चताः क्योनात इहेटल व वाकालात क्योनात्रिरगत जात्र किन, मन्त्र्रं अध्किन्ग हिल्म मा।

व्यभू क विषय (य विषय नागभूत्रीधिभिष्ठित त्राका देश्त्रोक त्राक "याधिकात्रज्ञ करतन, भिरु नगर वीत्रहत्वरक देश्त्रां ज्या जिल्लीत

वानिए इस। है द्वारक अधीरन जानिया किहार প्रक्रिया অনেকাংশে থকাঁকত হর। ইংরাজ তাঁহার হন্ত হইতে প্রজাশাসন-क्रमणिको काष्ट्रियां मस्यम, ज्य क्रक्किनि निभारे बास्विक अधिकीत्र डीशादक (मध्या श्रेत्राष्ट्रित।

বীরচন্ত্রের একমাত্র পুত্র, নাম রামচন্ত্র। অধিকারচ্যুত হইবার পর তিনি জমাদারী পর্বাবেক্ষণের ভার পুত্রের হস্তে দিয়া ধর্মকর্ম্বে মনো-निर्दर्भ करत्रन।

আনন্দদেব নামে এক আত্মায়পুত্রকে তিনি রামচন্দ্রের সহায়তাদ্ निरम्रांग करत्न। ञानमरानरवत्र (ठष्टोम्न त्रायहरास्त्र अन्तक देश्त्रारणः সহিত ঘনিষ্ঠতা হয়, এবং এই ঘনিষ্ঠতার ফলে অসভ্য রামচক্র শীন্তই সভ্যতার চরম সীমায় উপনীত হন !

अञ्चितित मधारे आय अर्थका वास्त्रत जागला किছू विनि इहेट नाशिन। क्य नाका हिन। न्छा-एडाज-मृशयामि विविध बााभादः अञ्चितिक अर्थारे वीत्रहासत्र वामगविधि मिक्षिङ প্রভুত ধনরাশি পুত व्रामहक्ष निः भिष्ठ कतिलान। वोत्रहत्त विषय्रमञ्जल किছ मिथिएडन ना विषय्ना भूदर्स विषय वृक्षित्व भारतन नाहे। जिनि क्विक भूटक सिष्ट्रगार्टिंग (मिथिया मार्ग वित्रक रहेएजन। এवः जाराक कर क्रा अधिक जन क्षिक्र जाता भन्न इहेर्ड (मिथिया माथा निर्काः ডाकिश्रा जित्रकात ७ कतिराजन। किन्त छांशत अनवाणि य निःरणिकि हरेएटिह धो जिनि वृथिए भारतन नाहै। यथन वृथिएनम, **ए**थ তাঁহার জমীদারী ঋণজালে আবদ্ধ পুত্র সাজ্যাতিক পীড়াক্রাস্ত অভিরিক্ত মতাদি দেবনৈ রামচক্রের স্বাস্থ্য ভগ্ন হইন্ত্র পেল। অবশেট বৃদ্ধ পিতা ও মাতাকে শোকার্ত করিয়া, একটা মাত্র বালিকা কছ রাখিয়া রামচক্র দেহত্যাগ করিলৈন। স্বামীর চরিত্রদাধে মর্শাহ रहेबा जधकत्या भन्नी रेजिभूर्किरे भवरणाकगठा रहेबाहिरणन ।

অগত্যা বৃদ্ধ বীর্ষ্ট্রস্ত্রকে জুমাদারীর কাণ্যভার পুন: গ্রহণ করিতে বাধ্য হইতে হইল। আনন্দদেবই, এই সর্বাদার মূল বৃঝিয়া তিনি প্রথমিই তাল্লাকে প্লদ্যুত করিলেন। আনন্দদেবের পুত্র মৃকুন্দদেবের সঙ্গে পৌত্রী নারায়ণীর বিরাহ দিবার সল্পন্ন করিয়াছিলেন। সংক্রম্ম বীরচন্ত্র সে সম্বন্ধ ভ্যাগ করিলেন। পিতা, পুত্র উভরেই অনস্তপুর হইতে তাড়িছ হইল। বীরচন্ত্র পৌল্লার জন্ত অক্ত পাত্রের সন্ধানে রহিলেন। কেনলা পুত্রের অভাব পূরণ করিতে পুত্রস্থানীর একটা যুবকের বড়ই প্রয়োজন। তিনি বৃদ্ধ, পুত্রশোকপীড়িত, আর কয়দিন বাঁচিবেন ? তথন কে নারায়ণীর অভিভাবক হইয়া, তাহার অগাধ সম্পত্তি রক্ষা করিবে ? জীবিত থাকিতে থাকিতে তাহাঁকে বিষরকার্য্য বৃঝাইয়া দিতে পারিলেই তিনি নিশ্চিন্ত। তাহাঁ হইলে আবার স্বছন্দ মনে তিনি ধর্মকর্ম্যে মনোযোগ দিতে পারেন। সংপাত্রের সন্ধানে তিনি বিশ্বস্ত সহচর রতনকে নিযুক্ত করিলেন। কালবিলম্ব না করিয়া রতন অনস্তপুর পরিত্যাগ করিলেন।

বীরচন্দ্র অতি সাবধানতার সহিত জনীদারীর কার্য্য পরিদর্শন করিতে লাগিলেন। পূর্বেই বলিয়াছি জনীদারী ঋণে আবদ্ধ হইয়াছল। স্বতরাং ঋণমুক্তির জন্ত তাঁহাকে নানাদিকে ব্যয় সংক্ষেপ করিতে হইল। দামান্ত হই দশজন দিপাহী রাখিয়া অবশিপ্ত সমুদায়কে তিনি অবসর প্রদান করিলেন। পুল্লের মৃত্র পুর হইতে খেতাজোৎসব একরপ উঠিয়াই গিয়াছে। কোনও বিশেষ পর্বোপলক্ষে হই একজন উচ্চপদন্থ সাহেব নিমন্ত্রিত হইতেন এই মাত্র।

রামচন্দ্রের মৃত্যুর পর এক বংসর অতীত হইরা গিরাছে। রাজার ঋণ পরিশোধের আর বিলম্ব নাই। রতনও স্থপাত্রের সন্ধান করিয়া দেশে ফিরিয়াছেন। ঋণভাত রাজা শুধু ঋণমুক্তির শুভদিনের অপেকা করিতেছেন। তাহা হইলেই মহাসমারোহে পৌত্রী নারারণীকে পাত্রস্থা আসিতে হয়: ইংরাজের অধীনে আসিয়া তাঁহার পূর্কক্ষতা অনেকাংশে ধর্বীকৃত হর। ইংরাজ তাঁহার হস্ত হইতে প্রজাশাসন-ক্ষমতাটী কাড়িয়া লয়েন, তবে কতকগুলি সিপাই স্লাধিবার অধিকার डाँशारक (मध्या श्रेयाछिन।

বীরচন্তের একমাত্র পুত্র, নাম রামচন্ত্র। অধিকারচ্যুত হইবার পর जिनि जगोनात्रो পर्বारवक्षरणत ভार পুलেत হতে निया धर्धकर्प्य मना-निरवर्षं करत्न।

আনন্দদেব নামে এক আত্মায়পুত্রকে তিনি রামচন্দ্রের সহায়তায় मिरमार्ग करत्रन। ञानमरामर्वत्र (ठष्टोम्न त्रामहरास्त्र अरनक देश्त्रारास्त्र সহিত ঘনিষ্ঠতা হয়, এবং এই ঘনিষ্ঠতার ফলে অসভ্য রামচন্দ্র শীদ্রই সভাতার চরম সীমায় উপনীত হন।

অল্লদিনের মধ্যেই আয় অপেকা ব্যয়ের ভাগ্টা কিছু বেশি হইতে লাগিল। ক্রমে মাত্রা চড়িল। নৃত্য-ভেজি-মৃগয়াদি বিবিধ ব্যাপারে अञ्चितिक अधि वीत्रहास्त्र वानाविधि मिक्षि अञ्च धनतािन भूज क्रामहक्त निः भिष्ठ क्रिलिन। वोत्रहक्त विषय्रमञ्जल किছू प्रिथिएजन ना विषय्ना भूर्त्व वित्यम वृक्षित्व भारतम नाहे। जिनि क्विन भूरक्षत মেচ্ছদাহচর্গ্য 'দেখিগা"মনে মনে বিরক্ত হইতেন। এবং ভাহাকে ক্রমে क्रम् अभिक्ठत श्लिष्ठ्ञावाभन्न इट्रेड प्रिथिया म्या मध्य निर्कतन ডাকিয়া ভিরস্কারও করিতেন। কৈন্ত তাঁহার ধনরাশি যে নিঃশেষিভ इटेटिइ এটা তিনি ব্ঝিতে পারেন নাই। यथन ব্ঝিলেন, उथन তাঁহার জমীদারী ঋণজালে আবদ্ধ পুত্র সাজ্যাতিক পীড়াক্রান্ত। অভিরিক্ত মত্যাদি দেবনৈ রামচন্দ্রের স্বাস্থ্য ভগ্ন হইমা পেল। অবশেষে বৃদ্ধ পিতাও মাতাকে শোকার্ত্ত করিয়া, একটা মাত্র বালিকা,কন্তা রাখিয়া রামচন্ত্র দেহত্যাগ করিলৈন। স্বামীর চরিত্রদোষে মর্শাহত रहेशा जशक्षमशा भन्नी देखिश्रीसंह भव्रामाकृशका रहेशाहित्यन।

व्यग्ना वृक्ष वीत्रध्याक क्मीमात्रीत कार्यानात्र, शूनः अर्ग कत्रिक वाधा इहेट इहेन। जानमाम वहें अहे मर्समा एन प्राथम विभि अथिय । जाबारक अप्रांज कतिराम। जानकापितत भूज मूक्कापितत मक्ष (भोजी नात्राय्योत्र विवाद मिवात्र मक्त्र कत्रियाहित्यन। मःक्रूक वीत्रहक्क (म मक्क्ष अ जाग क्रियन। भिजा, भूख উভয়েই অনম্বপুর हरेट जाष्ट्रिक हरेल। वीव्रहन्त (शोजाव जन्न व्यक्त शास्त्र निकारन রহিলেন। কেননা পুজের অভাব পুরণ করিতে পুজন্থানীয় একটা ষুবকের বড়ই প্রয়োজন। তিনি বৃদ্ধ, পুল্রশোকপীড়িত, আর কয়দিন বাঁচিবেন ? তথন কে নারায়ণীর অভিভাবক হইয়া, তাঁহার অগাধ সম্পত্তি রক্ষা করিবে ? জীবিত থাকিতে থাকিতে তাহীকে বিষয়কার্য্য व्याहेश मिट्ट পाরিলেই তিনি নিশ্চিস্ত। তাহাঁ হুইলে আবার স্বচ্ছন মনে তিনি ধর্মকর্মে মনোযোগ দিতে পারেন। সৎপাত্রের সন্ধানে তিনি বিশ্বস্ত সহচর রতনকে নিযুক্ত করিলেন। কালবিলম্ব না করিয়া রতন অনন্তপুর পরিত্যাগ করিলেন।

বারচন্দ্র অতি সাবধানতার সহিত জ্ঞমীদারীর কার্য্য পরিদর্শন कतिरा नाशिस्त्र । भूर्त्वरं वनिमाहि कमीनाती अर्थ वावक रहेगाहिन। স্তরাং ঋণমুক্তির জন্ম তাঁহাকে নানাদিকে ব্যয় সংক্ষেপ করিতে হইল। শাষাক্ত তুই দশজন সিপাহী রাথিয়া অবশিপ্ত সমুদায়কে তিনি অবসর প্রদান করিলেন। পুজের মৃত্র পুর হুইতে খেতাঙ্গোৎসব একরপ উঠিয়াই গিয়াছে। কোনও বিশেষ পর্কোপলকে ছই একজন উচ্চপদস্থ সাহেব নিমন্ত্ৰিত হইতেন এই মাতা।

রামচন্ত্রের মৃত্যীর পর এক বৎসর অতীত হইয়া গিয়াছে। রাজার अन পরিশোধের আর বিলম্ব নাই। রতনও স্থপাতের সন্ধান করিয়া দেশে ফিরিয়াছেন। ঋণ-ভাত রাজা ওধু ঋণমুক্তির শুভদিনের অপেকা केंद्रिट्टिन। তाहा इट्टिन्ट सराम्याद्रार्ट्ट भोद्री नात्रात्रीटक भाजका

করেন। এজন সমূরে সহ্দা একদিন প্রভাতে শীয়াত্যাগ করিয়া তিনি শ্রানলেন, যে তিনি বিশ্বতমন্তিক, স্তরাং জনীদারী পরিচালনে সম্পূর্ণ অক্ষ। রাচি হইতে কতকগুলি শান্তিরক্ষক সেকে লেইয়া সমং কমিদনর অনন্তপুরে আগমন করিলেন। বীরচন্দ্রের হস্ত হইতে কার্য্য-ভার অপস্ত হইল। এবং আনন্দদেবের হস্তে পরিচালনভার প্রদত্ত হইল। বারচন্দ্র এই আকম্মিক বিপৎপাতে স্তম্ভিত হইলেন। যথাসাধ্য अভিবাদ করিলেন। কোনও কুচক্রী মিথা। গ্রাদে তাঁহার সকাশ করি-তেছে বুঝাইলেন। প্রাতবাদ নিশ্ফল ২ইল। রাঁচির কলেক্টর সাহেব নিজে গোপনে আসিয়। রাজার এ উন্মত্তা দেখিয়া গিয়াছেন। বীরচন্ত্র একাদন স্বর্ণরেখার তারে বসিয়া সর্পাঙ্গে মৃত্তিকালেপন করিয়া উন্মাদের ক্যায় অঙ্গভঙ্গা ও অর্থহীন শব্দোচ্চারণ করিতেছিলেন, ইহা তিনি প্রত্যাক্ষ করেয়াছেন। স্থতরাং প্রতিবাদে ফল হইল না। আনন্দদেবের श्रुख क्योगातीत जात्र ममर्थिज इहेग। म्रभूख व्यानमार्गित व्यावात अनस्पूत्र প্রবেশ করিলেন। কর্তৃপক্ষ ভিন্ন তাহার কার্য্যের প্রতিবাদ করিতে অনন্তপুরে আর কেহ রহিল না। তবে কর্তৃপক্ষ বুদ্ধের প্রতি এই षायुश्च कतिरामन, य विस्मिष প্রয়োজন না হংলে কেই যেন জাছার काधान छात्र इन्ड किन करता जिनि कन छ्र पूर्वत । ज्ञ देव विका শ্যমনগেমন করিতে পারিবেন এবং স্থবর্ণরেথার তীরে বসিয়া যত ইচ্ছা मांगे माथि । जात्रियम, किर् जांदाक वाक्षा मिर्ड भातित्व मा। जवः বীরচন্ত্র নিজের জন্ম প্রয়োজন মত যে সমুস্ত ক্রাষ্য থরচ করিতে ইচ্ছা कांत्रतम, ञामन्माप्तवरक उरक्षनार छाहा शाशाहर इहेर्व। इंहा छिन्न उनाड रहेवात शूर्का ठीरात य क्यकन मन्नी हिल, रेक्श कतिल ताका এখনও সেই করজন সঙ্গী রাখিতে পারিবেন।

## जाशानी वीत।

( > )

জর্মাণ-ক্রিস্থা-বল, ইংরাজ, ফরাসী,
সসাগরা-ধরপেতি আমৈরিকাবাসী।
সবে মিলে মহোল্লাসে,
চলিয়াছে চীন নাশে
পদদর্শে হুত্কারে প্রলয় প্রকাশি।

( २ )

জাপান নবীন মিত্র সঁপিল সে সনে মৃষ্টিমিত গৈনা তার অরাতি দমনে। 
য়ুরোপ গ্রহণ করে মহা অহুগ্রহ ভরে
যথালাভ গুণি, রুদ্ধ অবজ্ঞার সনে।

(0)

স্থ বথাত পুরাতন চীনের প্রাচীর, বেষ্টন করিল আসি যত, মহাবীর। বিষম সমরকোপ, মুহ্ সুহ্ পড়ে তোপ শুক্তে উড়ে লক্ষ লক্ষ বেগী-বৃদ্ধশির।

(8)

हठाहरे नारत ज्यू मित्रिनिज रेमछ, नाथ हीन मरत, नाथ पूहात रम रेमछ। ना जारन रकोमन कन, जलमल हीनवन ज्यू मक महामिल, कि माहम थ्या! (a)

রজনী তামদী ঘোরা নিস্তর গন্তীর, জাগরিত হাজ্জাল বুহৎ শিবির। মিলি যত ্যনাপতি, স্থকোশলা মহারথী কেমনে অন্তরে পশে করিভেছে স্থির।

( 4)

সহসা ইঙ্গিত ব্যাপ্ত দৈনিকের দলে, স্থাদেনা জাগণিত, স্থাজিত পলে! শালিক শত্রুর হ'ত, বারুণ করিল হাস্ত পশ্চিম প্রাচীরস্থিত তোরণের े লে।

(9)

मीर्घ त्रड्य नग्न कति खाना ज्ञान-भूरत्र, माँ पार्क जात्रा जानि यथा भ पूरत । त्रज्जूत जाशत (मरम, जिद्यामान करत (मरध অনলউভপ্ত-চিতে যত সেনশ্রি।

(b)

কিন্ত একি সর্বনাশা কর্মনাশা ভোগ व्यक्तिशर्व निष्ण त्रज्ज कि रहेन त्रांश! नव-नव त्रज्जू आर्न वात्र बात्र अधिमात्न বার বার নির্দ্ধাপিত বার্থ সব ধোগ।

(6)

त्रकनी निः শেষ আসে, विकृतिह ब्ल्यां हुः ব্যাকুল চিন্তিত ভীত যত সেনাপতি। विश्वनि यटक ठीन, व्यात्वत्र ममजासीन, . नहेदव वाक्रम काफि चंठादव पूर्नाज।

( >0 )

किश्न काशान (याक, "(कन कानवा)क, ক্লাছে গিয়া জালিলেত সিদ্ধ<sup>®</sup> হয় কাজ।" 'সত্য ভাহা' কহে সবে, 'উঠ কে যাইবে ভবে अरमर नेत्र मूर्थाञ्चल (क कत्रित आंक ?'

( >> )

স্তম্ভিত চিত্ৰিত ধেন যত দেনাগণ, পালিতে অনুজ্ঞা কারো না সরে চরণ ! এ উহার মুথ চাহে,—সমরে নহে— थेख थेख इर्द (मह जनरन जीवन !

( >2 )

সহাস্থে জাপানী-বর উঠি ত্রাগতি किंग, 'जानिय अधि চाहि असूमि ।' উঠে রব 'ধ্রু ধ্রু,' চলে বীর অগ্রগণ্য निर्जीक, बाननिरीध अक्स मूर्वि!

( >0)

शब्दिन উठिन यथि विकृषे गर्बिष्या, वृह९ প্রাচীর চূর্ণ বিচুর্ণ করিয়া! मुख त्यामभूश कृष्ण, व्यनम् উक्तात्र উष्ण् मर्क चार्था वीत्र त्मर चर्ना উড़ारेया!

श्रीयर्क्याती (पवी ।

## छेशग्रामिक विवाश।.

( > )

পাঠে জানা গেল বন্ধ্বর প্রীপতি সান্যালের হঠাৎ বিবাহ
হইয়া গিয়াছে। ব্যাপারটা নাকি কিছু ঔপন্যাসিক, ধরণের।
বিবাহ-বিরাগী সান্যেল যে শেষে একটা পদ্মাপারের মেয়ে বিয়ে ক'রে
বস্ল, ইহাতে বন্ধ্মহলে আশ্চর্যোর আর সীমা রহিল না। কেহ মান্ত্রের
মনের অন্থিরতাসম্বন্ধে কিঞ্চিৎ বক্তৃতা দিলেন, কেহ ভালবাসাসম্বন্ধে
এক স্থার্থ প্রাতন তথা প্নরায় আর্ত্তি করিলেন; সকলেই নানা
উপায়ে আপনাদের বিশায় এবং ব্যাপারটা যে কি তাহা ভালক্ষণে
জানিবার জন্ত আগ্রহ প্রকাশ করিলেন।

আগ্রহের কারণ ছিল। পশ্চিমবঙ্গনিবাসী সহাধ্যায়িগণ সান্যালের পদ্মাতীর-নিবাসিনী, অপূর্ব-ভাষিণী এবং অপূর্ব-উপাধি-ধারিণী ভাষী পদ্মীর উল্লেখ করিয়া এতবার ঠাটা করিয়াছিলেন, যে তাহাতে তাহার বালাল বিবাহসমধ্যে অত্যন্ত বিরাগ জন্মিয়া গিয়াছিল। সাঞাল ফে ঠিক বালাল ছিল এবং বন্ধুগণের যে বালালদিগের প্রতি কোন বিত্রক ছিল তাহা নহে, তবে মাঝে মাঝে একটা ঠাটার লোভ তাহারা সম্বর্গ করিছে পারিতেন না। পূর্ববেদ জন্ম হইলেও দীর্ঘকাল পশ্চিমবর্গ করিছে পারিতেন না। পূর্ববেদ জন্ম হইলেও দীর্ঘকাল পশ্চিমবর্গ করিছে বালালবিবন্ধন সর্বা বিষয়েই সে পশ্চিমবন্ধীর হইয়া সিয়াছিল ক্লানের মধ্যে কবিছে ও রহস্যে সেই অন্ধিতীর ছিল। যদিও প্রথম বন্ধে তাহার কলি ও বহছিত্র-বিশিষ্ট গাত্রাবরণ থানির জন্ত ভাহাকে কভকট রক্ষের মন্ধ্য, কভকটা ধোপার মেত ও কভকটা গন্তীর-মভাব নার্শনিকে মন্ত বেধি হইড; ও তাহার দ্রন্তিশক্তিতীন, চসমাহীন, জ্যোতিহী

पून् पून् नमनद्यत्र भिष्ठे भिष्ठे ठाश्नित्र जञ्च व्यत्नक्षे। व्योक्शि-त्थादत्रत्र মত মনে হইত; কিন্তু যথন দ্বিতীয় বর্ষে তাহার বেশভূষার রাজ্যে अकड़त পরিবর্ত্তন হইল, • (মনোরাজ্যে হইয়াছিল কিনা জানিনা) या भी या प्रवा-वावश्रात-मिकित विकास का वा प्राप्त में मही स्वीन উৎসাহে মাজিল, যথন সে স্বজাতীয় বেশভূষার সার্গ্য, সৌন্ধ্য ও পরিচ্ছন্নতার উন্নতিবিধানজন্ত বদ্ধপরিকর হইল যথন তাহার পরণে ব্যে কলজাত কাপড়ের কোঁচা ঝুলিতে লাগিল, গাত্রসংলয় ফরিদপুরী টুইলের শ্বেত শার্ট আজামু বিলম্বিত হইল, এক মোটা চাদর (যাহা ্অন্যে বিছানার জ্ञতা ব্যবহার করে) তাহার কক্ষ, বক্ষ ও পৃষ্ঠ বেষ্টন করিয়া তাহার বাম স্বন্ধোপরি শোভিতে লাগিল; যথন, একদিন কতিপয় লাঠি হস্ত ফিরিজিনন্দনের সহ শূন্য-হস্ত যুদ্ধে পরাভূত হওয়ার পর তাহার হস্তে তালনিশ্মিত স্থুদৃঢ় কৃষ্ণ লাঠী বিরাজ্মান হইল, যথন তাহার চকু চসমিত হইল, বিরললোমখাঞ যথাসময়ে কামান হই**তে লাগিল,** কেশপাশ যথন যথাকালে শযতনে অবত্নীভূত হুইতে লাগিল, তথন मिर्च कीर्वाकात्र रशोत्रवर्ण यूवरकत्र मूर्थ, कार्या ७ स्ट्र मोन्हर्यात्र **উरमार्ट्य ७ मञ्**षयात ভाष (प्रतीभाषान हरेगा उठिन। **এই मगर्**य পান্যেলের মনে ব্রাহ্মভাব প্রবল হইয়া উঠে। সে প্রতি রবিদ্যুদ্ मयाद्य छेशामना क्रिए याहेल এवर बाका रहेवात क्रांश परन्तिक काट्ट श्रकान कतिछ। काट्टि व विवाद दि वक्वरमेन जान्दि हैरेटन, তাহাতে কোনও নূতনত নাই।

যথাসময়ে সান্যেলকে ধরিয়া যে বিবরণ উদার করা গেল, তাহা ' তাহার নিজের ভাষায় বলিতে গেলে এই:—

( \( \)

গৈত বর্ষের প্লেগের কথা তোমাদের মনে আছে বোধ হয়। যথন হোষ্টেলের ভিতর গুইটা ছেলের প্লেগ হয়ল, তথন ছাত্রমহলে একটা

## अश्रामिक विवाश।

( > )

ত্র পাঠে জানা গেল বন্ধ্বর শ্রীপতি সান্যালের হঠাৎ বিবাহ
হইয়া গিয়াছে। ব্যাপারটা নাকি কিছু ঔপন্যাসিক ধরণের।
বিবাহ-বিরাগী সান্যেল যে শেষে একটা পদ্মাপারের মেয়ে বিয়ে ক'রে
বস্ল, ইহাতে বন্ধ্মহলে আশ্চর্য্যের আর সীমা রহিল না। কেহ মানুষ্যের
মনের অন্থিরতাসম্বন্ধে কিঞ্চিৎ বক্তৃতা দিলেন, কেহ ভালবাসাসম্বন্ধে
এক স্থণীর্ব প্রাতন তৃথা প্নরায় আবৃত্তি করিলেন; সকলেই নানা
উপায়ে আপনাদের বিশ্বয় এবং ব্যাপারটা যে কি তাহা ভালরূপে
জানিবার জন্ত আগ্রহ প্রকাশ করিলেন।

আগ্রহের কারণ ছিল। পশ্চিমবঙ্গনিবাসী সহাধ্যায়িরণ সান্যালের পদ্মাতীর-নিবাসিনী, অপূর্ব-ভাষিণী এবং অপূর্ব-উপাধি-ধারিণী ভাষী-পদ্মীর উল্লেখ করিয়া এতবার ঠাট্টা করিয়াছিলেন, যে তাহাতে তাহার বালেশে বিবাহসহদ্ধে অত্যন্ত বিরাগ জন্মিয়া গিয়াছিল। সাঞাল যে ঠিক বালাল ছিল এবং বন্ধুগণের যে বালালদিগের প্রতি কোন বিতৃষ্ণা ছিল ভাহা নহে, তবে-মাঝে মাঝে একটা ঠাট্টার লোভ তাহারা সহরণ করিতে পারিতেন না। পূর্ববর্দ্ধে জন্ম হইলেও দীর্ঘকাল পশ্চিমবঙ্গে নিবাসনিবন্ধন সর্বা বিষয়েই সে পশ্চিমবঙ্গীয় হইয়া গিয়াছিল। মানের মধ্যে কবিছে ও রহস্যে সেই অন্ধিতীর ছিল। যদিও প্রথম বর্ষে ভারার বেলাভ ওটান কাপড় পরার জন্ত, এবং স্বালে-জড়ান ব্যবহার-মলিন ও বছছিন্ত-বিশিষ্ট গাত্রাবরণ থানির জন্ত তাহাকে কভকটা র্কের মন্ত্র, কভকটা ধোপারণ্মত ও কভকটা গন্তীর-স্বভাব লাশনিকের মন্ত্র বোধ হইড; ও তাহার দ্রল্টশক্তিহীন, চসমাহীন, জ্যোভিহীন

जून जून नमन दात्र विषे विषे ठाश्नित ज्ञ **ज्यानको।** जांकिश-श्वादत्रत्र মত মনে হইত; কিন্তু যথন দিতীয় বর্ষে, তাহার বেশভূষার রাজ্যে श्वक्र अतिवर्खन इहेन, ( মনোরাজ্যে इहेग्राहिन किना जानिना ) স্বদেশীয় দ্রব্য-ব্যবহার-সমিতির একজন কার্য্যদক্ষ সভ্য হইয়া নবীন উৎসাহে মাজিল, যথন সে স্বজাতীয় বেশভূষার সামল্য, সৌন্দুর্য্য ও পরিচ্ছন্নতার উন্নতিবিধানজন্ত বন্ধপরিকর হইল যথন তাহার পরণে ব্যে কলজাত কাপড়ের কোঁচা ঝুলিতে লাগিল, গাত্রসংলগ্ন ফরিদপুরী টুইলের শ্বেত শার্ট আজামু বিলম্বিত হইল, এক মোটা চাদর (যাহা ্অন্যে বিছানার জন্ম ব্যবহার করে) তাহার কক্ষ, বক্ষ ও পৃষ্ঠ বেষ্টন করিয়া তাহার বাম স্বন্ধোপরি শোভিতে লাগিল; যথন, একদিন কতিপয় লাঠি-হস্ত ফিরিঙ্গিনন্দনের সহ শূন্য-হস্ত যুদ্ধে পরাভূত হওয়ার পর তাহার হত্তে তালনির্শ্যিত স্থৃঢ় কৃষ্ণ লাঠী বিরাজুমান হইল, যথন তাহার ठक् ठमिञ इरेल, विव्रललामभाक यथानमाय कामान रहेल नाशिल, क्रिम् यथन यथाकारण मयज्ञ व्यक्ती कृष्ट हरेर मात्रिम, ज्थन मिर्ग कार्या का का वर्ष वर्ष कार्या अ प्रकार कार्या अ উৎসাহের ও সহাদয়তার ভাষ দেদীপামান হইয়া উঠিল। এই সময়ে সান্যেলের মনে ব্রাহ্মভাব প্রবল হইয়া উঠে। সে প্রতি রবিষ্ক্রে ममार्क देशामना क्रिएं याहेज এवर बाक हहेवात स्थाप जानूरकत काष्ट्र श्रकाम कत्रिछ। काष्ट्रहे थ विवाह र्य वस्वर्शन जामधा हिर्देश, তাহাতে কোনও নূতনত নাই।

যথাসময়ে সান্যেলকে ধরিয়া যে বিবরণ উদ্ধার ক্রা গেল, তাহা তাহার নিজের ভাষায় বলিতে গেলে এই:—

( ? )

"গত বর্ষের প্লেগের কথা তোমাদের মনে আছে বোধ হয়। ব্যন্ত ছোষ্টেলের ভিতর গৃইটা ছেলের প্লেগ হটল, তথন ছাত্রমহলে একটা বোর আশকা পড়িয়া গেল। বে সকল বালকের অভিভাবকগণ কলিকাতার সারিধাে বাস্ করেন, তাঁহারা নিজ নিজ বালকদিগকে টেলিগ্রামের পর টেলিগ্রাম করিতে লাগিলেন। গাড়ীর ঘড়ঘড়ানি ও মুটের হাঁকাহাকিতে হোষ্টেল কয়েক ঘণ্টা খুব সরগরম হইয়া উঠিল. কিন্তু তাহার পরেই সেই বিশাল অট্টালিকা প্রায় জনশূন্য হইয়া পড়িল। আমরা কয়েক জন, যাহাদিগের অভিভাবকগণ বছদ্মে অবহান করেন এবং আমাদিগের নিকট হইতে ভিন্ন অগ্রন্থল হইতে সম্বাদ পাওয়া যাঁহা-দিগের সম্ভব নয়,—তাহারা শেষ পর্যান্ত থাকিব বলিয়া প্রথমে হির করিয়া-ছিলাম। কিন্তু যথন হোষ্টেল প্রায় খালি হইয়া পড়িল, তথনতাহার সেই বিপুল নির্জনতা আমাদিগকে ভীত করিল। কিছুক্ষণের মধ্যে তরী-তরা বাঁধিয়া আমরাও স্ব ফ্লোভিমুথে প্রস্থান করিলাম।

কলিকাতা হইতে গোয়ালন্দ বেশ নিরাপদে কাটিল। প্রদিন প্রাত্তকানে স্থানার চাপিলাম। সেই প্রাত্তং হ্র্যাকিরণবিভাসিত পদ্মাবক্ষ বড়ই হ্রন্সর দেখাইতেছিল। পদ্মার খেত তরঙ্গায়িত জলরাশির উপরে প্রতিবিশ্বস্থা ও তাহার কিরণ হ্রন্সর দৃত্য করিতেছিল। হল্ হল্ শঙ্গে স্থানার জলবক্ষ বিদারণ করিয়া চলিতে লাগিল। পদ্মার ছই তীরের কি বিপরীত দৃশু! একতীরে নৃতন ভূমি গঠিত হইতেছে, তরে স্তরে শুল্র বালুকারাশি পড়িয়া অপুর্ব শোভা ধারণ করিয়াছে, অপর তীরে পুরাতন গ্রাম সকল ধ্বংস হইতেছে, কোথাও একটা বাগানের অর্দ্ধাংশ নদীগ্রন্ত হইয়াছে, কচিৎ উৎপাটিতমূল ছই একটা বৃক্ষ কতক জলে কতক বা হলে পড়িয়া আছে, কোথাও ভগ্গ ঘটালিকার শেষচিহ্র্য বিদ্যানান, কোথাও একটা স্পরিচ্ছেয় স্থার পুজাবাটীকাযুক্ত বাড়ীর দ্বার-দেশে বৃত্তকু নদী বিসিয়া আছে,। স্থানারের এই কর্দাহীন জীবন যেমন চিন্তার অন্তর্কুল তেমন আর কিছুই নহে। সামান্ত কারণে মনে সহজ্ঞ চিন্তার আসিয়া উদিত হয়। ভুগান্ডের এই স্পষ্টি-বৈচিত্যা লইয়া কেমন

একটা বিষাদের চিস্তা আমার মনে আসিল । জগতে এ বিষম বৈপরীতা কেন ? একদিকে ক্থাক্ষীণ দরিদ্রের ক্ষীণ কণ্ঠের আর্জনাদ, অন্যদিকে পর্যাপ্তি-ক্রোড়ে লালিত ধনী সন্তানের প্রমোদ-কাননের তাওব হাস্ত; একদিকে প্রকৃতির স্প্রের মনোমুগ্ধকারিণী মূর্ত্তি, অন্তদিকে প্রকৃতির ভীষণ প্রলক্ষরী মূর্ত্তি; কেন এ নিদাক্ষণ কন্তকর বৈচিত্তা ? বিজ্ঞানে পড়িতেছিলাম এই বৈচিত্তাই জগতের সৌন্দর্য্যের ও যাবতীয় কর্ত্তের মূল। একদিকে উগ্রতাপ, অপর দিকে দারুণ শৈত্য; এই বিভিন্নতার ক্ষে যাবতীয় স্কর্মর ও কুৎসিৎ দ্রব্যের স্কৃষ্টি, যথন জগতের তাপ সর্ব্বেত সমভাব হইবে তথন এ বৈচিত্তাও চলিয়া যাইবে। জগত তথন অসাড়, নিম্পন্দ, জীবহীন, জীবের স্থগত্বংশহীন। এই চিস্তার ফলে আমার কবিতার থাতাথানি থুলিয়া সৃষ্টি বৈচিত্তা সম্বন্ধে একটী কবিতা লিখিলাম।

ক্রমশ: যত বেলা বাড়িতে লাগিল, বাতাস বেগে বহিতে লাগিল। কলিকাতার এ সমর নিদারুল গ্রীয়, আমি গ্রীয়ের পোষাুরেকই সজ্জিত ছিলাম, এখানে ভরানক শীত করিতে লাগিল। ষ্টীমারে যে শীত করে তাহা আমার জানা ছিল, কিন্তু এত শীত হইবে তাহা ভাবি নাই। কাপড় চোপড় সমস্ত জড়াইয়া মুড়ি দিয়া এক জারগায় শুইয়া পড়িলাম, দারুল শীতে শরীরে কেমন একটা অবসাদ বোধ হইতে লাগিল। কিরংক্ষণের মধ্যে আমি নিজিত হইয়া পড়িলাম। কতকক্ষণ ঘুমাইয়াছিলাম জানিনা, তবে অভুল্রভাবে নিজা হইতে আমাকে উঠাল হইল, তাহা বুঝিলাম। উঠিয়া দেখিলাম, অনেক লোক সেখানে জমিয়াছে, সারেং কয়েকজন খালাসীর সঙ্গে নিকটে দাঁড়াইয়া আছে; আমি নিজেও শরীরে ভীষণ তুর্মলতা ও জর হইয়াছে বুঝিলাম; উঠিবার চেটা করিলাম কিন্তু উঠিতে পারিলাম না। সারেক আমাকে বলিল স্থাপনি কলিকাতা হইতে আসিতেছেন, আপনার প্রেণ হইয়াছে, ষ্টীমারে কোন সংক্রামক রোগীকে লইবার নিয়ম নাই। অতএব আপনাকে এইখানে

नामादेश (मिश्रा इट्टेंद ; होमात्र जिल्लान इट्टेंट्ट्, जार्गान नामिश्रा याजेन।" তাহাদের পূর্বের কথা শুনি নাই। রোগ যন্ত্রণাত্র ও উয়ে আমি এরূপ হইয়া গেলাম যে কোনও উত্তর দিতে পারিলাম না, উঠিবার জন্ম একবার নিক্ষল চেষ্টা করিলাম। এই নির্জন স্থানে যেন আমাকে না ফেলিয়া যায় তাহারু জন্ম অমুরোধও করিতে পারিলাম मा। आंगारक উঠিতে অপরাগ দেখিয়া, সারেং চুইজন খালাসিকে আমাকে লইয়া যাইতে বলিল। তাহারা আমাকে ধরিয়া লইয়া চলিল। একজন ভদ্রলোক আমার শীতবস্ত্রের অভাব দেখিয়া অমুগ্রহ করিয়া একটা कष्टन मिट्नन। नहेश्रा याहेवात्र সময়ে জনৈক थानाजी आभात পকেটে যাহা কিছু ছিল, হস্তগত করিল। আমার তথন প্রতিবাদ করিবার শক্তি ও প্রবৃত্তি ছিল না। অপর থালাসী কিছু দয়ালু, ভাহার मञी व्यामारक नागारेमा निमारे চलिया यार्टे काहिएन रम व्यामान কাপড় চোপড়, লইয়া একটা বিছানা তৈয়ার করিয়া দিয়া চলিয়া গেল। शैगात्रं ७ हिना १ ति कूक एवं त्र मर्था आग्नि आगात्र अवश वृति एक পারিলাম। আমি সেধানৈ মরিবার জন্য পরিত্যক্ত হইয়াছি। আমার ব্যারাম প্লেগ না হইলেও হইতে পারে, কিন্তু ভঙ্গে আমি হতবুদ্ধি হইরাছিলান। এখন উপায়! অতিকণ্টে শ্যার উপরে বসিয়া চারিদিক **मिरि** नाशिनाम। उथन मका। इहेमारह। ऋर्ग प्रिमारह। পদার জলার উপর লাল মেঘের লাল আভা পুড়িয়াছে। বাতাস তথন भास, नतीयक शिव । निक्टि कनशाणी नाहे। लाकालव वस्तुद्व। चि मृत्र कान वृत्कत्र दोनी मिथा याई जिल्ला, मिथाजि जामात्र वाश्रमा व्यम्ख्य। এই निर्कान প্রান্তরে, অসহায় অবস্থায় আত্মীয়ত্বলন হইতে वस्पूरत, रत्रक পश्चत कवरण পिएशा मैत्रिएक रहेरव, ध किसा वर्ष्ट्रे कहे किएक गांशिंग। न्जन वयम, कर्ज जांगा हिन, मव विनुश इहेरव, धहे श्रमत शृथिवीत महिल मकन मण्लेक युविश याहेत्व, धारे मन विश्वा जानित्व

माभिम। वाखविक शृथिवी जथन वज़रे खुमत (मथारेट माभिम, সেই নক্ত্ৰপচিত নীল আকাশ, সেই মূহ জ্যোৎসা-ভাসিত খ্ৰামন প্রান্তর, সেই স্থির, গীর, • প্রশান্ত মহানদীবক্ষ, সকলি বড়ই স্থন্দর। এমন সময়ে কে মরিতে চায়। কিন্তু বিপদ মামুষের সর্বশ্রেষ্ঠ শিক্ষাদাতা। ভবিতবোর উপরে আমার আর কোনও হাত নাই। ক্রমশঃ মন প্রস্তুত হইল, একবার দুরুষ পিতৃদেবের চরণ স্মরণ করিলাম, একবার পরলোক-গতা জননী দেবীর স্থৃতি মনোমধ্যে উদিত হইল, তারপর সেই অনস্ত আকাশের দিকে চাহিয়া, সেই অনন্তের যদি কেহ কণ্ডা থাকে তাঁহার উদ্দেশে বলিলাম, "বিভো, ভোমাকে কোন দিন চিনি নাই, এখনও िनिनाम ना, व्यामात्र कीवत्न व्यामात्र याश नाधा कतिश्राष्ट्रि, এथन, व्यामि শক্তিহীন, তোমার চরণে আ্মুসমর্পণ করিলাম।" বিবিধ চিস্তার ফলে শরীর আরও হর্কল হইয়া পড়িল, আর বসিয়া থ্যাকিতে পারিলাম না। শুইয়া পড়িলাম, তাহার পরে নিদ্রিত কি মুচ্ছিত হইলীম, বলিতে शांत्रि ना।

(3)

কতক্ষণ বা কতদিন যে এরূপে ছিলাম বলিতে পারি না। মাঝে यात्य यथन किक्षिप छात्नित्र উत्मिष श्रेष्ठ जथन ध्वन यत्न श्रेष्ठ এक দেববালা আমার শুশ্রষা করিতেছেন। ভীষণ দাহে যথন আমার হস্তপদ পুড়িয়া যাইত তথন ত্রিনি যেন আপনার স্থকোমল স্থীতল হত্তে আমার উত্তপ্ত হত্তপদকে শীতল কুরিয়া দিতেন। আমার যন্ত্রণা-ক্লিষ্ট মন্তক যেন তাঁহার স্থকুঁমার অঙ্গুলিম্পর্শে কণেক রোগ-যাতনা ज्ञिया गारेख। जात्र गार्थ गार्थ এक প্রোঢ়া মাতৃমূর্ত্তি আমার खेर्य ७ नथामि (नवन कृताहेएन, जाहा मत्न ६हेज। এवः এक सिम्डि खडार्रा, खडारकन खाठीन डाक्या এक ठिकिएमरकत्र महिल गृंह चानिएडन ७ कि भन्नामर्न कन्निएडम, তাহাও मन्न चारह।

বেলা প্রায় ৮টার সময় জাগিলাম, দেখিলাম আমি এক প্রাক্তর ও অশৃত্যলভাবে দক্ষিত কুটারে, একটা তক্তপোষের উপরে শারিত আছি। নিকটে এক অপূর্ব স্থলরী ত্রােদশ বা চতুর্দশ-বর্ষদেশীয়া বালিকা বিদিয়া আছে। তাহার নিবিড় কৃষ্ণ-কেশরাশি সুষ্বর্ণ-অঙ্গের চারি দিকে ছড়াইয়া পড়িয়াছে। সেই কেশের ভিত্তর দিয়া তাহার চম্পক অঙ্গুলিদাম অতি দৌষ্ঠবের সহিত দ্রুত পরিচালিত হইতেছিল। বালিক। দেখিতে বলিষ্ঠা কিন্তু তাহাতে কমনীয়তার কোনও হানি হয় নাই। নাক, মুখ, চক্ষ্, বাহু আদি অঙ্গ প্রত্যঙ্গ পরস্পরের সহিত অতি স্থব্য অনুপাতে স্থাঠিত। কিন্তু তাহার সেই শারীরিক সৌন্ধর্য্য ব্যতীত আর একটা সৌন্দর্য্যে আমাকে মুশ্ল, করিয়া ফেলিল। ভাছার সেই স্থলর মুথের উপর, তাহার হাদয়ের ছবি যেন স্পষ্ট অন্ধিত ছিল। সে মুখ সারীল্য, করুণা, বুদ্ধিমত্তা এবং প্রীতির ভাবে পূর্ণ। কত স্থুনার মুখ দেখিয়াছি, নাক-মুখ-চোক দকলি অতুলনীয়, কিন্তু একটা স্থভাবের অভাবে দে মুখখানি যেন নষ্ট হইয়া গিয়াছে বোধ হয়। হয়ত ভাহাতে এমন এরুটা অহঙ্গারের ভাব, নির্দিয়তার ভাব বা স্বার্থপরতার ভাব আছে, य जारा দেখিলে আরু দ্বিতীয়বার দেখিতে ইচ্ছা হয় না। হয়ত. মুথে এমন একটা নির্ব্ধিতার ভাব আছে, যে তাহাতে দয়া হয় কিন্তু ভক্তি वा जीवाना जात ना। युनात उ युनातीनन! तोनार्गाद्कित खना তোমরা কতই না সাজসজ্জা কর, কিন্তু তোমরা অনেকে জান না, একটা मध् खि, के उद्यामा मावान ७ এमिन इटेडि मोन्धा वृक्षि करते।

উঠিয়াই আমি নিতান্ত অধীর ভাবে জিজ্ঞাসা করিলাম, "আমি কোণায় এবং আপনারা কে, অমুগ্রহ করিছা বলুন"। বালিকা বলিল, "আপনি এখন ব্যস্ত হইবেন না, ক্রমশঃ সবই জানিতে পারিবেন। কবিরাজ মশায় আপনাকে কথা কহিতে বা কোনও চিন্তা আদি করিছে বারণ করিয়াছেন। আপনি এখনও বড় তুর্বল। আপনাকে ঔষধ খাওয়াইবার জন্ম আমি এখানে বসিয়া আছি।" এই বলিয়া সে ওষধটী প্রস্তুত করিতে লীগিল, আমি নীরবে সেই স্কুমার অঙ্গুলিগুলির वाता थल याणा দেখিতে लागिनाय।

ঔষুধ প্রস্তুত হইলে তাহা খাইয়া আমি পুনরায় বলিলাম,

"आभाग्र मर्वै कथा वल, ना विलाल आभात्र हिन्छा कम इट्राव ना वत्रः উৎকণ্ঠা বাড়িতে থাকিবে। আমি কিরূপে এখানে ভাসিলাম ?"

"বাবা প্রত্যহ প্রাতে ও বৈকালে নদীমান করিয়া তথায় সন্ধ্যা-वननामि करतन, मिन यथन मन्नात्र मुमम घरत फितिर्डाइलन, তথন আপনাকে পথে অচৈতগ্য অবস্থায় দেখিতে পান। তারপর আপনাকে আমাদের বাটীতে আনা হয়। কয়দিন আপনার অত্যম্ভ জর হইয়াছিল। আমরা বড়ই উদ্বিগ থাকিতাম। এথানে ভাল ডাক্তার আদি পাওয়া যায় না, রোগীর পথ্যের জন্ম বেঁদানা আদিও পাওয়া যায় না, অনেক কষ্টৈ ত্ একটা দাল্কিন বাবা যোগাড় করিয়া व्यानियाहिएलन। व्यापनात (वाध श्य वर्ष्ट् क्ट्टे श्रेट्याह ।" वालिका নিতান্ত সরলভাবে এই কয়টা কথা বলিল। তাহার শেষের কথাটা শুনিয়া হাসি পাইল, কি বলিতে যাইতেছিলাম, কিন্তু তথন ক্বজ্ঞতার উচ্ছাস থামাইয়া পুনরায় জিজ্ঞাসা করিলাম—

"আমার জিনিসপত্র •সব কি চোব্লেরা চুরি করিয়া লইয়া গৈছে, किছूरे त्राथिया यात्र नारे ?" আत्रात्र वहकृष्टि ও वहकान धतिया লিখিত কবিতার থাতাখানি গিয়াছে ভাৰিয়া মনে বড়ই ছঃখু श्रेटिक । वालिक। विलल "बालनात मर्क क्वल करमकशानि कां भण, এक है। कश्रम, इक्षानि देश्त्राकी त्रहि—वावा वनितम कि উछिन विमान विर—जात এकथाना वाजाना वहि—"कथा," जात जाननात কবিভার থাডা—"

"আমার কবিতার খাতা"—উচ্ছ্ াসভরে কথাটা বলিয়া ফেলিয়াই আমি অপ্রস্তুত হইলাম। বুঝিতে পারি নাই যে, এখানে অন্ত অর্থ হইবে। वालिका এक টু থতমত খাইয়া এক টু অপ্রতিও হইয়া বলিল "আপনার কাগজ পত্র আমরা ইচ্ছা করিয়া দেখি নাই, বাবা বলিলেন আপনার জন্ম আপুনার বাপ মা ইয়ত অত্যন্ত চিন্তিত আছেন, প্রক্ষেত্রে ্তাঁহাদিগকে সংবাদ দেওয়া অবশ্য কর্ত্তব্য, সেইজগ্য তিনি বলিলেন যে এখন কাগজ পত্র দেখায় দোষ নাই।"

"বাবাকে কি থবর দেওয়া হইয়াছে ?"

"ना, আমরা তাঁহার ঠিকানা জানিতে পারি নাই। আপনার বহি ও থাতায় আপনার নাম লিখা আছে, আর কলেজের নাম লিখা আছে। আর কিছুই নাই।" নিতান্ত অমুনোযোগের সহিত আমি পূর্বের প্রশ্ন করিয়াছিলমা বালিকাকে অপ্রভিত করিয়া একটু इ:थ इट्ल। विल्लाय-

"তোমরা যেরূপ কার্য্যের জন্ম আমার খাতা দেখিয়াছ ভাহাতে কোনও দোষ নাই। আর যদি ইচ্ছা করিয়াও দেখিতে তাহাতেও আমার আপতি ছিল না। তুমি বোধ হয় জাননা, নৃতন লেথকদিলের लिथा यिन किर न्वारेग्रा পড़ে, তাহাতে তাহাদের কত আনন্দ र्म।"

वानिका श्रमूल इहेन। वनिन "वाशनात् कविवा शिष्टि बामान, (यम मिरिंग''। आमि এक हे शामिनाम, तसूतर्भ यपिष्ठ आमान कविछात्र. क्लान ९ माय मिथिए भारिएक ना उर्ध विगएक, य छैरा अदिवान्त अञास निक्रे अञ्चक्रवा। वालिका शूनत्राम विलम अवाशनात वाशदक कि छिनिशाम कतिर्वन ?" आणि विनिधा "छिनिशाम कतिवात कान आवश्यक नारे, जिनि जनर्क राख रहेश পिएदिन। आणि जाराद् क्लांन अवत्र ना पित्रारे वाढ़ी यारे किलागा । १ पिन भूत्व अक्षानि िछि निधित्राहि। जामि छाङ्ग्रिक अंगा । भाग जास्त्र निष्ठि निधि,

স্তরাং জার ৪ ৫ দিন কোনও পত্র না পাইলে তিনি উদ্বিশ্ব হইবেন
না। আমি কাল তাঁহাকে একধানি চিঠি লিথিব।" বালিকা বলিল
"আপনি অনেকক্ষণ কথা কহিয়া ক্লান্ত ইইয়াছেন এখন একটু ঘুমান,
আমি স্নান করিয়া আসি। বুধি গাইকে ছধ দোয়াইতে হবে
আমায়, আমি তাহার গলায় হাত না বুলাইলে ছধ দেয় না।" আমি
বলিলাম "আর একটা কথা বলিয়া যাও—গ্রামের নাম কি ? আমার
আশ্রেদাতার নাম ও পরিচয় দাও।"

বালিকা "বলিল, "এ গ্রামের নাম—। আমার বাবার নাম
শ্রীরার্মনাথ ভার্ড়ী। তিনি পূর্বের গৌহাটীতে কাজ করিতেন, একণে
কিছুদিন হইল পেন্সন লইয়া স্থ্রামে রাসু করিতেছেন। আমরা
গৌহাটী হইতে মাস ছয় আসিয়াছি।" বালিকা শিশুর মত নৃত্যশীল
পদবিক্ষেপে গৃহের বাহিরে চলিয়া গেল। যতক্ষণ দেখা যাইতে লাগিল,
শ্রামি ভাগাকে দেখিতে লাগিলাম।

রামনাথ ভাহড়ী মহাশরের পরিচয়ে আমি আনলে ও বিশ্বরে
পূর্ণ হইয়ছিলাম। তিনি পিতার বালাবরু ছিলেন, উভরে একত্তে
এক স্থলে পড়িয়াছিলেন। তাহার পর উভয়ের, বছকাল হইভে ক্ষো
নাক্ষাৎ হর নাই। পরে বাবা বখন রংপুর হইতে হই বৎসর হইল
বদনী হইয়া পৌহাটীতে আসেন তখন তাহালের পূর্ব বন্ধুত্ব আবার
পূর্ণরূপে সংস্থাপিত হয়। তভয়ে উভয়ের গুণে মুগ্ধ হইয়া বৈবাহিক
সম্বন্ধ স্থাপনে অভিলাষী হন। ভাহড়ী মহাশরের কল্পার সহিভ
আমার বিবাহের সম্বন্ধ হির হয়।০ কিন্ত আমার পূর্ববলে বিবাহের
ইচ্ছা না ধাকার, এপর্যান্ত উহা কার্য্যে পরিণত হয় নাই। আমি ছই
বংলর নানা ছলে বাবার সহিত সাক্ষাৎ করি নাই। তিনি দৃঢ়-প্রতিজ্ঞা
লোক, প্রথমে ক্রমে আমার মত ফিরিকে ভাবিয়া বিশেষ কিছু করেন
নাই, কিন্তু ক্রম্বার আমারণ্ড ক্রেম বত ব্যক্তিতে লাগিল ভিনি ভড়ই

इःथिङ ও क्क रहेट्ड दाशिया। । छाष्ठ्रे मर्गम्यस्य कथा पित्रा তাহার অন্তথা করা তাহার বড় অপমানজনক বোধ হইত। এই दिमार्थ जिनि आगात विवाह मिट्ड क्डमश्र इहेमाहित्नन। কড়া চিঠিও গিয়াছিল। পিতা পুত্রে মনান্তর হইবার উপক্রম इरेडिइन।

(8)

ঔষধ থাওয়ার পরে প্রায় ঘণ্টা থানেক ঘুমাইয়াছিলাম। উঠিয়া দেখিলাম ভাত্ড়ী মহাশয় ও তাঁহার গৃহিণী, হরপার্কতীর মত দণ্ডায়মান व्याह्न। व्यामात्र स्थावश पिथिया ठाँशापत उछत्यत मूथ अकूत। গৃহিণী আমার জন্ম প্রানিয়ছিলেন, আমারও কুধা পাইয়ছিল; থান্তদ্রব্য নিঃশেষ করিয়া কিছু স্বস্ত হইলে, গৃহিণী বলিলেন "বাবা, তোমাকে স্বস্থ দেখে আমাদের যে কি পর্যান্ত আনন্দ হইয়াছে, তাহা আর বলিতে পারি না। 'প্রথম চ্ই দিন তোমার যেরূপ জ্বর হইয়াছিল, তাহাতে আমাদের বড় ভয় হইয়াছিল। ভগবানের ইচ্ছায় সব বিপদ कारिया शिया এখন শীঘ্ৰ শীঘ্ৰ সবল হইয়া উঠ এই প্ৰাৰ্থনা''। ভাছড়ী মহাশয় বলিলেন "তোমার পিতামাতাকে সম্বাদ দেওয়া সর্বপ্রথম কর্ত্তব্য, আমরা তাঁহাদের ঠিকানা পাই নাই বলিয়া থবর দিতে পারি मारे, डाँशन्ना रम्रज कर्ज जारितालहरू । ठिकानांग वन, जामि এको টেলিগ্রাম পাঠাইয়া দি।" আমার মনে অনেক কথা আসিতেছিল,• कुछछठाक छेक् ाम रयमः आश्विमित्रित्र अञ्चल्य राष्ट्र ७ ज्व भार्षित्र প্রায় উপরে উঠিবার চেষ্টা করিতেছিল। পিতার নাম বলিয়া তাঁহাদের र्णमध्नि गरेगाम—विश्वी किছू विकटि शात्रिमाम ना, नक्षत वात्रिधात्रा ৰহিতে লাগিল। ভাষ্ডী মহাশয় আমাকে উঠাইয়া আলিকন করিয়া क्रमान क्रिट्ड माशियन । शृहिन भार्य माम्रोहेन क्रिक्ट

गातिष्य । जामार्षित जित्रक्षत्वत्र जन्मत् जामस्तत्र शूर्ग शक्षिकः । रुदेशे (भग।

( ( )

व्यामि निन निन वादिनागा रहेट नागिनाम। ভাত্ডी महानद বাবাকে চিঠি লিখিয়া আমায় আরও কয়েক দিন রাখিবার বন্দোবস্ত করিলেন। আমারও অমুমাত্র আপত্তি ছিল না। মাতৃহীন হুইবার পর হইতে জীবনে এমন যত্ন স্নেহ কথনও পাই নাই। মেসের হটুগোলের মধ্যে মেদ-জীবনের বিশেষ আমোদ থাকিতে পারে, কিন্তু তাহাতে যে কোনও স্নেহ্মমতা নাই, তাহা স্থির। ভার্ডী-দম্পতি আমার পরিচয়ের কথা সম্ভবত কাহারও কাছে ব্যক্ত করেন নাই। काরণ বালিকা পূর্বের ন্যায় নিঃশক্ষোচভাবে আমার নিকট আসিত। ভাহার দৃষ্টিতে লজ্জার লেশমাত্র ছিল না, ছিল সেই সরলতা, সেইবুদ্ধি ও সেই অপার করুণা। তাহার সেই করুণা যেক যাবতীয় প্রাণীর উপরে নিবদ্ধ ছিল। গৃহস্থিত পশুগুলি সকলেই ভাহাকে চিনিত এবং তাহার উপর নিজের কভটুকু দাবী তাহা বুঝিত। কুকুবটী তাহার আহারের পর ধারে ধারে তাহার পদাঙ্ক অমুদরণ করিত, তাহার প্রত্যেক क्थाण वृत्ति । वाक्रःमण स्नीर्घ श्रीवा वक्र क्रिया भाषाव अञाञ्च ছেলেদের ভীতিপ্রদ ছিল, কিন্ত বালিকার কাছে সে নিতান্ত • শাস্ত ছিল। বুধিগাই ও তাহার কুদ্র বৎস্টা তাহার একটা আদরে গলিয়া পড়িত। আমার কাছে আসিয়া কথনও সে গল করিত, তাহার পণ্ডপক্ষা পাড়াপশিদের কথ্ছ বলিত, জ্যার কথনও আ্যার কাছে আমার স্বরচিত ও অগ্রাগ্য কবিতা পড়িত। "কথা" পড়িতে। পড়িতে ভাহার মুখতী নানা ভাব ধাৰণ করিত—কথনও বা শিখবীর वन्यात्र ७ त्याजित्राकक्याद्यत ज्ञान्य वीत्र छ। वारात्र क्षा छ। क्ष रहेक, जावाज काशांपिरशंज स्पाठनीत्र शजिशारम काश्रंज नवसम्

ভাষাক্রান্ত হইয়া পড়িত ৮ কথা ও আমাত কবিভার পাড়ার সমুস্থ কবিতাই সে কয়দিনে মুখন্ত করিয়াছিল। পরীক্ষা করিয়া দেখিলাম তাহার বঙ্গদাহিত্যে দখল নিতান্ত কম নহে। পিতা তাহাকে ইংরাজী ও সংশ্বত কিছু কিছু শিখাইয়াছিলেন। ভাতৃড়ী-গৃহিণী তাঁহার রন্ধন কৌশলের পরিচয়ও মাঝে মাঝে দিতেন। কোনও দিন অন্তান্ত রন্ধন নিজে ক্রিয়া কন্তাকে একটা তরকারী করিতে বালতেনা কোন দিন विष्ठिन "भा श्रीপতিকে তোমাব—রায়াটা খাওয়াও।" আমি এসব দেখিয়া তাহাকে বিজ্ঞানশিকা দিতে উৎস্থক হইলাম। বিজ্ঞানের সব আশ্চর্য্য ব্যাপারের কথা, বৈজ্ঞানিকদিগের শক্তির কণা, তাহাকে विषठाम এবং কতকগুলি महज-বোধা বিষয় তাহাকে বুঝাইভাম। ছোট ছোট পরীক্ষা করিতাম—আরসী হইতে আলোক রেথা কিরুপে প্রতিফলিত হয়, কিপ্রকারে সেই প্রতিফলিত আলোককে সঙ্কেতে পরিণত করা যাইতে পারে এবং যুদ্ধেই বা তাহার দ্বারা কিরূপে সন্বাদ পাঠান যায়, তাহা এবং অস্থান্ত ছোট ছোট আমোদজনক পরীক্ষা क्रिजाम। পাড़ाর अमाना क्रूश्नौ वानकवानिका इशांज यात्र षिछ। এই क्राप्त क्रापिन दिन वास्मादि कारिए नाजिन।

কিন্ত সহরই এই আনলের শেব হইল। সেই রাত্রির প্রথমে থানিকটা স্থান লোগনা ছিল। আমার শরীর সম্পূর্ণ হুন্থ হইরাছিল। গ্রানির পরে সামরা সকলে নিজিত হইরাছিলাম। আমি একটা আলালা বরে মুমাইতেছিলাম। কত রাজি হইরাছে বলিতে পারি না, সহসা বিষ্ণ্ণ চীৎকারে ঘুম ভালিরা-গেল। শেই গভীর নীরব ক্ষমকার রাত্রে সহসা রে রে ধরনি—কি ভরানক! ক্ষমশ্বাং নিজা ভালিরা একটা বিষয় ভর্ম হইল। কিন্তু পরমূহতেই কর্ত্তবাজান প্রথম হইল; আমার জীবনালার বাটাতে ভাকাইত পড়িরাছে, ভাহাদিগের কর্তই না অনিছ ক্রিবে, হ্রত প্রাণেই বিনষ্ট ক্রিবে। এই ভালিরা আমি ক্রতমের

দরশা খুলিতে গোলাম। বাহির হুইতে দরশ্ব বন্ধ। দহাগণ শিক্ষণ
দিয়া আমাতে আবদ করিয়াছে। একবার অন্ত বর হুইতে বিষম
ক্রেন্দনপূর্ণ গোলঘোগ শুনিতে পাইলাম। উন্নতের মত আমি হামে
সবেগে লাথি মারিতে লাগিলাম। শরীর তথনও হুর্জন, নিক্ষল চেষ্টার
কিছুক্ষণ মধ্যে অচেতন হুইলাম।

हिंठॐ পाইয়। দেখিলাম প্রতিবেশিগণ উপস্থিত হইয়াছে। •আমি ভাত্ দ্রী-দম্পতির গৃহে গমন করিয়া দেখিলাম, শোকে, জঃ: ব ও লজ্জায় সহারা অত্যন্ত অবীর হইয়াছেন। গৃহিনী পু:নপু:ন মুর্চ্ছ। যাইতেছেন; প্রাণাধিকা ক্সাশোক-বিধুরা সেই দম্পতির রোদনে আমার প্রাণে नां क्व यञ्जभा इटें एक नाशिन। आभि छथन ॰ किছू চिखिन्दित्र कित्रिया ভাত্ণী মহাশয় ও প্রতিবেশিগণকে সম্বোধন করিয়া বলিলাম, "এক্ষণে আমাদিগকে শোক পবিত্যাগ করিয়া যাহাতে কমলাকে শীস্ত্র উদ্ধার করিতে পারি তাহার বন্দোবস্ত করিতে হইবে। আমার প্রাণ দিয়াও যদি ভাহাকে উদার করিতে পাকি, আমি ভাহাতে প্রস্তুত वाছि। बामाक कि कतिए इट्रेप वनून"। এक वृक्ष প্রতিবেশী চিন্তিতভাবে বলিল "কি করিতে চাও ?" আমি- জিজাসা করিলাম "নিশ্চয়ই ভিতরে কোন বড়লোক আছে, কে ডাকাইতি করিয়াছে বলিয়া সন্দেহ হয় ? সাধারণ ডাকাইতে মেয়ৈ চুরি করে না"। ইহাতে ভাতুড়ী মহাশয় অত্যন্ত আবেগের সহিত বলিলেন "সম্ভে—' সন্দেহ কিছুমাত্র নাই, নিশ্চয়ই সেই হুর্যন্ত্রা রতনপুরের জমিদার-পুজ প্রবোধ আমান্ধ কমলাকে, অপহরণ করিয়াছে—ইহা নিশ্চয়ই সেই পাপিষ্ঠের কার্য্য'। ভিনি এরূপ বিষম ক্রোধের সহিত এই কথা কর্মী 🐍 বলিলেন, তাহাতে আমি স্তম্ভিত হইলাম, পুনশ্চ সেই বৃদ্ধ প্রতিবাসীর मूर्षत्र मिरक ठाहिणाम। वृक्ष दिनारणन "उनि याहा विणियारहन, ए। हारे ठिक, हेश त्महे इजान्नामहे कर्य। जाममारथन कन्नाम करण मूध रहेने

मिर एडे जाशांक विवाह कविवात श्राप्तांव करता किस जामून इक्षांचिज वाचर ७ इत्य क्यामधानान कहा करनका क्यारक ब्रांग एए छा। विकाम वीमनाथ डाहाट बीकात भाग नाहै। छुत्राचा একণে সেই রাগে এই অপকর্ম করিয়াছে।" গুনিয়া আমি কিছু ि चिन्न इहेणांम, "তবে এখন कि कर्ता यात्र, পूलिम्म कि अथरम थवर कित १८ जन्मनः অনেক লোক **अ**भियाছिल, তাহার মধ্যে হইতে একটা শ্রুতিকঠোর স্বর বলিয়া উঠিল "রতনপুরের জমিদারদের জাননা, পুলিস তাদের হাতধরা, পুলিসে থবর দিয়া কি করিবে ?" বৃদ্ধও তাহাতে সাঃ দিলেন। আমি আবার জিজ্ঞাসা করিলাম "এখানে कि लाकक्षन यागाफ कितिया शूनताय छाकां कि कता याय ना ?'' वृक ইহাতেও ঘাড় নাড়িলেন। আর একটা ঠিক পূর্বেরই মত অপ্রীতিকর कर्श वित्रा উঠिल "ছেলে মানুষ—জমিদারের লাঠিয়ালদের চেনে না।" বক্তাদের কথা এরগ পঁহারভূতিশৃত্য যে আমি বুঝিলাম, এথানে পরামর্শ করা উচিত নহে, শত্রু-নিকটে আছে। তথন আমি বলিলাম "এথানে ত किছू रहेरव ना (मिरिजिहि, आगि दिना भेगेत्र मगग्न धथान रहेर्ड র ওনা হইব, क्लां कार्टि আমার কাকা বড় উকীল, ভাঁহার সহিত পুলিস স্থপারিন্টেওেণ্টের বিশেষ আলাপ আছে। স্থপারিন্টেওণ্ট সাহেব যাহাতে স্বয়ং এবিষয় নিজে তদস্ত করেন, আমি তাহার বন্দোবস্ত \*कत्रित। विस्मित्र এই দলের মধ্যে আমি কালকার ডাকাভিতে লিশু কয়জনকে দেখিতেছি, সকীপ্রথম তাহাদিগকে গ্রেপ্তার কয়াইয়া পীড়ন क त्रिष्टि भक्त कथः वाहित्र श्हेमा शृष्टिव।" येना वाह्ना आमार ्रभूर्याक भव कर्रो कथारे वानान। जनार्ज, मजाराथा (आष्ट्राक्ट्र अर्थ त्म मकन कथात मठाठा अभाव कत्रोत्र मभन्न हिन सा। किहूक लि मरशारे लायी निर्णायी मक्टलरे मित्रा भिष्ण। क्या अनक्षा जशाम महिना। जाहानिरमन मकर्नाटक विभाग करा गाँह एक भारत कि म

এ कथा आमि ভাত্ডी महाभग्न किकाम, कविल किन बनिल्बन हेशाबा नकर्म है जायाब हिजाकाको। हेशासत्र मत्था तमहे तुक, जाब हरें जिल्लाम अवर जिल्लान हारी लाक । हारी क्यलन जीनकार् তাহাদের একজন মুসলমান। আমার তাহাদিগের উপর সন্দেহ र्रेफिल। जारा व्विरंज भातिया जारामित्र मर्था मर्कारभक्षा विश्वे, পাকান প্লাকান স্থৃঢ় মাংসপেশীযুক্ত, যজেশ্বর সিংহ বলিল "বাবু, व्यामार्षत्र हित्ननं ना, व्यामत्रा कर्खामभाहेरम् त्र हित्रत्करण त्रारम्, मिनि क्रिककृत्वत व्यामात्वत उपत्र एय पत्रा हिन, व्यामात्वत व्याव वित्र यिन-তাঁকে উদ্ধার করা যায় তাতে আমরা প্রস্তুত আছি, বলেন ত আজই প্রবোধ লাহিড়ীর মুণ্ডুটা আপনার কাছে, এনে দিতে পারি।" यागात्र, भिरे शिष्-नम्पानत्र मत्रल कथात्र विश्वाम रहेल, विल्लाम-"আপাততঃ তাহার মুজু আনয়নে আমাদের ্সর্কনাশ হইবে, কিন্তু যাহার উদ্ধারের চেষ্টা হইতেছে তাহার কিছুই হইবে না।" আমি জানিতাম বেশী বিপদের কার্য্যে যে ভয় পায়, থতমত থাঁয় ভাহাদের উপরে লোকে নির্ভর করিতে পারে না। কাজেই আমি খুব সাহসের ভাব দেখাইলাম। আমি বলিলাম "আপনার ক্যাকে আমি যে প্রকারেই পারি শীঘ্র উদ্ধার করিয়া আনিব। জমিদার বাবু যতই হুদান্ত হউন একজন সম্ভ্রান্ত ভদ্রলোকের উপর• অত্যাচার করিয়া যে मर्फ निष्ठि পाইर्वन ना, छाहा जिनि विवक्ष कात्नन। ছোটলোক. হইলে আপনার কন্তার উপর অত্যাচার করিতে পারিত। কিন্ত চিরকাল স্থাক্রোচ্ছে-লালিত ধনিসন্তানের পক্ষে , শ্রীঘরবাসের ভয় যে (वभी इहेरव छाहाएछछ जत्मह नाई। आयात्र विद्यांज रत्न आशनात । कञ्चारक रकांत्र कतिया विवाह कत्रिय धवः विवारहत्र शत्र आत्र आश्रीम कान्छ भागरयां कतिएक भातिर्वन ना, धेर जारांत्र मार्म।" निराद्य कथात्र ভाष्ट्री यहानेत्र जायात्र कांनिया छेठिया रिनाटनम "ভाष्ट्रम

পামরের সহিত আঁমার সেই স্থালা কলা বিবাহিত হইবার পূর্কে যেন তাহার প্রাণাস্ত হয়।" আমি তথন আমার কলিকাতাস্থা বা শরৎচন্দ্রকে এক টেলিগ্রাম করিলাম। টেলিগ্রামের মর্ম্ম এই থে শরাম এথানে বিপদে পতিত হইয়াছি তুমি শীঘ্র তোমার রাসায়নি উপকরণ সমূহ লইয়া এথানে আইস।" উপস্থিত জনৈক ভদ্রলোধ্টেলিপ্রাম্থানি ষ্টেসনে গিয়া দিয়া আসিতে রাজি হইলেন। আজি তথন কিছু আহারাদি করিয়া যজ্জেশরের সহিত রতনপুরাভিমুপে রওল হইলাম। রতনপুর সেথান হইতে ৮ ক্রোশ দূরে। রাত্রিকালে পুনরা আসিব, এ কথা ভার্ডী মহাশয়কে বলিয়া গেলাম।

(৬)

আমার দলে সঙ্গে যজেশ্বর আমার জিনিস পত্র লইয়া চলিল লোকটার ডাকাডের মত চেহারা হইলেও ক্রমশঃ কথাবার্তায় তাহা উপর ভক্তি হইল। দেখিলাম লোকটার বেশ বৃদ্ধি স্কৃদ্ধিও আছে এবং তাদৃশ লোক যে প্রকৃতই প্রভূর কার্য্যে প্রাণ দিতে সক্ষম, ইহাদে লামার কোনও সন্দেহরেছিল না। তাহার নিকট হইতে রতনপুরে বাবুদের থবর লইতে লাগিলাম, যে সব থবর পাইলাম তাহাতে আমাদে ব্যাকৃল করিয়া ভূলিল। কার্যটা যত শক্ত ভাবিয়াছিলাম দেখিলা তাহা অপেক্ষাও অনেক শক্ত। উভয়ে নীরবে চলিলাম। যদিও আফি কত ইটিতে পারিতাম, কিন্তু কোনও ক্লালে আমার রৌজে ভ্রম অত্যান ছিল না, কাঙ্গেই চলাটা ক্রত হইতেছিল। আমার এই অপটুতা দেখিয়া যজেশ্বর যেন্ত একটু বিরক্ত হইতেছিল। তাহা মুখ দেখিয়া বোধ হইতে লাগিল যে, আমি যে কোনও কাজের লোভ ভাহা ভাহার ধারণা হইতে ছিল না। নে হয়ত ভাবিতেছিল "ে লোকটা এই আট ক্রোশ পথ চলিতে হাঁকাইয়া পড়ে, সে কিনা আগ্রহে

যাহা হটক অতিকটে তুইটা •নাগাইদ রতনপুরে আদিয়া পঁত-ছিলাম। রভনপুর একটা প্রকাণ্ড গণ্ডগ্রামু। গ্রামের প্রায় অর্দ্ধাংশই জমিদার-বাটা। বাকী সক্ষ কুঁড়ে ঘর। সমস্ত জমিদারবাটার বেধ প্রায় তের ক্রোশ,—উচ্চ প্রাচীর দিয়া ঘেরা। প্রাচীরের পর স্থশ্রেণীবদ্ধ শাল, তমাল, कमन्न, বকুল আদি বুকের गाति। বাটার ভিতর বড় বড় পুষ্ণ রিণী বাগান ; তুই ধারে পুষ্পবাটীকা সংযুক্ত পথ, অনেক শিব্মন্দির, विक्रुमिन्त, कालीमिन्त्र ७ वर् निक्क ७ निम्न विनवाद शान व्यापि অবস্থিত। বাটীর তিনটা গেট এবং প্রত্যেক গেটে সশস্ত্র পাহারার বন্দোবস্ত আছে। অন্তঃপুর ব্যতীত আর সকল স্থানই বাহিরের লোককে দেখিতে দেওয়া হয়। আমরা বাটীর উতর প্রবেশ করিয়া, বিশ্বয়স্তিমিত লোচনে তাহার সৌন্দর্য্য অবলোকন করিতে লাগিলাম। দেই প্রকাণ্ড প্রাদাদের ভিন্ন ভিন্ন স্থানে ভিন্ন ভিন্ন অট্রালিকা সংস্থাপিত। ইহার কোন্টীর ভিতরে কমলাকে লুঁকায়িত রাথিয়াছে তাহা বাহির করিব কি প্রকারে? এই চিন্তা আমার মনে অত্যন্ত কণ্ট দিতে লাগিল। চারিদিকে ঘুরতে ঘুরিতে এবং প্রত্যেক অট্টালিকার গবাক মধ্য দিয়া নিফল উঁকিঝুঁকি মারিতে মারিতে আমুরা ক্রমশঃ অস্তঃপুর मित्रधार्म व्यामिश्रा উপञ्चि इहेलाम । প্রথমেই জ্মিদার বাটীর কাহারও निक है कोन कथा जिल्लामा कता क्लिमक विषय (वाध इहेन ना। ठिंक कतिनाम প্रथम जामद्वा निष्क यउठा भाति छिटे। कतिमा दर्भावत, তাহাতে যদি কোনও খবর বাহির করিতে না পারি, তখন অক্ত ्राक्टिक किन्छामा क्वित्रव, नरहर नरह।

অন্তঃপুরও প্রহরীরক্ষিত। গেটের পার্ষে একটা একতালা কোটা,
ভূত্যাদির আবাদস্থান ও প্রচীরের কাজ এই হই কাজ করিত। অন্তঃপুরের পশ্চিম দিকে বাহিরে একটা মাঝারী আকারের উত্তম অলযুক্ত
পুষ্কিশী। পুষ্কিনীর চারিশারে বাধান প্রাকা রাস্তা এবং রাস্তার ধারে

পামরের সহিত আঁমার নেই স্থালা কলা বিবাহিত হইবার পূর্বেই যেন তাহার প্রাণান্ত হয়।" আমি তথন আমার কলিকাতান্ত বন্ধ্ শরৎচন্ত্রকে এক টেলিগ্রাম করিলান। টেলিগ্রামের মর্ম্ম এই যে, "আমি এথানে বিপদে পতিত হইরাছি তুমি শীঘ্র তোমার রাসায়নিক উপকরণ সমূহ লইয়া এথানে আইস।" উপস্থিত জনৈক ভদ্রলোক টেলিপ্রামথানি ষ্টেসনে গিরা দিয়া আসিতে রাজি হইলেক। আমি তথন কিছু আহারাদি করিয়া যজ্জেশরের সহিত রতনপুরাভিমুখে রওনা হইলাম। রতনপুর সেথান হইতে ৮ ক্রোশ দ্রে। রাত্রিকালে পুনরাম্ম আসিব, এ কথা ভার্ড়ী মহাশয়কে বলিয়া গেলাম।

• ( 9

আমার সঙ্গে সঙ্গে যজেশ্বর আমার জিনিস পত্র লইয়া চলিল।
লোকটার ভাকাতের মত চেহারা হইলেও ক্রমশ: কণাবার্তার তাহার
উপর ভক্তি হইল। দেখিলাম লোকটার বেশ বৃদ্ধি স্থাকিও আছে।
এবং তাল্শ লোক যে প্রকৃতই প্রভুর কার্য্যে প্রাণ দিতে সক্ষম, ইহাতে
আমার কোনও সন্দেহতরহিল না। তাহার নিকট হইতে রতনপ্রের
বাব্দের থবর লইতে,লাগিলাম, যে সব থবর পাইলাম তাহাতে আমাকে
বাাক্ল করিয়া ভূলিল। কার্যাটা যত শক্ত ভাবিয়াছিলাম দেখিলাম
ভাহা অপেক্ষাও অনেক শক্ত। উভরে নীরবে চলিলাম। যদিও আমি
ক্রুত ইাটিভে পারিভাম, কিছু কোনও ফ্লালে আমার রৌল্রে ভ্রমণ
অভ্যান ছিল না, কান্ধেই চলাটা ক্রুত হইতেছিল না। আমার এই
অপট্রা দেখিয়া যজেশ্বর যেন একটু বিরক্ত হইভেছিল। ভাহার
মুখ দেখিয়া বোধ হইতে লাগিল বে, আমি যে কোনও কালের লোক
ভাহা ভাহার ধারণা হইতে ছিল না। সে হরত ভাবিভেছিল, বে
লোকটা এই আট জ্রোশ পথ চলিতে হাঁফাইয়া পড়ে, সে কিনা আগ্রহের
সাইত এত বড় একটা কাল্ক করিব বলিয়া প্রভিক্তা ক্রিয়া আগিল।
স

याश इष्ठेक অভিকণ্টে ছুইটা •नाগाইদ রভনপুরে আদিয়া পঁত-ছিলাম। রভনপুর একটা প্রকাণ্ড গণ্ডগ্রামু। গ্রামের প্রায় অর্দ্ধাংশই জমিদার-বাটা। বাকী সক কুঁড়ে ঘর। সমস্ত জমিদারবাটার বেধ প্রায় তের ক্রোশ,—উচ্চ প্রাচীর দিয়া ঘেরা। প্রাচীরের পর স্থশেণীবদ্ধ শাল, তমাল, कमन्न, বকুল আদি বুকের भाति। বাটার ভিতর বড় বড় পুষ্ণ রিণী বাগান ; • ছই ধারে পুষ্পবাটীকা সংযুক্ত পথ, অনেক শিব্মন্দির, विक्रुमिनत, कालीमिनित ७ वर् निकुष ७ निस्न विनवात सान जानि অবস্থিত। বাটীর তিনটা গেট এবং প্রত্যেক গেটে সশস্ত্র পাহারার বন্দোবস্ত আছে। অন্তঃপুর ব্যতীত আর পকল স্থানই বাহিরের লোককে দেখিতে দেওয়া হয়। আমরা বাটীর উতর প্রবেশ করিয়া, বিশ্বরম্ভিমিত লোচনে তাহার সৌন্দর্য্য অবলোকন করিতে লাগিলাম। দেই প্রকাণ্ড প্রাদাদের ভিন্ন ভিন্ন স্থানে ভিন্ন ভিন্ন ভট্টালিকা সংস্থাপিত। ইহার কোন্টীর ভিতরে কমলাকে লুঁকায়িত রাথিয়াছে ফাহা বাহির করিব কি প্রকারে? এই চিন্তা আমার মনে অত্যন্ত কষ্ট দিতে লাগিল। চারিদিকে ঘুরতে ঘুরিতে এবং প্রত্যেক অট্রালিকার গবাক यथा निया नियम उँ कियूँ कि यातिए यातिए वार्येता क्रमनः व्यक्तः श्रू मिन्निधात्म व्यामित्रा উপञ्चि इरेनाम। প্রথমেই জ্মিদার বাটীর কাহারও निक है कान कथा जिल्लामा कता क्लिमक विषया वाध इहेन ना। ঠিক করিলাম প্রথমে আমরা নিজে যতটা পারি চেষ্টা করিয়া ক্রেথিব, তাহাতে যদি কোনও খবর বাহির করিতে না পারি, তথন অন্ত लाकटक किछामा क्रिय, नट्ट नट्ट।

অস্বঃপুরও প্রহরীরকিত। গেটের পার্ষে একটা একতালা কোটা,
ভূত্যাদির আবাদস্থান ও প্রাক্তীরের কাজ এই হুই কাজ করিত। অস্তঃপ্রের প্রিক্তিম দিকে বাহিরে একটা মাঝারী আকারের উত্তম জলযুক্ত
প্রবিশী। পুন্ধবিশীর চারিশারে বাধান প্রাকা রাস্তা এবং রাস্তার শারে

किर्णित स्टामाममित्र विकूल ও অশোক वृक्त, मान दाता वैधान रहेगा পাস্থদিগের বসিবার উপযোগী হইয়াছে। আমরা ঘাটে হাত মুধ ধুইয়া - কিছু জলপান করিয়া পশ্চিমদিকের একটা ত্রেনর বকুল গাছের সান वैशिन जनाम विभिन्ना शृष्टिलाम। जामि जाजा का इरेमाहिलाम, नीष्ठ रमरे त्रगाञ्चारन नीजन समीत्रगम्भरमं निक्रां छिन्छ । स्टेशं छहेश পড়িলম। यटकश्त विमया त्रश्लि।

श्राप्त चन्छे।थात्नक वात्म, यर्ड्डश्रंत व्यागात्क निजा इटेर्ड जूलिल। ভাহার মুথে বিরক্তির চিহ্ন বিন্যমান। আমাকে বলিল "বাবু, এথানে ষদি ঘুমিয়েই দব দময়টা কাটিমে দেবেন, তবে যে কাজের জন্ম এদেছেন তা করবেন কখন ?'' আমি একটু অপ্রতিভ হইয়া উঠিয়া হাত মুখ ধুইতে পু্ষরিগীর ঘাটে গমন করিলাম। তথন বেলা व्याप्त हात्रिहा, मक्ता इटेट बात घन्हारम माज ममत्र वाकी बाह् । अटे व्यद्ध म्मरम्बर्गस्था कियन क्रिया कैर्यामिक इटेर्व, हेटा ভाविछ ভाविछ আমি কিছু অন্তির হইয়া উঠিলাম। ইতন্তঃ চাহিতে চাহিতে সংসা দেখিতে পাইলাম, আমরা যে গাছটীর তলায় বসিয়াছিলাম, ভাহার ভাষ পত্রাবলীর উপরে, কথনও বা তাহা হইতে ভূতলে, পরে পুঞ্জিণীর শলে, ছোট একটু রৌদ্র পতিত হইয়া ইজ্সতঃ ঘুরিতেছিল। বৃশ্চীর भिष्मि क्रिक व्यमिक्ट्रिय ज्ञाममञ्जू প্रकाख व्यक्तिका। वृक्त छ श्राह्मी जथन मिट्टे बढ़ोलिकात हात्राय बविष्ठ हिल। डाशाट শ্বাকাৰিক সূর্যাকিরণ পতিত হইবার কোনও সম্ভাবন। ছিল না। কাজেই भिष्ठ कुछ क्रोजिट्रेक् प्रिया जामात्र मत्न क्रेन (य, छेरा क्माथा ७ इहेर्ड जिन्हिक निष्ठ रहेशा जानि एडए। (कान् द्यान रहेए उरा जानिएडएए किलिनात क्र वामि मक्त राज्यूथ धुरेना भूट्वत स्टान वानिना , जिल्लामा । धारेयाचा दर्शासिकू পूर्वक्रदश कामात्र मूर्यत्र छेनक शिक्त जाना जया रहेरक मुस्मम जेशन विशा जामगरकत कोशिकात जेशन

পতিত হইল ও ঘুরিতে লাগিল। আমি তথক সেই ঘুর্ণামান রৌজের পথ ঠিক কারবাছ জন্ত দেই রাসমঞ্চের নিকট উপস্থিত হইলাম। যজেশ্বর অত্যন্ত অধীর হইতে লাগিল কিন্তু এখন সে দিকে দৃষ্টিপাত করিলাম না। রৌদ্রের গতি লক্ষা করিয়া দেখিলাম সেগুলি অক্ষর श्रेटिहा । शानिकक्षण দেथिया বুঝিলাম গুটা ক**রেক** কথাই পুনঃপুনঃ লিখিত হইতেছে। সেগুলি সংগ্রহ করা হইল। "কমলা विकानी, इ किन পরে বিবাহ, नीख উদ্ধার, নতুবা আত্মহত্যা।" তবে ত কমলা এইখানেই অবক্দা আছে। এই প্রথম ক্বতকার্যাতার অত্যস্ত আনন্দ হইল, কিন্তু পরক্ষণেই তাহার উদ্ধার কিরূপ চুম্বর তাহা ভাবিয়া মন তঃথনাগরে নিমজ্জিত হইল। অকি 🖈 কয়টা যেরূপ ভাবে পুন:পুন: লিখিত হইতেছিল, তাহাতেও বোধ ২ইল, আমরা যে বর্তমান সময়ে ঠিক উপস্থিত আছি, একথা কমলা নিশ্চিত না জানিতেও পারে। পুষরিণার পাশ্চম পারে পোড় দেখিয়াই সে এইরপে দর্পণ ছারা আলোক প্রতিফলিত করিয়া সঙ্কেত করে। আশা যে আমরাও নিশ্চিত এক সময়ে না এক সময়ে আসিব। তাহার বুদ্ধিকৌশল দেখিয়া চমংক্তত হইলাম। গিয়া যজ্ঞেশ্রকে বলিলাম কমলার সন্ধান পাওয়া গিয়াছে। দে ঐ অন্তঃপুরের ত্রিতল অট্টালিকায় বন্দী হইয়া बाह्य এवः भीच जाशास्क উদ্ধার ক্ররিতে হইবে। যজেশ্বর আমার কথা গুনিয়া একটা দারুণ অবিখাসের ছাস্ত হাসিল। সে একবার मिरे पूत्र खिन को बोलिकात श्रीन जीव मुधिकिन कतिया बिनन "वाव्, जानि यकि এथान • रहेए के जड़ानिकांत्र ভिভরের লোক मिबिटा भान ও তাহাদের দহিত কথা কহিতে পারেন, তাহা হইলে जाशिन मार्य नरहन" विनिद्या शूनण अकर् शिनिन। जीमि जार्यत्र कथात्र एकान ७ छेखत्र मा किया, ठातिकिक क्षित्रा बहेनाम। किविनाम ब्लंद मारे। जयन जाजाकाचि जानात्र श्रीकिति हरेटज भटकि प्राचीनित

वार्षित्र कतित्रा, यर्डाश्वेत्रक विनाम यिन क्यान लाक विष्यस्यः एत-लाक এथान जाम, তবে আমাকে সাবধান করিয়া দিকে।" দুর্বীণ চকে मागारेमा याश जामा कित्रग्राहिनाम जाशरे দেখিতে পাইলাম। मिथिनाम कमना आत्रमी नहेग्रा आत्नाक প্রতিফলিত করিতেছে। ভাহার সেই সরলা বালিকা-মুর্ত্তি এই একদিনের মধ্যেই চিস্তামগ্রা বিষাদিনী যুবতী-মুর্ত্তিতে পরিণত হইয়াছে। প্রাণ-ভরিয়া তাহাকে দেখিবার আশা থাকিলেও বেশীক্ষণ দেখা নিরাপদ নহে ভাবিয়া ক্ষান্ত হইলাম। তথন যজেশবকে সেই যন্ত্রের ভিতর দিয়া দেখিতে বলিলাম। দেখিয়াই সে আগ্রতে বলিয়া উঠিল "এযে দিদি ঠাকরুণ।" আমি বলিলাম "চুপ্, গোল করিও না, এ শত্রপুরী।" আমি স্থিরভাবে ষজেশবের বিশ্বিত কলেবর অবলোকন করিভেছিলাম। এতক্ষণ পরে त्म यन गातीतिक वन অপেकां छानवलात श्राधाण व्विर्ण भाविन, **(मथा भिय हर्देग मि गर्जी अ एकि छ**द्ध आभाव भाष्यव धूना नहेशा विनन শাদারাকুর, প্রথমে তোমার কাজ করিবার শক্তির উপর আমার কোনও বিশ্বাস হয় নাই কিন্তু এখন বুঝিয়াছি তুমি সব পার, এখন ভূমি যাহা বলিবে তাহাই করিব।" তাহার উপর এইরূপ বিজয় লাভ করিয়া আমি মনোমধ্যে একটা আনন্দলনক আত্মপ্রদাদ লাভ করি-नाम। जामि उथन रौलिनाम जाङ् ञात्र किছू कतिरात नाहे, महा। रहेश्राह এथन वांणे याख्या याक् कांण त्रां ि नागान উक्षात्रत ८५%। क्तिए रहेर्व। वामत्रा ७थन भूनताम गृहािज्यूरथ त्रक्ता रहेलाम। আমি থানিক দুর চলিয়া অত্যত ক্লান্ত -হইয়াছিল্যন, তথন যজেশ্ব व्यागात्र दर्गान अनिरिध ना मानिया व्यागादक এकवादत इस्क किया नहेत्र। वाजी उ शिवा (भौ ए हिन।

(9)

नम् मिन প্राट्ड वसूर्व न्यूर्ट्स जानिया भौहित्नन। भाषात्र.

লোকে ভাবিয়াছিল শরৎচক্রের চেহারাট। এক মন্ত পালোয়ানের মত হইবে। শরৎচক্র নিশ্চয়ই লাঠি হাতে লইয়া দাঁড়াইলে একাই এক শত লোকের মোহাড়া লইতে পারিবে। বিপৎকালে আমি নিশ্চয়ই এরূপ একজন বীর বন্ধকে আহ্বান করিয়াছি। কিন্তু তাহাকে প্রত্যক্ষ করিয়া সকলে নি গান্ত বেকুব হইয়া গেল। সকলেরই কাছে ব্যাপারটা কিছু • কৌতূহলজনক ঝোধ হইল। কেবল যজেষির এ ব্যাপারে কিছুমাত্র আশ্চর্যা হইল না, সে সকলকে বলিল, "গায়ের জারে কি হয়, বাবুদের বৃদ্ধি কত ?"

শরৎ আহার ও কিঞ্চিৎ বিশ্রাম করিয়া স্থান্থির হইল। আমরা উভরে বিশ্রাম ও পরামর্শ জন্ম একটি গৃহে গিয়া তাকিয়া ঠেশ দিয়া শুইয়া পড়িলাম। চিরহান্তময় শরৎ রহন্তভাবে কথা আরম্ভ করিল। "বাস্তবিক তোমার এরূপ একটা adventure হঠাৎ জুটাতে আমি বড়ই আনন্তি হইয়াছি, আমরা সব বসে বসে যে এত সক scientific plan করতাম ভার application করবার যে একটা স্থযোগ জুটিয়াছে ইহাতে বড়ই আনন্দ হয় না কি ?"

আমি তাহার আনন্দে বাধা দিয়া সমস্ত ঘটনীটা খুলিয়া বলিলাম।

সব শুনিয়া, সে একটু গন্তীরভাবে বলিল "তুমি যে এই পদ্মাপারে

এমন এক বৃদ্ধিমতী বৈজ্ঞানিকী Iseroine এর দেখা পাইবে আমি

তাহা আশা করি নাই। যাহাহউক এখন বৈজ্ঞানিকীকে উদ্ধার

করিবার উপাধ কি করিয়াছ? আমাকে বাহা আনিতে সঙ্কেত

করিয়াছিলে তাহা আনিয়াছ।" খানিকক্ষণ ধরিয়া ছই বন্ধতে

পরামর্শ করিয়া ঠিক হইল যে নিকটে স্বডিভিস্ন টাউনে হরিমোহনের
ভগ্নীপতি ডিপ্টা ম্যাজিট্রেট, তাহার কাছে কোনও সাহায্য পাওয়া

বার কিনা তাহার চেই। করিতে হইবে। আমি যজেশরকে কতিপর

উপাশ্ক লোক, অর্থাৎ বাহারা পানীয় বেহারাগিয়ী এবং লাঠিবাকী

উত্তর কার্যাহে পোক্ত এমন কয়ন্তন গোক লইয়া একধানা পান্ধী সঙ্গের রচনপুরের নিকট একটা নির্দিষ্ট জঙ্গলে লুকাইয়া থাকিবে এরপ বলিয়া দিলাম। পান্ধার ভিতরে লাঠি ও আমানের রাসায়ণিক দ্রবাদি সংরক্ষিত হইল। কথা রহিল বে সন্ধ্যার পূর্বেই আমরা তাহাদের সহিত সেই জঙ্গণে সাক্ষাৎ করিব। আমরা তথন করিনক ভদ্র লোকের সহিত নিকটবর্ত্তী—তে ডিপুটী বাবুব নিকট গ্যন করিলাম।

िथू ही वाव् दिन ভদ্ৰ লোক। **आ**यादित প্ৰতিয় পাইয়া, যথে-िछ আদর অভার্থনা করিলেন। তাঁহার নিকট সমস্ত ঘটনাটী ৰলাতে তিনি আমাদিগের সাইত াহামুভূতি করিলেন, এবং তিনি यथानाथा नाहाया कतिर्देवन विनिष्ठा প্রতিশ্রত রহিলেন। ডিপুটা বাবুর कथा अञ्चादत हेन्म् (পक्टोत्र वावू दक अ अतामर्ग मर्था शक्ष कता इहेन। জাঁহাকে ডেপুটা বাবু লোক পাঠাইয়া ডাকাতে তিনি আসিলেন वादः मगु अनिया यादा विवासन जाहा जामापिरगत विर्मुष जन्माश्राप इंहेल था। जिनि विलिलिन ''আপনারা অনেहक ভাবেন পুলিস একবারে অদীম ক্ষমতাশালী, কিন্তু তাহা নহে, সাধাবণ লোকের উপর পুলিসের यर्थष्टे कम्बडा थाकित्नुं उथनवात्नत्र छेशत्र म्त्रत्रश क्रम् डा नाहे। এडवड् একজন পরক্রোন্ত কমিদাহরর বাটা থানা-তলাদী করা আম্প্রদের সাহসে স্কুলায় না। যদি থানা-ভলাদী কর্বয়া তাহাদিগকে অপরাধী সাবাস্ত अपित्र का शात्रि, তবে धामामिशक नान्। विशाप शिष्ट बहेरव। क्षित्य वावजीय मञ्चानभव आमानिश्तित विभक्त जीवन ही कात कतित्व। अभिमाद्रित धनवान मिल्ल वर्ष वर्ष के नेन पाळात्रान वामामिलात व्याप्त्रमाध्यास वास इहेट्या कार्यह जामदा धनवामित्र विश्व विद्वार কিছু ক্ষিতে পারি না। এই বর্তমান ঘটনাতেই কত পোলমাল দেখুন अर्था जी भक्ति वावू मूत्र इहेटल स्पर्रिंगिटक मिथियाद्यम, जाराय जयस इहेटल नामा जावान जग मा रहेटम् ३ जिनि ८ नहें श्रकाण श्रामारतक नाम

त्मरे गृश्जी थूं किया मरेटक भातिरका किना मरैनार। व्याचात्र भू निरमेत्र লোকে সবলে বাসির ভিতর প্রবেশ করিবারু চেষ্টা করিলে, পোলমান হইবে। সেই গোলমালে সতর্ক হইয়া কলাটীকে তাহারা সরাইরা ফেলিতেও পারে। এই সব ভাবিয়া দেখিলে ব্যাপারটা বিশেষ গুরুতর বলিয়া বেধি হহবে।'' ইনম্পেক্টার বারুর কথা শুনিয়া আমরা উদ্বিধ হইয়া পড়িলাম 🕨 শর্ব তথন বলিল "আমরা যদি এরূপ কোন বঁলোবস্ত क्ति ए वाशनाता (१८६ कान त्रकम वाधा शाहरवन ना এवः व्याशनाता षष्ठः भूत প্रবেশ করিলেও যদি কেহ জানিতে না পারে, আর যদি আমরা সমস্ত দায়িত্ব গ্রহণ করি তবে আপনারা সাহায্য করিতে রাজি शाहिन कि ना ?" ইন্সেক্টার বাবু ডেপুটী বাবুর মুথের দিকে চাহি-लन। চাছनिর অর্থ ইহাদের কথায় বিশাস করা বাইতে পারে কি না? শরৎ আবার বলিল আপনারা যদি পুরী অবারিত দ্বার দেখিতে না পান ফিরিয়া আসিবেন। আরও কিছুক্ষণ বাক্ ব্ভিণ্ডার পর তাঁহারা সাহায্য করিতে স্বীকৃত হইলেন। ইন্স্পেক্টার বাবু জনকমেক कनष्टितन मत्क नहेत्रा, हेडेनिফরম नूकाहेब्रा, थानाव काथाय याहेल्डि তाश ना विषया आगाि पात्र मार्क गाहेर्यन। एप्रशे वाव् এই मदन याहरवन।

( -)

সন্ধার পূর্বেই আমর্থ রতনপুরের নিকটে যজেশর ও তাহাঃ
দলের সহিত মিশিলাম। শরং ও আমি তথন দল হইতে বাহিঃ
ইইরা রতনপুরে প্রবেশ করিলাম। অন্তান্ত সকলে সেই জললে প্রস্তুত্বী রহিল। আধ ঘণ্টা আন্দাজ সময়ের পর আমরা বাহির হইর
লক্ষকে পুরী প্রবেশ ক্রিতে বলিলাম। গ্রামে প্রবেশ করিয়া, দেছি
ক্রিয়ে বহালোল উঠিয়াছে। গ্রামের সম্লার লোকই রাজবাটা অভিমুদ্ধে
শানিক হইজেছে। শকলেরই মুখে রবি কালীর রোম হইরাছে।

**मिर्ट जिए त जिठत (कर वागामित लक्षा) क तिल ना। जिए त जिंछत** মিশাইয়া আমরাও রাজ-বাটীতে প্রবেশ করিলাম। দৈখামে মহাভিড়। मभंदं लाक कानीवाफ़ी शिक्षा खमारबंद • इहेर उहि। इहाद এहे সময়ে একটা বিষম শব্দ হইয়া উঠিল, যেন বোম ফাটিল। পশ্চাতের লোক সকল ব্যাপার কি বুঝিতে না পারিয়া ভয়ে উর্দ্বাসে দৌড়িল। গোলমাল আরও শতগুণে বাড়িতে লাগিল। পুনঃপুনঃ रस्म कानीवादीरङ অজय পটका ফুটিতে লাগিল। আমরা কালীवाড़ी ছাড়াইয়া অন্তঃপুরের দিকে অগ্রসর হইলাম। যাহা আশা कतियाछिलाम ठिक তাহाই হইয়াছে: অন্তঃপুরের দিকে জনমানব নাই। প্রহরিগণ, দাসদাসীগণ সকলেই কালীবাড়ির দিকে ছুটিয়াছে। অন্তঃপুরকামিনীগণও কালীবাড়ীর ব্যাপার কি জ.... জন্ম নিকট'ষ একটা বাটীর ছাদে উঠিয়াছে। অবাধে আমরা ক্ষন্তঃপুরে व्यदिশ कब्रिक्स मिट्रे जिंडन चिंद्रीनिका चिन्न्यार्थ धार्यमान इट्रेनाम। সিঁড়ির ঘর থোলা, জতবেগে আমরা উপত্রে উঠিলাম। উপরে উঠিয়া আমার একবার গোল লাগিল—কোন্ ঘরে কমলা আছে। একটা चारत हार्वि द्विश्वा किथिनाम आत मन घत्रहे (थाना, मन्मर्ट ज्य যজ্ঞেশব্বকে সেই ঘরটা দেখাইলাম। যজ্ঞেশব দরজায় করাঘাত করিয়া र्दैकिन, "मिनि ठांकऋण।" এই ভীষণ গোলঘোগে কে নিশ্চিন্ত আছে, क्रमान्छ निन्छि ছिल न।। यद्ध्यद्वत कश्चरत व्यानत्म विश्वया छेत्रिल —"যজেশ্বর, যজেশ্বর। তোমরা এদেছ, শীঘ্র আমায় এথান থেকে নিয়ে চল।" যজেশ্বর "দিদি ঠাকরুণ সর, আমি দর্জী ভালিব" বলিয়া দরজায় পদাঘাত করিতে লাগিল। সেই ভীম পদাঘাতে কতিপর सूर्छ ग्राथा दांत्र ভानिया (श्ना आयता श्र्ट প্রবেশ করিলাম। अहे श्रथम कमला जामात्र वाङ्गर्था जानिया जानत्म जार्वरं मुद्धा

তাঁহারা আসামী ধরিবার জন্ম রহিলেন। আমরা মৃচিছতা কমলাকে লইয়া চলিয়া গেলাম।

( 5 )

বিবাহের কয়েক দিন পরে ডেপ্টা বাবুর এক পত্র পাইলাম। তিনি লিথিয়াছেন:—

"প্রিয় মহাশয়,

আপনি ও আপনার সহধর্মিণী আমার সম্প্রেছ সম্ভাষণ জানিবেন।
আপনাদিগকে বিদায় দিয়া আমরা আসামী ধরিতে সেথানে রহিলাম।
কিন্তু হতভাগ্য পার্থিব শান্তির হাত এড়াইয়াছে। পুলিষ আসিয়াছে
ও গোহার কতকর্ম সম্পূর্ণরূপে ধরা পড়িয়াছে বল্লিয়া এবং আর একটী
কারণে, যাহা আমি নীচে লিখিতেছি, তাহা দারা তাহার মন্তিক্ষ এতদ্র
বিপর্যন্ত হইয়াছিল যে, সে আমাদের হস্তে পড়িবার পূর্বেই পিন্তলের
গুলিতে আত্মহত্যা করে।

আপনাদিগকে বিদায় দিয়া নিকটে কোঁন লোকজন না দেখিয়া আমরাও দেই মহাকোলাহলপূর্ণ কালীবাটী অভিমুখে গমন করিলাম। গিয়া যাহা দেখিলাম তাহা জীবনে কথনও ভূলিব না। আপনারা কি ভূত, প্রেত বা দৈবশক্তি মানেন ? দে দিনের ব্যাপারে বাস্তবিকই আমার মনে এক গুরুতর পরিবর্তন হইয়াছে। অনেক কটে কালীবাটার ভিতর উপস্থিত হইয়া দেখি বাটার প্রাঙ্গনে কতকগুলা লোক তাগুব নৃত্য করিতেছে; হিন্দুখানী ও বাঙ্গালী লাঠিয়াল ও ঘারবান এবং ভ্রুলোর্ক ও পূলারী বাম্ন সকলেই সে নৃত্যে যোগ দিয়াছেন। নৃত্য কিন্তু তাহারো স্বেছারুত নহে, সম্পূর্ণ অনিছ্যান্তত; তাহারা যেখানেই পা দের অমনি ভাহাদের পারের নীচে কি একটা বিষম শক্ষে ফুটিয়া যার, বেচারী তখন লাকাইয়া পেথান হইতে অল্পত্র পড়ে,—
সেখানেও ঠিক সেই রক্ষম অবস্থা ঘটেণ ভাহাদের ভরে ও দারুণ

হতাশার এবং বিকট মৃথদির দেখিয়া, সেই হঃথের সময়েও হাস্ত সংবরণ করা বার না। শুধু তাহাই নহে, কালীবাটীর দেওয়ালের দিকে চাহিরা যাহ। দেখিলাম তাহাতে অন্তরাত্মা শুক্ত হইল। দেওয়ালে অগ্নিময়ী কালীর ভীষণ মৃতি। অগ্নিময় চক্ল্, অগ্নিময় জিহ্বা, অগ্নিময় থড়া, হস্ত, বাহ্ন, পদ, নৃম্পুমালা সমস্তই অগ্নিময়। যেন দেবীর রোষাগ্নি কাগ্নির আকারের ছড়াইয়া পড়িতেছে। আর সেই অগ্নিময়ী মৃত্রির নিম্নদেশে অগ্নিময় অক্ষরে লিখিত—

"এই পুরী মধ্যে সতী বন্দিনা। সত্তর তাহার উদ্ধার না হইলে; কালা-রোহানলে সমুদায় ধ্বংস হইবে।"

তথন সমস্ত ব্যাপাব আমি ব্ঝিতে পারিলাম। ব্ঝিলাম আপনার বাক্দন্তা সতা সহধর্মিনীর জন্তই কালী আজ এই লীলা প্রকাশ করিয়াছেন। আমরা তথন সেই লোকদিগকে সাম্বনা দিয়া বাললাম ভয় নাই, আমরা সেই সতীর উদ্ধার সাধন করিয়াছি। আমরা সরকারের লোক, সতী ভাহার অভিভাবকের নিকট গিয়াছে। দেবীর রোষ নিক্ষাই শীন্ত নিক্ষাপিও হইবে। বান্তবিক বলিলে আশ্চর্য্য হইবেন যে অল্পন মধ্যে, কোটা ও শব্দ বন্ধ হইয়া গেল। ঐ ব্যাপারে কাহারও কিছু বিশেশ অনিপ্র হয় নাই। সেই অগ্নিময়ী মূর্ত্তি ও অক্ষর সকল ক্রমে নিক্রাও হইতে লাগিল এবং কিছুক্ষণের মধ্যে একেবারে বিলুপ্ত হইয়া গেল। আপনারা এখন নব্য ব্বক, এ সকল বিশ্বাস করিবেন কি না বাসিতে পারি না। আপনারা ইহার কিরপ কারণ বাহির ক্রিবেন ও এই ঘটনাটী কিরপ ভাবে লইবেন, জানাইলে স্থী হুইবে। ইতি—

ভিপুটী বাবুর পত্রথানি পড়িছা শরৎ ও আমি বিশেষ আমোদ ভাগভোগ করিলাম। আমি বিলিলাম ভাজলোকের ভ্রান্তি দূর করা ভাচিত নহে, উপস্থিত ঘটনায় তাঁহার ঈশবের প্রতি ভাজি বাজিয়াছে, অভ এব এই বিষয়ে আর্থ্য কোনও পোলমাল করা উচিত নহে।" শরৎ
বিলব "একটা প্রতারণা দারা,লোককে ঈশবে ভক্তিমান করিতে হইবে,
এ কেমন কথা ? বিশেষতঃ আজকার এই কার্যাটী যদি লোকে
দৈবশক্তি-কার্যা বলিয়া বিশ্বাস করে, তবে আর দিনকতক বাদে হয়ত
একজন বদমাইদ্ লোক এই রক্ম একটা ঘটনা ঘটাইয়া নিজের নীচস্বার্থ সিদ্ধি করিবে। অত এব ডেপুটা বাবুর ভ্রম ঘুচাইয়া মেওয়াই
কর্ত্রবা।" অগতাা ডিপুটা বাবুকে নিম্নলিখিত পত্রখানি লেখা গেল।
প্রণাম পুরংসর নিবেদনমিদং—

মহাশয়,

আপনার পত্র প্রাপ্তে যারপর নাই সম্ভন্ত হইলাম। আপনার ঝণ আমরা এ জাবনে ভূলিতে পারিব না।

আপনার নিকটে কোনরূপ প্রতারণা করা অন্তায় এই বোধে সমস্ত ঘটনাটা আপনাকে লিখিতেছি। আমরা প্রেত্তত্ত্বে পণ্ডিত নই। এবং ভূতপ্রেত বিশ্বাস করিবার উপযোগী প্রমাণ এ পর্যান্ত পাই নাই। কাজেই ভূতপ্রেত সম্বন্ধে কোনও কথা বলার আআদের অধিকার নাই। তবে সে দিনের ঘটনাটা যে ভৌতিক বা দৈবশক্তির কোনও পরিচারক নহে, তাহা আমরা স্পষ্ট করিয়া বলিতে পারি। এই আশ্চর্যা ব্যাপারটা রুদায়ণবেত্তাগণের নিকট অতি সামান্ত ঘটনা। বলিয়া গণ্য হইবে। আপনাকেও ইহার কারণ বলিলে আপনি দেখিবেন ইহা অতি সোজা। ব্যাপারটা আমাদের বিশেষতঃ আমার বন্ধু শরৎচক্তের দ্বারা সমাহিত হইয়াছিল। আম্বা যখন আপনাদিশ্বের নিকট হইতে রতনপুরের জঙ্গলে বিদায় হইয়া রতনপুরে গিয়াছিলাম, কাজটা সেই সময়ে সম্পন্ন হয়। আমরা উভয় বন্ধুতে কালীবাড়ী।গিয়া দেখিলাম সেখানে লোকজন কেই নাই, খুব অন্ধকার। তুইটা রাদায়িকক পদার্থ আমরা সক্তে কইয়া গিয়াছিলাম। একটা ফস্করাস,—এই ফস্করাস দারা আমরা

দেওয়ালে এক কালীমৃদ্ধি ও অক্ষরগুলি লিখির/ছিলাম। অন্ধকারে ফস্ফরাস লিখিত অক্ষরগুলি ও মুর্জি অগ্নিমর দিখাইতে ছিল। আরু ষেরাসারনিক পদার্থটা ছিল তাহার নাম নাইট্রজেন আইওড়াইড়। জামাদের সঙ্গে আমোনিয়া ও গুঁড়ান আইয়োডিন্ ছিল। তদ্বারা এই পদার্থ তৈয়ার করান হয়। এই দ্রব্য অত্যন্ত দাহ্য। ইহা ওক হইলে যদি ইহাতে একটা সামান্ত বালুকণাও পতিত হয় তাহা হইলে ইহা বিষম শব্দে ফাটিয়া যায়। এই দ্রবাটা এরপ ভাবে ভিজান হইয়াছিল যেন তাহা লোক আসিবার কিছুক্ষণ আন্দাজ সময়ের পর ফাটে।

লোকে প্রণমে আসিয়া সেই অগ্নিমন্তী মৃত্তি দেখিয়া বিশ্বিত ও ভীত হয়। তার পরে তারা দেখিল, লোক নাই জন নাই হঠাৎ একটা বিষম শব্দে কি ফাটিয়া উঠিল। ইহাতে তাহাদের ভয় ও বিশ্বয়ের মাত্রা আরও বাড়িয়া উঠিল। এদিকে ওদিকে পলাইতে গিয়া আবার নৃতন বিপদ ঘটল। প্রাঙ্গনের চারি ধারে ছোট ছোট কাগজে করিয়া এমটু একটু করিয়া নাইট্রোজেন আইয়োডাইড রাখা হইয়াছিল। এই সকল জব্যে জলু অধিক করিয়া মিশান হইয়াছিল, যেন তাহারা বড়টীর আগে না ফুটে। এশ্বলে বলা উচিত সাংঘাতিক ফল হয় এরূপ মাত্রায় কোন স্থলেই উক্ত দাহ্য পদার্থ রক্ষিত হয় নাই। লোকে বন্ধন পলাইতে গিয়া উঠানের নাইট্রোজেন আইয়োডাইডের উপর সজোরে পদার্থণ করে তথন তাহারাও ফাটিতে থাকে। ইহাই ভাহাদিগের তাণ্ডব নৃত্যের কর্বরণ।"

## शिञ्जूभाद्र 'घाषाल।

## - (शिख्नक्।

শুদেশের রাজধানী পৌশুইর্দ্ধণ অতি প্রাচীন নগর
ভাগবতের নবম স্কন্ধে ত্রয়োবিংশ অধ্যায়ে লিখিত আছে ষে,

পৌগুদেশের নাম-করণ ও স্থাপিন। "বলির কোতো দীর্ঘতমাঃ হইতে অঙ্গ, বঙ্গ, কলিজ, পুণ্ড, ও স্কা নামে পাঁচ পুজ্র জন্মে, তাঁহারা স্বস্থ নামে এ পাঁচ জনপদ প্রাদেশে স্থাপিত

করিয়াছিলেন।"

\* ক্তিররাজ বলির পুত্র সন্তান ছিল না। তিনি একদিন গলালান করিতে আদিয়া দেখিলেন, এক অন্ধ খবি নদীর প্রোতে ভাসিয়া আদিতেছেন। ধার্মিক রাজা অবিলয়ে তাঁচাকে জল হইতে তুলিরা আপন আবাদে আনর্থন করিলেন। দেই অজ্ব খবির নাম দীর্ঘতমাঃ। রাজা তাঁহাকে তাঁহার ক্ষেত্রে পুত্রোৎপাদন করিবার জন্ত অমুরোধ করিলেন। ঋষি সন্মত হইলে, রাজা রাণী সুদেফাকে তাঁহার নিকট বাইতে বলিলেন। কিন্তু ঋষিকে অজ্ব ও বৃদ্ধ দেখিয়া, রাজ্মুহিষী নিজে না গিয়া, এক দাসীকে ঋষির নিকট পাঠাইয়া দিলেন। ঋষি সেই শুলুযোনিতে ১৯টী পুত্রোৎপাদন করিলেন। বলিরাজ পরে রাণীর আচরণ জানিতে পারিয়া, ঋষিকে প্রসন্ম করিয়া, স্দেফাকে তাঁহার নিকট পাঠাইলেন। ঋষি দীর্ঘতমাত্র স্বদেকা দেবীর অল স্পর্শ করিয়া কহিলেন, 'তোমার আদিতা তুলা তেজস্বী পাঁচ পুত্র জন্মিবে। সেই পুত্রপণের নাম অল, বল, কলিল, পুত্র ও স্ক্র হইবে। এই ভূমগুলে তাহাদের স্ব স্ব নামে এক এক দেশ বিধ্যাত হইবে।' (মহাভারত, আদিপর্বর্ব)।

"অঙ্গো বঙ্গ কলিঙ্গণ পুণ্ডঃ স্ক্রাশ্চতে স্থতাঃ। তেষাং দেশাঃ সমাক্ষাতাঃ স্মাম কথিতা ভূবি॥" • ( মহাভারত, আদিপর্বে—১০৪ ৫০ )

ন্ব গুল বৃহস্পতির জ্যেষ্ঠ লাভা উতথা খীর প্রিয়তমা পত্নী মমতার পর্ভে আজ্ব দীর্ঘতমাঃ খবিকে অপত্যতে লাভ করেন। কালে দীর্ঘতমাঃ গোধর্মপরারণ ও পরিবার প্রতিপোবণে অসমর্থ ইইরা ভর্জা নামের অবোদা হওয়ার তাঁহার পত্নী প্রভেবী পূত্রগণের সাহায্যে তাঁহাকে বন্ধনপূর্বক উড়্পে নিক্ষেপ করিরা গঙ্গার ভাসাইরা দেন।
এবং দীর্ঘতমাঃ বদ্চছাক্রমে বহুদেশ অভিক্রম করিরা গঙ্গাপ্রবাহে ভাসিরা ঘাইভে থাকেন। অবশেষে বলিরাজা তাঁহাকে তদবিহা হইতে উদ্ধার করিরা, তাঁহার বন্ধ তেজ লক্ষ্য করিরা ভাহার আশীর্বাদে আপন পদ্মী স্থদেক্ষার পর্ভে পক্ষপ্ত লাভ করেন।

( वािष्णवर्व, ১०८ व्यथात्र । )

**८कथा** यात्र ना

এই পাঁচ পুত্র বালের ক্ষেত্রিয় বলিয়া উল্লিখিত ইন।\*

এই পোঁও রাজ্য বৈদিক ষুগে অর্থাং অভ হইতে পু০০০ বংসর
পূর্বে স্থাপিত হয়।† পূর্ব্বোক্ত দার্ঘত্রমাঃ ঋষি
পোঁও র প্রাচীনতা।

একজন বৈদিক ঋষি; ঋথেদের প্রথম মগুলের
১৪০—১৬৪ স্কু ইহাঁরে রচিত। ঋথেদের দীর্ঘত্রমাঃ আগুনার পিতার
নাম উত্থ্য এবং মাতার নাম মমতা বলিয়া উল্লেখ ক্রিয়াছেন।
(ঋথেদ, ১ম মগুল, ১৫৮ স্কু, ৪।৬ ঋক্।) স্কুরাং ঋথেদের উত্থাই
যে মহাভারতের উত্থা এবং ঋথেদীয় উত্থা পুত্র দীর্ঘত্রমাই যে মহাই
ভারতীয় উত্থাপুত্র দার্ঘত্রমাঃ, ত্রিষয় সন্দেহ করিবার কোন কারণ

\* তিতিকোর্ষদ্রপঃ পুত্রোহভূৎ ততো হেম হেমাৎ হতপাঃ তত্মাদ্বলিঃ।
যক্ত ক্ষেত্রে দীর্ঘতমদা অন্ত-বঙ্গ-কলিঙ্গ-স্ক্র-পুত্রাক্ষাং বালেয়ং ক্ষত্রমজন্তত।
তন্মাম—সম্ভব্তি—নংজ্ঞাশ্চ পঞ্চ বিষয়া হতুবুঃ॥

( विक्रूश्राग, ठलुर्थ व्यःभ, ১৮म व्यः )।

আবার ঋথেদের ঐতর্গের ব্রাহ্মণে লিখিত আছে "বিধামিত্রের শত পুত্র ছিল, ভন্মধ্যে পঞ্চাশ জন মধ্চছুন্দার অপেক্ষা বয়সে বড় এবং পঞ্চাশ জন তাঁহা অপেক্ষা বয়সে ছোট।

জ্যেষ্ঠগণ শুনংশেপের অভিষেকে সম্ভষ্ট হইল না। বিশ্বামিত্র তাহাদিগকে এই বলিয়া অভিশাপ দিলেন, প্তোদের বংশধরগণ অত্যক্ত হইবে।' ইহারাই সেই পুণু ইত্যাদি।

সমুসংহিতার মতে, পৌগুলি সহলে পূর্কে ক্তিয় ছিলেন, সংস্থার অভাবে ব্ৰম্ম প্রাপ্ত হইরাছেন।

† জীবুজ রাধেশচন্ত্র শেঠ, বি, এবু, মহাশয়, 'সাহিত্য' পত্রের ১৩০৬-৯ম সংখ্যায়
'পৌঞ্জ বাহ্রদেব' শীর্ষক প্রবজের চতুর্থ পরিচেইদে বলিপুজি পুত্রের রাজ্যকাল যে
ভাবে জ্ঞমাশ করিয়াছেন, আময়া সেই মতের অনুসরণ করিলাম এবং সেই অংশটুকু
উদ্ব্ করিলাম।

"হরিবংশ, বিষ্ণুরাণ এবং ভাগেবতে মগধের বাইদ্রথ বংশীর রাজগণের উল্লেখ আছে। বার্ত্রথ বংশীরগণের মগধ-শাসন ঐতিহাসিক বৃত্তান্ত বলিয়া পরিগৃহীত ক্রীছে। বার্ত্রথ বংশীরগণ ১২৮০ পূর্ব্ব গৃষ্টান্দ হইতে ৬০৭ পূর্ব গৃষ্টান্দ পর্যান্ত

ব্রাহ্মণ, মহুদাহিতা, রামায়ণ মহাভারত, হরিবংশ, শ্রীমন্তাগবত, দেবী-ভাগবত, विक्थूपूत्राव, बक्कद्भिवख पूत्राव, क्रक्क पूत्राव, (क) भोखु थख, (थ) রেবাথও, (গ) প্রভাস থও, ব্রহ্মাও পুরাণ, বামন পুরাণ, মার্কভেয় পুরাণ, মংস্ত পুরাণ, দৌর পুরাণ, ভবিষ্য পুরাণ, বৃহৎদংহিতা, কাশার রাজতরঙ্গিণী, অশোক-অবদান, রাজবলি কথা, মহাবংশ, জৈন কল্লস্ত্র, কথাসরিংসাগর, তারানাথের গ্রন্থ, সিওকী, দশকুমার চরিত, থোগিণী তন্ত্র, ও দান-সাগর। এতদ্বির আরও অনেক পুস্তকে পৌণ্ডের উল্লেখ আছে।

মগধে শাসনদণ্ড চালনা করেন। (Dutt's Ancient India)। এই বংশের কুফদ্বেষী জরাসন্ধ সমধিক প্রসিদ্ধ। ই হার পুত্র মহাদেবের রাজত কালে কুরু-পাওব-যুদ্ধ সংঘটিত হয়। জরাদক্ষ ১২৮০-১২৫৯ পূর্নবি খৃষ্টাব্দে রাজত্ব করেন বলিয়া শ্রীযুক্ত রমেশ চল্র দত্ত মহাশয় তাঁহার প্রাচীন ভারত নামক ইংরাজী ইতিহাস গ্রন্থে নির্দেশ করিয়াছেন।

काक्रवः नीय कर्ण क्रवान क्रिय नमका नवडी विनया महास्थात्र ७ इतिवः न भार्ष অবগত হওয়া বায়। কর্ণ অঙ্গ হইতে বেড়েশ পুরুষ অধন্তন। প্রতি পুরুষে ২০ বৎসর গণনা করিলে, অঙ্গ ও কর্ণের মধ্যবন্তী ১৫ জন রাজা ৩০০ বংসর অঙ্গদেশ শাসন করিয়াছিলেন। পুঞ্ অঙ্গের সহোদর ভ্রাতা ও সমকালবর্তী। এই হিসাবে পুঞ্ জরানক্ষের ৩০০ বংসর পুর্নের, বলি ১২৮০ +৩০০ = ১৫৮০ পূর্ব্যু খৃষ্টাব্দে, বর্ত্তমান ছিলেন, এরাশ অমুমান করা যাইতে পারে। অতএব, বলি ও তৎপুত্র পুত্র যে বৈদিকযুগের ब्राक्षा ও दोक्कक्षांत हैश हित्र वेश्वहानिक निकां छ वित्रा वेश्व कत्रा याहे छ भारत । দীর্ঘতমা ঋষির মহাভারতীয় উপাথ্যধনেও বৈদিক্যুগের সমাজ-চিত্রের রেখাপাত পরিদৃষ্ট . হয়। এবং ইহা হইকে বলিও পুণ্ডের বৈদিক যুগে আবির্ভাবের বিষয় বিশাস করিবার বলবত্তর কারণ পাওয়া যাইছেছে।

খথেদের প্রথম মণ্ডলের কয়েকটা স্ভেরে রচয়িতা এক দীর্ঘতমাঃ শ্ববি। খথেদীয় দীর্ঘতমাঃ আপনার পিতার নাম উত্থা এবং মাতার নাম মমতা বলিয়া উল্লেখ कत्रियाद्यन। (क्षर्थन, )म मखन, ) ८৮ প্ত, ८।७ सक्) स्ड्याः स्थापत्र উত्পाই (व महाखात्राजत উত्था, এবং খংখনীর উত্থাপুত্র দীর্ঘিনাই বে মহাভাবতীর উত্থাপুত্র দীর্ঘতমা, তদ্বিয়ে সন্দেহ করিবার কোন কারণ দেখা ব্রায় দা। প্রসীর সাহিত্য-সেব্স্ উমেশ চন্তা यहेवानि महाभन्न यञ्च भन्ना ७ ग्रान्ता धर्गानी जननयन कतिन्ना धर्मान

পুরাণাদিতে পুঞ্, ৮পাঞ্ বর্দ্ধণ, পৌঞ্ বর্দ্ধন এই কয়েক নামেরই
উল্লেখ দেখা যায়। বিশ্ব কর্দ্ধক স্থাপিত বিদিয়াই
পোঞ্-মাহাস্মা।
বোধ হয় পুঞ্ কে পৌ্ঞু বলে। পুঞ্ ও পৌঞ্
দেশ উল্লিখিত স্থানে দেশবাচক ও পুঞ্ বর্দ্ধণ ও পৌশু বর্দ্ধণ নগরবাচক। কি বৈদিক যুগে, কি পৌরাণিক যুগে, কি ঐতিহাসিক যুগে
ইহা একটা মহাতীর্থ\* ও বিশেষ সমৃদ্ধিশালী ছিল। •করতোয়া

দীর্ঘতমাকে ১৬৯০ পূর্বে খৃষ্টাব্দের ঋষি বলিরা অমুমান করিয়াছেন। (সাহিত্য, ৮ম বর্ষ, ৭৯ পৃঃ।) ইতিপুর্বে হরিবংশ অবলম্বন করিয়া পুণ্ডের আবির্ভাব কাল ১৫৮০ পুঃ খৃঃ অমুমান করিয়াছি। দীর্ঘতমা ইহার ৩০ বংসর পূর্বে বর্জমান ছিলেন বলিরা অমুমান করিলে, বটব্যাল মহাশরের সময়ের সহিত আমার নির্ণীত সময়ের ৮০ বংসরের পূর্যবিধ্য ঘটে। বটব্যাল মহাশর প্রতি পুরুষে ৩০ বংসর ধরিয়া গণনা করিয়াছেন; আমি ২০ বংসর ধরিয়াছি। আমি প্রতি পুরুষে ৩০ বংসর ধরিয়া গণনা করিয়াছেন; আমি ২০ বংসর ধরিয়াছি। আমি প্রতি পুরুষে ৩০ বংসর ধরিয়া শালা করিয়াছেন গোমি হত বংসর ধরিয়াছি। আমি প্রতি পুরুষে ৩০ বংসর ধরিলে ঐ পার্থক্য আরও কমিয়া যায়। কিন্তু অতি প্রাচীন কালের গণনার এই সামাল্য ৮০ বংসরের পার্থকা আদে ধর্ত্তব্য নহে। হত্রাং দেখা ঘাইতেছে যে, বলিপুত্র পুতুর বৈদিকযুগে, অর্থাৎ ১৫৮৫ পূর্বে খৃষ্টাব্দে বর্ত্তমান ছিলেন। এবং স্থুলতঃ খৃষ্টের ১৬০০ বংসর পুর্বের, অথবা অদ্য হইতে ৩৫০০ বংসর পূর্বের, পুতুরাঞ্জা স্থাপিত হয়।

\* পोखु काण मिनाशी प महापूर्ण ऋविक्छ । করতে। সরিশ্নীরং শরীরাদ্যন্ত পাবনং। ভক্তিমৃত্তি ফলার্থায় যে না কারী ছিজার্পণং॥ অদ্ভূত। কারিতা স্ষ্টি: কনকস্ত দিনতরং। ऋम भाविमद्रार्श्वार्था जूञिः मःक्रूज विक्रिका ॥ বেদী মুধ্যোত্তরে পার্ষে দেবী কামাঞ্রী খিতা। ভদক্ষিণে২ণি<sup>\*</sup>ভা দেব<sup>ট</sup> কোটীৰরীতি বিশ্রুত: গ ৰৈখতে সিঙ্গকোট্যস্থ বসন্তি ভৃগুণাৰ্পিত।। याक्रप्प विषयूह्मधी উख्य जू जिएकणतः ॥ তৎকৃত্তে হৃতিখৌ স্বাছ। নরঃ পাপাৎ প্রমূচ্যতে। ভূতিকেশর দেবজ দীক্ষিণে স্ঠ্যমণ্ডপং॥ (यमी मर्थार्थि जाय्यः मः स्वाम् वर्षे उ नृगाः। গোৰিন্দ মন্তপাৎ পূৰ্কংকুতং বিকৃবিনির্মিতং॥ স্বন্দ সন্দেপ বারব্যে সভা রামস্তবাদ ভূতা। সপাদ লক্ষং বিপ্রাণাং বত্তান্তেহদভূত কর্মণাং॥ প্রভাষা ওপদো দেবী মুনীপ্রস্ত মহার্মঃ। ভৎসভা বায়ুকোণেচ গর্ডমীশর নির্শ্বিতং 🗈

মাহাত্মো ইহা গুপ্ত বারাণ্দা বলিয়া লিখিত হইয়াছে। পরশুরাম (ভাগব) ভগবান শ্রহরের নিকট পৌগুক্ষেত্র-মাহাত্মা শ্রবণ করিয়া ঋষিগণের নিকট প্রকাশ করিয়াছিলেন।

এই নগরের আয়তন চতুর্দিকে সম পরিমাণে পঞ্জোশ।†

আঁদ্যংভূবে। ভবন লক্ষ সপাদ বিপ্রৈ:ক্ষলাদি বিঞ্ বলভদ্র শিবাদি দেবৈর অধ্যাসিতং করজলমু বিধৃত পানং ত্ত্রী পোগু বর্জনপুরং শিরসান্মাসি॥ করজা পশ্চিমে ভাগে সদা বহতি জাহুবী। পুর্বভাগেতু করজাপাদোনা জাহুবী জলা॥ করতোয়া পশ্চিমে তীরে লোহিনী যত্রী সৃষ্টিকা। মুক্তিক্ষেত্রং সমাখ্যাতং মহাপাতক নাশনং॥ করতোয়া নদী প্রাপ্য তিরাত্রো পোষিতো নরঃ। অখনেধ মবাপ্লোতি শক্রলোকঞ্চ গচ্ছতি। অত্রব জ্ঞান মাসাদ্য হরিসামুজ্য মাপ্লুম্বিং॥

সন্প্রাণান্তর্গত উত্তরণে ভূপতে মৃতশোণকসংবাদে প্রস্তরাম্বিরচিত করতোরা-মাহাত্ম্যের যে একথানি অমুবাদ বগুড়া মালতীনগর নিবাসী পণ্ডিত শীযুক্ত রাজচল্র স্থায়পঞ্চানন মহাশর করিয়াছেন, তন্মধ্য হইতে উক্ত লোকগুলি গৃহীত হইল। অত্র প্রবন্ধে করতোরা বা পেণ্ডি মাহাত্ম্য জ্ঞাপক পে কোন লোক বা অমুবাদ দেওয়া গেল ও যাইবে তাহা ঐ পণ্ডিত মহাশয়ের কৃত অমুবাদ করতোরা-মাহাত্ম্য হইতে গৃহীত ব্বিতে হইবে।

অনেকে পৌতু থগুকে আধুনিক গ্রন্থ বলিতে চান। কিন্তু এই পৌতুপত হইতে বাচম্পতি মিশ্র, শূলপাণি, সার্তপ্রধান রঘুনন্দন প্রভৃতি মহামহা পণ্ডিতপণ প্রমাণ সংগ্রহ করিয়াছেন। রাজা বলাল সেনও-তাহার দানসাগরে পৌতুপতের উল্লেখ ক্রিয়াছেন। পৌতুপত যে অপ্রামাণিক একথা কেহই বলেন নাই।

কথা এই, পুরাণে যদিও কোন অংশ প্রক্রি দেখা যার, তাহা কেবল কাহারও মাহাত্মা বাড়াইবার জক্ত ; স্থান সম্বন্ধে গোল্যোগ দেখা যার না।

> † পঞ্চ ক্রোশ মিদং ক্ষেত্র সমস্তাৎ পরিকীর্তিতং, তদস্তর্গত মেতন্ত, ক্রোশ মাত্রং- মহেশরী। অতিগুহা তমং ক্ষেত্র ধ্রোন্তে ভার্গব মুনিঃ॥

্ করভোরা-মাহান্স।)

শোশু বংশীয় নরপতিগণের মধ্যে এক বাহ্মদি ভিন্ন আর কেইই
থ্যাতিলাভ করিতে পারেন নাই। মহাভীরত,
শোশু ক বাহ্মদেব ও
হরিবংশ, শ্রীমন্তাগবত্ ও বিষ্ণুপুরাণে একমাত্র
পণিশু ক বাহ্মদেবের বিবরণ প্রাপ্ত হওয়া যায়।
ইনি জরাসন্ধের সমসাময়িক, স্বতরাং শ্রীযুক্ত রমেশচক্র দৃত্ত মহাশন্ধের
মতে ২২৮০ পূর্ব্ব খৃষ্টান্দে তিনি বিভাষান ছিলেন।

পুণ্ডু, দেশ পুণ্ডু, হইতে বাস্থদেৰ পৰ্য্যস্ত ঐ বংশীয়দিগের দ্বারাই শাসিত হইতেছিল।

এই বাস্থদেব অত্যস্ত প্রবল পরাক্রাস্ত হইয়া উঠেন ও বিখ্যাত হন।
পৌণ্ডুক পৌণ্ডুরাজা লাভ করিয়া পৌণ্ডুক বাস্থদেব নামে বিখ্যাত
হন।\*

বিদর্ভ-দমরে পেত্রিক বাস্থদেবের পুত্র স্থদেব এক অক্ষোহিনী সৈলসহ বিগুল বিক্রমে যুদ্ধ করিয়াছিলেন এবং দারকাবরোধকালে

<sup>\*</sup> বাস্থান মহাবল বলিয়া আদিপর্কের ৮৭।৮৮ অধ্যায়ে বর্ণিত হইয়াছেন।
মগধাধিপতি জরাসন্ধার বেলু ছিলেন। হরিবংশ মতে ইহার পিতার নাম বহুদেব।
ক্যুদেবের দুই পত্নী ছিল, স্তন্ম ও নারাটী (মংশু পুরাণমতে রথরাজী)। সৃত্ধুর
পর্তে পৌত্ত ক ও নারাচীর গর্ভে কপিল জন্ম পরিগ্রহ করেন। কপিল যোগধর্ম
অবলয়ন করেন। মহার্ভারতে লিখিত আছে রাজস্মযজ্ঞকালে স্থাম ইহাকে পরাজয়
করিয়াছিলেন। হরিবংশ ও বিষ্ণুপুরাণে লিখিত হাচে, একদিন পৌত্ত কের সভার
নাম আবণ করিয়া অভিশর কুল্ল ইইয়া বলিলেন 'আমি ভিন্ন আর কে বাস্থদেব আছে ?
আমি জীবিত ধান্ধিতে ক্লা'র আম্পর্ক্তা আমার নাম গ্রহণ করে। আমি ভাহাকে
সমৃতিত শান্তি প্রদান করিব।' পৌত্ত ক, একলবা প্রভৃতি মহাবীয়কে সঙ্গে লইয়া
য়ারকা আক্রমণ করেন। তাহাদের আক্রমণে দারকাবাসী নগর্বার ক্লক করিয়া ভরবিহলে চিত্তে অবস্থান করিব।' পৌত্ত ক, একলবা প্রভৃতি মহাবীয়কে সঙ্গে কইয়া
মারকা আক্রমণ করেন। তাহাদের আক্রমণে দারকাবাসী নগর্বার ক্লক করিয়া ভরবিহলে চিত্তে অবস্থান করিয়াছিল। এই সংগ্রামে অনেক বাদ্ব বীয় ও বঁলীয় বীয়
প্রাণ বিস্ত্তেন করিয়াছিল। অবস্থেষ ক্লের কৌশলে পৌত্র ক বাম্বনে নিছত চন।
(হরিবংশ, বিষ্ণুপ্রাণ, ভাগবত ও ব্দ্ধপ্রাণে ২০ অধ্যায়ে বিস্তৃত বিবয়ণ প্রইবা।)
[বিষ্কোন, পৌত্র ক বাম্বনের প্রভাব।]

স্থানে প্রতি যান নাই। সম্বতঃ পৌশুকের হারকা যুক্তে পতত্ত্বের পর স্থানের পৌশুদেশের রাজিসিংহাসনে আসীন হন।\*

স্থাবের পর হইতে আদিশ্রের সময় পর্যান্ত বোধ হয় পুণ্রংশীয় রাজগণ বার্ট্ট পোণ্ডাদেশ শাসিত হইতেছিল। কিন্তু তাঁহাদের বিষয় কিছু জানা যায় না।

প্রীষ্টীয় সপ্তম শতাকীতে প্রসিদ্ধ চীন পরিব্রাজক হিয়েছ সিয়াল

এ প্রদেশে আসিয়া পৌণ্ড দেশের রাজধানী
হিয়েছসিয়ালের
কথিত পৌণ্ডবর্দ্ধন।
পৌণ্ডবর্দ্ধন দেখিয়া গিয়াছেন। তিনি যখন
পৌণ্ডবর্দ্ধন রাজধানীতে আগমন্ত করেন, সে
সময় এই নগরের আয়তন ২॥০ কোশ বিস্তৃত ছিল। এবং পৌণ্ডরাজ্য
৮০০ মাইল বিস্তারিত দেখিয়াছিলেন। সে সময় এখানে তড়াগবাটকাদি সমাছাদিত ও বহুসংখ্যক লোকের ঘনবসতি ছিল। আয়
এখানে হীন্যান ও মহাযান মতাবলম্বী বৌদ্ধগদের প্রায় ২০টী সম্বারাম,
শৃত শত হিল্প দেবালয়, বহুতর দার্শনিকের সমাবেশ এবং বহুসংখ্যক
দিগম্বর নির্ত্ত (জৈন) দিগের বাস দেখিয়াছিলেন। কথাসরিৎসাগর
পাঠে কতকটা বুঝা বায়, পৌণ্ড নগরী গলার কিছুদ্রে অবস্থিত ছিল।
চানপরিব্রাজক হিয়েছসিয়াল এই নগরে আসিয়া অনেক নৌকার্যালয়
দেখিয়াছিলেন।

হিন্দু, বৌদ্ধ ও জৈন এই তিন সম্প্রদায়ের নিকটই পুঞুবৰ্দ্ধন এক সময়ে পবিত্র পুণ্যস্থান বুলিয়া পাণ্য ছিল। স্কন্দপুরাণীয় প্রভাস থণ্ডে লিখিত আছে এখানে মন্দার নামক শিবসূর্ত্তি বিভ্যমান। দেবী ভাগণতের মধ্যে সতীর থণ্ডিত দেহাংশ হইতে যে ১০৮ পীঠ উৎপন্ন

<sup>\*</sup> माहिला, ১०म वर्र, ५म मरभा, ८०२ भृष्ठी।

হয়, তয়ধ্যে পুজুবিদ্নাল একটা। 'এখানো পার্টলা নামে দেবীমৃতি অবস্থান করেন। (দেঃ ভাঃ ৭০০০) গ্রাদকে দলপুরাণীয় রেঁবা-থণ্ডে (২৯ অঃ) পুজুবর্দ্ধণ যজ্ঞকারী চক্রবর্তী রাজগণের প্রাচীন নিবাস বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছে। খুষ্টায় সপ্তম শতাকে বে সময় চীনপরি-রাজক হিয়েছসিয়াল এখানে আগমন করেন, তখন পুর্বে ভারতের অনেক বিখ্যাত বৌদ্ধাচার্য্য এখানে অবস্থান কারতেন। পুজুবর্দ্ধন লগরের প্রায় আড়াই ক্রোশ পশ্চিমে গগণস্পর্শী চূড়া-বিলম্বিত বা শিভা সন্ধারামের নিকট তিনি অশোক রাজ নির্দ্মিত স্তুপ ও স্থরহর্ণ বোধিসন্ধ মূর্ত্তি সমন্বিত একটা বৌদ্ধ বিহার দর্শন করিয়াছিলেন। এই চীন পরিবাল্ক লিথিয়াছেন, যেথানে অশোক রাজস্তুপ নির্দ্মাণ করিয়াছেন, তথায় পূর্বেকালে তথাগত (বৃদ্ধ) তিন মাস কাল ধর্ম্মোপ-দেশ প্রদান করিয়াছিলেন।

চাতুর্মাশুকালে এথানি চারিদিকে উজ্জ্বল সালোক দৃষ্টিগোচর হইয়া থাকে। পূর্বে লিখিয়াছি, চীনপারপ্রাজক্ এখনে দক্ষাপেক্ষা বছ সংখ্যক নিগ্রন্থ (জৈন) দর্শন করিয়াছিলেন। বাস্তবিক জৈনদিগ্রেক কল্পত্র নামক ধর্মগ্রন্থে, 'পুগুর্কনীয়' নামে একটা জৈন শাখার উল্লেখ পাওঁয়া যায়। খুও জন্মের প্রায় ত্ই শত বর্ষ পূর্বে এই শাখার উৎপত্তি।

এক সময়ে ভারতের অপর প্রাস্তে পুঞ্ বর্ধনবাদী ব্রান্ধণের সমাদর বিস্তৃত হইয়ছিল। রাষ্ট্রকুলয়াজ নিত্যবর্ষ ৮৫৫ শকে কেশবদীক্ষিত নামে এক পুঞ্ বর্ধনবাদী কৌশিক গোত্রীয় ব্রাক্ষণতে স্বরাজ্যে (মান্ত-থেটে) আনাইয়া যে ভূমি দান করেন, তাহা হইতেই প্রতিপন্ন হইতেছে।

( क्षिरकार, ১১শ ভাগ, পুণু वर्षन প্রস্তাব।)

बाजन जाथवा त्राख्यान् भिःश् नामक (भोजुकाजीय करिनक अवन

পরক্রে। । হইয়াছে। ।

কাশাররাজ জয়াদিতা । জয়াপীড় আসিয়াও এখানে প্রচুর বিভূতি पिश्रिमाছिलन। अमाशीए ७७१ मक । १८৫ थुः জন্মাপীড়ের পৌণ্ড - জঃ) হইতে ৬৯৮০শক (৭৭৬ থৃঃ অঃ) পর্য্যস্ত বর্দ্ধন দর্শন। • कामोदा त्राक्ष कदान। हेशत मधा कान ममम जिनि (भो अवर्षन नगद जामियाছिलन। जिन गम। উত্তীर्ग হইয়া পৌণ্ডবর্দন রাজ্যে প্রবেশ করেন; তিনি গঙ্গাতীরে দৈক্তগণকে विनाय निया ছग्रादिर्भ खर्ख जादि नगद्र अदिभ क्रिया भूत्रवानिग्रिश ঐশ্বর্যা ও রাজধানীর সমৃদ্ধি দর্শনে অতিশয় প্রীত হইলেন ী জয়াপীড় এথানে কার্ত্তিকের মন্দিরে কমলা নামী দেব নর্ত্তকীর নৃত্য দেখিয়া मुक्ष रुन। कमला जग्निशिएत जनामान जनमाधुत्री पर्नत्न छै। राक কোন दां जवः नीय जाविया निक्रशृष्ट् लहेया जामन। दुनहे नगर्य পৌ अ वर्षान मिश्ट्य উৎপाक रय। जया भी फ़ श्रीय जूजवन-প্रভাবে मिश्हाक विनाम करतन। मिश्हाक मात्रिक निया घटनाक्राम তাঁহার নামান্ধিত কেয়ুর পড়িয়া যায়। কোন বাঁজি তাহা পাইয়া রাজা জয়ন্তের নিকট উপস্থিত করে: তাহাতে সকলে জানিতে পারিল य काम्मोत्रপिक जग्नाभीफ़ त्भोधु वर्कत्व जामिग्नाह्व। मकत्वर नाम শুনিয়া কাঁপিতে লাগিল। ব্লাজা জয়ন্ত কহিলেন, "শুনিয়াছি কাশ্মার-রাজ কল্লট নাম গ্রহণ কুরিয়া ছম্মবেশে দেশভ্রমণ করিতেছেন। অতএব আশঙ্কার কোন কারণ নাই। • তাঁহাকে অনুসন্ধান কর।" ভিনি চর-ছারা অবগত হইলেন যে, জয়াপীড় কমলার গৃহে অবস্থান কারতেছেন। অতঃপর রাজা অমাত্য ও রাজ্পরিবারবর্গকে সঙ্গে লইয়া জয়াপীড়কে

<sup>\*</sup> नवाष्ट्रांत्र ठ, विश्म ष७, ०ंद्र मः था।, ३५८ शृः।

অভার্থনা করিতে আদিলেন এবং ত্রহুযত্নে তাঁছাকে রাজভবনে লইয়া গিয়া তাঁহার একমাত্র কন্তা কল্যাণ দেনীকে সম্প্রদার করিলেন। এই সময় গৌড়দেশ কেবল জয়ন্তের অধিকারভুক্ত ছিল না। জয়াপীড় শ্রীচজন গৌড়রাজকে যুদ্ধে পরাজয় করিয়া শশুর জয়ন্তকে রাজ-ठक्य है। क्रिक्न ।

कांभीत्रताक क्यां पिठा यथन (পो खु वर्कन नगरतः वाहरमन, एथन জয়স্ত নামক একজন রাজা পৌগুবর্দ্ধন নগরের রাজা ছিলেন। व्यत्निक अग्रस्टक्टे वािमृत वित्रां आत्नि। अतार्कक लालात मर् আদিশুরের অপর নাম বীরদেন, ইনি সেনরাজগণের আদিপুরুষ। আবার কাহারও মতে কনোজাধিপতি বংসরাজ গৌড়ের বৌদ্ধর্মাবলম্বী নরপতিকে উচ্ছেদ করিয়া তৎপরিবর্ত্তে তাঁহার দেনাপতি জনৈক श्निप्त शीएवर जिश्हामरन जानन कतियाहित्वन। इनिहे जानिम्त ।

আদিশুরের জাতি লইয়া অনেক মতভেদ দৃষ্ট হয়। আদিশুর (भेष्युक वः नीयं नय (छ। १

कल्हरलद्र ताक्क त्रिनी भार्त्र काना यात्र (य, शृष्टीत्र क्षेट्रेग भठारक গৌড় নামক ভূভাগের রাজধানীর নাম ছিল পৌণ্ডুবর্দ্ধন।

এ দেশের প্রাচীন কুলাচার্যাদিগের মতে রাজা আদিশূর বৌদ্ধগণকে পরাস্ত করিয়া সর্বপ্রথম রাজচ্জবর্তী হন। अवश्रुष्ठ आपिशृत । রাজতরজিনীর মতে (খুষ্টায় অন্তম শতাকীতে ं ७७१ मेक इहेटल ५२৮ मक माधा ) े नमस्त्र जग्न शिएत ताला এवः िकिनि मर्सा প्रथम ममस्य शोएएंत व्यथीयत रहें महित्यन। यपि वाक्य-বংশাবলী ও রাজতরঙ্গিনীর বিবরণ প্রকৃত হয়, তাহা হইলে আদিশুর ও জয়ন্তরাজকে অভিন্ন ব্যক্তি বলা যাইতে পারে। বোধ হয় জনন্তরাজ मर्क् अथम नमछ भी एप्टिन्द व्यक्षीयत इहेगा 'वािम्त्र' উপाधि शहन

এখনও পূর্ববলৈর বছ লোকের বিশাস আদিশূর বিক্রমপুরের
আদিশ্রের রাজআদিশ্রের রাজআদিশ্রের রাজআদিশ্রের রাজআদিশ্রের রাজআদিশ্রের রাজআদিশ্রের রাজআদিশ্র রাজআদিশ্র রাজআদিশ্র রাজআদিশ্র রাজআদিশ্র রাজআদিশ্র রাজকরিয়াছেন কি না, তাহারই বিশ্বাসজনক প্রমাণাভাব। আদিশূর
যে সময়ে গৌড়ের মধীশ্বর তৎকালে পৌণ্ডুবর্জন নগরে রাজধানী ছিল।
আদিশ্রের রাজধানীতে যদি পঞ্চ ব্রাহ্মণ পদার্পণ করিয়া থাকেন, তাহা
হইলে পৌণ্ডুবর্জন নগরেই তাঁহাদের শুভাগমন ইইয়াছিল বলিতে
হইবে।

( বঙ্গের জাভীয় ইতিহাস, ১০৬ পৃষ্ঠা।)

আদিশ্র বা জয়স্তের পর তংপুল ভৃশ্ব পৌণ্ড্রর্কণের রাজা

হইয়াছিলেন ।\* ৭৯০ ইষ্টান্দের পরে মগধের
ভূশ্র।

হাজা ধর্মপালদেব পৌণ্ড্রর্ক্রণ অধিকার করিলে,
ভূশ্র রাচ্দেশে নৃতন পুণ্ডু নগর স্থাপন করিয়া রাজত্ব করিতে আরম্ভ
করেন। এই হইতেই পৌণ্ড্রর্ক্রণের স্বাধীনতা-ক্র্যা অন্তমিত হয়।

ভৃশ্রের পর পৌগুরর্জণ ধর্মপালের অধিকার ভুক্ত হয়। ধর্মপাল
লাজ বৌদ্ধ হইলেও তিনি ব্রাহ্মণগণের যথেষ্ট
পাল বংশের অধিসমাদর করিতেন। বারেক্ত কুলপঞ্জীতে কিথিত
আছে যে, তিনি ভটনারায়ণের পুক্র আদি গাঁই ও
বীকে গঙ্গাতীরে বাুমদার নামক গ্রাম দান করেন। ধর্মপালের ভাষ্ম

<sup>\* &</sup>quot;ভূশুর নামক পুত্র আদি নৃপতির,

মৃণি পঞ্কের যভে জন্ম বারে ভ্রি।"

<sup>—</sup>রামজৰ কৃত বৈদ্যকুল পঞ্জিকা।

<sup>্</sup>থ। "ভূশ্রেপ ক রাজ্ঞাপি জীজয়্ত হভেন ক"—এাক্ষণভাঙ্গা নিবাসী বংশী বিশ্যা-রত্ন ঘটকের সংগৃহীত কুল পঞ্জিকা।

শাদন হইতেও জানা যার্গ যে, মহাসামস্তাধিপতি নারায়ণ বর্মার অম্ব-রোধে পোগুরদ্ধণ ভুক্তির অম্বর্গত চারিথানি গ্রাম নারায়ণ-পূজক লাট ব্রাহ্মণদিগকে প্রদান করিয়াছিলেন।

এই প্রদেশ বছকাল পালরাজগণের অধিকারভূক্ত ছিল।
১১৬১ খৃষ্টাব্দে গোবিন্দ পাল হইতেই পাল-গৌরব-রবি অস্তমিত হয়।
এবং পুঞ্জু নাম তিরোহিত হইয়া এ প্রদেশের বরেন্দ্র নাম-করণ হয়।

১১৬১ খৃষ্টাব্দে রাজা বল্লাল সেন গোবিন্দ পালকে পরাজয়
করিয়া মিথিলা হইতে সমস্ত উত্তর গৌড় বা
সেন বংশের অধিবরেক্স ভূমি আপনার অধিকার ভূক্ত করিয়া- ছিলেন। রাজা বল্লাল সেন কর্তৃক এ প্রদেশ
বরেক্স প্রদেশ বলিয়া অভিহিত হয়। এবং পৌণ্ডুবর্দ্ধণে কিছুকাল
রাজত্ব করার পর গৌড় নগরে রাজধানী পরিবর্ত্তিত করেন। বরেক্সভূমি অধিকারের পর বল্লাল সেন বারেক্স ব্রাহ্মণগণের মধ্যে কৌলীল্য
মর্যাদে বংস্থাপনৈ সমর্থ হইয়াছিলেন।

সেন রাজাদের সময় হইতেই পৌগুরর্দ্ধণের অবনতির স্ত্রপাত হয়। হায়! সেই গৌরবস্পর্শা, বিদ্বদজন পরিপূণ, তড়াগবটিকাদি-সমাচ্ছাদিত, বহুগোকাকীর্ণ পৌগুর্দ্ধণ নগরী এক্ষণে কোথায় ?

ওয়েই মেকট, শ্বিথ্ প্রভৃতির মতে গোবিলগঞ্জের নিকটবর্তী বর্দ্ধন কুটীই প্রাচীন পৌগুরদ্ধন। কেহ বলেন রঙ্গপুরের মধ্যে পৌগুরদ্ধন অবস্থিত ছিল। আবার মহাত্মা বঙ্গিমচক্র ও বিশ্বকোষকার প্রভৃতির মতে মালদহের অন্তর্গত পাড়্র; বা পঞ্রো নামক্র স্থানই পৌগুরদ্ধন নগর।

ইহাদের কাহারও মত অত্রাস্ত নহে। কারণ নি:সন্দেহ এবং বৃক্তিমূলক প্রমাণ কেহই দিতে পারেন নাই। কেবল অমুমানই ইহাদের প্রধান ভিক্তি। যে যে প্রমাণবলে আমরা প্রাচীন छा, षाद्यशासन, ५७५०] । (भोख वर्षन।

পৌগুর্কণের বর্ত্যান আহান প্রতিপন্ন ক্রিব, তাহা পরে লিখিত হইতৈছে।

পৌণ্ড্রপণ্ডান্তর্গত করতোয়া মাহাত্ম্যের নিম্নলিথিত শ্লোক হইতে জানা যায় যে, পৌণ্ডবর্দ্ধণ করতোয়া করতোয়া নদা। ভীরবর্ত্তী।

> "করতোমে সদানীরে সরিৎ শ্রেষ্ঠে স্থবিশ্রতে। পৌণ্ডাণ্ প্লাবয়সে নিত্যং পাপং হর করোদ্ভবে॥"

অনেকেই জানেন, গোবিন্দগঞ্জের নিকট দিয়া মহাস্থান, বগুড়া ও সেরপুর স্পর্শ করিয়া ক্ষীণপ্রাণা করতোয়া একণে হলহুলি বা হিঁয়ালী নদীতে মিশিয়াছে। কথিত অংশে করতোয়া সম্বন্ধে কোন মতভেদ নাই; তবে উর্দ্ধ ও শেষ গতি লইয়া মতভেদ আছে বটে, সে বিষয় প্রথমান্তরে বলিবার ইচ্ছা রহিল।

পৌগুবর্জণ ও করতোয়া উভয়ের গৌরবে উভয়ে গৌরবায়িত।
কালের কুটাল গতিতে একণে একের অবনতিক্তে অত্যে যেন গা ঢাকা
দিয়াছে। পৌগুবর্জণের ছর্দশা দেখিয়া ছঃখিতহৃদয়ে করতোয়া
কুদ্রাকার ধারণপূর্বক আত্মগোপনের চেন্তায় আছে, অথবা পৌগুবর্জণই করতোয়ার ছর্দশা দেখিয়া মর্মাইতচিত্তে ঘোর বনে নির্বাসিত
হইয়াছে,।

করতোয়া নদী একণে কুদ্রাকার হইদেও বহু প্রাচীন মাহাত্মাসম্পন্না ও বনামধ্যাতা। "বেদ মন্তর্গত শতপথ-ব্রাহ্মণ পাঠে অবগত হওয়া ষার যে, অভি প্রাচীন কালে (বৈদিকযুগে) যাগযজ্ঞশীল কৃষিজীবী আর্য্যগণই সদানীরা উত্তীর্ণ হন নাই। অমর্যকোষ ও হেমচন্দ্রাভিধানেও কর-তোয়ার নাম সদানীরা বলিয়া উক্ত 'হইরীছে। পৌরাণিক কালে এই নদী মহালোভস্বতীরূপে প্রবাহিত হইত।

প্রতীরক্তী বঙ্গু হই ঠ, তিন জোশ উত্তরে

হিত 'মহাস্থান' নামন্ সানস্থেই আন্ধারা প্রাচীন

মহাস্থানই পৌগুপৌগু-বর্জণ বলিতে চ্ই। পূর্ব্বোক্ত করতোয়া

মাহাত্মোর নিম্নলিখিত শ্লোক হইতেই তাহা প্রতিপ্র হুইতেই হুইতেই তাহা প্রতিপ্র হুইতেই হুইতেই তাহা প্রতিপ্র হুইতেই হুইতে

হর গৌরীকে বলিতেছেন:-

শিক্ষ ক্রোশ মিদং ক্ষেত্র সমস্তাৎ পরিকীর্ত্তিতং তদস্তর্গত মেতন্ত্র ক্রোশ মাত্রং মহেশ্বরী অতিগুহু তমং ক্ষেত্র যত্রান্তে ভার্গব মুনি; পশোজ্ঞানং কথমতি গুহুন্তদ গৃহে তাম চূড়ো, দৈখী হৈমী শটিত স্থরভির্যন্তির্দ্ধি শিলান্থি:। থেষুচ্চত্রেং ন ফুলতি ফাল দিশ্বরো জীবলোকঃ কৃপ্মেদ্বীপঃ কনক পতনং স্থানতঃ কাম্যকুণ্ডে, ভোগো যজ্জো ভ্রমণ নটনং তত্রবাকা হিবেদঃ। ইখং রামো রচয়তি পদং লক্ষণান্ত্র বিংশ স্তশ্বাৎ সকল জগতাং শ্রীমহাস্থান মেতৎ॥

এই প্রকার পরশুরাম উনবিংশু লক্ষণ রচনা করিয়াছেন, সেইজ্রু পৌতুর্বর্মণ, মহাস্থান নামে খ্যাত হইয়াছে। '

এই গেল পুরাণের মত।

চৈনিক পরিপ্রাজক হিয়েছিশিয়াজের মতে এই নগর রাজমহলের নিকটম গলা নদী হইতে ৬০০ লী বা ১০০ মাইল পূর্বে অবস্থিত। কানিংহাম বলেন\* 'এই বিবরণ রাজমহল হইতে মহাস্থানের দূর্বের

<sup>\*</sup> Cunningham's Archæological of India, Vol. XV.

সহিত ঠিক মিলিয়া যায়। বারণ মহাস্থান রাজ্মহণ হুইতে ১০০ মাইল
পূর্বে অবস্থিত।' আর হিছেসিয়াল বলিতেছেন 'পো দি পো' পৌ
কর্মণের ৪ মাইল পশ্চিমে; আবার মহাস্থান হুইতে ভাস্কবিহার ১ মাইল
পশ্চিমে।' স্ব্রাং উভয় বিবরণের সহিত বিবরণাক্ষায়ী ও স্থানাক্ষায়ী
বেশ মিলিয়া যায়।

ভাস্থবিহার প্রৌণ্ড্রবর্দ্ধণের অন্তর্গত একটা বৌদ্ধ সন্ধারাম। শনাগর
নদীর তীরে বিহার গ্রামে এখনও ইহার ধ্বংসস্ত্রপ দেখা যায়। চীনপরিব্রাজক হিমেন্থসিয়ান্স এখানে সাত শত মহাযান সম্প্রদারী
বৌদ্ধযতির শাস্ত্রাধ্যয়ন বিষয় উল্লেখ করিয়া গিয়াছেন।

পুরাণবর্ণিত পৌজুবর্দ্ধণের অবস্থিতির সহিতি চনি-পরিব্রাজক হিয়েন্থসিয়াঙ্গের পৌজুবর্দ্ধণের অবস্থিতি মিলিয়া যাইতেছে। আর কানিংহাম দাহেব তাঁহার Archæological Survey নামক গ্রন্থে পৌজুখণ্ডের নাম পর্যান্ত উল্লেখ করেন নাই, অথচ প্লৌজুখণ্ডোক্ত বচনের সহিত উক্ত প্রত্নতবিদের অনুমান মিলুয়া গিয়াছে। তিনি কেবল হিয়েন্থসিয়াঙ্গের বর্ণনার সহিত স্থান মিলাইতে গিয়া মহা-স্থানকেই পৌজুবর্দ্ধণ বলিয়া ধারণা করিয়াছেন। এবারের ধারণা কিন্তু ঠিকু হইয়াছে।

যদি কোন সমভূমি মাঠে পৌজুবর্দণ প্রমাণ করা যাইত, ভাছা হইলে মনেকের অনেক অনুমান করিবার থাকিত। কিন্তু মহাস্থানের সেই পাহাড়সদৃশ পরিশাল গড়, অসংক্ষ অট্টালিকার ভগ্নন্ত, বিহার গ্রামের ধ্বংদাবশেষ, এবং নগরবেটনাবং স্কউচ্চ ৮ মাইল দীর্ঘ জন্মল,— এই দকল দেখিয়া স্বতঃই মনে এই প্রশ্ন উদিত হয়, হায়! ইহা ক্ষ্ কালের কোন বিশাল রম্মীয় নগরায় ধ্বংদাবশেষ, না জানি ইহাতে ক্তই দৌলুর্য্যের আগার ছিল! এই মহাস্থানে স্থিত করতোয়াতীরিবর্তী। শিলাদীপে স্থাসদ পোষনারায়ণী পান হইয়া থাকে। সে ব্রম্ম মহাস্থানে ভারতবর্ষীয় লক্ষ লক্ষ হিন্দুর সমাগম হইয়া থাকে। পোষনারায়ণী-যোগের বিষয় হিন্দু মাত্রেই অবগত আছেন।

> "চাপাকে মূল সুংযুক্তে যদি সোমযুতাকুহুঃ নারায়ণীতি বিখ্যাতা ত্রিকোটী কুল মুদ্ধয়েৎ

পৌগুদেশ যে কতদ্র বিস্তৃত ছিল, তাহা নির্ণয় করা স্কঠিন।
বাধ হয় কথন কোন রাজা অন্ত রাজ্যের
পৌগুদেশের বিস্তৃতি।

দীমা যতদ্র পারিয়াছেন নিজরাজাের অন্তর্ভুক্ত
করিয়া লইয়াছেন; আবার হয়ত কোন রাজা অপারগ হেতু নিজ
রাজ্যের কতকাংশ অন্ত রাজাকে ছাড়িয়া দিতে বাধ্য হইয়াছেন।
স্থাবাং হইয়াছে।

हिद्यष्ट्रियाद्यत्र प्रायय त्थोरल्य त्र भीमा ৮०० मार्टन छिन।

এ সম্বন্ধে মহান্ত্রা বন্ধিম চক্র চটোপাধ্যায় তাঁহার বিবিধ প্রবন্ধের দ্বিতীয় ভাগের 'বাঙ্গালীর উৎপত্তি' শীর্ষক প্রবন্ধের টিপ্লনিতে উইলসনের বিষ্ণুপ্রাণের ও ভবিষাপুরাণের যে যে মত উদ্ভ করিয়াছেন, ভাহা নিমে লিখিত হইল।

Pundras, the Western Provinces of Bengal, or as sometimes used in a more comprehensive sense it includes the following districts: Rajshahi, Dinagepur, and Rangpore; Nadia, Beerbhum, Burdwan, part of Midnapur and the Jangle Mehals; Ramghur, Pancheti, Palemow, and part of Chunar. See an account of Pundra

translated from what is said to be part of the Bramanda section of the Bhavishyat Puran in the quarterly Oriental Magazine, Decem. 1824, Wilson's Vishnupurana.

ভবিষাপুরাণের মতে পৌশুদেশ সাত ভাগে বিভক্ত:—গৌড়দেশ, বরেক্তভূমি, নার্ত্ত, বরাহভূমি, বর্দ্ধমাশ, নারীখণ্ড ও বিদ্ধাপার্থ।

পৌ গুতার্থ-আবিষ্ণার কর্ত্তা ষষ্ঠাবতার পরগুরামের (ভার্গবের) সহিত মুসলমান-সমসাময়িক মহাস্থানের রাজা পরগুরামকে লইয়া ইতিহাসে O'donnell প্রভৃতি অনেকেই গোলে পড়িয়াছেন।

রাজা পরশুরাম ১৩শ শতাকীর শেষ্ভাগে মুহুাস্থানে রাজ্য করিতেন, প্রচলিত কিম্বদন্তি হইতে ইহা জানা মহাস্থানের রাজা যায়। কিন্তু লঘুভারতকার লিখিতেছেন যে, প্রশুরাম।

হসেন সার রাজ্যকালে শাহ স্থলতান মহাস্থানে আসিরা পরশুরামকে নিহত করেন। ছসেন সার রাজ্যকাল ১৪৯৪-১৫২৩ বা ২৫। ছই মতে প্রায় শত বংসর প্রস্তুরাম মহাস্থানে রাজ্য করিতেন, তাহা অবশ্রই কল্পনা করা যাইতে পারে।

লঘুভারত কার বলেন, এই রাজা পরশুরান, রাজা শ্রামল বর্ণার বংশান্তৰ ক্ষত্রিয়। শ্রামল বর্ণার বংশ বঙ্গে ও গৌড়ে বিস্তৃত হইয়াছিল। বঞ্জা অঞ্চলে যে সকল শ্রামল বর্ণার বংশীর ছিলেন, খিলিজির সমরে তাঁহাদের মুধ্যে অনেকেই যুঁজে নিহত হইয়াছেন। তথাপি বরেজের মধ্যে ক্ষত্রিরগণ ছিলেন। মানসিংহ যখন কামরপ জরে যান, তথন এই প্রদেশ হইতে ঐ সকল ক্ষত্রিরগণকে সজে লইয়া

Dr. Buchanan Hamilton वरण्य, अवे दण्यात अविषय

स्ट्रेट काना यात्र, हेरा व्यक्ति श्राकार्त्त श्राद्धारमत्र त्राका हिन। हिन स्ट्राप्टारन गए वान क्रिएन। हैरात व्यक्ति। २२ क्रा त्राक्त हिन।

Archæological Survey of India, Vol. XV. ও Hunter's Statistical Account of Bogra District গ্রন্থে পরশুরামকে মহাছানের রাজা বলিয়া লিখিত হইয়াছে।

১২৬৮ সালে লিখিত কালীকমল সার্বভৌম প্রণীত 'মেতিহাস বঞ্জা বৃত্তান্ত' নামক একথানি পুরাতন গ্রন্থে পরশুরাম ও মহাস্থান, সম্বন্ধে যাহা লিখিত হইয়াছে, তাহা নিমে অবিকল উদ্বত হইল।

"জনশ্রুতিতে একাশ ধ্য সহস্র বৎসর পূর্বে মহাস্থানের রাজা পরশুরমে নামক এক ব্যক্তি হিন্দুজাতি বাস করিয়া
সাহ স্বতান মুসলছিলেন। এ রাজার রাজ্য কালে এ স্থানের
মানাধিকার।
চতুদ্দিকে ইষ্টক নির্মিত চ্রেপ পরিবেষ্টিত ছিল।

কোন শত্র হঠাই রাজপুরী লুঠন করিতে পারিত না। হর্গের মধ্যে ও বাহিরে কেবল অট্টালকাময় নির্মিত হইয়াছিল। তন্মধ্যে অনেক দেবালয় ও বিছালয়ণ হর্গের মধ্যে অক্সাগার ধনাগার প্রভৃতি বৃহৎ অট্টালকা নির্মিত হইয়াছিল। হর্গের বাহিরে চতুর্দিকে ৫ ক্রোশ পরিমিত স্থান রাজনগর ছিল। হ্যাজনগরের চতুপার্বে চাঁদ সদাগর প্রভৃতি মহাধনী লোকের বাটা ছিল। তাঁহারী নিয়ত মহাস্থানে-বাণিজ্য করিতেন। রাজনগরের পার্মপার্শীয় কতিপয় স্থানের নাম গোরুল, বৃষ্ণাবন পাড়া, মধুরা, গয়া, কীশী যেগ্রীয় ভবনু ছিল। গোকুল নামক স্থানে প্রকৃত গোকুলে ভগবানের যে সকল লীলা হইয়াছিল, কর্মণ ক্রিয়াকলাপ হইত। বৃন্দাবনে প্রীক্রকের রাসলীলা প্রভৃতি হইত। মধুরাপ্রীতে কংস্বিনাশাদি হইত। গয়াতে পিতৃকার্য্য হইত। কাশীতে কেবল অরুপ্রণ-বিশ্বেরের বেরপে সেবা আছে,

তক্রপ হইত। এতির নাজ্যের মধ্যে স্থানে স্থানে অতি বৃহৎ দীর্ষিকা ধনন দারা প্রজাদিগের জন্ন কট নিবারণ হইয়াছিল। রাজা পরভরামের রাজ্যের দীমার সৈহাঁ ছিল না। এই রাজার এক মাত্র কন্যা ছিলেন; তাঁহার নাম অনেকে শীলাদেবী বলিত। ইনি বড় তপদিনী ও পিতৃতক্ত ছিলেন। শুনা গিয়াছে শীলাদেবীর শীলভায় জগৎবাধা ছিল। রাজার তাল দ্বেতাল নামক বীরহয় বশীভৃত আর জীয়স্তক্ত্ নামে এক কৃত্র থাকায় কোন বিপদ হইত না। তাহাতে রাজা সর্ম্বনাই নি:স্থাক হইয়া রাজ্য করিতেন। চিরকাল লোকের ভাগ্য সমান থাকে না। এ নিমিত্ত রাজা পরশুরাম যে প্রকারে মৃত্যুগ্রাদে পতিত হইয়াছিলেন, তাহার সংক্ষেপ বৃত্তান্ত নিয়ে দেওয়া গেলা

মহাস্থানবাসী কোন ব্রাহ্মণের \* \* \* কালক্রমে সন্তান হয় না, তাহাতে ব্রাহ্মণব্রাহ্মণীর মনস্তাপের পরিসীমা ছিল না। ব্রাহ্মণ সন্তানের নিমিত্ত শান্তি স্বস্তায়ন ও ঔষধাদি যে পর্য্যস্ত করিতে হয় তাহা করিয়াছিলেন। ব্রাহ্মণ পত্নী সিদ্ধপুরুষ তপশ্বী ব্রাহ্মণদিগের প্রতি যৎপরোনান্তি ভক্তি প্রকাশ করিয়াছিলেন। তাহাতেও কোনরূপে গর্ভসঞ্চার হয় নাই। ব্রাহ্মণ একদিন স্কন্দ নামক দেবতার মন্তপে গর্জসঞ্চার হয় নাই। ব্রাহ্মণ একদিন স্কন্দ নামক দেবতার মন্তপে গিয়া পুত্রকামনায় ধয়া দিয়া থাকিলেন, তাহাতে রাত্রিকালে প্রত্যাদেশ হইল যে, ত্রিম যবনধর্ম গ্রহণ করিলে সর্ব্স্তণাক্রান্ত এক পুত্র লাভ করিতে পারিবে। ব্যাহ্মণ ব্যাহ্মণে সে রাত্রে যে ভাবে প্রত্যাদিষ্ট

<sup>\*</sup> শুনা যার ষঠানতার পশুরাম মহাস্থানে চতুস্পার্থে, ভারতবর্ধীর সমস্ত প্রধান
তীর্থ সমূহের একত সমীবেশ করিবার মানসে, ঐ সমস্ত তীর্থের নামে গ্রাম প্রতিষ্ঠিত
ও তৎ তৎ স্থানাস্যায়ী দেবদবীপ্রতিষ্ঠা করিরাছিলেন। কাশীস্থাপন করিছে
হইলে কোটা শিবলিক প্রয়োজন; পরশুরাম কোটা লিক্সই সংগ্রহ করিয়াছিলেন।
কিন্তু এক কাশী ভিন্ন দ্বিতীর কাশী হওরা মহামারার অভিপ্রেত নহে, কাজেই একটা
লিক্স অপক্ষত হইল। সে জন্ত বোধ হল মহাস্থান গুপ্ত বারাণসী বলির। করভোরা
মাহান্ধ্যে উলিখিত হইয়াছে।

হইলেন, মকানগরে পেগরর মহম্মদ্ধ এক। প্রভাদিষ্ট হইলেন যে,
ভূমি মহাস্থানস্থ তাবত হিন্দুকে যবনধর্ম গ্রহণ করাও। তৎপর
প্রত্যাদিষ্ট বাজিদ্বয় স্ব স্ব কার্যাসাধনের পথাবে যণ করিতে লাগিলেন।

ব্যক্ত করিলে পর, বিপ্রপত্নী পৃতিকথায় বিশুখা আর, আহলাদিতা হইয়া কাহলেন যে, ঠাকুর! আঁটকুড়া হইয়া থাকা অপেক্ষা 'দেবতার আদেশাস্থ্যারে যবনধর্ম গ্রহণ করিলে, যদি সর্বস্থলকণাক্রাস্ত পুত্র মৃস্তান হয়, তবে তাহাও কর্তব্য। আমার বিবেচনায় অভই যবনধর্মণ গ্রহণ করা ভাল। যত কালবিলম্ব হইবে ততই ব্যাঘাত জনিবে। ব্রাহ্মণ পতিপ্রস্থাইত্রস্থাবিপজ্জয় করার কথায়, তাদৃশ মন:সংযোগ ক্রিলেন না। তাহাতে এক্ষেণ্পত্নী হঃখিতা হইয়া থাকিলেন। অনস্তর প্রকাদন হিজপত্নী নিজ পরিচারিকার নিকট জিজ্ঞাসা করিলেন, হাঁ গো বাছা। বল দেখি এ সহরের মধ্যে যবনজাতি আছে কি না ? ভাহাতে ঐ পরিচারিকা উত্তর করিল, ঠাকুরাণী, যবনজাতি কি প্রকার জাহা আমি জানি না। তৎপর ব্যাহ্মণের যবনধর্ম্ম গ্রহণের বিষয় জ্বনেন র ব্যাহ্মণ কারারার ক্রেণি প্রবিষ্ট ইইলে রাজা ব্যাহ্মণকে কারারুদ্ধ ক্রিজেন। ব্যাহ্মণ কারাবাদী হইয়া সজলনয়নে মহাদেবের চিস্তা ক্রিতে লাগিলেন। \* \* \* \*

্রাজপুত্র সহস্বদ মহাস্থানবাসী হিন্দুদিগকে যবনধর্ম গ্রহণ করাইবার নিমিত্ত মহাবল পরাক্রান্ত, অতি সাহসী, কার্য্যক্ষম তুরস্ক দেশের স্বাজপুত্র সাহ স্থলতানকৈ প্রেরণ করিলেন। যুবুরীজ সাহ স্থলতান পেগ্রস্ক মহস্বদের আদেশার্মারে এক মৎস্থাক্তি জল্যানারোহণে

<sup>\*</sup> এই সাহ ফুলতানকে কেহ 'সাক্ষলতান হল্লবৎ আউনিয়া', 'কেহ সাহ ফুলতান ক্রিয়' ইত্যাদি নামে অভিহিত করেল।

লোকমুৰে শুনা যায় সাহ স্থলতাৰু নাকি বক্ষের রাজকুমার।

क्रम् क्रम् महाञ्चात्म निर्वेष উপञ्चि हहेशा त्राका পत्रक्षत्रात्मत वर्गानि জ্ঞাত হইলেন। যৈ দিবুল সাহ স্থলতান মহাস্থানে উপস্থিত হইস্লী ছिলেন, প্রথমে শীলাদেবী দেখেন সাহ স্থলতান ফকির বেশ ধারণ করিয়া একাকী নৌকা হইতে উঠিয়া মহাস্থানে উপস্থিত হইয়া, রাজার निक्षे সংবাদ পাঠাইলেন। রাজা জিজ্ঞাসা করিলেন যে, ফ্কির কি চান জিজ্ঞাদা কর, তৎপরে ফকিরকে জিজ্ঞাদা করিলে ফকির বলিলেন, 'এই স্থানে অগ্ন থাকিব, ভন্নিমিত্ত এক্টু স্থান চাই।' রাজা ফকিরের প্রার্থনা জ্ঞাত হইয়া, দারবানদিগকে আজ্ঞা করিলেন যে, এক দিনের নিমিত্ত ফকিরকে এক্টু স্থান দেওয়া হউক; কেহ যেন উহাকে উৎপাত না করে। তংপর ফকিরবেশধারী সাহ ইলভান কৌশল-পূর্বক অগ্রে তাল বেতাল নামক বীর্ষয়কে যবনধর্ম গ্রহণ করাইয়া निक চर्मामन महाञ्चानमम् वााश्चे कतिल, त्राका भिक्र उन्नत्रत्रक्रकिनिश्क আজ্ঞ। করিলেন যে, ত্রুত্ত নরাধম সাহ স্থলতানকে রাজ্য হইতে বহিদ্ধত করিয়া দাও। এই আজ্ঞা পাইবামাত্র রাজভূত্রেরা মার মার শব্দ করিয়া সাহ স্থলতানের উপর পড়িল; সাহ স্থলতান অত্যস্ত সাহসী ও বার পুরুষ ছিলেন বলিয়া একাকী এক গাছী শূলান্ত, দারা তাত্রত দৈশুদামস্তকে হতাহত ও পলায়িত কুরিলেন। রাজা এই বিষ্ময়কর ব্যাপারের সংবাদ শুনিরা স্বয়ং রণস্থলবর্ত্তী হইয়া মহা সংগ্রাম করিতে আরম্ভ করিলেন। কিছুকাল ঘোরতর সংগ্রাম হইলে পর সাহ স্থলতান রাজার বক্ষ:শ্বলে এমুন এক গদাঘাত করিলেন বে, ভাহাতে পরশুরাম পভাস্প্রায় হুইয়া কালীহ্রদে নিমগ্ন হুইয়া প্রাণভ্যাগ করিলেন। তৎপর রাজার কন্তা শীলাদেবী রাজার নিধনসংবাদ শ্রবণ করিয়া করতোয়ায় কলেবর পরিত্যাগ করিবার জন্ম একাকিনী শ্রেচ্নভাবে অন্তঃপুর হইতে নির্গতা হইয়া করভোয়ায় গমন করিছে हिटलन, এমন সময় সাহ তুলভান ঐ সংবাদ ভূমিয়া উইার গভিরোধ

করিবার জন্ম অগ্রসর হইলে, শীলাদেবী ক্রিঅর্ত্ত দারা গুরুতি ধবন मरणत निर्त्राराष्ट्रमन कतिया कत्राजायाणित तिरार्थन अर के ज्यूजाश করিলেন। তৎপরে সাহ স্থলতানের । সম আহারী লোকেরা মহাস্থানস্থিত লোকদিগ্নে ছাল বলে-কলে-কৌশ্নে অনবরত যবন-ধর্ম গ্রহণ করাইতে আরম্ভ কলিলে পর মহাসানস্থিত মানেক ব্যক্তি স্থান ত্যাগ করিলে নগর ক্রমে ক্রমে যবন ও অরণাম্যু হইল। যবনময় হইলে পর যবনেরা মহাস্থানস্থিত হিন্দুদিগের দেব দেবীর ও অস্থান্ত विषयात्र हिंद्स त्राधिन ना। हेरात छ। २ भठ वरमत भरत योग मानिमःर বঙ্গরাজ্যে আসিয়াছিলেন, তৎকালে তিনি মহাস্থানে বিভর ভামুসন্ধান कतिया (भोर्क किला कर्न नीना दी भित्र कारनक हिट्स श्राक्त करत्रन। ভাহাতে ঐ স্থানকে সকল লোকে পৌণ্ডুকেত্র বলিয়া স্বীকার করে ও ষহাতীর্থ বলিয়া মানে। এইকণ শাস্ত্রীয় নিদর্শন কিছুমাত্র পাওয়া शांम ना।

अच्छि मेराञ्चात्न (य (य विषय्न विमामान चाहि, जाहा वर्णना कत्रा याहेट ए । यथा: এই স্থানের পূর্বদিকে ষহাখানের বর্ত্তান করতোয়া নদী, উত্তরে রায়নগর, পশ্চিমে व्यवश्रा। বামণপাড়া প্রভৃতি কতিপয় কুদ্র কুদ্র প্রাম। সক্ষিণে বাঘোপাড়া প্রভৃতি কভিপয় গ্রাম। ইহার মধ্যবর্তী স্থানে অভার লোকের বসভি। আর স্থানে স্থানে কুদ্র কুদ্র বন আছে। এভত্তিন প্রায় ভারত ভূমিতে ওঁত হয় ও ধান্ত হয়। এই ধান্ত আর উ তের ভূমিতে অতি পুরাতনকালে কেশন হিন্দু রাজার অতি প্রাচীন প্রকাশ্ত হর্ণের চিহ্ন আছে। ঐ হর্ণের আকার প্রকারে বোধ হয়, कांन कारन कांन मयां व्यानिया महाशान वान कतियाहितन। - এদেশের অনেক লোক বলে যে, এই গড় রাজা পরশুরাম কর্তৃক निर्णिण। चांठे चांटह खाहाटक भीनारमयीत्र घांठे यत्न। शुरुत

(मथा यात्रा नाड देवनाथ मारम वामनभाषा आस्मत्र निकिष्ध थान्य ক্ষেত্রের মধ্যে হাদশ প্রকোষ্ঠ বিশিষ্ট একটা ইষ্টক নির্দ্মিত গৃহ ৫৷৬ হাত मुखिका थनन कर्ताम প्रकाम পारेमाह्य य एकाल के गृह প्रकाम भाग, उৎकार्ण डेशत गर्था एव एव प्रवाहिन, जनार्था এक ही थाजू निर्मिंड पही ও একটা স্বৰ্ণমুদ্রা প্রকাশ পাইয়াছে। ঐ স্বৰ্ণমুদ্রার আকার অর্দ্ধ-মুদ্রা रहेटि कि कि९ वर्फ, উर्शात भूमा ১২।১৩ টাকার অধিক নহে। ঐ मुजाब अकतानित कान हिरू नारे। क्विन इरे शृष्टी एवं श्रु निकात আকার আছে। তাহার একটা জী আকার ও একটা পুরুষাকার। खौं मूर्खिं ि भन्नामत्न উপবিষ্ঠা जात्र श्रुक्ष मूर्खिंग मांडान। ইহার পূর্বে वात এक वाक्ति के गएइत मधा धान्नाकात्वत मुखिकाथननकानीन কতকগুলি রজতমুদ্রা প্রাপ্ত হইয়াছিল, ঐ টাকা পুরাতন ঘরের টাকার श्राम्। তাহাতেও কোন অক্ষর খোদিত ছিল'না; কেবল একটা ত্রিশূল-হস্ত ব্যবাহণ শিবের মূর্ত্তি আছে। এতদ্তিন গড়ের আর আর স্থানের লোক সকল কত সামগ্রী পাইয়াছে, তাহা প্রকাশ হইতে পারে नारे। গড়ের পূর্বাদিকে করতোয়! নদীর তীরে একটা উচ্চ ভূমির উপরিভাগে সাহ স্থলতানের সমাশ্রিস্থান ও য্বনদিগের ভজনালয় প্রভৃতি কতিপয় চিহ্ন আছে। ঐ স্থানে প্রতি বৎসর চৈত্র মাসে বারণীর সময় মেলা হয়। এই মেলায় অনেক দুর হইতে লোকজন ও দোকানীপশারী অঁগত হয়। তেমনি বিক্রয়ও হয়। এই মেলায় श्रक ও ঘোড়া অধিক বিক্রেয় হয়। মেলা ৮ দিনের অধিক থাকে না। अञ्चित्र देकार्थ मारम प्रभइतात पितम (मेगा इस्। के स्मा अञ्च मामान्त्र, এক দিবসমাত্র স্থায়ী। কথন কথন নারায়ণীযোগোপলকে যে মেলা रत, मिला नर्सारिका एक रहेत्रा थाएक। (मिकिशन वश्रण त्रांक)

বিশেষ মনোনিবেশ সহকারে দেখিলে ব্যা যার' যে, গড়টা একটা চতুর্জ লাকার ছিল। এবং চতুম্পার্শে বৃহৎ পরিসর ও স্থ-উচ্চ প্রাচীর দারা বেষ্টিড ছিল। এই গড়ের চতুর্দিকে থাল থনিত হইরাছিল স্পষ্ট ব্যা যার। একণে গড়ের কোন কোন অংশের উচ্চতা ২০০০ হাত পর্যান্ত এবং পরিসর তদম্যারী দেখা যার। দ্র হইতে দেখিলে পাহাড় বলিয়া ভ্রম হর। ৪০০ কোশের ভিতর প্রার্গ ভূমিই উচ্চ নীচ, কেবল ধ্বংসম্ভূপে পরিপূর্ণ।

স্বন\* গোবিনা মন্দিরের মধ্যবর্ত্তী ভূমি অতি পবিত্র বলিয়া শাস্ত্রে উক্ত হইয়াছে। কিন্তু এক্ষণে ঐ তুই মন্দিরের স্থান তুইটা অশ্বথ বৃক্ষ দারা চিহ্নিতি স্থিনাছে। প্রবাদ আছে যে কুরুক্ষেযুদ্দেত হত ভগদত্তের বৃহৎ স্বর্ণকবন্ধ সহিত একথানি হস্ত একটা চিন-কর্তৃক আনিত হইয়া মহাস্থান্ত্রিত কর্ত্তায়াকুলে পতিত হইয়াছিল

এই মহাস্থানের দক্ষিণে একটা জাঙ্গাল দেখা যায়, উহা ভীমের জাঙ্গাল বলিয়া খ্যাত। উচ্চ ২০ ফুট, দীর্ঘ ৮০মাইল।

মহাস্থান এখন মুসনমানদিগেরও একটা পবিত্র স্থান বলিয়া খ্যাত।
সাহস্থলতানের মস্জিদের জন্ত ৬০০ একর পরিমাণ পীরপাল
আছে। ইহা দিল্লির, সমাট কর্ত্ব সনন্দ্যোগে মঞ্জুর করা। সনন্দ
খানা হারাইয়া গিয়াছে। কিন্ত ১০৭৬ হিজিরা, ১৬৬৬ অব্দে ঢাকার শাসনকর্ত্তা ছারা প্নরায় সনন্দ প্রাপ্ত হইয়াছে। ০১৮৩৬ অব্দে গভর্গমেন্ট এই
সন্ধ ভূলিয়া লইবার জন্ত মকদ্বা রুজু করিয়াছিলেন, কিন্তু অধিক
কালের মঞ্বীকৃত বলিয়া ১৮৪৪ অব্দে ঐ মোকদ্বা ছাড়িয়া দিয়াছেন।
এপ্রেল মানের মাঝামাঝি মহাস্থানে যে মেলা হয়, তাহাতে ঐ মৃস্জিদের

<sup>#</sup> এই মন্দিরে কল্যাণী দেবীর নৃত্য দেখিয়া কাজীররাজ জন্মাদিতা মোহিত স

এথানকার মৃত্তিকার স্থাপের ভিতর হইতে ইলিয়দ সাহী বংশের মহম্মদ সার নামান্ধিত একটা টাকা পাওয়া গিয়াছে। রাজা কাংথ বা গণেশের সহিত বৃদ্ধ করিয়া গৌড়সিংকাসুন হারাইয়া পরে যথন ইলিয়দ সাহীবংশ ঐ সিংহাসন পুন: প্রাপ্ত হন, মহম্মদ সা সেই বংশের প্রথম রাজা। হিজিরা ৮৫২ বা ১৪৪৮ অব্দ হি: ৮৫৮ বা ১৪৫৪ অব্দ এবং হি: ৮৬২ বাং ১৪৫৮ অব্দের তিনটা মুদ্রা পাওয়া গিয়াছে। ১৮৭৪ অব্দেমহাস্থানে একপাত্র পুরাতন টাকা পাওয়া গিয়াছিল, ইহার একটাতে মিলসার নাম ছিল। আর একটা মুদ্রাতে শ্রীমহেকু সিংহু পরাক্রম" অপর পার্শ্বে কুমার গুপ্ত অন্ধিত ছিল।

उट्यादनम मार्ट्य वटनन:--

"The whole place is of great interest, and deserves a detailed arch æological survey.

<sup>\*</sup> বিহার তরফের বর্তমান মোতওল্লী বগুড়ার নবাব আবৈছ্স্ দোব্হান চৌধুরী।

## উদয়াদিতা।\*

প্রভাসি অতীত উদয়-অচল

উদয়াদিত্য উদিল রে!

নবীন বঙ্গ করিয়া উজল

নব বিভাকর ভাতিল রে।
করহ কুল কুসুম চয়ন,

চরণে ঢালিব অর্থ্য রে;
শতেক যুগের হরিত দমন

করিয়া লভিব স্বর্গ রে!

আজি এ বঙ্গ ভূবনময়
গাহরে উদয়াদিত্য জয়।

ঢালরে চরণে কুসুম চয়
ভক্তি নম্ম অন্তরে।

বঙ্গের . সুথ গোরব ছবি
হেরি পুলকিত চিত্ত!
আজিরে উদর অচলের রবি
উদিল উদরাদিতা!
বিলিতেছে করে ধর তরবার
এথর খোজদীপ্ত
নয়নে অলিছে উজ্জলতর
সংহার রবি দৃপ্ত।

<sup>\*</sup> বিগত ৪ঠা আধিন বঙ্গের বালকগণ কর্ত্তক অমুন্তিত "উদরাদিতা পূজাঞ্জি" উৎসৰ উপলক্ষ্যে রচিত ও গীত।

অমিত-কীৰ্য্য-মহিমাময় क्य (इं डेम्य्रामिड) क्य। পরশি চরণ, দেহ অভয় (मोर्ग) मीश जलदा।

• প্রাবণ গগনে জীমৃত মন্ত্র, • যেমন গভীর ব'জে; मिथिया जूरन, टेमन त्रस्तु यिका (ययंन वाटक, তেমনি গভীর, তেমনি ভীষণ, উঠুক বাজিয়া গীতি . উঠুক কাঁপিয়া কানন গছন উঠুক কাঁপিয়া ক্ষিতি!

> আজিহে গগন ভুবনময় গাহরে উপয়াদিতা জয়। ভক্তি বীৰ্য্য শৌৰ্য্য চয় পূर्व कर्तिय चखरत !

वीविजय • ठक्त यज्यमात्र।

## व्याविम्दग् ।

ভাতে নিজাভঙ্গ হইবামাত্র, জানালার কাছে গিয়া, পদি।
তুলিয়া বাহিরে দৃষ্টিপাত করিলাম। জানালার নিমে রাজপথ,—দৃই একটি গোপবালা গ্রানার পাত্র হস্তে লইয়া কিপ্রগতিতে
অদৃশ্য হইল। পথের পর একটি বিস্তীর্ণ ময়দান।\* তাহার প্রাস্তে
তক্ষপ্রেণী, তাহার পর গৃহপুঞ্জ। কিয়দ্দুরে "শাস্ল্ হিল্" উরগ্
মন্তকে দণ্ডায়মান,—তাহার চূড়ায় এডিনব্রা-হর্গ। যদিও তথন বেলাঃ
৮টা, কোথাও সুর্যাদেবের, কোনও চিহ্ন নাই। আকালে অর মেন্ন,—
বাতাসে কিঞ্চিৎ কুয়াসা। অফুটেশ্বরে বলিলাম—"যাক্,—বাঁচা গেল।"
গৃহবাসী পাঠকগণ আমার এ মন্তব্যের অর্থ বোধ হয় ব্রিতে
পারিবেন না—স্বরাং কিঞ্চিৎ টীকা আবশ্রক। আমি যে হঠাৎ
ক্রিয়া জানাঞা গলিলাম—দশ্য দেখিবার অভিপ্রোয়ে থলি নাই।—

গৃহবাসা পাঠকগণ আমার এ মন্তব্যের অথ বোধ হয় ব্যাবতে পারিবেন না—স্তরাং কিঞ্চিং টীকা আবশ্রক। আমি যে হঠাৎ উঠিয়া জানাখা থুলিলাম,—দৃশ্য দেখিবার অভিপ্রায়ে থুলি নাই।— শুধু দেখিবার জন্ত,—আকাশ কেমন আছে। আজ আমরা পঞ্চবক্র মিলিয়া, প্রাতরাশ্লের পর, আবেট্স্ফোর্ড যাত্রা করিব—স্বতরাং প্রথমেই আকাশের সংবাদ লইতে হইল। এ দেশে, কোথাও যাইঙে আসিতে হইলে,—বিশেষতঃ যদি প্রমোদভ্রমণ হয়,—তাহা হইলে প্রধান চিস্তা, সেদিন আকাশ • কেমন থাকিবে। যদি রৌদ্র উঠে, তাহা হইলে ত কথাই নাই—সোভাগ্যের চরমসীমা। রৌদ্র যদি নাও উঠে,— বৃষ্টিটা বন্ধ থাকিলেই যথেই। আকাশের আদের বৃষ্টি হইবার আশু সন্তাবনা না দেখিয়া,—আশ্বন্ত হইয়া বলিলাম "বাঁচা গেল।" রবি বাবুর মতে, পূর্কেপঞ্চশর যথন গোটা ছিলেন,—ভ্রথন,

<sup>\*</sup> কটের উপস্থাস-পাঠকেরা, "Fortunes of Nigel" প্রস্থে এই Meadowsএর বর্ণনা পাঠ করিয়াছেন।

বর্ষা ঋতুটা আমাদের দেশে বর্ষের একদেশে সম্পূর্ণভাবে বিরাজ করে; কিন্তু এ দেশে জানি না কোন্ মহাদেব, মদনকে না পাইয়া, তদীয় প্রিয়সহচর বর্ষাকে চুর্ণ করিয়া বর্ষময় ছড়াইয়া দিয়াছেন।

বেলা শশ্টার দুময় আমরা পঞ্চবন্ধ,—Waverley ষ্টেশনে উপস্থিত হইলাম। আমরা গাড়ীর যে কামরায় প্রবেশ করিলাম,—তাহাতে একজন "নেটিভ" বাসয়া ছিল। পঞ্চজন রুঞ্মুর্ত্তির যুগপৎ আবির্ভাগদর্শনে, সে ব্যক্তি চট্ট করিয়া সরিয়া পড়িল। আমরা হান্তকৌতুকে ও পাইপের ধুমে কক্ষথানি ভরিয়া ফেলিলাম। • ক্রম্মে গ্রাজ্মী-ছাড়িল কাস্ল্ হিলের পাদদেশ দিয়া, প্রিজ্মেস্ গার্ডেন দক্ষিণে রাথিয়া আময়া এডিনব্রার সীমা পার হইলাম। নগরটি ক্ষ্মে,—কলিকাতা অপেক্ষা অনেক ক্ষ্মে—নগরসীমা অভিক্রম করিতে বিলম্ব হইল না।

নগরের পর,—মাঠ, নুদী ও পর্বত। মাঝে মার্দ্ধে পর্বতচ্ডার একটি পুরাতন হর্গ দেখা যায়। করেকটি ষ্টেশন অতিক্রম করিলাম যাহার নাম ইতিহাসের পৃষ্ঠায় রক্তের অক্ষরে লেখা আছে। সপ্তদশ ও অষ্টাদশ শতাকীতে স্কট্ল্যাণ্ডে এত রক্তপাত হইয়া গিয়াছে যে, কিছুদ্র ভ্রমণ করিতে হইলে এরপ স্থান অতিক্রম করা অনিবার্যা।

এক ঘন্টা পরে আমাদের গাড়ী মেল্রোজ ষ্টেশনে আসিয়া থামিল।
আয়াবট্স্ফোর্ড ঘাইতে হইলে মেলরোজে নামিতে হয়। মেলরোজ
একটি পুরাতন স্থান। নগরুও নয়,—এই তুইয়ের
মাঝামাঝি। মেলরোজে দ্রন্থবা জিনিষ ইহার পুরাতন আয়বি।
আমরা স্থির করিলাম, আ্যাবট্স্ফোর্ড দেখিয়া আসিয়া, মেলরোজ
আয়াবি দেখিব।

' क्षिण्या वाहित्र वामित्रा (मथा (भक्, व्याविम्रकार्क-याकीरमूत्र

লইয়া যাইবার 'এবং ফিরাইয়ি আনিবার সভা একথানি সারাই (Chara-banc) দাঁড়াইয়া রহিয়াছে। কেছ কেছ বলিলৈন সারাইছে ওঠা যাউক, আমি বলিলাম না, পদত্রটো যাইতে হইবে। প্রথমত গাঁরাই লইলে একটা নির্দিষ্ট সময়ের মধ্যে ফিরিতে হইবে, স্লেছাম্ছ দেখিয়া শুনিয়া বেড়াইতে পাওয়া যাইবে না। ছিলীয়তঃ পদত্রহে যাওয়ার যে নিজস্ব একটা বিশেষ আমোদ আছে তাহা ইইতে বঞ্চিং হইতে হইবে। ত্ইমত—স্বতরাং ভোট লইবার আবগুকতা উপস্থিত হইল। ফলে, পদত্রজে যাওয়াই স্থির হইল। পথ জিজ্ঞানা করিয় আমরা অগ্রসর হইলাম।

মেলরেক গ্রাম বা নগর ছাড়াইয়া আমরা মাঠে আসিয়া পড়িলাম আমাদের হস্তে Pearson's Guide,—তাহার নির্দেশ অমুসাইতে লাগিলাম। একস্থানে পৌছিলে তাহার পর লেখা আছে টেলিগ্রাফের তার বৈ দিকে গিয়াছে, সেই দিকে যাইতে হইবে ডাণিক গ্রামীবামে রাখিয়া টেলিগ্রাফের তার ধরিয়া আমরা চলিলাম ত্ইধারে শশুক্রের, পথটি নীচু, তুই ধারে বেড়া, তাহার গায়ে থিস্ল্ আরাল্ল বনকুল ফুটিয়াছে। ক্রমে দূরে Eildon Hillsএর চূড়াক্র দেখা যাইতে লাগিল। আাবট্সফোর্ড গৃহের ছবিতে পশ্চাৎভাগে সচরাচ যে পর্বা হমালা দেখা যায়, ভাহাই Eildon Hills। স্কট্ নানা স্থানি পর্বারে একটি প্রিয়কার্য্য ছিল। একবার তিনি বলিয়াছিলেন,—''এল পর্বাতের চূড়ার দাঁড়াইয়া আমি ৪০টি স্থান নির্দেশ করিতে পার্টি বাহা যুদ্ধে ও কাব্যে খ্যাতিলাভ করিয়াছে।''

পথে কিয়দ,র যাইতে যাইতেই, একস্থানে একটি কাৰ্চফলকে লেভ দেখিলান—To Abbotsford House। পথ হইতে গৃহের অত ভাগটি দেখা গেল মাত্র। বাকী অংশ বাগানের পাছে পালার আর্ত

সরু পণ্টি ধরিয়া সঙ্কেত অনুসারে আহ্বরা যাইতে লাগিলাম। অনুমানে বোধ হইল, গৃহের পশ্চাৎভাগ হইতে আমরা প্রবেশ করিতেছি। শেষে দেখিলাম তাহাই বটে। গৃহের সম্মুপভাগ টুইড্ নদীর উপর, তাহা আমাদের দৃষ্টিগোচর হইবার অবসর ঘটে নাই। ষ্টেশন হইতে व्यानिवाव द्वाखा, গৃহের পশ্চাৎভাগ দিয়া গিয়াছে। वला वाह्ला, यथन এ গৃহ নিৰ্শ্বিত হইয়াছিল, তথন ষ্টেশনও ছিলনা এবং সম্ভবতঃ ইপেন হইতে এ পথও ছিলনা।

• যাইতে যাইতে আরও ছই একটি স্থানে কাষ্ঠফলক দেখিলাম। তদমুদারে ক্রমে একটা কুদ্র কক্ষে উপস্থিত হইলাম। যে ভূত্য দর্শকগণকে বাড়াটি দেখায়, সে তথন একদল দর্শককে লইয়া-ভিতরে গিয়াছিল। আমাদের একটু অপেক্ষা করিতে হইল। এই কক্ষে क्रि मक्कीय ज्ञानक विद्धार পদार्थ त्रश्यिक । ছবি, পোষ্টকার্ড, ছবির বহি, ফোটোগ্রাফ্,—নানাপ্রকার টার্টানে কুদ্রাকারে বাঁধা স্কটের কাব্যাদি;-- একজন স্ত্রীলোক এসব বিক্রয় করিতেছে।

যাঁহারা স্বটের জীবনী পাঠ করিয়াছেন, তাঁহারা এই গৃহের জন্ম-বুত্তান্ত অবগত আছেন, তাহার উল্লেখ নিপ্রাঞ্জন 🖟 তাঁহারা জানেন, এই গৃহের প্রতি স্কটের অমুরাগ কিরপ প্রবল ছিল। মৃত্যুর কিছু পুর্বেব শেষবার যথন প্রবাস হইতে ফিরিয়া স্কট গৃহে প্রবেশ করিয়া-ছিলেন, তথন বারম্বার বলিভত থাকেন—"আমি অনেক দেখিয়াছি কিন্তু আমার গৃহের মত কিছুই দেখি নাই।"\*\*

আমরা যাহা দেখিলাম, তাহার বর্ণনা করিবার পূর্বে একটি ক্থা विद्या दाथि। এ গৃহের অধিকারিণী এখন অনরেবল্ মিশেশ্ ম্যাক্স ওমেশ্ স্কৃ। ইনি স্কটের প্রদৌহিত্রী। পোফায়া ছাড়া, স্কটের অপর

<sup>\* &</sup>quot;I have seen much" he kept saying, "but nothing like my ain house."—Lockhart's Life, Vol. X., p. 209.

जकन शूलकन्ना निःमक्षान व्यवस्थि मित्रिया थान १ ऋष्टितं कीवनीतन्थर लक्शर्वे, সোফায়ার পাণিগ্রহণ করেন। সালটা নামে ইহাঁদের এব क्या कत्य। अनदारन् मिल्ग् माक्ष अद्यनकृ এই नाग छित क्या र्हीन विधवा, श्रीय পুত্ৰকন্তা लहेया এখন আ। বট্দফোর্ড গৃহে বা-করিতেছেন। স্থতরাং গৃহটির সর্বতা দর্শকগণের অধিগম্য নছে। कक्षिण अधिशमा, जाश्तरहे वर्गना निस्न कत्रिराज्ञ ।

नक्षा कित्रिया जामिन। जामत्रा उथन, প্রত্যেকে এক দিলিং করি প্রাবেশিক দিয়া, ভাহার সহিত ভিতরে প্রবেশ করিলাম।

व्यथित्मरे, वामितिक এक ही व्यनिख्य निष् भिष् (मर्था (भन। व्यक्त) सारभन्न यशकानश्रमि थरेन्ना त्रस्मित्। উঠিতে উঠিতে আমার ম হইতে লাগিল,—ঠিক যে প্রস্তর গুলির উপর চরণ রাথিয়া সাহি मञारे करे महत्रवार्त छेठियाद्वन नाभियाद्वन,—त्मरे वर ममानिष्ठ श्रन अनित्रहे छे एत आक करण कत्र कन्न अन्होंन नाहिजार ने **अमम्भर्म इहेर उद्ध**ि

প্রথমে জামরা যে ককে নীত হইলাম, সেটি স্বটের লিপিম (study) ছিল। এডিনব্রা পরিত্যাগের পর ষটের অধিকাংশ রচ-এই कटक मन्नन ध्रेमाहि। काला ठामफाम माफा এक ी भ ্লোটা আর্ম্ম চেয়ার, একটা দেরাজযুক্ত ডেম্বের সমূথে রাথা রহিয়াছ वह दियादि विभिन्न, वह रफ्ट कि विश्विष्टन। वात्म बुहर कार्न ভাহা গৃহদংলগ্ন ৰালানের উপীর খুলিয়াছে। লিখিতে লিখিতে ह इंहरण अहे वाशात्मत्र मवूरक ताथ कत्रि कहे एकूरक नियश कत्रिए ्र क्षेपि कूल, जिन मिट्कंब (में अवाटन, यादा क्हेंटिक 'ceiling 🚝 প্রভাবের আল্মারি। উপরের আল্মারিগুলি পৌছিবার ्रान्ध्यारणय मायथान मिन्नी अक्ती नकीर्थ वादाव्यात्र मक हिल्ला निन्नी

কুদ্র ত্য়ার আছে। সেই পথে স্কটের শয়নককে পৌছান যায়। কল্পনায় যেন দেখিলাম, এই কক্ষে বদিয়া শনেক রাত্রি অবধি স্কট্ निथि তে ছिলেন। लिथा भिष इटेल, ऐिविल्य वार्जि निवाहेवात शूर्व, একটা মোমবাতি জালিয়া লইলেন্। তথন টেবিলের বাতিটি নিবাইয়া, মোমবাতির আধারটি হাতে করিয়া, সিঁড়ি দিয়া সেই वादान्ताय উঠिলেন। সমস্ত वादान्तां ि অতিক্রম কার্যা, সেই ত্যারটি श्रु निया भयनक एक डेठिया शिलन।

লক্হাট্ যথন প্রথম এডিনব্রায় স্কটের সহিত সাক্ষাৎ করিতে যান, তথন স্কট্কে এই ডেস্কটির সম্মুথে উপবিষ্ট দেখিয়াছিলেন। স্কট্-জীবনীতে তিনি তাহা বর্ণনা করিয়াছেন। এই ঘটনার চতুর্দণ বৎসর পরে,—ऋটের উইল্ দন্ধান করিবার জন্ম লক্হার্ট এই ডেস্কটি খুলিয়াছেন,—দে ঘটনারও বর্ণনা তিনি জীবনীতৈ করিয়াছেন। সে বর্ণনাটির মধ্যে স্কটের হাদুয়ের এমন একটি স্নেহস্কিতার পরিচয় পাওয়া যায়! তাহার অনুবাদ নিমে প্রকাশ করিলাম:---

"সমাধির পরদিন সন্ধ্যায় তাঁহার ডেস্ক থুলিক্না আমরা দেখিলাম সমুথেই একটা স্থানে কমেকটি ছোট ছোট জিনিষ সারিবদ্ধ করা রহিয়াছে, এমন ভাবে দেগুলি সজ্জিত যে প্রতিদিন প্রভাতে ডেস্কটি थूलिवामाळ किनियश्रिल हकू व्याकर्षण करत्र। किनियश्रिलित कालिका এই:-- करमकृष्टि मिकालात को । याश क्रेकननी विश्वास्त्र एविला ব্যবহার করিতেন°; একটা রূপার ধীতিদান (ব্যারিষ্টার হইয়া যে প্রথম পাঁচ গিনি ফি পাইয়াছিলেন তাহা হইতেই স্কটু মাতাকে এই কুদ্র উপহারটি কিনিয়া দেন); কতক্পালি কাগজের মোড়ক (স্বটের य जिल्ला कारेकिनोकि विनिद्धि यात्र काल नुस्र कित्री यात्र,— ভাহাদের চুল এই মোড়কগুলিতে রক্ষিত আছে; উপরে মাতার হস্তাক্ষরে তাহাদের নাম শ্রেণা); এবঁটা নম্মের ডিবা (ইছা স্কটের শিতা ব্যবহার করিতেন) ইত্যাদি।

এই কক্ষের পার্স্থে একটা ক্ষুদ্র কক্ষ, তাহার মধ্য দিয়া লাইবেরিতে প্রবেশ করিলাম। ইহা একটা প্রশন্ত কক্ষ। এখানে বিংশ সহস্র পৃত্তক রক্ষিত আছে। এই কক্ষের কিয়দংশ আসবাব চতুর্থ জর্জের প্রদন্ত উপহার। পৃত্তক ও এই উপহারগুলি ছাড়া, আরর্ধ অনেক ক্রিতিহাসিক ক্রপ্তব্য পদার্থ একক্ষে সঞ্চিত আছে। বৃহৎ জানালার কাছে একটা সো-কেশ আছে। তাহাতে অনেক ক্রব্য সঞ্চিত, কতক- শুলির নাম করিতেছি:—নেপোলিয়নের ব্লটিংবৃক্\* (ইহার মলাটে মধাস্থলে লাজাপালার মধ্যে রেশমে N. অক্ষরটা অঙ্কিত আছে); নেপোলিয়নের কলমদানী\*; মেরি কুইন্ অব্স্কট্সের শীল, তাহার পরিছদের ছিয়াংশ, হান্তদন্ত-খচিত একটা ক্রশ্ বাহা তিনি শিরশ্ছদের সমন্ত্র পরিধান করিয়াছিলেন); 'বনি প্রিক্ষ চার্লি'র কেশ; নেলসন্ ও প্রেলিংটনের ছুরী-কাটা; রব ররের পার্স; হেলেন ম্যাক্ত্রেগরের ব্রোচ্ প্রভৃতি। দেওয়ালেই একস্থানে একটা বৃহৎ চিত্র লম্বিত আছে— ভাছাতে সৈনিক বেশে স্কটের পুত্র এবং তাহার অধ্যের মূর্ত্তি আছিত।

ইহার পর 'ড্রিংর্ক্নম'। স্বটের ব্যবহারকালে এ ককটি যেরপ ভাবে সজ্জিত ছিল, এখনও অবিকল সেইরপ' রাথা আছে। দেওয়ালের চিত্রান্ধিত কাগজ পর্যান্ত পরিবর্তন করা হয় নাই। লক্হার্টের জীবন-ভিরিতের পাঠকগণ এই কক্ষের বর্ণনা নিশেষরূপ্নেই অবগত আছেন। তথন রেল ছিল না,—রাজধানী হইতে বহুদ্রে এই বিজনেও, স্কটের মুশালোকে আরুষ্ট হইয়া এত অতিথি-পতকের আবির্ভাব হইত যে, সময়ে

<sup>\*</sup> Waterloo द्रावं शृत दे ताब रेमक कर्क मूर् छ।

मभाग्न এই स्वरू वीम जवन्य लि एक्ट्रिक काथा हान मश्कूलान कतित्वन ভাবিয়া ব্যাকুল ইইতেন। সে সকল দিনে এই ডুয়িংকুম কভ না প্রমোদের রঙ্গভূমি হইয়াছিল।—এই কক্ষে কয়েকথানি মূল্যবান ও উৎকৃষ্ট ছবি আছে। বিখ্যাত মূর্ত্তিচিত্রকর রেবর্ণ-অঙ্কিত স্কটের ছবি, স্থাক্সন্-অঙ্কিত লেডি স্কটের ছবি, ওয়াট্সন্-অঙ্কিত স্কটজননীর ছবি প্রভৃতি।

ইংার পার্শ্বে অন্ত্রাগার (Armoury)। এথানে নানা সময়ের নানা িদেশের অস্ত্রাদি সজ্জিত আছে,—বঙ্গভাষায় তাহার বর্ণনা করা অসম্ভব। ख्यू करत्रकी ঐতিহাসিক অজ্ञের নাম করিব। ওয়াটালু যুদ্ধের পর, নেপোলিয়নের অঙ্গ হইতে যে এক যোড়া পিশুল খৃহীত হইয়াছিল, তাহা রহিয়াছে। তাহা ভিন্ন, 'বনি প্রিন্স চার্লি'র মৃগয়া-ছুরিকা, প্রথম **ब्लम**म्ब मृगमा-भागाधातः अथम ठार्लम् कर्क्क मन्द्रेता क्रिक अपख ভরবারি; লখ্লেভেন হর্গের চাবি (পাঠকগণ Abbot/ উপস্থাস স্মরণ করুন); স্কট্ স্বয়ং যথন - Edinburgh Light I tagoon দলভুক্ত ছিলেন, সে সময়ের তাঁহার ব্যবহারের বন্দুক, তরবারি প্রভৃতি; রবরয়ের তরবারি ও অন্তান্ত অস্তাদি আছে। ইহা ছাড়া, ওয়াটালু কেত্রে প্রাপ্ত একটা সৈত্যের Memo book এবং কলোডেন যুদ্ধের পর রণ-ক্ষেত্রে পতিত একজন মৃত হাইল্যাণ্ডার সৈন্তের পাকেটে প্রাপ্ত এক টুকরা oat cake রক্ষিত সাছে।\*

\* কলোডেন যুদ্ধের অব্যবহিত পূর্কে প্রিন্স চার্লস্ (বা ইংরাজাদের মতে Young Pretender) এর দৈল্পণ কিরূপ ক্র্যাকাতর হইরাছিল, ভাষা অরণ করিলে এই oat cake টুকুর করণ ইতিহাস কলনা করা যার। "Chambe 's History of Rebellion in Scotland" গ্রন্থে বর্ণিত আছে, প্রিন্ধ চার্লস্ কথন কলোডেন্ হাউসে শৌছিলেন, তখন তিনি খরং এক টুক্রা রুটি এবং একটু মদ্য ছাড়া আর কিছু পাইলেন না। সৈন্তগণের কুধাকাতরতা অবপত হইয়া হকুম দেন, "পার্ঘবর্তী আম সুট করিয়া থাদ্য সংগ্রহ কর।" তাঁহার আদেশ অনুষ্ঠারে থাদ্য সংগ্রহ কর। হইল, কিন্ত णाक भिव इहेबात भूरकेहे युकात्रक इत ;— मिल्रान कारात्र कतिवान करिकाल भाग नाहै।

শেষ-প্রবেশ-দালান (Entrance Hall)। এই দালানে, অক্লান্ত নানা দ্বারের মধ্যে, একটি গ্লাদকেনে, স্কট্ মৃত্যুর পূর্ব্বে যে দকল বস্ত্রাদি ব্যবহার করিয়াছিলেন তাহা রক্ষিত আছে। থাকী রঙের ট্রাউজারদ্য, ডোরা কাটা ওয়েই কোট, গভীর সব্জ রঙের একটা কোট, তাহার বোভামগুলি পিত্তলনির্দ্মিত, একটা ধ্সরবর্ণ বীবরলোমার্ত হাট্ (ইহার আকারটি প্রায় বর্ত্তমানকালের টপ্ হাটের মত) এবং এক যোড়া জ্তা। জ্তা যোড়াটি দেখিতে প্রায় একালেরই মত; বেশ ঝক্ করিতেছে; অনুমান করিলাম মাঝে মাঝে ব্রুষ করা হইরা থাকে। পার্থেই একটি কক্ষে, কাচের আল্মারির ভিতর স্কটের কতক শুর্বি ইড়ি এবং ধ্মপানের নানা আকারের পাইপ দেখিলাম।

এই গৃহৈর কোনও স্থানে একটি ভোজন-কক্ষ (dining room)
আছে—যেখানে স্কট্ জীবনের শেষ সময়টুকু অতিবাহিত করিয়াছিলেন। চুই থের বিষয়, আবেট্স্ফোর্ডের বর্তমান অধিকারিণী, সে
কক্ষটী সাধারণে জন্ম উন্মুক্ত রাখেন না। লক্হার্টের গ্রন্থে স্কটের শেষ সময়ের বর্ণনাটি এতই করুণোদ্দীপক যে, সেই কক্ষটি দেখিবার বড়ই আকাজ্জা ছিল কিন্ত তাহা পূর্ণ হইল না। আমাদের পাঠকগণের মধ্যে যাঁহ রা সে বর্ণনা পড়েন নাই, তাঁহাদের জন্ম একটী
অক্সবাদ নিম্নে প্রাকাশ করিতেছি।

লক্হার্ট লিণিথিতেছেন—"১৭ই সেপ্টেম্বর প্রভাতে আমি যথন বেশ পরিধান বাসরিতেছিলাম, নিকল্সন্ আমার কক্ষে প্রবেশ করিয়া বলিল তাহার প্রভুর সজ্ঞান অবস্থা উপস্থিত হর্মাছে এবং তিনি আমাকে এখনি দেখিতে চাহেন। আমি গিয়া দেখিলাম তিনি সম্পূর্ণ আত্মহ—যদিও একাস্ত ত্র্কল। তাহার চক্ষ্যুগল পরিকার ও শাস্ত, ডিলিরিয়মের অগ্নি সম্পূর্ণ নির্কাপিত। আমাকে দেখিয়া তিনি বলিলেন—লাক্হার্ট, হয়ত এক মিনিটের অধিক কথা কৃহিতে পারিব

ना। वरम, मनाठा बैभवायन धार्मिक इछ, मरकर्मभीन इछ। आयात्र অবস্থায় যথন উপস্থিত হইবে, তথন আর অন্ত কিছুই তোমাকে সাম্বনা मिट्ड পারিবে না। তিনি থামিলেন। আমি জিজ্ঞাসা করিলাম— माकात्रा ७ व्यानरक ডाकिया পাঠाইব कि ? তিনি বলিলেন—'না। তাহাদিগকে উঠাইও না। তাহারা সারা রাত জাগিয়াছে। ঈশ্বর তোমাদের সকলকে আশীর্কাদ করুন।' বলিয়া তিনি আবার প্রশাস্ত নিদ্রায় অভিভূত হইয়া পড়িলেন। ইহার পর আর তিনি সম্বিতের हिरु প্রকাশ করেন নাই—শুধু বোধ হয় এক মুহূর্ত্ত ছাড়া—যখন তাঁহার পুত্রেরা আদিয়া পোঁছিয়াছিল।

২ শে দেপ্টেম্বর বেলা দেড়টার সময় তাঁহার প্রাণনায় বহির্গত হয়। সে দিনটি অত্যন্ত পরিষ্কার ছিল। বেশ গরম ছিল—এমন কি সমস্ত জানালা খুলিয়া দেওয়া হইয়াছিল। সে দিন চতুদিক এত নিস্তব্ধ যে তুইড-তীরে নুড়ীগুলির উপর ঢেউয়ের আঘাত-শব্দুকু পর্যান্ত শুনা যাইতেছিল। শেষ মুহূর্ত্ত •উপস্থিত হুইলে আমরা ক্রাকলে বিছানার চতুর্দিকে নতজামু হইয়া বসিলাম। তাঁহার জ্যেষ্ঠপুত্র তাঁহার মুদ্রিত নেত্রযুগল চুম্বন করিল।"

অ্যাবট্দ্ফোর্ডদর্শন শেষ করিয়া আমরা বাহিরে আসিলাম। তথন হঠাৎ আমার মনে হইল, একটা ক্ষিয়ের সংবাদ লইতে ভুলিয়াছি; স্থতরাং আমি আবার আবিট্দ্ফোর্ডে ফিরিয়া গেলাম—সঞ্চিগণকে বলিলাম তাঁহারা অগ্রসর হউন, আমি শীঘ্রই আবার তাঁহাদের ধরিব। किन्छ चটनावশত: फिन्तिए जाबात विवय हहेगा शिव; जावात यथन वाहित्त वािनाम, उठका वस्ता व्यानक मूत्र हिनामा शिया हिन। আমি একাকী স্থতরাং মেলয়োজের উদ্দেশে যাত্রা করিলাম। একস্থানে व्यानिया ११ प्रहेिन विভক्ত रहेन, व्यानिवात मगत्र ভान कतिया পথ চিনিয়া আদি নাই, কিঞিৎ दिशाय, পড়িয়া গেলাম। পথ এমন

নির্জন যে কাহাকেও জিজ্ঞাসা করিয়া লইব সে উপায়ও এই। তথন উপরে দৃষ্টিপাত করিয়া দেখিলাম টেলিগ্রাফের তার, ছইটি পথের একটি দিয়া চলিয়া গিয়াছে। মনে মনে বলিলাম ঠিক হইয়াছে পাইড বহিতে এই তার ধরিয়াই যাইতে বলিয়াছে কিনা। স্থভরাং (म পথই **অবলম্বন করিলাম।** বলা বাহুলা ভুল করিলাম। কয়েক থানি গ্রামে গ্রামে পর্য্যান করিয়া যথন মেলরোজে উপনীত হইতে সক্ষম হইলাম, তথন বেলা আড়াইটা, বন্ধুগণের কোথাও উদ্দেশ নাই। कुथांत्र बन्धित । वक् बार्यिय वक्ष त्राथिया, किक्षिर बाहारतत बर्यस्य ব্যাপত ছইলাম। যে হোটেলে প্রবেশ করিলাম, সেখানকার ওয়েট্রেস্ বলিল কিয়ই পূর্কে অপর কয়েকটি ভারতবর্ষীয় ভদ্রলোক এখানে আসিয়া আমাকে অন্বেষণ করিয়া গিয়াছেন। অনুমান করিলাম, **टिणान (गालहे डाँहामित माकार পाहैय। (डाङनास्ट रिणान गित्रा** তাঁহাদের দেখা পাইলাম। তাঁহারা জিজ্ঞাসা করিলেন "এত দেরী ষে ?" আমি ঠাণীরভাবে বলিলাম "একটা সর্টকট্ নিয়ে আসা গেল।" পরে বলিলাম, অনেক গ্রাম দ্রাম দেখিয়া আদিতে বিলম্ব হইয়া গেল। হারাইয়া ষ্ওেয়ার কর্থাটা আর কেমন করিয়া স্বীকার করি !

তথন বেলা ৩টা বাজিয়া গিয়াছে। বন্ধুরা ইতিমধ্যে মেল্রোজ্ জ্যাবি দেখিয়া লইয়াছেন। তিনটা কয় মিনিটে এডিপ্রায় ফিরিয়া জাসিবার একটি ট্রেণ আছে, বন্ধুরা তাহাতেই ফিরিতে প্রস্তুত হইয়াছেন। ইহার পরের স্টেশনে—এডিনপ্রার উন্টাদিকে, নামিলে ড্রাইপ্রায় যাওয়া যায়। ড্রাইপ্রা জ্যাবিতে ক্টের সমাধি আছে। সেদিন সন্ধ্যাকালে এডিন্ত্রার একটা নাট্যশালার হাইল্যাও-নৃত্য হইবার কথা ছিল, আময়া পরামর্শ করিয়াছিলাম সময় মত ফিরিয়া সেটা দেখিতে বাইব। এখন অবস্থা এইরপ দাঁড়াইল—ড্রাইপ্রা

দিছে হয়। বন্ধুরা পূতা দর্শন করিতে বিশেষ উৎস্ক ছিলেন, তাঁছারা এডিনব্রায় • ফিরিলেন। স্থামি একাকী ট্রেণের অপেক্ষায় ষ্টেশনে বিদিয়া বহিলাম।

ট্রেণে করেক মিনিট মাত্র; যথন St. Boswell's এ নামিলাম, তথন চারিটা পাজিল। ষ্টেশন হইতে জ্রাইব্রা অ্যাবি এক ক্রোশ পথ। পথ জিজ্ঞাসা করিয়া ক্ষিপ্রপদে অগ্রসর হইলাম। টুইডের উপর একটা দেতু মাছে তাহা পার হইয়া ড্রাইব্রায় যাইতে হইবে ইহা আমার গাইড্ वूक लिथा हिल। क्रिय दृष्टेर छी त व्यानिया (भौहिलाय। ननी है। অতি কুদ। প্রত্নে ভবানীপুর ও আলিপুরের মধ্যবতী আদি গঙ্গার অপেকা অধিক বেণী হইবে না। গভীরতা নাই বর্গিলেই হয়। একটি ছাগলও অনাগ্রাসে অনেক স্থানে ইাটিয়া পার হইয়া যাইতে পারে। সেতুর নিকট আসিয়া দেখিলাম নোটিদ্ টাঙ্গানো রহিয়াছে "সেতুটি বড় ক্ষীণ একতা দশ জনের অধিক ইহার উপর অরোহণ করিবে না।" যথন "দেতুর" মাঝামাঝি উপস্থিত, কইইলাম, তথন উक यञ्जि এक्रभ इनिएं नाशिन ए, जिनाम जमुरहे कि भिर्म देहेष প্রাপ্তি আছে না কি ?

याश रुडेक, निर्किष्म ত পার रुख्या शिल। मिथान रुरेड मिथ मिनिए प्रे याविष्ठ (भौहियाम। ইश এक ए विज्ञालन यन्तित ;— षष्टेय (हन्तित नेमग्र इहेट्डि ख्यावत्निय खक्र माँ ए। हिया আছে। চতুর্দিকের স্থান বেশ প্রশস্ত<sup>\*</sup>;—জঙ্গলের মত। ভিতরে थादिन कित्रिया, ऋष्टित नमाधि व्यक्षिय कित्रिक नाशिनामं। এकिन कीर्न "আইল" আছে (St. Mary's Aisle), তাহা তুই ভাগে বিভক্ত। এক ভাগের রেলিংগুলি কুদ্র কুদ্র—তাহাতে কতিপর অজ্ঞাত ব্যক্তির नमाधि चाह्य। जञ्ज ভাগের রেলিংগুলি উচ্চ,—তাহার ভিতরে ফট ও তাহার পত্নী,—তাঁহাদের জ্যেষ্ঠপুত্র, এবং জামাতা লক্হার্টের সমাধি

রহিরাছে। আমি রেলিংরের নিকট দিড়াইরা মন্তর্ক অনার্চ্ন করিশাম।
এই ভাবে কিরৎক্ষণ দাড়াইরা রহিলাম। পরে কাগজ পোন্দাল বাহির
করিয়া, সমাধির উপরের লেখাগুলি নকল ফরিয়া লইলাম। স্বটের
স্তার সমাধিটীই আমার নিকট হইতে সর্বাপেক্ষা দূরে ছিল। অন্ধকার
হইরা আসিতেছিল;—দূরের সে লেখাগুলি ভাট দেখা যাইতেছিল না।
আরও ছই একটা যাত্রী—তাহারা রেলিংরে আট্রেলি করিয়া পড়িতে
লাগিল;—কিন্তু আমার হিন্দুসংস্কার আমাকে সে প্রিত্র স্থানে পদস্পর্শ
করিতে নিষেধ করিল। আমি কন্তে, উক্লু সন্তুচিত করিয়া, বিলম্বে
তাহা পাঠ করিলাল। সে সমাধিগুলির অবস্থান এবং লিখিউল্লা নিয়ে
প্রদান করিতৈছি:—

DAME MARGARET CARPENTER
WIFE OF
SIR WALTER SCOTT OF ABBOTS
FORD, BARONFT DIED AT
ABBOTSFORD MAY, 15, A.D. 1826.

SIR WALTER SCOTT, BARONET DIED SEPTEMBER 21, A.D. 1832.

HERE AT THE FEET OF
WALTER SCOTT LIE THE
MORTAL REMAINS OF
JOHN GIBSON LOCKHART
HIS SON-IN-LAW
BIOGRAPHER AND FRIEND
BORN 14 JUNE 1794
DIED 25 NOV. 1854.

LIEUTENANT COLONEL SIP, WALTER SCOTT OF ABBOTSFORD, SECOND BARONET.

DIED AT SFA 8 FEBRUARY 1887
AGED 45 YEARS. HIS WIDOW
PLACED THIS STONE OVER
HIS GRAVE.

লেখা শেষ হইলে ভারতবর্ষে স্কৃতিজ্ঞ বন্ধুর্গণকে উপহার পাঠাইবার জন্ম, এই সমাধি হইতে কিছু স্মরণচিত্নের অমুসন্ধান করিলাম। রেলিংমের নিমে সবুজ ঘাস জন্মিয়াছিল। সেই ঘাস কতকগুলি উৎপাটন করিয়া লইলাম। সেগুলি যত্ন করিয়া একটা থামে ভরিয়া রাখিলাম।\* -

সন্ধা হইয়া আসিল: আকাশের আলোক ক্রমে ক্ষীণ ক্ষীণতর इरेग। সবুজ গাছপালা কৃষ্ণবর্ণ ধারণ করিটে লাগিল। সমাধিমঞ আমি বারত্রয় প্রদক্ষিণ করিয়া, মৃত্পদে ষ্টেশনে ফিরিয়া আদিলাম।

শ্রীপ্রভাতকুমার মুখোপাধ্যায়।

ভেদিয়া পাষাণ-কায় তুলি মূহতান हेक्सभन्न भित्र कार विशिष्ट निर्वात ।• मित्र कि स्मात मुना! व'श्र मशन् আছে কিছু মানি, युपि शप्तायत'পর (ভগবৎ-প্রেম বিনা কঠিন-পাষাণ!) আচম্বিতে ভক্তিধারা হয় বহমান।

## শ্ৰীললিত মোহন মিত্ৰ

\* ছু:খের বিষয় আমার অভিপ্রায় সফল ইয় নাই। ঘাসভর। খামটি এডিন্ত্রায় আমার লিখিবার টেবিলের উপর রাখিয়াছিলামু। আমার অমুপস্থিতিতে একদিন व्यामाराष्ट्र मानीि टिविन वाफ़िट व्यानिया—व्यावर्क्कना मन्न कत्रिया चानलन व्याखन क्लिया पियाक्ति। क्लिथक।

# (वटम शृथिवीत गणि।

### পৃথিবীর গতিদম্বন্ধে প্রাচীন ভারতের অভিজ্ঞতা।

পরিজ্ঞাত ছিল, তাহাই আমি বর্ত্তমান প্রবন্ধে দেখাইব।

বেদে দেখিতে পাই নিম্নলিখিত শব্দগুলিতে পৃথিবী বুঝাইয়া থাকে এ যথা—

১ গো, ২গ্মা, ৩ জ্মা, ৪ ক্ষা, ৫ ক্ষা, ৬ ক্ষমা, ৭ ক্ষোণি, ৮ ক্ষিতি, ৯ অবনি, >০ বিপ, ও০১১ গাতু, ১২, নিখ তি 👍

এই শব্দ সমূহের অর্থ পর্য্যালোচনা করিলে দেখিতে পাওয়া যাইবে, পৃথিবীর গতি আছে, বলিয়াই সেই সকল শব্দ পৃথিবীর বাচক হইয়াছে।

১। গোল ফ পৃথিবীকে বুঝায় কেন ? ইহার উত্তরে আচার্য্য যাস্ক বলিয়াছেন :—

****	aliterija.carea.carea	<b>3</b>	ৠ. স.	٥٥.	٠٥.	٥٥,	١٥.	৩১.	७,		Antonios Antonios	
		२।	<b>)</b> )	٥٥,	88.	ર,	<b>٥٠.</b>	১২.	<b>4</b> ,			
		91	<b>&gt;</b> >	'* <b>&amp;</b> .	<b>¢</b> ₹.	٠٥৫,	٩,	<b>93</b> .	٥,	<b>b</b> .	١,	22
		8	**	٥٥.	<b>43.</b>	٩,	۱٩.	89.	₹,			
		<b>e</b> 1	"	۶,	<b>26.</b>	٩,	y**					
		<b>6</b>	"	₹.	\$8.	33,						
		. 4 1	19	<b>&gt;</b> 0,	<b>ર</b> ર.	à,	, b.	ૂર્ક,	٥٥,			
		41	"	€.	٥٩.	8,	<b>હ</b> ,	ેર.	۶۵,			
ı		<b>»</b> 1	<b>&gt;</b> 7	١.	<b>343.</b>	૭,	١.	\$80,	٠,			
,		1 0<	<b>&gt;&gt;</b>	٥٠.	۹۵. ۱	ં ૭,	<b>૭</b> ,	e,	¢,			
r		>> 1	17	¢.	<b>9</b> \$.	٥٥,	. 3.	<b>306.</b>	₹,			

ইহা ভিন্ন বেদে আরও করেকটা পৃথিবীর নাম পাওরা যার, ক্তি ভাহা বর্ত্তমান

"क्रीति शिथिवा। नामरथमः खवर्षि, यम् मृत्रःगठा खवि, यक्ठाचाः ভূতানি গচ্ছন্তি গাতেবোঁকারো নামকরণ:।"\*

"গো" এই শব্দ পৃথিবীর নাম, (১) যেছেতু ইহা দরপথে গমন করে, (২) যেহেতু ইহাতে জীবগণ বিচরণ করে। "গম্" ধাতু বা "গতি" (গা) ধাতুর উত্তর "ও'' প্রত্যের করিলে "গো'' পদ সিদ্ধ হয়।‡

যাস্করত গো শব্দের প্রথম নির্বচনে (যেতে ইছা দূরপথে গমন করে) স্পষ্টই বুঝা যাইতেছে যে, পৃথিবীর গতি আছে বলিয়া বৈদিক আচার্যাগণের জ্ঞান ছিল।§

- \* নিরুত্র পূ. ষ. ২ অ. ২ পা. ১ ম.।
- 🕇 "ঘত্মাদ্ ইয়ং দূবম্ অধ্বানং প্রতি গতা ভবতীতি।" টিকাকার তুর্গাচার্যা।
- ‡ অভএব পাণিনিও স্বস্তে লিখিয়াছেন—"গমে র্ডোস" (৫০২.৬২.)

🖇 ভগবান যাস্ক "নিঘণ্ট্র" ভাষ্যকার। নিঘণ্ট্ও তাঁহার কৃত ভাষা "নিক্লন্ত" নামে প্রচলিত। নিঘণ্টতে কোন বস্তুর কি কি নাম, কোল ধাতুর কি অর্থ ইত্যাদি প্রতিপাদক কতকগুলি শব্দমাত্র উল্লিখিত আছে। আচার্য্য বাস্ক সেই শব্দপাঠের कठिन कठिन कडकछिन मस्मत्र आं । প্রত্যাদি বিভাগ করিয়া স্থ্যাণ অর্থ নির্বচন করিয়াছেন। স্বন্দসামী, তুর্গাচার্য্য প্রভৃতি যাস্কীয় ভাষ্যের "ব্রিথাকের্দ্রা। দেবরাজ প্রভৃতি করেক জন নিঘণ্ট তে উল্লিখিত সমস্ত শব্দেরই সংক্ষেপে নির্বচন করিরাছেন। ইহাঁরা সকলেই যান্ধ হইতে বহু পরবর্তী। ব্যাখ্যা করিতে বদিয়া ইহাঁরা যান্ধমভকে উল্লভ্যন করিতে পারেন নাই, বিশাদ করিতে চেষ্টা করিরাছেন মাত্র। বোধ হর, তাঁহাদের তাদৃশ চেষ্টায় যাক্ষমত অনেক স্থানে বিকৃত্ হইরা গিয়াছে। এই গোশকের নির্বচনেই তাহার পরিচয় পাওয়া যায়। যাক্ষ বলেন "দূরে গমন করে वित्रा পृथिवी (গা।'' ऋमश्रामी 'ভाश श्रीकात्र कत्रिएं চাহেन ना, ভিনি वलम পৃথিবীর বস্তুতঃ গতি নাই, কিন্তু ধৈমন আত্মা, আকুশে প্রভৃতির দূরদেশও উপলব্ধি হর, পৃথিবীরও দেইরূপু হয় বলিয়া, ভাষাকারু, ভাহার গতি আছে বলিয়াছেন। ("मूत्रः गडा ভवडि---वाञ्चाकानामिव मृत्यश्र्णानिक विया वावशतः।")

দেবরাজ স্বন্দ্রামীর মতে মত দিয়া কথাটা আর একটু স্পষ্ট করিরা বলিয়াছেন, বাহলাভরে তাহা দেখান হইল না। তবে এ সম্বন্ধে তিনি যে আর একটা কথা বলিয়াছেন, তাহার টুলেধ না করিয়া থাকা যায় না। তিনি পৃথিবীর গতি বিচার করিয়া (সম্ভবতঃ তাহাতে নিজেই সম্ভষ্ট হইতে পারেন নাই) পশ্চাৎ বলিয়াছেন— গা ধাতুর উত্তর ও প্রত্যর করিরা, "গো" পদ হউক, কিন্তু দেই গা ধাতুর অর্থ "গতি" नरह—"खिंडि"। व्यञ्जव পृथिवीरक खब कत्रा यक्ष विनिन्ना, व्यथवा পृथिवीरञ थाकिना

২। গ্রা এই পদটা গম ধাতৃ হইতে উৎপন্ন ইইয়াছে \* "প্রাতি" বা "গম্" ধাতৃর অর্থ গতি। "..জসতি গমতি গতি কর্মাণঃ।" নি. ২অ. ই৪খ.। অত এব গো পদের যে ব্যুৎপত্তি, গ্রা পদেরও তাহাই—যে দ্রে গমন করে, অথবা যাহাতে জীবগণ বিচরণ করে, তাহার নাম গ্রা—পৃথিবী। আচার্য্য মাধব । এসানে বলিয়াছেন— গ্রা গছতেঃ, গছতেঃ ইীয়ম্"— "গ্রা গম্ ধাতৃ হইতে হইয়াছে. কেননা এই পৃথিবী গমনশীলা।

লোকে ন্তব করে বলিয়া, তাহার নাম "গো।" গোডের্বা স্তুম্বস্থা, গীয়তে সূয়তে-হসারিতি, গারন্তি বাস্তাং স্থিতা ইতি গৌঃ।)

এই বুখা কতদ্র ঠিক, পাঠকবর্গ তাহা বিবেচনা করিয়া দেখিবেন। বেদে "গাতি" বা "গাঁ" ধাতুর অর্থ গতি। নিঘটুতে তাহা স্পষ্টভাবে লিখিত আছে। বধা—"...চততি, অত্তি, গাতি...দাবিংশশতং গতিকর্মাণঃ।" নিঘটু ২অ. ১৪খ.। উদাহরণ যথা—"...পৃতেব স্বধিতিঃ শ্রুতির্গাৎ" খ. দ. ৫.২-৪.৪.। "গা" বা "গাতি" ধাতুর অর্থ যে স্তুতি, বেদে তাহা পাওয়া যায় না। "গায়তি" বা "গৈ" ধাতুর অর্থ আর্চনা হয়, তাহা পাওয়া যায় (যথা "গায়ন্তিখা গায়ত্রিণঃ" য়. দ. ১.১১৯.১.) ও নিঘটুতেও আছে (৩অ. ১৪খ.)। গোপদের নির্বাচনে যাস্ক "গাতি" বলিয়াছেন, "গায়তি" বলেন নীকাল আরও, আচার্যা যাস্ক যদি অদাদি গণীয় স্তুত্রর্থক "গা" ধাতুর উল্লেখ করিয়া থাকিতেন, তবে তাঁহার "অদাপি পশুনামেহ ভবতি এতমাদেব" —(এই ধাতু ছারা এই মর্থে নিপায় গো পদ পশুরও বাচক হয়) — এই বাক্য কিরূপে সঙ্গত হইতে পারে ? পশুবাচক গোশক যে অত্যর্থক ধাতু হইতে হইয়াছে, ডাহা এ পর্যাস্ক কেহু অধীকার করেন নাই।

বৈদিক শব্দ নির্নুর্ন যথাসন্তব বৈদিক ধাত্রথ দিয়াই করা উচিত। দেবরাজ্ব বছস্থানে তাহা অনুসরণ করেন নাই। আমাদের আলোচ্য অপর কয়েকটা শব্দের নির্বচনেও দেব-রাজ এই প্রণালী অবলম্বন করিয়াছেক। বলা বাহল্য পূর্ব্বোক্ত নিয়মও তাহা কর্তৃক অননুস্ত হয় নাই। কৌতুহলী পাঠক স্বয়ং তাহা পেথিয়া লইবেন।

স্বন্ধ সামী ও দেবরাজের ব্যাখ্যার ব্ঝা যায় যে যাস্কের সময়ে পৃথিবীর গভিছে শীকৃত হইলেও তাঁহাদের সময়ে তাহাতে বিষম আপত্তি ঘটিয়াছিল। রুরোপেও ঠিক এইক্লপঁই বাদ প্রতিবাদ বহুদিন যাবত (কলম্পের সময় পর্যান্ত) চলিরাছিল।

\* অনাবশ্যক বোধে স্ত্র উল্লেখ করিয়া সাধন প্রণালী দেখান ছইল না, ও পরেও হইবে না।

† এই সাধব সামণ মাধব হইতে প্রাচীন, পিবরণ গ্রন্থকার বেদ ভাষ্যকর্তা মাধব ভট্ট ও ব্রীবেকটাচার্যপুত্র নিরুক্তভাষ্টোকাকার মাধব, এই ছুমের অক্সভর। ক

- ত। জ্বা পদ জম বা জমতি ধার্চ হইয়াছে ব বেদে জমতি ধাত্র অর্থ গতি। শুর্ব বিং প্রবিং। গতার্থক ধাতৃ হইলেই অর্থনির্বচনপ্রণালী গোপদের ভাষে ব্রিতে হইবে। †
  - ৪.৫.৬.৮.। ক্মা, ক্ষা ও ক্ষিতি এই পদ চারিটী গতার্থক ক্ষি ধাতুরারা স্ক্রিক করিতে পারা যায়।‡
  - ৯। "অবনি', অবতি বা অব্ ধাতু হইতে হইয়াছে। অক্ ধাতু নিধণ্ট,তে গত্যৰ্থ ধাতু মধ্যে পঠিত।§
  - ত ১০। "রিপ," গত্যর্থক রেপৃ ধাতু হইতে উৎপন্ন।
    - ১১। "গাতু"— शम् धाजू रहेराजरे निष्पन्न।
- ১২। "নিশ্ব তি" পদের হুইটী অর্থ, পৃথিবীঞ্চ কষ্টপ্রাপ্তি ক্র আচার্য্য যাস্ক বলিয়াছেন—

"নিখাতিঃ নিরমণাৎ, ঋচ্চতেঃ কষ্টপ্রাপ্তিরিতরা।"

ভূতবর্গকে আরাম প্রদান করে বলিয়া পৃথিবী নিখ তি, (নি – রম্+
জিন্)। কপ্তপ্রাপ্তিবাচক নিখ তি নির্ পূর্বক খা ধাতু হইতে
নিপায়।

আচার্য্য যাম্বেরই নির্বচন হইতে পাওয়া গেল—নিঋ তি নি—ঋধাতৃ হইতে নিষ্পন্ন হইতে পারে। নিঘণ্ট তে ঋ ধাতৃ গতার্থ মধ্যে পঠিত। অতএব পৃথিবীর অন্তান্ত নামগুলির স্থায়, "নিঋ ভি" পদেরও "নি—

<sup>\*</sup> নিঘণ্ট্ ৩ অ. ১৪খ, নিক্কত ৩ অ. ১ পা. ৬ খ.

<sup>।</sup> দেবরাজ এখানে জমু অদান, জনী প্রাপ্তিাবে ইত্যাদি আরও করেকটী ধাতু স্থারা জমা পদ সিদ্ধ করিলী, ধাত্যামুসারে অর্থ করিয়াছেন।

<sup>‡</sup> দেবরাজ হিংসার্থক কি, ক্ষরার্থক কি ও সহনার্থক ক্ষম প্রভৃতি ধাতু দারা এই পদগুলির সাধন ক্রিলেও গতার্থক কি ধাতু পরিত্যাগ ক্রিতে পারেন নাই।

৪ দেবরাজ অব্ ধাতৃ হইভে "অবনি" হইয়াছে এলেন, তবে তিনি ধাতৃপাঠ প্রভাৱ অমুসারে অব্ধাতুর গতি, তৃথি প্রভৃতি ১৮টা অর্থ কলনা করিয়া ব্যাবোগ্য অর্থ করিয়াছেন।

থা + জিন্," (কণ্ঠ বা অধিকরণ বাচ্য) এই নির্বানন করিলে ব্যেধ হয় কোন অসকতি হইতে পারে না।\*

এই সমস্ত আলোচনা করিয়া আমার\ ধারণা হয়, পৃথিবীর গতি ক্ষবতপূর্বে ভারতীয় আর্যাগণের বিশেষরূপে বিদিত ছিল, অক্তথা এক গতিক্রিয়া লইয়া তাঁহারা পৃথিবীর এতগুলি নাম করিছেন না।

আচার্য্য যাস্কের কথার বোধ হয়, তাঁহার সদ্মায়েও† পৃথিবীর গতি সম্বন্ধে লোকের কোন বিপ্রতিপত্তি ছিল না। তাঁহার পরে, সন্দেহের উৎপত্তি হইয়া থাকিবে। এই জন্মই তাঁহার পরবর্তী স্বন্দ্রামনী তাঁহার (যাস্কের) "যদ্দূরংগতা ভবতি'' এই কথার উপর আন্তা স্থাপন না কা রিম্ন নানার্কী ক্রুকলিত অর্থ করিয়াছেন।‡ তাহা পাদটীকাতে দেখান হইয়াছে। বাস্কের বহু পরবর্তী হইলেও আচার্য্য মাধব (পূর্ব্বোক্ত) স্পষ্টই বলিয়াছেন যে পৃথিবী চ্লিতেছে—"গ্যা গচ্চতেঃ গচ্ছন্তী হীয়ম্।" ইহাও

<sup>\*</sup> ক্ষানা পৃথিবীর গতিবাদিগণের অত্যন্ত বিপক্ষে ছিলেন, বোধ হয়। এই জ্ঞাই তিনি যাকৈ "নিখ তি নিরমণাৎ" এই কথার ব্যাখা করিতে গিয়া লিখিয়াছেন "নিরমণাৎ নিশ্চলত্বেন অবস্থানাৎ ইত্যর্থঃ।" নিরমণ শব্দের নিশ্চলরূপে অবস্থান এই অর্থ টী কি ক্টুকল্পিত নহে? দেবরাজ ক্ষান্থামীর মতে মত দিয়া বলিতেছেন— "নিনিশ্চলত্মাহ ন অনবস্থানম্" (নি উপসর্গ পৃথিবীর নিশ্চলত্ব বলিতেছে, চঞ্চলত্ত নহে।) দেবরাজ এখানে বৈয়াকরণ পক্ষ অবলম্বন করিয়া বলেন—নির্—ঋ+তিন্দ্রিশিতি ইহার অর্থ—"নিশ্চলবদ্ অবতিষ্ঠতে" (নিশ্চলের স্থায় থাকে।) তবেই বুঝা যার না বি—পৃথিবী নিশ্চলের স্থায় থাকে, ক্তিও বস্ততঃ নিশ্চল নহে?

<sup>†</sup> যাক্ষ পাণিনির বহু আচীন। সম্ভবতঃ খ্রীঃ পুঃ ৪ শতাকী বা তাহারও পূর্বে হইবে।

<sup>‡</sup> যাস ভাব্যের অক্সতম টিক কার তুর্গাচার্য এই ককোর কথা শ্রুত অর্থ করিয়াছেন। স্বন্ধামী প্রভৃতি ব্যাখ্যাকারগর্গ বাঙ্গের বিভীয় নির্বচনের (যচ্চাসাং ভূতানি গছান্ত) উপরেই জোর রাখিয়া অক্সান্ত নাম নির্বচনের অর্থ করিয়াছেন। সার্গাচার্যাও এই পথের পথিক। তিনি "…অধন্যো অথবা দিব…" (ঋ স. ৮. ১.১৮.) ইত্যাদি ঋকের ব্যাখ্যার পৃথিবী বাটী জ্বমা শন্দের ব্যুৎপত্তি লিখিরাছেন— "জমন্তি গছন্তান্তাম্ ইতি জ্বমা।" তিনি "জমতি গছতীতি জ্বমা" বলিতে সাহস্ক করেন নাই।

পূর্বে দেখাইয়াছি। "গচ্ছতি-ইতি জগণ" এই বাক্যও বহু প্রাচীন বলিয়া বোধ হয়।

वह मःश्रु क कार्य है मिथि ए भारे, भृषिवीत नामावनीत मर्था "অচলা" ও "श्रिता" অশুভ্য। পৃথিবী চলে না—श्বির থাকে বলিয়াই व नाम प्रहेंगे, रहेम्राष्ट्र, मत्मर नारे, किन्न देशिक अणिधान (निषणे एड) वे इड्रे भरमद्र कान शङ्का नारे। वे इड्रे भम्यू उन्धान বৈদিক বচনও এ পর্যান্ত দেখা যায় নাই। থাকিলে অন্ততঃ নিঘণ্টুতে वै। याञ्चीय निकृटक थाकिवात वित्नय मछावना ছिन। ইহা दाता ও বোধ হয় বেদের বছকাল পরে পৃথিবীর স্থিরতাদিগণ গো প্রভৃতি পৃথিবীর গতিমত্ব প্রতিপাদক নামগুলির পরিবর্ত্তে সম্পূর্ণ শিপরীত ঐ नाम इरे कि ब्रिंग कि दिन।

"গো জ্যা" প্রভৃতি পৃথিবী বাচী যে শব্দগুলি উল্লিখিত হইয়াছে, তাহা সমস্তই ঋগ্বেদে দেখিতে পাওয়া যায়। আধুনিক প্রাচ্য ও প্রতীচ্য উভয় প্রত্তত্ত্বিদ্গুণের মতে ঋগ্বেদই পৃথিবীর সর্ধ্ব প্রাচীন ব্ৰাহ্মণপণ্ডিতসম্প্ৰদায়-মতে ত বেদ মাত্ৰই অনাদি। পাঠকগণ বিবেচনা করিয়া দেখিবেন, অতি পুরাকাংল ভারতীয় বৈদিক আচার্য্যগণের পৃথিবীর গতি সম্বন্ধে অভিজ্ঞতা ছিল কি না ?\*

শ্রীবিধুশেখর শাস্ত্রী।

<sup>\*</sup> এই প্রবন্ধটা ইংরাজ পঞ্জিতের গবেষণা-নিরপেক্ষ মৌলক প্রবন্ধ বলিয়া व्यक्षिक व्यानत्रवीत्र। छीः मः।

# कूवलश्रा।

( (वीक भाश)

(वव्वन कुञ्जनिदत नीत्रव नक्ताप्र স্থবণ রঞ্জিয়া উঠে কিরণ ছটায়; পক্ষিগণ শৃত্যমাঝে করি কলরব कूलांग्र পिषा र'ल निक्ल-नौत्रव ; প্ৰন বহেনা আর—পাতা নাহি নড়ে, গ'গন আগ্রহে নিল তারকার টিপ चरत्रं चरत भूताकन। ज्यानिन अनीभ; পুরুরির অদূরে শোভে গৌতমের মঠ - পুতারি পাশে ওই বুঝি খ্রাম নদী তট;— भारती क्रम कित्र वार्व जर्गी, श्रुमरके हक्षम इ'म विमुद्धा ध्रुगी। नामि जीत्र धीत्र धीत्र स्नती कामिनी চলিল পথাক ধরি অলস গামিনী; আনন শুরুর তরে পত্রপুট,ভরি वादि न'द्र (य ्डिहन; महमा मन्द्रि' জिक्कामिन "ওংগা ভদে, 'हन अक्षकारत्र **अकंकिनी वनशरथ थूँ जिल्ल काशादा ?"**• 'क जूमि ?' ज्ञानन गाम—जिकू जामि मित, ् व निक्षि-भात्र। मत्व श्वरूभम मिव।"

'खक्क कि ?'—"मःभात यात्यं मर्वाजाती यिनि কর্ম যার নিত্যব্রত মহাজ্ঞানী তিনি ভগবান বুদ্ধদেব, নিৰ্কাণ আশায় বিরাজিত; এস যদি হেরিবে তাঁহারে।"

কহিল 'আসিব আমি প্রহরেক রাতে একাকী আশ্রমে; যেন তাঁহার সাক্ষাতে দিওনা এ পরিচয়, হে আশ্রমবাসি।'---नर्खको फित्रिया (शन ; हिनन मन्नाभी--यत्न नाहि पिल शान करणरकत् जात कि रङ्जू व्यामित्व नात्री निनीथ প্রহরে।

তথন পঞ্চমী শশী ভেদিয়া তিমির উঠিয়াছে পূর্বাদিকে; সাজায়ে শরীর কুস্থমের আভরণে মোহিণীর রূপে কুবলয়া বনদেশে আসি চুপে চুপে माँ फ़ारेन यथा नौथ मूथत निर्वात यात्रिष्ट निर्माल धात्रा मना यात्रयात्र।

অন্তরে অনন্ত তৃষা, গলে ফুলমালা विश्वेष्ट्रश्री क्रथ क'रत्र এक वांत्र वांना ' मगर्क ठाहिन ७४ निक (मर्'भरत ; জলদ ভাসিয়া গেল কণেকের তরে স্নীল অম্বর তলে, প্রামল ধরার भारिनी ভাবিল 'আজি যোরে কে হারার।' ধীরে ধীরে প্রবেশিল নীরব আশ্রম্মন্ত্রেমান তপোবন অতি মনোরম;

একপদ—ত্রপদ—আর নাহি চলে,—
ধরা যেন নাহি আর আছে পদতলে;
যে গর্র্ব পূরিয়া ছিল ক্ষুদ্র বক্ষ তার
নিমেযে আনিল বহি সহশ্র ধিকার!

এ মহা সৌন্দর্য্য মাঝে শুধু তার মন
কি ঘোর ক।লিমা মাখা দেখে প্রতিক্ষণ;
ধরাসাথে গগণের চিত্ত বিনিময়
দেখি তার মনে যেন কি হ'ল উদয়;—
ওই শনী, ওই তারা, এই ধরা মাঝে
কুরূপ্য তাহার চেয়ে কে আজি বিরাজে!

অদুরে তাপস মূর্ত্তি হইল উদ্দর

বারেক নেহারি তাঁরে মানিল বিশ্বর,
অন্তরের শৃশু যাহা পূর্ণ হল সব
শুপ্তরি উঠিল মনে যা ছিল নীরব
আপনি নমিল শির চরণে তাঁহার—
মোহিনীর রূপ এল ফিরিয়া আবার।

वीवीदतशत सूर्थाभाशांश।

# नातायंगी।

#### षिठौय পরিচ্ছেদ।

বিদ্যালী বাদ্যালী বাদ্যাল কর্মাল বিশেষ পরিচয় দেওয়া আবিশ্রক বোধ করিলাম না।

স্বাদ্যালী বাদ্যাল ভালের মধ্যে প্রধান ছিলেন রতন শির্তন বাদ্যার কর্মস্থান। ছোটনগেপুরই রতন রামের কর্মস্থান বিশেষ পরিচয় দেওয়া আবিশ্রক বোধ করিলাম না।

অদৃষ্টস্ত্তে আরুষ্ট হইয়া বীরচা রে সহিত তিনি সৌহার্দ্যবন্ধনে আবদ্ধ হন। প্রীক্ষেত্রে তীর্থ করিতে যাইয়া রাজার সহিত তাঁহার প্রথম সাক্ষাৎ—দেই প্রথম সাক্ষাতেই উভয়ের সথ্য। ইহার পর রতন আর দেশে ফিরিলেন না। রাজার অন্বরোধে অনস্তপুরই তাঁহার ভাবীবাসস্থান নির্ণতি হইল। রতনের সংসারে কেই ছিল না।

গ্রতন যখন প্রথমে অনম্ভপুরে আসেন, তখন ত্রিনি নবজাতশাশ্রু যুবা।
এখন তাঁহার ষষ্টি বর্ষ বয়:ক্রম। এই সময়ের মধ্যে তিনি রামচক্রকে
মানুষ করিয়াছিলেন। নিজে মনোমত কল্পার সন্ধান করিয়া তাহার
সহিত রামচক্রের বিবাহ দিয়াছিলেন। এখন স্বীবার মাতৃপিতৃহীনা
নারায়ণীর ভার তাঁহাকে গ্রহণ করিতে হইয়াছে।

কেমন করিয়া দরিদ্র বাঙ্গালী ব্রাহ্মণ একজন কোটীপতির স্থিত্ব লাভ করিল, এ রহুস্ত ব্ঝিবার শক্তি আমাদের নাই। এ রহুস্ত চিরকালই রহুস্ত থাকিবে। জগতে এরপ উদাহরণ হল্ল ভ নয়।

বীরচক্রের অন্তঃপুরেও রতনের প্রবেশাধিকার ছিল। রাণী মধুমতী রতনকে পিতৃজ্ঞানে ভক্তি করিতেন। ধর্মকার্য্যে পরামর্শ প্রয়েজনে রাজার ন্তায় তিনিও ব্রাহ্মণের উপদেশ গ্রহণ্ধ করিতেন। আসল কথা

मानद्राणम जीवतम् ७ काँकात श्रीभूद्याः लहेश र ज्ञ अनुखभूद्र। दक অভিনব সংসাব পাতিয়াছিলেন।

মাত্বিয়োগের পর হইতে নারায়ণী অধিকাংশ সময় রতনের কাছেই থাকিত। বিশেষতঃ এই এক বংসর পুত্রশোকাতুরা রাণী মধুমতী তেন না। পরের ধন করিয়া রাখিলে নারায় 🖰 বাঁদিয়া থাকিবে, এই আশায় রাণী তাঁহাকে ব্রাহ্মণের হাতে একরূপ সমর্পণই করিয়াছেন।

ব্রাহ্মণেরও আপনার বলিবার কেহ ছিল না। স্কুতরাং ঈর্ষাপরতন্ত্র ্বিধাতা নিশ্চিম্ভ ব্রাহ্মণকে বৃদ্ধ বয়দে একটা আপনার ধন দিয়া তাঁহার खीरानेत्र श्राधीन जाम इर्छ किन करिया (६ न । तु उ । ज ज ज ज रहाम याग এथन এই कूञ्चमिकक्षक्षममा वानिका।

य मगग्न भूलिन नारश्य जनस्भूत जामिया ताजारक कार्या इहर्ड অপস্ত করিতেছিলৈন, তখন রতন নারায়ণীকে সঙ্গে লইয়া, বীরচন্ত্রের अद्वानिकानः नध्य देशात विक मूक्लिक नश्याद्रकाल में एं हिया अकिती मृशिक्षत महिত (थला क्रिंतिर छिलिन।

তৎপূর্বে নারায়ণী পিতামহীর উপর অভিমান করিয়াছিল।

শৈশবে পিতামহীর উনর নারায়ণীর অভিমান অধিকাংশ সময়ে রতনের পৃষ্ঠেই সংরক্ষিত হইত। গুই চারিগাছি পঞ্চকেশও সেই अভियानित्र कत्न श्रामपूर्ण इरेज। शिक्विरम्रागत भद रहेरजरे वानिकात अञ्मादनत देनहे कार्याकती भक्ति मन्नूर्व विन्श्व इहेग्रा পর্যাবদিত। অভিমান হইলে বালিকা শুধু ফুলিয়া ফুলিয়া কাঁদিত--कथा करिङ ना।

ं भिना त्रज्य विष्टे जगरू रहेज। जारे जान वृक्त नात्रवादिक मस्हे कत्रियात जन निरंजत यात्रामध्योगन मिथारेए छेन्नारन जानिशास्त्र ।

কিছু পূর্বে তিনি নারায়ণীর সমুথে বড় বড় পাণর লোফালুফি করিয়াছেন বড় বড় বৃক্ষের শাখা ভগ্ন করিয়াছেন, ক্লফ্সারের সহিত মল্লযুদ্ধ করিয়াছেন। তথাপি বালিকার অভিমান দূর হয় নাই।

অবশেষে মৃগশিশুটী আসিয়া ব্রাহ্মণের যথেষ্ঠ সহায়তা করিয়াছে।

এক হক্তে ঘট অন্ত হতে আম্রমুকুল ধরিয়া নারায়ণী দূর হইতে হরিণশাবঁকের খেলা দেখিতেছিল। সে নারায়ণীকে কিছু অভিরিক্ত আদর দেখাইত। তাহাকে দেখিলেই দূর হইতে ছুটিয়া আসিত। অজাতশৃসমস্তকে তাহার গণ্ড-পৃষ্ঠ-বক্ষ কণ্ডুয়ন করিত, কর্ণ-মুখ নাসিকা লেহন করিত। এই সকল কারণে মুগশিশুর সঙ্গটা ভাহার বড় ভাল লাগিত না। তাই নারায়ণী দূরে দাঁড়াইয়া তাহার খেলা দেখিতৈছিল। বালিকার অভিমানভারাবনত বদনকমলে অর্দ্ধবিশুষ্ক-লোচনজল, অরুণ-কিরণম্পর্শী প্রভাতবাতাভিহত শিশিরবিন্দুর স্থায় শোভা পাইতেছিল।

বুদ্ধ কিন্তু বালিকাকে ভুলাইতে যাইয়া নিজেই আত্মবিশ্বত হইয়া পড়িয়াছেন। হরিণের সহিত থেলা করিতে করিতে তিনি আপনার পককেশ, ও তদং শুভ্ৰ আবক্ষলম্বিত শুশ্ৰু বাৰ্দ্ধক্ৰ্যের যে সকল দেহোপ-করণ সব ভুলিয়া গিয়াছেন। তিনি এক একবার আত্রশাথা আরুষ্ট করিয়া মৃগশিশুর মুখের কাছে ধরিতেছিলেন। ব্যগ্রতাসহকারে সে যেমন মুকুলগুচ্ছকে রসনাপাশে জড়াইবার উপক্রই করিতেছিল, অমনি শাথা পরিভাগে করিতেটিলেন। মুকুলগুচ্ছও সেই সঙ্গে উৎক্ষিপ্ত হইয়া চারিধারে কণা বর্ষণ করিতেছিল। এইরূপে রতন একমনে वारवाहिङ क्रीषांत्र, निमध हिर्वन। नाताक्षी रिय निकरि हैं। पृष्टिका আছে তাহা মুহুর্তের জন্ম ভূলিয়া গিয়াছিলেন।

হরিণশিশু দেখিতে দেখিতে নারায়ণী একবার এদিক ওদিক মুখ ফিরাইতেছিল। তাহার দৃষ্টি আকর্ষণ করিবার যোগ্য অনেক সামগ্রীই সেই উন্থানের ভিতরে সংরক্ষিত ছিল।

এদিক ওদিক দৈদিক মুথ ফিরাইতে, তরুলতা পুলারন নিরীক্ষণ করিতে করিতে বালিকা দেখিল দ্রে কুঞ্জন্বাররক্ষী কামিনীতরুতোরণ তলে দাঁড়াইয়া একটা বালক তাহাদের থেলা দেখিতেছে। বিশ্বয়-বিশ্বারিতলোচনে নারায়ণী তাহার পানে চাহিল। বালকও অমনি তরু-অন্তরালে লুকাইল। তথন চাহিয়া চাহিয়া বালিকা একপদ একপদ করিয়া দেইদিকে অগ্রসর হইল।

বালক কিংকর্ত্তব্যবিমূঢ়। অগ্রসর হইয়া নারায়ণীর কাছে আসিলে কি পিছাইয়া পলাইয়া যাইবে হির করিতে পারিতেছিল না। কর্ত্তব স্থির করিতে না করিতে নারায়ণী সম্মুথে উপস্থিত হইল।

नावाश्री विलल "मूक्"—

বালক আনন্দদেবের পুত্র মুকুন্দ। পিতার সহিত সে আজ অনস্থ পুরে ফিরিয়া আসিয়াছে। কিরূপ অবস্থায় ফিরিয়াছে তাহা ফে অনেকটা ব্ঝিতেও পারিয়াছে। তাহার বয়স এখন সপ্তদশ বংসর স্কুতরাং পিতার সহিত রাজার বর্ত্তমান সম্বন্ধ ব্ঝিবার কতকটা শক্তিং তাহার জন্মিয়াছে। ভাই নারায়ণীর কথায় কি উত্তর দিবে স্থি ক্রিতে না পারিয়া মুঁকুন্দ চুপ ক্রিয়া দাঁড়োইয়া রহিল।

নারায়ণীর সহিত মুকুল অতি শৈশবে ক্রীড়া করিত। তার প্রথম সে শুনিল নারায়ণীর সহিত তাহার বিবাহ হইবে, তথম সে লজা লায়ায়ণীর কাছে বড় একটা আসিতে চাহিত না। কেননা পুরস্ত্রীগ প্রায়ই বালকবালিকাকে, বিব্যুহকথা লইয়া রহস্ত করিত। নারায় বড় বুঝিতে পারক আঁর নাই পারুক মুকুল অনেকটা বুঝিতে পারিত

সেই নারায়ণী বছাদন পরে ভাহার সম্মুখে। তাহার উপর বালিক বয়:সন্ধি। এই এক বংসরে নারায়ণীর দেহলাবণ্যে একটা বিঃ ঘটয়াছে। সর্বোপরি মুকুন্দের থাবনোন্মেষ্। মানসিক রৃতিভাপ্রিনামুখী। চকু অন্ধকারে রূপের আভাস দেখে। কর্ণ কে

দূরদেশের স্থকণ্ঠের ক্লে স্বরস্থা পান করে। নাসিকা পারিজাতের আত্রাণ পায়ৰ৷ অক্ষে জলভারাবনত নব কাদম্বিনীর স্পর্শস্থ অমুভূত र्य।

কাজেই নারায়ণীকে দেখিয়া কে যেন হৃদয়ের ভিতর হইতে মুকুন্দের. नाक-मूथ-हाथ हां भिन्ना धित्र हा। मूकून, नातात्र भीत कथात्र छेखत मिर्छ भातिल ना।

ज्थन वालिक। निक्रनकरत्रत्र आञ्चमूकूल घटेमूर्थ ञ्राणिज कत्रिल। ধীরে ধীরে অগ্রসর ইইয়া মুকুন্দের হাত ধরিয়া টানিল।

কাজেই মুকুন্দকে কথা কহিতে হইল। কম্পিতকর নারায়ণীর হস্ত হইতে ধীরে ধীরে আরুষ্ট করিয়া অর্দ্ধপরিস্ফুট কঠে মুকুন্দ কহিল— ু, আমি যাইব না।"

''চল দোলায় ত্লিব।''

"হরিণ লইয়া থেলিব।"

"না"

"তবে চল দাদার কাছে যাই।"

वानिका घर्छ एक निया निन। এवः ५३ राख मूक् नित्र अकर्ख मवरल धतिया आकर्षन करिला। भूकूल विलल ''अभगाय ছाড়িয়া দাও।" नातायगी विनन-''ছाড़िव नी। कथनरे ছाড़िव ना ।"

্বৃদ্ধের স্থ্রপ্রপ্র ভাঙ্গিয়া গিয়াছে। তথ্ন আম্রশাথা পরিত্যাগ করিয়া তিনি পশ্চতে ফিরিলেন। দেখিলেন নারায়ণী নাই। চারি-मिरक **हाहिया (मिथिलिन ना**तायगीरक मिथिड भारेलिन ना। 'छाकिलिन —''नाताम्रगी,'' नाताम्रणी পশ্চাতে ना ফিরিমাই উত্তর করিল— (( 4 9 %)

्रक (मिथिएननं नाताय्यी जाननरमरक्त भूटलत हाठ धतिया मांफारेया

এদিক ওদিক সৈদিক মুখ ফিরাইতে, তরুলঙা পুলারন নিরীক্ষণ করিতে করিতে বালিকা দেখিল দূরে কুঞ্জদাররক্ষী কামিনীতক্রতোরণ তলে দাঁড়াইয়া একটা বালক তাহাদের থেলা দেখিতেছে। বিশায়-বিশারিতলোচনে নারায়ণী তাহার পানে চাহিল। বালকও অমনি তরু-অন্তরালে লুকাইল। তখন,চাহিয়া চাহিয়া বালিকা একপদ একপদ করিয়া সেইদিকে অগ্রসর হইল।

বালক কিংকর্ত্তব্যবিমৃঢ়। অগ্রসর হইয়া নারায়ণীর কাছে আসিবে কি পিছাইয়া পলাইয়া যাইবে হির করিতে পারিতেছিল না। কর্ত্তব্য স্থির করিতে না করিতে নারায়ণী সম্মুথে উপস্থিত হইল।

नातात्री विलल "मूकू"---

রালক আনন্দদেবের পুত্র মুকুন্দ। পিতার সহিত সে আজ অনস্ত-পুরে ফিরিয়া আসিয়াছে। কিরপ অবস্থায় ফিরিয়াছে তাহা সে অনেকটা ব্ঝিতেও পারিয়াছে। তাহার বয়স এখন সপ্তদশ বংসর। স্থতরাং পিতার স্থিত রাজার বর্তমান সম্বন্ধ ব্ঝিবার কতকটা শক্তিও তাহার জন্মিয়াছে। তাই নারায়ণীর কথায় কি উত্তর দিবে স্থির করিতে না.পারিয়া মুকুন্দ চুপ করিয়া দাঁড়াইয়া রহিল।

নারায়ণীর সহিত মুকুল অতি শৈশবে ক্রীড়া করিত। তার পর যখন সে শুনিল নার্রিনীর সহিত তাহার বিবাহ হইবে, তথন সে লজ্জায় নারায়ণীর কাছে বড় একটা আসিতে চাহিত না। কেননা প্রস্ত্রীগণ প্রায়ই বালকবালিকাকে, বিবৃহিকথা লইয়া রহস্ত করিত। নারায়ণী বড় বৃশ্বিতে পার্মক আঁর নাই পার্মক মুকুল অনেকটা বৃথিতে পারিত।

সেই নারায়ণী বছাদন পরে ভাহার সমুখে। তাহার উপর বালিকার বর:সন্ধি। এই এক বংসরে নারায়ণীর দেহলাবণ্যৈ একটা বিপ্লব ঘটিয়াছে। সর্কোপরি মুকুন্দের যৌবনোমেষ। মানসিক বৃত্তিগুলি প্রস্টনোমুখী। চক্ষ্ অন্ধর্কারে রূপের আভাস দেখে। কর্ণ কোন

দ্রদেশের স্কৃতির সূক্ষ স্বরস্থা পান করে। নাসিকা পারিকাতের আদ্রাণ পার্। অসে জলভারাবনত নব কাদ্যিনীর স্পর্শস্থ অমুভূত र्य।

কাজেই নারায়ণীকে দেখিয়া কে যেন হৃদয়ের ভিতর হইতে মুকুন্দের নাক-মুথ-চোথ'চাপিয়া ধরিল। মুকুন্দ, নারায়ণীর কথায় উত্তর দিতে পারিল না।

তথন বালিক। দক্ষিণকরের আম্রমুকুল ঘটমুথে স্থাপিত করিল। ধীরে ধীরে অগ্রসর হইয়া মুকুন্দের হাত ধরিয়া টানিল।

काष्ट्र मूक्नरक कथा किंद्र इट्टा किंग्लिडकत नात्राम्नीत्र হস্ত হইতে ধীরে ধীরে আরুষ্ট করিয়া অর্দ্ধপরিস্ফুট কণ্ঠে মুকুন্দ কহিল— ु, आिय याहेव ना।"

''চল দোলায় ছলিব।''

"হরিণ লইয়া থেলিব।"

"না"

"তবে চল দাদার কাছে যাই।"

वानिका घर्छ एक निया किन। अवर इहे हस्छ मूक् स्नित्र अकहरा সবলে ধরিয়া আকর্ষণ করিল। মুকুজ বলিল ''অনমায় ছাড়িয়া দাও।" नात्राय्यो विलल—"ছाড़िव नी। कथनरे ছाড़िव ना।"

বুদ্ধের স্থম্বপ্ন ভাঙ্গিয়া গিয়াছে। উথন আশ্রশাথা পরিত্যাগ করিয়া তিনি পশ্চাতে ফিরিলেন। দেখিলেন নারায়ণী নাই। চারি-मिरक ठाहिया (मिथलिन नातायगीरक मिथि लि भारेलिन ना। छाकिलिन —''नाताय्रों।,'' नाताय्रो পन्চাতে ना फितियारे উত্তর করিল— " 4"

नृक मिथिएनन नो तो यो निकामिक पिट्य शूटल त राज धित्र में पिर्ध रेत्री

আছে। মুকুদর্কে দেখিয়াই বৃদ্ধের লোচন ক্রোধরাগর্ঞিত কুইল। তথন গন্তীরস্বরে তিনি আবার ডাকিলেন—'নারায়ণী।'

সেই গন্তীর-স্বর-ঝন্ধারে সমস্ত উপ্তান প্রতিধ্বনিত হইয়া উঠিল।
বালক স্তন্তিত হইল। তাহার করের দৃঢ় বন্ধন—নারায়ণীর কোমলকরাঙ্গুলি-বলয় থুলিয়া গেল। বুদ্ধ আবার বলিলেন—''চলিয়' আয়"—
মুকুন্দকে লক্ষ্য করিয়া বলিলেন—"তোমাকে এখনে কে আসিতে
বলিল ?''

ভয়ে সুকুন্দের মুথ গুকাইয়া গেল।

এমন সময়ে পশ্চাৎ হইতে বীরচন্দ্র প্রবেশ করিলেন। মুকুন্দকৈ তদবস্থ দৈখিয়া রতন্দে বলিলেন 'ও বালককে তিরস্কার করিও না। এখন হইতে এ বাগান—এ বাগান কেন—এই অট্টালিকা, রাজ্য সমস্ত ওই বালকের পিতার—আমার নয়।''

त्रजन विलिम—''कि तक्य ?"

বীরচক্র রতনকে আরুপূর্বিক সমস্ত ঘটনা বলিতে সঙ্গে লইয়া চলিলেন। ইত্যবসরে মুকুন্দ একপদ একপদ পিছাইয়া যেই একটু অন্তরালে পূড়িল, অমনি ছুটিয়া পলাইল।

নারায়ণীও পিতামহীর কাছে চলিয়া গেল।

## তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

পূর্বেই বলিয়াছি আনন্দেব বীরচন্দ্রের আত্মার-পূত্র। কিন্তু দূর সম্পর্কীয় এবং দরিদ্র। অনন্তপুর হইতে পাঁচ ক্রোশ দূরে মথুরাপুরে তিনি বাস করিতেন। পৌত্রীর সহিত তাঁহার পুত্রের বিবাহ দিবার অভিপ্রারে রাজা বীরচক্র তাঁহাকে অনন্তপুরে আনাইয়া আত্রয় প্রদান করেন। অনন্তপুরে আসিয়া আনন্দদেব অল্লদিবসের মধ্যেই প্রতিপত্তি লাভ করেন। প্রথমে তিনি রাজদপ্তরে একটী সামান্ত কাজ পান।

क्राय वृक्षिको भाषा द्वाञाक वृष्टे के तिया छेक इटेए छेक वर्त भाषा । कर्त्तन। देश्वारकतः अधीन श्रेषा वीव्राह्म य मगग्न वाककार्या श्रेर्ह् অবসর লইয়া পুজের হত্তে রাজ্যভার প্রদান করেন, তথন রামচন্ত্রের সহায়তার জন্ম তিনি আনন্দদেবকেই নিযুক্ত করেন।

রামচক্র শিলাসী, রাজকার্য্য কিছুই দেখিতেন না। স্থতরাং কার্য্যতঃ আনন্দত্বেবই অনন্তপুরের মধ্যে সর্কেস্কা হইয়া উঠিলেন। তাঁহার কথা ও কার্য্যের প্রতিবাদ করিতে অনম্বপুরে কেহ রহিল না।

এরূপ স্থবিধায় কয়জন লোক প্রলোভন পরিত্যাগ করিতে পারে ? অল্লদিনের মধ্যেই বীরচক্রের ধনরাশিতে আনন্দদেবের ঘর পূর্ণ হইয়া গেল। অধিকার অক্ষুণ্ণ রাখিবার জন্ম তিনি •রামচন্দ্রের বিলীসিতার প্রশ্রম দিতে লাগিলেন। এবং সাহেবদিগের সঙ্গে ঘনিষ্টতা করিয়া ও নানাবিধ উপায়ে তাহাদিগকে তুট করিয়া ভবিষ্যতের পথ অনেকট: নিষণ্টক করিয়া রাখিলেন। পদচাত করিবার সময়ে বীরচক্র বুঝিতে পারিলেন না তাহা অপেক্ষা তাঁহার, দেওয়ানের শক্তি কত অধিক। कल वीत्रहक्ष्टक इं अवर्यस्य याधिकात्र हा इं इंटें।

वानमामित्र (करहें हिनिष्ठ পात्र नाहे। • हिनियाছिन (कर्न একজন। দে ঐ বাঙ্গালী ব্রাহ্মণ রতন। রতন যে অমাত্ম্যিক অন্তর্দ্ ষ্টিবলে व्यानमाद्रिवरक हिनियाहित्मन, व्याप्ता अयन क्या विनाउ भाति ना। তিনি চিনিয়াছিলেন কেবল তাহার দেহের একটামাত্র চিহ্ন দেখিয়া वान-मामादित मन्नाथ इर्डी माउत उपत व्यात इर्डी मांज हिन।

वीत्राज्य बाकार्शत काष्ट्र-जानमर्गिवम्यस्य कथन उत्नान व्यनम তুলিলেই রতন বলিতেন—"ট্যারার হাজার দোষ, কুঁজোর নেই অস্ত। ইহারও অধিক যার দন্তের উপর দন্ত।" রাজা সরল হৃদয় ব্রাহ্মণের কথা গুনিয়া হাসিতেন। এরপ বিজ্ঞতার কেনা হাসিবে ? কিন্তু রতন দে হাসি গ্রাহ্ করিতেন না। আনন্দদেবৈর চরিতের উপর ভাঁহার

সন্দেহ কেহ কোন মতেঁ দূর করিতে পারিত না। যে করিতে যাইত বান্ধণ তাহার বৃদ্ধির প্রশংসা করিতেন না। তিনি বলিতেন, বহুদিন হইতে, বহু উদাহরণ হইতে, বহু বিজ্ঞতার ফলে কবিতাটী রচিত হইয়াছে। ইহাতে অবিশ্বাস করিবার কিছুই নাই। যে করে আমি তার বিজ্ঞতার প্রশংসা করি না।

আনন্দদেবকৈ রাজকার্য্যে নিয়োগ করিবার সময়ে রতন প্রতিবাদ করিয়াছিলেন। রাজ্যের ভার দিবার সময়েও প্রতিবাদ করিয়াছিলেন। বলিতেন—"আত্মীয়—তাহাকে জমী দাও, বাড়ী দাও, আদর যত্ন কর । রাজ্যের অন্ধিসন্ধি জানাইবার প্রয়োজন কি ?"

বীরচন্দ্র তাঁহার উপদেশ গ্রহণ করেন নাই। তিনি বুঝিলেন, অদৃষ্টদোষে আনন্দরতনের বিষদৃষ্টিতে পড়িয়াছে। স্নতরাং রতনের বিজ্ঞতা রতনের কাছেই থাকিত। তাহার ফল আনন্দদেবের স্বার্থকে কখনও স্পর্শ করে নাই। সে বিজ্ঞতা-পরিচালিত হইয়া রাজা কখনও কার্য্য করেন নাই। নিজে আনন্দদেবের আচরণে ও কার্য্যকুশলতায় মুয় ১ইয়াছিলেন। ক্রমে ক্রমে তাঁহার পদোয়তি করিয়া তিনি নিজেই আগ্রহ করিয়া তাহাকে দেওয়ানী দিয়াছিলেন।

এখন বীরচক্র নিজের মূর্যতা ও মূর্য ব্রাহ্মণের সর্বজ্ঞতা বিলক্ষণ বৃথিতে পারিরাছেন। আনন্দদেবের হস্ত হইতে রাজ্যভার কেমন করিয়া পুনগ্রহণ করা যায়, ভাই পরামর্শ করিবার জন্ম তিনি রতনের কাছে আসিলেন। তাঁহার ভয় হইল বৃথি নারায়ণী বিষয়ভোগে বৃথিত হইবে।

রতন ব্ঝিলেন রাজা রাঘববোয়ালে গ্রাস করিয়াছে। রাজাকে রাজা ফিরাইয়া দিতে এখন আনন্দনেবেরও সাধাাতীত। বলিলেন শক্তি আর ফিরিবে না। প্রতীকারের চেন্তা করিতে গেভে বিপরীত কল হইবে। যে একটু আধটু অধিকার তাঁহার আছে हा थाकित्व ना। वीत्रहक्त छांश वृत्रितनं। वृत्रिया हातिनक ্য দেখিলেন।

রতন সংসারানভিজের যোগা উপদেশ দিলেন। সংসারের সকলই নিত্য বুঝাইয়া তিনি তাঁহাকে বর্তমান অবস্থায় সম্ভূষ্ট থাকিতে ও र्जक (र्ग्ज मत्नारिशेश मिर् जामिश कि जिल्ला । विनित्न - "आंत किन ? াস গিয়াছে, পুত্রু গিয়াছে; তখন, মণি বিসর্জন দিয়া কাটি এত গাভ কেন ?" অবশ্য একথায় রাজা তুষ্ট হইলেন না। একথায় কেই কবে তুষ্ট হইয়াছে ? নির্কোধ গ্রাহ্মণের কথায় তাঁহার মনে শান্তি गें जिल ना।

#### চতুর্থ পরিচেছদ।

এইরূপে কিছুদিন অতিবাহিত হইল। আনন্দদেব অল্পদিনের ভিতরে াজ্য মধ্যে নিজের শক্তি দৃঢ়তর করিয়া লইলেন। রাজার যা একটু আধটুও স্বাধীনতা অবশিষ্ট ছিল, অল্লে অল্লে তাহাও কাড়িয়া লইলেন। এখন বীরচন্দ্র নিজের গৃহে একরূপ বন্দী; ক্রুমে রতনের কাছে আসাও ठाँशत वक्त रहेया (१००। अश्रह आवक्त वीत्रहक्त किथिए नाशिक्तन, তাঁহার অট্টালিকাসমুথস্থ বিশালপ্রাস্তর কিংকবলার, ফ্রেণ্ডলি বুচার প্রভৃতি মহাপ্রভুগণের ক্রীড়াভূমি হইয়াছে। যে<sup>9</sup>বরে বসিয়া তিনি রতনের সহিত শাস্ত্রালাপে নিুষুক্ত গাকিতেন, সেই ঘর এখন সাহেব দিগের পৈশাচিক ভোজের জন্ম ব্যবহৃত। °

वीत्रहक्त ममिक व्यक्तकात (मिथिलिन। य व्यक्ति नाताय्वीत व्याभा, मिरे जामत मुकुम (ভাগ করিতেছে। নারায়ণীকে পুত্রবধূ করা এখন আনন্দদেবের অনুগ্রহ। তা করিলে বৃঝি বীরচন্দ্র শাপনাকে ভাগ্যবান विद्यानां कतिर्देश

किस जानमामन जोशं कतिलान ना। , जिनि वीत्रहासत जापत अक

আত্মীয়ের কন্তার সহিত মুকুনোর বিবাহ দিলেন। মহাসমারোহে অনস্তপুরেই বিবাহ নিষ্পন্ন হইল।

বীরচন্দ্র ক্ষিপ্তবং অন্থির হইলেন। এই অসময়ে রাণী মধুমতী দক্ষদার লিকটে থাকিতেন, প্রাণপণে তাঁহাকে সান্ত্রনা করিতেন। অবস্থাবিপর্যায়ে নারায়ণীও অনেকটা পরিবর্ত্তিত হইয়াছিল। নারায়ণী আর পিতামহার উপর অভিমান করিত না। রতন্ত্রকও আঁর তাহার অত্যাচার সহিতে হইত না। নারায়ণী বিশেষ কিছু বুঝিতে পারুক আর নাই পারুক তবে এটা বুঝিয়াছিল বাড়ীতে একটা গোলমাল বাধিয়াছে।

রতনের কাছে থাকিলে নৈ তাহার পূজাদির আয়োজন করিয়া দিত। পিতামহের কাছে আদিরা কিন্তু দে কোন কিছু করিরার স্থাবিধা পাইত না। পিতামহের মুথ দেখিয়া তাহার প্রাণটা কেমন কেমন করিত। চকু আপনা আপনি কেমন জলে ভরিয়া যাইত। পিতামাতার অভাব নৃতন ভাবে আদিয়া যেন তাহাকে পীড়ন করিত।

মনের ভাব গোপন করিবার চেটাও এই বয়সে নারায়ণীর হৃদরে প্রবেশ করিয়াছিল। পিতামছের নিকটে বসিয়া যথন মনোভাব উদ্বেলিত হইবার উপক্রম করিত, তথন গৃহের সামগ্রী—এটা ওখানে ওটা সেখানে স্থানে স্থানি স্থানে স্থানি স্থান

মুকুন্দের সহিত নারান্নীর আর বড় দেখা গুনা হইত না। যদি ঘটনাক্রমে কথন ভাহার সহিত সাক্ষাৎ হইত, নারায়নী আর তাহার সহিত প্রগল্ভ হইয়া কথা কহিত না। এমন কি কথা যাহাতে না কহিতে হয় সেইরপ উপায়ই অবলম্বন করিত। দৃর হইতে দেখিলে দ্র হইতেই সরিয়া যাইত। নিকটে পড়িলে মাথা হেঁট করিয়া দাঁড়াইত। মুকুন্ত উপযাচুক হইয়া তাহার সহিত, আলাপ করিতে

हमी हरेख ना। पूक्त्मत विवादित भन्न हरेखि উख्यत मधा आव था সাক্ষাৎ द्वम नाहै।

বিবাহের পর নববধূকে লইয়া যথন মুকুন্দ ঘরে আসে, তথন রায়ণীর একবার উভয়কে দেখিবার ইচ্ছা হইয়াছিল। নববধূটার हेठ ছেলেবেল হইতে তাহার বড়ই ভাব ছিল। বালিকার পিত্রালয় নস্তপুরের নিকটেই। তাহার পিতা মধ্যবিত্ত তালুকদার—তুই তিমথানি ाम তारात अधिकात्रज्ङ हिल। গ্রাম কয়शानि वीत्रहासत्ररे প্রদত্ত। लिका मात्य मात्य वीत्रहत्सत वाहीर् जानिज। এवः जानिल ছদিন ধরিয়া অবস্থিত হইত। এই সূত্রে নারায়ণীর সহিত তাহার फ़रे मस्राव रहेग्राहिल। वालिकात नाम हिल कानकी। कानकी छिमिन অনম্বপুরে আদে নাই। তাহার পিতা পর্মানন্দ সিংছ त्रागहर उपन मर्यना भागाधरन जाननार एत्य महात्र ছिल, वीत्रह उपस्मित्रात्न বানিতে পারিয়াছিলেন। এ বিশ্বাসঘাতকতা কার্য্যেও সে কতকটা লিপ্ত ছিল।

वछिन (मध्य नांरे विषया नात्राय्यीत खानकी क (मिथवात रेष्ट्रा रहेशां हिल। किन्छ পिতायरीत जन्न (पश्चि भाषा नारे। रेपानीः नातायगी वांधी इट्रेंख वर्ष वाहित्र इट्रेंख ना।

#### পঞ্চ পরিচ্ছেদ।

व्यानन्दित देखा हिन, त्रजन कान बाज ना व्यनसें भूदा थाकिएज পায়। এইজন্ম প্রথমেই সে রাজ্ঞাকে এই সঙ্গীটী হইতে বিচ্ছিন্ন করিবার চেষ্টায় ছিল। অন্ত সঙ্গাতে তাহার বড় আপত্তি ছিল না। কিন্ত णाहात हेच्हा कार्या পतिनण इत्र नाहे। श्रुणीम मारह्य वृक्षक भूर्य व्यानकवात (मिश्राह्न। जोहा हहेए ए ज्यूत्र कान कात्र পাকিতে পারে এটা তিনি বপ্নেও বিষাস করিতে পারেন নাই।

व्याची स्वतं कञ्चार्क महिल मूक्टनेत विवाह निष्म । महामभा तारह व्यमश्रपूर्व विवाह निष्मन हहेन।

বীরচন্দ্র ক্ষিপ্তবং অন্থির হইলেন। এই অসময়ে রাণী মধুমতী সর্বাদার রাজার নিকটে থাকিতেন, প্রাণপণে তাঁহাকে সান্ধনা করিতেন। অবস্থাবিপর্য্যয়ে নারায়ণীও অনেকটা পরিবর্ত্তিত হইয়াছিল। নারায়ণী আর পিতামহীর উপর অভিমান করিত না। রতন্ত্রকেও আর তাহার অত্যাচার সহিতে হইত না। নারায়ণী বিশেষ কিছু বুঝিতে পারুক আর নাই পারুক তবে এটা বুঝিয়াছিল বাড়ীতে একটা গোলমাল বাধিয়াছে।

রতনের কাছে থাকিলে নৈ তাহার পূজাদির আয়োজন করিয়া দিত। পিতামহেঁর কাছে আদিরা কিন্তু সে কোন কিছু করিবার স্থাবিধা পাইত না। পিতামহের মুথ দেখিয়া তাহার প্রাণটা কেমন কেমন করিত। চক্ষু আপনা আপনি কেমন জলে ভরিয়া যাইত। পিতামাতার অভাব নৃতন ভাবে আদিয়া যেন তাহাকে পীড়ন করিত।

মনের ভাব 6গাপন করিবার চেটাও এই বয়সে নারায়ণীর হৃদরে প্রবেশ করিয়াছিল। পিতামহের নিকটে বসিয়া যথন মনোভাব উদ্বেশিত হইবার ঐউপক্রম করিত, তথন গৃহের সামগ্রী—এটা ওথানে, ওটা সেখানে স্থানাস্তরিত করিতে নিযুক্ত হইত।

মুকুন্দের সহিত নারামণীর আর বড় দেখা গুনা হইত ন।। যদি ঘটনাক্রমে কথন ভাহার সহিত সাক্ষাৎ হইত, নারামণী আর তাহার সহিত প্রগল্ভ হইয়া কথা কহিত না। এমন কি কথা যাহাতে না কহিতে হয় সেইরূপ উপায়ই অবলম্বন করিত। দৃর হইতে দেখিলে দ্র হইতেই সরিয়া যাইত। নিকটে পাড়লে মাথা হেঁট করিয়া দাঁড়াইত। মুকুন্ত উপযাচ্ক হইয়া তাহার সহিত আলাপ করিতে

माहमी इरेज ना। मूक्त्मन विवादिन भन्न रहे छि उउ माह (मथा माकार द्वार नारे।

विवारङ्क भन्न नववध्रक नहेका यथन मूकून पान जारम, उथन নারায়ণীর একবার উভয়কে দেখিবার ইচ্ছা হইয়াছিল। নববধূটীর महिত ছেলেবেক হইতে তাহার বড়ই ভাব ছিল। বালিকার পিত্রালয় অনম্বপুরের নিকটেই। তাহার পিতা মধ্যবিত্ত তালুকদার—ছই তিমথানি গ্রাম তাহার অধিকারভুক্ত ছিল। গ্রাম কয়থানি বীরচক্তেরই প্রদন্ত। वौनिका गात्थ गात्थ वीत्रहास्त्र वाठी एक जानिक। এवः जानिन বহুদিন ধরিয়া অবস্থিত হইত। এই সূত্রে নারায়ণীর সহিত ভাহার वफ़रे मखाव रहेशाहिल। वालिकात नाम हिल कानकी। कानकी वरुमिन অনন্তপুরে আদে নাই। তাহার পিতা পর্যানন্দ সিংহ রামচক্রের সর্কনাশসাধনে আনন্দদেবের সহায় ছিল, বীরচক্র অমুসন্ধানে জানিতে পারিয়াছিলেন। এ বিশ্বাসঘাতকতা কার্য্যেও সে কতকটা निश्र ছिन।

वर्षान (परथ नारे विषया नात्रायभीत जानकीरक (पथिवात रेष्टा हरेशाहिल। किन्छ পিতামহীর জন্ম দেখিতে পাল্ম নাই। ইদানীং नात्राय्यी वाणी इहेट वफ़ वाहित हहे जा।

#### পঞ্ম পরিচ্ছেদ।

আনন্দদেবের ইচ্ছা ছিল, রতন কোন মতে না অনন্তপুরে থাকিতে পায়। এইজন্ম প্রথমেই সে রাজ্ঞাকে এই সঙ্গীটী হইতে বিচ্ছিন্ন করিবার চেষ্টায় ছিল। অন্ত সঙ্গাতে তাহার বড় আপত্তি ছিল না। কিন্ত তাহার ইচ্ছা কার্য্যে পরিণত হয় নাই। পুলীস সাহেব বৃদ্ধকে পুর্কে অনেকবার দেখিয়াছেন। তাহা হইতে যে ভয়ের কোনও কারণ থাকিতে পারে এটা তিনি স্বপ্নেও বিখার্স করিতে পারেন নাই। काष्ट्रिक वानमंद्राप्त्र वाक्षां विकास वाह्य काष्ट्र जिन्हामा इहेग्राहिन। यारे र'क, कार्याजः जानमामित त्राकारक त्रजन रहेर्ड विष्टित कतिय।-ছিল। কিন্তু রতনকে নির্কাসিত করিতে তাহার সাহসে কুলায় নাই।

हेश जिन्न बाजा कि पिथिए बे बे बिर्म निष्म व यि कि व निर्मा इरेंज, जारा रहेल कान अलाक जाराक वाधा फिल्ज गार्मी रहेज ना। সহায় রাজপ্রতিনিধির এক সামাগ্র ব্রাহ্মণকে এত ভয় কেন ?

ভয়ের অনেক কারণ ছিল। প্রথম কারণ, রতন নিষ্ঠাবান ব্রাহ্মণী। नित्रीर, मिष्ठेভाषी, मनामाशी मनानम शूक्ष। অনন্তপুরের আবালবৃদ্ধ-বনিতা তাঁহাকে ভক্তি করিত। পরোপকারের জন্ম তাঁহার জীবন উৎসঙ্গীক্বত। দ্বিতীয় কারণ, ব্রাহ্মণের বল গল্পের বিষয় ছিল। অনস্তপুরের अधिकार्भ निপारीरे छारात काष्ट्र गात्राम भिक्षा कतित्राहिल। व यारात्रा নবাগত তাহারাও ওঁটোর কার্য্যকলাপ অবগত হইয়া তাঁহাকে ভক্তি করিত। স্থতরাং তাঁহার অঙ্গে হাত তুর্লিতে কে অগ্রসর হইবে? कृठीय--- मत्रनश्वय वाका। मिक्छा প্রণোদিত হঁইয়া কার্য্য করিতে পর্বতের বাধাও গ্রাহ্ম করিতেন না। হৃদয়ে ঐশবিক বল, বিষয়ে সম্পূর্ণ অনাদক্তি, কাঁদিবার কাঁদাইবার লোকাভাব, মৃত্যুভয়রাহিত্য, এই প্রকার নানারিধ অল্লে সজ্জিত ব্রাহ্মণ অনন্তপুরের মধ্যে নিশিচ্ছ মনে বাস করিতেন।

্ৰান্ধণ একেবারে যে ক্রোধশৃন্ত ছিলেন, এ কথা বলিতে পারি না। कथन कथन कान किलिय कात्रण लायालित क्षिर्ग्राष्ट्रा कथा एना त्रिवारह। जानमप्ति এकवात्र निर्दे पिथिशाहिल এकक्रम विभन्नरक क्रका क्रिए बाक्रण में जिस्क लाक्रक विभन्न क्रियाहिलन। नथ হইতে মুথের কথাটি পর্যান্ত 'ব্রান্ধণের তীক্ষ অন্তের কার্য্য করিয়াছিল। व्यानमात्त्व देशा अतिवाहि एए, खाचन अक्वांत्र जूक इट्टर्न, अ

কোধ সহজে উপশমিত হইত না প ব্ৰাহ্মণের চপেটাঘাতে একটা প্রকাও ব্যাঘ্র প্রাণে দিয়াছে—অনম্বপুরের আবালবৃদ্ধবনিতা ইহাও বিশ্বাস করিত! স্থতরাং এরূপ ব্রাহ্মণের অনিষ্ট করিতে ভীক দেওয়ান সাহসী हरेज ना। 'त्रजन किन्छ त्रियानन, जनस्त्रपूत्र थाका जात अधिक मिन চলিবে না। জানন্তপুরের অবস্থা এখন সম্পূর্ণ পরিবর্ত্তিত হইগ্নছে। পূর্বাবস্থ। বে আর ফ্রিরিবে এমন সন্তাবনাও তিনি দেখিতে পাইজেন না।

व्राक्तवादीव পশ্চাতে একটা ছোট বাগানের মধ্যে একটা পর্ণশালা শির্মাণ করিয়া রতন তাহার মধ্যে অবস্থান করিতেন। রাজা তাঁহাকে একথানি পাকাবাড়ী করিয়া দিবার জন্ম প্রচিশ বৎসর ধরিয়া চেষ্টা कत्रियाहिन, किन्न त्रञन छाशं कित्रिट (मन नार्रे। পर्नमामा एशेलाख পরিচ্ছনতায় ও মনোহারিতে রতনের বাদস্থান রাজপ্রাদাদ হইতে যে কোনও अংশে হীন ছিল, তা বলিতে পারি না। দেখিলে স্থানটীকে একটী मिकाञ्चम विषया जम रहेउ।

त्रञन একা। किन्छ ठाँशत গৃহ সর্বদাই বছজনে পূর্ণ থাকিত। গ্রামের বালক-যুবা-বুদ্ধ সকলেই বুদ্ধ গ্রাহ্মণের আশ্রমে যাতায়াত করিত। শাস্তালাপে, সঙ্গীতে, হাস্তকোলাহলে রতনের বাসগৃহ সর্বদা এক অপূর্ব্ব সজীবতার পরিচয় প্রদান করিত।

বালকেরা আসিয়া রতনের বাড়ীর উঠানে কুন্তি শিথিত। যুবক কুস্তিগীর রতনের শিষ্যসম্প্রদায় শিক্ষকের কার্য্য করিত। রতন নিকটে একথানি চৌকীতে বসিয়া তামাকু টানিতে টানিতে তাহাদের থেলা मिथिएक। এवः श्वामाजन इट्रेंग इसे अक्षा बामायकोमन विनमा पिटिन। विटम्य প্রয়োজন হইলে কথন কথন নিজেও মাটী মাথিতেন।

রতনের আশ্রমের পার্ষ দিয়া স্থ্বর্ণরেখা প্রবাহিতা। রাজা তাঁহার গৃহপার্শ্বর্তী স্বর্ণরেখতিলদেশ খনন করাইয়া গভীর করিয়া দিয়া-ছिলেन। वाशाबाद्य मकल मिर्शान भान कत्रिण। जाराद्यान মানকার্য্য একটা সমারোহ ব্যাপার। তাহাদের অঙ্গতাড়িত তরঙ্গো-চ্ছাদে নদীজলে গভীর আবর্ত্ত উপস্থিত হইত।

শিলাময় ওটভূমি বিদীণপ্রায় হইত। রতনও তাহাদিগের সঙ্গে স্থান করিতেন। বহুক্ষণ ধরিয়া রতনের গাত্রমার্জনকার্যা চলিত। বালকসম্প্রদার দশ পোনরজন এক দক্ষে রতনের পৃঠে স্কল্পে বাছতে মুট্টাঘাতকার্য্যে নিযুক্ত থাকিত। তাহাদের মুট্টি বছনম কঠিন হইবে এইজন্ম রতন স্বেচ্ছায় তাহাদিগকে এই কার্যো নিযুক্ত করিতেন। কেহ এরপ কার্য্যে ওঁনাস্থা দেখাইলে ওস্তাদের কাছে তিরস্কৃত ইইত। বালকেরাও ব্ঝিত কিছ্ কালের জন্ম তাহাদের পাহাড়ের সঙ্গে লড়াই করিতে হইবে। প্রথম প্রথম প্রহারাস্তে বালকদিগকে বড়ই কঠ পাইতে হইত। চুণহলুদের শ্রাদ্ধক্রিয়া নিম্মার করিয়া যথন তাহাদের হাতের রাঝা মরিত, তথন আবার পূর্বাম্রন্থ প্রহারকার্যে নিযুক্ত হইত।

রতনের অঙ্গে প্রহার করিয়া যথন আর তাহাদের চ্ণহরিদ্রার প্রয়োজন হইত না—হস্তে কোনওরূপ যন্ত্রণা অন্তত্ত করিত না, তথন তাহারা হির বুঝিত যে তাহাদের মুষ্টিপ্রহার পর্বতিগাত্ত চূর্ণ করিতে সমর্থ। বাাদ্রাদি জন্তর সমুথে পড়িলে মুষ্টিই তাহাদের আত্মরক্ষণো-প্রোণী মহান্ত্র। "

স্থানান্তে রতনের গৃহে জলযোগ রাশি রাশি ছোলা ও গুড়।
জলবোগের পর সকলে অনিন্দ করিতে করিতে স্থ স্থ গৃহে প্রস্থান
করিত। রতন এই সমর আহ্নিকাদি কার্য্য সমাগন করিয়া, রন্ধনের
উদ্যোগ করিতেন। রাজবাটী হইতে প্রত্যহ বিশ জন লোকের যোগ্য
সিধা আসিত। রতন একাই পাঁচ ছয় জনের যোগ্য আহার করিতে
পারিতেন। রাজপ্রদন্ত একজন ভৃত্য ও একজন দাসী ছিল। সাকরেতদিগের মধ্যে কেহ কেহ গুরুর প্রসাদ পাইবার জল্প থাকিরা ঘাইত।

সময় বিশেষে প্রয়োজন হইলে আরও আহারীয়: তিনি আনাইয়া লইতেন।

বিকালে রতনের সহচরগণের সিদ্ধি ঘুঁটিতে এবং সেই সঙ্গে দীতারামের জয়দঙ্গীতে, স্থবর্ণরেখাতটভূমি প্রতিধ্বনিত করিত। এই नमस्य शामक वृक्षभागतहे नमाभम अधिक ছिल। তাহার। আসিয়া রতনের সহিত শাস্ত্রালাপে রত থাকিত। কেহ কেহ খেস গল করিত।

🖜 আর কেহ বড় একটা আসেনা। আসিতে সাহস করে না। किक्नांनि कान िम व्यानमाद्य प्रिथित, प्रिथित नाक्रांनि कि विश्व বটিবে। ভয়ে আর কেহ বড় রতনের কাছে আসিতে চাহিত না! मकरनरे जानिত রতন আনন্দদেবকে হচকে দেখিতে পারিত না। স্তরাং ব্রতনের কিছু করিতে পারুক আর নাই পারুক, যে রতনের সঙ্গে মিশিবে আনন্দদেব যে ভাহার সর্বনাশ কবিবে, তাহাতে আর সন্দেহ নাই। কেহ আসিতে চাহিলে রতন নিজেই তাহাকে আসিতে দিতেন না।

তাঁহার কুন্ডির আথড়ায় বড় বড় তৃণগুলা জন্মিয়া বন হইরাছিল, সিদ্ধির বাটীতে ছাতা ধরিয়াছিল, বাহির হইতে তাঁহার পর দেখিলে लाक चाह्य এরপ বোধ হইত না। স্বর্ণরেখা, সঙ্গীহারা—স্তরাং উচ্ছাসশৃক্তা-কুল কুল করিয়া কাঁদিতে কাঁদিতে তাঁহার উভানের পার্শ্বদিয়া চলিয়া যাইত। তাঁহাকে দেখিঝার পর্য্যন্ত লোক ছিলনা। আর সেরূপ ভারে ভারে তাঁহার গৃহে দ্বিত্য- ঘত-আটা-ভঙুল নানাবিধ मिष्ठीन्न ष्यामा वक्ष इहेग्रा शिग्राहिल। पानमाम्बद ष्यवश्च खाँहान जञ्च সিধা পাঠাইত। কিন্তু প্রায়ই তাহাতে রতনের পর্যাপ্ত হইত না। कथन कथन निधा नगरत्र উপস্থিত হইত না। ইতিমধ্যে ছই চারি দিন রভনের উপবাসে কাটিরা গিরাছে।

রাণী মধুমতী পূর্ব্বে ততটা রত্নসম্বন্ধে তত্তাবধান করিবার অবসর
পান নাই। আনন্দের বিশ্বাসঘাতকতার তাঁহারও মনের অবস্থা
কতকটা বিক্বত হইয়াছিল। অবশেষে একদিন নারায়ণীর মুপে ব্রাহ্মণের
অবস্থার বিষয় অবগত হইয়া ইদানীং প্রতিদিন সংবাদ লইতে আরম্ভ
করিয়াছেন। সরকার হইতে আসিবার অপেক্ষা না করিয়া, তিনি
ঘর হইতে প্রতিদিন ব্রাহ্মণের আহার্রের পর্যাবেক্ষণ করিত।

রতন ভাবিলেন, এরপ করিয়াই বা আর কতদিন চলিবে। রাণী আপনাকে বঞ্চিত,করিয়া যে তাহার অন্ন যোগাইতেছেন না, তাহাই বা কে বলিবে? নারায়ণাকে জিজ্ঞাসা করিলে সে কিছু বলিত না। রাণীর কাছে তথ্য জানিবার কোনও সন্তাবনা ছিল না। আনন্দমন্ন রতন অল্লে অল্লে বিষাদকালিমায় আচ্ছন্ন হইতে লাগিলেন। তাঁহার পূর্বশ্রী অল্লে অল্লে লোপ পাইতে লাগিল। অনন্তপুরের বায়ু এখন তাঁহার পক্ষে উত্তপ্ত হইয়া উঠিল।

বহুদিন পরে রতনের অনন্তপুর-ত্যাগে ইচ্ছা হইল। দাদশ বংসর
তিনি এস্থান হইতে বাহির হন নাই। ছই একদিনের জন্ম বাহিরে
যাওয়া অবশ্র ধর্তব্যের মধ্যে নয়। এই সেদিন নারায়ণীর পাত্রামুসন্ধানে
অনেক স্থান ভ্রমণ করিয়া আসিয়াছেন। কিন্তু তাহাতেও তিনি আপনাকে গৃহ হইতে বহির্গত বিবেচনা করেন নাই। বহুকাল পরে তাঁহার
প্রিয় পণকুটীরটী ছাড়িবার অভিপ্রায় জাগিয়া উঠিয়াছে।

কিন্ত কেমন করিয়া যাইরেন ? নন্দিনী বলিতে, সঙ্গিনী বলিতে, ক্রাড়ণক বলিতে একমাত্র যে নারায়ণী তাহাকে কৈমন করিয়া পরি-ত্যাগ করিবেন। পরিত্যাগের চিস্তায় ব্রাহ্মণ শিহরিয়া উঠিতেন। নারায়ণীকে পাত্রস্থা করিতে পারিলে, অবশ্র অনেকটা নিশ্চিম্ভ হইবার কথা ছিল। কিন্ত নারায়ণীর যে বিবাহ হয় এমনটা তাঁহার আর বিশ্বাস হইল না। কে আর নারায়ণীর বিবাহহের ভৈছোগ করিবে? রাজার সজে কথানার্ছায় বৃঝিয়াছেন, পাগলের সহিত তাঁর আর বিশেষ প্রভেদ নাই। নারায়ণীর ভবিষ্যৎ বৃঝিয়া তিনি চারিদিক অন্ধকার দেখিলেন। কিন্তু অনন্তপুরে থাকা তাঁহার আর অধিকদিন চলিবে না। নিজে ইচ্ছা ক্রুন আর নাই করুন, তাঁহাকে বাধ্য হইয়াই ত্যাগ করিতে হইবে।

#### यर्छ পরিচ্ছেদ।

কিছুদিন ইতন্তত: করিয়া রতন অবশেবে রাণী মধুমতীর কাছে কথাটা পাড়িলেন। বলিলেন আজ বাদে কাল মরিব, তখন তীর্থে মরিতে পারিলেই ভাল হয়। মধুমতী শুনিয়া বজাহতের ভায় নিম্পন্দ হইলেন। কিজন্ত ব্রাহ্মণ বলিলেন, তিনি সমস্তই ব্রিয়াছিলেন। কিছুক্ষণের জন্ত তিনি কথা কহিতে পারিলেন না । নীরব, স্তন্তিত—চক্ষ্ দিয়া কেবল জলধারা পড়িতে লাগিল। রতনও অক্রসম্বরণ করিতে পারিলেন না। রাণী যথন প্রকৃতিসা হইলেন, তথনও কোন কথা কহিতে পারিলেন না। কি বলিবেন ? হিতাবাজ্জী ব্রাহ্মণের বর্ত্তমান অবহা তিনি ত বিলক্ষণই ব্রিতে পারিতেছেন। কোন প্রাণে তাঁহাকে আর থাকিতে অনুরোধ করিবেন ? তাঁহাদের যা ঘটে ঘটুক, ব্রাহ্মণ তাঁহাদের স্বার্থপরতার জন্ত কন্ত পান কেন ? কিছু এমন ব্রাহ্মণ যদি না রহিল, তবে অনস্তপুরে ইহিল কি ?

রাণী রতনকে অপেকা করিতে অকুরোধ করিলেন। বলিলেন— "আপনি বস্থন। আমি একবার রাজাকে জিজ্ঞাসা করিয়া আসি।"

রাণী প্রস্থান করিলে রতনের হৃদয়ে ঝড় বহিতে লাগিল। সংসার-বিরাগী ব্রাহ্মণ জীবনে কথন এরূপ আত্মহারা হন নাই। ভাঁহার মনোরাজ্যে মুহুর্ত্তমধ্যে একটা বিপ্লব ঘটিয়া গেল। তিনি ভাবিলেন— "করিলাম কি ? রাণীয় কাছে খনের অবস্থা প্রকাশ করিয়া কি বৃদ্ধিমানের কার্য্য করিলাম ? নিজের শক্তির উপরেই কি আমার বিশ্বাস আছে ? আমি কি নারায়ণীকে ছাড়িয়া থাকিতে পারিব ?"

রাণী বীরচন্দ্রের কাছে সকল কথা বলিলেন। রাজা বলিলেন— দেবহুদয় গ্রাহ্মণকে আর আবদ্ধ করিও না''।

রাদী ফিরিয়া আসিলেন। আসিবার সময় নারায়্মণীকে লক্ষে করিয়া আনিলেন। নারায়ণী নিদ্রিত ছিল। ব্রাহ্মণের পদপ্রাস্তে বসাইয়া, আর একবার গৃহমধ্যে প্রবেশ করিলেন। অল্পহ্শণ পরে একটা রৌপ্যপাত্রপূর্ণ স্বর্ণমুদ্রা ব্রাহ্মণের পদপ্রাস্তে রক্ষিত হইল। রাণী স্বর্ণমুদ্রা ব্রাহ্মণকে নিবেদন করিয়া ভূমিষ্ঠা হইয়া প্রণাম করিজেন। নারায়ণীকেও প্রণাম করিতে বলিলেন।

দাদাকে প্রণাম করা তাহার জাবনে কথন অভ্যাস ছিল না। বরং কাঁহার পৃষ্ঠদেশে আহ্বাহণাদি কার্য্যেই সে অধিক আনন্দ বোধ করিত। সে কেমন অপ্রস্তুত হইয়া গেল। দাদার প্রতি এরপ অভ্যর্থনা সে আর কথন দেখে নাই। নানারূপ গোলমালের মধ্যে পড়িয়া সে অবশেষে পিতামন্ত্রীর অনুরোধে একটা প্রণাম করিল। অল্পকণ পরেই রাজাও আসিলেন। ত্রাহ্মণকে প্রণাম করিলেন।

রতন বলিলেন্দ্র একি! তুত স্বর্ণমুজা কেনং এ আমি কি করিবং রাজা বলিলেন—"মনে ছিধা করিবেন না। আমরা আপনার সন্তান। গ্রহণ না করিলে মর্ম্মব্যথা পাইব। তীর্থে তীর্থে ভ্রমণ করিতে হইবে। বিদেশে পর্থি অর্থের নানা প্রশোজন। প্রক্রমার প্রতি দরা করিয়া গ্রহণ কর্মন।" বলিতে বলিতে বীরচক্র; কাঁদিয়া কেলিলেন। তাঁহার সর্মানরার ঝ্লাভিহতের ভার কল্পিত হইরা উঠিল। রতন এতক্ষণ কথকিৎ ধৈর্যা ধরিয়াছিলেন। এখন বালকের ভার কাঁদিয়া কেলিলেন। বলিলেন—"মহারাজ! তোময়া বা ভাবিয়াছ,

ামি তা নই: আমি আপনাকে এতদিন চিনিতে পারি নাই। এ বৃদ্ধারী হইতেও অধম। চিত্তদংখমে তাহার কিছুমাত্র শক্তি নাই। আমি রায়ণীকে ছাড়িয়া থাকিতে পারিব না। তবে তীর্থে যাইবার মনন রিয়াছি। দিন কতক ঘুরিয়া ফিরিয়া আদিব।"

নারায়ণী এঁতক্ষণ চুপ করিয়াছিল। ব্যাপারটা কি দে ভাল ব্ঝিতে গারিতেছিল না। এখন ব্ঝিল দাদা তাহাকে ছাজিয়া যাইতৈছে। বালিকাও আবেগপূর্ণজদয়ে বলিয়া উঠিল—"দাদা আমাকে কাহার কাছে রাখিয়া যাইবে ?"

নারায়ণীর প্রশ্নে এবং রাজা ও রাণীর কথার ভাবে রতন বুঝিলেন, পাষও মানন্দ নারায়ণীর জন্ম একটা পরিচারিকা পর্যান্ত নিযুক্ত করে নাই।

ব্রান্ধণের শোকাবেগ মুহূর্ত্ত মধ্যে ক্রোধে পরিণত হইল। বলিলেন, বৃদ্ধ হইয়াছি। কয়দিনই বা বাঁচিব ? স্কুতরাং অপঘাত মূত্য হয়, তাও স্বীকার। অনন্তপুর ছাড়িবার পূর্ব্বে এর একটা ব্যবস্থা করিয়া যাইব।"

রাজা ও রাণী উভয়েই সাগ্রহে তাঁহাকে উত্তেজিত হইতে নিষেধ করিলেন। ব্রহ্মণ সে কথায় কর্ণপাত করিলেন না—রাণীর প্রদত্ত উপহার গ্রহণ করিয়া মুহুর্ত্তে সে স্থান ত্যাগ করিলেন। পশ্চাতে আর নিরীক্ষণ করিলেন না।

[ক্রমশঃ]

श्रीकोरतामथनाम विमारितनाम।

## আল্হাম্রা।\*

নের স্থাসিদ্ধ আল্হামরা প্রাসাদের নাম পুরাতন্তপ্রির পাঠকমাত্রেরই নিকট স্থারিচিত। ইহার, ধ্বংসস্তূপ নাডানগরে অদ্যাপি বর্ত্তমান রহিয়াছে বলিয়া, ইস্লামের প্রাচীন নির্দ্ধিত ইউরোপ হইতে মুছিয়া যায় নাই। অদ্য এই অনস্ত্র্তান্দর্যের আধার আল্হামরা প্রাসাদের কথঞ্চিৎ আভ্যন্তরিক বিবরণ াঠকবর্ণের সম্মুধে উপস্থিত করিব।

প্রাসাদটী বে স্থানে অরস্থিত, তত্রতা ভূমির বর্ণ লোহিতাভ বলিয়া, হা আল্হাম্রা বা লোহিতপ্রাসাদ নামে অভিহিত হইয়াছে। দানীস্তন প্রসিদ্ধ আরবায় এবং ম্রীয় । স্থপতি ও শিল্পীগণ কর্তৃক হার নির্মাণ-কার্য্য এরোদশ শতাব্দীর মধ্যভাগে আরব্ধ হইয়া চতুর্দ্দশ তাব্দীতে সমাপ্ত হইয়াছিল। লোকে নলিত, "ইহারা 'কিমিয়া'‡ নিনে, নহিলে এতাদৃশ আশ্চর্য্য প্রকাণ্ড প্রাসাদনির্মাণ মানবশক্তির হির্ভৃত।" কথিত আছে, ইহার অভান্তরে চন্তারিংশৎ সহস্র লোক নারাসে বাস করিতে পারিত। যে ইস্লামের পতাকাতলে এই তুলনীয় রাজপ্রাসাদ নির্মিত হইয়াছিল, তাহার শাসনাধীনে স্পেন ভদ্র উন্নতিলাভ করিয়াছিল, এবং আধুন্কি সভ্যতা ও উন্নতির জন্য

<sup>\*</sup> এই প্রবন্ধে বর্ণিত বিষয়গুলি প্রধানতঃ ,নিম্নলিখিত এইছম্ম হইতে সংগৃহীত ইয়াছে:—

<sup>(1)</sup> Ameer Ali's A Short History of the Saracens.

<sup>(2)</sup> Stanley Lane-Pooles The Moors in Spain.

<sup>†</sup> আফ্রিকার মরকোবাসী মুসলমানগণ মূর নামে বিখ্যাত। ইহারই স্পেন থিকার করিরাছিলেন।

শ্চাত্য প্রদেশ সমূহ তাহার নিকট কি পরিমাণে ঋণী রহিয়াছেন, কুদ্র প্রক্ষে তাহার বিস্তারিত আলেচনা সম্ভবে ন।। কিন্তু দ্বিদের ছই একটা কথার উল্লেখ এন্তলে বাহুল্য হইবে না।

ইদ্লাম-প্রচার । মহাপুরুষ মহম্মদের মৃত্যুর অব্যবহিত পরেই ারবীয় মুরুভূমি হইতে যে মহাদিখিজয়-স্রোত উত্থিত হইয়া চতুর্দিকে বগে প্রধাবিত হইীয়াছিল, তাহারই একটা ভীষণ তরঙ্গাভিঘাতে স্পেন, প্রীয় অন্তম শতাকীর প্রাক্তালে, মুরীয় রাজগণের শাসনাধীনে আসিয়া ्रिय। विজयमनमञ्ज मूननमान्त्रा ইহাতেও সম্ভষ্ট হইলেন না; তাঁহারা ীরিনিস্ অতিক্রম করিয়া ফরাসীরাজ্য জয় করিবার জন্য প্রয়াস हिलान। किन्न প्रथम উভামেই বিফলমনোর্থ হইয়া, যেন ভাঁহাদের থিজ্যের নেশা ছুটিয়া গেল। তাঁহারা নববিজিত স্পেনরাজ্যে श्विणाद প্রত্যাগমন করিয়া দিখিজয়ী তরবারি কোষবদ্ধ করিলেন; वःवाञ्चरणत्र পরিবর্ত্তে বিদ্যাবলে ইউরোপ জয় করিবার জন্য তাঁহা-াগের অমিত শক্তি নিয়োজিত করিলেন। মসী ও লেখনী, শোণিত াবং তরবারির স্থান অধিকার করিল; এবং পরবর্তী কিঞ্চিন্ন্যুন ০০ বংসর ধরিয়া তদানীস্তন অর্দ্ধসভা বর্ষর ইউরোপের সমক্ষে, নাদেমগণ সভাতা ও উন্নতির জলস্ত দৃষ্টাস্ত ক্রমাগত উপস্থিত করিতে शिलान। এই स्नीर्घ काल्यत मसी त्यान श्रें ए माश्रिज, विखान, ণিত, জ্যোতিষ, উদ্ভিদ্বিল্ঞা, ইতিহাস, দর্শন, শ্বতি প্রভৃতি শাল্তসমূহের াহারই স্রোতোদলিলৈর উর্ব্রশিক্তি প্রভাবে আজ ইউরোপের বিত্যাভূমি ্রত উৎকর্ষিত। কর্দভা, গ্রানাডা, দেভিলি, টনেডো, জীন, এবং ালাগার বিখ্যাত মুরীয় বিশ্ববিদ্যালয় সুমুহে ইতালী, জর্মণি, ফ্রান্স, ्रैशिख প্রভৃতি দূরদেশ হইতে জ্ঞানপিপায়ু বিদ্যার্থিগণ দলে দলে সমবেত: ইইতেন। এতাদৃশ গভীর গবেষণাপূর্ণ উচ্চপ্রান্তের আলোচনা,

### वान्श्यत्र। ॥

নের স্থাসিদ্ধ আল্হামরা প্রাসাদের নাম পুরাতন্তপ্রির পাঠকমাত্রেরই নিকট স্থারিচিত। ইহার ধ্বংসন্ত পূর্বালাদানগরে অদ্যাপি বর্ত্তমান রহিয়াছে বলিয়া, ইস্লামের প্রাচীন কীর্ত্তিস্থতি ইউরোপ হইতে মুছিয়া যায় নাই। অদ্য এই অনস্ত সৌন্দর্য্যের আধার আল্হামরা প্রাসাদের কথঞ্চিৎ আভ্যন্তরিক বিবরণ পাঠকবর্ণের সম্মুথে উপস্থিত করিব।

প্রানাদটা বে স্থানে অবস্থিত, তত্রতা ভূমির বর্ণ লোহিতাভ বলিয়া, ইহা আল্হাম্রা বা লোহিতপ্রাসাদ নামে অভিহিত হইয়াছে। তদানীস্তন প্রসিদ্ধ আরবায় এবং ম্রীয় † স্থপতি ও শিল্পীগণ কর্তৃক শহার নির্মাণ-কার্য্য ত্রেয়াদশ শতান্ধীর মধ্যভাগে আরব্ধ হইয়া চতুর্দশ শতান্ধীতে সমাপ্ত হইয়াছিল। লোকে লেত, "ইহারা 'কিমিয়া'‡ জানে, নহিলে এতাদৃশ আশ্চর্য্য প্রকাণ্ড প্রাসাদনির্মাণ মানবশক্তির বহিভূতি!" কথিত আছে, ইহার অভান্তরে চত্তারিংশং সহস্র লোক অনামাসে বাস করিতে পারিত! যে ইস্লামের পতাকাতলে এই অতৃলনীয় রাজপ্রাসদি নির্মিত হইয়াছিল, তাহার শাসনাধীনে স্পেন কত্তদ্র উন্নতিলাভ করিয়াছিল, এবং আধুনিক সভ্যতা ও উন্নতির জন্য

<sup>\*</sup> এই প্রবন্ধে বর্ণিত বিষয়গুলি প্রধানতঃ ,নিম্নলিখিত ,প্রান্থন্বয় হইতে সংগৃহীত হইয়াছে:—

<sup>(1)</sup> Ameer Ali's A Short History of the Saracens.

<sup>(2)</sup> Stanley Lane-Pooles The Moors in Spain.

<sup>।</sup> আফ্রিকার মরকোবাসী মুমলমানগণ মুর নামে বিখ্যাত। ইহারই স্পেন অধিকার করিরাছিলেন।

<sup>‡ &</sup>quot;কিমিয়া" সাধারণতঃ "এক্সজালিক রসায়ণ" অর্থে ব্যবহৃত হইুরা থাকে। কৌ আগাৰী শবা হইতে ইংরাজি "Chemistry"র উৎপত্তি।

পাশ্চাত্য প্রদেশ সমূহ তাহার নিকট কি পরিমাণে ঋণী রহিয়াছেন, এ কুদ্র প্রক্রে তাহার বিস্তারিত আলেচনা সম্ভবে ন। কিন্তু তদ্বিষয়ে ত্ই একটা কথার উল্লেখ এন্তলে বাহুল্য হইবে না।

ইদ্লাম-প্রচার । মহাপুরুষ মহম্মদের মৃত্যুর অব্যবহিত পরেই আরবীয় মুরুভূমি হইতে যে মহাদিখিজয়-শ্রোত উত্থিত হইয়া চতুর্দিকে বেগে প্রধাবিত হই য়াছিল, তাহারই একটা ভীষণ তরঙ্গাভিঘাতে স্পেন, ুখুষ্টীয় অন্তম শতাকীর প্রাক্কালে, মুরীয় রাজগণের শাসনাধীনে আসিয়া পড়িল। বিজয়মদমত্ত মুদলমানেরা ইহাতেও দস্তপ্ত হইলেন না; তাঁহারা পীরিনিদ্ অতিক্রম করিয়া ফরাসীরাজ্য জয় করিবার জন্য প্রয়াস পাইলেন। किन्न প্রথম উভামেই বিফলমনোর্থ হইয়া, যেন তাঁহাদের দিখিজয়ের নেশা ছুটিয়া গেল। তাঁহারা নববিজিত স্পেনরাজ্যে শাস্তভাবে প্রত্যাগমন করিয়া দিখিজয়ী তরবারি কোষবদ্ধ করিলেন; এবংবাহুবলের পরিবর্ত্তে বিদ্যাবলে ইউরোপ জয় করিবার জন্য তাঁহা-দিগের অমিত শক্তি নিয়োজিত করিলেন। মসী ও লেখনী, শোণিত এবং তরবারির স্থান অধিকার করিল; এবং পরবর্তী কিঞ্চিন্যুন ৮০০ বংসর ধরিয়া তদানীস্তন অর্দ্ধসভ্য বর্ষর ইউরোপের সমকে, মোদেমগণ সভাতা ও উন্নতির জ্বলন্ত দৃষ্টাস্ত ক্রমাগত উপস্থিত করিতে লাগিলেন। এই স্থদীর্ঘ কালের মধ্যে স্পেন হইতে সাহিত্য, বিজ্ঞান, গণিত, জ্যোতিষ, উদ্ভিদ্বিতা, ইতিহাস, দর্শন, স্মৃতি প্রভৃতি শাস্ত্রসমূহের य ग जी त खान गर्ज छ ९ म छ थि छ इरे त्रा हु जू कि क था शिष्ठ इरे त्रा हिन, তাহারই স্রোতোদলিলৈর উর্করশিক্তিপ্রভাবে আজ ইউরোপের বিত্যাভূমি এত উংক্ষিত। কর্দভা, গ্রানাডা, সেভিলি, টনেডো, জীন, এবং मालागात विथा ७ मृतौष विश्वविদ्यालय ममूट् हे जाली, अर्माण, आंक, रेश्ना প্রভৃতি দূরদেশ হইতে জ্ঞানপিপায় বিদ্যার্থিগণ দলে দলে সমবেত হইতেন। এতাদৃশ গভীর গবেষণাপূর্ণ উচ্চশ্রান্তের আলোচনা,

তংকালে স্পেন ভিন্ন ইউরোপের অন্ত কোন প্রদেশে দৃষ্ট হইত না। একমাত্র গ্রাণাড। নগরেই সপ্ততি সংখ্যক বৃহৎ বৃহৎ সাধারণ পাঠাগার मुश्रुमणी डेफ्ठिनगानम, এবং দিশতাধিক প্রবেশিকা বিদ্যালয় ছিল। পণ্ডিত-প্রস্থ ফর্দভা নগরে যে সকল স্থপ্রসিদ্ধ দার্শনিক, বৈজ্ঞানিক, সাহিত্যিক এবং ঐতিহাদিক জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, তন্ত্রীধ্যে কিঞ্চিন্তান তিন শত নাম, অপ্তাদশ শতাকার জনৈক বিখ্যাত পাশ্চাত্য পণ্ডিত\* मःशृश् ७ विभिवक क्रिया शिया हिन। ইহাঁ দিগেরই প্রবল প্রতিভা-প্রস্ত পঞ্লকাধিক মূল্যবান গ্রন্থের পাণ্ডুলিপি, ফর্দ্রভায় বিশাল পুস্তকালয়ের কলেবর, এবং সমগ্র ইউরোপথত্তের জ্ঞানযোগী ছাত্র-মণ্ডলীর মস্তিম্ব পরিপুষ্ট করিয়া তুলিয়াছিল। এতদ্ভিন্ন অসংখ্য বিবিধ শাস্ত্রজ্ঞ বিষ্কজনের বিরচিত গ্রন্থরাশিতে, গ্রাণাডা, মালাগা, প্রভৃতি विश्वविष्ठान(य्रत পুত্তकान्य छनि পরিপূর্ণ ছিল। এই দকল বিদ্যালয় ও পুস্তকালয় হইতে নির্মাল জ্যোতিঃ জ্ঞানস্থ্য উত্থিত হইয়া ইউরোপীয় মভাতা এবং উন্নতির প্রভাতাকাশে সমুদিত হইয়াছিল; এবং ইহারই অপূর্ব অক্ষ গুল্রালোক সমগ্র পাশ্চাত্য প্রদেশের কুদংস্কার এবং অজ্ঞানতায় বোরান্ধকার বিদূরিত করিয়া জ্ঞান ও সভ্যতার গৌরবান্বিত পথ উদ্ভাসিত করিয়াছিল।

কোন প্রদিদ্ধ পাশ্চাত্য পুরাত্ত্ববিদ্ পণ্ডিত । স্থাকার করিয়া গিয়াছেন যে, ইউরোপের অধুনাতন একান্ত প্রয়োজনীয় নিত্য ব্যবহার্যা বৈজ্ঞানিক আবিকারগুলির অধিকাংশ মৃরীয় স্পেনের বিজ্ঞানক্ষেত্রেই প্রথম অঙ্ক্রিত হইয়াছিল। তড়িদগর্ভ-তারসহযেগি সংবাদ প্রেরিত হইতে পারে, এবং ভারযুক্ত দোলকের দ্বারা সময়নিরুপণ করা যায়, এ সকল স্পেনীয় মোসুমগণই প্রথম লক্ষ্য করিয়াছিলেন। গুনা যায়,

<sup>\*</sup> कांत्रिति। † मर

পৃথিবার মাধাকের্ঘণ শক্তির কথা চতুর্দশ শতাকীর মূরীয় বৈজ্ঞানিক-গণের নিকট নাকি অবিদিত ছিল না। তৈষজ্য এবং অন্ত্র-চিকিৎসা শাস্ত্রেও মোসুমগণ মণেষ প্রসিদ্ধিলাভ কয়িয়াছিলেন। কর্দভানগরে মুসলমান-স্ত্রীাচকিৎসকেরও অভাব ছিল না।

ন্তাশিক্ষায় কুম্পেনীয় মুদলমানগণ আধুনিক সভাতা-শিথরচারী ইউ-রোপ অথবঃ আমেরিকাবাদিগণ অপেক্ষা কোন ক্রমেই নান ছিলেন না। তাঁহার। সম্রান্ত মাইলাগণকে গভার জ্ঞানান্ত্রশীলনে উৎসাহিত করিতেন। আরবাদাহিত্য-উদ্যানে নাজহান, জয়নাব, হানদা, হাকদা, কানাইয়া, সাঁফিয়া, মেরিয়া প্রভৃতি বিদ্ধী মূর-রমণীরন্দের নাম অনন্তকাল প্রস্কৃতি ও সৌরভে পরিপূর্ণ রহিবে। ইহাদিগের কেহ প্রথিত্যশা কবি, কেহ সাহিত্যেতিহাদে স্থপণ্ডিতা, কেহ অন্বিতীয়া বৃক্তা, কেহ বা গণিত-বিজ্ঞানে পারদশিনা ছিলেন। তৎকালে স্থলতানগণের অন্তঃপুর হইতে দময়ে সময়ে রাজনীতিকুশলা ত্ই একটা প্রতিভাশালিনী রমণীর প্রভাব ও পরিলক্ষিত হইত।

কিন্তু গভীর হৃংথের বিষয় এই যে, মোসুেমগণ দীর্ঘ ৮০০ বংসরকাল স্পেনে ব্রিয়া যে কঠোর জ্ঞানাফ্রীলন করিয়াছিলেন, ভল্পারা শুধু স্পেন ভিন্ন অন্যন্ত পাশ্চাত্য প্রদেশের সকলগুলিই, নবালোকিত জ্ঞান ও সভাতার মহাপথে অগ্রসর হইবার জন্য উত্তেজিত ও উৎসাহিত হইয়াছিল, কিন্তু যে স্পেনরাজ্যের বক্ষঃত্বল হইতে এক সময়ে নির্মাণ্ডনালা বিভালোত-সমূহ উথিত হইয়া, ইউরোপের আধুনিক বিশাল জ্ঞানসংগরের স্পৃষ্টি স্থৃতিত করিয়াছিল, কুসংস্কালাসক্ত এবং জ্ঞানহীনতার গৌরবাক্রভবকারী মেই ম্পানিয়ার্ডগণ, তাহার মাহাত্মা উপলব্ধি করিতে অসমর্থ হইয়া, ম্রজাতির সহিত তাহাদিগের সমুন্নত বিভাগৌরব চিরদিনের জন্য নির্বাসিত করিয়া দিয়া নিশ্চিম্ত হইল। ম্পানিয়ার্ডণণ তাহাদের জ্ঞানগুরু মোসুেমজাতিকে বিভাজিত করিয়া কিরূপ হর্দিশাগ্রম্ব হইয়াছিল, তাহা বিখ্যাত ঐতিহাসিক Stanley Lane-Poole তাহার Moors in Spain নামক গ্রন্থে, অতি স্কুন্দরব্ধপে বর্ণনা করিয়াছেন।

মোসেমশাসনাধানে স্পেন যে শুধু দর্শন, বিজ্ঞান, সাহিত্য লইমাই । ব্যস্ত ছিল, এমত নহে; কলাবিতায়ও স্পেন অতি আশুর্যা উৎকর্ম

मां कतियाष्ट्रिम । এই প্রবাদ্ধ বি , গ্ল্হাম্রা প্রাদাদ সূরগণের স্তপদি ও শিল্পান তাগার অতি বিশ্বর্ক ব দৃষ্টাক্ষক। এতন্তির মোসেমগণের সৌন্বা-বৃদ্ধি বিশেষ প্রশংসনীয় ছিল। পোন সভাবতঃই অত্যম্ভ উর্বের স্থতরাং প্রাক্ষতিক সৌলভ্যের লীলাভূমি; তাহার উপর মুরজাতির অধাবসায় এবং কলাকুশলতা মিলিত হইয়া, সমগ্র রাজাটী একটা পরম রমণীয় বিচিত্র কাননে পরিণত করিয়া তুলিয়াছিল। গোয়াডিয়ানা এবং গোয়াডলকুইভার নদীন্বয়ের উভয়কুলে যে সকল অভুলনীয় নগর নির্দ্মিত হইয়াছিল, দেগুলি অধুনা নাম শতে পর্যাবসিত হইয়াও প্রাচীন মূরকীর্ত্তির সমুজ্জন স্মৃতিমহিমা অভাপি কীর্ত্তর্ন করিতেছে। তদানীস্তন রাজ্যসমূহের মধ্যে গ্রাণাডাই সর্বাপেকা नमिथक উৎকর্ষিত হইয়াছিল। ইহা দৈর্ঘ্যে কিঞ্চিদ্ধিক একশত ক্রোশ এবং এ'স্থে ভাহার একতৃতীয়াংশ মাত্র; কিন্তু এই কুদ্র রাজ্যটী একটী বুহৎ পরাক্রান্ত সমৃদ্ধিশালী সাম্রাজ্যে পরিগণিত ছিল। গ্রাণাডায় ত্রিশটী বৃহৎ নগর, ৮০টা তুর্গ, এবং কয়েক সহস্র কুদ্র নগর ছিল। কথিত আছে, একমাত্র গোরাডল্কুইভার নদীর উভয়তীর, শেষোক্ত প্রকার দাদশ সহস্র কুদ্র নগরে পরিশোভিত ছিল।

ত্বারাবৃত "মিরানেভেজ" (চক্রাগিরি) গিরিপ্রেণীর পাদমূলে, বিশাল "ভেগা" প্রাস্তরের উপক্লে গ্রাণাডারাজ্যের রাজধানী গ্রাণাডা মহানগরী অবস্থিত। ইহারই এক প্রাস্তে মূরকীর্ত্তিমুক্টের উজ্জ্লতম রত্ব আল্হাম্বা প্রাসাদ নির্দ্ধিত হইয়াছিল। ইহার অভ্রভেদী চূড়া হইতে, বহুস্রোত্তিমনীদলিলধোত ভাক্ষানারক্ষণাননপূর্ণ, ইতন্ততঃ বিক্ষিপ্ত ক্রুত্ত চির্ম্ভামল কুন্থমকুঞ্জ-সমন্বিত সেই বিস্তীর্ণ "ভেগার" মনোহর শোভা নয়নগোচর হয়। স্থাতিল মৃত্সমীরণ, চিরহিমাবৃত "চক্তাগিরি"-শিপর হইতে অবতীর্ণ হইরা, "ভেগা" শ্বণ্ডের প্রকৃল কুন্থমরাজির সৌরভ-ভার বহন করিতে করিতে লোহিত প্রাসাদের স্থাশন্ত গবাক্ষ-প্রে প্রবিষ্ট হইয়া, নিদাঘপ্রপর উক্ষ মধ্যাত্মন্ত মাধ্বীসন্ধ্যার স্তায় স্থাণীতল করিয়া তুলে।

আল্হাম্রা প্রাসাদ একটা অসমতল উচ্চভূমির উপর প্রতিষ্ঠিত। ইহার চতুম্পার্থে অত্যুচ্চ হর্ভেগ্ন প্রাচীর, এবং স্থানে স্থানে দৃঢ় হুর্গ্বারা সুসংরক্ষিত। উত্তরে দারো নদী, ইহার পাদদেশ ধৌত করিয়া প্রবাহিত হইতেছে। আল্হাম্রার অনেক\ সর্বাপেকা প্রসিক। লোহিত এবং বাসন্তী

প্রকাণ্ড চুর্ন ভোগনা তেনাইত এনে নান্ত।
প্রকাণ্ড চুর্ন ভেদ করিয়া, এই দ্বার আল্হামরা অভ্যন্তরে প্রবেশ
করিয়াছে। মূরখলিফাগণ এই "গ্রাম্বারে" বিচায়ামনি উপিনিট
হইতেন। এই পথে প্রাসাদে প্রবেশ করিলে, সমুথে একটা চতুকোণ
প্রাঙ্গন নয়ন্তুগোচর হয়। ভাহার পর স্থলার মার্টলপুঞ্জে স্থানাভিত মার্টলপ্রাসাদ। এই রমণীয় প্রাসাদ হইতে বহির্নত হইয়া একটা সকীর্ণপথে
কিয়দ্র অগ্রসর হইলে, প্রায় শতহস্ত দীর্ঘ এবং তদর্দ্ধপরিমিত প্রস্থ
একটা স্থান্থ প্রাঙ্গন প্রাপ্ত হওয়া যায়। ইহার মধ্যস্তলে স্থবর্ণমৎস্থপিন্পূর্ণ একটা জলাশয় আছে; এবং যথন বালস্থ্যরম্মিলাল সেই সকল
ক্রীড়ারত মৎস্থানা হইতে প্রতিলক্ষিত হইতে থাকে, তথন এক অতি
অনির্বাচনায় দৃশ্য প্রকটিত হয়। নানাকার্ফকার্যাথচিত এবং বিচিত্র
চিত্রে শোভিত স্তম্ভসমূহে প্রাঙ্গনটা বেষ্টিত; ইহার উত্তরে চতুক্ষোণ
কোমারিস তুর্গ উদ্ধ্র্যে গগনমণ্ডল চুম্বন করিতে উন্থত হইয়াছে।

আলহামরার এই অংশ প্রগাঢ় শান্তিময়; এত নিস্তর্ক যে, বহির্জগতের অন্তিমনাত্রও এফানে অন্তমিত হয় না। কৃত্র একটা জলম্রোত নিঃশব্দে অতি মৃত্রগতি জলাশয়ে প্রবেশ করে, এবং তত্রপ নিঃশব্দে ভিন্নপথে পুনরায় চলিয়া যায়। সমীরণের মৃত্তম একটা হিল্লোল আসিয়া এ স্থানের লতাপত্রাদি এক বিন্দু কম্পিত করিতে সাহসী হয় না;—কীটপতক্ষের উল্লাসরবের ক্ষীণতম একটা কম্পনও এ নীরবতা ভেদ করিতে পারে না; এস্থান এমনি নিস্তর্ক ! চারিদিক্ যেন এক অচিস্তানীয় গন্তীয়• স্তম্বরাজ্য;—কিন্তু তাই বলিয়া এ নিস্তর্ক-তার মধ্যে ধ্বংস ও মৃত্যুর নিদারণ বিভীষিকার ছায়া অমুভূত হয় না। শতান্ধার পর শতান্ধী জগতের শত শত কীর্তিরাশি বহন করিয়া কালগর্ভে বিলীন হইয়া গিয়াছে, কিন্তু এ প্রাসাদের ধ্বং দাবশেষও সেই প্রাচীনকালের মাহাত্ম্য-মুক্ট শিরে পরিয়া অদ্যাপি দণ্ডায়মান রহিয়াছে;—সর্ব্বোসী কালের সহিত শত শত বর্ষ বৃদ্ধ করিতে করিতে বিক্ষতদেহ এবং নই-দৌন্দর্য্য হইয়াও সে যেন তাহার প্রাণের অন্তিম্ভ

वाक्रमञागृह প্রবেশ করিলে মনে হয়, যেন অদূরে বছকীর্ত্তিপ্রখিত

তংকালে স্পেন ভিন্ন ইউরোপের অন্ত কোন প্রদেশে দৃষ্ট হইত না। একমাত্র গ্রাণাড়। নগরেই সপ্ততি সংখ্যক বৃহৎ বৃহৎ সাধান্ত্রণ পাঠাগার मिश्रेष्णि । उक्तिविष्णालय, এवः विण्णाधिक প্রবেশিকা বিদ্যালয় ছিল। পণ্ডিত-প্রস্থ ফর্দভা নগরে যে সকল স্থপ্রসিদ্ধ দার্শনিক, বৈজ্ঞানিক, সাহিত্যিক এবং ঐতিহাদিক জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, তন্মীধ্যে কিঞ্চিন্যুন जिन भेज नाम, अहो मन भेजाकोत करेनक विथा जि পान्धा जा शिखन সংগৃহাত ও লিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন। ইহাঁদিগেরই প্রবল প্রতিভা-প্রস্ত পঞ্লকাধিক মূল্যবান গ্রন্থের পাণ্ডুলিপি, ফর্দ্রায় বিশাল পুস্তকালয়ের কলেবর, এবং সমগ্র ইউরোপথত্তের জ্ঞানযোগী ছাত্র-মওলীর মস্তিদ্ধ পরিপুষ্ঠ করিয়া তুলিয়াছিল। এতদ্বিন্ন অসংখ্য বিবিধ শাস্ত্রজ্ঞ বিদ্বজ্ঞনের বিরচিত গ্রন্থরাশিতে, গ্রাণাড়া, মালাগা, প্রভৃতি विश्वविद्यानस्त्रत পুস্তकानम्ञ जिल পत्रिभूर्व हिल। এই मकन विদ্যালম ও পুস্তকালয় হইতে নির্মাল জ্যোতিঃ জ্ঞানসূর্য্য উত্থিত হইয়া ইউরোপীয় সভাতা এবং উন্নতির প্রভাতাকাশে সমুদিত হইয়াছিল; এবং ইহারই অপূর্বে অক্ষয় শুভালোক সমগ্র পাশ্চাত্য প্রদেশের কুনংস্কার এবং অজ্ঞানতায় বোরাস্কর্কার বিদূরিত করিয়া জ্ঞান ও সভ্যতার গৌরবান্বিত পথ উদ্ভাসিত করিয়াছিল।

কোন প্রদিদ্ধ পাশ্চাত্য পুরাতব্বিদ্ পণ্ডিত। স্বীকার করিয়া গিয়াছেন যে, ইউরোপের অধুনাতন একান্ত প্রয়োজনীয় নিত্য ব্যবহার্যা বৈজ্ঞানিক আবিদ্ধারগুলির অধিকাংশ স্থীয় স্পেনের বিজ্ঞানক্ষেত্রেই প্রথম অন্ধ্রিত হইয়াছিল। তড়িদার্ভ-তারসহযোগে সংবাদ প্রেরিত হইতে পারে, এবং ভারযুক্ত দোলকের দ্বারা সময়নিরুপণ করা যায়, এ সকল স্পেনীয় মোসুমগণই প্রথম লক্ষ্য করিয়াছিলেন। শুনা যায়,

পৃথিবার মাধাকের্ঘণ শক্তির কথা চতুর্দশ শতাদীর মূরীয় বৈজ্ঞানিক-গণের নিকট নাকি অবিদিত ছিল না। ভৈষজ্ঞা এবং অস্ত্র-চিকিৎসা শাস্ত্রেও মোণেম্মগণ অশেষ প্রাসিদিলাভ কয়িয়াছিলেন। কর্দভানগরে মুসলমান-স্ত্রীাচকিৎসকেরও অভাব ছিল না।

ন্ত্রাশিক্ষায় ৻স্পেনীয় মুদলমানগণ আধুনিক সভাতা-শিথরচারী ইউ-রোপ অথবঃ আমেরিকাবাদিগণ অপেকা কোন ক্রমেই নান ছিলেন না। তাঁহার। সন্ত্রান্ত মাইলাগণকে গভার জ্ঞানান্ত্রণীলনে উৎসাহিত করিতেন। আরবাদাহিত্য-উদ্যানে নাজহান, জয়নাব, হানদা, হাকদা, কানাইয়া, সাঁফিয়া, মেরিয়া প্রভৃতি বিদ্ধী মূর-রমণীরন্দের নাম অনন্তকাল প্রস্ফুটিত ও সৌরতে পরিপূর্ণ রহিবে। ইহাদিগের কেহ প্রথিত্যশা কবি, কেহ সাহিত্যেতিহাদে স্থপগুতা, কেহ অবিতীয়া বক্তা, কেহ বা গণিত-বিজ্ঞানে পারদশিনা ছিলেন। তৎকালে স্থলতানগণের অন্তঃপুর হইতে সময়ে সময়ে রাজনীতিকুশলা ছই একটা প্রতিভাশালিনী রমণীর প্রভাব ও পরিলক্ষিত ইইত।

কিন্তু গভীর হংথের বিষয় এই বে, মোসুমগণ দীর্ঘ ৮০০ বংসরকাল ম্পেনে ব্যিয়া যে কঠোর জ্ঞানাফ্নীলন করিয়াছিলেন, তল্পারা শুধু স্পেন ভিন্ন অক্যান্ত পাশ্চান্তা প্রদেশের সকলপ্তলিই, নবালোকিত জ্ঞান ও সভাতার মহাপথে অগ্রসর হইবার জন্ত উত্তেজিত ও উৎসাহিত হইয়াছিল, কিন্তু যে স্পেনরাজ্যের বক্ষঃস্থল হইতে এক সময়ে নিশ্মল-সলিলা বিভালোত-সমূহ উত্থিত হইয়া, ইউরোপের আধুনিক বিশাল জ্ঞানসাগরের স্পষ্টি স্চিত করিয়াছিল, কুসংস্কারাসক্ত এবং জ্ঞানহীনতার গৌরবাত্মভবকারী সেই স্পানিয়ার্ডগণ, তাহার মাহাত্মা উপলব্ধি করিতে অসমর্থ হইয়া, ম্রজাতির সহিত তাহাদিগের সমুন্নত বিভাগৌরব চিরদিনের জন্ত নির্কাসিত করিয়া দিয়া নিশ্চিত্ত হইল। স্পানিয়ার্ডগণ তাহাদের জ্ঞানপ্তক মোসুমজাতিকে বিতাজিত করিয়া কিরপ হর্দশাগ্রন্ত হইয়াছিল, তাহা বিখ্যাত ঐতিহাসিক Stanley Lane-Poole তাহার Moors in Spain নামক গ্রন্থে, অতি স্কল্পরক্রপে বর্ণনা করিয়াছেন।

यात्मयभागनाथोत्न त्यान ए खधू पर्नन, विकान, माहिला नहेशाहे वास हिन, এমত नहरं, कनाविणायुक त्यीन काल कान्हर्गा উৎकर्म

नां कतियाहिन। এই প্রবন্ধে বর্ণিতবা আল্হাম্রা প্রাসাদ মুরগণের স্থপতি ও শিল্পচাতুর্য্যের অতি বিসায়কর দৃষ্টান্তস্থল। এতদ্ভিন্ন মোসুমগণের সৌন্দর্য্য-বৃদ্ধি বিশেষ প্রশংসনীয় ছিল। স্পেন স্বভাবতঃই অতাম্ভ উর্বার স্থতরাং প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্যের দীলাভূমি; তাহার উপর মূরজাতির অধাবসায় এবং কলাকুশলতা মিলিত হইয়া, সমগ্র রাজাটী একটা পরম রমণীয় বিচিত্র কাননে পরিণত করিয়া তুলিয়াছিল। গোয়াডিয়ানা এবং গোয়াডলকুইভার नेनीम्रायत উভয়কুলে যে সকল অতুলনীয় নগর নির্শ্বিত হইয়াছিল, দেগুলি অধুনা নাম মাত্রে পর্যাবসিত হইয়াও প্রাচীন মূরকীর্ত্তির সমুজ্জ্ব স্মৃতিমহিমা অত্যাপি কীর্ত্তর করিতেছে। তদানীস্তন রাজ্যসমূহের মধ্যে গ্রাণাডাই সর্কাপেকা সম भिक छे एक वि इहेग्रा हिल। हे हा मिर्छा कि क्षिमिथिक এक गठ क्यांन এবং প্রস্থে ভাহার একতৃতীয়াংশ মাত্র; কিন্তু এই কুন্র রাটী একটী বৃহৎ পরাক্রান্ত সমৃদ্ধিশালী সাম্রাজ্যে পরিগণিত ছিল। ত্রিশটী বৃহৎ নগর, ৮০টী জর্গ, এবং কয়েক সহস্র কুদ্র নগর ছিল। কথিত আছে, একমাত্র গোয়াডল্কুইভার নদীর উভয়তীর, শেষোক্ত প্রকার দাদশ সহস্র কুদ্র নগরে পরিশোভিত ছিল।

ত্যারাবৃত "মিরানেভেজ" (চক্রগিরি) গিরিশ্রেণীর পাদমূলে, বিশাল
"ভেগা" প্রাস্তরের উপক্লে গ্রাণাডারাজ্যের রাজধানী গ্রাণাডা মহানগরী
অবস্থিত। ইহারই এক প্রাস্তে মূরকীর্ত্তিমূক্টের উজ্জলতম রক্ন
আল্হাশ্রা প্রাসাদ নির্দ্ধিত হইয়াছিল। ইহার অভভেদী চূড়া হইতে,
বহুস্রোত্যিনীসলিলধৌত ঢাক্ষানারঙ্গকাননপূর্ণ, ইতন্ততঃ বিক্ষিপ্ত
'ক্ল ক্ল চিরপ্রামল ক্স্মক্ঞ-সমন্তিত সেই বিন্তীর্ণ "ভেগার" মনোহর
শোভা নয়নগোচর হয়। স্থাতল মৃত্সমীরণ, চিরহিমাবৃত "চক্রগিরি"শিপর হইতে অবতীর্ণ হইয়া, "ভেগা" পুণ্ডের প্রফ্ল ক্স্মরাজির
সৌরভ-ভার বহন করিতে করিতে লোহিত প্রাসাদের স্থপ্রশালর
পথে প্রবিষ্ট হইয়া, নিদাঘপ্রপর উক্ষ মধাত্রও মাধবীসৃদ্ধার স্থার
ক্রশীতল করিয়া তুলে।

আল্হাম্রা প্রাসাদ একটা অসমতল উচ্চত্মির উপর প্রতিষ্ঠিত। ইহার চতৃপার্শে অত্যুক্ত হর্ভেগ্য প্রাচীর, এবং স্থানে স্থানে দুঢ় হুর্গ্রারা হইতেছে। আল্হাম্রার অনেকগুলি প্রবেশদার; তন্মধ্যে "ন্নায়দার" দর্বাপেক্ষা প্রাদিন। লোহিত এবং বাসন্তী বর্ণে স্বরঞ্জিত একটা প্রকাণ্ড তুর্গ ভেদ করিয়া, এই দ্বার আল্হামরা অভ্যন্তরে প্রবেশ করিয়াছে। মূর্থলিফাগণ এই "ন্নাম্বারে" বিচারাসনে উপবিষ্ট হইতেন। এই পথে প্রাসাদে প্রবেশ করিলে, সন্মুথে একটা চতুকোণ প্রাক্ষন নয়নগোচর হয়। তাহার পর স্থন্দায় মার্টলপুঞ্জে স্থশোভিত মার্টল-প্রাদাদ। এই রমণীয় প্রাদাদ হইতে বহির্গত হইয়া একটা সন্তীর্ণপথে কিয়দ্দ্র অগ্রসর হইলে, প্রায় শতহন্ত দীর্ঘ এবং তদর্কপরিমিত প্রস্থ একটা স্বৃত্ত প্রান্ধ প্রায়। ইহার মধ্যস্তলে স্থবর্ণমংস্থ-পরিপূর্ণ একটা জলাশয় আছে; এবং যথন বালস্থ্যরিক্ষিলা সেই সকল ক্রাড়ারত মংস্থাগাত হইতে প্রতিলক্ষিত হইতে থাকে, তথন এক অতি অনির্বাচনায় দৃশ্য প্রকৃতিত হয়। নানাকার কার্য্যথচিত এবং বিচিত্র চিত্রে শোভিত স্তন্ত্যস্ত্র প্রস্থান বিষ্টিত; ইহার উত্তরে চতুদ্বোণ কোমারিস তুর্গ উর্দ্ধমুথে গগনমণ্ডল চুম্বন করিতে উন্মত হইয়াছে।

আলহামরার এই অংশ প্রগাঢ় শান্তিময়; এত নিস্তর্ক যে, বহির্জগতের অন্তিমনাত্রও এফানে অন্থমিত হয় না। ক্ষুদ্র একটা জলম্রেত নিঃশব্দে অতি মৃহগতি জলাশ্য়ে প্রবেশ করে, এবং তজ্ঞপ নিঃশব্দে ভিন্নপথে পুনরায় চলিয়া যায়। সমীরণের মৃছতম একটা হিল্লোল আসিয়া এ স্থানের লতাপতাদি এক বিন্দু কম্পিত করিতে সাহসী হয় না;—কীটপতক্ষের উল্লাসরবের ক্ষীণতম একটা কম্পন্ত এ নীরবতা ভেদ করিতে পারে না; এস্থান এমিনি নিস্তর্কা চারিদিক্ যেন এক অভিন্তানীয় গন্তীর জনরাজা;—কিন্তু তাই বলিয়া এ নিস্তর্কার মধ্যে ধ্বংস ও মৃত্যুর নিদাকণ বিভীষিকার ছায়া অমৃভ্ত হয় না। শতাক্ষীর পর শত্যুকী জগতের শত শত কীর্তিরাশি বহন করিয়া কালগর্ভে বিলীন হইয়া গিয়াছে, কিন্তু এ প্রাসাদের ধ্বংদাবশেষও সেই প্রাচীনকালের মাহাত্মা-মুকুট শিরে পরিয়া অদ্যাপি দণ্ডায়মান রহিয়াছে;—সর্ব্বগ্রাদী কালের সহিত্ত শত শত বর্ষ যুদ্ধ করিতে করিতে বিক্ষতদেছ এবং নই গৌন্দর্যা হইয়াও সে যেন ভাহার প্রাণের অন্তিম্বন্ত ক্রিরে করিরার জন্ত সদাসর্ব্বদা ব্যগ্র হইয়া রহিয়াছে।

त्राक्षमञागृह প্রবেশ করিলে মদে হয়, যেন অদূরে বছকীর্ভিপ্রথিত

ম্বদ্যাট্ রত্নসিংহাদনে উপবিষ্ট হইয়া নীরবে আপনার পাচীন মহিমা বিস্তার করিতেছেন, এবং তাঁহার সভাসদ্গণ তাঁহাকে ঘিরিয়া বসিয়া তেমনি নীরবে তাঁহার প্রাতন কীর্ত্তিকলাণ সকরণ ছন্দে গাহিয়া যাইতেছেন! সে কি অপূর্ব্ব গভীর কল্পনাগর্ভ স্মৃতিবিদারক নিস্তব্বতা! মৃহর্তের জন্ত গে চিত্র মানসচক্ষে অক্ষত করিলে, নিমেষ্ মধ্যে শত শত বর্ষ প্রাতন মোসুমসৌভাগ্য-স্হর্যার মধ্যাত্নকিরণপ্রতাপে ক্লন প্রস্তব্ধ অবশ্চিত্ত ঝল্সিয়া যায়!

উপরোক্ত বিশাল প্রকোষ্টের প্রাচীরগাত্রে কারুকার্য্যথচিত নানাবর্ণের বহুমূল্য প্রস্তরসমূহ গ্রথিত রহিয়াছে; ততুপরি গগনস্পর্শী অর্দ্ধমণ্ডলাক্কতি ছত্রতল, স্থতিত্রিত গ্রহতারাদি লইয়া, যেন অনস্ত আকাশমগুলের অনুকরণেচ্ছায় বিপুল দেহ বিস্তার করিয়া রহিয়াছে। স্থা প্রশাস্ত গবাক্ষপ্রেলী কক্ষণী মালোকিত করিতেছে; এই সকল গবাকের মধ্যে প্রবাদনিদিষ্ট একটার নিকটবর্তা হইয়া সম্থত্ত দারো নদীর সুল রজতরেখার উপর মুগ্ধদৃষ্টি ক্ষণকাল আবদ্ধ রাখিলে, স্মৃতি মস্থন করিয়া শত শত অতীত ঘটনার স্পষ্টচ্ছায়া চক্র সন্মুথ দিয়া ঙ্গো যায়। মনে হয়, পাঁচশত বর্ষ পূর্বে সমাজী আয়েষা তাঁহার শিশু-ল কুমার আবু আবহুলাকে এই গবাক্ষপথে কৌশ ল নিয়ে অবতারণ বাইয়া,—বুঝি দে দেব-বাঞ্ছিত রাজ্য-সম্পদ্ ভবিষ্যতে তাঁহারই হই হাত দিয়া নষ্ট করাইবার জন্য-এক'দন গুপ্তহন্তার হস্ত হইতে তাঁহার প্রাণরকা করিয়াছিলেন।\* আবার যথন মনে পড়ে, এই আবহুলাকে লক্ষ্য ক্রিয়া সহদয় সমাট পঞ্চম চার্লস্ একদিন গভীর সহামুভূতির সহিত কহিয়াছিলেন,—''যাহার হস্ত হইতে এ অসীম সম্পদ্ চিরদিনের জন্ম স্থালিত হইয়া গিয়াছে, হায়, সে কত না হুর্ভাগ্য।" — তथन मौर्घनिःश्वाम महकादि विलिए हेक्का कदत्र — "श्राप्त, मिहे গুপ্তহন্তার হস্তে কেন এ হতভাগ্য শিশুকালেই মৃত্যুমুপে পতিত र्हेल ना!" আবার যথন মূরস্পতানগণের সম্পদ্গৌরবের কথা ছিত্ত হইতে ক্রমে অপস্ত হইয়া, পরবর্তী ইসাই রাজ্তকালের ছই

<sup>\*</sup> আবু মাবছুলা (বু মাবদিল) "গ্রাণাড়ার শেষ মুরসমটি। বালাকালে ইহাকে নিহত করিবার জন্ম প্রাণাদে একটা ষড়যন্ত হইরাছিল। মাতা সমাজী জারেবা বর্ণিক ক্রিপেশ্যা সমা্যা ক্রিয়াছিলেন।

একটী চিত্ৰ উদিত হইতে থাকে, তথল সহসা মহল পড়িয়া যায়, সনাম-ধস্ত মহাত্মা কলম্বদ্ ভাঁহার কল্লিভ নূতন পৃথিবী আবিষারার্থ একদিন সমাজী ইসাবেলার নিকট সাহায্য প্রার্থনা করিয়াছিলেন, কিন্তু বিফল-মনোরথ হইয়া, কোন বিদেশীয় সহৃদয় নরপতির নিকট আবেদন করিবার কথা কল্পনা করিতে করিতে ফিরিয়া যাইভেছিলেন, শওত এই ঐতিহাসিক গবাকেরই সমুথ দিয়া!

অপ্রশস্ত চুণিত সোপানপথে উল্লিখিত প্রকোষ্ঠের উচ্চ শিথারদেশে আরোহণকালে মনে হয়, ভেগাপ্রান্তরে কোন যুদ্ধ হইবা ন্ন্রয়ে সৈঞ্জ-শুগণের গতিবিধিদর্শনমানদে কত স্থলরী রাজকন্তা, এবং কত বীরশ্রেষ্ঠ রাজপুল এই সোপান অতিক্রম করিয়া প্রসাদ-শীর্ষে আরোহণ করিতেন, আর স্থন্দরীগণের স্থকোমল চরণস্পর্শে এ সোপানাবলী কত মুত্মধুর শব্দ করিত, এবং বীরপুরুষগণের পদভরে গেইরবান্বিত হইত ় শীর্ষ-দেশ হইতে ভেগার বিশাল । কে দৃষ্টি স্থাপিত করিলে, ভাহার কোন্ কোন অংশে পুরাকালে, ইনাই এবং মোসুেইগণ আল্হাম্রার অধিকার লইয়া বারবার সমরে প্রবৃত্ত হইতেন, তাহা প্রবাদবাক্যদারা নির্দারিত করিবার জন্ম চিত্ত ব্যগ্র হইয়া উঠে। সঙ্গে সঙ্গে সেই বছপুরাতন জনশ্রতিগুলি স্মরণ করাইয়া দেয় যে, সুম্রাজ্ঞী ইসাবেলা একবার কলম্বের প্রার্থনা অগ্রাহ্য করিয়া, পুনরায় তাঁহাকে ডাকিয়া আনাইবার জন্ম যে দূত প্রেরণ করিয়াছিলেন, সে ত ঐ স্থানে তাঁহার সাক্ষাৎ পাইয়া, দেশত্যাগোনুথ ভগ্নহৃদয় কলম্বদ্কে ফিরাইয়া আনিয়াছিল! প্রচলিত প্রবাদ মাত্রেই এ সকল ঐতিহাসিক স্থান চিহ্নিত করিয়া রাথিরাছে; কিন্তু তাহাতে কি আসে-যায় ? এই কিম্বদন্তীগুলি আল্-श्मृतात এक এक ी श्रधान • अङ अत्रभ, किनना हेशत्रा आन्शम्त्राद অনস্ত সৌন্দর্য্য, একটা কল্পনা-ম্থর গান্তীর্য্যে, এবং একটা বিচিত্র রহস্ত-ময় ইজ্রজালে মণ্ডিত করিয়া রাথিয়াছে 🌢

অতীত স্বৃতির এই নিভূত প্রিয় আবাসভূমি পশ্চাতে রাধিয়া আল্হাম্রার আরও অভ্যন্তরে প্রবেশ করিলে, মূরস্পতানাগণের অন্ত:পুর প্রাপ্ত হওয়া যায়। তত্ততা গবাক্ষণথে ভেগাপ্রান্তরের নর্নাভিরাম শ্যামল-শোভা, দূরত্নিবন্ধন অত্যস্ত মনোহর বলিয়া बश्चु इस्। এ व्यक्षः शूर्यत्र कमश्चनित्र जनातम वृशात्रभवन गर्यात्र

মণ্ডিত। ইহার প্রত্যেকটার জারসন্নিধানে ক্ষতলে কতকগুলি कतिया मकोर्न ছिদ্র আছে। শুনা যায়, ইহার নিম্নদেশে নানাজাতীয় ামদ্রব্য প্রজ্ঞালত হইত, এবং তত্থিত স্থরভি ধূমরাজি ঐ সকল त्रक्ष अप्त अप्त जानागाय किक नमूर् अविष्ठ इहेग्रा, ममस असः भूत এक अशीम পরিমলে আমোদিত করিয়া তুলিত। এই প্রবাদ হইতে , প্রাচান মুরজাতির বিলাদিতার কথঞিং আভাষ প্রাপ্ত হওয়া যায়: প্রত্যেক্ত কক্ষে, এক একথানি বৃহৎ প্রস্তর থণ্ড হইতে প্লোদিত এক একটা স্থানাগার; এগুলি বিচিত্র বর্ণে ও কারুকার্য্যে স্থচিত্রিত, এবং গোলাপ ও নক্ষ বাঞ্জি কুদ্র কুদ্র গবাক্ষপথে আলোকিত। অন্তঃপুরের মধ্যে একটা কুস্থমিতলভাগুনশোভিত প্রস্তরময় কুদ প্রাঙ্গন দৃষ্ট হয় । ইহারও একপার্শ্বে কতকগুলি সানাগার রহিয়াছে। এ সানাগারগুলিতে य डिक्टेन পूणा अपर्णि इश्वाहि, তা हा अठोव विश्वव्रक्षनक । स्वाठाना-मिश्तित्र सानकारण এवः स्वर्णधाम विद्यामकारण जाँशमिश्तित हिख-विताननार्थ यथन गीठवाना इरेड, उथन এर आक्रनमधाक्षिত এकती উৎস হইতে তাহার দহিত তালে তালে শ্রুতিমধুর দলিলকল্লোল উথিত হইত।

আল্হাম্বার দিংহ-প্রাসাদই দর্বাপেক্ষা স্থলর ও প্রসিদ্ধ। বিখব্রহ্মাণ্ডের তাবৎ দৌল্ব্যা যেন তিল তিল করিয়া এই প্রাসাদে মাথাইয়া
রাথিয়াছে। পূর্ব-বর্ণিত মার্টলপ্রাসাদ অপেক্ষা ইহার আয়তন কিঞ্চিৎ
ক্ষুত্রর। ১২৮টী মর্মারস্তন্তে দিংহ প্রাসাদ স্থানাভিত। ইহার প্রাক্তন
একটী বৃহৎ শৃক্তজ্পপাত্রের উপর ছাদশটী দিংহের প্রস্তরমূর্ত্তি সজ্জিত
রহিয়াছে বলিয়া, ইহার নাম দিংহ-প্রাসাদ। এক সময়ে এই ছাদশটী
দিংহম্খনিঃস্ত স্থাসিত সলিলে শৃক্তপাত্রটী সর্বাদা পরিপূর্ণ থাকিত।
ক্ষেত্তলির স্থায় এ প্রাসাদ তেসন উচ্চ না হইলেও, ইহার বিচিত্র
নির্মাণপ্রণালী, অনলধবল ক্ষেপ্রেশীর গঠনপারিপাটা, এবং স্থানিপূর্ণ
শিরী-চিত্রিত স্থাও অন্যান্ত বিবিধ বর্ণের চিত্ররাজির ধ্বংসাবশেষেরও
অন্ত পরিক্ষ্ট্র, প্রথম দর্শনে ইহাকে কয়নাদর্বাস্থ কবির স্থাস্ট্র
কোন পরীরাজ্যের স্থলরী রাজকন্তাদিগের বিলাসপ্রাসাদের ছায়ামাত্র
বিলিয়া সহসা ভ্রম জন্মাইয়া দেয়!

उপরোক্ত সর্কাঙ্গস্থলর সিংহপ্রাসাদ উত্তীর্ণ হইলে, একটা অসংখ্য

মণিরত্বভূষিত বিচিত্রগঠন দারপথে বৃহৎ প্রক্ষেষ্ঠান্তব্ন প্রবেশ করিতে হয়। প্রবাদ আছে, এই স্থানে আল্হাম্রা প্রাসাদের শেষ প্রদীপ স্থলতান আবু আর্বভ্লার আদেশারুসারে, বনিসেরাজবংশীয় প্রধান ব্যক্তিগণের
শিরছেদন করা হইয়াছিল।\* এই জনশ্রুতির সত্যতা প্রমাণার্থ
অসন্দিগ্ধচিত্ত দর্শকর্মকে রক্তচিত্রিত কয়েকটী স্থান অদ্যাপি প্রদর্শিত
হইয়া থাকে। কিন্তু এ বিশাল কক্ষটী এত অনস্ত প্রশান্ত সৌমর্যোর ক্রির্যাছিল, এ কথা হলরে স্থান দিতে বিল্মাত্রও প্রবৃত্তি হয় না।
অথবা হতভাগ্য আবু আবহলার স্মৃতির সহিত চিরকাল এ ঘারে কলক্ষ্
ভিড়িত থাকিবে, এ কথার আমাদের প্রাণে এক গভার বেদনাল্লিন্ত করুল
সন্দেহের উদয় না হইয়া যায় না।

আল্হাম্বার প্রত্যেক ক্ষুদ্রাংশ তর তর কারয়া বর্ণনা ক্লবিতে গেলে, প্রবন্ধের কলেবর অযথা বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইবে। স্কুতরাং ইহার অন্তর্গত কানন-প্রাসাদ "জেনেরালিফের" ভগ্নাবশেষের একটা সংক্ষিপ্ত চিত্র পাঠকবর্গকে উপহার দিয়াই প্রবন্ধ সমাপন করিব। আলহাম্রা হইতে একটা সরলপথ বহির্গত হইয়া, "লসমলিনক" নামা ক্ষুদ্র একটা স্রোতস্থিনীয় উপর দিয়া জেনেরালিফে প্রবেশ করিয়াছে। এই কাননটা গবাক্ষবিহান অত্যুক্ত প্রাচারে বেষ্টিত ছিল, কিন্তু ধ্বংসপ্রিয় কালের প্রভাবে তাহা ক্রমে থসিয়া পড়িতেছে। প্রাচীরগাত্রন্থ আরবায় শিল্পনৈপুণার নিদর্শনগুলি বিলীন হইয়া যাইতেছে; মুরীয় ভাঙ্করবিদ্যায় লুপ্তপ্রায় শেষচিকগুলি একণে কচিৎ দৃষ্ট হয়; স্থবাসিত সলিলগর্ভ উংসগুলি চিরনিস্তর্ক্তায় নিমজ্জিত হইয় গিয়াছে; আর সে প্রাসাদবাটিকার সৌন্দর্যায়াণি ত অধুনা বিশ্বত-প্রায় ক্ষনশ্রুতিমাত্রে পর্যাবসিত হইয়াহে। কিন্তু জেনেরালিফের অভ্যন্তরন্থ নয়ন-রঞ্জন চিরশ্রামল লতাপত্রের প্রাচ্র্যা, পরিমলবালী মৃত্সমীরণের ক্রীড়া, এবং নিপান্ধবন্ধ নির্মাণ প্রিগ্রের ক্রীড়া, এবং

<sup>\*</sup> আবু আবদ্ধার রাজত্কালে জেগ্রিস্ও বনিসরোজ বংশগরের মধ্যে বিবাদের
স্ত্রপাত হয়। পরে বনিসেরাজীগণ কুচক্রে নিহত হন। ইহারা আবু আবদ্ধার
মাতা সত্রাজ্ঞী আরেবার দক্ষিণহস্তবরূপ ছিলেন। আবু আবদ্ধা বরং যে উ ক্ত হজ্ঞাকাণ্ডে লিগু ছিলেন, ত্রিব্রে সন্দেহ আছে। •

अन्नताल, श्रक्ति ठाशत महक तोन्तर्या हुकू अनाभि कौविक ताथि-য়াছে। একটা ক্ষুদ্র অথচ বেগবান জলস্রোত, খেতপ্রস্তরনির্দ্ধিত দীর্ঘ খাতের উপর দিয়া প্রবাহিত হইতেছে; কোথায়ও বা স্থাকোমল লতা-মণ্ডিত বৃক্ষগুলি অবনতদেহ এই স্কুণ্ডল স্রোতোবক্ষের উপর শীতল ছায়া নিক্ষেপ করিতেছে; কোগায়ও বা নীলাকাশের নীলছায়া ধীরতরঙ্গিত ৰা ক্ষীণ শুদ্ৰ স্ৰোভটী যুৱিয়া ধুৱিয়া লভাকুঞ্জে প্ৰবেশ করিভে গিয়া अमृणा रहेया शियारह। ইरात फुल्थवारिनी कूरिनंगामिनी कननामिनी স্রোতিষিনী ও প্রশান্তবক্ষ কৃদ্রকৃদ্র জলাশয়, ইহার অসংখ্য কৃদ্র জলপ্রবাহের মধ্যাহ্লরবিকরোদ্তাসিত ক্ষীণ রজত-রেথা ও সায়াহ্লকালের त्रक्कित्र लाष्ड्रम कोण कनकर तथा, हेशत उन्नुक स्पार्लाकि आगमन ভূথও ও প্রস্টিত কুমুমবছল লতাকুঞ্জের শীতল ছায়া, ইহার পূণিমা রজনীর শুত্র-জ্যোৎসা-পুলকিত স্নানসোন্দর্য্য এবং গভীর অন্ধকার রজনীর বিষাদগন্তীর মর্শ্মকাতরতা,—প্রকৃতি যেন এ সমস্তই আপনার ত্বচারু হস্তে অতি আশ্র্যা নিপুণতার সহিত সাজাইয়া রাখিতে নিরম্ভর ব্যগ্র। যথন মুহ্মন্দ প্রবাহিত স্থলীতল সমীরণ এই সকল লভাপত্রের রোমাঞ্চিত করিয়া দেয়, তথন মনে হয়, যেন প্রকৃতি স্থগভীর দীর্ঘশ্বাদে জেনেরালিফের করণ গীতি মুখরা নিস্তন্ধতা ভঙ্গ করিয়া, ইহার অন্তর্নিছিত লুপ্তপ্রার্ম কীর্ত্তিমৃতিরাশি, কালের চিরবিমৃতিগর্ভ পরস্রোতের ক্রগ্রাস হইতে রক্ষা করিবার জন্ম ব্যাকুলপ্রাণে অমুনয় করিতেছে!

श्री इसमामन इक्।

# উद्धांख (थिंगिक।

কি চাহ প্রেমিক পাস্থ, একা এ প্রান্তরে ?
নাহি হেথা বারিবিন্দু—নিশ্ব সরোবর,
নাহি হেথা ছায়াতক ; প্রদীপ্ত অম্বরে
কেবল জলিছে তেজে সংশ্র ভাস্কর !
উত্তপ্ত বালুকারাশি; ভ্রান্ত মরীচিকা—
অনস্ত কুহক জাল ! নিষ্ঠুর পবন
নিঃশ্বাদে নিঃশ্বাদে আনে মৃত্যুর কণিকা,
জানিও এখানে হয় জীবন্ত দহন !
কিরে যাও, ফিরে যাও, তাজ অভিমান,
পারিবেনা উত্তরিতে এ ভীম প্রান্তর;
আন গিয়ে সাধনার স্বর্গীয় বাতাস,
বহাও এ প্রেম মেঘে সাধনার ঝড়;—
এ মক্র প্রান্তর তবে হইবে শীতল
স্থানর ফলিবে শশু—ন্ধির স্থশ্যমর্গ !

শ্রীশরৎ কুমার সেন গুপ্ত

#### "দেনাপতি কালী।"

বহিয়াছে; বসস্ত-মলয় যেরপে নানা ফুলফুলের সদ্য স্থাস
সংগ্রহ করিয়া ব্যথিত হৃদয়কেও প্রফুল করিয়া তুলে, আমাদের সংবাদপত্রসমূহও সেইরপ সময়ে সময়ে নব নব তথ্য, নব নব গৌরবগাথা
পাঠকমগুলীকে উপহার দিয়া, তাহাদের য়থ হৃদয়তদ্রীকে সঞ্জীবিত কিরয়া তুলিতেছে। আমরাও বিবিধ রহস্তময় সরস সাহিত্যের সেবা
করিয়া, বিরস নিজালস চিত্তকে উৎফুল করিবার অবসর পাইতেছি।
আমাদের মানস-রাজ্যের প্রাচীর-ঘারে বাঙ্গালী-গৌরবের যে ক্ষীণালোকভাতি রক্তিম-রাগে জমে জমে দিখলয় অতিজম করিবার উপজম
করিছেছে, তাহা বে একদিন দিগস্ত—প্রসারী রশ্মিজালে পরিণত হইয়া,
আমাদিগকে সমুদ্রাসিত, সঞ্জীবিত ও সমুন্নত করিবে—সে আশা আমরা
কিছুতেই পরিত্যাগ করিতে পারি না।

এক্ষণে বালালীর পূর্বগোরবের কোনও ন্তন সংবাদ প্রচারিত হইলে, তবিষরক সত্যাক্সনিংসা সাহিত্য সেবিগণের মনে জাগরিত হর; বালালীর উর্বর-মন্তিক্ ও তীক্ষ প্রতিভা সমরে সময়ে তাহার সাহান্য করে; হয়তঃ অরদিনেই প্রকৃত রহন্ত উদ্ভিন্ন হয়, এবং অনেক প্রাসন্ধিক তথ্যও লোকলোচনের পথবর্ত্তী হয়। সেই আশায় আমি একটা ক্রে সংবাদ লইয়া পাঠকবর্গের সমীপে উপস্থিত হইতেছি। ইহার কোন অংশ বদি অসত্য বা কয়না-প্রস্তুত বলিয়া প্রমাণিত হয়, তাহাতে আমার ত্রহ ব্যতীত ক্ষম হইবার কারণ থাকিবে না। কারণ সত্যালোক প্রামীর হইলে, অপরের সক্ষে সন্ধে আমারও নাম্বি বিদ্বিত হইবে। স্কাই আমানের উপান্ধ দেনতা।

यदमप्त महावाक প্রভাগাদিতা, সমকে ক্ৰিবর ভারতচ্ঞ লিখিয়া-হেন:—

যশোর নগর ধাম, প্রতাপ আদিত্য নাম,

মহারাজ বঙ্গজ-কার্যন্ত।

नाहि मात्न পाতमात्र, क्ट्र नाहि चाछि जात्र, ভয়ে যত ভূপতি দারস্থ।

বরপুত্র ভবানীর,

প্রিয়তম পৃথিবীর,

বায়ান হাজার যার ঢালী,

যোড়শ হলকা হাতি অযুত তুর্স্কী সাতি

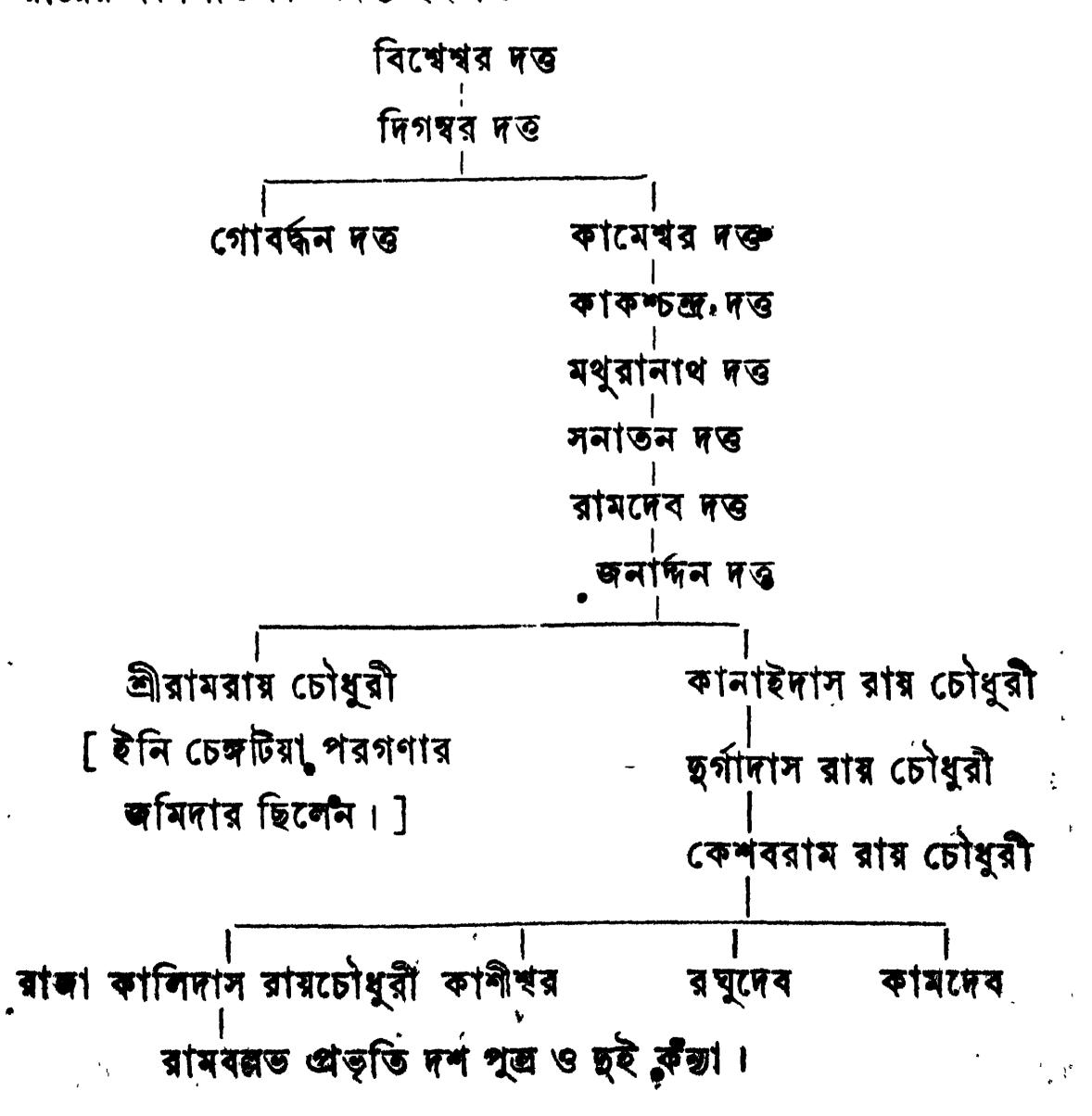
युक्तकारम (मनाभि क्रामी।

এই কবিতার শেষ পংক্তিতে "দেনাপতি কালী" আছে; ইহার অর্থ সাধারণতঃ প্রায় সকলেই করেন যে যুদ্ধকালে অন্থরমর্দিনী ভগবতী কালী স্বয়ং মহারাজের দেনাপতির কার্য্য করিতেন । অথবা কালিকা-দেবীর সশরীরে আবির্ভাবের কথা স্বীকার না করিলেও মহারাজ যে দেবীর ক্বপায় জয়লাভ করিতেন—উদ্ভ কবিতার ভাবার্থে তাহাও হইতে পারে। কিন্তু কালিকাদেবীর প্রত্যক্ষ রূপাই যদি জয়লাভের এক-মাত্র হেতু হয় তবে বায়ায় হাজার দৈন্ত এবং অযুত হয়-হস্তির আবশ্যকতা. कि, এवः মহারাজের বীরত্বেরই বা कि गाथा। হইল, তাহা স্পষ্ট বুঝা গেল না। কয়েক পংক্তি পূর্বে কবি মহারাজকে ভবানীর বরপুত্র विषया वर्षना कत्रियादहन, जैवः जहे वर्षनाहै यदण्डे विषया द्वाध हत्र। পুনরায় কালীকে সেনাপতি বলিয়া কীর্ত্তন করার প্রয়োজনীয়তা সম্যক উপলদ্ধি করা যায় না । সে যাহা হউক, উপরোক্ত ব্যাখ্যা সঙ্গত বলিয়া ধরিয়া লইলেও, কাহারও কাহারও মনে এতদ্বিধয়ে সন্দেহ উপস্থিত হওয়া বিচিত্র নহে। বিশেষতঃ কবির উদ্দেশ্য সর্বতেই ছজের। वाका वित्निरवत्र এक প্রকার ব্যাখ্যা প্রচলিভ থাকিলেও ভাহার অভাবিধ वााचा जमस्य नरह। जावात्र द्यान विर्निष्य अकी मस्यभन्न न्छन

व्याणा क्रिया यमि এक्षी न्जन ঐण्डिशिंगक मजा প्रकाणिक क्रा यात्र, তাহাতেই বা ক্ষতি কি ?

যশোহর জেলার কোন কোম স্থানে উপরোক্ত বাক্যের একটা পৃথক্ ব্যাখ্যা প্রচলিত আছে। তদমুসারে "কালী" विनिष्ठ (দবতাকে না বুঝাইয়া কালিদাদ রায় নামক এক ব্যক্তিকে বুঝার। মহারাজ প্রতাপাদিতের যে অসংখ্য ঢালী সৈতা ছিল, काणिनाम त्राय তाহাদেরই मर्मात्र वा অधिनायक ছিলেন। জনশ্রতির উপর আস্থা স্থাপন করিলে, আমরা জানিতে পারি, যে\_ কালিদাস প্রতাপাদিতোর দক্ষিণ হস্তম্বরপ ছিলেন; তাঁহারই সাহায্যে মহারাজ প্রতাপ গঞ্জেলিস প্রভৃতি হর্দান্ত পর্টুগীজ দহ্যাদগকে দমন করিয়াছিলেন; উপধেষ্টি কবিভায় "সেনাপতি কালী" বলিতে সেনা-পতি কালিদাস রায় চৌধুরীকেই বুঝায়। কেহ কেহ বলেন মদনমল্ল নামক এক ব্যক্তি প্রভাপের ঢালী সৈন্তের অধিনায়ক ছিলেন; কারণ একথানি ঘটক-কারিকায় আছে:—"সামস্ত মদনশৈচব ঢালীনাং পতি महाकः।" किन्न गाँशात जानी मित्युत मध्या वामान शाकात विनमा প্রবাদ চলিয়া আসিতেছে, তাহাদের অধিনায়ক' একজন ব্যতীত थाकिত नाहे, এরপ ধারণা করাও বিফল। একণে কেহ বলিতে পারেন, যে কালিদাস মদনমলের নিম্ন পদস্ছ ছিলেন; এবং ভাছা যে নিতাত অসম্ভব এরপুও বলা যায় না। তবে কালিদাস জীবদশায় "রাজা কালিদাস রায়" বলিয়া পরিচিত ছিলেন, এবং চিরস্থায়ী বন্দো-ৰক্ষের পর গবর্ণমেণ্ট প্রদত্ত সনন্দেও তিনি "রাজা" বলিয়া উল্লিখিত আছেন। এরপ হলে তিনি ব্য একজন উচ্চপদস্ক, এবং খ্যাতিসম্পন্ন ব্যক্তি ছিলেন, তাহা অস্বীকার করা যায় না। এবং একজন মলজাতীয় ব্যক্তি অপেকা তাঁহার পদও উচ্চদংস্থিত ছিল, এ কল্পনাও নিতান্ত व्यमक्र ना रहेर्ड शारत। याहा रूडेक, वीत्रवत्र महनमझ रक ७ डाँरात्र निवाम (काथाय ছिन, তाहा अमाविधि चित्रीक् ठ हम नाहे; किन कानि- গ্রাহা হইতে প্রতীত হইবে যে কালিদাস রাম্ব একঞ্বন প্রভূত ক্ষমতা-

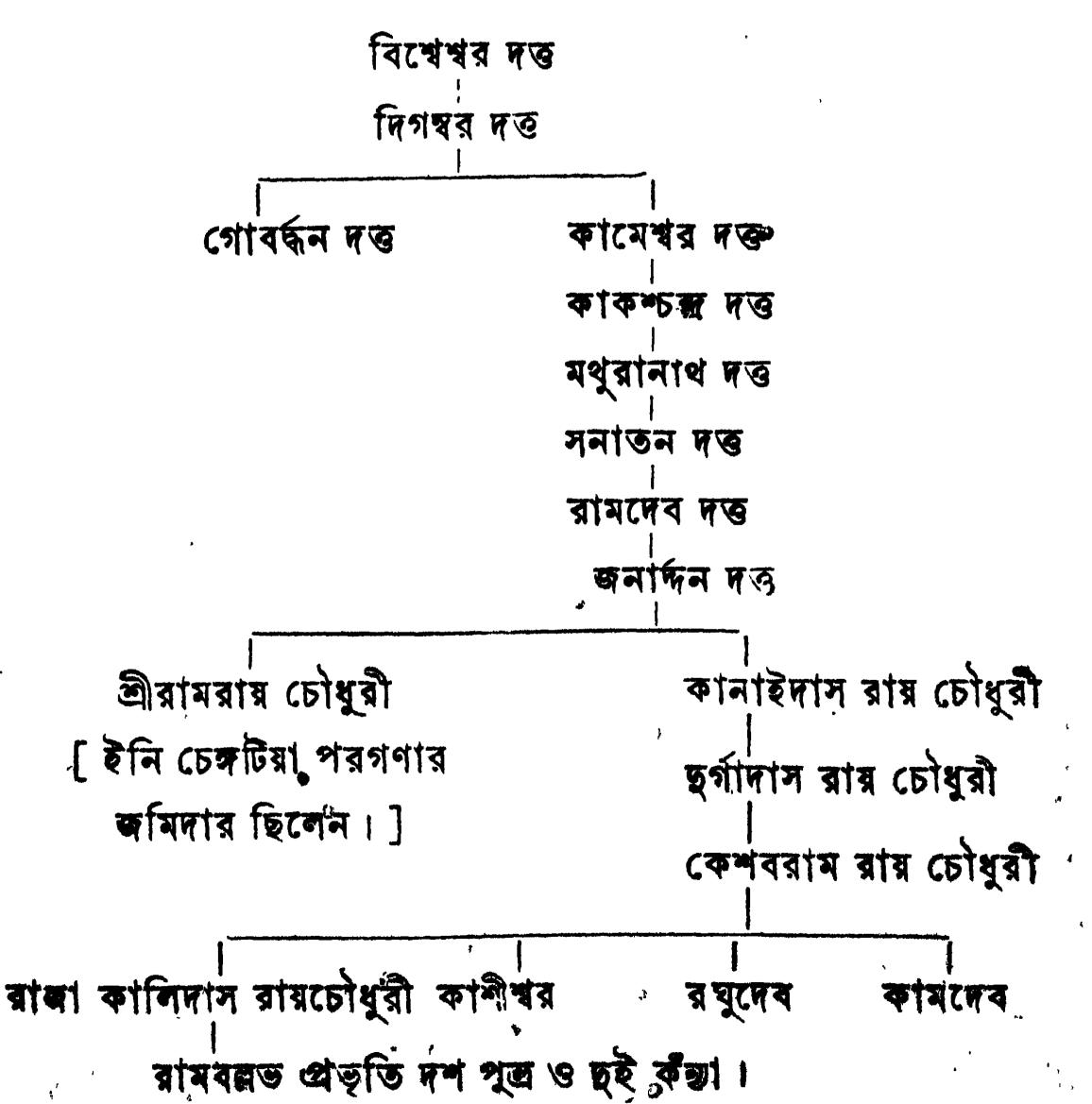
কালিদাস রায় দত্তবংশসন্ত ত দক্ষিণ রাঢ়ীয় কায়য়। ইহাদের পূর্ব্ব নিবাদ বালাতে ছিল। তথা হইতে সম্ভবতঃ বিশ্বেখর দত্ত বা তাঁহার কোন বংশধর বিঘটিয়া নামক স্থানে আসিয়া বাস করেন। বিশ্বেখরের অধস্তন অস্তম বংশধর শ্রীরাম রায় চৌধুরী চেঙ্গটিয়া পরগণার জমিদার ছিলেন। তাঁহারই সময় হইতে এতদ্বংশীয়দিগের "রায় চৌধুরী শুউপাধি হয়। কালিদাস রায়ের পিতা কেশবরাম রায় উক্ত শ্রীরাম রায়ের শ্রাতা কানাইদাস রায়ের পোল্র। শ্রীরাম রায়ের বংশধরগণ এখনও যশোহরের অন্তর্গত সেথহাট নামক স্থানে বাস করিতেছেন। কালিদাস রায়ের বংশলতিকা প্রদন্ত হইল:—



ব্যাখ্যা কুরিয়া যদি একটা নৃতন ঐতিহাসিক সত্য প্রকাশিত করা যায়, তাহাতেই বা ক্ষতি কি ?

যশোহর জেলার কোন কোম স্থানে উপরোক্ত বাক্যের একটা পৃথক্ ব্যাখ্যা প্রচলিত আছে। তদমুসারে "কালী" বলিতে দেবতাকে না বুঝাইয়া কালিদাস রায় নামক এক ব্যক্তিকে বুঝায়। মহারাজ প্রতাপাদিভারে যে অসংখ্য ঢালী সৈত্য ছিল, कालिनाम त्राम्न छाशाप्तत्रहे मर्फात्र वा অधिनामक ছिल्नन। জনশ্রতির উপর আস্থা স্থাপন করিলে, আমরা জানিতে পারি, যে কালিদাস প্রতাপাদিতাের দক্ষিণ হস্তস্বরূপ ছিলেন; তাঁহারই সাহায্যে মহারাজ প্রতাপ গঞ্জেলিস প্রভৃতি হুদান্ত পর্টুগীজ দস্মাদগকে দমন করিয়াছিলেন; উপয়োক্ত কবিভায় "সেনাপতি কালী" বলিতে সেনা-পতি কালিদাস রায় চৌধুরীকেই বুঝায়। কেহ কেহ বলেন মদনমল্ল নামক এক ব্যক্তি প্রভাপের ঢালী সৈন্তের অধিনায়ক ছিলেন; কারণ একথানি ঘটক-কারিকায় আছে:—"সামস্ত মদনশৈচব ঢালীনাং পতি यझकः।" किन्न गांशात छाली मित्रात्र मःशा वाग्रात शांकात विलग्ना প্রবাদ চলিয়া আসিতেছে, তাহাদের অধিনায়ক' একজন ব্যতীত থাকিছে নাই, এরূপ ধারণা করাও বিফল। একণে কেছ বলিভে পারেন, যে কালিদাস মদনমলের নিম্ন পদস্ছ ছিলেন; এবং তাহা যে নিতাভ অসম্ভব এরপ্রও বলা যায় না। তবে কালিদাস জীবদশায় "রাজা কালিদাস রায়" বলিয়া পরিচিতে ছিলেন, এবং চিরস্থায়ী বন্দো-ব্তের্পর গ্রণ্মেণ্ট প্রদত্ত সনন্দেও তিনি "রাজা" বলিয়া উল্লিখিত আছেন। এরপ স্থলে তিনি ধে একজন উচ্চপদস্থ এবং খ্যাতিসম্পন্ন वाकि ছिल्म, তाश अशोकात्र कंत्रा यात्र ना। এवं এकक्षन महाकाछीत्र ব্যক্তি অপেকা তাঁহার পদও উচ্চসংস্থিত ছিল, এ কল্পনাও নিতান্ত অসঙ্গত না হইতে পারে। যাহা হউক, বীরবর মদনমল্ল কে ও তাঁহার निवान काथाय ছिन, তাহা अमाविध स्त्रीक्ष क्य नाहे; किन्न कानि-मान नषद्य क ठक छनि नेद्राष्ट्रनोय छचा नः श्रह कत्रिष्ठ भाद्रां निवाद्य। তাহা হইতে এগ্রীত হইবে বে কালিদাস রায়'একজন প্রভূত ক্ষতা-শালী পরাক্রান্ত ব্যক্তি ছিলেন।

कालिमान ताम पত्रश्ममञ्जू क मिक्किन ता ही म काम्र । देशामित शूर्य নিবাদ বালাতে ছিল। তথা হইতে সম্ভবতঃ বিশ্বেশ্বর দত্ত বা তাঁছার কোন বংশধর বিঘটিয়া নামক স্থানে আসিয়া বাস করেন। বিশেষরের অধস্তন অন্তম ঝশধর শ্রীরাম রায় চৌধুরী চেঙ্গটিয়া পরগণার জমিদার ছিলেন। তাঁহারই সময় হইতে এতদ্বংশীয়দিগের "রায় চৌধুরী 🔊 উপাধি হয়। কালিদাস রায়ের পিতা কেশবরাম রায় উক্ত শ্রীরাম রায়ের ভ্রাতা কানাইদাস রায়ের পৌত্র। শ্রীরাম রায়ের বংশধরগণ এখনও যশোহরের অন্তর্গত দেথহাটি নামক স্থানে বাস করিতেছেন। কালিদাস রায়ের বংশলতিকা প্রদত্ত হইল:---



क्ष्मिनवाम चिक्ति मेर लाक बिनमा পরিচিত ছিলেন। कामिनाम বার তাঁহরাই জ্যেষ্ঠ পুত্র। ১৫৬০ খুষ্টাব্দে বা তাহার কিছু পরে कानिमारमत्र बना इत्र। जिनि भिक्षकाँ महे जाजा वनभानी हितन ; লেখনী অপেকা বংশয়ষ্টি পরিচালনাই তাঁহার নিকট অধিকতর প্রির ছিল। যথন তিনি যৌবনদীমায় পদার্পণ করেন, তথন তাঁহার ছদান্ত প্রকৃতির পরিচয়ে প্রতিবেশিগণকে ব্যতিবাস্ত করিয়া তুলিয়া-ছिল। कानिमामেत्र अथीत कलक्शन नारियान ছिল। প্রাচীন गाठि यिक्रभ "ছড়িছ প্রাপ্ত হইয়া শৃগাল-কুকুর-ভীত বাব্রর্গের হন্তের শোভাবর্জন করে এবং কুকুর ডাকিলেই সে ননীর হাতগুলি হইতে **अगित्रा পড়ে," \* পূর্বের্ক সেরূপ ছিল না। তথন ইহারই ব**লে গৃহতের यान यशामा ७ धनधान त्रिक इहेड; (मण ७ मयाक ऐसाउत्हे माम्रम्छात्र गाठित छेभत्र शुख हिन। कूछ गाठिशात्न त्र महात्र कान्निम লাঠির শান্তে পারদর্শী বলিয়া দেশবিখ্যাত ছিলেন; তথন সেই ম্যালেরিয়া— কলেরা-বর্জিত প্রাচীন বঙ্গে লাঠি সবল ও শিক্ষিত হত্তে পড়িয়া অমুত ক্রিয়া-সম্পাদনে সক্ষম ছিল। মলদেহ কালিদাসের লাঠি ও छाँ होत्र स्मिक्टि नारियानम्दात्र विठिल नीना क्राय कानिमारमञ्जे সম্পদ্ধ সৌভাগ্যের পথ প্রশস্ত করিতেছিল। মহারাজ প্রতাপাদিত্যের সর্ব্যাসী প্রভাব যথন সমগ্র বঙ্গের বহু প্রদেশে তাঁহার বিজয়-বৈজয়ন্ত্রী প্রতিষ্ঠিত করিতেছিল, তথন কালিদাসের ক্ষুদ্র পরগ্রণা নিস্তার পার নাই। তবে শ্রারামরাষ্ট্রের স্যোগ্য খংশধরের বলপ্রতাপ একেবারে নগণ্য ছিল না; এজন্ত অগণ্য সৈত্তদলপ্তি প্রতাশের भक्ति भ कूम श्राम निजास जनामामनजा रम नारे। कनियाम বৌৰনের প্রারম্ভ হইতে যে পৈতৃক সম্পত্তি সকবলন্ত রাধিবার জন্ত

<sup>\*</sup> ४विष्मिष्टर्सं, "स्वी छोयूत्रांगी" ऽवर शृ:। •

প্রবল আরোজন করিতেছিলেন, বৈাগ্যতর ব্যক্তির ভাগ্য সমক্ষে তার।
সমস্তই বিক্ল হইল। কিন্তু মহামুভব প্রতাপ গুণের আদর করিছেন,
গুণীর মর্যাদা ব্ঝিতেন, এবং বলের বীরত্ব প্রতিভা উৎসাহদানে
সঞ্জীবিত করিতে সচেই হইতেন। এজন্ত কালিদাসের উদ্দেশ্ত পরাভূত
হইলেও তিনি প্রতাপ কর্তৃক নবাধিকত সম্পত্তির সঙ্গে সাদরে গৃহীত
হইলেন। মণিকাঞ্চন সংযোগ হইল; প্রতাপ কালিদাসকে স্বীয়
চালা সৈত্তের একজন প্রধান অধিনায়কপদে নিযুক্ত করিলেন। তিনি
বঙ্গভূমিতে যে এক প্রবল হিন্দ্রাজ্য সংস্থাপনের কল্পনা পরিপোষণ
করিতেছিলেন, সেনাপতি কালী তৎপক্ষে একজন প্রধান সহায়
হইলেন। স্বাধীনতা রক্ষা ও রাষ্ট্রবিজয়ের জন্ত প্রতাপাদিত্যাত্ব সমস্ত
যুদ্ধ করিয়াছিলেন, তাহার প্রত্যেক যুদ্ধেই কলিদাস সীর বলবীর্য্য
প্রদর্শনে কুণ্ঠিত হন নাই।

কালিদাস আজীবন সৈনিক পুরুষ ছিলেন। যেন্থানে তাঁহার রাজ-প্রাসাদের ভগাবশেষ এখনও বিরাজিত, এবং যে অঞ্চলে তৎ-সম্বনীয় জনশ্রতি এখনও বহু মজলিসে সাদরে ব্যাখ্যাত হইয়া থাকে, সে প্রদেশে তাঁহার বীর্ত্মূলক কোনও উল্লেখন্যাগ্য বিশিষ্ট ঘটনা প্রচলিত নাই—কারণ তাঁহার যোজ্জীবন সেন্থান হইতে বছ্লুরে সমাহিত হইয়াছিল।

১৬০০ খৃষ্ঠান্দের প্রাক্কালে বছসংখ্যক পটু গীজ দক্ষা চট্তাম ও আরাকানের নিকটবর্তী দীপসমূহে উপুনিবেশ স্থাপন করিয়া প্রবল পরাক্রান্ত হইয়া উঠে। বাজালা দেশে তথন মোগল শাসনকাল বটে, কিন্তু প্রকৃত দেশের মালিক দ্বাদশ ভৌমিকেরাই ছিলেন এবং পটু গীজ দক্ষাগণও দক্ষিণভাগে মোগলদিগের রাজ্যাধিকার-কল্পনা বিপর্যন্ত করিয়া দিতেছিল\*। ইহাদের দৈতাবল ও কম ছিল না; ইহারা অত্যন্ত

<sup>\*</sup> Marshman's History of Bengal.

मारमी अवः नाववृद्धानित्व सम्म हिन, अवन्न त्कररे रेशनिगत्क ममन क्तिएक भाविक सा। मिनाशिन भएकणिम नामक अक्कन अक मगरम साशनामिशदक अकि तोयूक जेम्पूर्व भन्नाकिङ कित्रमा जन्मोश अधिकात कत्रित्रा गरेसे। ছिन এবং কমেক সহস্র দৈন্তের দলপতি হইরা -দেদিও প্রতাপে স্বাধীনভাবে রাজত্ব করিয়াছিল। কিন্তু এ ঘটনা প্রভাপাদিত্যের পরাজ্ঞের বহু পরে ঘটিয়াছিল, প্রভাপাদিভার শাসন সময়ে পটুগীজগণ মন্তকোত্তলন করিতে সক্ষম হয় নাই: यथन ভाহাদের প্রবল অত্যাচারে দক্ষিণদেশীয় অধিবাদীদিগকে বিপর্যান্ত করিয়া তুলিয়াছিল, তথন প্রতাপাদিত্যই নানাস্থানে তাহা-দিগকে পরাজিত, করিয়া দেশের লোককে তাহাদের অমামুষিক অভ্যাচার হইতে রক্ষা করিয়াছিলেন। এরূপ কথিত হয় যে সেনাপতি ्कानिनारमत वाष्ट्रवन এই विষয়ে তাঁহাকে যথে । আরুকুল্য করিয়াছিল। कि क्रिक्कि क्रषा व्यानिया প্रতাপের वधीन গোললাজ হই ग्राছिलन ; क्ष्म अ कात्रज्ञान्दा প্রতাপের লোকদিগের দারা নিহত হইয়াছিল; গঞ্জেলিসের সহিত প্রতাপ ও আরাকান রাজের সন্ধি সংস্থাপিত रहेशाहिल।

्यथन हिन्दूक्षशानि गानितः हिन्दू याधीनका वित्वारित करा अश्रा "रिम्छ मह तऋकृমिতে অব্তরণ করিয়াছিলেন, যথন ভবানক মজুমদার, মহাভাপ রামরায় ও শ্রীমন্ত খা প্রভৃতি কুলাকারগণ সাধিয়া मुख्यमधात्री "গোলামের জাজি" হইবার জন্ত বদ পরিকর হইয়াছিল, ত্রখন প্রভুত্তত ও সদেশভক্ত কালিদাস প্রভৃতি বীরগণ দেশের জন্ম দৈছের শোণিত বায় করিতে কুণ্ঠিত হন নাই। যথন বিশাসঘাতকেরা অবণের মর্যাদা সম্পূর্ণ বিশ্বত হইয়া, অরাতিদলকে শ্বজাতির উপর ভাষাৰ করিবার জন্ম আহ্বান করিতেছিল, তথন স্থ্যকান্ত, কমল, শরণ, मननमझ ও কালিদাস প্রভৃতি বঙ্গীর বীরগণ কেছ যশোহরে,

কেই বিজ্ঞাপুরে শ্বজাতির গৌরবরকার জন্ম উথিত রপাণকরি দগুরমান ছিলেন। শহর ও রঘুনন্দন প্রভৃতি বঙ্গের স্থানাপ্রদেশ প্রজ্ঞানির বিরগণকে রণান্ধনে সমুৎসাহিত করিতে ছিল। কিন্তু বঙ্গদেশের ভাগাদোষে বালালীর সব আশা ভরসা নির্মূল হইল; বঙ্গ-গৌরব বারভ্ঞাগণ হতবীগা হইলেন। মানসিংহ একে একে তাঁহাদিগকে উৎসর করিলেন।

মানসিংহ মহাবীর প্রতাপকে যুদ্ধে পরাজিত করিয়া পিঞ্জরাবদ্ধ করিলেন; ভূষণার মুকুন্দরামের রাজ্য অধিকার করিলেন; শ্রীপুরের কেদার রায়কে ছলে বলে নিহত করিলেন; খিজিরপুরের ঈশা খাঁ পূর্কেই বশ্যতা স্বীকার করিয়াছিলেন। এইর্দ্ধিপ বারভূঞাদিগের মধ্যে যাহারা সর্ব্য প্রধান,\* তাঁহাদের গৌরব অন্তমিত হইলে, অন্তান্ত সকলকে দমন করিতে অধিক সমরের আবশ্যক হইল না।

ফে সকল স্বজাতি দ্রোছিগণ হর্জের অভিযানে বিজ্বরদ্ধ মানের প্রধান সহার হইরাছিল, পূর্ণাভীষ্ট মান নানা ভাবে তাহাদের সন্মান র্দ্ধি করিতে ক্রটী করেন নাই। প্রতাপের প্রবল শত্রু কচুরার (হাবব) তাহাব হুর্গাদির সমস্ত গুপুত্র মানসিংহের নিকট বিজ্ঞাপিত করিরাছিল, এজন্ম "কচুরার পাইল বশোরজিৎ নাম"। প্রতাপের বিরুদ্ধে সেই "নারকীয় বড়যন্ত্রে যে সকল মহাপাণী লিপ্ত ছিল, তন্মধ্যে ভ্রানন্দ মজুমদার সর্ব্ব প্রধান।" শুপ্রদর্শন ব্রাহ্মণ কুমার ভ্রানন্দ প্রথমতঃ প্রতাপেরই অধীনে কার্য্য করিতেন; প্রেক্ত তিনিই খাদ্য ও রসদাদি

<sup>\* &</sup>quot;The most powerful of the twelve were the Lords of Sreepur and Chandican and above all Mansudali Masá—uddin (?) Perhaps this is Isa khan Massuddi -i- Ali of Khizrpur." Beveridges Bakartunj p. 29.

<sup>†</sup> ভারতচন্ত্র, অরদামকল।

<sup>‡</sup> সভাচরণ শান্ত্রী, প্রভাপাদিতা চরিত ১০৮ পৃঃ

्यांगारेश मानिरिংহের यশোহর বিজয়ের পথ পরিকার করেন। রা€ यानिमः व्यवस्थिय वाममार्द्य साक्ष्य युक्त मनरम ख्वानमरक वाख्या পরগণার জমিদারি দিয়া পুরস্কৃত করেন।\*় চাঁওড়ার রাজবংশের পুর্ক পুরুষ ভবেশ্বর রায় বঙ্গের মোগল স্থবাদার আজিম থাঁর অধীনে সৈ দগভুক হন; এবং তাঁহার কনিষ্ঠভাতা প্রতাপানিতাের অধীনস্থ মল পরগণার রাজস্ব সংগ্রহে নিযুক্ত ছিলেন। প্রবাদ এই যে উক্ত কনি ভাতা বিশ্বাস্থাতকতা পূর্বক প্রতাপের আভ্যন্তরিক সমস্ত সংবা মোগল শিবিরে প্রেরণ করিতেন। ভবেশরের পুত্র মহাতাপ রামর গোপনে কচুরায়কে আশ্রয় দেন ও মানসিংহকে নানা ভাবে সাহা করেন। এজন্ত তিনি মানসিংহের বিজয় লাভের পর ৪টি পরগণা লা करत्रनं ७ "यर्भाष्ट्रत्र त्राका" উপाधि গ্রহণ করেন। । এই মহাতা वारमञ्ज वः भक्षत উত্তরকালে কালিদাদের রাজপ্রাসাদ চূর্ণ বিচূর্ণ করি জমিদারী অধিকার করিয়া লন।

এদিকে যথন ভৌমিকদিগের প্রতিপত্তি নিপ্রভ হইল, তং তাঁহাদের অধীনত্ব সেনাপতিগণ ছিন্ন বিচ্ছিন্ন হইয়া পড়িলেন এ थारिनिक ताक्यांनी मकन পরিত্যাগ করিয়া, সেই অরাজক রাজে এক এক প্রান্থে জীবিকা নির্বাহার্থ এক বা ততোধিক পরগ अधिकांत्र कतित्रा विभिल्ला । वाक्ला वा छल्दीरात्र त्रामहः মানসিংহের বশ্যতা স্বীকার করিয়া স্বরাজ্য পুন: প্রাপ্ত হইয়াছিলেন **जूरगात मूक्नताम भन्नाकिए इहेरात भन्न ७९भूख मळकि९ तारक** कडकार्यंत्र विधिकात्री ছिल्मा ; विक्रमभूद्वत्र एकमात्र त्रारव्य त्रार् डाहाबु मन्नी ७ रिननाপि जिवर्शित मर्था विज्ञ हहेबाहिन। এই नम-कानिमान आत्रियो हेनकशूत शत्रां अधिकात्र कवित्रा वर्णन।

<sup>\*</sup> त्राकोर लाइन मूर्याणाधात्र कृष्ठ महात्राक्ष क्षण्डल दारत्र इ दिख, ३७ पृः

<sup>+</sup> প্রজাপাদিতোর জীবন চার্ড ১৪০ পৃ: ও ১৬২ পৃ:

বিক্রমপুরাধিপতি বিক্রমশালী কেদার রীয়ের অধীনে কালি ঢ ली नामक একজন দেনাপতি ছিলেন বলিয়া জানিতে পারা যা তিনিও মানসিংহের অধীনতা স্বীকার করেন নাই; বরং শেষ প্র ৰীরবিক্রমে যুদ্ধ করিয়াছিলেন। তিনি ও বর্ত্তমান প্রবন্ধোক্ত কালি अভिन्न वाक्ति किना मत्निश्यम। এরপও হইতে পারে যে প্রতা পরাজ্যের পর তাঁহার সেনাপতি কালিদাস কেদার রায়ের অঞ্সয় ভ্ করিয়া, মোগলের উপর প্রতিশোধ লইবার জন্ম সচেষ্ট ছিলে প্রতাপাদিত্যের সহিত যুদ্ধের সময়ে হয়ত' কেদার রায় পূর্বেই কা দাসের বীর্যাবত্তার পরিচয় পাইয়াছিলেন। এজন্ম কেদার রায়ের তাঁহ স্বীয় দৈর্গুদলের একজন প্রধান অধিনায়ক পদ্ধেবরিত করা আশ্চা বিষয় নহে। কিন্তু "বারভুঞা" প্রবন্ধ লেথক শ্রীযুক্ত বাবু আনন্দ वाम कालिमान ঢालीक "बाक्रागवः भीम्" विलम्ना वर्गना कविमा-এবং একথাও বলিয়াছেন যে, তাঁহার বংশীফ্রো উত্তর কালে মূ विषया প্রসিদ্ধিলাভ করেন।\* তাহা হইলে, কায়স্থবংশীয় ঢা দেনাপতি কালিদাস রায় ও ব্রাহ্মণবংশীয় সেনাপতি কালিদাস চ অভিন্ন ব্যক্তি নহেন, ইহাই প্রতিপন্ন হয়।

দেনাপতি কালিনাস রারচৌধুরী ইসফপুর পরগণা অধি করিয়া তদন্তর্গত বেভাগনি (বিভাগনিছি) গ্রান্ধে স্বীয় আবাস নির্ণয় করেন। ইসফপুর পরগণা পূর্ব্বে প্রতাপাদিত্যেরই রাজ অন্তর্গত ছিল। সন্তবতঃ প্রতাপের পরাজ্বের পরে মানসিংহের হিবশ্যতা স্বীকার করিয়া তাঁহারই অনুমতি ক্রেমে তিনি উহা অধি করেন। বাহা হউক, কালিদাস উক্ত পরগণা অধিকার করি চাঁচড়ার মহাতাপ রামরায় তাঁহাকে পরাজিত ও দুরীয়ত করিবার বছচেপ্রী করেন। কিন্তু কালিদাস ছর্ব্বলহন্তে শাসনদণ্ড পরিচ

<sup>\*</sup> ল্ব্যভারত, শাবণ ১৩০৮, ১৭৭ পুঃ।

'खांगारेमा मानिन्धरहत यानाहत विकासत भथ भतिकात करतन। ताका यानिष्ट व्यवस्थित वाष्ट्रात्व श्वाकत युक्त मनत्क ख्वानकृष्क वाश्वरान পরগণার জমিদারি দিয়া পুরস্কৃত করেন।\* . চাঁওড়ার রাজবংশের পূর্ব-পুরুষ ভবেশ্বর রায় বঙ্গের মোগল স্থবাদার আজিম থাঁর অধীনে সৈত্য দগভুক হন; এবং তাঁহার কনিষ্ঠলাতা প্রতাপানিত্যের অধীনস্থ মণই পরগণরি রাজস্ব সংগ্রহে নিযুক্ত ছিলেন। প্রবাদ এই যে উক্ত কনিষ্ঠ ভাতা রিশাদ্যাতকতা পূর্বক প্রতাপের আভ্যন্তরিক সমস্ত সংবাদ মোগল শিবিরে প্রেরণ করিতেন। ভবেশরের পুত্র মহাতাপ রামরায় গোপনে কচুরায়কে অশ্প্রয় দেন ও মানসিংহকে নানা ভাবে সাহায্য করেন। এজন্ত তিনি মানসিংহের বিজয় লাভের পর ৪টি পরগণা লাভ करत्रनं ७ "यर्लाह्दत्र त्राका" উপाधि গ্রহণ করেন। । এই মহাতাপ রামের বংশ্ধর উত্তরকালে কালিদাদের রাজপ্রাসাদ চূর্ণ বিচূর্ণ করিয়া किमात्री व्यक्षिकात कित्रिया मन।

এদিকে যথন ভৌমিকদিগের প্রতিপত্তি নিপ্রভ হইল, তথন তাঁহাদের অধীনস্ত সেনাপতিগণ ছিন্ন বিচ্ছিন হইয়া পড়িলেন এবং প্রাদেশিক রাজধানী সকল পরিত্যাগ করিয়া, সেই অরাজক রাজ্যের এক এক প্রান্থে জীবিকা নির্কাহার্থ এক বা ভভোধিক পরগণা अधिकांत्रं कतित्रा विनिल्ला। व्यक्ति वा ठक्कवीरभेत त्रामहक्त মানসিংহের বশ্যতা স্বীকার করিয়া স্বরাজ্য পুন: প্রাপ্ত হইয়াছিলেন; ভূষণার মুকুন্দরাম পরাজিত্ হইবার পরে তৎপুত্র সত্রজিৎ রাজ্যের जाहाबु मन्नी ७ रिमनाপতিবর্গের মধ্যে বিভক্ত হইয়াছিল। এই সময়ে कानिमान आनिया हेनकपूत्र পत्रशना अधिकांत्र कत्रिया वर्णन।

<sup>\*</sup> ब्रांकोव लाइन मूर्याणायाम कृष्ठ महाबाक कृष्ण बार्यत्र इतिज, ३७ णुः

<sup>+</sup> अञानाविष्ठात को यन हाँतुङ ১৪० भृः ७ ७५२ भृः

বিক্রমপুরাধিপতি বিক্রমশালী কেদার রীয়ের অধীনে কালিদাস ज नौ नामक थक क न दिना थि ि हिलन वित्रा क निर्व थात्र। তিনিও মানসিংহের অধীনতা স্বীকার করেন নাই; বরং শেষ পর্যান্ত बौत्रविक्राय युक्त कत्रियाहिलन। जिनि ७ वर्खमान প্রवस्काक कालिमान अভिन्न वाक्ति किना मत्मर्यम । এরপও হইতে পারে যে প্রতাপের পরাজ্যের পর তাঁহার দেনাপতি কালিদাস কেদার রাম্বের অঠশ্রয় গ্রহণ করিয়া, মোগলের উপর প্রতিশোধ লইবার জন্ম সচেষ্ট ছিলেন। প্রতাপাদিত্যের সহিত যুদ্ধের সময়ে হয়ত' কেদার রায় পূর্বেই কালি-দাসের বীর্যাবতার পরিচয় পাইয়াছিলেন। এজন্ম কেদার রায়ের তাঁহাকে স্বীয় সৈন্তাদলের একজন প্রধান অধিনায়ক পদ্ধে বরিত করা আশ্চর্য্যের বিষয় নহে। কিন্তু "বারভুঞা" প্রবন্ধ লেথক শ্রীযুক্ত বাবু আনন্দ নাথ রায় কালিদাস ঢালীকে "গ্রাহ্মণবংশীয়" বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন এবং একথাও বলিয়াছেন যে, তাঁহার বংশীক্ষেরা উত্তর কালে মূখুটি विद्या প্রসিদ্ধিলাভ করেন।\* তাহা হইলে, কায়স্থবংশীয় ঢালী-দেনাপতি কালিদাস রায় ও ব্রাহ্মণবংশীয় সেনাপতি কালিদাস ঢালী অভিন ব্যক্তি নহেন, ইহাই প্রতিপন্ন হয়।

দেনাপতি কালিনাস রারচৌধুরী ইসফপুর পরগণা অধিকার
করিয়া তদন্তর্গত বেভাগদি (বিভাগদিছি) গ্রামে স্বীর আবাস স্থান
নির্দির করেন। ইসফপুর পরগণা পূর্ব্বে প্রতাপাদিত্যেরই রাজ্যের
অন্তর্গত ছিল। সন্তবতঃ প্রতাপের পরাজ্যের পরে মানসিংহের নিকট
বশ্যতা স্বীকার করিয়া তাঁহারই অনুমতি ক্রমে তিনি উহা অধিকার
করেন। যাহা হউক, কালিদাস উক্ত পরগণা অধিকার করিলে
চাঁচড়ার মহাতাপ রামরায় তাঁহাকে পরাজিত ও দুরীক্কত করিবার জন্ত
বহুচেষ্ঠা করেন। কিন্তু কালিদাস ত্র্বেলহন্তে শাসনদণ্ড পরিচালন

<sup>\*</sup> নব্যভারত, আবণ ১৩০৮, ১৭৭ পুঃ।

मिन्न ছिन। তিনি তাহাদের্ই সাহায্যে মহাতাপরামের লুক্কমার্জারবৎ আক্রমণ সমূহ নিরাক্ত করেন। অবশেষে কালিদাস বহুমূল্য উপহার ज्ञवा ঢাকায় স্থ্বাদারের নিকট প্রেরণ করেন এবং তাঁহার সম্ভণ্টিসাধন করিয়া দিল্লীশ্বরের স্বাক্ষর-সম্বলিত ইসফপুর পরগণার জমিদারীর সনন্দ लाख कर्द्रन। এই সময় হইতে তিনি "রাজা" উপাধি পাইয়াছিলেন, এরপ অমুমান অসকত নহে। সনন্দ গ্রহণের পর কালিদাসের জীবদশায় চাঁচড়ার রাজবংশীয়েরা ইসফপুর লাভের আর কোনও চেষ্টা করেন নাই। মহাতাপরানের পুত্র কন্দর্প রায় ১৬১৯ খুষ্টাব্দ হইতে ১৬৪৯ খৃষ্টাব্দ পর্যান্ত র।জ্যাশাসন করেন। তাঁহার সময়েও ইসফপুর भन्नगं का निर्मारमं वः भवत्रगं कत्राञ्च हिन ।

রাজা কালিদাসের আবাস স্থান বেভাগদি গ্রাম বর্ত্তমান যশোহর জেশার অন্তর্গত। ইহা বেঙ্গল সেণ্ট্রাল রেলওয়ের নওয়াপাড়া নামক रिष्ठेर्भन **इ**हेर्ड जिन बाहेन पूर्त व्यविष्ठ। कानिमान यथन এ প্রদেশে প্রথম অধিষ্ঠান করেন, তথন ইহা জনাকীণ স্থলর স্থান ছিল না; তথন বেভাগদির চতুঃপার্শ্বে দূর-বিস্তৃত বিল ছিল। সম্ভবতঃ শত্রুর আক্রমণ হইতে রাজধানী রক্ষা করা সহজ সাধ্য হইবে প্রত্যাশায় তিনি এই প্রান্তরময় প্রদেশে বাস করেন; এবং অনতিবিলম্বে নানা-রম্য-হর্ম্যরাজি সমষ্টিত রাজ-প্রাদাদ নির্মাণ করিয়া অপূর্কখ্যাতি বেভাগদি গ্রামের সোন্ধ্য ও গৌরব বৃদ্ধি কণ্নে। তাঁহার অবস্থানের সঙ্গে সঙ্গে সেই ক্ষুদ্র জনপদ সন্ধ্যাকালীন কাক-কোকিল-কোলাহলময় অশ্বতকর মত खन-कल्लान পরিপুরিত হইয়া উঠিল। বহুসংখ্যক পুরুরিণী খনিত इंडेन, तुक्रवां कि निर्मिष्ठ इहेन, এवर চতুर्फिएक नुष्ठम नुष्ठम अधिक्रध নিশিত হইল। সাধারণ লোকের জলকণ্ঠ নিবারণের জভা কালিদাস य स्मीप जमानम थनन कतिमाहित्नन, তाहा এখনও মেভাগদি আমে "মঠবাড়ার দিখা" নামে খ্যাত থাকিয়া, তাঁহার গোরব ঘোষণা কারতেছে। কালিদাদের জ্ঞাতিবর্গের আবাদ স্থান দেশহাটি গ্রাম, বেভাগদি হইতে প্রায় এ।১১ মাইল দ্রবর্তী হইবে। তিনি উক্ত দেশহাটি পর্যান্ত যে দার্ঘ ও উন্নত রান্তা প্রস্তুত করিয়া দেন, তাহা অন্তাপি বর্ত্তমানু আছে এবং প্রতিদিন শত শত পথিক ঐ পথে গমনা-, গমন করিয়া থাকেন। যখন প্রথম রাস্তা প্রস্তুত হয়, তখন বিলের মধ্য দিয়া রাস্তা প্রস্তুত করিতে হইয়াছিল। দেই জল-প্লাবিত প্রান্তরের মধ্য দিয়া প্রশস্ত ও সমূনত রাজপথ নির্মাণ করা কত কষ্টকর ও কত ব্যয়দাধ্য ব্যাপার, তাহা ভাবিলেও বিশ্বয়াপন্ন হইতে হয়।

রাজা কালিদাস রায়ের রমাবল্লভ প্রভৃতি দেশ পুত্র এবং ছুই কন্তা हिल। कालिमान अग्नः मिक्न ता हो य यो लिक का ग्रन्थ हिल्लन; किन्द তাঁহার কন্তাবয় ও পোজীগণকে বিভিন্ন সমাজের প্রবল মুখ্য কুলানের সহিত বিবাহ দিয়া স্বীয় বংশমর্যাদা বৃদ্ধি করেন। এইরূপে তিনি "গোষ্ঠীপতি" আখ্যা পাইয়াছিলেন। কায়স্থ সমাজে অনেক হলে কুলীনদিগের অপেক্ষা গোষ্ঠীপতির সন্মান অধিক। বালী সমাজের ১৯ পর্যায়স্থ গোদাঁইদাদ ঘোষ, দাঁতিয়া প্রগণ্ধর জমিদার কুমিরা নিবাদী কৃষ্মিণীকান্ত মিত্র চৌধূরীর কন্তা বিবাহ করিয়া উক্ত কুমিরায় বাস করিতেছিলেন। কালিদাস স্থীয় জ্যেষ্ঠা ক্যার সহিত উক্ত গোন । इनाम्य । अब्रिक्ट १० । अध्याप्त । अब्रिक्ट मुश्रा ताम । प्राप्त । महिज विवार मिन्न। जांशांक सात्र वाणिक, आनिन्ना त्रार्थन, भरत भोजा বাণীপুর তালুক বৃত্তি দিয়া নিকটবতী বাঘুটিয়া গ্রামে রামদেককে প্রতিষ্ঠিত করেন। এই রামদেবই বাঘুটিয়ার প্রসিদ্ধ ঘোষ বংশপুর আদিপুরুষ। তাঁহারই বংশধরগণ একণে প্রায় একশভ ঘর হইয়াছেন এवः উक्त स्थ्रभंश्व वाघूषिया आत्मत्र थात्र > । > > । । जिल्लाम् वाम क्रिक्टिल्स । प्रक्रिं ब्राह्मिस कास्क्रिंग्स मर्था वास्टियाँ द्वास

महाभविष्ठात मन्यान उ श्रांडभिंख करा अधिक। डीहानिरात्र मरश দেশমান্ত মহাত্মাগণ জনাগ্রহণ করিয়াছেন ; তাঁহারাই যশোহর ও খুল্না **टिना**त काग्रस्थालय अभाखपि ছिल्लिन। त्रांका कालिमामहे हैशापत প্রতিষ্ঠাতা। উক্ত ঘোষবংশীয়গণ আজিও কালিদাসের নান্টীপুর নামক খারিজা তালুকের উপস্বত্ব ভোগ করিতেছেন।

काक्सिम चीत्र कनिष्ठ कर्छाटक माहिनगत्र ममाटकत्र २० পर्गात्रक कामन मुथा त्रामराव वस महानरम् महिङ विवाह राम এवः निम्निष वृक्षिमान कवित्रा विजामि श्राम्य जांदाव कं जिल्ला कवित्रा मिन। वर्জ्यान मयस्य विভাগদির বস্থগণ উক্ত রামদেব বস্থরই অধস্তন वः भथत । कानिमारमत्र त्रीलीत महिल वागां । गां खत व्यवन म्था करेनक वसूत विवाह रुप्त ; कानिमान छाँशांक जननवाधान वृखि मिग्रा ছিলেন।\* বেভাগনি ও জঙ্গলবাধালের বস্থগণ অনেকেই এখনও লালিদাস-প্রদত্ত বৃদ্ধিভোগ করিতেছেন। এতঘাতীত নিকটবর্ত্তী শাড়া ও অন্তান্ত স্থানের কারস্থগণের মধ্যে কেহ কেহ এখনও ত্রিপাত "মহাত্রাণ" জমির অধিকারী অছেন।

वाङा कानिमामः अञास वाञ्चल- जनः जनः त्रथर्मनिष्ठं ছिलनः নিকটবর্ত্তী বড়গাভি, শিক্ষিয়া, সেথহাটি, দেয়াপাড়া, ডুসিলহাট ও শোনপুর প্রভৃতি ২৭ থানি গ্রামের অনেক ব্রাহ্মণপরিবার এখনও कांगिमाम श्रमख बक्ताखन किय जिम्म कित्रिक्टिन। वर्षशास्त्रि निवामी পূजाপদ ভট্টাঢ়ার্যা মহাশয়গণের পূর্বপুরুষ কালিদাদের ইষ্ট-अक्र हिटलन। উँशांपिरात्र निकं का निपारत नश्रक वानक किय-बदेनक गंत्रमात्राथा वांकित्र निक्छेरे अथम "मिनाशिक काणी" नषकीत्र बााबा छनिवाहित्वन।

<sup>\*</sup> विविध्यत्र त्यांचे क्रुष्ठ "कात्रश्च कूलमर्गन" >8-30.गृ:।

বিবরণ হইতেও তাহার মথেট পরিচয় পাওয়া নিয়াছ। তারি বিবরণ হইতেও তাহার মথেট পরিচয় পাওয়া নিয়াছ। তারি তিনি অনেক সময়ে যাগ যক্ত উপলক্ষে দীনহংখীদিগকে অক্তর্ম দান করিতেন। তাঁহার মত বছগুণায়িত মহৎ ব্যক্তি অতীব হর্ম ভ। মারুষ থাকে না, কিন্তু কীর্ত্তি থাকে; কালিদাস নাই—কিন্তু তাঁহার কীর্ত্তি চিন্ন এখনও বিল্পু হয় নাই। বাঙ্গালী বীর-পূজা জানে না—হইহাই বাঙ্গালীর সর্ব্ধপ্রধান কলহ। কিন্তু যে দেশে বীর ছিল এবং তাহার পূজাও ছিল—সে জাতি কথনও চিরদিন বীর-পূজা বিশ্বত হইয়া থাকিবে না। যে জাতির অতীত আছে—তাহার ভবিশ্বও আসিবে, —এ আশা কিছুতেই পরিত্যাগ করা যায় রা। যথন বাঙ্গালী বাড়শোপচারে বীর-পূজা করিতে শিথিবে, তথন বাঙ্গালীর গৃহে গৃহে এক কালিদাস কেন, এরূপ শত শত কালিদাসের কীর্ত্তি-কাহিনী পরিকীন্তিত হইবে। বাঙ্গালীর পিতৃধন কম নহে।

কালিদাসের উপর চিরদিনই চাঁচড়ার রাজবংশীয়গণের আক্রোশ ছিল। কালিদাসের মৃত্যুর পর তাঁহারা স্বাভিলাষ পূর্ণ করিবার অবসর পাইয়াছিলেন। ১৬৪৯ খুটাকে কন্দর্প রায়ের মৃত্যুর পর যশোহরের সম্পত্তি তৎপুত্র মনোহর রায়ের হস্তে যায়। তিনি ১৭০৫ খুটাক পর্যান্ত জীবিত ছিলেন। ইহারই সময়ে চাঁচড়ার জমিদারীর উন্নতি পরাকালা প্রাপ্ত হয় এবং ইনিই উক্ত জমিদারীর সর্বপ্রধান প্রতিলালা; যশোহরের নিকটবর্ত্তী মনোহরপুর গ্রাম ইহারই নাম বোষণা করিতেছে।

মনোহর রাজের হতে জমিদারী ন্যস্ত হইবার করেক বংসর পরে সমস্ত ভারতবর্ষে এক ভীষণ বিপ্লব উপস্থিত হয়। এতদিন সহিস্কা

<sup>\*</sup> Hunter's Statistical Accounts, Vol. 11.

বাঙ্গালার স্বাদ্যর ছিলেন; তাঁহার স্কুছার শাসনতলে বাঙ্গালাদেশ পরম শান্তি সজ্যোগ করিতেছিল। কিন্তু ১০৫৭ গৃষ্টান্দে বাদসাহ সাহজাহান পীড়িত হইলে দিল্লীর সিংহাসন লইয়া তাঁহার চাঁরি পুত্রের মধ্যে ভীষণ বিবাদ উপস্থিত হয়। সাহস্কলা তাঁহার দিভীর পুত্র। ঐ বিবাদের ফলে সাহস্কলা পরিজনবর্গসহ নিধন প্রাপ্ত হন এবং বাদসাহের তৃতীয় পুত্র কুটনীতিবিশারদ আওরক্তেরে সিংহাসন লাভ কারয়া, প্রধান সেনাপতি মীরজুয়াকে বাঙ্গালার স্ববাদার নিযুক্ত করেন। জুয়াও স্বল্লদিন মধ্যে মৃত্যুমুধে পতিত হওয়াতে, সায়েস্তা খা বাঙ্গালার নবাব হইয়া আসেন। সন্তবতঃ উপরোক্ত বিপ্লব সময়ে মনোহর রায় পূর্বপুরুষের অপূর্ণ অভীষ্ট পূর্ণ কারয়া লইয়াছিলেন। তিনি ইসফপুর পরগণার অধিকাংশ হত্তগত করেন এবং কালিদাসের স্বাজপ্রাদিন ধুলাবল্টিত করিয়া চিরসম্পোষিত চিত্তাভিলায় পূর্ণ করিয়া লন।

মনোহর রায়ের অভয়া নায়া এক কলা ছিল। তিনি বেভাগদির অনতিদ্রে উক্ত কলার জল এক বাসন্থান নির্ণয় করেন; ঐ হান এখনও অভয়ানপর নামে পরিচিত। কালিদাসের ভয় প্রাসাদের আলমদলা লইয়া উক্ত অভয়ানপরে মনোহরের প্রিয় ছহিতার জল পরিধা-পরিবেটিত একটি স্থানর আবাস বাটা এবং হাদশটি শিবসন্দির নির্মাত হয়। ঐ শিবমন্দির গুলি এখনও ভয়াবস্থায় বর্তমান রহিয়াছে। বেইন-পরিধা এখনও বর্ষাপ্রমে জলপ্লাবিত হইয়া প্রীয়ারছে ওক হয়। য়ির্দেশিকর পকে ভাহার অবস্থান ও পরিমাণ নির্ম্ম করা নিভান্ত ক্রয়হ ব্রাপার নহে। কালসহকারে অভয়াক্রমার আবাস গৃহস্থালিও ক্রয়াপার নহে। কালসহকারে অভয়াকুমারীয় আবাস গৃহস্থালিও জললাকীর্ণ এবং বাসের অযোগ্য হইয়া পড়িয়াছিল; অধিক দিনের কথা নহে রাজ্বাট নিরাসী শ্রিক্ত বাবু বসভক্ষার মিত্র টাচড়ার সরকারে হ

একজন নাম্বে ছিলেন এবং স্থাগেষত সরকার হইতে উক্ত অভয়ানগরের পত্তনী ক্রম করেন। তিনি উক্ত ভগ্নবাটী অভয়ানগর নিবাসী
শ্রীযুক্ত তারকনাথ ভট্টাচার্য্যের নিকট বিক্রম করিয়াছিলেন। ভট্টাচার্য্য
মহাশম সেই জার্গ বাটীর জিনিসপত্র লইয়া স্বকীয় বাসোপযোগী
একটি অট্টালিকা প্রস্তুত করিয়া লইয়াছেন। এবং কালিদাসের
গর্কোরত রাজপ্রাসাদের প্রদাদলাভে প্রসন্ন হইয়া আত্মাঘা বোধ
করিতেছেন।

এদিকে যেখানে সেই রাজপ্রাসাদ ছিল, তথায় এক জীর্ণ নিকেতনে কালিদাসের বংশধর ৺সাতৃলাল রার্মের বিধবা স্ত্রী হুইটি অপোগগু শিশুসহ দীনভাবে বাস করিতেছেন। কালের কি বিচিত্র গতি! করাল কালের কুটিল স্রোত্ত পড়িয়া কত কত কালিদাসের বিচিত্র লীলা যে বিলুপ্ত হইতেছে, কে তাহার ইয়তা করে? কালের করে যে কলের পুতৃল, সে মান্থবের আবার গর্ক কিসের ?

শ্রীসতীশচন্দ্র মিত্র।

# कार्जिटकरয়য় বক্তৃতা।

ক্রীক্ষিত কহিলেন, "ভগবন্, প্রত্যহই আপনার নিকট হস্তলিথিত অতি জীর্ণ পুঁথি দেখিতে পাই। আজ আপনার হস্তে কুদ্র অথচ স্থানর কোগজখানি কি? জনমেজয় উত্তর দিলেন "এথানি স্বর্গন্তি জনৈক মানব-সম্পাদিত "দেব-বার্তা? লামক সংবাদ পত্র। শ্রীমান্ কার্ত্তিকেয় তাঁহার গত মর্ত্ত-শ্রমণবৃদ্ধান্ত সমন্দ্রে দেবভাদিগকে একটি বক্তৃতা দেন। আমি,তাহাই পাঠ করিতেছি।"

পরীক্ষিত বক্তাটি প্রথম ইইতে, পাঠ কাল্যাব নিমিত্ত জনমেজয়কে व्यक्रदाध कतिरलन। जनमञ्जय निम्नलियः विवर्गिषे পाठे कतिरलनः ( থামাদের "বাদদাভার প্রা!)

গত কলা "দেব-হলে" শ্রীমান কাতিকেয় তাহার মর্ভে ভ্রমণ বৃত্তান্ত लार्क करबन। मार्फ शाँठ घिकात मगग मजागृश्वि , दिव दिवी अ ও মানরগণ কর্তৃক পূর্ণ হইয়া গেল। তাঁহাদের ম্ধ্যে ছিলেন পঞ্সুথ সভাপতি; নারায়ণ ও তৎপত্নী লক্ষ্মী; স্বর্গীয় আবগারীর কর্ত্তা শিব ও তৎপত্নী হুর্গা; রাবণজেতা শ্রীরামচক্র ও তৎপত্নী সীতা; স্থরগুরু বৃহস্পতী, দৈত্যগুরু গুক্র, প্রভৃতি দেব ও দেবীগণ। এবং অদুৎদাতা কর্ম, অটল প্রতিজ্ঞ দেবব্রত, ধর্মপুল্র যুধিষ্ঠির ও তংল্রাতাগণ, বঙ্গের শেষবীর মহামহিমান্থিত প্রতাপানিতা, রায় বাহাছর विक्रमहक्त, माইक्टा मधुरुपन पख, जैयंत्रहक्त विप्रामागत, जूपपव মুখোপাধ্যায়, কবিণর হেমচক্র বন্দ্যোপাধ্যায়, গোবিন্দ রানাড়ে, প্রভৃতি মানবগণ।

সভাপতি মহাশয় ব্রহ্মা উঠিয়া কার্ত্তিকেয়কে তাঁহার বক্তৃতা পাঠ করিতে অনুরোধ করিলে, দেব দেনাপতি বলিলেন, "সভাপতি মহাশয়, (मवीगण, (मवगण ७ मानवगण, আজ আপনারা আমার বক্তৃতা শুনিতে व्यानिया व्यामात প্রতি বিশেষ সম্মান প্রদর্শন করিলেন, যে ছেতু मन श्रक गर्ण भागा मर्खि विषय या भारित का अधिक अख्या । मर्ख "আরম্স্ এক্ট্ নামক একটি আইন হওয়ায় ভত্তত্য অধিবাসীয়া আমার পুৰা একেবারে বন্ধ করিয়াছৈন। আর মর্ভে যাহাদেরই "লক্ষী তী" बाह्य छाहात्राहे छाहात्र পूका ना कतिया टंकान एक कर्या करत्रन ना। व्यथुना वामात्र शृका वात्राक्रनात्र शृष्ट्टे व्यथिक रहेशा थाएक। व्यामि আত্র যাহা বাহা বলিব তংসমস্তই আমার চাকুষ প্রত্যক বলিয়া वानिद्वन ।

আমি স্বর্গ ইইতে একেবারে। মর্ত্তে, ঝাঁপ দিলামু। ময়ুরটি কিন্তু সঙ্গে লইলাম না, কারণ দেখিতে পাই মানবগণ তাহাকে বধ করিয়া তাহার পালকে বিবিধ দৌখীনের দ্রব্যাদি করে।"

এই সময় সভাগৃহে ইন্দ্রের আলো জলিল। মনে হইল যেন স্থ্য পুনরায় উঠিলের। আপনাদের ইলেক্ট্রিক লাইট ইহার নিকট প্রদীপ বলিয়া প্রতীয়মান হুয়।

শ্রীমান্ কার্ত্তিকেয় বলিয়া যাইতে লাগিলেন, "ঝাঁপদিয়া দেখিলাম দেখানে সন্ধ্যা উপস্থিত। আমি যে স্থলে পতিত হইয়ছিলাম, মে স্থলের নাম শুনিলাম "ইডেন গার্ডেন"। তথায় মিটি মিটি আলো জ্বলিতেছিল। কিন্তু তৎপরে অবগত হইলাম ফে-প্র আলো জ্বপেক্ষা ভূমগুলে আর উজ্জলতর আলোক আবিস্কৃত হয় নাই। যাহা হউক আমি উঠিলাম। উঠিয়া দেখি তথায় দ্বিধি লোক। একপ্রকার লোকের বালিসের খোলের ন্যায় সর্বান্ধ আবৃত, তলমধ্যে চক্ষ্, কর্ণ, নাসিকা ও কদাচিত হন্তের অঙ্গুলি, নয়ন গোচর হয়। ইহায়া সর্বান্য রহংলাঙ্গুল সংযুক্ত পশুর নায় ক্রত চলিতে সক্ষম। আর একপ্রকার লোক দেখিলাম ইহাদের হস্ত, পদ, প্রভৃতি, আমাদেরই মত অনার্ত। ইহায়া সহকেই কিছু নয়, এজন্য ইহাদের চালচলন উভয়ই নয়। স্ব্রান্তারত লোকদিগকে সাহেব কহে এবং অপ্র জ্বাভিটি "বাব্" নামে অভিহিত।—"

একজন দেবতা উঠিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, "মহাশয়, ভূমগুলে "সাহেব" বা কে ? 'এবং "বাবু", বা কে ? ইহাদের পরস্পর মধ্যে সহস্কই বা কি ?"

শ্রীমান্ কার্তিকেয় উত্তর করিলেন, "সাহেব এবং বাবু উভয়েই ছইটি ভিন্ন জাতি। সাহেব হলেন রাজা, বাবু হলেন প্রজা। বাবু হলেন থান্ত, সাহেব হলেন থাদক। সাহেবুরা চকু, কুর্ন, নালিকা,

वाडीड ममख वर्ष्ट्र एकि। मित्रा द्वारथन পाছে "निर्देखमद्र" (वर्धार "বাব্দের") হাওয়া পায়ে লাগে। বাব্রা আমাদিপেরই মত। কিন্ত কভিপন্ন বাবু ও সাহেব হইয়া যান, ষথন তাঁহারা সাহেবদিগের দেশে একবার পদার্পন করেন। জগতে যত স্থান আছে তন্মধ্যে ভারতভূমি অবতারের ভূমি। পূর্বে এ স্থানে মাত্র নয় জন অবতার ছিল, কিন্তু কালের ও ভারতের মৃত্তিকার রূপায় অধুনা যে যে সাহেব এখানে পদার্পন করেন, তিনিই এক একটি অবতার হইয়া উঠেন, এবং একটি না একটি নেটিভের প্লীহ। ফাটাইয়া ভাহার স্বর্গের সোপান নির্মাণ করিয়াছেন। ভারতবর্ষে ই হাদের ও ই হাদের শঙ্কর বংশধর ফিরীজিদের সংখ্যা করু নান নহে। সেই জন্য আমি এই সাহেবগণকে দশ অবতার শ্রেণীতে বিভক্ত করিতে চাই, যথা—প্রথম অবতার, वफ़ लांहे, देंश्व व्यक्त भिष्ठे वाका, देश्व वधा कवन बाका। विकीय व्यवजात्र, প্রাদেশিক লাট, ইঁহার অন্ত্র সহামুভূতি, ইঁহার বধ্য প্রজাদের স্বস্থ। তৃতীয় অবতার হাইকোর্টের বড় জজ, ইহার অস্ত্র বে-আইন, ইহার বধা নেটভ হিতৈষী জজ। চতুর্থ অবতার, মিউনিসিপালিটির বড় কর্ন্তা, ইহার অন্ত বাই-ল, ইহার বধ্য করদাতারা। পঞ্চম অবতার क्लात माकि (ट्वेंट, देंदात चक्क शूनिन, देंदात वधा कमीनात, मिनी, নির্দোঘী প্রভৃতি জেলার সমস্ত লোক। (ইপি পূর্ণাবতার!) ষষ্ঠ অবতার विक् महात्र कर्छ। मार्टिव, हैहात शक्त बाविका, हैंहात वधा विहास বড়লাটটি (প্রথম অবতার) পর্যান্ত। সপ্তম অবতার চা-কর, ইহার অন্ত थरलाजन, देशत वधा कूली त्रमणी उ श्रक्ष। जहम जवजात शातारेत्रना, देशंत्र यक्ष मत्रे भनाषां , हैशंत्र वधा भाषां निना कूनी। नवम व्यवजात बङ्ग माकानमात्र, देशत जञ्ज विकाशन, देशत वधा धनी वार्। धवः भाषम অবভার কাগজের সম্পাদক, ইহার অন্ত্র প্রবল আড়মর, ইহার यथा (निजिक कांशक खना ध्वर (थाम श्वरप्र ।" •

এই স্থলে কাভিকেয় প্রশ্নকারা দেবতার দিকে ফিরিয়া বলিলেন, "মহাশয়, এইরূপ প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিলে, অত্যন্ত সময় নষ্ট হয়, আশা করি এরপ আর করিবেন না।"

"এথন যে বিষয় বলিতেছিলাম। আমি'ত উঠিলাম। উঠিয়া বাগান পার হইয়া আদিয়া একটি রাস্তায় পড়িলাম। তথায় দেখিলাম 🕹 मार्टित ও बिवित्रा (मार्ट्टरित खीलाकरक विवि कर्ट) विफारे किटिन । আমার পরণে আধুনিক বাবুর বেশ ছিল। আমি সেই পথে গেলাম অমনি লাল পাগড়িধারী একটি কালা পাহারাওয়ালা আমায় নিষেধ করিয়া বলিল, "উরাস্তা সাহাব কা ওয়ান্তে হায়, তোমরা বাস্তে নেছি হায়। হট যাও উঁহাসে।" এই রাস্তাটি রেড ক্লেড নামে অভিহিত। আমি পাহারাওয়ালার বাক্য শুনিয়া ফিরিতে বাধ্য হইলাম। ফিরিয়া—"

এমন সময় আর একজন দেবতা উঠিয়া বলিলেন, "বক্তা মহাশন্ত্র, ক্ষমা করিবেন, বাবু কি প্রকার জাতি মুমাকরপে বুঝিতে পারিলাম না। তাঁহারা কেনই বা প্রজা আর সাহেবরা কেনই বা তাঁহাদের রাজা ? তাঁহাদের মধ্যে প্রভেদ কি অনুগ্রহ করিয়া আমায় সবিস্তারে বলুন না, আর আপনাকে এই প্রকার বাধা প্রদান করিব না।"

বক্তা মহাশয় উত্তর দিলেন, "মহাশয়, বাবুরা কেন যে প্রজা ইহা তাঁহাদের ত্রভাগ্যের দোষে। তাঁহাদেরও ত্ই হাত, তুই পা এবং সাহেবদেরও তাহাই, যা কেবল পরিচ্ছদু ও আহারের বিভিন্নতা। বাবুদের মধ্যে কতকগুলি এরূপ, বলিয়া থাকেন যে সাহেবরা আমিষ ভোজী বলিয়া তাহারা অধিক বলশালী স্কুতরাং তাহারা বাৰুশের রাজা। কিন্তু আমি জ্ঞাত আছি জাপান নামক একটি প্রবল পরাক্রান্ত ৰীপের অধিবাসীরা সকলেই নিরামিষ ভোজী, কিন্তু তাঁহারা অভিশয় वनभागी। अधिकछ এই বাবুদেরই রাজা এই জাপান দ্বীপের সহিত

স্থাতা স্ত্রে আবদ্ধ হইয়া আপনাক্ষে অতি মহান্ বলিয়া মনে করেন। আরও আপনি বোধ হয় অবগত আছেন যে এক কালে এই বাবুরাই স্বাধীন ছিল। কিন্তু এখন তাহারা প্রপ্দানত। মহাশ্যু, অধীন ও পদ্দপীড়িত হইলে লোকের অনেক দোষ ঘটিয়া থাকে, স্থতরাং ইহাদেরও অনেকগুলি দোষ বর্ত্তমান। তাহারা পর্ত্রী কাতর, এবং সকলেই "হাম বড়" হ'তে চায়। তাহারা তামকুট পরিভ্যাগ পূর্বক সিগারেট এবং দিগার নামক এক প্রকার বিদেশী অপদার্থ পদার্থ ব্যবহার করিয়া থাকে। স্থতরাং দেশের অর্থ বিদেশে চলিয়া যায়। চা নামক আর একটি পানায় প্রত্যুষে তাহারা ব্যবহার করিয়া থাকে। ইহার ত্অর্থপুষ্ঠ, নধরদেহবিশিষ্ট চা-সাহেব শুধু যেঁ কুলির প্রতি ভীষণ অভ্যাচার করে তা নয়, ইহার লাভের এক কড়া কানাকড়িও দেশে থাকে না। আমার মতে বাবুরা সকলে মিলিয়া চা ও সিগার ও লিগারেট ব্যবহারাদি পরিত্যাগ করা বিধেয়। উক্ত প্রকার এবং व्यक्तां अकारत वाव्रामत वर्ष विराम याहे एक । এक ११ है हो एमत দেশের এমন ত্রবস্থা যে, দেশের সকল লোকের ভাগ্যে ত্ইবেলা অন্ন জোটা ভার। ইহারা—"

এই স্থলে পরীক্ষিত অশ্রপূর্ণলোচনে জনমেজয়কে সম্বোধন পূর্বক कहिएनन, "ভগবন্, যে দেশের কথা শুনিতেছি, ইহা আমাদেরই দেশ बिवा मत्न इटेटिहा এদেশকে এक काल स्थला, स्वना, नारम कानिछ। এथन कि ना ८१२ (मर्ट्स कारमे व्यक्तार । थाक, অপনি আর পড়িবেন না।"

শ্রীরাধাকান্ত বস্থ।

# ेजनशर्य।

মাদের দেশে জৈনধর্মের আদি, উৎপত্তি, কাল, শিক্ষা, নেতা ও উদ্দেশ্য সম্বন্ধে কতকগুলি ভ্রান্ত মত প্রচলিত আছে। সেই জন্ম হয়ত আমরা জৈনদিগকে ঘুণা করিয়া থাকি। সত্য ও তথামু-সন্ধানই সন্তাজাতির চরম উদ্দেশ্য। এই প্রবন্ধে হিন্দু, বৌদ্ধ ও জৈন শাস্ত্রবচন উদ্ধৃত করিয়া ভ্রমগুলি দূর করিবার চেষ্টা করিব।

জৈন, নিরামিষাণী ক্ষতিয়গণের ধর্ম। "আহংসা পরমো ধর্মঃ"
ইহার সারশিক্ষা ও ভিত্তি। জৈনের মতে "জীবহিংসা করিওনা,
জীবকে কট দিওনা, ইহা শ্রেষ্ঠ ধর্ম।" সাধারণ লোকে এই ধর্মের
অতি সামান্ত মাত্র জানে। কেহ কেহ বলেন বণিক, প্রাভোগী ও
নাস্তিকের ধর্ম। কেহ বা মনে করেন হিন্দু বা বৌদ্ধর্মের শাখা মাত্র,
শঙ্করাচার্য্যের সময় হিন্দুধর্মের পুনরভালয়কালে ইহার উৎপত্তি। কেহ
কেহ বলেন ইহা হিন্দু দর্শনশাস্তের গহেবধণার চরম ফল। অনেকে
মাবার মনে করেন মহাবীর অথবা পার্ম্মনান ইহার প্রথম প্রচারক।
মনেকের ধারণা জৈনেরা অত্যন্ত অগুচি, এবং উলক্ষ প্রতিমা-পূজক।
মধ্যপ্রদেশে ও রাজপুতানার লোকে জৈনধর্মকে অত্যন্ত ঘূণা করে।
ভদ্দেশবাসী হিন্দুরা বলেন যে, যদি মন্তহন্তী তোমাকে আক্রমণ করে,
তথাপি প্রাণ রক্ষার জন্ম জৈনমন্দিরে প্রবেশ করিবে না। পাশ্চাত্য
পণ্ডিতগণের ধারণাও ভ্রমপূর্ণ।

## ১। জৈনধর্মের প্রাচীনত্ব।

শঙ্করাচার্য্যের সময় জৈনধর্ম্মের প্রচার প্রথম আরম্ভ হয়, একথা সত্য নহে। ঐতিহাসিক Lethbridge and Monstuart Elphinstone বলেন যে, যঠ শতাকীতে ইহার প্রথম প্রচার ও वामभ में जाकी इंहरिंज हेरांत्र প্रভाব द्वांग रहेरिंज शास्त्र । अक्षां मजा नरः। हिन्, (वोक्ष ७ किन भाषा अक्वांका श्रीकात कद्र (य, मक्क ता हार्या खराः উজ्জ्ञ त्रिनी नगतीत निक छेष्ठ (कान श्राम এक জৈন পণ্ডিতকে তর্কে পরাস্ত করেন। মাধব ও আনন্দগিরি শঙ্কর করিয়াদেন। শঙ্করাচার্য্য স্বয়ং স্বীকার করেন যে, জুনধর্ম অতি প্রাচীন কাল হইতে প্রচলিত। তিনি বদ্রায়নের বেদান্ত স্ত্তের ভাষ্যে বলেন যে, দ্বিতীয় অধ্যায়ের দ্বিতীয় পদের ৩৩-৩৬ সূত্র জৈনধর্মসম্বন্ধে লিখিত। শারীরিক মীমাংসার ভাষ্যকার রামানুজেরও এই মত। অতএব শঙ্করা-চার্য্যের আবির্ভাবকংলে যে জৈনধর্ম প্রচলিত ছিল, তাহাতে কোন मत्मश् नारे।

অধ্যাপক Wilson, Lassen, Barth, Weber প্রভৃতি পাশ্চাত্য পশ্ভিতেরা বলেন ফে, ইহা বৌদ্ধর্মের শাখা মাত্র। কিন্তু কখন, কি কারণে ইহা শাথারূপে পরিণত হয় তাহা বলেন না। পণ্ডিত প্রবর Barth তাঁহার "Religions of India" 1892. নামক পুস্তকে স্বীকার कदिशाष्ट्रन एव এ निष्यद्वत्र जिनि किहूरे छा ज नरहन।

অধ্যাপক Weber, "History of Indian Literature" নামক গ্রন্থে স্বীকার করেন যে "জৈনধর্মদম্বন্ধে আম'দের যে টুকু জ্ঞান তাহা वाकानभाक्ष रहेर्डरे व्यायख रहेबाहि।" ध्य मकल পণ্ডिত मत्रमভाবে নিজের অজতা প্রকাশ ক্রিতেছেন, তাঁহাদের মত পরীক্ষার কোন व्यावश्रक नाहै।

टिकनधर्य (य दोकधर्यात्र माथा, दिना हिन्दू श्रञ् । वदन ना । व्याচार्याग्रंग देखन ও বৌদ্ধ স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র ধর্ম বলিয়া থাকেন। মাধব "मर्सिमर्भ न मरश्राद्र" किनमर्भरक योष्ट्र मर्भनित অন্ততম विषया निर्फ्य - - किलि रामा पर्का में बामीटि मिक्शिए के अ दोक

দর্শন প্রচলিত ছিল। কাশ্মীরী প্লতিত সদনিন্দ "অছৈত্রন্সসিদি" নামক পুস্তকে কৈন ও বৌদ্ধ ভিন্ন ভিন্ন সম্প্রদায় বলিয়া উল্লেখ कतियादिन। जनानम ७ गांधर वोक्त धर्माक देवलिक, जोवाछिक, यোগাচার এবং মাধ্যমিক এই চারি উপবিভাগে বিভাগ করিয়াছেন, किन मल्यनाग्रक देशंत्र जलनिविष्ठे करतन नारे। वतारुभिरित्र. (Dr. Kernএর মুতে তিনি খৃঃ ষষ্ঠ শতান্দীতে জন্ম গ্রহণ করেন) वृहर मःहिछात्र वरणन, नश व्यर्शर देखन जिरनत्र, धवः भाका व्यर्शर वोक व्रक्तत्र उेेेेेे निक — "नाक गान् नर्वि हि जगा ना भाख्यन मा नवान् किनानाः বিহুঃ," ৬১ অধ্যায়, ১৯ শ্লোক। সিদ্ধান্তশিরোমণি-প্রণেতা জৈন ও বৌদ্ধ উভয় জ্যোতির্যশাস্ত্রের ভ্রম দর্শন করিয়াছেন। হন্তমান নাটকও किन এवः वोक ভिन्न ভिन्न मच्छानात्र वर्ण। २म व्यथार एम स्निक লিখিত হইয়াছে যে, রামচক্রকে জৈনেরা অর্হৎ এবং বৌদ্ধেরা বুদ্ধ বলিয়া থাকে। বরাহমিহির বলেন জৈনদের অর্হৎ ও বুদ্ধের মূর্ত্তি বিভিন্ন প্রণালীতে নির্মাণ করিতে হইবে:—

> পদমান্ধিত করচরণঃ প্রদরমূর্ত্তিস্মুনী চ কেশশ্চ। • পদমাদনোপবিষ্টঃ পিতেব জগতো বেদবুদ্ধঃ॥ আজাসুলম্বাহঃ ঐবৎদান্ধঃ প্রশান্তমূর্ত্তিশ্চ। विधानाखक्रां गाक्रियां के कार्या १ इंट (ए दे ॥ ু(বৃহৎ সংহিতা, ৫৮ অধ্যায়, ৪৪-৪৫ স্লোক)।

ভাগবতে বুদ্ধকে বৌদ্ধর্মের, এবং দিগম্বর শ্লুষি শ্লুষভকে জৈন ধর্মের প্রথম প্রচারক বলা হইয়াছে। জৈন ও বৌদ্ধ স্বভন্ত সম্প্রদায় বলিয়া শারীরিক মীমাংসা ও মহাভারতে উক্ত হইয়াছে। মীমাংসার ২য় অধ্যায়, ২য় পদের ১৮-৩২ স্থতে বৌদ্ধ মতের থগুন করা হইয়াছে। ব্যাস মহাভারতেও ঐ কথা বলেন। মহাভারত, অশ্বমেধপর্ক, অনুগীত, ৪৯ অধ্যায়, २-১२ প্লোকে জৈনদিগকে বৌশ্ব সম্প্রদায় হইতে স্বতম্ভ করা

হইয়াছে। 'বিতীয় শ্লেকের টীকায় নীলকণ্ঠ বলেন "ভাবাদিন:" অর্থে মপ্তভলীনয়জ্ঞা—"সর্বং সংশ্বিত মিতিস্যাঘাদিন: সপ্তভলীনয়জ্ঞা:" ইতি। মহাভারতের অনুবাদে মোক্ষ্মলর স্যাঘাদিন: অর্থে জৈন বলিয়াছেন। Dr. Barthও ঐ কণা বলেন ( Peligions of India, p. 148)। 'অমরকোষেরও ঐ মত—"নৈয়ায়িকস্তক্ষ পাদ; ভাষাদিক আর্হকঃ (ব্রহ্মবর্গ, ২ কাণ্ড, '২–৭)। ব্রাহ্মণেরা যথনই জৈনধর্শের দোষোলেথ করিয়াছেন তাঁহাদের আক্রমণের বিষয় এই সপ্তভলীনয়। শঙ্করাচার্য্য এই সপ্তভলীনয় থণ্ডন করিয়া জৈন-বিজয়ী হইয়াছিলেন। বজায়নও সপ্তভলীনয় সমালোচনা করিয়াছেন—"নৈক্মিয় সন্তবাং," বেদাস্কৃত্ত্ত্ব, পত। স্বরাজ্যাদিদ্ধি নামক পৃত্তকেও ইহার সমালোচনা দেখা যায়। মহাভারত ও বেদাস্কৃত্ত্ত্ব খে অতি প্রাচীন গ্রন্থ, এ বিষয়ে কোন সন্দেহ নাই। যথন উভয় পৃস্তকে জৈন ও বৌদ্ধ বিভিন্ন সম্প্রদায় কথিত, তথন জৈন বৌদ্ধধ্যের শাখা এ কথা বলা যাইতে পারে না।

আদিপর্বা, দ্বিতীয় অধ্যায়, ২৬-২৭ শ্রোকে "নগ্রহ্মপণক" শব্দ ব্যবহৃত হইয়াছে। নীলকৃষ্ঠ ক্ষপণক অর্থাৎ পাথগু (পাষণ্ড) ভিক্ক এই কথা বলেন। পাষণ্ড ভিক্ক দিগম্বর জৈন সন্থাসী।

অবৈত ব্রহ্মসিদ্ধির গ্রন্থকার ক্ষপণক অর্থে জৈন সম্ভাসী বলেন—
"ক্ষপণকা জৈনমার্গ সিদ্ধান্ত প্রবর্তকা ইতি কেচিৎ," পৃষ্ঠা ১৬৯।
শান্তিপর্ব্ব, মোক্ষধর্ম, ২৩৯ অধ্যায়, ৬ শোকে জৈনদিগের সপ্তক্ষীনয়ের
আভাষ পাওয়া যায়—

"এতদেবং চ নৈবঞ্চ নচোভে নামুভে তথা এ কর্মছা বিষয়ং ক্রয়ুঃ সমন্ত্রাঃ সমন্ত্রিনঃ॥"

শান্তিপর্বা, মোক্ষধর্মা, ২৬৪ অধ্যায়; ৩ শোকে জাজালি তুলাধরকে
আনিনিকা নালিকা ভার্তসন্ধ করিভেছেন—"নান্তিক্যমণি জন্মদি"।

नीनकर्श वर्णन नाखिरकत्र वर्ष रिक्ति विलाग-निर्देशभी अ निमाकाशी —নাস্তিক্যং হিংসাত্মক ত্বেন যজ্ঞনিন্দা। স্থতরাং মহাভারত রচনাকালে এক নান্তিক সম্প্রদায় বর্তমান ছিল। এ নান্তিক কাহারা ? সাংখ্য-मङावनशी अथवा छिनमञ्चानाग्र। माःथानर्गन. कि उथन अहिनिङ रहेशाहिल ? द्वान् थाहीन हिन्द्रभाष्ट्र मारश मठावलशीरक नाखिक वना इम् १ । व नास्तिक किनमस्थामम वाजीक अन्न क्टू नरह। योशवाभिष्ठं द्रामाय्रण, देवबाग्र श्रक्तवण, २० व्यथाय, ৮ श्लोटक द्रामहत्व জিনের স্থায় শাস্ত প্রকৃতি হইতে ইচ্ছা প্রকাশ করিতেছেন :—

> নাহং রামো নমে বাঞ্ছা ভাবেষু ন চ মে মনঃ। শান্ত আসিতুমিচ্ছামি স্বাত্মনীব জিনো এথা॥

রামায়ণ, বাল্যকাণ্ড, ১৪ সর্গ, ২২ শ্লোকে রাজা দশরথ শ্রমণদিগের অতিথি সংকার করেন এই কথা লেখা আছে—"ভাপদা ভুজ্জতে চাপি শ্রমণা ভুজ্জতে তথা।" ভূষণটীকায় শ্রমণ অর্থে দিগম্বর বলা হয়, শ্রমণাদিগম্বরাঃ শ্রমণাবাতবসনাঃ; ইতি নিঘণ্টঃ। কাত্যায়নের উণাদিস্ত্রে জিন শব্দ ব্যবস্ত হইয়াছে—ইন্ সিঞ জিনীডুয়াবিভ্যোনক্ সূত্র ২৮৯; পাদ হ। দিদ্ধান্তকোমুদীতে এই সূত্রের ঝাখায় "জিনো ইন" वला रहेशाए। जिनिए १त वाि छक वर्रन, जिन्ता এই कथा वरनन।

यगत्रकार्य किन ७ वृक्ष. मगार्थवाधक। किन्छ यानिनीकार्य किन শব্দের অর্থ (১) অর্ছন, জৈনধর্ম্মের আদি প্রচারক এবং (২) বুদ্ধ, বৌদ্ধ ধর্মের স্থাপক। ভারতে যখন জৈন নামে এক সম্প্রদায় বিভাষান আছে, তথন জিন শব্দের দ্বিতীয় অর্থগ্রহণের কোন আবশ্রক দেখিতে পাওয়া যায় না। বৃত্তিকারেরাও জিন অর্থে অর্হন বলেন, যথা উপাদি-रख, मिकांखरकोमुनी। শকাতায়ন কোন সময় উণাদিহত রচনা करत्रम ? यदकत्र निक्रटक भक्जात्रदनत्र नांस्वाद्विथ আছে। शाविनित्र

বছকাল পূর্বৈ নিরুক্ত শলখা ছইয়াছে, সকলেই একথা স্বীকার করেন।
পাণিনি মহাভাষ্য প্রণেতা পাতঞ্জলির কয়েক শতানী পূর্বে জন্মগ্রহণ
করেন। ইয়োরোপীয় পণ্ডিতেরা খৃঃ পৃঃ ২য় শতানী পাতঞ্জলির কাল
নির্দেশ করেন। স্থতরাং এখন দেখা যাইতেছে যে, শকতাায়নের
ভীণাদিস্ত্র অতি প্রাচীন গ্রন্থ।

অন্তান্ত গ্রন্থেও জিন বা অর্থন জৈনধর্মের প্রথম প্রচারক বলা হয়। বরাইমিহির বৃহৎসংহিতায় নগদিগকে জিনের শিষ্য বলেন। রাজ-তর্জিনীমতে অশোক জিনশাসন অবলম্বন করিয়াছিলেন—

> যঃ শান্ত বৃজিনো রাজা প্রপন্নো জিন শাসনম্। শুম্ব্রে তে বিহস্তাতো তস্তার স্তুপ মণ্ডলে॥

> > ( अध्यक्षत्रकः। )

হমুমান নাটক, গণেশ পুরাণ প্রভৃতি পুস্তকে অর্ছন শব্দের ব্যবহার দেখা যায়। জৈনদিগের অর্ছৎ নাম এই অর্ছন শব্দ হইতে উৎপন্ন।

এখন দেখা বাউক বৌদ্ধান্ত ঐ সম্বন্ধে কি বলে। বৌদ্ধান্ত মহাবীরকে ২৪টি জৈন তীর্থান্ধর ও বুদ্ধের সমকালীন বলা হয়। যে ছম্মজন পণ্ডিত বুদ্ধের জীবিতকালে বৌদ্ধমতথগুনের চেষ্টা করেন, মহাবীর তাঁহাদের মধ্যে একজন, এ কথা বৌদ্ধেরা বলে। কম্মত্ত্র, আচারাক্ষত্ত্র, উত্তরাধ্যায়ন, স্ত্রকৃতাঙ্গ প্রভৃতি ম্বেতাম্বর জৈনপ্রহে মহাবীরকে জাতৃপুত্র বলা হইয়াছে। জ্ঞাতৃক এক ক্ষত্রিয়বংশ, মহাবীর এই বংশসভ্ত। সমস্ত জৈনগ্রহে এই জ্ঞাতৃক বংশের উল্লেখ আছে। কোন কোন গ্রন্থে মহাবীরকে বৈশলিক বা বৈশ্লিনিবাসী; বৈদেহ বা বিদেহরাজপুত্র এবং কাশুপ বা উক্ত গোত্রজাত বলা হয়। কিন্তু অধিকাংশ গ্রন্থে তাঁহাকে নত্তপুত্র প্রাক্ষত নত্ত সংস্কৃত জ্ঞাতৃক, এবং আকৃতপুত্র সংস্কৃত পুত্র নায়ে অভিহিত করা হইয়াছে। বৌদ্ধ গ্রন্থে কালিক কা নাতিক নাম প্রদন্ত হইয়াছে; কৈন

নিগ্রন্থ বা প্রাকৃত নিগন্থ শব্দেরও ব্যুবহার দেখা যায়; এই প্রাকৃত निगष्टि निगष्टन जिथु यहावी दित्र शिष्य वला ह्य। मिन्दू नामक বৌদ্ধগ্রন্থে জৈনের কর্মবাদ, শীতলবারি-ব্যবহার-নিষেধ প্রভৃতি আচারের উল্লেখ আছে। এই আবিষ্কার Buhler ও Jacobiর বহু পরিশ্রমের ফল, প্রাচীন ভারতের ইতিবৃত্ত সম্বন্ধে তাঁহাদের নিকট আমরা অনেক বিষয়ে ঋণী (Sacted Books of the East, Vol. XLV. দেখ)। মহাভাগ্য, মহাপরিনিভাণস্থত, অমুপুতরনিকর, ममानक्लञ्च, ञ्चमक्रलिवामिन, लिलिविखद প্রভৃতি বৌদ্ধগ্রন্থ জৈনধর্মের বা জৈননামের ব্যবহার দেখা যায়। মোক্ষমুলর তাঁহার "Six Systems of Philosophy & Natural Religion" (93) Olden Berg তাঁহার "The Buddha" নামক পুস্তকে মহাবীর বা नखशूखरक रवोष्क्रत ममकानीन वाकि वर्णन। वह পत्रिखरम Jacobi প্রমাণ করিয়াছেন যে, নিগ্রন্থ শব্দের অর্থ জৈন, (S.B.E., Vol. XIV)। Barth সাহেব ১৮৯২ খৃষ্টাব্দে জৈনধর্ম্ম বৌদ্ধর্মের শাখামাত্র একথা বলেন সত্য, কিন্তু ১৮৯৫ খৃষ্টাব্দে Jacobi সে ভ্রম দুর করিয়াছেন। থুঃ পুঃ ৪র্থ শতাক্রীতে যথন জৈনধর্মের নাম উল্লেখ্ন হইয়াছে, ইহাকে কি প্রকারে বৌদ্ধর্মের শাখা বা রূপান্তর বলা যাইতে পারে ?

জৈনশাস্ত্র এ সম্বন্ধে কি বলে? দেবানন্দ আচার্য্য প্রণীত দর্শন-সার (সম্বৎ ৯৯০ উজ্জিয়নী নগরে লিখিত) পাঠে জানা যায় যে পার্শ্ব-নাথের সময়ে পিহিতশ্রাবের শিশ্য শাস্ত্রদর্শী সন্ন্যাসী বুদ্ধকৃতি সরযুতীরে পলাশ নগরে তপস্তা করিতেছিলেন। একদিন তিনি একটা ভাসমান মৃতমংশু সর্যুদলিলে দর্শন করেন। আত্মাবিমুক্ত মৃতজীবভক্ষণে পাপ নাই বিবেচনা করিয়া তিনি আহার করেন, এবং তণ্ডা পরিজ্ঞাগ করিয়া রক্তবন্ত পরিধান করত: বৌদ্ধর্শ্বপ্রচারে ব্রতী হন। শ্বেতাশর সাধু স্বামী আত্মারাম অজ্ঞানতিমিরভান্ধরে, দিগম্বর পণ্ডিত শিবচন্ত্র

প্রশোতরদীপিক বি এবং তংকালীন সমস্ত জৈন পণ্ডিত দর্শনসারের পুর্বোলিখিত গাণ উদ্ধৃত করিয়া প্রমাণ করিবার চেষ্টা করিয়াছেন যে, वृक्त व्यथरम এक देलनगामी किल्लन। श्रव्यक्तिमस्न व्यममर्थ इहेग्रा আমিষভোজনেও বিধিদা- করেন। রক্তবন্ত্র পরিধান করতঃ নৃতন . ধর্মপ্রচারে ব্রতী হন।

অত্তরত এখন দেখা যাতে ছে যে, বিশ্ব যে বৌদ্ধর্মের শাখা, হিন্দুশান্ত একথা বলে না। বদ্রায়ন বুদ্ধের সমকালীন ব্যক্তি, তিনিও क्षा वर्णन ना। वोक्रभाञ्चभार्य काना यात्र एव, टेक्न ७ वोक्रधर्णंत्र প্রচার এক সময়ে আরম্ভ হয়। কোন কোন গ্রন্থতে জৈন, বৌদ্ধর্শের পুর্বে প্রচার হইক্টেল। বুদ্ধ প্রথমে এক জৈনসন্মাদী ছিলেন, তিনি পিহিত প্রাবের শিষ্ক্য, জৈনশাস্ত্র এই কথা বলে।

Hunter প্রভৃতি ইয়োরোপীয় ঐতিহাসিকগণ বলেন বুদ্ধ মহাণীরের শিষ্য, জৈনগ্রন্থ একথা অশ্বীকার করে। Colebrooke, Stevenson, Major Delamaine, Dr. Hamilton প্রভৃতি পণ্ডিত গৌতমবুদ্ধ এवः किम. शोजभ रेक्कजृिकक अकरे वाकि मन कात्रन। रेक्कजृिक মহাবীরের প্রধান গণধর ছিলেন, গৌতমবুদ্ধ তাঁহার শিশ্ব নহেন। (बाज ७ किन এकवारका श्रीकांत्र करतन, नूक ७ महारीत्र नमकानीन वाकि। महावीत, वोक्षम् ७थछन्काती পश्चित्रित व्यञ्चम । वृक्ष-बोर्छि পার্যনাথের সময় জন্মগ্রহণ করেন, একবার পূর্কে বলা হইয়াছে। यांबी जाजाताम, পार्चनाथ হইতে কবলগাছার পতাবলী এইরপে जडन करत्रन-

> শ্ৰীপাৰ্খনাথ। ७ जनख गर्भत्र। श्रिमख्यी । चारी। महता

## শ্রীমাপ্রভাস্র্য্য। ,, কেশীম্বামী।

তিনি বলেন পিহিতশ্রাব প্রভাস্থের শিষ্য। উত্তরাধ্যয়নস্ত্র ও অন্তান্ত জৈনগ্রহমতে কেণীস্বামা পার্শ্বনাথের পক্ষাবলম্বা ও মহাবীরের সমকালীন ব্যক্তি; অতএব পিহিতশ্রাবের শিষ্য বৃদ্ধকীর্ত্তি ও মহাবীর ' সমকালীন। ধর্মপ্রীক্ষাপ্রণেতা (সম্বৎ ১০৭০ লিখিত) অমৃতগাত আচার্য্য বলেন পার্শ্বনাথের শিষ্য মোগ্গলায়ন মহাবীরের সহিত কলহ করিয়া বৌদ্ধধর্ম প্রচার করেন। তিনি কালদোষে শুদ্ধোধনের পুত্র বৃদ্ধকে পরমাত্মাজ্ঞানে স্ব-প্রচারিত ধর্মকে বৌদ্ধ নামে অভিহিত করেন।

রুষ্টঃ শ্রীরনাথস্থ তপস্থী মৌড়িলারনঃ।
শিষ্যঃ শ্রীপার্থনাথস্থ বিদধে বৃদ্ধ দর্শনম্॥ ৬৮।
শুদ্ধোদন স্বতং বৃদ্ধং পর্মাত্মানমব্রবীৎ।
শ্রাণনঃ কুর্বতে কিংন কোপ বৈদ্ধি পরাজিতাঃ॥ ৬৯।
(ধর্মপরীক্ষা, অধ্যায় ১৮)।

#### এই লোকে শিষ্যার্থে শিষ্যপরা শিষ্য।

মহাভাগ্গ প্তকপাঠে (pp. 141-150, S. B. E. Vol. XIII.) জানা যায় যে সঞ্জয় নামক পরিব্রাজ্ঞকের মোগ্গলায়ন ও সরিপুত্ত নামে ছই ব্রাহ্মণ শিষ্য ছিলেন। ধর্মপরীক্ষার মতে মোগ্গলায়ন পার্ধনাথের পরাশিষ্য, স্কৃতরাং সঞ্জয় জৈন ছিলেন। মোগ্গলায়ন মহাবারের বৈরী ছিলেন, পরে বুদ্ধকে গুরু বলিয়া স্বীকার করেন, অত্পব মহাবীর ও বৃদ্ধ সমকালীন। কিন্তু ধর্মপরীক্ষা, মহাভাগ্র প্রং শ্রেণিকচরিত্র পুত্তকের মহাবীর অর্হতের পদ অধিকার করিবার পূর্বের বৃদ্ধ প্রচারকার্য্যে ব্রতী হন। ধর্মপরীক্ষার উপরোদ্ধত প্রোক্ত প্রোক্ত প্রাক্তি পাঠে বোধ হয় যে মোগ্গলায়নই ব্রীদ্ধর্মের স্থাপক। কিন্তু

ইহা সত্য নহে। প্লোক্ষমের অর্থ এই যে তিনি শিষ্য হইয়া বুদ্ধের প্রচারকার্য্যে অনেক সহায়তা করেন। বৌদ্ধশাস্ত্রেরও এই মত।

Colebrooke, Buhler ও Jacobi জৈন এবং হিন্দুধর্মের সাদৃশ্র দর্শনে বলেন যে, পার্মনাথ জৈনদিগের আদিগুরু এবং জৈনধর্ম হিন্দু-ধর্মের রূপান্তর মাত্র। কৈন ও বৌদ্ধর্মের সাদৃশ্র দর্শনে Lassen, Weber, Barth এবং Wilson ইহাকে বৌদ্ধর্মের রূপান্তর মনে করেন। কিন্তু আবার ইহারাই বলেন যে বৌদ্ধান্তে কৈনধর্মকে নিগ্রন্থের ধর্মা বলা হইয়াছে, এবং এই নিগ্রন্থধর্ম বৌদ্ধর্মের বহুপূর্বের প্রান্ত ছিল।

# ं २। জिनेथर्चा हिन्तूधर्णात क्रे का खत्र नरह।

জৈনেরা বলেন যে হিন্দুধর্ম যেমন দেশ, কাল ও প্রকৃতিগত, জৈনধর্মও তজেপ, এক অত্যের শাখা বা রূপান্তর নহে। প্রাচীন ভারতের
ইতিহাস অজ্ঞাত না হইলেও অতি অল্লমাত্র জানা আছে। লোকের
বিশ্বাস প্রাচীন ভরতে হিন্দুধর্ম এবং অনার্যাদিগের ভূত-প্রেত-উপাসনা
ব্যতীত অন্ত কোন ধর্ম প্রচলিত ছিল না। হিন্দুধর্মে আমরা বৈদিক
ধর্ম বুঝিরা থাকি। বৈদিক বলিদান ব্যতীত যে অন্ত প্রকার ধর্মাছুষ্ঠান
হইত তাহাতে সন্দেহ নাই। এক সম্প্রদায় শিক্ষা দিতেন "অগ্রিবোমীয়ং পশুং হিংল্রাং" অর্থাৎ যে সকল জীবের দেবতা অগ্রি ও সোম
ভাহাদিগকে বধ করিবে। আর এক সম্প্রদায় শিক্ষা দিতেন "মা
হল্লাদ্ সর্বাভ্তানি" অর্থাৎ ঝোন জীব বধ করিবে না। Cowell এবং
Gouph সর্বাদ্পনসংগ্রহের ১০ ও ১১ পৃষ্ঠার আর এক সম্প্রদায়ের
উল্লেখ করেন। তাহারা শিক্ষা দিতেন "ম্বর্গ নাই, মোক্ষ নাই, পরলোকে কোন আরা নাই। চারিজাতি কর্মের কোন ফল নাই।
সক্ষ ও ক্যুপুরুষদিগের ক্রীবিকানির্বাহের স্ক্রিধার ক্ষম্ন জ্রিছেন্ত্র, ডিন

বেদ এবং সন্ন্যাসধর্ম্মের স্থাষ্ট। প্রকৃতি স্বয়ং অভাবমোচনৈর উপায় यागामिश्रदक विनया (मन, এ জীবিকানির্বাহের পন্থা প্রকৃতিদন্ত। জ্যোতিষ্টোম প্রথানুসারে হতজাব যদি স্বর্গগামী হয়, উপাসক নিজে পিতাকে কেন বলি প্রদান করেন না? প্রাদ্ধে যদি মৃতব্যক্তির তুটি সম্পাদন হয়, যাত্রীরা তবে কেন পাথেয় লইয়া দূরদেশ যাত্রা করে ?ু ভূতলে প্রাক্তকিয়া সম্পাদন করিয়া যদি স্বর্গস্থ ব্যক্তিকে আহার প্রদান করা যায়, ছাদোপরি উপবিষ্ট ব্যক্তিকে নিম্নভূমিতে খাছা প্রদান কেন করা হয় না ? যত দিন জীবন, তত দিন স্থথভোগ কর। ঋণ করিয়া ঘুতাহার কর। দেহ একবার ভম্মে পরিণত হইলে প্রত্যাগমন করিতে পারে না। আত্মা দেহবিযুক্ত হইয়া যদি পরলোক প্রশান করে, প্রেহ ও মায়াবশে তবে কেন পুনরায় জ্ঞাতি-কুটম্বের নিকট ফিরিয়া আসে না ? অতএব আপনাদের লাভের জন্ম ব্রাহ্মণেরা প্রান্ধের প্রথা প্রচলিত করিয়াছেন, ইহার অন্ত কোন ফল নাই" ইতাদি। বলা বাছলা বৈ এই শিক্ষা চার্বাক-সম্প্রদায়ের।

ডাক্তার রাজেক্রলাল মৈত্র যোগস্থতের প্রস্তাবনায় বলেন যে, সামবেদে এক বলিদানবিরোধী যতির উল্লেখ আছে। তাঁহার সমস্ত ঐশ্বর্যা ভৃগুকে দান করা হয়। আত্রেয় ব্রাহ্মণের মতে বলিদানবিরোধী যতিকে শৃগালের সম্মুথে প্রক্ষিপ্ত করিতে হইবে। মগধ বা কিক্সতে यछ, मान প্রভৃতি বিরোধী এক সম্প্রদায় ছিল, (ঋষেদ, ৩ অষ্টক, ७ व्यथाय, २२ वर्ग, ४८ श्रक (मथ)। व्याभाष्मित शूर्वभूक्यमण मकरणहे रि वजाय्राम्य पर्मन विश्वाम कत्रिएन, এकैथा क्ह विनार्क भारतम मा। তাহারা সকলে কথনই বেদান্তক্থিত ব্রহ্মের উপাসক ছিলেন না। কপিলের তার অনেকে বিখাস করিতেন" ক্রীশ্রাসিদে " ভার্গব নামে अधि वटना अधि नारे, दकर डीराटक क्षेत्र लाट्य नारे, बाराज लाखिए जालाह, । एक मन कालियां , जिल्ला कालियां कालियां कालियां कालियां

লোকবাদ দালে, (বাজেদ, ৮ নাজ্বল, ১৮ কাথার, ৮৯ ক্রকে, ও ক্রক দেখা। ৪ থাকে ইন্দ্র আপনার অন্তিত্ব প্রমাণ করিতেছেন। আলপনে বৈরাদিগকে নাশ করিবেন এইরূপ ভর প্রদর্শন করিতেছেন। আলপকে গৃতসমদ থবি বলেন "অনেকে ইন্দ্রের অন্তিত্বে অবিশাস করে, কিন্তু বাস্তবিক ইন্দ্র আছেন," (খাথেদ, ২ মণ্ডল, ২ অধ্যার, ১২ ক্রকে, ৫ থাক দেখা। জৈনেরা পরলোকে বিশাস করে, প্রাচীন ভারতে কেহ বিশাস করেত, কেহ বা অবিশাস করিত। Barth বলেন ত্রাহ্মণে ক্ষন কথন পরলোক আছে কিনা এই প্রশ্নের উল্লেখ দেখা যার। খাথেদ, ৬ অন্তক, ৪ অধ্যার, ৩২ বর্গ, ১০ থাকে কেন্ধনটের উল্লেখ করা হইরাছে। তাহান্দ্রের সম্বন্ধে বলা হয় যে এই ক্ষদপ্রাচীরা জগতে স্থ্যের আলোক দর্শন করে, কিন্তু মৃত্যুর পর ঘোর তমসাছর লোকে গমন করে। ইহারা নান্তিক, পরলোক দেখে নাই বলিয়া বিশাস করে না।

প্রাচীন ভারতে বৈদিক বলি প্রদান ব্যতীত যে অন্ত প্রকারে উপাদনা ও আরাধনা করা হইত, তাহার শত শত প্রমাণ হিন্দুগ্রন্থ হইতেই দেওয়া যায়। স্থানাভাব বশতঃ কেবল অয় সংখ্যক শাল্লীয় প্রদের উল্লেখ করা যাইতেছে। এ কথা সতা যে অধিকাংশ লোকে বিশাস করিত "বর্গকামো যজেত"—বর্গকামী বলি প্রদান করিবে। পাতঞ্জনীর যোগস্ত্র হইতে করেকটী পদ উদ্ধৃত করা যাইতেছে—

"অহিংসা সত্যাপ্রেয় ব্রহ্মচর্য্যা পরিগ্রহা যমাঃ।"

২র পদ, ৩০ সত্ত। "এতি জাতি দেশকাল নমরানবজিয়াঃ সার্ব-ভৌষ মহাব্রভন্। ৩১ স্ত্র (রাজের লাল মিত্রের অনুবাদ পৃঃ ৯৩ দেখ)। "অহিংসা প্রভিষ্ঠারাং তৎ সবিবৌ বৈরত্যাগঃ," ৩৫ স্ত্র। "সভ্য প্রক্রিয়ারং ক্রিয়া ফলম্," ৩৬ স্ত্র।" "ভ্রচনাৎ যক্ত ক্ষতিৎ ক্রিয়াই "ক্রিয়ারাং ক্রিয়া ফলম্," ৩৬ স্ত্র।" "ভ্রচনাৎ যক্ত ক্ষতিৎ ক্রিয়াই মহিংসা, সভা, অভ্যেম, ব্রহ্মচর্যা, অপরিগ্রহ প্রভৃতি কর্মকল স্বর্গকারী।

### भारशामर्गन-

"অবিশেষশ্চোভ্রোঃ," ৬ হত্ত্ব, অর্থাৎ গ্রের মধ্যে কোন প্রভেদ নাই ।

ইংখ এবং যন্ত্রনা দূর করিবার দৃশ্চমান ও বৈদিক উপারের কোন
ইংভিদ নাই )। কেন্ন ? কারণ বৈদিক বিলদান নিষ্ঠুর প্রথমনাত্র।
ইক্ত পণ্ড হনন করিলে কর্মদোষ হয়, এজন্ত পুরুষের কোন লাভ ।ই।
মাহিংস্যাৎ সর্ব্বাভূতানি," "অগ্নিষোমীয়ং পশুমালক্তে," "দৃষ্ট বদামুশ্রবিকঃ
ই বিশুদ্ধি ক্ষয়াভিশয় যুক্তঃ"; সাংখ্য কারিক, ২। গৌড়পদ সাংখ্য গিরিকার ভাষ্যে নিয়লিখিত শ্লোডটী উদ্ভ করিহালকপিলের মতের
মর্থন করেন—"ততৈত্বহুশোভ্যন্তং জন্ম জন্মান্তরেম্বপি।

"ত্রমী ধর্ম মধর্ম টয়ং ন সম্যক প্রতিভাতিমে" অর্থাৎ হে পিতঃ,
ভামানে ও গতজীবনে আমি বৈদিক ধর্ম আলোচনা করিয়াছ।
নিমি এ ধর্মের পক্ষপাতী নহি, কারণ ইহা অধর্মে পূর্ণ। কপিলত্ত্রের ভাষ্যকার বিজ্ঞানভিক্ষ্, মার্কণ্ডেয় পুরাণ হইতে নিম্নলিখিত
লাকটী উদ্বুত করিয়া, কপিলমতের সমর্থন করেন—•

তন্মাদ্যাম্যহং তাত দৃষ্টে মং ছঃথ সন্নিধিম্। ত্রুমী ধর্ম মধমাটয়ং কিং পাকফল সন্নিভম্॥"

অর্থাৎ হে মৃগ, কৈনিক ধর্ম সর্বপ্রকার অধর্ম ও নিষ্ঠুরতার
্শি দেখিরা আমি কেমন করিয়া ইহার অন্তক্তরণ করি ?
ভাষিক ধর্ম পাকফলের ভায় বাহ্নিক সৌন্দর্য্যে কিন্তু অন্তর্মে
লাহলে পূর্ণ। মহাভারত ও চার্কাক দর্শনের মত পূর্বেই উল্লেখ
ভাষ্ট্রাছে। অন্যমেধ পর্বা, অন্থুগীত, ৪৯ অধ্যার ২ – ১২ লোকের
ভাষ্ট্রাছে। বাঠ কর'।

ৈ জৈন গ্রন্থে প্রাচীন ভারতের ইতিবৃত্ত অনেক পাওয়া যায়। প্রাচীন ভাঁহার শিক্ষা দেব, মনুষ্য ও ইতর প্রাণীর অনেক উপকার সাধন कत्रियाहि। ज एकाला : ५० জ न পाय । धर्म- श्राव हिलन, हार्का क त्र নেতা শুক্র বা বৃহস্পতি তাঁহাদের মধ্যে একজন ৷ দ্বাপর যুগের শেষকালে ভারতে যে ধর্মারিপ্লব হইয়াছিল, তাহাতে সন্দেহ নাই। ৬৬৩ জন ভিন্ন ভিন্ন মতাবলম্বী ধর্ম প্রচারক সত্যানুসন্ধীকে ব্যতিবাস্ত করিয়াছিলেন। মোক্ষমূলর প্রভৃতি ইউরোপীয় পণ্ডিতগণেরও এই ধারণা। ১৮৯৯ খৃষ্টাব্দে ৭৬ বৎসর বয়সে মোক্ষমূলর বলিতেছেন— "It would a mistake to imagine that there was a continuing development into the various meanings assumed by or assigned to such pregnant terms as Prajapati, Brahman or even Atman. It is much more in accordance with what we learn from the Brahmans and Upanishads of the intellectual life of India to admit infinite number of intellectual centres of thought scattered all over the country, in which either the one or the other wiew found influential advocates. The Sutras which we possess of six systems of philosophy, each distinct from the other, cannot possibly claim to represent the very first attempts at a systematic treatment, they are rather the last summing up of what had been growing up during many generations of isolated thinkers: &co." े कार्यक अतिमध्यांत्रक विनामां मर्गम, ए नाना धर्म श्रीकिक विन,

দেখিতে পাওয়া যায়, তথন ঘাঁহারা বলেন যে প্রাচীন ভারতে বৈদিক-ধর্ম ও ভুত প্রেত পূজা ব্যতীত অন্ত ধর্ম প্রচলিত ছিল না, তাঁহা-দিগকে ভ্রান্ত ভিন্ন আর কিছু বলা যায় না। জৈন ধর্ম হিন্দু ধর্মা হইতে সম্পূর্ণ স্বতন্ত্র, ইহার শাখা বা রূপান্তর নহে। বিশেষতঃ প্রাচীন ভারতে ধর্মান্তর হুইতে গ্রহণ করিয়া নৃতন এক ধর্মপ্রচার প্রথা ছিল না। মোক্ষ মূলরেরও এই মুত। তিনি বলেন "If we are right in the discription we have given of the unrestrained and abundnt growth of philosophical ideas in ancient India, the idea of borrowing so natural to us, seems altogether put of place in ancient India. A wild mass of guesses at truth was floating in the air... Hence we have as little right to maintain that Buddha borrowed from Kapila as that kapila borrowed from Buddha &c." মোক্ষমূলর বিনি बाक्षोवन विक्रिक ও वोक्ष माहिতा हर्छ। कित्रियाहित्वन, १७ वरमञ्ज वयरम এই कथा वलान। আক্ষেপের বিষয়, অবসরাভাবে তিনি জৈন দাহিত্যের কোন উপকার সাধন করিতে পারেন নাই 🟲

৩। পার্থনাথ জৈনধর্মের প্রথম প্রচারক নহেন। লোকের এই ভ্রম বিশ্বাস যে পার্শ্বনাথ জৈনধর্ম্মের স্থাপক। কিছ अवज्ञान देश প्रथम প্रচার করেন। ইহার প্রমাণের অভাব নাই। বৌদ্ধশাস্ত্রে জৈনধর্শের আদি প্রবর্ত্তক কে তাহার কোন উল্লেখ नारे। रेशत कात्रन এই यে लिय जीर्थाक्षत महावीरत्रत मगग्न वोक्ष-उत्प्रत প্রচার আরম্ভ হয়। মহাবীরকে বৌদ্ধেরা নিগ্রন্থিদিগের নায়ক-মাত্র বলেন। Dr. Jacobi এই মতের সমর্থন করেন। ৈ কৈনশান্ত মতে ঋষভদেবের সংসারত্যাগী ও সন্তাসধর্ম গ্রহণকালে

শবি সহত্র নরপতি তাঁহার অমুগামী হয়েন। ুকিন্ত তাঁহারা ধাষভের

জৈন গ্রন্থে প্রাচীন ভারতের ইতিবৃত্ত অনেক পাওয়া যায়। প্রাচীন তাঁহার শিক্ষা দেব, মহুষ্য ও ইতর প্রাণীর অনেক উপকার সাধন করিয়াছে। তৎকালে :৬৩ জন পাষণ্ড ধর্ম্ম-প্রচারক ছিলেন, চার্কাকের নেতা শুক্র বা বৃহস্পতি তাঁহাদের মধ্যে একজন ঘাপর যুগের শেষকাংলে ভারতে যে ধর্মবিপ্লব হইয়াছিল, খা্হাতে সন্দেহ নাই। ৬৬৩ জন ভিন্ন ভিন্ন মতাবলম্বী ধর্মা প্রচারক সত্যামুসন্ধীকে ব্যতিবাস্ত করিয়াছিলেন। মোক্ষমূলর প্রভৃতি ইউরোপীয় পণ্ডিতগণেরও এই ধারণা। ১৮৯৯ খৃষ্টাব্দে ৭৬ বৎসর বয়সে মোক্ষমূলর বলিতেছেন— "It would a mistake to imagine that there was a continuing development into the various meanings assumed by or assigned to such pregnant terms as Prajapati, Brahman or even Atman. It is much more in accordance with what we learn from the Brahmans and Upanishads of the intellectual life of India to admit infinite number of intellectual centres of thought scattered all over the country, in which either the one or the other , view found influential advocates. The Sutras which we possess of six systems of philosophy, each distinct from the other, cannot possibly claim to represent the very first attempts at a systematic treatment, they are rather the last summing up of what had been growing up during many generations of isolated thinkers &c." कार्यक आठीन जात्रक जनामां पर्यन ७ नामा धर्म अठिकिक किन छाहारक देकान मत्मर्॰नाहै। यथन ०५० क्रम क्षांभ्यकारकात केर्

দেখিতে পাওয়া যায়, তথন যাঁহারা বলেন যে প্রাচীন ভারতে বৈদিক-ধর্ম ও ভুত প্রেত পূজা ব্যতীত অন্ত ধর্ম প্রচলিত ছিল না, তাঁহা-দিগকে ভ্রান্ত ভিন্ন আর কিছু বলা যার না। জৈন ধর্ম হিন্দু ধর্ম হইতে সম্পূর্ণ স্বতন্ত্র, ইহার শাখা বা রূপান্তর নহে। বিশেষতঃ প্রাচীন ভারতে ধর্মান্তর হইতে গ্রহণ করিয়া নৃতন এক ধর্মপ্রচার প্রথা ছিল না। মোক মূলরেরও এই মুত। তিনি বলেন "If we are right in the discription we have given of the unrestrained and abundant growth of philosophical ideas in ancient India, the idea of horrowing so natural to us, seems altogether out of place in ancient India. A wild mass of guesses at truth was floating in the air. Hence we have as little right to maintain that Buddha borrowed from Kapila as that kapila borrowed from Buddha &c." মোক্ষমূলর বিনি व्याक्षीवन देवितिक ७ द्योक माहिला हर्छ। कित्रश्नाहित्वन, १७ वरमञ् वश्राम এই कथा वालन। আক্ষেপের বিষয়, অবসরাভাবে তিনি জৈন সাহিত্যের কোন উপকার সাধন করিতে পারেন নাই 🟲

৩। পার্ষনাথ জৈনধর্ম্মের প্রথম প্রচারক নহেন।
লোকের এই ভ্রম বিশ্বাস যে পার্শ্বনাথ জৈনধর্মের স্থাপক। কিন্তু
শাষভদেব ইহা প্রথমে প্রচার করেন। ইহার প্রমাণের অভাব নাই।

বৈদিশান্তে জৈনধর্মের আদি প্রবর্তক কে তাহার কোন উল্লেখ নাই। ইহার কারণ এই যে শেষ তীর্থাঙ্কর মহাবীরের সময় থাজ-ধর্মের প্রচার আরম্ভ হয়। মহাবীরকে বৌদ্ধেরা নিগ্রন্থিদিগের নায়ক-মাত্র বলেন। Dr. Jacobi এই মতের সমর্থন করেন।

লৈনশান্ত মাষ্ডদেবের সংসারত্যাগী ও সন্তাসধর্ম গ্রহণকালে চার্মি সহল নরপতি তাঁহার অমুগার্মী হয়েন। কৈছে তাঁহারা ধাষ্তের करठात नित्रम शानीत्न जनमा रहेगा जागाग मलागाजूक रन। रैशामत्रहे नाथा ७७७ कन भाषा अभन्न श्रात्रक रायन। ठाकीक पर्यानत्र নেতা শুক্র বা বৃহস্পতি তাঁহাদের অগুতম। জৈনমতে ঋষভদের প্রথম প্রচারক। ৩৬৩ জনের ধর্মপ্রচার হইতে ভারতের ওদাভিদ্ধন বৃদ্ধি-বৃত্তির প্রাথর্য্য ও কার্য্যক রিতা সহজে উপলব্ধি করা মাইতে পারে।

हिन्दू ও জৈনশাস্ত্র এবিষয়ে একমত। ভাগবৎ পুরাণ, ৫ কন্ধ, ৩-৬ অধ্যায়ে ঋষভের বিষয় বর্ণিত হইয়াছে। ভাগবতের এত স্বয়স্থ মুনি চতুর্দশ মুনির প্রথম। যথন ব্রহ্মা দেখিলেন যে জগতে লোকর্দ্ধি হইতেছে না, তিনি সম্ভূমুনি ও তাঁহার সত্যরূপাকে স্ঞান করেন। সম্ভূর বুল শিরাবতার, পৌল অগ্নির্ধ এবং প্রপৌত্ত নভি। নভি भाक्रामिवीरक विवाह करत्रन, श्रवं कैंशिएनत भूख! कांभवरक श्रवं मिश्यत्र ७ दिन मच्छानारम् त्र जानि वना इहेम्राह् । श्रवाहत जनाकान জগতের বাল্যাবস্থায়, তিনি স্বয়ন্ত্র অধস্তন পঞ্চম পুরুষ। এক মন্বস্তরে অষ্টাবিংশতি ক্বতযুগ, ঋষভ প্রথম ক্বৃত্যুগের শেষভাগে জন্মগ্রহণ করেন। ভাগবং, ৬ অধ্যায়, ৯-১১ শ্লোকে লিখিত হইয়াছে যে কোন্ধ, বেষ ও নটের রুজা অর্হ্ণ ঝাষভের চরিত্র (ধর্মানিয়ম) প্রবণ করিয়া কলিযুগে ব্রাহ্মণবিষেধী এক নৃতন ধর্ম প্রচারের মানস করেন। আমি किन अग्र कान श्राप्त अपन कान त्रामा नाम भार नाहे। कईएक व्यग्र कान श्रकृति काइ, त्यक्ष ७ मार्वेत त्राका वर्णन ना। व्यर्ट् অর্থে প্রশংসার্ছ (यদি অর্হধাতু হইতে সিদ্ধ করা যায়) বা শত্রুনাশক (মদি অরিহন্ত এই ব্যুৎপত্তি হয়)। শি্বপুরাণে অর্হৎ শব্দের बावरात्र रहेबाट्स, किन्छ वर्डर नाम टकान ताकात्र नाम नाहे। सरजरक कर्र वना रहेक, कात्रग किनि थानः मार्र ७ कर्षाक्रम मक्ररहा। व्यर्ट त्राका किंगपूर्ण देकनभर्त्यत्र श्राज्यक रहेला, वाज्याका सम्बद्धक "जिन्दारव এवर भकार्थ हिंदै। मिश्व जी कि जिन्दार कथन वना इहेज ना

বেশন কোন উপনিষ্দেও প্রক্তিক আহঁৎ বলা হুইরাছে? ভারমার রচরিতা কেন একথা বলেন তাহা বলা যায় না। আহঁৎ রাজা প্রভেক্ত চরিত্রে মুগ্ধ হইয়৷ জৈনধর্ম প্রচার করেন, একথা সত্য হইলেও প্রভেক্ত চরিত্রই জৈনধর্মের বীজ স্থাকার করিতে হইবে। মহাভারতের স্থাবি-থ্যাত টীকাকার, শান্তিপর্মা, মোক্ষধর্ম ২৬০ অধ্যায়, ২০ স্লোকের টীকায় বলেন আহঁৎ অর্থাৎ জৈনেরা প্রস্তুত্র চরিত্রে মুগ্ধ হইয়াছিল— প্রাণেবা "প্রযভাদীনাং মহাযোগিনা মাচারং দৃষ্ট্ব। অর্হতা দয়ে৷ মোহিতাঃ পাষ্প্ত মার্গ মন্থ্যতাঃ"। ইত্যুক্তম্। উক্ত অধ্যায়ে তুলাধর ও জাজা-লির কথোপকথন বর্ণিত আছে। তুলাধর অহিংসা সমর্থন, জাজালি তাহার থণ্ডন করিতেছেন। এখন দেখা যাইতেছে তে হিন্দোল্রমতে প্রভাই জৈনধর্মের প্রথম প্রচারক।

Dr. Fuhrer মথুরার যে সমস্ত প্রস্তরখোদিত ইতিবৃত্ত উদার করিয়াছেন, তাহা পাঠ করিলে জানা যায় যে পুরাকালে জৈনেরা ধ্বন্ডের মূর্ত্তি পূলা করিত। Epigraphia Indica, Vols I. and II.এ সেগুলি অনুবাদসহ মুদ্রিত হইয়াছে। অন্ততঃ ছই সহল্র বংসর পূর্বের, কাণিক্ষ. হবকু, বাস্থদেব প্রভৃতি নরপতির ব্লাজত্বলালে খোদিত হইয়াছিল। হানাভাব বশতঃ এখানে সমস্ত উদ্ধৃত করিতে পারিলাম না। Vol I, p 389, No VIII এ লেখা আছে: 'May the divine (and) glorious Rishabha be pleased"; Vol. I. p. 389, No. XIV. At the request of his female people, the venerable Sama, (was dedicated an image of Rishabha)"; Vol. II, p. 206-207, No. XVIII.: "Adoration to divine Rishabha," ইত্যাদি। অতএব দেখা যাইতেছে যে ছই সহল্প বংসর পূর্বের শ্বন্থতে প্রথম জৈন তার্থাছের বলিয়া খাকার করা, 'হইয়াছে। মহাবীরের মোক্ষকাল থুঃ পূর্বে হুং প্রথম প্রাক্তিন অবং পার্থনাথ খুঃ পূর্ব

विकाण शाक्ष इन। या छारात्र खान्य खाना के विकास क्षेत्र खाना विकास क्षेत्र खाना विकास क्षेत्र खाना विकास क्षेत्र खाना विकास क्षेत्र का का क्षेत्र का का क

## 8। टिजन-मर्गन।

কৈনদর্শনামুদারে জগৎ অনস্তকাল হইতে বিরাজমান। জগতের
ন্ত্রী কেই নাই। লোক ও অলোক এই হইভাগে জগৎ বিভক্ত।
লোকের আবার তিন উপবিভাগ—উর্জকাল বা স্বর্গ, মধ্যলোক বা
পৃথিবী এবং পাতাললোক বা নরক। জীব ও অজীব লইয়া জগৎ।
জীব ছম্ন প্রকার;—পৃথিবী জীব, অগ্নি জীব, বায়্ জীব, বারি জীব,
বিনাশোপতি এবং জঙ্গম জীব বা ত্রিস। জঙ্গম জীব চারি শ্রেণীতে
বিভক্ত; নথা, দ্বি-ইলিমে, তি-ইলিমে, চ্ছারি.ক্রিয় এবং পঞ্চেক্রিয়
পঞ্চেক্রিয় জীব ছই প্রকার—শ্রানি বা মনবিশিষ্ট, ও অল্যানি বা মনবিবর্জ্জিত। পঞ্চেক্রিয় জীবের মধ্যে মন্ত্র্যু সর্বশ্রেষ্ঠ; এবং কেবল
মন্ত্র্যুই নির্বাণ প্রাপ্ত হইতে পারে। সর্ব্বোচ্চ স্বর্গবাসী জীব মোক্ষপ্রাপ্ত হইতে পারে না। জিন বা অর্হং হইতে হইলে মানবরূপে
জন্মগ্রহণ আবশ্রক। অজীব পাঁচি প্রকার, যথা— পুদগল (পদার্থ), ধর্ম্ম,
জর্ম্ম্ম, কাল এবং আঁকাশ।

জীব ( আত্মা ) এবং পুদালের পদার্থ ) সন্মিলনে প্রাণীর উৎপত্তি।
আত্মা ও পদার্থের এই সন্মিলন অনম্ব। কর্মা পদার্থ মাত্র। কর্মাবন্ধনে
আবদ্ধ আত্মাকে জন্ম হইতে জন্মান্তর গ্রহণ করিতে হয়। নৃতন কর্মের
আগমের নাম অপ্রাব। তদ্ধারা তত্মার বন্ধনের, নাম বন্ধ। নবকর্মাগমের প্রতিবন্ধকতা সম্বর। তাতি কর্মা ফল হইতে অব্যাহতি
নির্জির। মোক্ষ শেষাক্ষ।

कित्मता मश्राज्य विश्वाम करत भाभ ७ भूगा युक मश्राज्य क नव भन्नार्थ वरण। जीव वा जाजा, व्यक्त, मर्वामकिमान, जनस এवः

बागरथा खगरिनिष्ठ। कर्षा छ गगर्थ, कर्षा छ। जारिक छ। वर बागर গুণকৈ আৰুত করে। কর্মাবদ্ধ আত্মার আত্মবিশ্বতি হয়। আপনার স্বরূপ ভুলিয়া আপনাকে অন্ত কিছু জ্ঞান করে। এই আত্মার নাম বহিরাত্মা। কর্ম আট প্রকাব। জ্ঞানবর্ণা কর্ম জ্ঞানকে আচ্চাদিত कर्त्र, मर्ननवर्ग, कर्य मर्ननरक इंछामि। आयू कर्य এই অष्टे कर्यात्र. অন্তম। জীবন ও মৃত্যু এক আয়ু কর্মের অবসান ও অন্ত এক আয়ুকর্শ্বের প্রারম্ভ মাত্র। কোন প্রাণীর এক আয়ুকর্শ্ব শেষ হইলে, আত্মা দেহত্যাগ করে, এবং ইহারই নাম মৃত্যু। দেহবিমুক্ত আত্মার দেহান্তরে প্রবেশের নাম জন্ম। এইরূপ কর্মাধীন আত্মা দেহ হইতে দেহান্তর আশ্রম করিতে থাকে, অবশেষে আত্মার এই এই অবস্থা উপস্থিত হয়, যে ইহা কর্ম্ম বিমুক্ত হয়, এবং আপন লুপ্ত ও কর্ম্মাচ্ছা-দিত গুণ প্রাপ্ত হইয়া জিন বা অর্হৎরূপে মোক্ষপ্রাপ্ত হয়। মোক্ষের অনন্ত সুথ ও শান্তি আত্মা আপনাতেই ভোগ করে।

দেশ, কাল, পাত্রভেদে নানা মহামুনি, "আমি কে ?" "আমি কি ?" "আমি কোথা হইতে আসিয়াছি এবং কোথায় যাইব ?" "সমস্ত পদার্থের শেষ কি ?" প্রভৃতি প্রশ্নের নানা প্রকার উত্তর প্রদান করিয়াছেন। এই সকল প্রশ্নের মীমাংসাই দশন। এই হেতু নানা প্রকার ধর্মও প্রচলিত। প্রাচীন জৈন তীর্থক্ষরগণও এই সকল প্রশ্নের উত্তর প্রদানের চেষ্টা করিয়াছেন। "আমি কে ?" "জগৎ কি ?" ইহার উত্তরে ভাঁহারা বলেন আত্মা, কর্মা ও জগৎ অনস্ত ; ইহার শ্রষ্ঠা বা সংহারক (कर् नारे, আত্মা° আপন কর্মফল ভোগ করে। আমাদের অদুষ্ট আমাদের উপর নির্ভন্ন করে। এইজগু জৈনেরা ঈশ্বরের উপাদনা ও আরাধনা অনাবভা জান করে। কর্মফলই, তাহাদের বিবেচনায়, মোক্ষের হেড়ু ও স্বর্জী তাহারা ঈশ্বরতক কর্মামুধারী পুরস্কার ও শান্তিদাতা স্বীকার করে না। ঈশব্দের এ ক্ষমতাও নাই।

আরাধনা ও উপাদনাম তুষ্ট ঈশারকে ভাহারা ইতর প্রকৃতির মহুষা মনৈ করে। জৈন শাস্ত্রামুদারে মানবাত্মা ও কল্লিত ঈশ্বর একই ব্যক্তি, নির্বাণপ্রাপ্ত আত্মাই ঈশ্বর, এই আত্মা সর্বজ্ঞ, অনম্ভ ও অস্থান্ত বহু खगरिणिष्टे। किन्न जारात टेक्स्त्रता जाभः।। लगरक नास्त्रिक रिलग्ना স্বীকার করে না। তাহারা বলে যে, মানবাত্মায় ঈশ্বরের পরিচয় প্রাপ্ত रुखा यात्र ; जेयद সম্বন্ধে उँ। हात्र धाद्र । यश यश मल्यामात्र रहेए বিভিন্ন মাত্র। ইহাই জৈন দর্শন। মাধ্বের "সর্বদর্শন সংগ্রহে জৈন" मर्गरगद्र जालाहमा कदा इहेग्राह् ।

### - ৫। किन भिका।

जीतान्य भारतीक तर्शाखात्र नाम ममाक पर्णन, तर्शकात्रत নাম সমাক জ্ঞান এবং জ্ঞানামুঘায়ী আচরণের নাম সমাক চরিত। मयाक पर्मन, खान ও চরিত্রকে রত্ত্রশ্বী বলা হয়।

नभाक पर्भन ও জान नष्टक किছू व निवात शर्याकन नाहै। চরিত্র কি, এর্থাৎ কিরূপ চরিত্র হুইলে জৈন মোক্ষ লাভ করে? এই চরিত্র হই প্রকার, শ্রাবক চরিত্র ও মুনি চরিত্র। শ্রাভগী বলিয়া কোন नक नारे। जक लाक जावकत्र जभज्ञ जाजा विद्या थाक। শ্রাবক ত্ই প্রকার, অব্রতী শ্রাবক (যাঁহারা ব্রত গ্রহণ করিয়া আপন চরিত্র রক্ষা করিতে পারেন না ) এবং ব্রভী শ্রাবক ( যাঁহারা ব্রভ গ্রহণ করিয়া আপন চরিত্র সংরক্ষণ করেন)। একাদশ প্রতিমার সমষ্টিই ব্রতী-खारकित চরিত্র। এই একাদশ প্রতিমা ক্রমোন্নত। প্রথম হইতে পঞ্চম প্রতিমা পালনক'রो জঘশ্য প্রাবক, ষষ্ঠ হইতে অষ্টম প্রতিমা পালন-काबी यथाय आवक, এवः नवय इटेट अकाममें প্रक्रिया भागनकाबी উৎক্রপ্ত প্রাবক নামে অিহিত। কোন খ্রেণীর প্রাবককে কি প্রতিজ্ঞা क्तिए इम्र जाहा निस्म लिथा घारे जिल्ल

(১) मर्नन প্রতিমা তথামি মৃত্যুদেব, গুরু ও ধর্মে বিশাস করিব।

ভাষি ভাইষ্ণ গুণ পালন করিব, স্বর্থাৎ আমি জি-মকার বী মংক্রা, মন্ত্র ও মধু স্পর্শ করিব না, ও পঞ্চ উদম্বর বা পিপ্ল (অর্থা, বর (বট) উমর, কথুমর এবং পাকড় ফল গ্রহণ করিব না। আমি দৃত ক্রীড়া (জুয়া) মাংস ভোজন, মন্ত্রপান, বেখা গমন, চৌহ্য, মৃগয়া ও পরস্ত্রীগমন এই সপ্র বিষয় প্রারহার করিব। আমি প্রত্যহ মন্দিরে গমন করিব।

- (২) এই ব্রত্তু প্রতিমা—আমি নিম্নলিথিত দাদশ ব্রত পাল্পন করিব;
  (ক) আমি জীব হিংসা করিব না এবং জীবকে কট্ট দিব না; (ধ)
  আমি পরস্ত্রী গমন করিব না; (গ) আমি চুরি করিব না; (ঘ) আমি
  আপন সম্পত্তির সীমা নির্দিট্ট করিব; (ঙ) আমি মিথ্যা কথা বলিব
  না; (চ) আমি আপন গস্তব্য দিশা নির্দেশ করিব; (ছ) আমি
  অনর্থ দণ্ড দিব না এবং উদ্দেশ্ত বিহীন কার্য্য করিব না, কিম্বা এমনকর্ম্ম করিব না যাহাতে অন্ত কেহ দণ্ডার্হ হয়; (জ) আমি প্রাত্যহিক
  ভোগ বিলাসের সংখ্যা স্থির করিব; (ঝ) আমি প্রত্যহ কোথায় ও
  কতদ্র যাইব তাহা স্থির করিব; (ঝ) আমি সম্যক পালন করিব;
  (ট) অন্তমী ও চতুর্দলী তিথিতে উপবাস রক্ষা করিব; (ঠ) আমি
  চারি প্রকার দান করিব এবং সমাধি মরণে মিরব (মৃত্যুকালে বিষয়ভোগ লালসা ও জগতের মায়া ত্যাগকে সমাধিমরণ কহে)।
- (৩) দামায়ক প্রতিমা—আমি কোন নির্দিষ্টকালের জন্ম প্রত্যহ তিনবার সামায়ক করিব।
- (৪) প্রোষাধোপবাস-প্রতিমা—আমি প্রত্যেক অষ্টমী ও চতুর্দলী তিথিতে যোড়শ°প্রহর পর্যান্ত উপবাসী রহিব।
- (৫) সচিত-ত্যাগ-প্রতিমা—আমি হরিৎ (green) ফলমূল আহা করিব না।
- (৬) নিশভোজন-ত্যাগ-প্রতিমা—স্বামি রাত্রিকালে চারি প্রক খাদ্য গ্রহণ, দান বা অস্তু কাহাকে গ্রহণ করিতে সাহাষ্য করিব না।

- ( ৭ ) ব্রহ্মচর্যা-প্রতিমা—আমি-স্ত্রীসহ্বাস, ভূষণ ও স্থগন্ধি ব্যবহার করিব না।
- (৮) আরম্ভ-ত্যাগ-প্রতিমা—আমি সকল প্রকার কার্য্য, ব্যবসা ও বাণিজ্য হইতে বিরত হইব।
- ু (১) পরিগ্রহ-ত্যাগ-প্রতিমা—আমি বাহ্যিক ও আন্তরিক পরি-গ্রহ সমূহ জ্যাগ করিব।
- (১০) অনুমোদন-ব্রত-প্রতিমা—আমি সাংসারিক কার্য্য এবং অনামন্ত্রিত কোন খাদ্য গ্রহণ করিব না।
- (১১) উত্তিষ্ট ব্রত প্রতিমা—এই প্রতিজ্ঞা গ্রহণকালে সন্ন্যাসী বেশ ধারণ করিতে হয়। এলক বা কুলকক প্রাবকের হইতে হয়। · ঐলক শ্রাবক কপ্নী পরিধান ও কমণ্ডলু গ্রহণ করতঃ অরণ্যে সাধুসঙ্গ করেন এই প্রথা। কুল্লকক প্রাবক এক বস্ত্র বা চাদর পরিধান ও কমণ্ডলু গ্রহণ করিয়া, মঠ, মণ্ডপ বা মন্দিরে বাস করিবেন এই নিয়ম।

পূর্ব্বোক্ত একাদশ প্রতিমা ব্যতীত প্রত্যেক জৈন দশলক্ষণীধর্ম পাनन कतिए वाधा। দশ नक्षनी धर्म ५ हे :--

- (১) উত্তম ক্ষমাধর্ম—ক্রোধ দমন, অপমান ও ক্ষতিসহ্য এবং क्रमां क्रवा।
  - (२) মার্জব ধর্ম--অহঙ্কার ত্যাগ।
  - (৩) আজব ধর্ম—শঠতা ও প্রবঞ্চনা পরিহার।
  - ( 8 ) পত্য ধর্ম—সত্যবাদী হওন।
- (৫) শৌচধর্ম—আত্মাকে পবিত্র ও কুচিন্তা পরিত্যাগ এবং সালাদি স্বারা দেহ পরিষ্কার করণ।
- (৬) সংযম ধর্মা-পঞ্চ অনুব্রতী (minor vows); পঞ্চ সমিতি ७ किन ७ शि भोषान এবং भरक्षिय प्रमा।
  - ( १ ) তপধর্ম—ছাদশ প্রকার তপস্তাচরণ।

- · (৮) ত্যাগধর্ম-কুচিন্তা পরিহার, অর্থ লালসা ত্যাগ ও দানাদি কর্মানুষ্ঠান,।
- (৯) অকিঞ্চনধর্ম—জগতে আত্মাতিরিক্ত দম্বলান্তর নাই বিশ্বাস করণ।
- (১০) , ব্রহ্মচর্য্য ধর্ম—আত্মাচিন্তারতি ও পরস্ত্রীগমন বিরতি। ,
  ইহা ব্যতীত প্রত্যেক জৈনের দ্বাদশ অমুপ্রেক্ষণ, ভবন বা বিষয়
  চিন্তা করা উচিত।
- (১) অনিভা অণুপ্রেক্ষণ—জাগতিক সমস্ত পদার্থ রূপান্তরশীল, অতএব এই অনিভা জগতের জন্ম আমি উৎস্কুক হইব না।
- (২) অশ্বরণ অণুপ্রেক্ষণ—জগতে বিপদ ও মৃত্যুকালে সহায়কারী আমার কেহ নাই। আমাকে কর্মফল ভোগ করিতে হইবে।
- (৩) সংসার অণুপ্রেক্ষণ—পূর্ব জন্মে আমি মহয়, দেবতা, নকী বা ত্রিয়ঞ্জাপে তঃখ ভোগ করিয়াছি। এ জীবনে আমাকে তঃখ হইতে পরিত্রাণ পাইবার চেষ্টা করিতে হইবে।
  - (৪) একত্ব অণুপ্রেক্ষণ—জগতে আমি একাকী এবং অসহায়।
- ( । ) অগ্রন্থ অনুপ্রেক্ষণ--জাগতিক সমস্ত পদার্থ আমা হইতে পৃথক।
- (৬) অশুচি অমুপ্রেক্ষণ—অশুচি পদার্থ পূর্ণ দেহের জন্ম গর্কা করা অমুচিত।
- (৭) আশ্রব অমুপ্রেক্ষণ—আমি কায়মনোবাক্যে এমন কিছু করিব না যাহা নব কর্মোৎপাদক।
- (৮) সম্বর অমুজ্জেকণ—ভবিষ্যতে আত্মা বন্ধকারী কর্মের প্রতিরোধ করিবার উপায় করিব।
- শাইবার চেটা কুরিব।

- ()0) द्याक असुर्श्यक्य-अगर् कि १ भगार्थ कि १ ७५ कि १ वर्ष সকল চিন্তা করিব।
- (১১) বোধ তুর্লভ অমুপ্রেক্ণ-এই জগতে রত্নত্রীধর্ম ব্যতীত সমস্তই সহজ-লভ্য এইরূপ চিন্তা করিব।
- (১২) ধর্মা অমুপ্রেক্ষণ---রত্নতায়ীধর্মাই জগতে প্রকৃত মুপের মূল। জৈনধর্মের সারশিক্ষা এই—এ জগতের স্থুণ, শান্তি ও ঐশ্বর্য্য মন্থব্যের চরম উদ্দেশ্য নহে। জগৎ হইতে যতদুর পার নিলিপ্ত থাক। আত্মার মঙ্গল কামনা কর। তুমি যথন কোন সংকার্য্যেত্রতী হও, তুমি কে ও কি এই বিষয় স্মরণ রাখিবে। ইহা পরলোক-মোক্ষবিশ্বাস-काती एक गाँव विदेश कार्गाठक ट्यागविकारमञ्जा देवनथर्पात विद्याधी। আত্মত্যাগ, স্বার্থত্যাগ ও স্থুপত্যাগ (ত্যাগই) এই ধর্মের ভিত্তি।

জৈনধর্ম অশুচি আচরণের সমষ্টি একথা সত্য নহে: একথা সত্য य धुनिया नाम এक শ্ৰেণী অভ্ত জৈন আছে। খাসগ্ৰহণ এবং কথা বার্দ্তার সময় কীটাদি যাহাতে মুথে প্রবেশ করিতে না পারে, এজন্ম , একণও বস্ত্রে মুথ আচ্ছাদিত করিয়া রাথে। ভাহারা অপরিষ্ঠার বস্ত পরিধান করে, স্নানাদি প্রায়ই করে না । কিছ ভাহাদের সংখ্যা অতি অল্ল। দিগম্বর ও শ্বেতাম্বর এই চুই শ্রেণীতে জৈনসম্প্রদায় বিভক্ত, को इर टानीत दिन क्षानाती। किनकाकात त्राक्षाय पूनिया देवन मिश्रा, वामता किनाहात मश्रक्त नाना श्रकात कुमश्यात পতिত हहै।

देखनमूनिচ त्रिक कि कि वारमा हन। क त्रिया এই প্রবন্ধের উপসংহার कतिव। मिशयत टिजनभू निरक उनका वर्षात्र व्यवस्थात्र में, सुखिकात्र भवन, সম্মুখে চারিহন্ত পরিমিত স্থান দর্শন করিয়া গমন, ৪৬ সোধ ও ৩২ অন্তরল পরিহার করিয়া একাহার করিতে হয়। কেশবৃদ্ধি হইলে **डि**९भाष्टेन এवर २२ भित्रमह वा-इ:थ मञ्.कन्ना विधि। ठकूर्फण जाष्ट्रास-त्रिक धवर मम वाश्कि পরিএই পরিত্যাগ করত: निर्गष्ट स्कृत्य।

गर्समा धर्ममाम ७ एक्समारम (चाष्ठिएम) यथ धार्कित। (चणापक किनमूणि (चण्यक পরিধান, নগরে বাস ও শ্যায় শ্য়ন করিছে পারে। थर्याधान व्यर्थ मन नक्तीधर्या, दामन श्रकात छन, जरमामन हिन्नज, इस অবশক্তি এবং দ্বাদশ ভবন বা অমুপ্রেকার আচরণ।

জৈনশাস্ত্রমত্ত যতদিন না জৈনসাধু আপন উলঙ্গাবস্থা ভুলিতে পারেন, ততদিন তাঁহার মোক্ষ হয় না। এই জন্ম জৈনসন্থাসী উলক্ষ থাকেন। যথন তিনি আপন উলঙ্গাবস্থা বিশ্বত হন, তথন তিনি ভবসিদ্ধ পার হইতে পারেন। জ্ঞান ও চিন্তা লইয়া জৈনংর্ম। মোক্ষ ও ইহার উপর নির্ভর করে। আমি উলঙ্গ, এই জ্ঞান ও চিস্তা যত দিন একেবারে অন্তর্হিত না হয়, ততদিন নির্বাণ প্রাপ্ত হওয়া যায় না। এইজন্ত জৈনেরা উলঙ্গাৃর্ত্তি পূজা করে। কিন্তু জৈনেরা মূর্ত্তিপূজক একথা স্থীকার করে না। যাঁহাদের মৃর্ত্তি পূজা করে তাঁহারা উলঙ্গ ছিলেন, এই জন্ম মৃর্ত্তিও উলঙ্গ। তাহারা বলে যে মৃত্তি কেবলমাত্র মহাপুরুষদিগের সহায়ক। জৈনদিগের উলঙ্গাবহা ও উলঙ্গমূর্ত্তি পূজা তাহাদের প্রাচীনত্ব সপ্রমাণ করে; কারণ মনুষ্য আদিম অবস্থায় উলঙ্গ থাকিত। খুষ্টানদিগের আদি পিতা আদম, আদি মাতা ইভ নিষ্পাপ অবস্থায় উলঙ্গ ছিলেন। হিন্দু শান্তের শিব দিগম্বর, দত্তাত্তেয় দিগম্বর, অবধৃত সম্প্রদায় দিগম্বর। छाँहाता नकलाई भाभभूगा, ভालमन छान त्रहिछ ছिलान।

टिकानिता वरण रच जाहाता हिन्सू। टिकानमर्क हिन्सू भरमत त्रुर्शिख **এই** প্রকার হিম্ = হিংসা, ছ = দূর, যাহারা হিংসা হইতে দূর। সিস্থা खौत्रवामी व्यापिय व्यार्था ७ उँशिए त मखान मखिल्श विकृ नर्दन। हिश्मा विव्रहिछ व्यक्ति यात्वहे हिन्त्। हिन्त् भरमञ्ज এই छिन व्याथा।

ু রক্ষণশীল জৈনেরী ইহাকে জৈন ধর্ম বলে; এবং ইহা জৈনশাস্ত্র সম্ভ। পাঠকের যেন স্মরণ থাকে এই প্রবন্ধে লেথক আপনার কোন मख्या প्रकाम करत्रन नारे।

## श्रह्मी-जनमो।

তোমার স্বেহের

বক্ষে আবার

তুলে' লও মোরে, জননি!
দেশে দেশে ফিরি' রথা ত্রাশায়
শ্রান্ত হৃদয়ে সন্ধ্যা বেলায়—'
তোমার নদার ঘাটে আসি' আজি
বাধিয়াছি মোর তরণী।

#### ক্রড়াব আবার

ক্লান্ত শরীর

তোমার শীতল পবনে;
দেখিব আবার—স্থনীল বরণ
তোমার উদার মুক্ত গগন,
দিগ্ দেগস্তে প্রসারিত মাঠ
আবৃত হরিত বসনে;

দেই বৃাশবন,

আত্র কানন,

সেই চাঁপা, সেই করবী,
সেই নারিকেল তাল তরুঞ্জলি
আকাশের পানে আছে শিরতুলি',
নদী তীরে তীরে বঞ্জুল বনে
তেমনি' কেতকী স্করভি।

ভোমার বনের

নিশ্ব ছারার,

ভোষার দিব্য আলোকে, ভোষার প্রাচীন অপথের তলে ভোষার দীঘির স্থলীতল জলে পিক মুখরিত বকুল বাগাৰে খেলিব আবার পুলকে।

তোমার প্রভাত, তোমার গোধ্লি, তোমার দিবস রজনী, সকলি পূর্ণ শাস্তি শোভায়; তোমার আশিষ-অঞ্চল ছায় রাথিয়া আমায় শত ছথ তাপ ভূলাও বারেক, জননি!

তুমি নহ মাগো
প্রস্তরময়ী প্রতিমা;
ব্যথায়, তোমার চোথে দেখি জ্ব,
স্থান, দেখি তব হাসি নির্মাল,
সন্তান তরে হদয়ে তোমার
স্কোন ইধাধারা অসীমা।

নগরী বিমাতা, ভাণ্ডান্ম তার
থাক্না পূর্ণ রতনে।—
আমি চাহে, শুধু তোমারি যে দান,—
ভক্তি, শক্তি, অকপট প্রাণ;
তোমার জীর্ণ কুটীরে জননি,
ইরাথিয়ো আমায় যতনে।

শ্রীরমণী মোহন ঘোষ।

# রোমান ইতিহাদের এক পৃষ্ঠা।

মরা সচরাচর সুল কলেজে যে সমুদ্য ইতিহাস পড়ি, তাহাতে বর্ণিত জাতি সমূহের ধর্ম, দর্শন সাহিত্য, চিস্তা, আচার-ব্যবহার ও রীতিনাতি সম্বন্ধে সেলই জানিতে পাই। প্রাচীন গ্রীস ও লোমের ইতিহাস প্রত্যেক কলেজেই পঠিত হইমা থাকে, কিন্তু অন্ত্রামনা বে বিষয়ের অলোচনা করিব তৎসম্বন্ধে অনেক ইতিহাসই প্রক্রেবারে নির্বাক।

প্রীপ্রত্ত সনে জেনো নামক জনৈক গ্রীক সাইপ্রাস দ্বীপে জন্ম পরিগ্রহ করেন। তিনি প্রেইক দর্শনের জন্মদাতা। এই দর্শনের মূল কথা এই,—বৃক্তিই আমাদের একমাত্র অবলয়ন। যুক্তি দারা ইচ্ছালক্তি নির্মিত করিয়া চলাই একমাত্র কর্ত্তব্য, ধর্মই একমাত্র পদ্ধা। ইশ্বর সম্বন্ধে প্রেইকদিগের মত কতকটা বৈদান্তিক অধৈতব্যদের স্থায় পরকাল সম্বন্ধেও তাহারা সন্দিহান। পরকাল থাকিলেও তাহা স্থকর, কপ্তের আকর নহে, এবং, মেহ মমতা প্রভৃতি কোমল প্রবৃদ্ধি সমূহের বলীভূত হইয়া মুক্তিপথ হইতে বিচলিত হওয়া কাপুরুষতার ক্ষণ ও জীজনোচিত,—ইহাই তাহাদের মত।

শ্রাচান গ্রীস ও রোমে যদি কোন দর্শন পৃথিবীর প্রচলিত ধর্ম সমূহের ভার সাংসারিক জীবন যাপনে আদর্শ-স্বরূপ পরিগণিত হটরা থাকে, তবে টোইসিজমই দেই দর্শন। যথন রোক্ষাস্থাধীনতন্ত্র পরিত্যাগ করিয়া রাজতন্ত্রের অধীন হইয়াছিল, রোমান জনসাধারণের মধ্যে যথন পদিল বিলাসলোত অপ্রতিহতবেগে প্রবাহিত হইতেছিল, তথনও রোমের শ্রেষ্ঠ জানী, রাষ্ট্রনৈতিক, বাগ্মী, লেখক ও শাসনকর্ত্গণের মধ্যে টোইকধর্মের প্রভাব বিলক্ষণ প্রবল ছিল।

ষ্টোইকধর্ম বীরের ধর্ম। পরের তৃঃথ দ্র্র করিবে, কিন্তু স্বরং কথনও তদ্ধারা অভিভূত হইবে না, প্রবৃত্তির দাস হওয়া দ্বণ্য কাপুরুষতা, তাহাদের উপর প্রভূত্তই মানবোচিত স্বাধীনতা, এই সকল নীতি বীরত্বেরই পরিচয় প্রদান করে। ঐহিক কি পারত্রিক, কোন প্রবেগভনের অভাব সত্বে কঠোর স্বাবলম্বন ও আত্মসংযম দ্বারা উন্নত্ত ধর্মজীবনবাপন বে সন্তবপর, তাহা প্রাচীন ইউরোপীয় • সভ্যতার ইতিহাসে কেবল ষ্টোইকগণের মধ্যেই দেখিতে পাওয়া যায়। ষ্টোইক রাজ্যি মার্কাস অরেলিয়সকে বিখ্যাত করাসী লেখক রেনান পূর্বভ্রম মানব বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। ইহার প্রণীত 'চিস্তা-লহরী' অভাপি ভাবুক হদরের আদরের বস্তু।

এই টোইক সম্প্রদায়ের মধ্যে আত্মহত্যা সম্বন্ধে বে মত ও প্রথা প্রচলিত ছিল, তাহা অতীব বিশ্বরজনক ও বর্তমান সমাজসম্মত নীতিশাল্লের সম্পূর্ণ বিপরীত। গ্রীক দার্শনিকশ্রেষ্ঠ প্রেটো অসহ্য দারিজ্ঞা বা ঘোরতর বিপংপাতে আত্মহত্যার বিধি দিয়াছেন। জেনো বরং উক্ত উপায়ে প্রাণ পরিত্যাগ করেন। কিন্ত রোমেই এই মতের অত্যন্ত প্রাহ্রতাব হইরা উঠে। সীজার, ওভিড, ইহার সমর্থন করেন। সাজারেরর প্রতিহন্দী মহামুভব কেটো স্বপক্ষের পরাজয়বার্তা শ্রবণে প্রেটোর ফিডন্ নামক গ্রন্থে আত্মার অমরন্থ সমন্দার বৃত্তি প্রদত্ত হইরাছে তাহা পাঠ করিতে করিতে প্রশাস্তিতিতে সহত্তে প্রাণ বিসর্জন করেন। বাগ্মী শ্রেষ্ঠ সিসিরো ঈদৃশ মৃত্যুর কম্প্র তাহার প্রভৃত প্রশংসা করিয়াছেন। যীগুরীটের সহিত অপর বে মহাজনজন্মের অমর লেখনী পাশ্রাত্য জাতকে নীতি শিক্ষা দিয়াছে, তাহারা সকলেই এই মতের পোবণ করিয়া গিয়াছেন। মার্কাস অরেলিয়স, সেনেকা ও প্রশিকটোস্ কর্ত্ব্য হইতে মৃত্তিলাভ নিমিত্ত অথবা ভীক্তা প্রকৃত্ব আত্মতা নিক্ষারীর স্বীকার করিলেও অর্থা বিশেষে আত্মতা

कब्रशीय विविद्या উপদেশ দিয়াছেন। हिश्चिक कवि नूद्धिनियम श्रीय मुद्री काता अहे मरजत ममर्थन कतिशाह्न। विनित्र मरज मानव स्थात इरें जिया विषय (अर्थ), कात्रण रेष्ट्राय! जिया जिया विषय । अपारे जिया निषय, किन्द छश्वान व्ययत्। नौजिनित् (मत्नका व्यानामय्रो जायात्र व्याप्तर्कात्र প্রেণবর্ণনা করিয়া গিয়াছেন। "জীবন যে কঠোর শান্তি, নহে, অদৃষ্টের তাব জভান্ধ সম্বেও আমার চিত্ত যৈ অবিচলিত ও স্বাধীন, তজ্জ্য আমি मुङ्ग्रं निक्रे भ्रागी। এমন একজন আছে যাহার হস্তে সর্কশেষ विद्यात्रकात्र नास्त्र। व्यामात्र नृण्यम भक्त गार्थित एम प्रधात्रमान। ষ্থন আমরা শ্বরণ করি যে এক পাদ্রিকেপেই আমরা স্বাধীনতার পরপারে যাইতে সক্ষম, তথনই দাসত্বের তাত্রতা কমিয়া যায় : জীবনের अर्वावध प्रःथ इट्रें बागात्र এट এक बाग्र बाह्र। कष्ट-मूज्रा उ ্স্থ-মৃত্যু এ উভয়ের মধ্যে যথন আমার অন্তত্তর নির্বাচনের ক্ষমতা ্আছে, তথন আমি শেষাক্রটি কেন না অবলম্বন করিব ? যে পোতারোহনে আমি সমুদ্র পার হইব, যে গৃহে আমি বাস করিব, তাহার নিকাচন যেমন আমার উপর নির্ভর করে, দেইরূপ যে প্রকার মুত্য माहार्या व्यामि । প্রাণ-পরিত্যাগ করিব, তাহা আমারই বিবেচনাসাপেক। কিরপে জীবন যাপন সঙ্গত তৎসম্বন্ধে মানব অন্তের পরামর্শ গ্রহণ শব্বিৰে, কিন্তু কিরূপ মৃত্যু সঙ্গত তুদ্বিষয় সে স্বীয় বুদ্ধি দ্বারা চালিত ্ত্ইবে। নিষ্ঠুর অত্যাচার ও দারুণ রোগযন্ত্রণা কেন আমি সহ্য করিব यथन वहर्ष आमि छोश इटेट मुक इटेट शाति ? कीवन प्रःथमम बिना जात्करभव ए कान कावन नाहे, जाहा क्ष्म এहे ज्ञा-हेन्हा ना रहेटन दकर को विक थाकिएक वाक्षा नरह। मानूष सूची, कात्रव हुःथ इक्टि व्यवग्रहि जाहात (अहाशीन। यि वाँ विशा शिक्स सूथी हैं। क्षि नारे; नजूरा यशान स्ट्रेंट जूमि यात्रियाह, ज्थाय कित्रिया याहरू कामात्र मन्पूर्व अधिकात्र आहि। आमि वृद्ध वसमत्क अत्र कति ना, यमि

'जयन यामात्र माञ्चाच व्यक्त बादक। किन्न यमि मन विक्रिक स्ट्रिया यात्र, तृ जिनम्हं क्रांच क्रांच निश्निश्वि हि हि मा जात्म, शकुलभाक निष्म ना थाकिया क्विन नियाममाज व्यविष्ठ थाक, जाहा हहेल जह পত্নামুখ নেহাবাদ হণতে বিদায় গ্ৰহণে আমি ছিধাবোধ করিব मा। वाधित वादिना मञ्चत्रा थाकिल वथवा हिंछ मटब थाकिल वाबि यु गुर्य भनावनभव रहेव ना। (वननाक्तिष्ठे रहेवा आमि निष्कित विकरक रुखा खनन क त्रिव ना, का त्र के मृण मृज्य का श्रूक्ष छ। कि ख यि वृत्रिष्ड পারি যে বাঁচিয়া থাকিলে অবশিষ্ট জীবন কেবল ভুগিতেই হইবে, তাহা হইলে আমি ইহলোক হইতে বিদায় গ্রহণ করিতে কিছুমাত্র इंड एड: क्रिन ना, क्रिन छात्र नाइ, य উদ্দেশ্य জीवन धीन्न क्ना याय, তাহার কিছুই আর দিদ্ধ হওয়ার সম্ভাবনা নাই বলিয়া।" এপিক-एउँ। न वर्णन "मर्स्वामति यस्न রाथिও ए। निकायणात बात मर्स्वा উন্মুক্ত রহিয়াছে। ক্রীড়ারত বালকগ্ন অপেক্ষা অধিকতর ভাঁক रहे अनो प्रथम (थना जुहानिगःक आस्मान श्रामान विवय रुत्र, ज्थन তাহারা বলে 'আর থেলিব না।' তুমিও দেইরূপ জীবন ছর্বিসহ (वाध इरेल मर्छाधाम इरेड अवश्व इरेख; किश्व यिन छोरा ना कन्न, তবে অদৃষ্টের দোষ দিয়া আক্ষেপ করিওনা।" এইরূপ অনেক কথা রোমান ঐতিহাসিক ও নীতিবিদ্গণের পুস্তকাদিতে বছল পরিমাণে পাं अया यात्र। ट्रिटिक गरंगत के हुण निकात यह व द्यामान कन गांधात्र वित्र यर्पा এक नमरम बाग्रहजा। थूर প্रराण हरता উठित्राছिन, ঐতিহাসিক-भग रेरा ७ वर्णन। किन्न जामर्न (होरेक भग किर्र का भूक रवज किन्न ম্বণিতভাবে স্বীয় কর্মফল এড়াইবার জন্ম আত্মহত্যা করেন নাই।

রোমান আইনে আত্মঘাতিদিগের উইল নিদ্ধ বলিরা পণ্য হইত। কিন্তু পরে সামান্ত হই একটি প্রতিবেধক বিধি প্রবর্তিত হইরাছিল। রাজনৈতিক অপরাধে অভিযুক্ত ব্যাক্তগগ্র অনেক সমর বিচার প্রের

गुरस जाषार्था क्रिक, कातन लाबी निर्दातिक रहेटन आनगरकत्र नर् जार्दिक जमावृज सिर् जनमाधावानव मगरक श्रामिंज रहेज, धरार खाश्या मन्नि मंत्रकार्य कक रहे । मारे एमिनियानय कार्य নিয়ম হয় যে, তাদৃশ অপরাধে দোষী সাব্যস্ত হইলে আত্মহত্যা দ্বারাও क्ट् बाहेत्नत्र इन्ड इहेट मुक्ति शहेर्य ना। मया दे द्रिष्ट्रान् नित्रमः करत्रन (यः व्याष्ट्राचा जो रिमनिक भूजा जलक जात्र भूगा भूगा विष्ट्र हो । अहे इहे স্বাজনৈতিক বিধি ব্যতীত আত্মহত্যার বিরুদ্ধে আইনে কোন ধারা हिन ना। গল্দেশের মার্সেল্দ্ নগরেও আত্মহত্যা সম্পর্কে কৌতুকাবছ বিধি প্রচলিত ছিল। সেনেট বিষ রাখিতেন। আত্মহত্যার উপযুক্ত **एक्ट्र आं**ছে কেহ প্রমাণ করিতে পারিলে তাহাকে সেই বিষ দেওয়া হইত। সেনেটের অনুমতি ব্যতীত কেহ আত্মহত্যা ক্রিতে পারিত मा। र्ठा९ क्र श्रीय প्राग विनाम क्रिक्ट ना পात्र, धरे উদেশ্य ঐ আইন প্রণয়ন করা হয়।

আত্মহত্যার প্রতি প্রাচীন রোমে এবৃষিধ অমুরাগ যে যে কারণ क्टेंटि উৎপन्न इट्याहिन, ঐতিহাসিকগণ তাহাও দেখাইয়াছেন। প্রথমতঃ মনে রাপা উচিত থে, বর্তমানকালে আত্মহাতীর আত্মীয়-प्रकारक (य कलक्षकालिया वहन कत्रिष्ठ इय, তाहाहे माधावरणत्र हरक আছোতীর পাতক বৃদ্ধি করে। রোমানগণ আত্মঘাভীর পরিবার-वर्गाक कुणा वा श्वांत ठाक प्रिश्टिन ना, पार्टनि ভारापत्र विक्रक-विश्वान किंद्र हिलना, ऋजबार उৎकारण बाजरजा पृष्ठ विद्विष्ठि इंडिजा। विकोयकः, शाष्टियदेव व्यथवा त्यमादावी महागत्वत्र निर्देव হতা। সোমে তামাসা সরপ পরিগণিত হইত। ইহাতে রোমের नाविक्शालय माथा निष्ठेयलाय वृद्धि পार्देयाहिन । ज्लीयकः, विक्रोज শাসগণ ভবিষাৎ অপমান ও অত্যাচার হইতে আত্মরকার উপার না लिया भटनक नमन जांगुर्छा। वाता -मुकिनाएडत एछ। कतिक,

रेनिया बाजी किस्टलिं। जराव मर्बनमिन स्वारमा हर्ष्यः, मिर्त्रा, क्यामिश्यमा श्रक्षि मृनश्म महादेशसः कर्णासः व्यमाञ्चिक वाजाहात वाष्ट्र वाष्ट्र वहुन वृद्धि नाथन क विश्वाहिन পরিন স্রহাদরপে সম্ভাধণ করিয়াছেন। এতদাতীত, ষ্টোইকগণ মৃত্যুক্ত शृष्टीनिनिरंगत्र श्राप्त-नत्रकत दात्र विषया मन्न कत्रिएजन न। मृङ्का জন্মের পূর্ব্বাবস্থা, জীবনের শেষ পরিণতি ও বিশ্রাম। মৃত্যুই একমাত্র অমঙ্গল যাহার উপস্থিতিতে আমাদের ভয়ের কোন কারণ নাই। যতক্ষণ আমরা . আছি, মৃত্যু নাই, মৃত্যু ধ্বন আসে, ভথন আম্মা নাই। মৃত্যু দকল তঃথের পরিসমাপ্তি, অথবা (আছা অবিনশ্বর হইলে) ভবিষাৎ স্থাের নিদান। নিতান্ত মন্দপক্ষে (আত্মা নশ্ব रुटेल) मृज्य ज्**षिकत्र ভোগের অব**দান স্বরূপ। **টোইক দার্শনিকগণ** মৃত্যুর জন্ম সর্কা। প্রস্তুত হইতে, প্রফুলতা ও সাহসের সহিত মৃত্যুর मण्योन इरेट, वहाउत उपान निया शियाहिन। अभिकारिया বলেন "মৃত্যুতে যে আশঙ্কার বিষয় কিছুই নাই, এক্লপ ভাবিতে অভ্যান কর। কারণ অমুভূতি সমূহ স্থ গ্রংথের আকর, প্রবং মৃত্যু অমুভূতির विदाय।" शूनक, द्रायानगणित यथा श्राम्य हिटेज्यण धर्मात स्वान অধিকার করিয়াছিল, দেশের জন্ম প্রাণ বিসর্জনে তাহারা কিঞ্মিতাত कुंडिंड रहेड ना। प्रदित्र मुक्त मुक्ति यानवाषात्र পरित्रमाखि, अरे विश्वाम वृत्क लहेबाও তাहात्रा (य. जनस जायाजात्मत मृष्ठीस (मथाहेबाहरू, ভাহা ইতিহাদে খৃষ্ঠীয় স্থালিপ মারটার (Martyr) গণের প্রাণ্ড্যাগ অপেকা অনেক উন্নত বলিয়া চিরদিন ঘোষিত হইরে। এইরংশ गर्सना मृङ्ग हर्का कत्रिया द्वामानिक्ट त्रयं मृङ्गु छी छि जात्मक शिविधार किया शिया हिण।

ं . ज मचरक जेलिशामिक दनिक ब्रह्मक, "द्यामान दिशेक भएक

भिनिष्ठि এই আত্তিত্যাবাদ। शिहक मार्ननिरकत अर्काष्ट्र, আত্মনির্জন-नीन, जनमनीय चंडाव उंडकान ठिक थाकिएड भारत यङकान यञ्चना छ। নৈরাশোর শেষ সীমা হইতে মৃত্যুর ভায় এক স্থানিশিত উদ্ধারোপায় বর্ত্তমান থাকে। যদিও ষ্টোইক ধর্ম (এপিকিউরিয়ানদিগের স্থায়) স্থুখকে জীবনের চরম লক্ষ্যরূপে স্থাপন করে নাই, তথাপি যে°ধর্ম কর্তব্যের আদর্শের जिल्ह সঙ্গে সুথের একটা আদর্শ প্রাণশ্তি না হয়, তাহা বহুকাল ভিষ্ঠিতে পারে না। ষ্টোইক ধর্ম মানবকে অল্লই আশা कत्रिष्ठ, এবং किছুতে ভীত না হইতে শিক্ষা দিয়াছে। উহা মৃত্যুকে স্বর্গস্থধের দার স্বরূপ উজ্জল বর্ণরাজিতে চিত্রিত করে নাই বটে, কিন্তু **इ: एचत्र म्याश्चि विनया मर्क्तिय बामका इटेट** विमुक्त व्राथिए ए है। করিয়াছে। অদৃষ্টের বৈগুণ্য ও যন্ত্রণা হইতে আগু মুক্তির এক সহজ উপায় আছে জানিলে জীবনের অনেক কট কট বলিয়া মনে হয় না। মৃত্যু শান্তি নহে, শান্তি, এই বিশ্বাস মানিলে তাহা ভয়াবহ বলিয়া বিবেচিত হয় না। ষ্টোইক ধর্ম্মে জীবন এবং, মৃত্যু একই স্থরে বাঁধা। याष्ट्रस्त धर्माकीवनहे क्रेश्रत्रस्त, পाপের অমুশোচনা নিজ্ল ও অনাবশ্যক (কারণ পুণাই একমাত্র মঙ্গল), গর্বিত দৃঢ় ইচ্ছাশক্তি, याशांत्र निकृषे आञ्चावमानना इत्रशत्नम्र कानिमा—উভয়েই প্রকৃষ্টিত। छोरेक जामर्न निक रिमार्य मकाक मन्भूर्। जाजाकिमानित मक যে সমুদার গুণ গু মহত্ব জড়িত, তাহারা সম্পূর্ণ বিকশিত হইরা উक्कडम निकात अञ्भीनाम नियाकिङ इट्रेन य आपर्न श्रकिङ इत्र, ভাহা ষ্টোইক ধর্ম্মে প্রদর্শিত হইয়াছে। বিনয়, নদ্রতা ও আত্মানাদরের সক্ষে যে সকল গুণ বিকশিত হয়, উহাতে তাহার সম্পূর্ণ অভাব।"

রোমান প্রেইকগণের পরবর্তী সময়ে আত্মহত্যা সম্বন্ধে পাশ্চাত্য জগতের ধারণা কিরূপ পরিবর্ত্তিত হইরাছে, আমরা এই প্রসঙ্গে ভাহার সংক্রিপ্ত আলোচনা করিয়া প্রবন্ধ শেষ করিব।

बीडेश्स नी जिनिएशन आषार्जात निक्र कि कि वृक्ति अपनिक ब्रिट्डन, च्या डाहारे (मथा वार्डकः। निशास्त्रात्रम ७ स्मिट्डन) यद्रा मकरमरे छगदात्मद्र रेमिन १, कर्डवाभागत्मद्र कन्न निर्णिष्ट र्ब क्वा द्वा विश्व हि इस् इस क्ष्य गवानित श्रीक विद्याशै रुख्या এकरे कथा। धतिष्ठेषेण धवर কৈ ব্যবহার শান্তক্রারগণের মতে অমিরা স্বদেশের 🐃 প্রাণধারণ ারি, স্থতরাং স্বেচ্ছায় প্রাণবিদর্জন করিলে স্বদেশের প্রতি কর্ত্তব্যবিষ্ণু ইতে হয়। প্লুটার্ক এবং অন্তান্ত গ্রন্থকর্ত্তাগণের মতে কণ্টসহিষ্ণুতাই ্রকৃত বীরত্ব, স্থতরাং আত্মহত্যা মানবের অযোগ্য কাপুরুষোচিত ার্য। নব প্লেটোনিষ্টদিগের মতে মানদিক বিচলতা মাত্রই আত্মাকে লুষিত করে; আত্মহত্যা ঈদৃশ বিচলতা প্রস্থত, স্থতরাং ঘোরতর পে। স্বীয় পরিবার ও সমাজের নিকট দায়িত্বজ্ঞানাভাবই যে াত্মহত্যার দোষ, এই আধুনিক মত আদি খ্রীষ্টানদিগের মধ্যে বিশেষ বল ছিলনা। তাহাদের মৃত কতকটা প্লেটো ও পিথাগোরাদের মতের প্ররূপ ছিল। পূর্বেই উক্ত হইয়াছে খ্রীষ্টানগণ নরকের বড়ই ্তীষিকামর চিত্র অঙ্কিত করিয়াছেন। ইহা তাহাদের মধ্যে আত্ম-ত্যার একটি গুরুতর প্রতিষেধক ছিল। এতদ্যতীত, যীওরীষ্ট লিয়াছেন "Blessed are ye that weap now: for ye shall augh" ইহকালে অমুখী ধার্মিক ব্যক্তির স্বর্গলাভের এই সাম্বনাটি, ্রবং ভগবানে সম্পূর্ণ নির্ভরশীলত। খ্রীষ্টাননিগের আত্মহত্যার প্রতি ণা আরও প্রবর্দ্ধিত ক্লরিয়া দিয়াছিল।

কিন্ত তথাপি তিন শ্রেণীর গ্রীষ্টানদিগের মধ্যে আত্মহত্যা অনেক্ষর লৈ প্রাদান সমাটগণের অত্যাচারের ফলে 'মার্টায়ের' বির্বোব হইরাছিল; তাহারা গ্রীষ্টির ধর্মবাক্ষকগণ বর্ণিত স্বর্গের চিক্রে তটা বিমোহিত হইরাছিল যে, গারে প্রীড়িয়া দলবন্ধ ভাবে তাহারা

পদ্মিণতি এই আত্মহত্যাবাদ। ষ্টোইক দার্শনিকের পর্বাদ্প, আত্মনির্ভর-শীল, অনুমনীয় স্বভাব উভকাল ঠিক থাকিতে পারে যতকাল যন্ত্রণা ও নৈরাশ্যের শেষ সীমা হইতে মৃত্যুর স্থায় এক স্থানিশিত উদ্ধারোপায় বর্জমান থাকে। যদিও ষ্টোইক ধর্ম (এপিকিউরিয়ানদিগের স্থায়) স্থকে জীবনের চরম লক্ষ্যরূপে স্থাপন করে নাই, তথাপি যে ধর্ম কর্তব্যের चामर्लित 'मरक मरक स्रुर्थत এकটা আদর্শ প্রদর্শিত না হয়, তাহা বছকাল তিষ্ঠিতে পারে না। ষ্টোইক ধর্ম মানবকে অল্লই আশা कत्रिष्ठ, এবং किছুতে ভীত না হইতে শিক্ষা দিয়াছে। উহা মৃত্যুকে স্বর্গস্থাবের দ্বার স্বরূপ উজ্জ্বল বর্ণরাজিতে চিত্রিত করে নাই বটে, কিন্তু তঃখের সমাপ্তি বলিয়া সর্ববিধ আশঙ্কা হইতে বিমুক্ত রাখিতে চেষ্টা করিয়াছে। অদৃষ্টের বৈগুণ্য ও যন্ত্রণা হইতে আশু মুক্তির এক সহজ উপায় আছে জানিলে জীবনের অনেক কন্ত কন্ত বলিয়া মনে হয় না। মৃত্যু শান্তি নহে, শান্তি, এই বিশ্বাস মানিলে তাহা ভয়াবহ বলিয়া विरिक्षिक इम्र ना। द्वीरेक धर्मा कीवन धरः, मृज्य धकरे स्ट्रा वैधा। याष्ट्र(यत्र धर्माकीवनरे क्रेश्वत्रव, পाপের অনুশোচনা নিক্ষণ ও অনাবশাক (কারণ পুণাই একমাত্র মঙ্গল), গর্বিত দৃঢ় ইচ্ছাশক্তি, याशांत्र निकृषे व्याचारियानना इत्रश्रानम् कालिय।—উভয়েই প্রকৃতিত। छोड़ेक जानर्न निक हिमाद मकाक मन्भून। जाजाकियान मक যে সমুদার গুণ ও মহত্ব জড়িত, তাহারা সম্পূর্ণ বিকশিত হইরা উচ্চতম লক্ষ্যের অমুশীলনে নিয়োজিত হইলে যে আদর্শ প্রকটিত হয়, তारा छोरेक धर्मा अपर्मित रहेबाहा। विनय, नयुटा ও আত্মানাদরের সক্ষে যে সকল গুণ বিকশিত হয়, উহাতে তাহার সম্পূর্ণ অভাব।"

রোমান প্রোইকগণের পরবর্তী সময়ে আত্মহত্যা সম্বন্ধে পাশ্চাত্য জগতের ধারণা কিরপ পরিবর্ত্তিত হইয়াছে, আমরা এই প্রসঙ্গে তাহান্ত্র সংক্রিপ্ত আলোচনা করিয়া প্রবন্ধ শেষ করিব।

और्रेश्व नौजिविष्गण व्याष्ट्रशाद विक्रक कि कि वृक्ति श्रिष्मा করিতেন, অগ্রে তাহাই দেখা যাউক'। পিথাগোরস ও প্লেটো বলিতেন, वामत्रा मकत्मरे छगदात्मत देनिक, कर्छवाभागत्मत्र खरा निर्मिष्ठे কর্মান্ডেরে প্রেরিত হইয়াছি, স্কুতরাং ইহা পরিত্যাগ করা আর ভগবানের প্রন্থি বিদ্রোহী হওয়া একই কথা। এরিষ্টটল এবং গ্রীক ব্যবহার শান্তকারগণের মতে অমিরা স্বদেশের জন্ত প্রাণধারণ করি, স্থতরাং স্বেচ্ছায় প্রাণবিদর্জন করিলে স্বদেশের প্রতি কর্দ্তব্যবিষ্ণ হইতে হয়। প্লুটার্ক এবং অন্তান্ত গ্রন্থকর্ত্তাগণের মতে কন্তসহিষ্ণুভাই প্রকৃত বীরত্ব, স্থতর্যং আত্মহত্যা মানবের অযোগ্য কাপুরুষোচিত কার্য। নব প্লেটোনিষ্টদিগের মতে মানসিক বিচলতা মাত্রই আত্মাকে কলুষিত করে; আত্মহত্যা ঈদৃশ বিচলতা প্রস্তুত, স্থতরাং ঘোরতর পাপ। স্বীয় পরিবার ও সমাজের নিকট দায়িত্তানাভাবই ষে আত্মহত্যার দোষ, এই আধুনিক মত আদি খ্রীষ্টানদিগের মধ্যে বিশেষ প্রবল ছিলনা। তাহাদের মৃত কতকটা প্লেটো ও পিথাগোরাদের মতের व्यक्षक्र हिन। भूर्त्वहे छेङ हहेग्राष्ट्र श्रिष्टोनंगन नत्रक्त्र चड़हे বিভীষিকাময় চিত্র অঙ্কিত করিয়াছেন। ইহা তাহাদের মধ্যে আত্ম-হত্যার একটি গুরুতর প্রতিষেধক ছিল। এতদ্বাতীত, যীওথী বলিয়াছেন "Blessed are ye that weap now: for ye shall Jaugh" ইহকালে অমুখী ধার্ম্মিক ব্যক্তির স্বর্গলাভের এই সাম্বনাটি, এবং ভগবানে সম্পূর্ণ নির্ভরশীলত। খ্রীষ্টাননিগের আত্মহত্যার প্রতি चुना आत्र अविक्रिं क्रित्रिया निमाहिन।

কিন্ত তথাপি তিন শ্রেণীর খ্রীষ্টানদিগের মধ্যে আত্মহত্যা অনেক কাল প্রবল ছিল। রোমান সমাটগণের অত্যাচারের ফলে 'মার্টারের' আবির্ভাব হইরাছিল; তাহারা খ্রীষ্টির ধর্মবাজকগণ বর্ণিত সর্বের চিজে এতটা বিমোহিত হইরাছিল যে, গারে পুঁড়িরা দলবন্ধ ভাবে তাহারী

রোমান শাসন কর্তৃকগণের সমক্ষে উপস্থিত হইয়া বলিড "আমরা খ্রীষ্টান; তোমাদের ধর্ম কর্ম কিছুই মানি না, অতএব আমাদিগকে ক্রশবিদ্ধ কর।" অনেক গ্রীষ্টিয় রমণী আমাদের প্রাতস্মরণীয়া রাজপুত-লালাগণের স্থায় রোমান অভ্যাচার হইতে স্বীয় সভীত অকুগ্ন রাথিবার নিমিত্ত আত্মহতা। করিতেন। আবার অনেক কুসংক্ষারাচ্ছন্ন গোঁড়ো बौडीन छिक् वर्गकामी इहेग्रा कर्छात्र हिक कुछ, ज्यवनयन शूर्वक শ্বং মৃত্যুকে আহ্বান করিয়া আনিত। St. Simeon Stylite's নামক এই শ্রেণীর এক ব্যক্তির সম্বন্ধে টেনিসনের একটি কবিভা আছে। মহম্মদের আবির্ভাবের পর আত্মহত্যা পরায়ণতা আরও প্রাশমিত হইয়াছিল। যীশুগ্রীপ্ত এ সম্বন্ধে কোন মতামত ব্যক্ত করেন नाष्ट्र। किन्न कार्ताल हेश व्यष्ट निषिक चाह्य। व्यानियार्जन मिक्न আমেরিকা জয় করিয়া অমামুষিক নৃশংসত। সহকারে তদ্দেশীয় আদিম व्याधिक विकारक रूजा करिएक व्यावस कतियाहिन, उक्तम साफ्न नडाकोत यात्मित्रकात यानिम यधिवानिगण्यत मधा यात्रह्या थ्व वृक्षि भारेबाहिन। इউরোপে ডাইনিদিগকে যখন আগুণে পোড়াইয়া হত্যা করা হইত, তথন তাহাদের মধ্যেও আত্মহত্যা অত্যস্ত বিস্তৃতি লাভ করিয়াছিল। অপ্তাদশ শতাব্দীর নাস্তিক ফরাসী দার্শনিকগণ এই विषय्नी नहेया अत्नक आलाहना क्रियाह्न ; अत्नरक हैहा मुम्बंगल कत्रिमारहन, এবং রোমান ষ্টোইকগণের আদর্শই অবলম্বনীয় বলিয়া याका कतिवाद्या किन करवा (प्रवादेवाद्य स्वाद्या काना-হত্যার মূলে ঘোরতর স্বার্থপরতা নিহিত। ম্যাডাম ডি টেল্ এ সম্মে ध्वक्षानि स्कार पूर्क भूर्ग शहरहन। करियाहिन। जिनि निधियाहिन শোষদিও আত্মহত্যা অপেকা গুরুতর পাপ আরও আছে, তথাপি क्षाबादन कवियान ७ निर्कादन कछाव এই পাপে यङमूत्र क्षाका भाग, कार्य जान किहिएक नर्दे। कन्नामि न्राहेनिश्चरतन्न भन्न जान्यकान भन

একটা হন্ত্ব পড়িয়াছিল। অধুনা এইধর্মের বিশানের কবনতি এ
দরার্ত্তির অধিকতর অমুণীলনের সঙ্গে সঙ্গে আত্মহত্যার বিরুদ্ধে
আইনের কঠোরতাও অনেক কমিয়া আসিয়াছে। ফ্রান্স এবং
ইউরোপের অন্তান্ত দেশে এখন ইহার বিরুদ্ধে কোন আইন বিধিবর নাই। পূর্ব্বে ইংলতে আত্মঘাতীকে যিনিদীর্গ করিয়া চৌরাস্তার
নীচে প্রোধিত করা হইত। এখন সে আইন নাই বটে, কিন্তু আত্মন
ঘাতীর সমস্ত সম্পত্তি রাজসরকারে জব্দ হইবে এই একটি অতি অন্তার
নিয়ম বিধিবদ্ধ রহিয়াছে; তবে সহাদয় জুরিদিগের কল্যানে এই আইন
কার্যাতঃ প্রতিপালিত হয় না। ভারতীয় দওবিধি অমুসারে আত্মঘাতীর
সহায়কারীর দশবৎসর, এবং যে আত্মহত্যার চেটা করে তাহার এক
বৎসর সশ্রম কারাদণ্ড বা অর্থদণ্ড অথবা উভয়দণ্ড হইতে পারে।

বর্ত্তমান কালে সভ্যতার্ত্তির সঙ্গে সঙ্গে আত্মহত্যা বৃদ্ধি পাইতেছে, সরকারি হিসাব পত্র ছারাই ইহা প্রমাণিত হইয়ছে। বৈজ্ঞানিক চিকিংসক ও সমাজাবদ্গণের মতে আত্মহত্যা উন্মাদেরই প্রকার জেদ মাত্র। যে সকল জাতি সভ্যতম ও সর্বাপেক্ষা বৃদ্ধিমান, ভাহাদের মধ্যেই ইহার বিকাশ বেশী দেখিতে পাওয়া যায়। ইহার অনেক কারণ আছে। ধর্মবিশ্বাসের শিতিলতা তন্মধ্যে সর্ব্ব প্রধান। মানসিক পরিপ্রমই উন্মন্ততার প্রধান কারণ, এবং আত্মঘাতীকে লইয়া স্বীয় পরিবারে, স্বসক্ষে এবং সংবাদপ্রাদিতে যে আন্দোলন উপস্থিত হয়ায়; হর্মলচিত্তের পক্ষে ভাহাই একটা প্রবল আকর্ষণ। সভ্যজগতে বিলাস ও অর্থসম্পদের বৈদ্ধুপ আধিক্য দেখা যায়, দারিজ্ঞার তীব্রভাও ভদম্বরপ। জীবন সংগ্রামের কঠোরতাও তথায় অত্যধিক, অভ্যাম অসংখ্য, বাণিজ্যের অভাবনীয় হাসবৃদ্ধিবশতঃ হঠাৎ বহুলোকের ভাগ্য-বিপর্যায় ঘটয়া থাকে। সভ্যসমাজে অমুভ্ তসমূহও ভীক্ষতম হইয়া উঠে, এবং নানাপ্রকার অভিনৰ সাম্বীক পীজা ও মানসিক

উৎকেন্ত্ৰিকভা জ্মে; মানব সভক কৰ্মশীল, চঞ্চল ও উচ্চাকাশ হয়, স্থতরাং স্বীয় অবস্থায় সম্ভুষ্ট থাকিতে পারে না, নানাবিধ মানসিক অশান্তিতে কালাতিপাত করে। ইত্যাদি কারণ সমূহের সমবায়ে বর্ত্তমান ইউরোপ ও আমেরিকায় আত্মহত্যা প্রবণতা অত্যস্ত বৃদ্ধি প্রাপ্ত , रहेम्राह्म। जेमृन वावारणाम এवः कठात वावामःग्यी ७ मञ्चावम्स রোমান প্রোইকের দার্শনিকযুক্তিমূলক আত্মহত্যায় কোন প্রভেদ আছে क ना. ভাহা পাঠকবর্গ বিচার করিবেন।

এতদিন ঘুরিয়াছি মুগশিশুস্ম প্রতি প্রতিবেশী দ্বারে; -- সাগর কানন, প্রান্ন সরিৎ, শৈল, গিরি প্রস্তবন, তরুগতা বনানীর, উদার গগন, নিত্য নব মেঘরাজি, নিকটে সবার পেরেছি অমৃতকণা, অভয় অপার! হইনি কথনো তৃপ্ত, খুরিতে খুরিতে, কাটায়েছি এতদিন তৃষ্ঠিনী চিতে ! আজি এই মধাদিনে বসিয়া একেলা বিরাট জগৎ স্রোতে ভাসাইয়া ভেল চলেছিম কেশন্ তীর্থে কিছু নাহি আনি; চারিদিকে সিমুবুকে বহু রাজধানী

শক্ষ্য করি' ছুটিয়াছে নান। পণ্যতরী; আমি মোর ভেলা'পরে শুধু খেলা করিঁ' প্রান্ত প্রাণ্ডে প্রান্ত প্রাণ্ডে প্রতি জ্বতে তুরিতে তুরার বহি অমৃত রতন জানিনা ঘুরেছি কেন বিশ্বতিত্বন মৃষ্টিমের ভিক্ষা চাহি; নিয়ে বংশীবেণ্ আজি হ'তে চরাইব শত কামধের হদরের গভীর বিজন সামুদেশে; পূর্ণ পরিত্থি বহি' প্রতি দিবা শেষে তাহাদের উৎসারিত নিত্য স্লেহকীরে আত্মারে করিব পুষ্ট সামান্ত কুটিরে।

শ্রীগঙ্গাচরণ দাস গুপ্ত।

## पूर्यो ७ णश्त शिष्य।

রুনাগড়ের স্থাধপতি লাউদেন গৌড়াধিপের আজার কোন উৎকট তপশ্চরণের জন্ত দূর প্রবাদে গিয়াছেন, ডোম সেনা-পতি কালুর উপর ময়নারাজ্যের ভার ক্রস্ত হইয়াছে। গৌড়েমরের মহাপাত্র, লাউদেনের মাতৃল ও চিরশুক্ত মহামদ এই স্থবোগে বছসংখ্যক সৈক্ত লইয়া গোপনে ময়নাগড় অরব্যোধ করিয়া কেলিলেন;

नगत्रवामिशन मन्पूर्न व्यक्तिष्ठ, जाहाद्रा (ध मःवाम ज्यन् भाष्र नाहे। मिनापि कानूर्य स्तो नथा। वीत्रव्रभी, मि महामानत्र এই ठकांस পাত্র মহামদ ডোম-রমণীর আগমনের আভাষ পাইয়া এক সেট্ স্বর্ণ চুড়ি উপহার সহ তাহার সঙ্গে দেখা করিলেন্ধ এবং অনেক श्रावाञ्च (तथारेरनन-

"কালুকে করিব রাজা, তুমি হবে রাণী।"†

मम्नागरफ् প্রবেশের পথে কেঁহ অন্তরায় না হয়, ইহাই তাঁহার প্রার্থনা। ডুমুণী তাহার জাতীয় ভাষায় যে উত্তরটি দিয়াছিল তাহা আধুনিক সমাজের রুচিদঙ্গত না হইলেও তাহাতে সৎসাহস ও বীরত ছিল। ধনের লোভ দেখাইয়া কে তাহাকে কর্ত্তব্যে বিমুধ করিতে পারিবে ? नशा বীর-সামীর সোহাগিণী, বীরপুত্রের জননী; ইহা इरेड (अर्थक वेशन किर्ण कार्राक मिर्फ भारत ना, मिरे गर्स फेर्फ्स र्हेश्रा नथा। विनन :---

"ধন মোর অতুল জিনিয়া ধনপতি।"

जुम्भी अध् श्रीय श्रकनवर्शित शोत्रित शर्किक नरह, मिर्मन त्राकाः লাউদেনেব ধর্মিষ্ঠ-চরিত্র ও অপূর্ব্ব বিক্রমও তাহার গর্বের বিষয়; त्म दिनामः--

"দেনের প্রভাবে মোর অভাব কিসের ?"

शोर्डियदात्र मश्रेषां किम्ब देननावन नहेश य श्रांत नाहकाद्य विकारमम शालीका करिंद्जिছिलान, मिहेशान यहिया म्याना महिल मधा व्विश्रा উठिन,—

<sup>\*</sup> লক্ষ্মী শব্দের অপভ্রংশ। শ এই এবজের উচ্ভ ছানগুলি মুনিক গাসুলী রচিত ধর্মসঙ্গল কাব্য হইতে वृक्षिक स्रोता । एक कारावानि वजीत शिर्णा-गतिया नेपार वाकानिक कतिएका ।

### "गाडेटमरन थत्राहेव गडेरफ्त हाजा।"

ভাহার হালর শুধু স্বামী ও পুত্রের বীরন্থগৌরবে দৃশু নহে, লখ্যার দিশিণ হস্ত হাভিরার পরিচালনে স্থান ; সে নিজেও বীরস্বামী ও বীয়-পুত্রের সঙ্গে শত্রুর গভিরোধ করিতে দাঁড়াইতে পারে, প্রয়োজন হইলে তাঁহাদেরই সঙ্গে রণক্ষেত্রে সমাধি লাভ করিয়া ক্বভার্থ হইতে পারে। লখ্যার বীরুমূর্ত্তি কবি আঁকিয়াছেন; তাহার মাথায় রণটোপ, তন্মধ্যে মুক্তার থরজ্যোতি বৈচ্ছুরিত হইতেছে—ভাহার কটিতে স্থামন্ধ কটিবন্ধ, অঙ্গে কবচ, এক হস্তে ঢাল এবং অপর হস্তে তীক্ষ অস্ত্র। কবি লিখিয়াছেন সেই যুদ্ধক্ষেত্রে এই ডুমূনীকে একাকিনী ভৈরবীর বেশে দেখিয়া মনে হয়;

''অস্থ্র সমরে যেন উন্মত্ত কালিকা।''

তাহার সঙ্গে সেইস্থানে একটি কুদ্র যুদ্ধের অভিনয় হইয়া গেল।
লখ্যার স্পর্দ্ধিত উক্তি সহ্ করিতে না পারিষা সীতারাম দাঁ প্রভৃতি
করেকজন সেনা তাহাকে আক্রমন করিল;—

यूर्य लथा। फूम्नो कौवरन नाहि छत्र।"

এই অশোভন যুদ্ধ শীঘ্রই শেষ হইয়া গেল। লখ্যা গৃহে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়া কালীপূজা করিতে বসিল।

হহাপাত্র কুটনাতিতে বিশেষ প্রাক্ত ছিলেন; তিনি মধুচক্রে ঢিল নিক্ষেপ করিয়া শীঘ্র উহা অধিকার করিতে পারিবেন, এরপ সন্তাবনা দেখিলেন না। ডোমসৈন্য অপ্রমিত তেজশালী, উহাদের সঙ্গে সক্ষুধ যুদ্ধে আঁটিয়া ভটিতে পারিবেন কি না সন্দেহ, স্কুতরাং কৌশলে রাজ্যটি করায়ত্ত করিবার জন্য ডিদা নামক এক সিদ্ধ-তন্তরক্ নিযুক্ত করিলেন। "ও"এর সঙ্গে "ই"কারের বোগ দেখিয়া পাঠকেয় বেরপ বিশ্বর হইতে পারে, আমারও তাহা অপেকা অর হয় নাই, কিন্তু কি

করিবার আমার কোন ক্ষমতা নাই। এস্থলে পাঠক মহাশয়ের কাছে আর একট কথা বলিয়া রাখি, ধর্ম-মঙ্গল ইতিহাস নহে, ইহা কাব্য, স্থতরাং বণিত বিষয়গুলির কোথায়ও যদি কল্পনাদেবী একটু লীলাখেলা করিয়া থাকেন, তবে তাহা মার্জনীয় মনে করিবেন।

ডিদা চোর অনেক পুরস্কারের লোভে কালীমূর্ত্তির পায়ের ফুল कात्न खुँ जिया विश्रिण हरेन ; कानी पितीय व्याय प्राप्त व्याय ख করিয়া সঙ্গে লইয়া আসিল; ময়নাগড়ে যাইয়া নিজাদেবীকে তথায় व्यवाद्य त्राक्षव कतिए छ्कूम मिल। এक वरमत्त्र मौर्य विष्कृमास्ड मध्यमिनिक हक्तमूथ सामी ७ हक्तमूथी स्त्री भव्यभावत श्रीक निनिष्मम দৃষ্টি বন্ধ করিয়। আলাপ করিতে।ছলেন, সহসা তাঁহাদের চক্ষু মুদ্রিত হইল, হাত হইতে পান পড়িয়া গেল; তাঁতি মাকুর উপর ঘুমাইয়া পড়িল; পোদার কড়ি পরখ্ করিতেছিল, সে ঝুলি হস্তে হেলিয়া পড়িল ;—

> "কুতুহলে রন্ধন করিতেছিল কেহ। উননের উপর অলস হৈল দেহ।। ভোজনে বদিয়া কেহ ভাবে জনাৰ্দন।\* হাতে ভাত পাতের উপর অচেতন ॥"

যথন শত্রু সৈন্য সর্বনাশ করিবার জন্য দ্বারের নিক্ট উপস্থিত তথন একি নিজা! যধন মরনাগড়ের স্বাধীনতার কীরিট লোখে ছ্যমন্ হস্ত প্রদারণ করিয়াছে, তথ্ন অধিবাদিগণের একি নিদ্রা<sup>শ্রে</sup> ক্ষিত্র এই নিদ্রিত পুরীতে একজন অনিদ্র ব্যক্তি ছিল;—

> "कानी, श्रृका करत नथा का समरनावादका निनि पिवा कागत्र निजा नारे हत्क।"

এই নিদ্রিত পুরীর হর্দশা দেখিয়া অসমূত কেশপাশে

<sup>\* &</sup>quot;ভোজনে তু जनार्फनः"।"

উন্নাদিনার মত ঘুরিয়া বেড়াইতে লাগিল। পুরবাসিগণের একি মোহ! তাহাদের সর্বাধ পর-হত্তে লুপ্তিত, ভাগুার অপহত ও জীবন বিনষ্ট হইবার সময় একি মোহ! লক্ষ্যা ঘারে ঘারে ঘুরিয়া ডাকিল, সেই বিপয় মোহগ্রন্থ পুরীর লক্ষ্মীর মত একবার শোভাসৌন্দর্য্যদীপ্ত নগরখানি দেবিয়া অশ্রুপুরিত করুণ চক্ষে লখ্যা কালীর নিকট শক্তিছিক্ষা করিল, সে নিজগৃহে যাইয়া সপ্তিমীকে তাড়না করিয়া জাগাইতে চেন্টা করিল, বলিল, উঠগো, একবার উঠ, রাজা প্রবাসে তিনি আমাদের ধর্মরক্ষক,

"ধর্মারক্ষা করিলে স্থাধিতে হয় ধার।"

কিন্তু সতিনী তাহাকে কুর উত্তর প্রদান করিয়া পাশ°ফিরিয়া শুইয়া পড়িল। উত্তত অশ্রু হস্ত দ্বাপা মার্জনা করিয়া লখ্যা স্বামীর প্রকোষ্ঠে উপস্থিত হইল।

সেনাপতি কালু ডোম স্থ শ্যার স্থ—"হে ময়নাগড়ের ভার-প্রাপ্ত রক্ষক, এই কি ভোমার স্থাপ্তির সময় ? তোমার বহুমূল্য ন্থাস যে অজ্ঞাতসারে শত্রু অপহরণ করিতেছে, একবার উঠ,

> "উঠহে পরাণ ধন অভাগিনী ডাকে । সেন গেল রাজ্যভার সঁপিয়া ভোমাকে॥"

কিন্তু কালু জাগিল না, তথন সুগন্ধ কুষুম ও চন্দন তাহার দেহে লিপ্ত রিয়া লখ্যা ঘুম ভাঙ্গাইতে চেন্তা করিল; আরামে স্থনিদ্রা বর্দ্ধিত ইল। লখ্যা এবার এমন একটা কার্য্য করিল যাহার জন্ত কুসুম প্রাণা ক্লীয় প্রেমিকা তাহাকে ধিকার দিবেন এবং কবিকেও কুটিল ভ্রুভন্তী দেখাইতে ছাড়িবেন না। লখ্যা মিন্ত উপারে কালুর ঘুম ভাজিতে না পারিয়া,—

"বসায় চাপড় গোটা বুকের উপর।" বিশার চাপড়টী বালকের গণ্ডের সংস্পর্শে কোমল হইরা পড়ে নাই, উহা युक्त क्वांक व्यान कवान भक्त । भिन्न ए विश्व क निन्न मिन्न ए ; **এইবার কালু জাগিয়া নিদার জিম চক্ষে স্তার** এই ব্যবহার দেখিয়া— "नाम बिया नथात व्यम्भि धरत वृष्टि।"

লখ্যা তথন অশ্রপূর্ণ চক্ষে স্বামীর পদতলে পড়িয়া বলিল;—

বিশেষ বারতা শুন বিপত্য-সাগর। ১ মুম্না বড়েছে এসে মাছ্যা পাতর। ১২ জাতিকুল সেনের জীবন দিয়া রাখ।"

কিন্তু কালু রাত্রে কুম্বপ্ন দেখিছে—দে উৎসাহহীনভাবে বলিল;—

আজ রাত্রে স্বপ্ন দেখেছি অমঙ্গল। ना गारेव नमद्र ना नद्र वृक्तिवन॥ পিতার প্রভূতা ৬ গুণ পুত্র কিছু পাগু ৪ সাথা ৫ আজি সমরে সাজন করে জাগু॥৬

এই উত্তর শুনিয়া ডুমুনী ব্যথিত হইয়া ছল ছল চক্ষে তাহার দিকে চাছিল। স্বামী কুস্বপ্ন দেখিয়াছেন তথাপি, তাহাকে যুদ্ধে পাঠাইতে যে हारह, वक्रीय त्रभवी महत्व मि शायां वाशा शहरव ; वशा मह भाषानी—ं त्य यांभी व पिटक ठाहिया এकवात मीर्घ नियाम छाड़िया विनन,

"এত দিনে হায় লাথ হইলে অবোধ।

ना क जिल्ला (मरमज नवन १ भिष्टिमाध॥

कामू नाष्टिमत्नत्र मिक्नि रुख, हित्रविश्वंख जरूहतः, जाक जारात्र এই

১ বিপান্ত।

২ সাহদ্যা পাতর -- মহামদ পাতা।

७ अञ्चा=वीत्रष।

<sup>8</sup> भाष=भाग्र वा भा'क्।

<sup>&</sup>lt; नाषां = कान्त्र প्<u>ख।</u>

७ काथ - मुन्।

१ अवस क्षेत्र ।

ব্যবহারে ক্ষ হইরা লখ্যা সজল চক্ষে স্থামীর গৃহত্যাপ্ত করিল। পুঞা সাথা খীর বোড়েশী স্ত্রী সরুজা ডুম্শীর কক্ষে আরামে ঘুমাইতেছিল, ব্যথিতা লখ্যা ঘাইরা ভাহার দ্বারে "হার হার ক্ষিত্র কালিতে লাগিল; ভাহার কালা শুনিয়া পুত্রবধু সাথাকে জাগাইয়া দিন

শগা তুল পরাণ নাথ ডাকেন গৃহিণী।
সাথা জাগিয়া উঠিয়া দেখিল, লখ্যা গৃহ দারে পড়িয়া আছাড়ি বিছাড়ি
কাঁদিতেছে—সে পুত্রকে দেখিয়া বলিল;—

"সেন গেল হাকণ্ডে সেবিতে সনাতন।\*
হাতে হাতে ময়না করিয়া সমাপন॥
বল করে মাহুন্তা বেড়েছে এসে গড়।
তোর বাপ নিদ্রা যায় থার্মীর উপর॥
নিমকের চাকর না রাথে ধর্মবল।
এই পাপে আমার হবেক অমঙ্গল॥
মিটাও মায়ের তুমি মনের যাতনা।
সমর করিয়া রাথ সেনের ময়না॥"

সাধার প্রশাস্ত ললাট মাতৃ আশীষ লাভ করিয়া বরেণ্য হইয়া উঠিল;
লখ্যা তাহাকে নিজ হত্তে সাজাইয়া দিল,—ভাহার গলায় হরিপদ চিত্রিত
পদকথানি জ্বলিতে লাগিল, ত্ই স্ত্র স্বর্ণহার ভাহার কঠে বিলম্বিত
হইল, বাছতে বাজুবন্ধ শোভা পাইল, কটিবন্ধ ল্টুসনিবদ্ধ হইল, ঢাল
অসি ও ধহু:শর লইয়া যখন সে বহির্গত হইল, তথন ভোম সেনাগণ
দর্শবনি করিয়া ভাহার পশ্চার্তী হইল, জ্বো অগ্রে শিলাদার
শিল। স্করিয়া যাইতে লাগিল।

कननीत्र भष्ध्वि नहेत्रा नाथा कानीयिक्ति अत्वन कत्रिन, नाथा

<sup>+</sup> त्मन (माउत्मन) हाकल नामक द्यारन धर्म श्रृका क ब्रिट निवादहर ।

কালীর প্রিয় পূত্র, কিন্তু মন্দির মধ্যে আন্ধ একি স্বপ্ন! একি বিধার দর্শন! কালী করালী হুইন্ধুন্সাজ সাথাকে বৃদ্ধে ষাইতে মানা করিলেন; আন্ধ বৃদ্ধে গেলে জ্বাল প্রাইবে—কালার এই আদেশ। মাতৃকরঅন্ধিত আশীষ ক্রিছের্ড মধ্যে সাথার ললাটে মান হইয়া গেল। কিন্তু
সাথা বৃদ্ধকেত্রের জ্বালি সাজিয়াছে, প্রাণ রক্ষার উদ্দেশ্বে সে গৃহে ফিরিডে
পারিবে না। ক্রিলীর আদেশের প্রতি ক্রক্ষেপ খা করিয়া,—"সাথা
বলে প্রাণ দিব সেনের কারণে।" আর কোন কথা নাই, লখ্যার যোগ্য
পূত্র বৃদ্ধে গমন করিল।

महाপाज সাথাকে প্রলোভন দেখাইতে লাগিল;

"বাজা করে জালুকে রাখিব রাজা দিয়ে। তুমি নাতি থালিবে রাজার বেটা হয়ে।"

সাধা বেশী কথা না বলিয়া মহাপাত্রকে বধ করিবার জন্ত ধর্ংশর ভূমিয়া লইল। এই বল্প-ভাষী, পরাক্রান্ত বীর মুবক বহিনিধার ন্তার ক্রেইনজ্রের মধ্যে যাইয়া পড়িল। কালী দেবার ক্রক্টি, পথে যে সকল জন্ত চিত্র দেধাইয়াছিল তাহা, মাতার উত্তেজনা,—প্রভৃতি বিবিধ ভাবের স্থৃতি তাহাকে নৈরাশ্ত-মিশ্র-বারতে ফুলিঙ্গবং জালাইয়া ভূমিল; যে মরিবে জানিয়া মুদ্ধ করে—তাহার সম্মুথে কে দাড়াইবে গ লখারে বীর পুত্র একাকী রামসিংহ, হাসেন হুদেন প্রভৃতি বীরগণকে পরান্ত করিয়া সোৎসাহে শক্র সৈশ্ব বিধ্বন্ত করিতে লাগল। তাহার সঙ্গারা সেই অপূর্ব্ধ বারত্বের ফুরুণে মাতিয়া গেল; লখার পুত্র বুদ্ধ করিতেছে, আল ময়নাগড় অধিকার করিবে কেণ্? কিন্তু সহসা চূড়া লামক মহাপাত্রের এক সেনা সাথার নাভি নিয়ে এক তাজ্ব শ্ল মিক্ষেপ করিল, সাথার অন্ত্র বাহির হইয়া পড়িল, কিন্তু তথাপি অমিততেজা মুবক অন্ত্র, হারা চূড়ার মাথ। কাটিয়া নিকে অচিরাৎ রণধূলিমন্তিত

তা, পোষ, ১৩১০] पूर्नी ও তাহার পতিপুত্র।

আসিয়া তাহাকে ধরিল, ভগ্নীপতির দিকে সজল চকে চাহিয়া সাখা বলিল—

"বাপাকে জানায়ে। যেয়ে আমাক বিষয়। বল ভাধতে সেনের ধার এই ত সমীয়া।" মাতাকে বলিতে বলিল,

> "জঠরে ধরেছ বহু পেয়েছেন ছঃধ! না পাত্র শুধিতে ধার বিধাতা বিমুখ॥"

আর স্ত্রীর জন্ত শেষনিদর্শন প্রদান করিয়া সাখা প্রাণাস্ত সময় হরিহরের কণ্ঠ লগ্ন হইয়া বলিল—

"কর্ণমূলে ক্লফ নাম হরি নাম কর।"
সাধার প্রাণ বায় বাহির হইয়া গেল। হরিহর তাহার মন্তক কাটিয়া
লইয়া পুত্রের প্রত্যাগমন তৃষিত লখ্যাকে উপহার দিল। এই বক্তপাতৃ
সদৃশ হর্ঘটনায় মাতৃহদয় বিদীর্ণ হইয়া গেল; অক্রচক্ষে শোকের মানচহবি লখ্যা সাথার মন্তক হন্তে তুলিয়া লইল; যে মুথে সে জন্ত দিয়াছে,
য়াহার হাসি দেখিয়া পৃথিবাতে সে স্বর্গের স্বপ্ন দেখিয়াছে, সেই সুখ
খানির হুইটা নিশ্চল চক্লুর উপর শোকাচ্ছয় বিবর্ণ সেইলুর দৃষ্টি আবর্ধ
রাখিয়া লখ্যা স্তির হইয়া দাঁড়োইয়া রহিল, তৎপর অক্রচক্ষে কালী
দেবীর পাদপদ্ম তাহা রাখিয়া স্বামীর কক্ষে পুনরায় উপস্থিত হইল।
কালুর নিজা ভাঙ্গিতে এবার বিলম্ব হইল না, বীর পত্নী যথন সেই
মর্শ্রবিদারক সংবাদ বলিয়া স্বামীকে কহিল—

"এথনও দেনের ধার ধারি অভাগিনী। তবে ভূষি সমরে সাজন কর তুমি॥"

তথন ক্রতপাদকেপে কালু তাহার স্বর্ণটোপ মাথার পরিয়া তীক্ষ অসি ও ঢাল লইয়৷ যুদ্ধে যাত্রা করিল; পুল্ল,শোকে উন্মন্ত হইয়া কালু বুদ্ধ করিতে লাগিল, কুদ্ধ ব্যাত্রের স্থায় সে.মহাপাত্রের সৈম্ভ বিনষ্ট করিল, হাসন, ছসেন হস্তীর উপর, হইতে আকট হইয়া ধরাশায়ী হইল,
—কেহ তাহার সমূথে দাঁড়াইতে সাহসী হইল না; রাজ্যধর ও রায়ধর
রণক্ষেত্র হইতে পলায়ন করিল। মহাপাত্রের সৈন্তাগণ ডোমদিগের
হস্তে সম্পূর্ণরূপে পরাস্ত হইল।

সেই যোর যুদ্ধের দিবাবসানে পুত্রশোকদয় হৃদদে রণপ্রাম্ভ কালু
সঙ্গীগণ হৈতে দুরে এক বৃন্ধতলে একাকী বসিয়া বাথিত প্রাণকে
সান্ধনা করিবার চেন্টা করিতেছিল। রণজয় করিয়া রণজয়ীর আজ
আনন্দ নাই—সাধার মুথধানি ভাহার হৃদয়ে শেলের মত বিদ্ধ
হইয়া আছে। যুদ্ধের সময় সেই শোক ভাহার বাহুতে শক্তি দিয়াছিল
—এখন সে অবসয়; জীবনে বীতম্পৃহ, কালু হরিৎছেদ একটি দীর্ঘ
ভরুমুণে বসিয়া উদ্ভাস্থভাবে কি চিস্তা করিতেছিল ?

ঠিক এই সময় অপমানিত মহাপাত্র শিবিরে প্রত্যাগমন করিয়া কৌশলে কালুকে হত্যা করিবার উপায় উদ্ভাবন করিতেছিলেন; আহিরাং আদেশ প্রচারিত হইল কালুর মন্তক যে আনিয়া দিবে, মরনার রাজচ্ছত্র ও রাজটীকা তাহার প্রাপ্য।

কাষা (কা্মদেব) নামক এক ব্যক্তি উপস্থিত হইয়া করজোড়ে বিলিল—"হজুরের হকুম হইলে আমি কালুর মাথা আনিরা দিব।" মহাপাত্র তাহাকে বিশেষরূপে সম্বর্জনা করিলেন। কাষা নাপিত তাকিরা নিজের মাথা মুঞ্জন করিয়া তাহাতে ঘোল ঢালিল এবং রাজ্যারে অপমানিত ও লাস্থিত হইলে যে প্রকার হয়, সেই শোচনীয় অবস্থার ছন্মবেশ স্বীকার করিয়া বৃক্ষমূলে আসীন চিস্তান্থিত কালুর নিকট যাইরা কাঁদিতে লাগিল। কালু কারণ জিজ্ঞাসা করাতে বলিল—"মহাপাত্র তাহাকে বিনাদোষে অপমান করিয়া শিবের হইতে ভাড়াইয়া দিরাছেন; কাষা এখন নিরাশ্রয়—রাজনৈন্য-অমুস্তে এবং কালুর আশ্রের প্রার্থী। কালু তেখনই তাহাকে 'আশ্রর প্রাণান করিছে প্রাণান করিছে

প্রতিশত হইল, শোকে কালুর চিত্ত সেই সুহুর্তে কুমুম কোমল হইয়া পড়িয়াছিল; দে একজন ব্যথিত ব্যক্তিকে পাইরা তাহাকে প্রাণ ভরিয়া আলিঙ্গন দিয়া বলিল, "এস ভাই কিসের কষ্ট, তুমি যাহা চাহিবে, আমি তাহাই দিয়া মোমার ছঃথ দুর করিতে চেষ্টা করিব 🗥 काषा विनन- " ाहे कि ठिक, आिय याहा हाहिव, जाहाहे मिया कि आयारक माखना कतिरव ?" कानू প্রক্রিশ্র তি পুনরায় উচ্চারণ করিল; তথন বিশ্বাদন্ন কামা বলিল, "কালু আমি তোমার মাথা চাই।" শঠ কাম্বা শাস্ত্রের নান। উদাহরণ প্রদর্শন করিয়া সত্যরক্ষার জন্ম আত্ম বিদর্জনের আদর্শ কালুর মনে জীবস্ত করিতে চেষ্টা করিতে লাগিল; কিন্তু কালু দে সকল কথা শুনিতে পায় নাই, একবার যাহা বলিয়াছে, দে তাহার অন্তথাচরণ করিতে পারিবে না, দে জীবনে তাহা ভগবান এ कि कतिरम ?" এই বলিয়া কালু ভিনবার 'ক্বফ' 'ক্বফ' বলিয়া চীংকার করিয়া উঠিল; জীবনের প্রতি তাহার উপেকা জিমিয়াছিল, দৃঢ়ব্রত তাপদেঁর স্থায় জীবন পণে সত্যরক্ষা করিবার জন্ত कानू वाजामत्म भूक् भूथ इहेम्रा উপবেশন क्रिन, उथन मम्रापिरी একটা মাত্র নক্ষত্রের উজ্জ্ব সাশ্রুনেত্রে নিয়ে দৃষ্টি করিতেছিলেন, তাঁহার অসমূত তিমিন্ন-অঞ্লখানি ময়নাগড়ের প্রাসাদাবলীর উপর লুষ্ঠিত ছইতেছিল; পশ্চিম আকাশের লোহিত শিখা মুছিয়া ফেলিয়া প্রকৃতি দিগন্ত মদীলিপ্ত করিয়া দিয়াছিলেন; বীরাদনে আদীন নিশ্চল সতাত্রত কালু ঘাতকের সালিধ্যে বদিয়া প্রাণাস্ত সময় এক্সঞ্চ বলিয়া ডাকিতেছিল, এদিকে সন্মুথে গঙ্গার তরঙ্গে খেত ফেন-চূর্ণ অশ্ব বারি-রাশিকে কি এক অম্পণ্ট মহিমা-মণ্ডিত করিয়া ক্ষণে প্রকাশ এবং পর कर्ण नम् भारेर अधिन। कानूत भित्र अथनरे काचात्र रूख छिन्न रहेर्द, अरे ममन देववाद मथा। कम जानिए गरिया मृत रहेएक दिवस माजक .

দি শাণিত করিতেছে ও মুদিত চকু কালুর সাগ্নিধ্যে রক্তলোলুপ পশুর গায় ভীষণভাবে প্রতীকা করিতেছে ;—

> "চপলে চলিল রামা চঞ্চল চরণ। বাতাদে প্রাড়ল এসে বাঘিণী যেমন॥"

हमा आवाधिका পद्मोटक (मधिया कानू विनन-"मृङ्गकारन তোমाटक मिथिनाम, आमात वर्ष मोजागा " नथा विनन "काम हात काशा, সই তোমার শিরশ্ছেদ করিবে, আর আমি তাহাই দাঁড়াইয়া দেখিব! এখনই আদেশ কর, আমি উহার মাথা কাটিয়া তে।মার চরণে উপহার मि।" कानू भीद्र शोद्र विनन "अन नथा। आगि প্রতিশ্রত হইয়াছি, উহাকে बाबात बाथा দিব, এই ছার बाथात कि मूना! यनि मट्डात जन्म मिटि পात्रि তবেই ইহার মৃশ্য—ना হইলে ডোমের মাথা স্পর্শ-रियागा नरह। जूमि बोत्रभन्नी, সর্বাদা আমাকে সৎপথে প্রবভিত করিয়াছ, আজ সত্য রক্ষার পথে দাড়াইও না; অগ্নির স্থায় পুল্রশোব আমাকে দগ্ধ করিতেছে। শ্রীহরির উপর নির্ভর করিয়া আমায় পেষ বিদায় দাও।" লখ্যা নিশ্চল পাষ্যুপের মত স্বামীর কথা শুনিল,— তাহার একটা কেশাগ্র নড়িল না / তাহার হদয়ে যে প্রবৃত্তি জাগিয়া উঠিয়াছিল, কে যেন সজোরে সেই প্রবৃত্তি মৃষ্টিবদ্ধ করিয়া রাখিল: যে व्यक्त देखिन रहेमा हक्षाख्य वामित्व हारिटकिन वाश वर्षम्य পৌছিতে পারিল না , বিহাতের মত যে থর রোষদীপ্ত কথা জিহ্বাঞে সুটিভে চাহিতেছিল, কে যেন 'তিষ্ঠ' উচ্চারণ করিয়া সেই জলস্ক ভাষার গতি রোধ করিয়া দাড়াইল; আশীর্ষ দেহযষ্টি ঘোর চাঞ্চলো কম্পনোশুৰ, কিন্তু লখ্যা অচঞ্চল প্রস্তার বিগ্রহের ক্রার ভূষিজ্ঞাব পরিগ্রহ করিয়া দাঁড়াইয়াছে। 'সে নির্কাক, তুবার-স্তব্ধ বিষ্ণৃতায় चीज চকে দাঁড়াইয়া দেখিল, ঘাতক ধ্যান-নিম্পন্দ কালুর মন্তক কাটিয়া क्षिण। काश्वा मिट यसक किशा यहाभारणक निके छू छित्रार्ड, जात्र

, লখার ধৈষ্য শেষ হইল, পাষাণ-ক্ষী।
ক্ষিয়া উন্মাদিনা হইয়া ভীষণ শক্তিত ছুটিয়াছে—লখ্যা স্থামীহস্তার
পশ্চাতে চলিল;—

"তাড়িয়া ধরিল লখ্যা সাপিনী যেমন। প্রলয় প্রহার করে পিঠে যেন পুড়া। অমনি আছাড়ি ভূমে আন্ত করে গুড়া॥"

কাষাকে হত্যা করিয় লথাা গৃহে ফিরিল, স্বামী-পুজের মন্তক দেখিয়া তাহার হৃদয় বিদীর্ণ হইতে লাগিল, সে চক্ষের কজ্জল, মাথার সিন্দুর মৃছিয়া ফেলিল; শাঁখা ও স্থরক বস্ত্র ত্যাগ করিয়া অনাথিনী বেশে কাদিতে কাদিতে সেই গৃই প্রাণাধিক মন্তক লইয়া লাউদেনের য়াজ প্রাণাদে উপস্থিত হইল। রাণীগণ একান্ত গৃঃখিত হইয়া সমন্ত বৃত্তান্ত জ্জ্ঞাসা করিলে স্বামীপুজের মন্তক দেখাইয়া লখ্যা বলিল,

"পতিপুত্র প্রাণপণে পরিশোধ করেছে লবণ।" "মহাপাত্র ময়নাগড় অধিকার করিবে, আমাদিগের যাহা সাধ্য করিয়াছি, ঠাকুরাণীগণ এখন যাহা ভাল; আপনারা তাহা করুন।"

এইমাত্র বলিয়া নিরাশার প্রতিমূর্ত্তি লথা। খাশানসদৃশ স্বগৃহে প্রত্যাবর্ত্তন করিল।

এই ডোম পরিবারে যে সত্যনিষ্ঠা, যে কর্ত্তব্য বুদ্ধি, যে আছা-ত্যাগের গৌরব দৃষ্ট হইতেছে, ধর্মমঙ্গল কাব্যে তাহার শেষ শিথার আলোটুকু থেলিয়া বাল্ললা দেশ হইতে অস্ত গিয়াছে।

शिहीदनभठत (मन।

## नातांश्री।

#### मश्रम श्रीतराष्ट्रम ।

তাবিলেন বিলয় করিলে ঘরের মায়া ত্যাগ করিতে পারিব না।
তথন রাণী প্রদত্ত মোহর কয়টী গণিয়া দেখিলেন। দেখিলেন পাঁচশত,
মুখে তাঁহার হাসি আসিল। বলিলেন, "মৃত্যুসোধের প্রবেশদার সমীপে
আসিয়া রাণীর রূপায় আমি ধনী হইলাম।"

বাস্তবিক রতনের এত ধনে কি হইবে ? পথে ইহার শতাংশের একাংশও প্রয়োজন হয় কিনা সন্দেহ।

পথে বাহির হইলে. তথন কোনও ব্রাহ্মণ অতিথির জন্ধাভাব ঘটিত না। একবার "ভিক্ষাং দেহি" বলিয়া হিন্দুগৃহস্থের দারে দাঁড়াইলে, গৃহস্থ রাজোপচারে তাঁহার সেবা করিয়া আপনাকে ধন্য জ্ঞান বরিত। যদিই বা অল্লের জন্য অর্থ বার্যের প্রয়োজন হইত, সামান্য থরচেই তাহা নিষ্পার হইত। তথনকার দ্রবাাদি আজি কালিকার মত হর্মালা ছিল না।

রতন থলিয়ার ভিতর ১ইতে পঁচিশটী মোহর গ্রহণ করিলেন।
বাকী মোহর একটা থলিয়ার মধ্যে পুরিয়া জুনিয়ার মাকে ডাকিলেন।
জুনিয়ার মা বহুকাল রতনের গৃহে চাকুরী করিতেছে। সকলেই চলিয়াগিয়াছে, কিন্তু সে আর ব্রাহ্মণকে ছাড়িয়া যাইতে পারে নাই।

জুনিয়ার মা আসিলে রতন থলিয়াটী তাহার হাতে দিবার উন্যোগ করিলেন, বলিলেন, "ইহা তোর কাছে রাথিয়া দে।" ত্রাহ্মণ চির্নিমই রহস্ত-প্রিয়। রহস্ত করিবার অবকাশ পাইলে, তিনি প্রায়ই প্রলোভন ভাগে করিতে পারিতেন না। জুনিয়ার মা থলিয়ার মৃর্ত্তি দেখিয়া অগ্রাহ্য করিয়াই হাতে লইতে গেল। মুহূর্ত্ত মধ্যে হস্তচ্যুত হট্য়া সেটা মাটিতে পড়িয়া গেল। অপ্রতিভ হইয়া বৃদ্ধা ব্রাহ্মণের মুখের পানে চাহিল।

রতন হাসিয়া বলিলেন, "উহার ভিতরে মোহর আছে, যত্ন-পূর্কক রাধিয়া দে। আমি তীর্থপর্যাটনে বাহির হইব। যদি ফিরি, ভিবে আমাকে ফিরাইয়া দিস্। না ফিরি এ সমস্ত তোর হইল।"

কথাটা শুনিবামাত্র বৃদ্ধার মাথার বেন আকাশ ভাঙ্গিয়া পড়িল।
"না ফিরি" এরূপ কথা সে ব্রাহ্মণের মুথে কখনও শুনে নাই। শুনিবার
প্রত্যাশাও করে নাই। অনেক দিন সে ব্রাহ্মণকে ঘর ছাড়িয়া অন্যত্ত্র
যাইতে দেখিয়াছে, কিন্তু সে জানিত আগের দিন ফিরিতে পারিলে,
ব্রাহ্মণ সহন্ত্র প্রলোভনেও পরদিন গৃহের বাহিরে থাকিতে পারিতেন না।
ব্রাহ্মণের কুটারপ্রিয়তা সে যত বৃঝিয়াছিল, আর কেহ সেরূপ বৃঝে
নাই।

বিশেষতঃ ব্রাহ্মণকে দে বড়ই ভক্তি করিত। অর্থ-প্রলোভনে সে পণ্ডিতজীর গৃহে দাসীত্ব কিব্তি না। ছইবেলা এক মুঠা করিয়া আহারই তাহার পক্ষে যথেষ্ট ছিল।

আহারান্তে নির্জনে বসিয়া যে সময় রতন ধর্মগ্রন্থ পাঠ করিতেন, তথন কেবল জুনিয়ার মা তাঁহার নিকটে বসিয়া ভক্তিগদ্গদ হইয়া নীরবে অশ্রবর্ষণ করিত। সেই জুনিয়ার মা ব্রাহ্মণের মুথে প্রথম এই "না ফিরি" কথা শুনিল।

পদতলে মোহরের থলিয়া পড়িয়া রহিয়াছে, দরিদ্রা বৃদ্ধা ভাহার দিকে লক্ষ্য করিবার অবকাশ পাইল না। বিশ্বিত নেত্রে রতনের মুখের পানে চাহিল, বলিল—''তুমি কি আর আসিবে না ?"

্রভন। বাঁচিয়া থাকি, আসিব।

ः वृक्षा। वृक्षिटाकि, जूमि श्रात्र व्यामिरकाः।

রতন। বোধ হয় আরু আাসতে পারিব না। বৃদ্ধা। তাহ লৈ আমার উপায় কি হবে?

त्रजन थलियात मूथ थूलिया तृकारक भारत खाल (मथारेएन। विनित्न-"এই সম্পত্তি ভোরই হইল। ইচ্ছামত ব্যবহার করিব।"

মোহরের মৃত্তি দেখিয়াই বৃদ্ধা শোকতাপ ভুলিয়া গোল। থালয়ার: ভিভর হইতে গোটাকতক মুদ্রা বাহির করিয়া নাড়িয়া চাড়িয়া দেখিল।

মুহুর্ত্তেই জুনিয়ার মা নিজের অবস্থার পরিবর্ত্তন উপলব্ধি করিয়া लहेल। मूर्खिमर्था जाहात वाँ विवास हेक्का वनवजी हहेगा छेठिल। সে ভাবিল--'পণ্ডিভজী ভ ঘর ছাড়িয়া চলিল, আমি ত পারিবনা। তথন, যাহাতে এস্থানে চিরদিন স্কুস্পরীরে এই সম্পত্তি ভোগ করিতে পারি, এই সময়ে তাহারও একটা ব্যবস্থা করিয়া লই।" এই ভাবিয়া সে ব্রাহ্মণকে বলিল "ধন ত দিলে। কিন্তু আমার থাকিবার ব্যবস্থা किशिल कि ?"

রতন তাহার মনোগত ভাব ব্ঝিয়া বলিলেন, "—কেন ! এই ঘরেই থাকিবি। আমি এহানে যাহা যাহা রাথিয়া যাইতেছি, সমস্তই ভোর হইল।"

बुका। थारेव कि १

রতন। থাইবার ভাবনাই যদি ভোর রাথিয়া ষাইব, তবে কিসের জক্ত এত মোহর দিলাম। যথনই অভাব বৃঝিবি, তথনই মোহর जानाहेवा थाहेवि।

वृक्षा अवांक इंडेया बाकारणंत्र मूरथत्र शास्त्र हाहिल। बाकाण वरल कि ! कुछ इरे मूठी ठाउँ एत क्या भारत काकारें ए रहेरत ! तुका दित कतिन, পণ্ডिडको পাগन হইয়াছে।

म পূर्क जानक পাগ्न मिथियाहि। পাগन इहेरन लाक्त्र মুখনোধের ভাব কিরূপ নবিক্বত হয়, তাহাওঁ সে অনেফবার লক্ষ্য করিয়াছে। তাই ুসে স্থির হইয়া, গ্রাক্ষণের মুথ চোথের পরিবর্ত্তন অমুসন্ধান করিতে লাগিল।

রতন বুদ্ধার মুথের ভাব দেথিয়া হাসিলেন। বুঝিলেন এত অধিক ধন পাইয়া বুড়ী বড়ই বিপদে পড়িয়াছে। হাসিতে হাসিতে ভিজ্ঞাসা कत्रिलन—"शै कत्रिया मूर्थत्र পान कि पिथि छिन् ?"

বুদ্ধা তবু কথা কহে না। সে অনৈক চেষ্টাতেও ব্রাহ্মণের মুখে চক্ষে উন্মন্তভার লক্ষণ খুঁজিয়া পাইল না। যে হাসি যে কথা বৃদ্ধার व्यनाञ्च मनत्क व्यत्नक ममग्र श्रमूल कत्रिग्नाष्ट्, व्याक्ति । त्यांकारान মুথে সেইরূপ স্নিগ্ধ মধুর হাসি দেখিল, মৃত্ মধুর বাক্য শুনিল। বৃদ্ধা এবার কাঁদিয়া ফেলিল। বলিল—"তুমি কি সভ্য সভ্যই ফিরিনে না ?"

রতন। ফিরিবার ইচ্ছা আছে। তবে অনেক তীর্থে ঘুরিব— অনেক বয়স—यिन মরিয়া যাই!

পণ্ডিভজীর মরণের কথা চিন্তা করিতেও জুনিয়ার মার প্রাণ काँ भिष्ना डेठिन। विनन "ना, यमन कित्रमा भात कित्रिमा आहेम।"

त्रजन। (म পরের কথা। এখন এই মোহরগুলি তুই গ্রহণ কর্। এ গুলি তোরই হইল জানিয়া রাথ্।—তুই ইচ্ছামত ইহার ব্যবহার कतिवि।

वृक्षः। जूभि करव त्र अना श्रेरव ?

त्रजन। करविकृषाक— এथनि।

এই বলিয়াই ত্রাহ্মণ গৃহমধ্যে প্রবিষ্ট হইলেন। জুনিয়ার মাও त्याहरतत थिवा न्काहरू हिनमा राजा।

वाकार । वाहित्र वात्रिक विवय श्रेण ना। वाहित्र वानिया (मिर्णिस क्विमात्र या हिलमा शिवारह। घरत्र नक्या मिवात्र कथा, প্রতিদিন शृष्टी পরিস্বার রাখিবার কথা, ভুলদীমঞ্চে জল দিবার কথা,—আরও ছই চার कवा, यादेवात शूर्व्य जाशास्क जेशासण विशा यादेवन, अवेषक वृद्धारक

নার একধার ডাকিলেন। উত্তর পাইলেন না। আবার ডা<sup>ক্রে</sup>ন। वाणी জनमूत्र विनिन्ना (वाध श्रेम। आत জूनिन्नात मा'त र्रिका महिन ना।

তথন মেহের কয়টা গেঁজিয়ার মধ্যে পুরিয়া কোনতের বাধিকে। ভারপর একটা কাপড়ের পুঁটুলি, একটা কমণ্ডলু, এব'থানি মুগার্দ্ধ ও একগাছে বাঁশের লাঠা লইয়া গুর্গাম্মরণ করতঃ ব্রাহ্মণ বছাদনের প্রিয়-দকা গৃহটীকে বুঝি জন্মের মত পরিত্যাগ করিলেন!

#### व्यक्षेम পরিচ্ছেদ।

बाक्रा घरतत्र मर्था अर्वि कात्रल, क्रिकात्र मा मर्ग कतिल, "এই व्यवकार्य भारत खना नुकारेया वािम।" তাरात रेव्हा हिन, किहून्द्र म बाक्रालंत मक्न मक्न याहरव। अमिक् त्रामोक्न धन भारेबार्छ, ওদিকে অমূল্য রত্নদৃশ পণ্ডিভজীকে সে হারাইতে বসিয়াছে। আনন্দ अशान कत्रित कि काँनित वृक्षा श्रित कत्रिक भात्रिकिन न।। তাই দে মনে করিল, মোহর কয়টা থাপাততঃ একটু নিরাপদ স্থানে दाथिया व्याभि। दाक्षिया वाकारणद मरक यखनूद भादि याहै। किदिया, দেবতায়ও না জানিতে পারে, এমন স্থানে মোহর লুকাইয়া রাখি।

वृकात मक्त कार्या পরিণত হইল না। ধন লুকাইয়া রাখা সে यक्ती महक मन्न कत्रियाहिन, कार्या काश्रत विभन्ने कित्राहिन। व्यथरमरे तम निष्मद्र चद्र व्यदम कित्रमाहिन। किन्द तमथान तम यत्नामक सान थूँ किया भारेण ना। चरत्रत এक कार्ण सूँ रहे आथिवात क्रकी कामा हिन। वज काथा आर्थिक मार्म ना क्रिका, बुद्धा मिहें जानारीय छिख्य हरेए या किहू हिन वाहिय कतिया नरेन। भद्य, व्यक्ति बीद्र, शांष्ट्र चद्रव. जिलद्वत शिशीशकांति शर्याञ्च जानित्ज भारत, बहेन्नभारत साहरतत्र बनियानि जाहात्र जिन्द कर कतिन --- অভি সাবধানে মুথে সরা চাপা দিল। তবু যেন মন্ত্রত হইল না।
ভাহার বোধ হংল যেন মোহরগুলা দেখা যাইতেছে। ভ্রম মনে
করিয়া সে একবার চক্ষু মুছিল। দেখিল মোহরগুলা জল জল
করিয়া জলিতেছে।

এমন সময় শিশুতজীর কথা তাহার কাণে গেল। কি কারবে স্থির করিতে না পারিয়া ভাড়াতাড়ি ঘরের মধ্যে, যেথান হইতে পারিল সেই থান হইতেই কাঁখা, কাপড়, থলিয়া মুগচর্ম শেষে ইাড়ি, ভাঁড়, মাটা থেখান হইতে যাহা আনিতে পারিল, তাই দিয়া জালা ঢাকিতে লাগিল। কিন্তু যতই বৃদ্ধা মোহরগুলাকে আবৃত করিবার চেষ্টা করে, ততই সেগুলা যেন অধিকতর উজ্জ্ল হইয়া তাহার চোথের উপর আসিয়া পড়ে।

ক্রমে জানালা, দেওয়াল, দরজা, ঘরের চাল—বুড়ীর চক্ষে সমস্তই বেন স্বাক্তি, সমস্তই বেন ফাঁকা দেখাইতে লাগিল। ভয়ে ভয়ে বৃদ্ধা মোহর বাহির করিল। তুইহাতে বুকে চাাপুয়া বাহিরে আসিল। দেখিল পণ্ডিতজী চলিয়া গিয়াছে।

সন্দেহ দূর কারবার জন্ম হহ একবার সে "পঞ্জিজী—পণ্ডিজনী" বলিয়া ডাকিল। উত্তর পাইল না। ব্রাহ্মণের ঘর খুঁজিল। দেখিতে পাইল না। পা টিপিয়া টিপিয়া দরজার কাছে গেল। সাবধানে তথু মুখটা বাহির করিয়া স্বর্গরেখার তারস্থ পথের দিকে দৃষ্টি নিজেপ করিল—ষভদূর দেখা যায় দেখিল। দেখিল রাজপথে জনপ্রাণী নাই। বৃদ্ধা দার বন্ধ করিয়া দিল।

বুদা এইবারে যেন কওকটা নিশ্চিত হইল। ভাবিল, মনোমভ বান সদান করিয়া এইবারে মোহরগুলিকে লুকাইতে পারিব। বাদ্ধানের গৃহের সন্থাথে একটা তুলনা যায়। ভাহার নিক্টবর্তী আনকটা ভান বাধান। সেধানে বসিলে, বাক্ষীর সমন্ত অংশই দেখিতে প্র

পাওয়া যায়। বৃদ্ধা মোহরগুলি ,ব্রাহ্মণের ঘ্রের মধ্যে রাথিয়া সেথানে विमिन। विमिन्ना कैंक्तिवात्र উত্যোগ-আয়োজ ः প্রবৃত্ত হইল।

বুদ্ধার ত্রিসংসারে কেহ ছিল না। জুনিশা বলিয়া একটীমাত্র কন্তা ছিল। সেটা বিশ বৎসর পূর্বে মার, পড়িয়াছে। স্নতরাং এত ধন লইয়া বুদ্ধা কি করিবে ? তাই আজ বিশ্ বংদর পরে দৈ কন্তার অভাব অনুভব করিল। বাঁচিয়া থাকিলে জুনিয়া এক দলে এভ মোহর দৈখিতে পাইত। মোহরগুলি দেখাই বুদ্ধা চরম উপভোগ মনে করিয়া-ছিল। জুনিয়া বাঁচিয়া থাকিলে ভাহাকেও স্পর্শ করিতে দিত না। ভথাপি বৃদ্ধার জুনিয়াকে মনে পড়িল। এবং সেইজগু যেটুকু চকুজল নিক্ষেপের প্রয়োজন, তাহা সম্পন্ন করিতে সে কিছুমাত্র ক্রটী করিল না। निकि इहेट अकथाना शिं ए बहैया अकथाना कैं। शाद्य मिया, वृष्टी কাদিতে বসিল।

किन्छ विधाना नाहारक काँमिटन मिल ना। काँमिवात जैशक्यो করিয়াছে মাত্র, এমন সময় বুড়ীর বোধ হুইল যেন কে সদর দরজার কড়া নাড়িতেছে। চ্প করিয়া বুড়ী কাণ পাতিয়া রহিল, অনেককণ অপেকা করিল বুঝিল গতাসের কার্যা। এমন অসময়ে রহন্ত করিবার জন্ম কাত্রকগুলা গাল খাইল। এবার বুড়ী নীরবে কাঁদিবার ব্যবস্থা করিল। এ সময় চীৎকার করাটা নৃদ্ধিযতীর কার্য্য নয়। वृक्षिमछी জूनियात या आंत्र कांनउ मरू कर्श स्ट्रेंटि मक वाहित स्ट्रेंटि मिन ना। यनिरे वा काँ क कूँ क कुरे अक्षा कथा करिया शना ছাড়াইবার উপক্রম করিল, অমনি সে হাতে মুথে চাপিয়া দাতে পিশিয়া जोशंक्षित्र विनाम माधन कतिए नाशिन। পাছে क्र वाहित स्ट्रेड कथा खनिए भाष, -- भाष्ट् किर वाफीए जानिया जाराद द्राष्ट्रमञ् कांत्रम विकामा करत्।

অতি সম্তর্গণে জুনিয়ার মা শোকাবেগ কার্যা নিশার করিল।

ভারপর আবার পুঁটলি বুকে করিয়। বসিল। বুড়ী কোথায় যে মোহর লুকাইবে, তাহা এথনও স্থির করিতে পারে নাই। ভাবিল দিনটা य कान প्रकारत काठाहेशा निरं। त्रां अत्र यार्'क अकेटा विनि ব্যবহা করিব।

मश्मा विका लाकरकानाश्म ভाश्त काल श्रम। वृक्षा श्रमिए পार्ग, काहाती वृाफ़ीत निक्छ এक्डा विषम शामगान युधिमाहि। युका श्रित कतिम, এ आत्र किছू नम्र পश्चिष्ठको घरत नारे कानिया তাহার মোহরের গন্ধে দিপাহীগুলা তাহার ঘর লুটিতে আসিতেছে। সে তাড়াতাড়ি, যেথানে যা পাইল পাথর, ইট, কাঠ দরজায় চাপা मिट्ड बार्रेस करिन। এमिट्क क्लानांश्ल बरुः भूत भित्रभूर्व रहेग्रास्त्र। জুनियात्र या দেখিল, রাজবাতীর ছাদে—রাজা, রাণী ও রাজকুমারী जिन करनरे উদ্গ্রীব रहेश्रा कि দেখিতেছেন।

वृकात जात वृक्षिट किईँ रे वाकौ तिहल ना। तम श्रीलया लहेया ব্রাহ্মণের ঘরে প্রবেশ করিল। কবাট বন্ধ করিল। এবং মোহরের থলিগা বুকে করিয়া, জীবনে প্রথম স্বেচ্ছায় উপবাসত্রত গ্রহণ করিল।

মোহর কয়টা দিয়া যথার্থই ব্রাহ্মণ প্রভূপরায়ণা পরিচারিকার সর্বনাশ সাধন করিয়া গিয়াছেন।

#### नवम পরিচ্ছেদ।

घत्र इहेर वाहित्र इहेग्राहे त्रजन ভাবিলেন,—"একবার छूडे দেওসানকে দেখিরা যাই। এই স্থির করিয়া তিনি কাছারী বাড়ীর मिक्क व्यागत रहेलान। हेः त्रात्मत व्यथीत्न व्यागित्रा, व्यक्षाग्य मास्य-मिर्गित अञार्थनामित अञ ताका मार्ट्योधत्र विज्ञानिकारी निर्मिष कत्रारेमाहित्यम। এथम रेशांत्र नित्य काष्ट्रांत्री रुत्र, উপরে আनमस्य পরিবার गইরা বাস করেন। 'সাহেবদিগের, জন্ত একটা সভন্ত আবাস-

स्व विभिन्न स्रेमाटक काष्ट्राप्ती वासीत शूर्व कामावास विभाग একটা প্রকাণ্ড দিখী। ভাহার পুরে ঠিক কাছারী বাড়ীর পরপারে রামবাগ বলিয়া, উন্থান। তাহার মধ্যে স্থানির্ঘিত একথানি বাজলা। সাহেবেরা এখন দেই স্থানে আসিয়াই থাকেন।

काहात्रौ वाषात পূर्क्त श्राप्त इरे तभी पूरत 'श्रवर्गत्त्रभा शैदत রাজপ্রাফাদ। রতনের ঘর্থানি রাজবাটার সংলগ্ন একটা অনতিবৃহৎ উত্থানের পশ্চাতে। তাঁহার ঘরের দিকের প্রাচীরে একটা দার ছিল। রাজার সহিত সাক্ষাতের সময়, কিম্বা কাছারী বাটীতে যাইবার সময় ব্রাহ্মণ দেই দার দিয়া বাগান পার হইয়া বাইতেন। তথন কাছারি বাড়ী তাহার ঘরের অতি নিকটোছ।। এখন কিন্তু তাহা অনেক पूत्र इरेमा 'পড়িয়াছে। আনন্দদেব সেই দারটী বন্ধ করিয়া দিয়াছেন। পাছে তাঁহার অলক্যে ব্রাহ্মণ রাজার সহিত দাহ্মাৎ করিয়া আদে।

আজকাল তাঁহাকে স্থবর্ণরেখার তীরস্থ পথ ধরিয় কিছুদূর উত্তর মুথ যাইতে হইত। তারপর রামবাগ বেড়িয়া উজান বাহিয়া কাছারী বাড়া ও রাজপ্রাদাদে উপস্থিত হইতে হইত। পূর্কে রতন অন্ত:পুরদ্বার দিয়া রাজগৃহৈ প্রবেশ করিতেন। এথন সিংহ্দার ভিন্ন গৃহ প্রবেশের অন্য পথ িল না। সেখানে যে সমস্ত দারবান ছিল তাহার। আনন্দ-. দেবের চরের কার্য্য করিত।

স্থভরাং গত রাত্রিতে রতনের রাজবাটীতে আগমন ও বঁছক্ষণ व्यवश्रम द्राजि मर्दश्र वानमाम्हित्त काल उठिहाइ। वानमाम जात्र छनियाद्दन, এकটা थालयात्र मध्या कि कानि कि खवा लहेना ্ত্রতন গৃহ হইতে বহির্গত হইয়াছেন।

िखात्र ममञ्ज ताजि जाननामाद्यत्र निजा रत्र नारे। बाक्यनाक जन क्षिति अ वानमारमय मर्ग मरम ७ जाहारक घूनी क्षिर्छ माहम क्षिर्छन मा । बाह्यका निम्पृश्ठी डीश्त्र व्यविषिठ हिन मा। श्राद्यालय माग्रनित वर्ग जिमि निर्क्ष किताब केश्वारक भन्नीका कितारक । वह जर्थ बाक्षणक श्रमुक कत्रिवात हिंहा कत्रित्राह्म। हिंहान कन হয় নাই। সেই ব্রাহ্মণ থলিয়া করিয়া আনিল কি ? সম্ভবত: মুদ্রা। মুদ্রার বৈহাতিক শক্তি আনন্দদেবের অপরিজ্ঞাত ছিল না। আনন্দ-দেব জানিতেন যে মুদ্রার সহায়তায়, ভিথারী হইয়াও তিনি আক রাজার তুলা অবস্থা- প্রাপ্ত হইয়াছেন, সেই মুদ্রার সাহায্যে বুদ্ধিমান বাঙ্গালী ব্রাহ্মণ না করিতে পারে কি? বিশেষতঃ অগ্রে কোনও সংবাদ না দিয়া রাচি হইতে জয়েণ্ট সাহেব একজন বন্ধু লইয়া গভরাত্তে অনন্তপুরে আসিয়াছেন। অবশু চরের সাহায্যে আনন্দদেব জানিয়াছের र्य मार्ट्रिक मिर्ड उज्यान माका रूप नारे, ज्थानि मिल्यान বৃশ্চিকদষ্টের গ্রায় সমস্ত রাত্রি বিছানায় পড়িয়া ছট্ফট্ করিয়াছেন্।

শেষরাত্রে যথন মুকুন্দ আসিয়া তাঁহাকে সংবাদ দিল, যে সাহেবেরা মৃগয়ার জন্ম অনন্তপুরে আদিয়াছে, তথন কথঞ্চিৎ প্রকৃতিস্থ হইয়া দেওয়ান একটু ঘুমাইবার চেষ্টা করিলেন। তক্রাটী আসিয়াছে; এমন · সমন্ন বাহিরে একটা বিষম কোলাহল, তাঁহার আগমনোলুখী নিদ্রাকে একেবারে বৈতরণী পার করিয়া দিল।

সভয়ে আনন্দ শ্যা। ত্যাগ করিলেন। কোলাহলের কারণ জানিবার अश वाथा श्रेषा जानानात्र काष्ट्र ছूটिलन। किছू দেখিতে পাইলেন म।। मूक्नरक ডाकिलान, উত্তর পাইলোন না। পর প্রকোষ্ঠে যাইয়া मुकूल्यत मक्षान कतित्वन। (पिथित्वन, मुकूल नारे। প्राणपन ही कारत क्ञाप्तत्र ए। किल्नि। कान ७ ज्ञा उवत्र मिल न। कालाइन উত্তরোত্তর বৃদ্ধি পাইতে লাগিল। আনন্দদেবের বোধ হইল অনন্ত-भूरत्रत्र गगन कि एगन এक बदगोकिक छीमनारम जालाफिछ इटेएछहि। किनि भूनदाव कानानात निकटि निवा मूच वाक्षेत्रा प्रिवात एडिंग कितिएन। (पश्चिम् कनरंखां ख्रवर्गद्रवर्षि जीवाजिन्द्र ध्रवाश्चि

हहेट इति जानाना वृक्ष कतितान। श्वादित कराष्ट्र वक्ष कतिराज याहराजरहन धामन ममग्र स्वी ७ পूलवध् व्यसः भूत हहराज তাঁহার কাছে ছুটিয়া আসিল।

ञ्चारक जनवश्राय দেथिया সভয়ে আনন্দদেব জিজ্ঞাসা করিলেন— শ্ব্যাপার কি।"

खी विनन-"मर्कनान इरेशांष्ट्र। मूकून वृक्षि बारे।" পুত্রবধূ জানকী সকরুণ চীৎকার করিয়া উঠিল। স্ত্রী আবার বলিল—ব্রাহ্মণ রতন তাহাকে হত্যা করিয়াছে।

মূর্চিছতপ্রায় আনন্দদেব ভূমিতে বদিয়া পড়িলেন। সহসা একজন ভূত্য উর্দ্বাদে চুটিয়া ঘরে প্রবেশ করিল এবং ভূপতিত প্রভূকে দেথিয়াই, সত্তর তাঁহাকে স্থানভ্যাগ করিতে অমুরোধ করিল। विनन-"এथनि घत ছाড়िया পानान। नहेल প্রাণে বাঁচিবেন না। बाक्रन এই দিকেই আসিতেছে।"

মৃত্যুর আশঙ্কায় দেওয়ান তথনি উঠিয়া দাঁড়াইলেন।—প্রভুকে সাবধান করিয়া ভূতাও ফিরিয়া চলিল। একবারমাত্র আনন্দ জিজ্ঞাসা कतिरलम-"मुकुनः "?"

ख्डा। **नार्टि** रिवा जैशिक स्रका कि स्रिया हि।

সংবাদ দিয়াই আত্মরকার্থ সে ক্রতবেগে তথা হইতে প্রস্থান क्रिंग।

थांमंदक वाहित्वत कानाहन काहात्री वाफ़ीत ভিতরে আनित्राष्ट्र। आनम भंकीरक विनित्न-"व्याभात्र वृतिष्ठिह ना १ भागा ।"

व्याननिर्मा भूखवध्व रुख धित्रा व्यक्षः भूतां छिम् (थ क्रू हिन। विभक्ष खानणुश्रा, याभौत ভবিশ্বং ভাবিবার আর অবকাশ পাইল না ।

वानकारमदित्र दोध इहेन, छोहां क इछ। कतिवात बच्च ध्यन हाति-क्षिक रहेटल नवचालक लाँरांत्र श्रावदबाध कतिरेल छूछिया व्यामिरल्ट् ।

এক্রপ অবস্থার পলামুন ভিন্ন গত্যস্তর নাই। বাহির হইবার জন্ত ঘরের চৌকাটে যেই পা দিয়াছেন অমনি সোপানে অসংখ্য পদশক এত र्रेग। ठाँरात रखना यान र्रेग्रा यानिन। जिनि त्वितनन, বাহির হইলেই নরঘাতকের সমুথে পড়িব। আত্মরক্ষার উপায়ান্তর না দেখিয়া তিন্দি পর্যাঙ্কতলে আত্মগোপনের উদ্যোগ করিলেন। বিপদে আত্মহারা—দ্বাররেধ কার্যাটা পর্যান্ত তাঁহার মনে আদিল না।•

বিভীষিকায়, ঘটনার আকস্মিকতায় কিংকর্ত্তব্যবিমৃঢ় আনন্দ শনিজের শারীরিক অবস্থার কথা পর্যান্ত ভুলিয়া গিয়াছেন। ভুলিয়া গিয়াছেন, তাঁহার দেহ বছকাল হইতে কতকগুলা অপ্রয়োজনীয় মাংসরাশির অপ্রীতিকর ভারবহন করিয়া আদিতেছে। ভুলিয়া গিয়াছেন, যে এই অযথা-সঞ্চিত মাংসরাশি তাঁহার দেহের সর্বাংশে সমামুপাতে বিশ্বস্ত ছিল ना,—काथा अञ्च काथा अवा अधिक हिल। এটा अ वृत्थि आदिन নাই তলদেশে প্রবেশমুখে পর্যাঙ্ক তাঁহার অনধিকার প্রবেশের স্থায়সঙ্গত প্রতিবাদ করিতে সর্বতোভাবে সমর্থ।

যাহা ঘটবার ভাহাই ঘটল। অর্থাৎ পর্যান্ধতলে অতি আগ্রহে প্রবেশ করিতে গিয়া আনন্দদেবের সেই বিশাল অঞ্জ মধ্যভাগে আবদ্ধ इटेग्रा (गण। मञ्जक ७ ऋ स्क्रिज कियमः भ পर्या एक व कियम शाम भारेण। অঙ্গের অংশিষ্টাংশ বাহিরে পড়িয়া রহিল।

নিরুপায় আনন্দদেব কুকুরতাড়িত ধৃতপ্রায় ক্লান্ত শশকের স্থায় অর্ধ-লুকাইত দেহে চক্ষ্ মুদিরা আপনাকে নিরাপদ জ্ঞান করিলেন।

#### मभग পরিচেছদ।

সাহেব তুইজনের মধ্যে যিনি রাচির জয়েণ্ট ম্যাজিষ্ট্রেট, তাঁহার नाम श्रात्नि, महाद्वत नाम बाउन। श्रात्नि भाँ वर्मत अलाम আসিয়াছেন। ব্রাউন ন্বাপত। তিনি, সম্রাস্তবংশীয়। বিলাভের ক্রিক লর্ডের ভাগিনেয় ও উত্তরাধিকারী ৭০ তাঁহার পিতৃব্য সে সময়

ছোটনাগপুরেশ্ব কমিশনর। হিন্দুস্থান দেখিবার অভিলাবে, অভি
অল্পদিন হইল তিনি এদেশে আসিয়াছেন। আসিয়া পিতৃব্যের গৃঙ্কে
অতিথি হইয়াছেন। মৃগয়াব্যাপদেশে হারলির সহিত তাঁহার অনন্তপুরে
আগমন।

যে সময় রতন গৃহত্যাগ করিয়া কাছারী বাড়ীতে: মোদিতেছিলেন, তাহার ,অল্লমণ পূর্বেই ব্রান্টন শ্যাত্যাগ ক্রিয়াছেন। হার্লি তথন ও নিজিত।

ব্রাউন শ্যাত্যাগ করিয়া বাংলাসংলগ্ন পুপোদ্যানে বিচরণ করিতে-ছিলেন। সেইস্থান হইতে স্কুবর্ণরেখাতীর পর্যান্ত একটা বিশাল তৃশ প্রান্তর্। মাঝে কেবল একটা প্রকাণ্ড বটগাছ।

স্থবর্ণরেথার পরপারে, অনস্তপুর হইতে প্রায় একজেশ দুরে
একটা অনতিউন্নত অধিত্যকা ভূমি হইতে জনার সেই বহুযোজনবাপী জঙ্গলের আরম্ভ। ছোট বড় শালগাছ বুকে লইয়া, স্তরে স্তরে
উন্নত সেই বিশাল অরণ্য হিরতরঙ্গবক্ষ মহাসিদ্ধর স্তায় অনস্ত আকাশ
নীলিমাকে আলিঙ্গন করিতেছিল। মাঝে মাঝে ছই চারিটা পাহাড়
নোজরে আবদ্ধ ধৃদয়ুবর্ণ জাহাজের স্তায় সেই শ্রাম সমুদ্রে ভাসিতেছিল।
বাগানে বেড়াইতে বৈড়াইতে ব্রাউন সেই অদ্ষ্রপূর্ব মহান অরণ্যের
সৌলর্য্য নিরীক্ষণ করিতেছিলেন।

এমনি সময়ে রতন স্থবর্ণরেধার তীরভূমি পরিত্যাগ করিয়া প্রাস্তরে অবতীর্ণ হইলেন। তাঁহার মাথার উফীষ, গায়ে বেনিয়ান, পরিধান মালকোচা করা ধূতি, পায়ে নাগরাজুতা এবং হস্তে তৈল-নিষেকোজ্জন-লোহিতাভ বংশ্বস্টি। বছদিন হিন্দুছানীদের সংশ্রবে থাকিয়া তাঁহার আচার ব্যবহার অনেকটা তাহাদেরই মতন হইয়াজ্জি। তিনি সর্জনা পরিজ্য় থাকিতে ভাল বাসিতেন। ঘরে থাকিলেও তিনি কথন মলিন

প্রান্তরে আসিষ্টাই রতন সর্বাহ্যে বট বৃক্ষের সমীপস্থ ইইলেন, এবং ভাহার একটা ভূমিলয় শাথার কমগুলু, মৃগচর্মা, কাপড়ের পুঁটুলি ও লাফ্রী গাছটা রক্ষা করিলেন, এবং রিক্তহন্তে কালাবাধের দিকে অগ্রসর হইতে লাগিলেন। কাছারী বাড়ীতে যাইতে হইলে বরাবর পুর্বামুখে সরোবরের তীর ধরিয়া বাংলাকে পশ্চাতে রাপ্রিয়া আবার তাঁহাকে পশ্চিম-মুখী হইতে হইবে।

প্রমুথে ফিরিতে রতনের মুথে প্রাত: স্থা্রের কিরণ পজিত ইইল।
তাঁহাব কবিত-কাঞ্চনোজ্জন বর্ণ বয়সের আধিক্যে গাঢ়তা প্রাপ্ত ইইয়াছিল। তাঁহার বিশাল বক্ষ, অত্যুন্নত দেহ, সৌমা ও ধারতাব্যঞ্জক
মুথশ্রী, পককেশ-মণ্ডিত গুল্র মন্তক, মুহূর্ত্ত মধ্যে ব্রাউনের দৃষ্টি আকর্ষণ
কবিল। প্রান্তরপথে চলিতে চলিতে মন্থরগামী বৃদ্ধ স্থান্তল পরিচ্ছদে
অরণ কিরণে প্রতিফলিত ইইয়া গতিশীল কাঞ্চনজঙ্বার ভায় শোভা
পাইতেছিলেন।

জনার কলনের শোভা দেখিতে দেখিতে ব্রান্টনের ভাবরাজ্যে একটা তরক উপন্থিত হইয়াছিল। অরণ্যের বিশালভায় আপনাকে নিকেপ করিয়। তয়য় য়্বক সেই দ্রদেশ হইতেই ধানুময় যোগীর স্থায় আয়বিয়তির স্থে মৃছর্মুছ আন্দোলিত হইতেছিলেন। জীবনটা তাহার স্থাবং বােধ হইতেছিল। প্র্কার্শবনের ঘটনা পরস্পরা স্থাক্হেলিকার্ত ফ্লয়াশির নাায় তাহায় মনশ্চক্র উপর দিয়া ভায়িয়া য়াইতেছিল। এমন সময়ে রজনের দিবাম্র্তি একাধার-নিবিষ্টপুশ-ভাজের নাায় তাঁহায় স্থাবিষ্ট দৃষ্টির উপর সহসা প্রকৃতিত হইয়া উটিল। বােউনেব বােধ হইল, যেন পশ্চিমাকাশ হইতে ভ্তলাবতীর্ণ প্রভাজারণ-জাত দেবদ্ত প্রান্তরে বিচরণ করিতেছে। বিয়য়াবিষ্ট হইয়া ডিনি হায়লিকে ডাকিলেন। হায়লি তথনও মুমাইতেছিলেন। মুমাইতে মুমাইতে, তিনি এজলাসে বসিয়া এক বৃত্ত বলিঠ বাক্ষাকে, স্ক্রমায়

विषिष्ठे जात व्याप्त कि का का का कि वार्ष का वार्ष वार्ष করিতেছিলেন। এমন সময় সহচরের কথা কর্ণে প্রবিষ্ট হওয়ায় जारात पूर जानिया (शन।

চোথ মুছিতে মুছিতে হারলি বাহিরে আসিলে, ব্রাউন তাঁহাকে वाकारक (मधारेया, विलियन—"(मवमूख (मिथ्याह ?"

**(** त्रक्ठ ( त्रियारे रात्र वि छे छ रात्र कित्र क्षेत्र कित्र कित्र कित्र वि क्षेत्र कित्र कि "কিছুদিন এদেশে থাকিয়া, এ স্থানের জলবায়ুতে অভ্যস্ত হইয়া নেটিভ দেথিবার চক্ষু প্রস্তুত কর। তারপর উহার পানে চাহিও। দেথিকে উহার মৃত্তি কত কুৎসিৎ!"

ব্রাউন এ সকল কথার এক বর্ণও বুঝিতে পারিলেন না। ভাবিলেন—"দক্ষু কি অবস্থা হইলে এরপ স্থলর কুৎসিত দেখায়।"

এদিকে দিঘীর পাড়ের আড়ালে পড়িয়া রতন সাহেবদিগের দৃষ্টিপথ रहेटल अर्खाईक रहेटलन। ब्राइटन र राज धनिया हार्नल छाँशाक বাংশার ভিতর লইয়া চলিলেন। চলিতে চলিতে ব্রাউন একবার मनिष्ठो विषक्ष श्रेषा शिषा । जथािश वाका य ছবি তাঁ शत कार् बिक्छ किश्रािहरमन, मिछी आत विमुख इट्रेम ना।

अमिरक तडन थीरत थोरत काছात्री वाड़ीत मिरक खाशमत इहेरछ-ছिलिन। भूकुन ७ मिशेश मिशे मार्टियमिशं महिल माका कित्र আসিতেছিল। আসিতে আসিতে সম্মুথে দেখিল রতন। মুকুনেম্ম মুথ শুকাইয়া গেল। দেওয়ানের কথা জানিবার জন্ত রতন ভাঁহার ममो পবজी इहेरनन।

ं এমনি সমরে চারিজন সিপাহী কাছারীর কাজে সেই প্রধারীয় कार्थात्र बाहरङहिन। (मिथन मनिर्देश मनूर्थ दूक बाक्रन त्रज्ञ। को कुर्ग-शत्रवम रहेशा जाश्राता उखरतत निकट जानिग। खर एएक तहे

্ত একগাছি করিয়া দীর্ঘ যষ্টি ছিল। যষ্টি ক্ষমন্তত করিয়া ভাহারা क्रान्त्र भार्य में। ज़ाहेल।

निপाशैष्तत (निश्रिया मुकून्नित माहम कि त्रिन । ভাবিল—" वाकाण क জের শক্তি দেখাইবার এই একটা শুভ অবকাশ। গ্রাহ্মণ কথায় থায় আমার ও আমার পিতার অপমান করিত। আমিই বা এই, রবকাশ ছাড়িব কেন।'' ব্রাহ্মণ শমীপত্ত হইবা মাত্র ক্রক্ষমরে जिজ্ঞাস। করিল—"কি চাও।" রতনের সম্মুথে মাথা তুলিয়া মুকুন্দ ীবনে এই প্রথম কথা কহিল।

স্বরের রুক্ষতায় রতন বিরক্ত হইলেন। তথাপি সাবধনতার সহিত ানোভাব গোপন করিয়া উত্তর দিলেন—"তোমার পিতার •সহিত নাক্ষাৎ করিতে চাই।"

মুকুন্দ পূর্ব্বিৎ রুক্ষস্বরে রতনকে বুঝাইল, তাহার পিতার স্থায় াননীয় ব্যক্তির সহিত, রতনের স্থায় দরিদ্র ভিক্ষুকের সাক্ষাতের অভিলাষ ধৃষ্টতা। মুকুন্দের বড়ই ধৈর্য্য যে বৃদ্ধের ধুষ্টতার শান্তি না দিয়া ্স এখনও পর্যাম্ভ ভাহার অসভাঞ্জনোচিত মূর্ত্তি সম্মুথে অবস্থিত হইতে অমুমতি প্রদান করিয়াছে। রুক্ষতর স্বরে মুকুন্দ্ বৃদ্ধকে স্থানত্যাগ করিতে আদেশ করিল।

দিপাহাগণও বৃদ্ধের আগমন প্রভুর অপ্রীতিকর বুঝিয়া, ভাছাকে গমনে বিরত করিতে অগ্রসর হইল। ইহাদের মধ্যে একজন রতনকে বছকাল হইতে জানিত। অপর তিনজন নবাগত। তাহারা একে-বারে রতনের গা ঘেঁসিয়া দাড়াইল। ভাবিল, এক্সপ করিলে বৃদ্ধ ভঙ্গে আপনা হইতেই স্থানত্যাগ করিবে।

রতন কিন্ত প্রতিনির্ত হইতে আদেন নাই। স্থতরাং মুকুন্দের क्ष्म जारमन्याका ७ मिनाशीमिरभन्न यौत्रक कार्याकत इरेन न। वृद्ध वंत्रः भूकुत्मत्र मित्क व्यक्षमत्र रहेवात्र ভाव (मर्थाहेन।

পরিচিত দিপাহী ভাবিল, গতিক ভাল নয়। অপর দিপাহীর। श्ति कतिन वृक्ष डेगाम। यूक्न वृत्रिन, खाम्मण कि এको। काख করিতে আসিয়াছে। তথাপি সাহসে ভর করিয়া বলিল—"বৃদ্ধ, যদি मन्न ठाउ, তाহा হইলে এই দণ্ডেই স্থানত্যাগ কর"।

त्रञन (मिथलन मिष्ठेवारका कार्या इहरव ना, जाहार व्या नमत्र नहे। व्यक्षमत्र दूरेया निन একেবারে एक्नरक ধরিয়া ফেলিলেন। मिপাহীগণ हों हाँ कतिया छिठिन।

রতন তাহাদের চীৎকার কানে তুলিলেন না। একজন সিপাহী ছুটিয়া রতনকে ধরিল। রতন ত্রুক্ষেপও করিলেন না। কিঞ্চিৎ বল প্রয়োগে মুকুন্দকে দাঁড় করাইয়া, ঈষৎ গন্তী হস্বরে বলিলেন—"মূর্গ! স্থানত্যাগ করিবার জন্ম আমি সর্বকার্য্য পরিত্যাগ করিরা এতটা পথ আদি নাই। তুমি যদি মঙ্গল চাও,—তোমার পিতা যদি মঙ্গল চায়, काश इहेरन बाबारक काश्र कार्छ नहेंगा हन।"

ভখন মুকুন্দ প্রাকৃতিস্থ হইল। রতনের প্রাকৃত মূর্ত্তি তাহার চক্ষে প্রতিভাত হইল। কিংকর্ত্তব্যবিষ্ণু, বাগ্-রহিত মুকুন্দ কাতর-নেত্রে প্রহরীদিগের পানে চাহিল। প্রভুকে অপমানিত দেখিয়া দিপাহীতলা ব্রভনকে আক্রমণ করিল। বিনা আয়াদে ভাহাকে কুটুমিতা প্রদান कतिया, প্রেমবিহ্বলচিত্তে সবলে আকর্ষণ করিল এবং মুকুন্দের হস্ত रहेट जाहात रहमूक कतिवात (हड़ी कतिवा।

**टिष्टीय एन इरेन ना। मिनारी खनांत्र (वाध हरेन, यास्य धरिए** গিয়া তাহারা নরদেহধারী কি এক প্রস্তরবং কঠিন পদার্থে হস্তক্ষেপ করিয়াছে। অতি আকর্ষণেও তাহারা ব্রাহ্মণকে স্থানচ্যুত করিতে शांत्रिश ना। यूक्त्मत्र अ यूक्तिगां इट्टेंग ना। विश्व हिनकत् পরস্পরের মুথ চাওয়া চাওয়ি করিল। রতনের পরিচিত দিপাহী দূরে ৰ্নাড়াইয়া প্ৰমাদ গণিতেছিল।

প্রাণপণে মুকুন্দ চীৎকার করিরা উঠিল। প্রাতঃকৃত্য সমাধা করিতে অনেক সিপাহী কালাবাঁধের তীরে উপন্থিত ইইয়াছিল। পশ্-পার হইতে তাহারা মুকুন্দের চীংকার গুনিল, গুনিয়া উর্দ্বাদে তাহারা भूकुत्मत त्रकार्थ हूछिन।

**ही** कात्र ऋरू विनिश्त अवास्त शृंक हिया है। कात्र निर्का त्रापत्र कञ्च छाँ हात्रा अ वाश्वात वाहित्र आभियाहिन। माह्वत्मत (पिश्रा मुकुल ही कात्र कतिया नाश्या প্रार्थना कतिल। विलल-"भाष्ट्य! দস্যুর হন্ত হইতে আমাকে রক্ষা কর।"

[ক্রমশঃ]

## বিপদের প্রতি।

হে ভৈরবি, কাণ্ডজ্ঞান শৃত্যা, চিরনশ্বা, करता हि-कि ना ना मार्थ करत. তপ্তস্থরা-পান-মগ্না, অগ্নি অশোভনা, তাণ্ডবিয়া আনন্দ অন্তরে (थरे (थरे, -- व्रकानत्र, की ठाक रामाज, বাঁধ মোরে, ছাঁদ মোরে, অফি জুরমতি!

এস, এস, হে বিপদ, অট্ট অট্ট হাসে, . এস চণ্ডি, বেতালের প্রায়, जगास कवस वायू, माराया-वाकार्न करत्र यथा रचात्र "राम, राम," তেষতি গো আর্ত্তনাদে, এর ভয়পুরি, वामना-भाषात्र कञ्चा मक्रक निर्देश । 9

হে বিপদ, শাকম্ভি, পাণুর-অধরা,
নত-আঁথি সজল লোচনা,
এস, এস, নিজ-রঙ্গে নিজেই জর্জরা,
তন্ত্র মন্ত্র-সাধন-মগনা।
মারণ-বশীকরণ-উচাটন-রতা,
এস কাপালিক-বধু! পর-পীড়া ব্রতা!

হবে যবে সর্বানাশ, হাহাকার করি'
দানা যবে ঘরে দিবে হানা,
বিপদ মৃণালোপরি পদারূপ ধরি'
দেখা দিবে হরি আরাধনা,
স্থানিয়ী লতা ভেদি' সৌরভ ছুটিবে, '
সে ফাস্কনে হরিনাম-গোলাপ ফুটিবে!

a

हित्रभात मार्ड मार्ड डिका-मूथ प्रिमिं हात्रिशात महा विक् ज्ञानि'। এস, এস, ঢালি' হৈম বাসনার চেলী, আমি দিব আপনারে ডালি। বৈদেহী হাসিলা যথা অগ্নি-দেব-কোলে, আমিও/হাসিব রক্ষে হরি-জ্রোড়-দোলে!

श्रीरित्यस्माथ रमन।

# वाञाला शुरु दक्त विवत्नी।

মরা এখন হইতে নব প্রকাশিত বালালা পুত্তক সমূহের বিষয়ামুক্রমিক একটি তালিকা। "ভারতীতে" দিতে চেটা করিব। এই তালিকার পুত্তকগুলি সম্বন্ধে কিছু কিছু জ্ঞাতব্য বিষয়ের সংক্ষেপ ট্রেখ থাকিবে। উপযোগিতামুসারে পুত্তক বিশেবের বিস্তৃত সমালোচনাও "ভারতীতে" প্রকাশিত হইবে। জাপাততঃ বে সকল পুত্তক আমাদের হাতে আছে, নিয়প্রদত্ত বিবরণীতে তাহার কতকগুলি উল্লিখিত ও আলোচিত হইল।

### সাহিত্য (১) সন্দর্ভ-শাখা—

১। প্রালী। খ্রীয়েগেশচন্দ্র রায় দুস্পাদিত। কলিকাত। ২৫ নং রায় বাগান ট্রাট, ভারতমিহির যয়ে সয়াল এও কোং দ্বারা মৃদ্রিত এবং ২৮।৪ অধিল মিল্লির লেন খ্রীযুক্ত কেদারনাপ বহু বি, এ কর্তৃক প্রকাশিত। বাঁধাই ও দ্বাগা উৎকৃষ্ট। ডবল কাউন ১৬ পেজি ফর্মার ২২৮ পৃষ্টায় সম্পূর্ণ; মূল্য ১॥• টাকা। বৈজ্ঞানিক ও সাহিত্য সম্বন্ধে হুখপাঠা পত্রাবলী। মহিলাগণের বিশেষ, উপযোগী; অবসর কালে পাঠ করিলে, অবসর হুবর্ণপ্রস্ হইবে। পুস্তকের স্চী,—প্রথম অধ্যায় প্রকৃতি বৈচিত্রা (১) বিষয়—গান, চন্দ্র, গুক্তারা, কায়া, তৃশ্ধ। দ্বিতীয় অধ্যায়—প্রকৃতি বৈচিত্র্য (২) বিজ্ঞতা, অক্সরাগ কি বিভ্রমনা নয় ? ভূষণ, কবিতা, জগৎ কি আধার প্রকৃতি বৈচিত্রা বিজ্ঞতা, পর্বত। তৃতীয় অধ্যায় প্রকৃতি বৈচিত্রা (৩) এক তৃই তিন, বিজ্ঞান চর্চা বা প্রকৃতি আরাধনা, বিজ্ঞানে নান্তিকতা, সংগ্য চিত্রকলা, হুখ তৃংখ।

২। ধর্মানন্দ প্রবন্ধাবলী। প্রণেডা অধ্মানন্দ মহাভারতী। প্রথম থণ্ড
ডবল ক্রাউন্ ১৬ পেজী ফর্মার ০১৪ পৃষ্ঠার পূর্ণ। ০০।৫ মদন মিত্রের লেন, নবাভারত
প্রেসে অভ্যুতনাথ পালিত কর্ত্ব মুদ্রিত ও প্রকাশিত। সন ১২১০। মূল্য ১৪০ টাকা।
হাভারতী মহাশয় নবাভারত, ভারতী, প্রবাসী, বঙ্গদর্শন, সাহিত্য, নবপ্রতা, স্থা
প্রভৃতি বিবিধ পত্রিকার যে সকল প্রবন্ধ প্রকাশ করিয়াছেন, ভূতনাথ বাবু ভার্যারই
মধ্যে কত্রকগুলি নির্মাচন করিয়া এই পৃত্তক প্রকাশিত করিয়াছেন। বিষয়ের
স্চী;—মহাতা শৈষা, অলহর, অল্পূর্ণ আদর্শ, প্রনাধবার, বিভীয় বুর্গের নমবীপা,
সংব্য সাম্বর্গ, বাবা ব্রহ্মানন্দ, ইটের বই, সাসারাসের রোজা, হিন্দুশক্তব, বউ কথা

🖚 😭, পদচিহ্ন, শ্লেডীমায়ী, অদৃষ্ট খণ্ডন, রাণীগ্রানীর পত্র, বঙ্গ সাহিত্যের দিভীয় যুগ, শাক্ত ও শৈণ, ব্রহ্ম গল্প-শন্ধ, কাশীদাদের সংস্কৃতাভিজ্ঞতা। প্রকাশক ভূতনাথ বাবু পুস্তকের ভূমিকার লিখিগছেন—''শ্রীযুক্ত মহাভারতী মহাশয়ের অনেক প্রথম ' ইংরাজী, হিন্দী, তামীল এবং উর্দ্দু ভাষার সমাচার পত্তে অমুবাদিত হুইরা গিয়াছে এবং কেবল বঙ্গদেশ বা ভারতবর্ষে কেন স্থানুর হংলও, আমেরিকা ও অষ্ট্রালিয়া দেশেও িতিনি যথেষ্ট প্রশংসা প্রাপ্ত হইয়াছেন।" অতঃপর আমাদের ভরসা আছে, এই প্রবন্ধ-গুলির প্রর্থাবে বঙ্গভাষা জগভের অপরাপর স্থানেও শীদ্র স্থপনিচিত হইবে।

- ৩। শিবাজীর মহন্ত। শীস্থায়াসগংগণ দেউস্কর প্রণীত। ১৩১০ সাল, আবাঢ়। শিবাজী-মহোৎসব উপলক্ষে কলিকাতা শিবাজি-উৎসব-সমিতির দার। পুश्चिकाथानि शुरा न्य नरह, हिं हिं क्ष इहेला छह। की वस्र ।
- অশ্রারা, শ্রীঅমুকুল চক্ত মুখোণাধাায় প্রণীত। মিঃ এস, সি, আঢ়া কর্তৃক প্রকাশিত। ফ্যাক্টরে প্রেসে। শ্রীতারাপ্রসন্ন চট্টোপাধার দ্বারা মুদ্রত। সন ১৩১০। **एवन क्रांडेन २७ (नक्रो** कर्यात ७७ पृष्ठात्र मन्पूर्वु। पञ्जीत विद्यांग ६ हेल किन्नर्पं বিলাপ করিবেন, লেথক কল্পনায় ভাহা অনুভব করিয়া পত্নার দ্বীবদ্দশায়ই এই ডঞা-धात्रात वाञ्चित्र कतिशाष्ट्रन । ইश উद्धास्त्रः श्राप्तत धत्राण निथित । श्रुक्तका नः মুলা। ৫০ । গ্রন্থকার তাঁহার এক বন্ধুর কথা উল্লেখ করিয়াছেন "ঈশ্বর না করুন, ভিনি ( গ্রন্থকারের সহ্ধর্মিণী ) যদি আপনার পূর্বে পরলোকে গমন করেন, ভাষ ক্ইলে আপনি ভাঁহার নিমিন্ত কিরূপ অশ্রুধারা বর্ষণ করিবেন, তিনি জীবিং অবস্থায় ভাহা জানিতে পারিয়া আপনার আদেরের মাত্রা বাড়াইয়া দিবেন।" বটে।
- ে। বৌদ্ধর্গের ভারত মহিলা বা বিশাধার উপাথ্যান। বস্ কর্ত্ক পালি ভাষা হইতে অনুবাদিত, ডিমাই ৮ পেক্রী ফর্মার ০৮ পৃষ্ঠায় সম্পূর্ণ পার্সিভিয়ারেন্স ষত্তে শ্রীযুক্ত চিন্তামণি কেত্রী দ্বারা মুদ্রিত। ১৯০০ ইং সন মুলা। । । ইহা একখানি অতি হুপাঠা শিক্ষাপ্রদ পুত্তিক, মহিলাগণের পরে विरमय উপযোগী।
- ं । (भोत्राणिक काहिनी। श्रीमठो नावगाश्रका वर्ष क्रीड। एव कुल (अभ ३७ (शकी कर्यात १६ श्रृष्टात मण्यूर्ग। किकावाजा म नः करमक (कातात ८५) - क्या मुखि अवर २०४१२ वर के वें अप्राणिम् क्षे हे मूक्न कार्यालय इहेरक क्रकामिक । मूह

- া আনা। ১৩০৯ সন। এই পৃশ্বকে সরল ও স্কর ভাষার নিয়লিখিত নিষয়ছ লিপিবদ্ধ হইরছে। ভীমা, জোণাচার্যা, কর্ণ, একলব্য, কচ ও দেবধানী, শর্মিষ্ঠ দেব্যানী, ক্লম্ ও প্রমন্ত্রা, সাবিত্রী, ভীম্ম ও অম্বা, ভীম্ম ও শিশ্বতী।
- ন। আভাষ। ক্ষার শ্রীমরেক্রচন্ত্র দেব বর্মা প্রণীত। ক্মিলা, কৈছ
  যাত্র গোপালচন্ত্র দাস কর্ত্ব মুলিত। ১৯০২ সন। ডবল ক্রাউন ১৬ পেজী ফর্দ
  ৩৫ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ। এই সকল পুস্তকে নিমলাখিত প্রবন্ধগুলি সল্লিবেশিত হইর
  আত্রমর্যাদা, একাগ্রতা, ইচ্ছা, কল্পনা, শিক্ষা গ্রন্থ ও প্রকৃতি, চরিত্র। অল ব
  গ্রহকারের সাহিত্যে এই প্রথম উদ্যম বিশেষ প্রশংসার্হ। রাজপ্রাসাদ হইতে
  কুমারগণ বঙ্গভাষার প্রতি সম্ভা দৃষ্টিপাত করিতেছেন, তাহাতে মনে হয় জাতীয় ভ
  অবশ্বই শ্রীশালিনী ইইয়া উঠিয়াছেন।
- দ। শ্রীরামচরিত্র। ৺বগাঁর রাখালদাস হালদার প্রণীত। ৬৪ নং অ মিল্রির লেন, হিন্দু মেশিন প্রেসে মৃত্রিত ও ২০১ নং কর্ণওয়ালেস দ্রীটে শ্রীগুরু চট্টোপাধ্যার কর্তৃক প্রকাশিত। ১৩০৮ সন। মূল্য। শ্রানা। প্রকেখানি ডিং ১২ পেঞ্জী ফর্মার ৩৬ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণী। এই প্রকের পূর্বে ভাগে গ্রন্থকারের ও শ্রিক স্ক্রার হালদার বর্গাঁর গ্রন্থকার মহাশরের একটা স্করের জীবনী প্রদ করেয়াছেন। সাহিত্যরখী শ্রীবৃক্ত রামেল্রস্কর তিবেদী মহাশর ভূমিকার লিখি ছেন—"কয়েক বৎসর পূর্বে আ্মাদের শিক্ষিত সমাজের চিন্তাপ্রণালীর আ এই গ্রন্থ হইতে অনেকটা পাওয়া যাইবে। গ্রন্থখানি তজ্জন্ত আদৃত হইবে।"
- ৯। পুরী যাইবার পথে। ডাজার রায় প্রাচ্নীলাল বহু বাহাত্র এম,
  এফ, সি, এস সঙ্গলিত ও ১০১০ সালের ২৭শে বৈশাধ রবিবার "সাহিত্য সভা
  পঠিত। কলিকাতা ৫৯ নং মৃঞ্জাপুর দ্রীট, 'বক্লও' প্রেস হইতে মৃদ্রিত ও প্রকাণি
  কুল্র পৃত্তিকা, মূল্য ৫০ আনা। রায় বাহাদ্র পুরী হইতে বেশ উপাদের সাম
  পূর্ণ একথানি কুল্র প্রেট সাজাইয়া সাহিত্যসমাজে উপহার দিয়াছেন। তিনি নি
  ডাজার, অনেক সামগ্রী পরিবেশন করিয়া মন্দাগ্র জন্মাইবার লোক নহেন,
  দিয়াছেন, কিন্তু বেটুকু দিয়াছেন, তাহা স্বাহ্ন, সরস ও হিতকর। এই কুল্র পুর্
  বানি পুরী সম্বন্ধে শানা কৌতুইলোদীপক তব্বে পূর্ণ।
- >। श्रीमिर्शित श्रीं উপদেশ। (हैपूर्व वात्र मूजाकिए) श्रीकेणाने । स्था स्थापिए। श्रीकेणाने । स्थापिए। क्षिकाए। क्ष्म कर्णिक क्ष्मित्र क्

করে, পদচিহ্ন, রেতীমারী, অদৃষ্ট খণ্ডন, রাণীলবানীর পত্র, বল দাহিত্যের বিতীর যুগ, শাক্ত শেণ, ব্রিক্ষাগদ্ধ, কাণীদাদের সংস্কৃতাভিজ্ঞতা। প্রকাশক ভূতনাথ বাবু পুস্তকের ভূমিকার লিখিকাছেন—"শ্রীযুক্ত মহাভারতী মহাশরের অনেক প্রক্ষালী, হিন্দী, তামীল এবং উর্দ্দু ভাষার সমাচার পত্রে অসুবাংদত হইরা গিয়াছে এবং কেবল বঙ্গদেশ বা ভারতবর্ষে কেন হৃদুর ইংলগু, আমেরিকা ও অট্রালিয়া দেশেও তিনি যথেষ্ট প্রশংসা প্রাপ্ত হইয়াছেন।" অতঃপর আমাদের ভরসা আছে, এই প্রক্ষাপর প্রদির প্রস্থাবে বঙ্গভাষা জগতের অপরাপর স্থানেও শীল্ল স্বপনিচিত হইবে।

- ৩। শিবাজীর মহন্ত। শীস্থায়াসগণেশ দেউস্বর শ্রণীত। ১০১০ সাল, আষাঢ়। শিবাজী-মহোৎসব উপলক্ষে কালকাতা শিবাজি-উৎসব-সমিতির দারা বিনামূল্যে বিতরিত। ২০ পৃষ্ঠার ক্ষে পৃত্তিকা। আকারে ক্ষে হইলেও এই পৃত্তিকাথানি গুণে ক্ষে নহে, চি টি ক্ষে হইলেও উহা জীবস্তা।
- ৪। অশ্রুধারা, শ্রীঅনুকৃত চক্র মুখোপাধার প্রণীত। মিঃ এস, সি, আঢ়া কর্তৃক প্রকাশিত। ফ্যান্টার প্রেসে। শ্রীতারাপ্রসন্ন চট্টোপাধার দ্বারা মুদ্রত। সন ১০১০। দ্বল ক্রান্টন ১৬ পেজী ফর্মার ৬৬ প্রায় সম্পূর্ণু। পত্নীর বিয়োগ ২ইলে ক্রিপেণি বিলাপ করিবেন, লেথক কর্ননার তাহা অনুভব করিয়া পত্নার জীবদ্দশারই এই তক্র-ধারার শ্রুভনর করিয়াছেন। ইহা উদ্ধান্তপ্রেমের ধরণে লিখিত। পুত্তকখানের মূল্যান/০। গ্রন্থকার তাহার এক বন্ধুর কথা উল্লেখ করিয়াছেন "ঈশর না কর্মন তিনি (গ্রন্থকারের সহ্ধর্মণী) যদি আপনার পূর্ব্বে পরলোকে গ্র্মন করেন, তাহ হুলৈ আপনি তাহার নিমিন্ত কিরূপে অশ্রুধার বর্ষণ করিবেন, তিনি জীবিশ্ ক্রিয়া তাহা জানিতে পারিয়া আপনার আদেরের মাত্রা বাড়াইয়া দিবেন।" বটে ৷
- ৫। বৌদ্ধযুগের ভারত মহিলা বা বিশাখার উপাথ্যান। শীচারচার বন্ধ কর্ত্ব পালি ভাষা হইতে অনুবাদিত, ডিমাই ৮ পেজা ফর্মার ০৮ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ পার্সিভিয়ারেল যন্তে শীযুক্ত চিন্তামণি কেত্রী দ্বারা মুদ্রিত। ১৯০০ ইং সন্মূল্য ।১০ আনা। ইহা একখানি অতি হপাঠ্য শিক্ষাপ্রদ পুষ্কিক, মহিলাগণের প্রে
- ভাষেপ ১৬ পেজী ফর্মার ৭৫ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ। কলিকাতা ৮ নং কলেজ স্বোরার চোলের মুক্তিত এবং ২০৮।২ নং কলিজালিস্থাটি মুক্ত কার্যালয় হইতে প্রকাশিত। মূল

। আনা। ১০০৯ সন। এই প্তেকে সরল ও ফ্লার ভাষার নিমলিখিত নিষয়গুলি লিপিবদ্ধ হইরাছে। ভীমা, দ্রোণাচাষ্য, কর্ণ, একলব্য, কচ্ভ দেব্যানী, শর্মিষ্ঠা ওঃ দেব্যানী, করু ও প্রমন্ত্রা, সাবিত্রী, ভীম্ম ও অম্বা, ভীম্ম ও শিখ্তী।

- ন। আভাব। ক্ষার প্রীম্বেলচন্ত্র দেব বর্ষা প্রণীত। ক্মিলা, কৈলাশা বিশ্বে গোপালচন্দ্র দানুদ্র কর্ত্ব মুদ্রিত। ১৯০২ সন। ডবল ক্রাউন ১৬ পেজী ফর্মার ৩৫ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ। এই সকল পুস্তকে নির্মালাখিত প্রবন্ধগুলি সন্নিবেশিত হইয়াছে আত্মমর্যাদা, একাগ্রতা, ইচ্ছা, কল্পনা, শিক্ষা গ্রন্থ ও প্রকৃতি, চরিত্র। অল বরক্ষ গ্রন্থকারের সাহিত্যে এই প্রথম উদ্যুম বিশেষ প্রশংসার্হ। রাজপ্রাসাদ হইতে যে, ক্মারগণ বঙ্গভাবার প্রতি সম্রদ্ধ দৃষ্টিপাত করিতেছেন, তাহাতে মনে হয় জাতীয় ভাষা। শ্রন্থই শ্রীশালিনী হইয়া উঠিয়াছেন।
- দ। শ্রীরামচরিত্র। ৺স্থার রাখালদান হালদার প্রণীত। ৬৪ নং অথিক, মিস্তির লেন, হিন্দু মেশিন প্রেনে মুদ্রত ও ২০১ নং কর্ণভরালেন দ্রীটে শ্রীগুরুদান চট্টোপাধ্যার কর্তৃক প্রকাশিত। ১৩০৮ সন। মূল্য। আনা। পুত্তকথানি ডিমাই ১২ পেনী ফর্মার ৩৬ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ। এই পুত্তকের পূর্বে ভাগে গ্রন্থকারের পুত্র শ্রীযুক্ত স্কুমার হালদার স্থামর প্রস্কার মহাশরের একটা স্থানর জীবনী প্রদান কর্মাছেন। সাহিত্যরখী শ্রীযুক্ত রামেক্রস্কার ত্রিবেদী মহাশার ভূমিকার লিখিরা-ছেন—"কয়েক বংসর পূর্বে আমাদের শিক্ষিত সমাজের চিন্তাপ্রণালীর আদর্শ এই গ্রন্থ হইতে অনেকটা পাওয়া যাইবে। গ্রন্থানি তজ্জ্যে আদৃত হইবে।"
- ৯। পুরী যাইবার পথে। ডাজার রার শীচুনীলাল বহু বাহাত্র এম, বি, এফ, সি, এস সক্ষলিত ও ১০১০ সালের ২৭শে বৈশাথ রবিবার "সাহিত্য সভার" পঠিত। কলিকাতা ৫৯ নং মৃজাপুর দ্রীট, 'বক্লও' প্রেস হইতে মুদ্রিত ও প্রকাশিত কুলে পুত্তিকা, মৃল্য ৫০ আনা। রার বাহাদ্র পুরী হইতে বেশ উপাদের সামগ্রী পূর্ণ একথানি মৃদ্র প্রেট সাজাইরা সাহিত্যসমাজে উপহার দিরাছেন। তিনি নিজে ডাজার, অনেক সামগ্রী পরিবেশন কার্যা মন্দাগ্র জন্মাইবার লোক নহেন, আরু দিরাছেন, কিন্ত বেটুকু দিরাছেন, তাহা স্বাছ, সরস ও হিতকর। এই কুলে পুত্রক খানি পুরী সম্বন্ধে নানা কৌতুইলোদীপক তত্ত্ব পূর্ণ।
- >। खौषिरगत्र शिक উপদেশ। (हैंपूर्य वीत्रं मूजाविक) श्रीक्रेमानहळा बस् श्रीक । क्रिकाक। ध्वः करका कात्रात्र, मात्रा वर्ष मूजिक स श्रकाणिक।

ডিমাই ১২ পেজা কর্মার ৮১ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ, মূল্য ।do আনা। রমণীগণের অভি নানা উপদেশ সম্বলিত পর্তাবলী।

### সাহিত্য (২) উপন্যাস শাখা।

- ১। সেহম্যী। শীস্রেল্রনাথ গোস্থামী বি, এ, এল, এম, এম প্রণীত। মণিকা প্রেমে (৫১/২ স্কিয়া ট্রীট কলিকাতা) মৃত্তিত এবং ৫০ নং গ্রে ট্রীট চইতে গ্রন্থার কর্ত্ব প্রকাশত ডিমাই ১২ পেজী কর্মার ১৫৭ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ, মূল্য ১১ টাকা সামাজিক উপস্থাস। শীযুক্ত জলধর সেন মহাশয় এই পৃস্তকের ভূমিকা লিখিয়াছেন, এবং পৃস্তকের আদর্শের স্থ্যাতি করিয়াছেন।
  - ২। যত্রায়। সামাজিক উপতাস। এতি কালিদাস মুখোপাধ্যায় প্রণীত। কলিকাতা সাথী প্রেসের প্রকাশিত। সন ১৩০৫। ডবল ক্রাউন ১৬ পেজী কর্মার ২৭৮ পৃষ্ঠায় সম্পূর্ণ, মুলা ১০ টাকা মাত্র। কাগজের মলাটের উপর হাকিম ও আমলাপূর্ণ এজলাসের একথানি ছবি আছে।
  - ৩। ত্রিবেণী। তিনটি ছোট গল্প। এই বিজমবিহারী দাস প্রণীত।
    কলিকাতানিউ ব্রিটনিয়া প্রেসে মৃত্রিত। ১৯০১ সন। ডিমাই ১২ পেজী ফর্মার ৮৪
    প্রচার সম্পূর্ণ। গ্রন্থকার লিখিয়াছেন, "আমি এখন কুল্র কুল্র উপস্থাস লইরা
    সাহিত্যক্ষেত্রে অবতীর্ণ হইয়াছি বলিয়া এক সম্প্রদার পাঠকের নিকট কিঞ্ছিৎ
    অসস্তোধোক্তি শুনিছে পাওয়া যায়।" "মৎপ্রণীত পূর্বে পুস্তক তিনখানি এবং
    বর্তমান "ত্রিবেণী" কেবলমাত্র পাঠক সংগ্রহার্থে লিখিছ—অক্স উদ্দেশ্য সাধনার্থে
    নহে।" সাধু!
  - ৪। লহরী। শীতানরচন্দ্র প্রণীত। কলিকাতা সাম্যাল এও কোং কর্ক মুদ্রিত ও প্রকাশিত। সামাজিক উপস্থাস। ডবল ক্রাউন ১৬ পেজী ফর্মার ১৯১ প্রায় পূর্ব, মূল্য ১০ আনা। (১০০১ সাল)।
  - ৫। বিদার। সামাজিক উপজ্ঞাস। শীকালীপদ মুখোপাধ্যার প্রশীত। কলিকাতা, ৯৮নং হেরিসন রোড, হরফুলর মেসিন প্রেসে মুদ্রিত এবং ২০১ নং কর্ণভালিস ট্রীট, বেলল মেডিক্যাল লাইব্রেরী হইতে শ্রীশুক্লদাস চটোপাধ্যার কর্ত্তক প্রকাশিত। (১৩১০ সাল)। ডবল ক্রাউন ১৬ পেজী কর্মার ৪২৪ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ। মূল্য দেড় টাকা মার্মা।

#### সাহিত্য (৩) নাট্ৰ-শাখা।

- ১। সংসার। সামাজিক নাটক। জীমনোমোহন গোমামী বি, এ প্রণীত ও প্রকাশিত। কলিকাতা চৈত্তা প্রেসে মুক্তিত। ডিমাই ১২ পেজী ফর্মার ১৯৮ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ। মূল্য ১১ টাকা মাত্র। All rights reserved.
- ২। প্রত্যাপ-আদিত্য। (এতিহাসিক নাটক।) স্টার থিয়েটারে অভিনাত। প্রীক্ষারেদপ্রসাদ বিদ্যাবিনাদ এম, এ প্রণীত। ২ নং গোরাবাগান ট্রাট, "ভিক্টোরিয়। প্রেসে" মুদ্রিত এবং ২০০ নং কর্ণওয়ালি ট্রাট, বেঙ্গল মেডিক্যাল লাইবেরী হুইতে প্রিগুরুদাস চট্টোপাধ্যায় কর্জ্ক প্রকাশিত। ডিমাই ১২ পেজী ফর্মার ১৮৪ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ। মূল্য ১০ টাকা। এই নাটক অভিনরের সজে সজে স্থার বিয়াটারের ভাগ্যলক্ষী কিরিয়া আসিয়াছেন। দর্শকপণ রক্ষমঞ্চে বাহা দেখিলা আসিবেন, তাহা হুইতে এই পৃত্তকথানিতে আর একটু বেশী জিনিস আছে। জেনেয়াল এসেম্ব্রের অধ্যাপক প্রিযুক্ত সমাধ্যোহন বস্থ বি, এ মহাশয় এই পৃত্তকের বে ভূমিকাটি লিখিয়াছেন, তাহা নাট সাহিত্যে তাহার স্ক্ষা অ্রুদ্ টির পরিচায়ক; সেই ভূমিকার আলোকপাতে এই নাটকের অন্তর্নিহিত সৌন্দর্য্য ও রহস্ত অনেকের চক্ষে ধরা পড়িবে।
- ৩। আক্রেল সেলামী। সামাজিক প্রহসন এ এলিভিমাহন চটোপাধ্যার প্রনীত। ২০১ নং কর্ণভারালিস ট্রাটে গুরুদাস বাবুর দোকানে প্রাপ্তব্য। ডিমাই ১২ পেজী ফর্মার ৪০ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ। মূল্য। জানা। সন ১০০৭ সাল।
- ৪। লহরী-লীলা। গীতি নাটা। শীললিত্মোহন চটোপাধাায় প্রণীত। কলিকাতা ৬ নং ভীম খোষের লেন, গ্রেট ইডেন প্রেসে মুক্তিত। ১০০৭ সাল। ডিমাই ১২ পেজী কর্মার ৭৯ পৃষ্ঠায় সম্পূর্ণ। মুল্যা। শানা।
- ে। লীরার। সেক্সীরার প্রণীত নাটকের ব্লামুবাদ। শীষভীশ্রমোহর খোব কর্ত্ক রচিত। কলিকাতা ২৯ নং বিভন ট্রাট, এলেম প্রেসে মুক্তিত ও ৩০।৩ রাধামাধব সহার লেন হইতে প্রকাশিত। ১৩০০ সাল। ভবল ক্রাউন ১৬ পেলী কর্মার ১৫৫ প্রায়;সম্পূর্ণ। মূল্য ১১ টাকা মাত্র। অক্রাদ্ধানি অনেকটা মূলের অক্রারী বলিরা বোধ হইল।
- का नीयम-नीयका (পादियात्रिक किंक)। १२।७।२।० कर्नव्यक्षिण होते, निकेटन क्षारत मुजिल এবং ২০ नং व्यक्ति क्षा क्रिका क्रिका भाग स्टेडक, अस्मान

শীগুজ সতীশ চন্দ্র মুখোপাখ্যার কর্তৃক প্রকাশিত। ডিমাই ১২ পেজী কর্মার ৯২ পৃষ্ঠার ধূর্ব। ১৩০৮ সাল। শুলা ॥০ আনা। গোলাপী রঙ্গের পুরু কাগজে পুস্তকথানি বৃদ্ধিত।

#### সাহিত্য (৪) অধ্যাত্ম শাথা॥

সোহং তত্ত্ব। হিমালরবাসী পরমহংস সোহং স্বামীর তত্তাপদেশ। ''শ্ৰীস্ৰ্ব্যকান্ত বন্দ্যোপাধ্যায় ৰি, এল কৰ্ত্তক প্ৰকাশিত। ঢাকা বৈকুণ্ঠনাথ যন্ত্ৰে মুদ্ৰিত। ডিমাই ১ই পেজী ফর্মার ১১ পৃষ্ঠাত সম্পূর্ণ। মূল্য ॥০ আর্না। ১৩০১ সাল। এই পুত্তক থানিতে নিম্নলিখিত বিষয় গুলির সম্বন্ধে উপদেশ আছে। ১। মানৰ ভাষা। २। यानवधर्य। ०। लिजिक धर्म। ८। श्रक्ता ८। श्रहेडक्। ७। माधन उस्। १। धर्म मञ्जूषात्र। ৮। প্রলোভন ত্যাগ। २। নান্তিকতা। ১০। আমুক্তান বা ব্ৰহ্মতত্ত্ব ১১। ব্ৰহ্মাণ্ড গোলক। এই কুদ্ৰ পুত্তকথানি বিশেষ ভাবে উল্লেখ যোগ্য। ষিনি "সোহং স্বামী" নামে এখন পরিচিত, তিনি বঙ্গদেশের স্পরিচিত সারকাস্বীর ভাষাকান্ত বন্দ্যোপাধ্যায় ভিন্ন আর কেহ নহেন ;—একদ, ই হার ব্যান্তের নাল ক্রীড়া ৰাঙ্গালীয় বিস্ময় উৎপন্ন করিয়াছিল, ভারতবর্ষের নানা দেশের রাজস্তবর্গের প্রদন্ত স্বর্ণ भरक्तंत्र फेक्क्न माना भित्रिया यथन होनि त्रक्रमध्य माँखाईएजन, यथन छ।हात्र विमान छैउ एल विभूग প্রস্তরণও প্রহারোখিত অগ্নিকণা বিকেপ করিয়া চূর্ণ বিচূর্ণ হইরা ৰাইড,--তথন দৰ্শক মণ্ডলীর আনন্দ ও বিশ্বয়ের সীমা থাকিত না; কিন্তু সর্বাপেক। বিশ্ববেশ্ব সহিত শোনা গিরাছিল যে এই অসম সাহসী, অনতিক্রান্ত যৌবন, স্পঠিত সুক্ষরদৈহ ব্যক্তি এক দিন কৌষের বাস পরিহিত বোগী সাজিয়া হিমালয়ে পিরাছেন। "সোহং স্বামী"র এই উপদেশ মালা পড়িতে বালালী মাজেরই কৌতুহল হইবার ক্রা। এই পুস্তক থানিতে জ্ঞানের শ্রেষ্ঠছ প্রদর্শিত হইরাছে। খামীজী এক স্থলে লিখিয়া-**एक ;—" (अम मरनबर्ट कांच, मन बाबा कीन जाननारक नार्टिक नार्य मा. जन**ब बीवदक्ष भारे एक भारत ना, जक्राक्ष भारे एक भारतमा. जीव अवः जक्र भन ७ रेखिए प्रम व्याह्म ,-- এक है विश्व ।" ब्राप्तित वक्ति किर्वित किर्ति भारति नाहे, विविध क्रीष्टांटक यम ७ वांटकात व्यागाठत विजया विटर्भन कतित्रांट्या व्याप व्याप-शर्थत व्यानक याजी । छारात्र निकि । श्लीष्ट्रियाह्न ; त्मरे शांच एवं ख्यू ख्यानिन्रश्य अकाचि-প্তঃ यांबीक्रीत मध्य जायता रम विश्वत्य अक्ष्यक स्ट्रिक भाति म। इध्यम जानक जयत चच रम, खान चानक नमम ७५छ। आंध रमः (धान पक्ति कानएक नमनका धानान करन, এবং জ্ঞান বদি প্রেমকে দৃষ্টিদান করে, তবে ধর্মের গৃহস্থানীটার একটা সামপ্রক্ষ থাকে; জ্ঞান যদি প্রেমের পণ্ডী ছাড়িয়া বার তবে ভাষা দাজিক ও অবিস্বাকারী হইরা উঠে, এবং প্রেম যদি জ্ঞানের শাসন অগ্রাহ্ম করে তবে জ্বকতা ও কুসংস্থার ভাষাকে জড়াইয়া ধরে; স্বীর রাজ্যের গৃহহ ও বাহিরে বগড়া চলিলে ধর্মের দেবতা বড় বিপর হন। "সোহংড্ড্"—জ্ঞানের পক্ষপাতী, স্তরাং আমরা বোগীকে প্রেমের পক্ষ হইতে একট্ আর্ত্তনাল শুনাইতে বাধ্য।

- ২। বট্চক্র ও বট্চক্রগীভাবলী। শ্রীখালদাস মুখোপাধ্যার প্রশীত।
  কলিকাভা ৯ নং মৃজাপুর ট্রীট, বঙ্গ কার্যালয় হইতে শ্রীশীনাধ দে দারা মুদ্রিত ও
  প্রকাশিত। ১৩০৭ সাল। মূল্য ৮০ আনা। এই কুদ্র পুত্তক থানিতে পরার ছলে
  চতুর্দশ প্রধান নাড়ী, দশ বায়ুর বিবরণ এবং আধার পদ্ম, স্বাধিষ্ঠান পদ্ম, মণিপুর পদ্ম,
  শ্বাহত পদ্ম প্রভৃতি তান্ত্রিক বিবর বর্ণিত হইরাছে।
- ৩। প্রকৃতি ও পুরুষ বা রাধাক্কঃ। শীদকেলনাথ কর্তৃক বিরচিত, কলিকাতা ১৬৬ নং মাণিকতলা ট্রাটছ "ছাত্র" কার্যালর হইতে শীঘনেশ্রনাথ বহু কর্তৃক প্রকাশিত। ররেল ১৬ পেজী কর্মার ৮৩ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ। মূল্য॥• জানা। সন ১৩০৯ সলে। এই পৃস্তকে রাধা কৃষ্ণের অধ্যাত্ম ব্যাধ্যা আছে—সোলেমানের গানে যে প্রেম তত্ত্বের আভাষ পাওয়া যার,—বৈক্ষব সাহিত্যে সেই আভাষের পূর্ণ বিকাশ হইরাছে—গ্রন্থকার ইহা প্রতিপন্ন করিরাছেন। ক্রিনি রাধাকৃষ্ণের মর্ভ্যালার মধ্যে চিরস্তন অধ্যাত্ম লীলার পরিচয় পাইয়াছেন, এবং তাহা নিপৃশভাবে প্রদর্শন করিয়াছেন।

#### সাহিত্য (৫) কাব্য-শাখা।

১। অরুণ। খ্রীদেবকুষার রার চৌধুরী প্রণীত। কলিকাতা ভৈষজ্য হীব মেসিন প্রেসে (৪ নং রাজা নবকুফের ট্রাটে শোভাবাজার) মৃত্রিত এবং ৪১ নং কৃষিরা ট্রীট হইতে খ্রীযুক্ত রাজেজ্রলাল প্রেলাগায়ার কর্তৃক প্রকাশিত। তবল ক্রাউন ১৬ পেজী কর্মার ৫৮ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ। অরুণ, তরুণ কবির প্রতিভারণের তর্মণালোক। ইহার ভাষাটি সহল ও ক্থবোধ্য,—কবিতা গুলিতে সরস্বতীর ক্রীড়াশীল পর্যের মঞ্জীর ধানি শোনা বার না—কিন্তু শাস্ত্র সৌষ্যা ধীর প্রমনে তিনি বেন তরুণ কবির কুঞ্জে আসিয়া ভাহার লগাটে ভাবী ক্ষণের বর্ম খ্রাকিয়া দিভেছেন। এই কুঞা

মীতিকাব্য থানিতে, বল ভাষার প্রভি, প্রার্থনা, মলর ও কোকিল, রহস্ত, একমাত্র গতি, মহাশক্তি, আছাকাহিনী, সংকল্প প্রভৃতি কতক্তলি কবিতা আছে। পুস্তকের মুলা ১ টাকা, ইহার বাঁধাই, ছাপা প্রভৃতি এত ফুলর যে দরিদ্র প্রস্কারগণের পক্ষে ভাহা আকাশ কুহুম।

- ৈ ২। অর্থ্য। এবিপিন বিহারী নন্দী প্রণীত। ৫ নং রাণধন মিতের লেন, স্তামপুকুর "বিষকোষষয়ে" মুদ্রিত। ড়বল ক্রাউন ১৬ পেজী ফর্মার ২০০ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ। এই পুত্তকথানি প্ৰথম অঞ্জনী, ষিতীয় অঞ্জনী, তৃতীয় অঞ্জনী ও চতুৰ্থ অঞ্জনী, এই চারটি ভাগে বিভক্ত ইহাতে আভাষ, ভ্রাম্ত পথিক, অতীতের স্মৃতি, ভিখারী, ভারতী, ৰাণী বিলাপ, আত্মপরিচয়, নিবেদন, রহস্তা, বেতসীকুঞ্জে, শকুস্তলা, অসিহত্তে ওথেলো প্রভৃতি বহু সংখ্যক ক্ষুদ্র কবিতা আছে। পুস্তকের মূল ১০ টাকা। কবিতা গুলিতে বজীয় সরস্ভীর নৃতন কুপার আলোক পড়ে নাই; হেমবাবু, ন্বীন বাবু পূর্বে যে ভাবে কবিতা লিখিতেন, ইহাতে সেই প্রাচীন ছন্দ ও ধ্বনির ঝংকার উঠিয়াছে, তথ্ব यংকারটি বেহুরে বলিয়া বোধ হইল না।
- ৩। রামচন্দ্র গীতাবলী। কলিকাতী, ৫ নং রামধন মিত্রের লেন, শ্রাম-পুত্র, "বিশকোষ প্রেদে" মৃদ্রিত। প্রস্থকার শ্রীরামচন্দ্র রার—দাতনের রাজা। ইধার মুক্তাম্বন ও বাঁধাই স্কার্ক। ইহাতে অনেকগুলি ধর্ম-সঙ্গাত লিপিবদ্ধ হইরাছে। পানগুলি প্রাচীন ভাবের,—কিন্তু ভক্তি, সহাদয়তা ও সরল প্রাণের উচ্ছ্যাস সেই वाहीन ভारश्वादक नर्यी क्षताम क्रियादह ।
- ৪। জাদম গাথা। এঅধিল চক্র পালিত প্রণীত। কলিকাতা নণ নং নন্দ-क्यात छोष्ट्रीत षिछीत लान, कालिकाष्टिम्-यिनिन् यस मूजिछ। एवल क्लास्थ ১৬ পেজী ফর্মার ২৭৬ পৃষ্ঠার সম্পূর্ণ। মুল্য ১।০ আন।। এই পুস্তকে বিহ্যাভের প্রতি, বিসর্জিত দেব প্রতিমা, কে তুমি? বিদার, সেই এক দিন আর এই এক षिन, जामत, (म), (मर्थ), (मर्थे मूथ, এक। मद्राजिनी, चभरतत्र में क्रांत्र क्रांत्र क्रांत्र विमोन, (मानदब উশ্বস্ত মন, উপকথা? विदाप, कে जूरे, এकটी पृष्ठ, থোকা প্রভৃতি बह मःथाक कविका चाटह।
- शाथा। अर्थितम् माम अनेख। कनिकाला >१मः ममन विष्कत्र लिन, त्वन त्यारम मृजिए। "১७०२। एवन क्रांचन् ১७ भिनी कर्यात १५ भृष्टीत्र

পূর্ণ। মূল্য % আলা। এই পুস্তকে দান, কোন শিশুর প্রতি, এই ত সংসার, হাম বঙ্গে বক্র দৃষ্টি কোন দেবতার, পাগলের দেশ, বাঙ্গালীর দেশ, স্বানীয় বৃদ্ধিম চন্দ্র চটোপাধ্যায়, শান্তি, মিলনে, আমুরা সরলা, প্রভৃতি ৩০টি কবিতা আছে।

- ৬। হরিকথা। এতি প্রত্তা দকা কাদণ প্রেদে মুদ্রিত, ডিমাই আট পেজী ফর্মার ১৪৪ পৃষ্টায় পূর্ণ, মূল্য ॥ আনা, ১৩০৭ সন। এই পুস্তকে প্রাচীন পদকর্তাদের অনুকরণে রাধা কৃষ্ণ লীলা সম্বদীয় নানা রূপ পদ সন্ধিবেশিত হইয়াছে। এমতীর বিপ্রলক্ষ, অভিসার, প্রাবৃটমিলন প্রভৃতি নানা অবস্থার বর্ণনা আছে; পদগুলি যে রাগিণীতে গাঁত হইতে পারে, তাহাও নিদিষ্ট ২২ রাছে।
- ৭। যোগেশ কাব্য। কবি হেমচন্দ্রের কনিষ্ঠ লাতা স্বর্গীয় ঈশান চল্র বন্দ্যোপাধ্যায় প্রণীত। দ্বিতীয় সংস্করণ। কলিকাতা ২০নং রায়বাগান দ্বীটে ভারতমিহির যন্ত্রে সাল্লাল এও কোঃ কর্ত্ক মুদ্রিত ও প্রকাশিত। ১০১০ সাল। ডবল ক্রাউন ১৬ পেজী ফর্মার ১৪৭ পৃষ্ঠায় সম্পূর্ণ, মূল্য ১০ টাকা। পুস্তক থানিতে মৃত গ্রন্থকারের একখানি হাফ্টোনু ছবি প্রদত্ত হইয়াছে।

যোগেশ কাব্য সাহিত্য সমাজে পরিচিত হইলেও এস্থলে তৎসম্বন্ধে কিছু আলোচনা করা যাইতেছে।

মন্দাকিনী ও উর্দ্রিলা— ছই শৈশব সঙ্গিনী; যোগেশের সঙ্গে উর্দ্রিলার বিবাহ হইয়া গেল; কিন্তু মন্দাকিনীর মূর্ত্তি যোগেশ হাদয়ে জার্কিয়াছিল, তাহা মূছিয়া ফেলিতে চাহিল, মূছিতে পারিল না। মন্দাকিনীর নিকট যোগেশ স্বীয় প্রেমের নৈবেদ্য লইয়া উপহার দিতে গেল,—কিন্তু মন্দাকিনী ভাবিল, যোগেশ লালসার দাস সে ইতিপুর্বের যোগেশের বে স্থানিশ্রল চিত্র থানি মানসপটে আঁকিয়া তাহার ললাটে ভাই ফেটা দিয়া বরণ করিয়াছিল, যোগেশের উচ্ছসিত আত্মনিবেদনে সেই চিত্র-পানি মলিন হইয়া গেল; ঘুণার সহিত মন্দা যোগেশকে উপেক্ষা করিল। যোগেশ তদবধি দেশা ভরী হইল;—মন্দার ঘুণা—বিশেষত সে তাহাকে ইন্দ্রিয়মেরী মনেকরিয়াছে, এই যোর মনন্তাপ ও লজ্জায় দূর সমুদ্রতীরে বাইয়া ছঃখদাহনে দগ্ধ ইইতে লাগিল। প্রকৃতির রহস্তময় সোন্দর্যাজাল,—ভাহার স্বীর রহস্তময় অদৃষ্ট, পিতার প্রেতাক্ষা ও ভাগ্যের নির্দ্দেশ, পর পর এ সমন্তই তাহার জীবনের অণ্ডত পরিশাম দেখাইল, কিন্তু প্রেমের উন্ধাদনামর্ম আবেগে সে ভাহা দেখিয়াও দেখিল না—ফাহা

শুনিল, তাহার ধানি মর্দ্ধে স্পর্ণ করিল না; যোগেশ প্রকৃতির অব্বে একটি ফুলের মত নির্জ্জনে বার্থপ্রেম-পরিতাপে শুকাইয়া যাইতে লাগিল। মন্দাকিনীর সঙ্গে ভৈরবীর কুপায় তাহার শেষ সাক্ষাৎকার হইল এবং তাহার অব্যবহিত পরেই সে প্রাণত্যাগ করিল।

গল ভাগ কিছু নহে, উহাতে কুদ্র কুদ্র রেথাপাত বা স্ক্রুবর্ণ বৈচিত্রা উজ্জল 'হইয়া উঠে নাই। বৃহৎ তুলিকার প্রশন্তবর্ণক্ষেপে কাব্যথানিতে একটি হুগম্ভীর मिर्ग क्विया উठियाह । मनाकिनीत मक यार्शनित " भिर प्रभात मय प्र স্থলে মন্দার স্বাদী উপস্থিত ছিলেন; এখানে ইহাদের ভাব বৈচিত্র্য একটু জটিল; কিন্তু এ ছলে কবির অপূর্বে সারল্য চরিত্রবর্গের ভাবসঙ্গতি রক্ষা করিয়াছে এবং . কাবা থানি গুঢ় নাট্য শিল্পথচিত করিয়া তুলিয়াছে। যে যোগেশ মৃত্যু পর্যান্ত মন্দাকিনীকে পূজা করিয়া আসিয়াছে, সে মৃত্যুর পরে স্বর্গে তাহার নিজের স্ত্রীর জস্ত কৈন উন্মন্ত পিপাসায় ছুটিতেছে—তাহা আমরা বেশ বুঝিতে পারি। যে यमाकिनी याशियत जन्म ठाशन पृज्त शूर्व भर्या এक याँ है। हि। यत जन किल নাই, দে কেন যে যোগেশের চিতা নির্কাণের পর স্বীয় স্বামীর কণ্ঠলগ্ন। হইয়া "চিতা যে নিবিল নাথ" বলিয়া অধীরভাবে কাদিয়া উঠিল, তাহা আমরা বেশ বুলিতে পারি। কবি সমস্ত জটিলতাকে সহজ ও সরল করিয়া তুলিয়াছেন। এই কাব্যের সর্বত্ত একটি গার্হস্য পবিত্রতার শুল্র-চন্দন-দীপ্তি আছে। যোগেশের চিস্তা ्कान ममग्र रहीए मर्ट्स रहेला,—निज्ञिष्ठ व्यक्तित्र विकल मित्रिश्य हिंदिल स्म यिक्राय আহকে তাহা ঝাড়িয়া ফেলে,—মন্দাও সেই ভাবে তাহা মন হইতে সভয়ে দুর করিয়া দিতেন,—এই উপমাটিতে সেই পবিত্রতার শুল্র দীপ্তি পড়িয়াছে। আবার এই नात्रीरे यथन गाक्लछाद यागिलात कम्म कांमिएएছन, उथन मरे भविज्ञ नात्री হৃদ্যের কারুণ্যমণ্ডিত হ্ইয়া বরেণ্য হ্ইয়া উঠিয়াছে। মন্দাকিনীর স্বামী যথন তাহাকে বলিলেন, তুমি ধর্ম রক্ষার জন্ম যাহা করিয়াছ, তাহাতে তুমি শ্রহার পাত্রী, কিন্তু তত্রপলকে যোগেশের প্রতি যদি কোনরপ রুড় ব্যবহার করিয়া থাক, তবে তুমি তজ্জা দায়া কি না, তাহা আমি বলিতে পারি না,—তথন সেই একটি কথায় মন্দার স্বামীর উদার মূর্ত্তি অভি হুন্দর হইয়া উঠিয়াছে এবং তিনি যে মন্দার সামী হইবার যোগা, তাহা প্রতিপন্ন হইয়া গিয়াছে।

এই কাব্যের গতি কুদ্র কুদ্র উর্দ্ধিভঙ্গে ললিত মন্থর হয় নাই,—ইহা বেলা

#### छ।, (भोर, ১৩১० ) राजाना भूखत्कन्न विवन्नी।

প্রহারী সমুদ্রের চলোর্দ্রির স্থায় দূর দূর্ভির হইতে আলোড়িত হইয়া আসিরা আমাদিপের হৃদয়ে আঘাত করে। ইহা কাল্লনিক চিত্রপূর্ণ, কিন্তু সেই কল্পনাবাশি মানবচিভের গৃঢ় রহস্তের সঙ্গে নিবিড়ভাবে সংশিষ্ট ; তাহা মনস্থাপ ও নৈরাশ্রকে স্পাষ্ট করিয়া অদৃষ্টের দুর্দ্মনীয়তা প্রতিপন্ন করিয়াছে।

श्रीमीरनभहत्त (मन।

## জীবন-সঙ্গীত।

( > )

বোলোনা আমারে করণ ক্রন্ধন, এ জাবন হায় শুধু স্বপ্ন, ধাঁধা লাগিয়াছে তোমার নয়নে, কাচ নয়, অমূল্য এ রত্ন।

( २ )

এ জীবন সত্য,—জলস্ত এ সত্য মৃত্যু নহে জীবনের শেষ; দেহ ধূলামাটি, আত্থা কিন্তু গাঁটি অজর, অমর ও অশেষ।

( , )

ভোগ তৃষ্ণ। স্বধু ? ভগ্ন মনোরথে হা ছতাশ মোদের কি লক্ষ্য ? এস অগ্রসরি' উন্নতির পথে, হাস্যমুথে প্রসারিয়া বক্ষঃ।

(8)

বিতা যে অক্ল; কাল যায় চলে,

এ হৃদয় যদিও নিভাঁক,
শব ঘাড়ে, ধীরে, বিনা হরি বোলে

যায় চুপে শ্মশানের দিক্।

(৫)

वित त्वर्ष-धर्ष-वर्ष, वीत त्वर्ष मःमात्र व्याहत्व, भिष्ठ भक्ष हर्ष ( लब्जा नाहे मर्प्ष १ ) भनाधांका कि मत्व नीत्रत्व १ ( )

ভবিষ্যের হ্ব: কি বিশ্বাস বাক ? বাহ্যার হয়ে হৈছে, যাক্, কর্মানোগী হয়ে, উন্নামে ইংসাকে হিয়া তুই অভয়ারে ডাক্।

'(9)

মহাজন কত পন্থা গেছে রাথি, শিরে সে চরণ ধূলি ধরি' সমুদ্র সৈকতে পদচিহ্ন আঁকি, এস সবে যাত্রা শেষ করি!

**( b** )

আমাদেরও সেই পদাক্ষের চিহ্ন অন্ত কোন অভাগা জনারে দিবে আহা বল, আশা তরী ছিন্ন জলমগ্ব ভব পারাবারে।

( \$ )

কি তয় ? কি ভয় ? বল "য়য় য়য়, "য়য় ড়য় ড়য়৾" রবে, স্বরিয়া মহেশে, কর্মা কর হেসে, পিতার সুপুঞ্জ সবে।

बीएमरवस्ताथ (मन।

# (याम्तम् जगढि विखान- क्रिं।

তিলোকে অবৈজ্ঞানিক বলিয়া ইদ্লামের একটা অখ্যাতি প্রচার করিতে প্রয়াস পাইয়া থাকে, তাহা যে নিতান্ত অমূলক, তদ্বিষয়ে

কোনই সন্দেহ নাই। অধিকন্ত, আধুনিক সভ্যপ্রভাবনা।
জগতের বিজ্ঞানোৎকর্ষসাধনব্যাপারের উপর সহজ্ঞা
বর্ষ পূর্বা হইতে ইস্লাম কতথানি উন্নতিশীল প্রভাব বিস্তার করিয়াছিল,
অন্ত আমরা তাহার কথঞিৎ আভাষ প্রদানে যত্নবাত্ত হইব।

গভীর তত্ত্বামুসন্ধিংস্ক, বহুদশী ও চিস্তাশীল ঐতিহাসিক পণ্ডিতগণ

ইস্লামের বিজ্ঞানামুশীলন-প্রিয়তার অশেষ প্রশংসা
পাশ্চাত্য পণ্ডিতকরিয়া অসংখ্য গ্রন্থ প্রণয়ন করিয়া গিন্নাছেন;

মণ্ডগীর উদার স্বভাব।

এবং সেই ইস্লামেরই বিজ্ঞানোন্নতির অমৃতমন্ধ

ফলস্বরূপ অধুনা বিজ্ঞানশাল্তে ষ্টরমোৎকর্ষলাভে সমর্থ হইয়া সেই সকল উদারমতি লেথকবৃন্দ শতমুথে ইস্লামের নিকট ক্বজ্ঞতা প্রকাশেও পশ্চাৎপদ হয়েন নাই। আধুনিক সভ্যতা ও উন্নতিশৈলের সর্বোচ্চ-শিথরবিহারী পাশ্চাত্য জাতিসমূহ কোন্ কোন্ বিষ্ণু ইসলামের নিকট কতদ্র ঋণী, অদ্য আমরা তাহাই বিচার করিয়া দেখিবার জন্ম এই প্রবন্ধের অবতারণা করিয়াছি।

অজ্ঞানতামসারি প্রশাস্ত-জ্যেতির্বিমণ্ডিত প্রভাতস্থ্যসদৃশ প্রেরিতপুরুষ মহম্মদ উপদেশ প্রদান করিতেন, "তোমরা
হলরতের উপদেশ। জ্ঞান অর্জন করিবার জন্য বছবান হও, কেননা
থাহারা জ্ঞানী, বাস্তবিক পুণ্যবান তাঁহারাই। থাহারা জ্ঞানের কথা
আলোচনা করেন, তাঁহারা জগৎপিতারই গুণকীর্ত্তন করেন, এবং
জ্ঞানাহসন্ধিৎস্থগণ তাঁহাকেই ভক্তি পুজা প্রদান করিয়া ক্বতার্থ হইয়া
থাকেন। জ্ঞান জামাদিগের, স্বর্গপথে প্রদীপ, মক্ত্রশানে বন্ধু, নির্জ্ঞান

मकी, निर्कामत्न भव्रय-स्क्र। এक याज खानरे मर्कस्थमासित भथ श्रमर्भक, ত্রংথদারিদ্যের অবলম্বন, বন্ধুসমাজের অলঙ্কার, এবং শক্রগণমধ্যে त्रकाकवठ। छानौ व्यक्तिके छग्छ मर्काछक्षन अधिकातं करतन, মহাপরাক্রান্ত লোকপালগণ তাঁহারই দৌহাদলাভার্থ সমুৎস্কুক হন, এবং তিনিই পরকালে পরমশান্তির অধিকারী হয়েন।" "সদেশের জন্ম উৎসর্গিত প্রাণ স্বদেশ-প্রেমিকের পুণ্যরক্ত অপেক্ষা পণ্ডিতের ব্যবহার্য্য-মদী অধিকতর পবিত্র"। "জ্ঞানাবেষণে গৃহত্যাগী মহাপুরুষেরা ঈশ্বরের পথে প্রয়াণ করেন; যাঁহারা জ্ঞানলাভার্থ দেশভ্রমণ করেন, ঈশ্বর তাঁহাদিগকে স্বর্গের পথ দেখাইয়া দেন।" এই বলিয়া তিনি শিষ্যার্গকে জ্ঞানামুদ্রনানে দেশদেশান্তরে গমন করিবার জন্ম সদাসর্বদা উৎসাহিত করিতেন। "স্রপ্তার স্প্রীক্তির কথা অল্লক্ষণ গভীর চিন্তা করিয়া জ্ঞানী वाकि १० वरमत्त्रत উপामनाभिका अधिक भूषा अर्জन कत्त्रन।" "महस्र तकनी मधात्रमान थाकिया अधुरे উপাদ্না করা অপেকাও কিয়ৎকাল বিজ্ঞান এবং তত্ত্বকথা মনোযোগের সহিত প্রবণ করা সমাধক প্রেয়ন্ধর।" "छानीत ७ छानो वाङित नमानत कतिल नेशतित नमानत कता হয়।" "खानरे मानदित मद्गि कुष्टे जनकात!"

কোরাণের মূলমন্ত্রই জ্ঞান। মহাপুরুষ মহম্মদণ্ড পদে পদে জ্ঞানের মহিমা কীর্ত্তন করিয়া গিয়াছেন। কার্যাক্ষেত্রে মোসুমগণ ইহাতে কতদ্র উৎকর্ষ লাভ করিয়াছিলেন, তাহাই আমাদিগের আলোচ্য বিষয়। হেজিরার প্রথম শতান্দী যদিও শক্তিবছল উচ্ছু আল-প্রকৃতি ধর্মা-শক্রদিগের হস্ত হইতে ইস্লামকে রক্ষা করিতে, গ্রীষ্টির সপ্তম শতানী। এবং তাঁহার অমৃতময় প্রভাব অমিত তেজে চতুর্দিকে বিকীর্ণ করিতেই ব্যয়িত হইয়াছিল, তথাপি জ্ঞানালোচনা ও মানসিক উৎকর্ষ সাধনের প্রতি ভক্তপ্রাণ মোসুমগণ কোন প্রকার প্রদাসীক্ত প্রকাশ করেন নাই। নবগঠিত ইস্লাম-প্রাসাদের স্বদৃঢ়

স্তম্ভ-রাজিম্বরূপ মহার্থিবৃন্দের সহিত দলে দলে মুসলমানগণ ষ্থন দিখিজয়ে বহির্গত হইতেন, তথন নাগরিকগণ কাব্য, ইতিহাস, ব্যাকরণ বিদ্যা (Philology), গণিত শাস্ত্র প্রভৃতি বিষয়ে প্রকাশ্য বক্তৃতাদি প্রদানে শ্রোত্বর্গের চিত্তরঞ্জন করিতেন। গ্রাক এবং মোদ্লেম পণ্ডিতগণ প্রকাশ্য সভায় দার্শনিক বাদামুবাদে প্রবৃত্ত হইতেন। যোহান্দ ডামাদেনাদ, (Johannes Damascenus), থিওডোরাদ্ আবুকারা (Theodorus Abocara) প্রমুখ গ্রীষ্টান পণ্ডিতগণ, অজ্ঞানতার প্রিয়দস্তান ইউরোপীয় বর্ষরদিগের দারা নির্দয়রূপে বিতাড়িত হইয়া ইদ্লামেরই শান্তিচ্ছায়াতলে আসিয়া আশ্রয়লাভ করিয়াছিলেন।

কিন্তু হেজিরার দ্বিতীয় শতাব্দী হইতেই ঐস্লামিক জগতে সাহিত্য-বিজ্ঞানেরু সমধিক উৎকর্ষের স্ত্রপাত হয়। খ্রীষ্টিয় অন্তম শতাকী। এতদিনে আব্বাসীয় থলিফাগনের "শাস্তিনগর" (मात-উদ্-मामाय) नामरधम त्राक्यांनी (वान्माम क्रेट्रें के हेउतारभत क्रमूत পশ্চিম দীমান্ত স্পেন পর্যান্ত অসংখ্য বিদ্যালয় সমূহে সমাচ্চন্ন হইয়া গিয়াছিল। এই সমস্ত বিদ্যালয়-বুকোৎপন্ন স্থস্বাত্ন ফলরাশি উত্তরকালে ইউরোপে নীত হয়; এবং বহুশতাকী পরে তাহারি স্থার আসাদনে প্রলুক্ক হইয়া বর্কর ইউরোপীয়গণ নূতন অমৃত ফলের স্থবিশাল কানন স্থাপন করিতে যত্নবান হইয়াছিল।

আব্বাসবংশীয় দ্বিতীয় থলিফা আবুজাফর অল্মন্স্রের (খ্রী: ৭৫৪-৭৭৫) আদেশক্রমে যাবতীয় বিদেশীয় সাহিত্য এবং বিজ্ঞানবিষয়ক গ্রন্থসমূহ আরবী ভাষায় অনুবাদিত হয়। পলিফা স্বয়ং একজন সাহিত্য এবং গণিত শান্ত্রবিদ্ পরম পণ্ডিত ছিলেন। স্থপ্রসিদ্ধ সংস্কৃত গ্রন্থ "हिट्लाभरमण", এवः জ্যোতিঃশাস্ত্র বিষয়ক "সিদ্ধান্ত", আরিষ্টট্ল, টলেমী, ইউক্লিড প্রভৃতি স্থপ্রসিদ্ধ প্রাচীন পণ্ডিতগণের গ্রন্থাবলী,

এতন্তির অন্যান্য গ্রাক, পারসীক, লীরির প্রভৃতি গ্রন্থসমূহ ভাষান্তরিত করিরা তিনি স্বীর পুস্তকাল্র পরিপূর্ণ করিরা রাথিয়াছিলেন। পরবর্তী থলিফাগণও ইহার পদান্ধ সম্যক্ অনুসরণ করিরা আপমারা জ্ঞানোপার্জনে তৎপর হইতেন, এবং জ্ঞানের সম্যক্ সমাদর প্রদর্শন পূর্বক প্রবলবেগে উন্নতিলোত প্রবাহিত করিতে সক্ষম হইরাছিলেন।

সপ্তর্ম থলিকা আকলাহ্-অল্-মামুনের (৮২০৮৩০) রাজত্ব কালে
মাস্লেম সভ্যতাস্থ্য তীত্র-নিশ্বল ময়্থ-মালাবীটিয় নবম শতাকী। মিগুত হইয়া জগতের মধ্যাকাশে সম্পস্থিত হইয়াছিল, এবং শতাকীর পর শতাকী ধরিয়া সেই মধ্যাকাশেই বিরাজ্ব করিয়াছিল। এই সময়ে মোসেমগণই জগতের যাবতীয় জ্ঞানরাশির একমাত্র আধারস্বরূপ ছিলেন। থলিকাদিগের প্রতিনিধিগণ দিখিদিকে ধাবিত হইয়া প্রাচীন জ্ঞানভাগ্রার লুঠন করিয়া বোগদাদ নগরীর গ্রন্থ করিবেন, এবং তল্বারা আরবীয় বিছৎসমাজ্ব আপনাপন বিশ্বশোষিকা জ্ঞানপিপাসার কথঞ্চিৎ শান্তিবিধান করিয়া ধন্ত হইতেন। এই সময়ে মোসেমে রাজ্যের প্রত্যেক অংশে বৃহৎ বৃহৎ বিস্থালয়্ব প্রস্তুকালয়সমূহ স্থাপিত হইতে লাগিল, এবং
দেশীয় বিদেশীয়, ক্ষধ্মী বিধ্মী নির্বিশেষে পৃথিবীর

বিদ্যালয় ও পৃস্তকা-যাবতীয় অধ্যয়নচিকীযুঁ ছাত্রমগুলীর জন্ম তাহা-লয়। দের দার সর্বাথা উন্মুক্ত রহিল। ইউরোপ,

আজিকা এবং এসিয়ার দূর দূরাস্ত হইতে ছাত্রগণ কর্দ্বভা, কায়রো, এবং বোণদাদ, এই জ্ঞানকেক্সত্রেরে সমবেত হইতেন। এমন কি ব্রীষ্টির পুরোহিতগণও বিদ্যাশিক্ষার্থ মোসুেম বিদ্যাশয়সমূহে প্রবেশ করিতেন। পৃষ্টধর্মবাজক-মণ্ডলীর শীর্ষস্থানীয় ইউরোপের সর্বময় কর্বাধর্মজক পোপগণের মধ্যে যাহারা মোসেমুরাজ্য হইতে জ্ঞানো-পার্জন করিয়া উত্তরকালে তেমন উয়ভিমার্গ অবলম্বন করিতে সক্ষম

হইরাছিলেন, পোপ দ্বিতীর সিল্ভেষ্টার (Sylvester II.) তাঁহাদিগের অক্তম। ইনি কর্দভা নগরের এক ইস্লামীর বিশ্ববিদ্যালয়ে শিক্ষালাভ করেন। তদানীস্তন মোসুমগণ জ্ঞানগোরবে পৃথিবার মধ্যে কত উচ্চস্থান অধিকার করিয়াছিলেন, ইহা হইতেই তাহার ষৎকিঞ্চিৎ উপলব্ধি হইতে পারে।

অফ্রিকার স্থাতান অল্মাইজ • (৯৫০-৯০৫) পূর্বে রমিসর ও পশ্চিমে আট্লাণ্টিক মহাসাগরের উপকূল, এই খ্রীষ্টির দশম শতাকী। তিন সহস্র মাইল ব্যাপী, মহারাজ্য একছত্র শাসনাধীনে আনমন পূর্বেক সর্বত্র বিশ্ববিদ্যালয় ও বৃহৎ বৃহৎ পুস্তকালয় স্থাপন করিয়াছিলেন। যে বৈজ্ঞানিক আদর্শ অবলম্বনে তিনি কাইরো নগরে "দার-উল-হেক্মৎ" নামধের বিশ্ববিদ্যালয় স্বয়ং স্থাপিত করেন, বহুশতবর্ষ পরেও ইংলণ্ডের স্ক্বিথ্যাত পণ্ডিতকুল-শিরোভূষণ লর্ভ বেকন তাঁহার "Advancement of Learning" নামক প্রাস্থিত করেন তাঁহার "Advancement তিনি কাইতে সক্ষ্ম হয়েন নাই। আজ ইইতে সহস্ম বর্ষ পূর্বে ইন্লাম এমনি উৎকর্ষ লাভ করিয়াছিল!

মোসেমগণের উন্নতির প্রাক্কালে পৃথিবীর অবস্থা কিরূপ ছিল, তাহা

একবার ভাবিয়া দেখা যাউক। ভারতবর্ষের
সমসাময়িক ভারতঅন্ধনার-যুগ এই সময়ে সবে মাত্র আরম্ভ হইতেইং।

ছিল। ধর্মের মূলতত্ত্ব ঘোর স্বার্থপর ব্রাহ্মণদিগের ক্ষুদ্র গণ্ডীর ভিতর আবদ্ধ হইয়া গিয়াছিল, এবং অস্তান্ত নিম্নুত্র
শ্রেণীর হতভাগাগণের জন্ত ত্র্বোধ-জটিল, সমস্তাপূর্ণ, ঘোর, কুসংস্কারজনক ও চিত্ত-সন্ধীর্ণকারী পৌতলিকভাই একমাত্র ধর্ম্ম বলিয়া প্রকীর্ত্তিত
ইইতেছিল। অমুদার, একাক প্রবল জাতিভেদের বিষ্ময় ফলম্বর্নপ ক্ষত্রিয়,
বৈশ্র প্রভৃতি সকলেই দ্বণিত শুদ্রশ্রেণীভূক্ত হইয়া পড়িয়াছিল। সতীব্রের
উজ্জল দৃষ্টান্ত প্রদর্শনচ্চলে বিধবাগণ (কথন বা স্বেছায়, কথন বা বাধ্য

**ब्रेग्रा), এবং হ্র**র্ফ সংসারভারের হস্ত হ্রতে পরিরাণ পাইবার জন্ম শনিগ্রস্ত পুরুষেরা দল আডমর সহকারে আগুছতা। করিয়া আত্মার সদগতির মস্তকে বজ্রাঘাত করিতে আরম্ভ করিয়াছিল।\* খোপ্রেমগণ যথন সংখ্যাতীত বিশ্ববিদ্যালয় খুলিয়া ইছদী খ্রীষ্টান প্রভৃতি বিধ্যীগণকে व्यापनारमञ्ज खानाञ्गीननरक्टल माम्द्र वाञ्चान कत्रिया गरेया जारा-मिरात्र सहिত একযোগে জ্ঞানার্জনে প্রবৃত্ত হ**ঈয়া উদারতা এবং** সহনশীলতার পরাকাষ্ঠা প্রদর্শন করিতেছিলেন, তথন শঙ্করাচার্য্যের উত্তেজনায় প্রোৎসাহিত হইয়া ঘোর অস্কনশীল প্রাক্ষারা নিরীহ শৌধ্বর্ধর্মকে ভারতবর্ষ হইতে নির্মাুল করিয়া দিতেছিলেন।\* এবং অমাস্থ্যিক, অসভ্যতা ও বর্জরতার লালাক্ষেত্র ই বরোপে ভিন্নস্কাবলম্বিগণ পাশবিক উত্তেজনাবশে পরস্পর কাটাকটি করিয়া মুলতেছিল!

সমসাময়িক ইউ-ाश ; अक्षकात्र-यूग। माहिত্যाদि ललिङ्गास्त्रत म्यापत पृत्त थाकुक, জ্ঞানচর্চ্চামাত্রই তদানীস্তন ইউরোপে ঘোর রাজ-দ্রোহিতাজনক ইন্দ্রজালে পরিগণিত হইয়া বিধি-

মত দণ্ডিত হইত। প্রাচীন রাজগণ-সংস্থাপিত পাঠাগারগুলি ভন্নীভূত, विर मक्ष मिला ७ छ। नित्र निर्माण एका छिः इ छ ताल इहे एक मन्त्र् রূপে ভিরোছিত হইয়া বহুশতাকাব্যাপী ঘন অমানিশার অবভারণা করিতেছিল। স্বনামধন্ত পোপ গ্রাগরী দি গ্রেট রোমরাজ্য হইতে যাবভীয় বৈজ্ঞানিক পণ্ডিতকে নির্ব্বাসিত, এবং অগন্তাস্ সীজার কর্ত্তক বহুবদ্ধে স্থাপিত বিশাল দার্শনিক পুস্তকাগারের দাহক্রিয়া মহা সমা-রোহে স্থেসম্পন্ন করিয়া, "মূর্থতাই ধর্মানিষ্ঠার প্রস্তি," এই ভৎকাল-প্রচলিত প্রবাদবাক্যের সার্থকতা সম্পাদন ক্রিয়াছিলেন। তাঁহার স্থশাদনে সমগ্র রাজ্যে প্রাচীন গ্রীক ও রোমক গ্রন্থাদি পার্ঠ সর্বভো-ভাবে নিষিদ্ধ হইয়া গিয়াছিল; এবং প্রবল নিষ্ঠাবান ঘোর অমুদার

<sup>\*</sup> R, C. Dutt's "History of India."

খৃষ্টানগণ মূর্যতাপিশাত কর্তৃক অন্ধউৎসাহে অনুপ্রাণিত হইয়া দর্শন, বিজ্ঞান, সাহিত্যাদি শাস্ত্রের উপর তীব্র অভিসম্পাত বর্ষণ করিয়া ধর্ম সঞ্চয়ের চেষ্টা প্রদর্শন করিতেন। এইরূপেই ইউরোপের স্থদীর্ঘ অন্ধকারযুগের উৎপত্তি হইল। কিন্তু উত্তরকালে ইস্লামেরই জ্ঞানস্থ্য ইউরোপের আকাশমার্গে সমুদিত হইয়া সে অন্ধকারের অবসাক করিয়াছিল।

কিন্তু চিরন্তন ঐকান্তিক বিজ্ঞানাসক্তিই মোসুম জাতির মানসিক উৎকর্ষের প্রধান পরিচায়ক। থলিফা আব্জাফর জোতিংশার। অল্ মন্স্রের সময়ে (৭৫৪-৭৭৫) মাশ-আল্লাহ্ এবং মহম্মদ অল্ নেহাভেন্দী নামক ফুইজন প্রসিদ্ধ জ্যোতিরী আঁবিভূ ত হয়েন। অন্তরীক্ষবিহারী ভ্রাম্যমান জ্যোতিদ্ধমালার হিতি, গতি, প্রকৃতি এবং অবস্থান নিরূপণার্থ নানা প্রকার বন্তের ব্যবহার বিশদরূপে ব্যাথা করিয়া মাশ-আল্লাহ্ যে সকল গ্রন্থ প্রণয়ন করিয়া গিয়াছেন, আধ্নিক জ্যোতির্বিদ্যাণ তাহা পাঠ করিয়া গ্রন্থিত ও চমৎকৃত হইয়া থাকেন। আহ্মদ-অল্-নেহাভেন্দী স্বীয় পরীম্বালন্ধ সিদ্ধান্তের উপর নির্ভর করিয়া অল্ মুস্তামাল নামক যে গ্রহনক্ষত্রের গতিন্থিতিকাল নিরূপক তালিকা ( Astronomical Table ) প্রস্তুত করিয়াছিলেন, তাহা যে গ্রীক অথবা হিন্দু জ্যোতির্বিদ্যা অপেক্ষা আধকতর উন্ধতির পরিচায়ক, তিন্ধিয়ে কোন সন্দেহ নাই।

থলিফা আবহুল্লাহ্ অল্নাম্নের (৮১৩-৮৩৩) শাসনকালে প্রসিদ্ধ গ্রীক জ্যোতির্বিদ্ টলেনী কৃত Altamget এর অমুবাদ দ্বিতীয় বার প্রকাশিত হয়। মহম্মদ অল্থারেস্নী এই সময়ে সংস্কৃত জ্যোতিন্ধীয় ভালিকা ও "সিদ্ধান্তের" স্টীক অমুবাদ প্রকাশিত করেন। সেন্দ, ইয়াহ্ইয়া, থালেদ প্রভৃতি স্থবিখ্যাত জ্যোতিষীগণ প্রচলিত তালিকার বহু ভ্রম সংশোধন করিয়া যশংশী হইয়াছিলেন। বিষুবকাল, এইণ,

র্মকেতুগণের আবির্জাব তিরোভার প্রভৃতি অস্তরীক্ষ সম্বন্ধীর ঘটনা-বৈচিত্র্য বিষয়ক মোসুম পরীক্ষাসিদ্ধান্ত আবিষ্কার পরম্পরা দ্বারা জগতে অভিনব জ্ঞানালোক প্রজ্ঞালিত করিয়াছিল।

এই সমধে জ্ঞানবীর আলফিন্দি জ্যামিতি, গণিতবিল্পা, দর্শনশাস্ত্র, নার্ত্ত্ব (Meteorology), আলোকবিজ্ঞান (Optics) এবং আয়ুর্বেদ-শাস্ত্র সম্বাদ্ধ অন্ন ২০০ গ্রন্থ প্রাধ্বন করেন। এরপ সর্বশাস্তবিশারদ অসীম প্রতিভাসম্পন্ন মহাপণ্ডিতের কথা সচরাচর প্রত হওয়া যায় না। পণ্ডিত আরু মা-আশর আজীবন জ্যোতিঃশাস্ত্রের গভীর তত্ত্বান্থেণে ব্যাপ্ত ছিলেন, এবং তাঁহার সক্ষ্ম গণিত, জ্যোতিষ্কীয় তালিকা সমূহ অন্তাপিউক্ত শাস্তের একটী প্রধান অবলম্বন বলিয়া পরিকান্তিত হইয়া থাকে।

অলমামুন এবং তাঁহার পরবর্তী থলিফাছরের সময়ে মহম্মদ, আহনদ এবং হাসান নামক ভাতৃত্রর জ্যোতিজমালার আমুপাতিক গতি, রাশিচকের মধ্যরেথার বক্রতা প্রভৃতি বিষয়ে স্ক্র স্ক্র গণনা ছারা যে সক্ল স্থির সিদ্ধান্তে উপনীত হইয়াছিলেন, আধুনিক ইউ-রোপীয় জ্যোতির্বেজ্ঞাগণের সিদ্ধান্ত অপেক্ষা সেগুলি কোন ক্রমে কম নির্দোষ নহে। চক্রমগুলের চক্রপথের দ্রতম বিন্দুর দ্রত্ব ইহারাই সর্ব্বেথমে নির্ণয় করেন। খ্রীষ্টীয় রাজ্যসমূহে ধরণীবক্রের অসীমতা এবং সমত্রলতার কথা প্রতিষ্ঠালাভ করিতেছিল, তথন ইহারা লোহিত্ত সাগ্রের উপক্ল হইতে এক ডিগ্রীর পরিমাণ গ্রহণ করিয়া সমস্থ পৃথিষীর পরিধি নির্ণয় করিয়াছিলেন।

পণ্ডিত-প্রবর আবুল হাসন দ্রদর্শন যন্তের আবিষ্ঠার করেন। পরে

শারাগা এবং কায়রোর অন্তরীক্ষ-পরিদর্শনাগারে

দ্রদর্শন বর।

Observatories) উহা ব্যবস্থত হইয়া অভ্যাশ্চর্য্য

अक्न अनान कतिशाहिन।

### छा, माच, ५७५० । (माम्राम-कर्गाष्ट विकान-हर्छ।

मनम न जाकोत आत्रख "भारतम हिलमी" जन्ता जाकि जाकि । কালে জ্যোতিঃশান্ত সর্ব প্রথম একটা স্থসমন্ধ **धात्राना** कि क ধারাবাহিক বিজ্ঞানে গঠিত হইয়াছিল। বাতানী-ভো়োতিঃশাস্ত। রচিত জ্যোতিষীয় তালিকাসমূহ লাটন ভাষায় অমুবাদিত হইয়া বছশতাদী ধরিয়া ইউরোপীয় জ্যোতির্বিদ্যার সর্ব-প্রধান ভিত্তিরূপে পরিগণিত ছিল। জোতিষ-সম্বলিত গণিত শাস্ত্র এবং ত্রিকোণমিতির স্কাগননায় জ্যামিতিক "জ্যা"র পরিবর্তে "সাইন" এবং "কোসাইনের" (Sine and Cosine)

সাইন ও কোসাইন। আবিষ্কার এবং ব্যবহার করিয়া ইনি গণিত-শাস্ত্রের ইতিহাসে উচ্ছল অক্ষরে অপানার নাম অঙ্কিত করিয়া গিয়ীছেন।

দশম শতাকীর শেষভাগে যে সকল জ্যোতির্বিদ পণ্ডিতগণ বোন্দাদ-नगरत वाविज् उ रहेग्राहिलन, जनाक्षा वालि এवः वाव्ल रामान वालि এই তুজনের নাম উল্লেখ না করিলে সংক্ষিপ্ত বিবরণও অসম্পূর্ণ থাকিয়া চন্দ্রমণ্ডলের কুটিলগতি বিষয়ক অসংখ্য ফ্রন্ম গণনার জন্ম ইঁহারা বিশেষরূপে প্রসিদ্ধ।

এই উন্নতিশীল বিজ্ঞানামুশীলন যে শুধু বোন্দাদনগরেই আবদ্ধ ছিল এমত নহে; ইস্লামের নির্মাল জ্যোতি: পৃথিবীর বিজ্ঞান-চর্চার বিস্তার। य ए द्वारन विकीर्ग इहेशारह, मक्त मक्त खाना-লোক তত্তৎস্থান সমাক আলোকিত করিয়াছে। আফ্রিকার ফেজ, ষিক্নাদা, দেগেলমেদা, তাহারত, লেখদেন, কার্রোয়ান, এবং मर्काभित काग्रत्रा महानगरी विकानहर्कात এक এक वि अधान श्रधान কেন্দ্র বলিয়া খ্যাত ছিল। খোরাদান, ট্রান্সক্রিয়ানা, তাবরিস্তান প্রভৃতি पूत्र पूत्रांखरत्र मूमनमान तांकाममृष्ट जमःथा (कांजियो, भनांर्थिष् धरः গণিতশান্ত अस अस পরিগ্রহ করিয়াছিলেন। তন্মধো अল্কোহী ও আৰু अवाकाई সর্বপ্রধান। অলকোহী গ্রহনিচয়ের গতিবিধি

नभाक भर्याात्नाहन। कतिया भोत्रहळकमः काञ्च य नानाविध न्छन তত्ত्वत व्याविकात्र कतियाहित्वन, जवात्रा क्याजिः भारतत्र मर्छ्भकात्र माथिज रहेशा हिल।

ত্রিকোণমিতির দেকাণ্ট ও ট্যান্জেণ্টের (Secant and Tanjent) আবিষ্কার করিয়া থোরাসান নিবাসী আবুলওয়াফা দেক।উ ও ট্যান্- চিরম্মরণীয় হইয়া গিয়াছেন। এতদ্ভিন্ন চন্দ্র-(बन्धे। মণ্ডলের গতিবিধি সম্বন্ধে গ্রীক জ্যোতির্বিদ্ টলেমীর নান্য ভ্রমাত্রক অনুমান সংশোধিত করিয়া তিনি যে সকল অভিনব তত্ত্বের আবিষ্ণার করিয়া গিয়াছেন, পরবর্তী ছয়শত বর্ষের মধ্যে ও ইউরোপীয় পণ্ডিতগণ তাহার মর্মা অবগত হইতে সক্ষম হয়েন নাই। তাঁহার জিমুশ্-শামিল (Zij-ush-Shamil) গ্রন্থানি বিজ্ঞান-চর্চার অক্লান্ত পরিশ্রম, অধ্যবদায়, এবং গভীর গবেষণাপূর্ণ পরীক্ষা-পরম্পরার একটা অভভেদী কীর্ত্তিস্তম।

এতদ্বিন্ন তদানীস্থন পদার্থ বৈজ্ঞানিক মহাপণ্ডিত আবহুর রহমান युको नक्क व्यास्त्र मी शिविद्धारन प्रमधिक छे ९ वर्ष नक्ज भावा ह ' লাভ করিয়াছিলেন। দীপ্তিবিজ্ঞান।

थिकिकां जा अया भव्या विकास विकास कि । कि कि कि শীলনে তাঁহারা প্রজাবুনের সহিত একযোগে त्राज्ञ भति वाद्र উৎসাহ প্রকাশ করিতেন। থলিফা আবু মহম্মদ विख्वान-ठर्का। আলি অলমুক্তাফির (১০২-৯০৮) পুত্র যুবরাজ काफत (পরে আবুল ফজল জাফর অল্মুক্তাদির বিল্লাহ, ৯০৮-৯৩২), ধুমকেতুগণের উচ্চু ভাল গতিবিধি বিষয়ে একখানি বহুমূল্য গ্রন্থ প্রণয়ন करत्न।

व्याक्षिकाम (मार्ट्सम भागनाधीरन विकानहर्का कि পরিমাণে উৎকর্ষ माछ कत्रिमाहिन, তাহা বৈজ্ঞানিক প্রতিত সমাজের উচ্ছালতম রত্ন

रेव्रन रेडेनारमत्र विषय आरमाहना क्रिति मग्रक् छेशमिक इरेरव। ইনি কার্রোর পঞ্মও ষ্ঠ খলিফা অল্অাজিজ (৯৭৫-৯৯৬) ও অল্ হাকিমের সময়ে (১৯৬-১০২১) আবিভূতি হন। নিতাব্যবহার্যা সমন্ধ-নিরূপক ভারযুক্ত দোলকের (Pandulum) বিচিত্র ধর্মের আবিষ্ণার করিয়া, আধুনিক সভ্য জগৎকে ইনি কৃতজ্ঞতা-• (प्रांतक। ্ল পাশে আবদ্ধ কর্ণরয়া রাথিয়াছেন। ইহায় প্রণীত "জিযুল-আকবর-উল-হাকিমী" নামক জ্যোতিষ গ্রন্থ টলেমী কল্পিত প্রাচীন জ্যোতিঃশাস্ত্রের ভ্রমাত্মক যুক্তিসমূহ সম্পূর্ণরূপে খণ্ডিত করিয়া দিয়াছিল। উক্ত মহামূল্য গ্রন্থ গ্রীস্, পারস্ত,\* মঙ্গোলিয়া,এমন কি চীন দেশেও সাদরে গৃহীত হইয়াছিল। ইঁহার মৃত্যুর কিঞ্চিন্নাম ত্ই শতাকী পরে চীন জ্যোতিষী কে-চু-কিং উক্ত গ্রন্থ হইতে নূতন তত্ত্ব শিক্ষা করিয়া যশঃসী হইয়াছিলেন া

অশেষ প্রতিভাসম্পন্ন ইব্নেইউনাস নানা শান্তে স্থপিতিত ছিলেন। कार्या उदिन मिष्करुख विनिया कथिल रुरेया हिन। ১০০৯ थृष्टी स्क रैंशत स्कृ रय।

পদার্থবিদ্যা সম্বলিত আবিদ্ধার পরম্পরা।

আলোক রশ্মির বক্রগভি।

ইহার কিছুকাল পরে পণ্ডিত-প্রবর হাসান এপদার্থবিত্যা-বিষয়ক অসংখ্য অভিনব তাত্ত্বের আবিষ্ণার করিয়া, তদা-নান্তন পণ্ডিত্রসমাজকে স্তন্তিত ও চমৎক্বত করিয়া দিয়াছিলেন। বায়ুমণ্ডলে প্রবেশমাত্র আলোক-রশ্মি বক্রগতি প্রাপ্ত হয় (Refraction), এ বিষয় ইনিই সর্বপ্রথম আবিষ্কার করেন। গ্রীক পণ্ডিত-গণের বিশ্বাস ছিল যে, আলোকরশ্মি চকু হইতে

<sup>\*</sup> বিখ্যাত পারসীক জ্যোতিষী কবি ওমার থৈয়াম এই গ্রন্থথানি পারস্য প্রদেশে প্রচলিত করেন।

<sup>া</sup> প্রাচীন সভাতার জন্ত মোসেমগণেরই নিকট চীন অনেকটা ঋণী।

বহির্গত হইয়া বাহ্যবস্তুর উপর পতিত হয় বলিয়াই দর্শনামুভূতি ক্সে । কিন্তু মহাপণ্ডিত হাদানের মতে আলোক বাহ্-पर्मनायुज् छ। বস্তু হইতে বহিৰ্গত বা প্ৰতিফলিত হইয়া চকু-विक्रियंत्र गक्षा প্রবিষ্ট হয়; এইরূপে দর্শনাতুভূতি জন্মিয়া **शांक**। বৈজ্ঞানিক পরাক্ষাদ্বারা ইহা প্রতিপন্ন করিয়া তিনি গ্রীকদিগের ভ্রাস্ত বিশাদের মূলে কুঠারাঘাত করেন। চক্ষুর অভ্যস্তরস্থ জালবৎ ত্ক-विरम्थरे (Retina) मृष्टिमक्तित উৎপাদক, এবং সেই 5季! ত্বক হইতে মন্তিদ্দশংযুক্ত শিরা বিশেষের (optical nerve) অমুভূতি-বাহিকাশক্তির প্রভাবেই যে দর্শনামুভূতি জন্মে, পরীক্ষাদারা এই স্থিরসিদ্ধান্তে তিনিই সক্ষপ্রথম উপনীত হয়েন। কি প্রকারে চুই চকুর দাহায়ে আমরা একই মাত্র বস্তু নিরীক্ষণ করি, তাহাও তিনি সর্বপ্রথম বিশদরূপে বুঝাইয়া দেন। \* বায়ুমণ্ডলের গুরুত্বের সহিত তাহার গাঢ়ত্বের অবিচ্ছেন্ত সম্বন্ধ, বায়ুর গাঢ়ত্বভেদে বায়ুমণ্ডল। তন্মধ্যস্থিত পদার্থের গুরুত্বের তারত্যা, উচ্চতামু-সারে বায়ুমগুলের গাঢ়ত্বের ন্যুনতা, বায়ুর গাঢ়তামুসারে তৎপ্রবিষ্ট আলোকরশির বক্রগতি প্রাপ্তির ন্যুনাধিক্য,— এই সকল পদার্থ-ধর্ম্বের কথা বৈজ্ঞানিক পণ্ডিত হাসানেরই উর্বার-মন্তিফ সমৃদ্ভূত। তিনি শক্ষ্য कत्रियाहित्नन (य স্বাভাবিক উদয়ান্তের কিরৎকাল পূর্বেই জ্যোভিষ-মালার উদয়ান্ত অনুভূত হইয়া থাকে; এবং বায়ুমণ্ডলে আলোকরশির ৰক্ৰগতিই যে তাহার একমাত্র হেতু, তাহা তিনিই নির্ণয় করিয়া পিয়াছেন। আলোকরশার এই বিচিত্র বক্রগতি, এবং বায়ুমণ্ডল हरेट जवस्राविष्टार जाराज मन्भूर्व श्रेष्ठिक्नन, (भाष्णि। এতত্তয়ের সংমিশ্রনে কিরূপে গোধৃলির মনোহর

<sup>\*</sup> इँ शत्र हक्ष्विकान विवयक अञ्चावनो देखेरत्रार्थ स्थात्रिक । Risner काश्त्र अकथानि मारित्म अञ्चाम करत्रा ।

चालाक देविहित्तात डेश्निख इत्र, এ विषय পश्चित्रधान हामानहे विमान-রূপে ব্যাখ্যা করেন। "জ্ঞানের তুলাদণ্ড" নামক তাঁহার বিখ্যাত গ্রন্থে ভিনি গভিশক্তি-গণিত (Dynamics) সম্বন্ধে এক বিস্তারিত আলোচনা প্রকাশিত করেন; স্থতরাং, গতিশক্তিগণিত যে ঁ গতিশক্তি গণি গু,। একমাত্র ইউরোপীয় পণ্ডিতগণেরই একচ্চক্র অধিকার, একথা কোন ক্রমেই সঙ্গত নহে। মাধ্যাকর্ষণের '(Gravitation) কথাও তিনি সম্পূর্ণরূপে পরিজ্ঞাত মাধ্যাকর্ষণ। ছিলেন; এবং মাধ্যাকর্ষণকে তিনি "শক্তি" বলিয়া স্বীকার করিয়া গিয়াছেন (মহাত্মা নিউটনের বহুশতান্দী পূর্বে !)। ভাসমান ও মজ্জমান পদার্থের অবলম্বিত শক্তি; পতনশীল পদার্থের বেগ, ভ্রমিত পথের পরিমাণ এবং পতনকাল, এই তিনের মধ্যে ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ (Laws of falling bodies), এবং কৈশিক আকর্ষণ (Capillary attraction) এই সকল স্কল পদার্থবিজ্ঞান-তত্ত্বের আলোচনা, তাঁহার অতি পরিষ্কার মাধ্যাকর্ষণ শক্তি <sup>'</sup>বোধেরই পরিচায়ক। স্থবিখ্যাত দিদ্ধান্ত-শিরোমণি প্রণেতা ভাষরাচার্য্য মাধ্যাকর্ষণের বিষয় অবগত ছিলেন বটে, কিন্তু তাঁহারও শতাধিক বর্ষ দূর্বের মুরীয় পণ্ডিত হাসান মাধ্যাকর্ষণশক্তির রহস্ত উদ্ঘাটিত করিয়াছিলেন।\* এ বিষয়ে পৃথিবীর কোন পণ্ডিতই তাঁহার অগ্রগামী. হইতে সক্ষম হয়েন নাই। এই অসাধারণ শক্তি-সম্পন্ন জ্ঞানবীর পণ্ডিত হাসানের অলোকিক প্রতিভার আবিষ্কার ইউরোপে পদার্থবিষ্ঠার ভিত্তি-পদার্থ বিদ্যার ভক্তি। क्राप मानद्र गृशीज श्रेशाहिन।

<sup>· \*</sup> ভাকরাচার্য্যের সিদান্ত-শিরোমণি ১১৫০ সালে লিখিত হর—[ভারতী, ঝাবাঢ়, ১০১০, ২০৫ পৃঃ]। হাসানের আবির্ভাষ কাল ১০৪০।

প্রভৃতি মহানগরীতে অসংথা বিখ্যাত বিশ্ববিদ্যালয় ও বৃহৎ বৃহৎ সাধারণ পুস্তকালয় বিদ্যোৎসাহী মোসুেমগণের

ম্পেনরাজ্যে। বিজ্ঞান-চর্চা। বিজ্ঞান ক্ষ্ধার নিবৃত্তি করিত। একমাত্র গ্রাণাডাতেই ১৮টা উচ্চ এবং ২০০টা প্রাথমিক

विमागम ছिल। कर्फভानगरत १० ही माधात्रण পाठांगात, এवः এकही পঞ্চলকাবিক গ্রন্থে পরিপূর্ণ পুশুকালয় ছিল। ইউরোপের মধ্যযুগ এই সকল জ্ঞানকেন্দ্র-প্রবাহিত সভাতা-স্রোতাভিঘাতে উত্তেজিত হুইয়া, অন্ধকার-যুগের বর্ষরতা ও অবনতির গভীর পক্ষসাগর হুইতে পরিত্রাণ পাইবার জন্ম সচেষ্ট হইয়াছিল। এই সময়ে ইউরোপের দূর দূর্রাস্ত হইতে তুই একজন করিয়া উৎসাহী ছাত্র আরবীয় অধ্যাপক-গণের নিকট বিত্যাশিকার্থ আগমন করিতে আরম্ভ করেন। এমন কি থ্রীপ্ত জগতের ধর্মগুরু পোপগণেরও কেহ কেহ মোসুম বিজ্ঞানাগারেই স্থানিত হইয়াছিলেন। জ্যোতিষ, ভূগোলশাস্ত্র, রসায়ন, বিজ্ঞান সাহিত্যা, ইতিহাস, গণিত প্রভৃতি স্পেনীয় মোসুমেগণ অসাধারণ অমুরাগের দহিত অমুশীলন করিতেন। কাব্যকলালোচনা ও কবিতা त्रह्मा क माधात्रन त्मारकत कौड़ा विरमस्यत मस्याहे में डिया शिया हिल। इम्नात्मव ब्राट्का खानात्नाचना वा खाननान मयदक खां व वर्षा धर्मा खन ছিল না; এমন কি ইউরোপীয় পণ্ডিত Renanএর মতে, আধুনিক জগতও ইস্লামের এতথানি উচ্চ আদর্শের অনুসরণ করিয়া ইস্লামের अमञ्रा উদারতা প্রদর্শনে সক্ষ হয় নাই! ইস্লামের মাহাত্ম্যের ইহা धकी श्रेष्ठ पृष्ठा खण्म।

এই সময়ে স্পেনে ওমার ইব্নে খালেদ্ম, ইয়াকুব ইব্নে তারিক, মোসেমা-অল্-মগরবী, আবুল অলিদ প্রভৃতি প্রসিদ্ধ পদার্থ বিজ্ঞানবিদ্ পঞ্জিগণ প্রতিভাবলে পৃথিবীর বৈজ্ঞানিক সমাজে প্রাতঃশ্বরণীয় হইয়া গিয়াছেন। স্থবিখ্যাত গণিতশাস্ত্রজ মহাপত্তিত জাবর ইব্নে আফিয়াহ আকাশমার্গে ভ্রামান জ্যোতিষ্ণমঙলী পর্যাবেক্ষণার্থ সেভিলী নগরে

"জিরাল্ভা" নামক একটা অত্যুক্ত হুর্গচুড়া
অস্তরীক্ষ-পরিদর্শনানির্মাণ করেন। ইহাই ইউরোপের সর্বপ্রথম
গার।

অবজারভেটরী জ্ঞানবীর মোসুমগণ স্পেন হুইতে
বিতাড়িত হুইলে বর্ষর মূর্থ স্পানিয়ার্ডগণ সেই উচ্চ গৃহের দ্বারা কিং
স্কিন্তের মুন্তরিষ্ণ স্থানিয়ার্ডগণ সেই উচ্চ গৃহের দ্বারা কিং

বিতাড়িত হইলে বর্ষর মূর্থ স্পানিয়ার্ডগণ সেই উচ্চ গৃহের দারা কি করিতে হয় ব্ঝিতে না পারিয়া তাহাকে ঘণ্টাগৃহে পরিণত করিয়াছিল! হায়রে বিধির লীলা!

পশ্চিম আফ্রিকাও এ সময়ে নিশ্চেষ্ট ছিল না। তথায় অসংখ্য দার্শনিক ও বৈজ্ঞানিক পণ্ডিত জন্ম পরিগ্রহ করিয়া দেশের মুখোজ্জল করিতেছিলেন। কিউটা, টাঞ্জিয়ার, ফেজ, মরকো প্রভৃতির বিশ্ববিদ্যালয় সেভিলী, কর্দ্দভা, গ্রাণাডা প্রভৃতি বিশ্ববিদ্যালয়ের সমকক্ষ হইয়া উঠিয়া-ছিল। বাহুল্য ভয়ে আমরা এ সকলের বিশেষ বিবরণ প্রদান করিলাম না।

একাদশ শতাব্দীর প্রারম্ভকালে মধ্য-এর্নিয়ায় যুগান্তর উপস্থিত হইয়াছিল। ভারত-বক্ত গজনীপতি স্থল্তান মাহমুদ যে কেবল বাহুবলে

মধ্য-এসিয়া, আফগানরাজ্ঞা ও পারশু প্রদেশ স্থীয়

মাহমুদের বিদ্যোৎএকছত্র শাসনাধীনে আনয়ন করিয়াছিলেন, এম্ভ

নহে; অধিকস্ত, বিভোৎসাহবলে তিনি আপনার

রাজসভাকাশ অসংখ্য প্রতিভাজ্যোতিক্ষমালায় পরিশোভিত করিয়া
দিখিদিক্ জ্ঞান ও সভ্যতার বিমলালোকে সমুদ্রাসিত করিয়া তুলিয়াছিলেন। কবিকুল-চূড়ামণি ফারদৌসী, দাফিকা, আন্সার, এবং
সর্বশান্তবিশারদ অল্বেরুণী প্রভৃতি রক্তরাজি ইহারি রাজসভা অল্ভত
করিয়াছিলেন। অল্বেরুণী বহু শতাকী পূর্বে যে দার্শনিক, ও
বৈজ্ঞানিক আদর্শে নানাশান্ত বিষয়ক অশেষ পাভিত্যপূর্ণ গ্রন্থসমূহ
রচনা করিয়া গিয়াছেন, তাহা আধুনিক পাশ্চাত্য-পণ্ডিতগণেরও

- 2¢'>

অপ্করণায়। ইঁহার "অল্কান্ন-মস্দী" (Canon Masudlicus) নামক জ্যোতিষ গ্রন্থানি, পুজান্পুজাতত্তানুসন্ধান ও গভার জ্ঞানানুশীলনের একটা বিশাল কীত্তিমন্দিরস্বরূপ। প্রাচান গ্রীক-কর্ষিত বিত্যাক্ষেত্র হইতে মোদ্রেমগণ কত বিভিন্ন প্রকার স্থরদাল ফল উৎপন্ন

औक विमा।। করিয়াছিলেন, তাহা বেরুণীর বহু বিখ্যাত গ্রন্থ

' হইতে অবগত হওয়া যায়। এতদ্বিন্ন উচ্চগণিত, কাল বিজ্ঞান (Chronology), ভূগোল, পদার্থবিভা, রসায়ণ প্রভৃতি বিষ্ণে বহুবিধ গ্রন্থ তিনি প্রণয়ন করেন। ভারতবর্ষে ভ্রমণ করিয়া, বোন্দাদ ক্রেণের দর্শন-বিজ্ঞান-সাাহত্যাদির বিনিময়ে তিনি সংস্কৃত ভাষা, ভারতায় সাহিত্য, विकान पर्ननापि नमाक्काप आयुष क्रिया नदेश ছिलन, এবং তদ্বিষয়ে কএকথানি গ্রন্থ রচনা করেন। দিখিজয়ী আলেকজভার ও তাঁহার পরবর্ত্তী গ্রীক সমাটগণের সমসাময়িক গ্রন্থাদিতে জ্যোতিঃশান্তে হিন্দু-

গণের অসাধারণ্ড সম্বন্ধে কোন উল্লেখ দেখা যায় ছিন্দু-জ্যোতিষ।

ना, हेश वफ़रे वान्टर्यात्र विवयः व्यथि अशिष्र একাদশ শতাকীতে ভারত-ভ্রমণ করিতে আসিয়া পরিব্রাজক অল-বেরুণী ভারতে বহুবিধ প্রাচীন গ্রীক সংস্কারের চিহ্নবিশেষ লক্ষ্য করিয়া-ছিলেন। এই কারণে সেডিলট প্রমুখ ইউরোপীয় পণ্ডিতের। অমুমান করেন যে হিন্দুগণও পুরাকালে বিদেশীয় উন্নত সংস্কারের কিছু কিছু আপন প্রকৃতি অমুসারে রূপান্তরিত করিয়া লইয়াছিলেন।

স্থলতান মাহমুদের বংশধরগণ তাঁহারই আয় বিভোৎসাহী ছিলেন। সেল্জুকীয় রাজগণের অভ্যুত্থানকালে বিজ্ঞান এবং কলাচর্চার সমধিক উन्नि इहेग्राहिल। ञ्लालान कालानू किन मालिक সा≅्(>०१०-৯२) ও তদীয় স্থোগ্য মন্ত্ৰী থাজা হাদান অসংখ্য জ্যোতিৰ্বিদ্; ঐতিহাদিক, मार्गिनिक, এবং कविमछनौछ त्राक्षमछ। পরিপূর্ণ, করিয়াছিলেন। এই সমূদে স্থবিখ্যাত জ্যোত্ি্বী-কবি ওমার খৈয়াম এবং পণ্ডিত আবদর

রহমান অল্ হাজিনীর তত্ত্বাবধানে প্রাচীন ভ্রমসন্থল পঞ্জিকার বে সংস্কার

হইয়াছিল, ছয় শতালী পরবর্তী গ্রীগরীয় সংস্কৃত
পঞ্জিকা-সংস্কার।
পঞ্জিকাও তত্ত্ব স্ক্র ও নির্দোষ হইতে পারে
নাই। (Sedillot)। উক্ত সংস্কার ব্যাপারের স্বরণার্থ এই সময় হইতে

"জালালা সনের' ( স্বলভানের নামানুসারে ) গণনারম্ভ হয়।

একাদশ শতাক্ষ হহতে আরম্ভ কবিয়া, সমগ্র দ্বাদশ ও ত্রেয়াদশ শতाकी व्याभिया, "कृ मिष्कात" नामधात्री এक पन ক্র্দেড। গ্রীপ্রধর্মাবলম্বী-নরঘাতক ইউরোপীয় দস্থ-পঙ্গপাল উপযুগিরি বহুবার মোদ্রেম রাজ্যসমূহে পতিত হইয়া উত্তর আফ্রিকা ও পণ্ডিম এদিয়ার বিস্তৃত বিভাক্ষেত্র গুলির সমূহ ক্ষতি ঘটাইয়াছিল। বিক্তমস্তিক পুরোহিতবুন্দ কর্ত্বক উত্তেজিত, পৈশাচিক রক্ত পিপাদায় ও প্রবাদ-প্রদিদ্ধ প্রাচ্য ঐশ্বয়ে এবং রমণী-দ্যোন্দর্য্যে প্রলুক্ষ ও জঘন্ত পাশব প্রবৃত্তির তাত্র দংশনে উক্তত হইয়া এই অসভ্য বব্দরগণ আবাল-বৃদ্ধবনিতা নির্বিশেষে নিরীহ মোদুেম নাগরিকগণকে হত্যা ও রমণী-क्रित्र मक्रनाम माधन कतिया এवः জগবিখ্যাত বৃহৎ বৃহৎ विদ্যালয় ও পুস্তকালয় ভস্মাভূত করিয়া ঐদ্লমিক ক্রান ও সভ্যতার অভ্রভেদী মস্তক বজাহত করিয়াছিল। এই ধ্বংদপ্রিয় গৃষ্টানগণের অমামুষিক লোমহর্ষণ অত্যাচারে প্রকৃতির অনস্ত দৌন্দর্য্য ও উর্বারতার লীলাভূমি এসিয়া মাইনর প্রদেশের অধিকাংশই এমনি বিধ্বস্ত, জর্জারিত ও ভ্মাভূত হইয়া গিয়াছিল যে, বিগত অষ্ট শতানী মধ্যেও তাহার আর সংস্থার श्हेया 'উठिन ना ! य भारतछा है नित्र नम्रना जित्राम जलोकिक मोन्सर्या যীওথ্রীষ্ট আত্মহারা হইয়া প্রাণম্পাশী প্রশাস্ত ভাষায় সেই করুণাময় জগৎপিতার মহিমা কীর্ত্তনে পৃথিবী রোমাঞ্চিত করিয়া দিয়াছিলেন,— সেই ধীও খ্রীষ্টের বর্ত্তর শিশ্বগণ ক্রেডছেলে সেই স্বর্গ-স্থলভ সৌন্ধর্য-भेत्रिभूर्न ज्लाज्भित्र ध्यान इक्ष्मा कत्रियाहिन एए, ज्ञाभि लाहे ज्ञान

खनপ্রাণিশুতা ভরঙ্কর মরুভূমির তাার হইয়া রহিয়াছে! ইহারাই আবার ইহাদেরই অহত রচিত মরুভূমিগুলি মুসলমান শাসনের দেশহিত-' কামনা-শৈথিস্যসমুদ্ত বলিয়া তীত্র কটাক্ষ নিক্ষেপ করে, এবং উচ্চ-পুচে लम्फवाफ প्रमान कविए थाक । यावात এই ইউরোপীয় এছি।न

আলেক্জান্তিয়ার পুস্তকাগার।

বর্বরগণ, ইহাদিগেরই বর্বরভর পূর্বপুরুষগণ-্কত আলেক্জেন্দ্রিয়ার পুস্তকাগার ভদ্মীভূত করার অপরাধ \* টীৎকারস্বরে মোসেমগণের স্কুন্ধে আরোপ করিবার জন্ম লালায়িত হইয়া থাকে,—এমনি ঘোর নিল জ্জ ইহারা! ইস্লামের নির্মল আলোক পৃথিবীর যে যে অংশে বিকীর্ণ र्हेब्राष्ट्र, कान ও महाजात ঐकाश्विक উৎकर्य অনতিবিলয়েই ভত্তৎ-স্থানের প্রকৃতিগত ধর্মারূপে প্রিগণিত হইয়াছে;—প্রাচীন জ্ঞানের ভাণ্ডার পুস্তকালয় ভন্ম হওয়া,—দেত বহু দূরের কথা! পুস্তকালয় ্রম্ম করার শত অপরাধে অপরাধী ..ক, এ কথা জিজ্ঞাসা করিলে देखिशम ष्ममानवहरन, इरे रुखित्र हम अङ्गूलि जूलिया এक गांव প्राচीन अ यश्रमुरात्र इंडेट्राशीय्रागक्ट मिथार्य। मिट्य!

ত্রমোদশ শতাকীর মধ্যভাগে অস্থরপরাক্রম দস্যকুলগুরু চেন্সিজের পঙ্গপালপণ বর্ষার ঘোর ঘনঘটার স্থায় মোসেম রাজ্যসমূহ সমাচ্ছর করিয়া মোসেম জ্ঞান ও সভ্যতার মাথার দ্বিতীয় " ट्रिक्स । ভীষণ বজাঘাত করিয়াছিল। মহা জলপ্লাবনের খ্রায় খোর-গর্জনে পৃথিবীর কর্ণ বিধির করিয়া তাহারা পণ্ডিত, মূর্থ, धनी, निर्धन, युक्त, निष्ठ, नात्री, विद्यानय, পুস্তकानय-এक প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত পর্যান্ত সমন্তই নিহত, চুণীক্বত, ভন্নীভূত ও পর্যান্ত করিয়া দিয়া, বছশতাকীসঞ্চিত বোগদাদের অমূল্য জ্ঞান-ভাণ্ডার ভাগাইয়া नहेंची, অতলম্পর্ণ ধ্বংশ-সাগরে অনস্তকালের অন্য ডুবাইয়া দিয়াছিল।

<sup>\*</sup> जूनित्रम् मीनद्वत जामल उहा ज्योजूठ इत।

দেই আঘাত চূড়ান্ত আঘাত! দেই আঘাতে মোসুমে জগৎ হইতে পৃথিবীর এক বিশাল রক্তাণ্ডার বিলুপ্ত হইয়া গিয়াছে।—অনস্তকালেও আর তাহার পুনরুদ্ধার হইবে কিনা সন্দেহ।

কিন্তু ইস্লামের প্রভাব এমনি চমৎকার যে সেই পাপাত্মা সভ্যতাশত্রু চেঙ্গিজের সন্তানগণ যেদিন পবিত্র ইস্লামে
ইস্লামের প্রভাব।
দীক্ষিত হইল, সেইদিন হইতেই তাহারা বিজ্ঞান
ও কলাবিন্তার একান্ত পক্ষপাতী হইয়া পড়িল। কলাবিজ্ঞানের সর্ব্বনাশসাধক ক্রতান্তগণই কলাবিজ্ঞানের উৎকর্ষ সাধনার্থ মন-প্রাণ উৎসর্গ:
করিয়া বিসল! আপনারা অশেষ পাণ্ডিত্য অর্জ্জন করিয়া, পণ্ডিভসমাজের
সমাক্ সমাদর করিয়া, অসংখ্য জ্ঞানগর্ভ গ্রন্থাদি প্রণয়ণ করিয়া করালপ্রাণ হালাকুর বংশধরগণ তাহারই সহস্ত বিনম্ভ রত্নভাগ্রারের প্রক্রজার
মানসে প্রাণপণ পরিশ্রম করিতে লাগিল!—ইস্লামের পবিত্র জ্যোতিঃ
এমনি উজ্জ্বল, এমনি নির্ম্বল, এমনি প্রাণস্পর্নী!

উপর্যাপর এই সকল প্রচণ্ড আঘাতে ক্ষতবিক্ষত ও ভগ্নদশা প্রাপ্ত হইয়াও মোসুেম-জগং জ্ঞানচর্চায় পুনরায় স্বস্থান অধিকারার্থ প্রশাদ পাইতে লাগিল, এবং কিয়দ্র সফলতা লাভও করিয়াছিল। চতুর্দশ শতাকীর শেষার্কিকালে মধ্য-এদিয়ায় অভূত-প্রকৃতি মহপরাক্রাস্ত তৈম্রের

তেমুর ও তাহার হইল। স্থীয় শ্বাহুবলে তিনি চীন হৈমুর ও তাহার হইতে ক্ষয়িয়ার কিয়দংশ এবং দক্ষিণে আরবসাগরের উপকূল পর্যান্ত একছত্ত শাসনাধীনে

আনয়ন করিয়ছিলেন। অদমা বিজয়লালসা এবং দিখিজয়ে অমায়্বিককঠোর-প্রাণতা সত্তেও তাঁহার উদার, উন্নত প্রকৃতি, ঐকান্তিক সাহিত্যদেবা, কলাবিজ্ঞানাসক্তি, অসংখ্য বিভালয় ও প্রকালয় স্থাপন ও দিশাল
বিশাল মদ্জিদ নির্মাণ প্রভৃতি মহদয়্পান তাঁহাকে জগতের ইতিহাসে
অধিতীয় বলিয়া চিত্রিত করিয়া রাথিয়াছে। তদীয় মহিবী "বিবি

শানম্ যে স্থবিশাল বিশ্ব বিভালয় স্থাপন করিয়াছিলেন, অভাপি ভাহার শিল্প-দোর্শ্য ও গঠনগান্তীর্য্য অবলোকন করিয়া পথিকগণ স্থন্তিত হইয়া থাকেন। তদানীস্তন মুসলমান রমণী-কুলের মানসিক উৎকর্ষের ইহাই প্রধান পরিচায়ক।

তৈম্বের উত্তরাধিকারিগণও বিন্যোৎসাহে তাঁহারই পদাক্ষ অনুসরণ
করিয়াছিলেন। পুত্র শাহরোথ মির্জার অর্জতৈম্বের উত্তরাধিশতাকী-দীর্ঘ শান্তিপূর্ণ রাজত্বকাল কলাবিজ্ঞানোৎকর্ষের বিশেষত্বের জন্মই বিখ্যাত। পৌত্র উল্ব্
বেগ শ্বরং একজন খ্যাতনামা জ্যোতির্বিদ্ পণ্ডিত ছিলেন। তৎপ্রণীত
গতীর্ব গবেষণাপূর্ণ জ্যোতিষ গ্রন্থরাজ্ঞি আরবীয় জ্যোতিঃশান্তের অসম্পূর্ণ
অংশ সম্পূর্ণ করিয়া তাঁহার নাম চিরক্ষরণীয় করিয়া রাখিয়াতে। ইহার
মৃত্যুর প্রায় দেড়শতবর্ষ পরে কেপ্লার আধুনিক ইউরোপীয় জ্যোতিঃশাল্তের ভিত্তি স্থাপন করেন।

মোসেমগণ যে কেবল জোতিঃশাস্ত্রেরই অনুশীলন করিয়াছিলেন, এমত নহে। তাঁহাদিগের মধ্যে অন্তান্ত বিজ্ঞানশাস্ত্রেরও প্রভূত চর্চা ছিল। আগামী সংখ্যায় তাহার যৎকিঞ্চিং বিবরণ প্রদান করিতে চেষ্টা করিব।\*

### शिरेग्नापून रक।

\* এই প্রবন্ধ মূলতঃ জন্তিস আমির আলির The Spirit of Islam নামক গ্রন্থাৰণখনে লিখিত।

## **ठांद** जिद्य।

( ),)

উন্ধাদ শণী হাসিয়া উঠিল

ফুল আকাশ-বাসপ্নে;
ক্লান্ত কিরণ ঢলিয়া পড়িল,
আমোদে কুমুণ আঁথিটি মেলিল,
চক্ষে চক্ষে মধ্র মিলিল,
হাসিটি ভাতিল অধ্রে,—
শত শত গান গাহিরা উঠিল

ফুল আকাশ-বাসরে।

( २ )

জগত মৃশ্ব, সরদ স্থিক ফলর সেই সঙ্গীতে; অন্তর যেন উঠে গুমরিরা। আধ ঘুম ঘোরে রহিরা রহিরা, পঞ্চমে পাখী উঠে ফুক্রিরা। অলস মন্দ ভঙ্গীতে। সহসা প্যকি- থেমে গেল মেঘ অধ্ব-পথ লভিঘতে। ( 9 )

তারকার দল এরো হ'রে এল
আকাশ-কুঞ্জ-বাসিনী।
ভাসিয়া উঠিল হথ নিরমল,
দম্পতি-প্রেম জ্যোৎসা-শীতল,
নির্বাণ-গীত শান্ত বিমল
গাহিল মঞ্জ-ভাষিনী।
নাচিয়া উঠিল আকাশে আকাশে
লক্ষ মনোহারিণী।

(8)

নন্দন হ'তে আদিল নামিয়া

অম্বর নীল প্রাঙ্গনে,

অঞ্চল ভরি আনে পারিক্সাত,

চন্দন চ্য়া লক্ষে' আসে সাথ,

নব-জীবনের ললিত প্রভাত

লয়ে' এল স্থাঙ্গনে।

লয়ে' এল আর দেব-আশীর্কাদ,

তাম্বর নীল প্রাঙ্গনে।

व्योग गीसनाथ ताय।

# ভাষার গঠন ও উন্নতি।

শরিবভিত ইয়া তাহা ব্যবহার বশে নানারূপে গঠিত ও
পরিবভিত ইয়াছিল। বাক্যের পর বাকা সাজাইয়া
মনোভাব জ্ঞাপন করা হইত। কিন্তু ক্রত বা শ্লথ উচ্চারণ বশে এক
একটা আদিম শব্দ সম্প্রসারিত বা সন্কৃচিত ইইয়া যাইতে লাগিল,
কোথাও বা হই বা ততোধিক শব্দ একত্র মিলিত ইইয়া একটা সম্পূর্ণ
নৃত্তন শব্দ গঠিত করিয়া তুলিতে লাগিল। এইরপে বাক্যন্থিত পদ
সকলের ব্যাকরণগত সম্বন্ধ গঠিত ইইতে লাগিল, এ সম্বন্ধে বিস্তারিতভাবে কেমশঃ বলিব। এক একটা সমাজ বা দল যথন জন্মস্থান ছাড়িয়া
অন্ত দেশে য়াইতে লাগিল, তথন সেই সকল দেশের জলবায়ু ও
প্রাকৃতিক ক্রিয়াবশেও ভাষাস্থ শব্দসকলের পরিবন্তন ঘটিতে লাগিল।
এই পরিবর্ত্তনই ভাষা গঠনের অন্থিমজ্জা। ভাষা গঠনে তিনটি স্তর
নর্কেশ করিতে পারা যায় ( Curtius সাতটি স্তর নির্কেশ করিয়াছেন )।

১। ধাতু সকলের স্থাধীন, স্বতন্ত্র ব্যবহার। ইহার উদাহরণ
চীন ভাষার আজিও যথেষ্ট বর্তমান। ইহার নাম একাক্ষর বা
ধাত্রেক কোষ, যথা, ক — জল, এক্ষা, বিষ্ণু, স্থা, আত্মা, রাজা, পক্ষী,
মর্র ইত্যাদি। অঙ্ক্ ধাতু — অঙ্কপাত করা; অংশ্ ধাতু — বিভাগ
করা, ইত্যাদি বহু ধাতুপ্রত্যর নিরপেক্ষ হইয়া প্রত্যর থাকিলেও ভাহারা
নিরবন্ধব বলিয়া বাদ দেওয়া চলিতে পারে। সংস্কৃতে প্রত্যর ভিন্ন
কোন পদ সিদ্ধ হর না, এজন্ত উহাদের ঘাড়ে অনর্থক এক একটা
প্রত্যানের দোহাই চাপান হইয়া থাকে) ভাষায় স্থাধীনভাবে অবস্থান
করিবার ক্ষমতা রাধিয়্য থাকে। এই স্তরে ধাতুর আকারগত বা
শক্ষাত্র কোন পরিবর্ত্তনই লক্ষিত হয় না। ভাষা ক্ষির সময়ে এইয়প
গাতু সকলই ব্যবহৃত হইত কলিয়া বোধ হয়। Curtius এই মডের

পোষ্ঠা, কিন্তু মূলর ইহাতে দন্দেহ উত্থাপন করিয়াছেন। এই মতের পক্ষণাতীদিগের যুক্তি এই যে, যাহা সহজ সাধ্য তাহাই প্রথমতঃ আমরা ব্যবহার করিয়া থাকি, ভাষা প্রথমতঃ আবশুকীয় উপকরণ মাত্রই यागाहेबा थारक, विनाम विভবের প্রতি লক্ষ্য বছপরে হয়। আবার विक्रक्षवामोत्रा वर्णिन य किंगिजाव इटेट ज्वाञ्चनकान वात्राहे व्यामत्रा. ক্রমশ সহজ মত্যে উপনীত হইয়া থশক। কিন্তু বিরুদ্ধবাদীদিগের পরম্পর বিরোধী উক্তিসকল আলোচনা করিলেই ইহার মীমাংসা সহজ হইবে। তাঁহারা চীন ভাষাকে যথেষ্ঠ প্রাচীন বালয়া স্বীকার করিয়াছেন, তাহা প্রায় আদিম অবস্থায়ই আছে, বিশেষ পরিবর্ত্তন ঘটে নাই। তাহার বাক্য সকল প্রায়ই একমাত্রিক (monosyllabic), তবু তাঁহাদের মতে আদিম ভাষা একমাত্রিক শক্ষম ছিল না, এরূপ বিবদমান মতের সামঞ্জন্ত রক্ষা আমাদের ক্ষুদ্র শক্তির সাধ্যায়ত্ত নহে। আরও বাঙ্গালা ভাষার প্রতিও দৃষ্টিপাত করিলে বুঝা যায়, বাঙ্গালা অধিক প্রাচীন ভাষা নহে কিন্তু দে প্রাচীন মুংস্কুতের বংশধরী বলিয়া অনেকটা উন্নত, তথাপি তাহা বিচিত্র বিভবশালিনী নহে। বহু ভাব প্রকাশের জন্ম এখনও ইংরাজি, পার্সীর আশ্রেয় লইতে হয়, সংস্কৃতের ७ कथाई नाई।

২। তুইটা ধাতু একতা সংশ্লিষ্ট করিয়া বাক্য গঠিত হয় এবং এই নিশ্রণ ফলে অন্তত্তর ধাতু তাহার স্বাধীনতা হারাইরা তাহার সহযোগীর অর্থাগমে সাহায্যকারী মাত্র হইয়া থাকে ৷ এই স্তর্কে প্রতায় সিদ্ধ ব। সংযোগবাহ বলা যাইতে পারে। । ইংরাজিতে এই স্তরের নাম agglutinative, for gluten = glue.) এই স্তরেও প্রধান ধাতু শরীরে কোনই পরিবর্ত্তন ঘটে না, কেবল যুক্ত দিতীয় ধাতু মিশ্রণ সাধনের স্মুখিধার জন্ম অল পরিবত্তিত হইয়া থাকে। यथा--- वारण + छ = वारण ; शक + वान = शक = भग् + म है एगानि

পণ্ডিতেরা বলেন যে, সমস্ত প্রত্যয়ই আদিম ধাতুর সঙ্কৃচিত বা পরিভাজ অংশ মাত্র, কিন্তু কোন্টি কোন্ ধাতু হইতে আগত তাহা সকল সময় নির্মায় করা স্থকঠিন। তবে যুরোপীয় পণ্ডিতগণের অসাধারণ অধ্যবসায় যে হই একটার সন্ধান পাইয়াছে তাহা নিমে উদ্বত করিতেছি।

সংস্কৃতে ত্য প্রত্যয় যোগে বিশেষণ হয়, যথা দাক্ষিণাত্য। অধ্যাপক ম, মূলর প্রভৃতি পণ্ডিতগণ অনুমান করেন যে এই ছা প্রভায় সর্কনাম সমুদ্ত এবং শুদ্, স্থা, তাদ্ প্রভৃতি সর্বনামের সহিত একার্থক! ত্য সর্কনাম প্রত্যয় হইলে, 'দক্ষিণাত্য বা আপ্রা' জল সম্বন্ধী ন, আপ্ ⊹তা) প্রভৃতি বিশেষণগুলি আদে দিক্ষিণ-ঐ,' 'কল-ঐ' রূপে সাধিত হইয়াছিল। আপ্তাঃ = আপ্ + ত্য + স্ (সঃ) = ভল - ঐ -- সে। তাঁহারা বলেন যে এই বিভক্তির 'স্' সর্কানাম 'স্য' এর রূপান্তর মাত্র; সংস্কৃত 'উদকস্তা'র 'স্থা,' ত্যা প্রত্যায়ের সহিতৃ, অভিন। কেবল 'স্থা' বিভক্তি, তা প্রত্যয়তুল্য আর কোন বিভক্তি স্বীকার করে না। অতএব উদকশু বিশেষণ হইতেও পারে। (See MaxMuller's Science of Language).

Curtius ইহা আরও স্থানরভাবে দেখাইয়াছেন। নাশয়ামি = নাশ + যামি, আমি নাশে প্রেরণ করিভেছি বা নাশ করিভেছি। এথানে তুইটি স্বতন্ত্র ধাতু মিলিত হইয়াও স্বাকার ঠিক রাথিয়াছে। Curtius ও Sayce বলেন যে যুধ্, যুগ্, যুৎ প্রভৃতি ধাতু সকল যু ধাতু ও অনু ছ ধাত্বরব ধ, গ, ত প্রভৃতির যোগে বর্ত্তমান আকার প্রাপ্ত হইয়াছে। আদিম ভাষার ধাতু যু, কিন্তু কালক্রমে আদিম অন্তান্ত ধাতু সংযুক্ত হইয়া বর্ত্তমান আকারে পরিণত হইয়াছে। মূলর বলেন যে এইরূপ সংযোগ ব্যাপার আর্য্যভাষা গঠনের পরও বহুরুলে পর্যান্ত ব্যাপক হইয়া বহিয়াছিল। এইরপে সংস্কৃতে কার্কের বিভক্তি সংখ্ও ধাতু সকল (যথা, বায়ো: = বায়ু + ওদ্ = বা ধাতু + উ প্রভায় + ওদ্.) সহজে আমাদের দৃষ্ট্র এড়াইতে পারে নাণ বিভক্তি প্রভৃতির ব্যবহার হার।
আমরা একই ধাতৃ হইতে ভিন্ন ভিন্ন অর্থ সংগ্রহ করিয়া থাকি, কিছ
নিত্য বাবহার হার। অভ্যস্ত হওয়ায় আমাদের মন বিশেষ ঝোন
নৃতনত্ব বোধ করে না।

০। হৃহটা ধা হু গাঁথিয়া একটা বাক্যের সৃষ্টি হয় কিন্তু উভয় ধাতৃই তাহাদের সাধীনতা হারাইয়া ফেলে। ইহাকেও এত্যুয়সিদ্ধ বলা যাইতে পারে; ইংাব অন্তর্গত ভাষার নাম amalgamating or organic, এই স্তবে গঠিত বাক্যের উভয় ধাতৃই বিকার প্রাপ্ত হইয়া থাকে। সংস্কৃত পার্ভি ভাষা এই তৃতীয় স্তরে উপস্থিত হইয়াছে। যথা, ধ্যুমান দু কিম্পান) + শানচ, এখানে ধূ ইইয়াছে ধ্যু, এবং শান স্থানে হইয়াছে মান।

অনেকে (তন্মধ্যে Curtius অন্ততম) বলেন যে আদিম আর্যা ভাষায় প্রতায়, বিভুক্তি, বচন প্রভৃতি কোন চিহ্নই ছিল না, কেবল মাত্র ধাতু সকলই ব্যবহৃত হইত। কেবল ধাতু মাত্র ব্যবহারে সকল সময় ৯ বিহু কিবলৈ হুইত না, এজন্ম কোন ব্যক্তি একটু পরিষর্ত্তন করিলে তাহা ক্রমশঃ সর্ব্বগাহ্ন হইয়া স্থিরত্ব প্রাপ্ত ইইত; এইরূপ নানা উপায়ে বৈয়াকরণিক চিহ্নাদির স্পষ্ট হইতেছিল। ভাষা যে পরস্পরের সাহাযে রিচিত ও পৃষ্ট ইহা তাহার সমর্থন করিতেছে। কোন কোন প্রতিত ধাতু সংযোগে ব্যাকবণামুযায়ী বাক্য গঠনকেও প্রাথমিক ভাষা স্পৃষ্টির মত প্রাকৃতিক সহজ্ঞানলক (instinctive) বলিয়া নির্দেশ করিতে চাহেন।

এইরপে ভাষা যথন গঠিত হইয়া উঠিল, তখন ভাহার আরও পরিবর্ত্তন হইতে লাগিল। প্রাকৃতিক নিয়মবশে জাগতিক দ্রব্য সমূহের পরিবর্ত্তনের সঙ্গে ভত্তংবোধক শব্দ সকলও অল্লাধিক পরিমাণে বিপর্যান্ত হইয়া ভাষার স্থমহান পরিবর্ত্তন ঘটাইতে লাগিল। মানুষের

कानारवयग वृज्ञिक्षिण পরিপুষ্ট হইয়া ভাষাকে নৃতন ভূষণে বিভূষিত করিতে লাগিল। ভাষার পরিবর্তনের কারণ জত ও শ্লথ উচ্চারণ, উপনিবেশ ও জল বায়ুর প্রভাব, এই তিন প্রকার নির্দেশ করা যাইতে পারে। পাশ্চাত্য পণ্ডিতদিগের গ্রন্থামুসন্ধান আরম্ভ ক্রিয়া অধ্যাপক ম, মূলর ও দেলের Science of Language, Whitney's Life and Growth of Language, Mr. Horatic Hales' The Origin of Language 1888 প্রভৃতি গ্রন্থ হইতে যাহা পাইয়াছি, তাহারই সারাংশ নিমে উক্ত করিতেছি।

Mr. W. Gile একজন পাদ্রি, তিনি অধ্যাপক মূলর কর্তৃক অমুরুদ্ধ শুইয়া বহু অসভ্য জাতির ভাষা গঠনের প্রতি অবহিত থাকিয়া যে সিদ্ধান্তে উপনীত হইয়াছেন, ভাহা তিনি উক্ত অধ্যাপককে कानाहरल्डिन।

"যথন কোন প্রধান বা পুরোহিত কোন নৃতন শব্দ (witticism or a new phrase) গঠন করেন তাহা শীঘ্রই নিমুশ্রেণীতে 'অমুক বলেন' বলিয়া চলিত হইয়া যায়। পরে তাহা ভাষায় স্থায়ী হইয়া পড়ে। বুদ্ধদিগের দস্তহীমতা গ্রভৃতি কারণে বহুশন্দ বিক্বতভাবে উচ্চারিত হইয়া থাকে; অক্তান্ত লোকে বুদ্ধের প্রতি সম্মানবশতঃ ঐ সকল শব্দ বিক্বত कित्रशारे উচ্চারণ করে; ইহা শব্দ পরিবর্ত্তনের এক কারণ। প্রাচীন কালে সর্ব সাধারণের নিকট হইতে মন্তার্থ গোপন রাথিবার জন্ম পুরোহিতগণ ভাষা বিক্বত করিয়া ব্যবহার করিত। যাযাবর জাতির আগম্ম ও মিশ্রণও ভাষা পরিবর্তনের একটি প্রধান কারণ। বৃহৎ জাতি, সকলের মধ্যে পরস্পরের যুদ্ধ, পূজা-পদ্ধতি, ও বড় বড় সভা সমিতিতে ৰক্তাও বাক্ষুদ্ধ প্রভৃতিও ভাষা পরিবর্ত্তনের সাহায্য করিয়া থাকে। কুত্র সম্প্রদায়ে ভাষা পরিবর্তনের কারণু থুব অন্নই বর্তমান থাকে"। निः लगाएउ जारगितकार्त्र जनजामिरगत मयस्य देशहे तिग्राहिने।

र्ष 'यथन বृष्किता পরস্পরে আলাপ .করে, যুবকের। তাহা সম্পূর্ণ বৃঝিতে পারে না। 'প্রাচীন ভাষার দীর্ঘ নাম সকল পরবর্তী ভাষার সঙ্কৃচিত इहेम्रा পড़ে।'

ভাষা ব্যক্তি বিশেষের রুচি বা ইচ্ছামুসারে বা চেষ্টায় কথনও পরিবর্ত্তিত হইতে পারে না; পরস্ত ইহা সমাজের সমবেত চেষ্টার অথচ অজ্ঞাত ও অুদুগুভাবে হইয়া থাকে। বাঙ্গালা ভাঙ্গিয়া গড়িবার চেপ্তা অনেকে করিয়াছেন, কিন্তু সে ঐ সমস্ত চেপ্তা উপেকা করিয়া স্বাধীনভাবে ক্রমশঃ গঠিত হইয়া উঠিতেছে, এবং ইহা শিক্ষিভাশিক্ষিভ नियादिक त्र नियादिक कार्या जिल्ला कार्य क्रिक जिल्ला क्रिक क দৈন্ত জাগিয়া উঠে, দে তথন একের মুষ্টিভিক্ষা বড় সহজে গ্রহণ कतिए हार् न।, नमास हानात थाज थूनिया नकनरक महि कताहरन সে অমানবদনে সেই সব contribution and donations আত্মশাৎ করিয়া থাকে। এই পরিবর্ত্তনী হুই উপায়ে ঘটিতে পারে-

- ১। প্রাদেশিক কথায় ভাষাপুষ্টি। র্যথা—সংস্কৃতে পর্য্যাপ্ত = যথেষ্ঠ, অপর্য্যাপ্ত = অল্ল ; কিন্তু চলিত কথায় ভুলক্রমে এই অপর্য্যাপ্তও যথেষ্ট অর্থে চলিত হইয়া ভাষায় গৃহীত হইয়াছে। 'আমায় অপর্য্যাপ্ত ভোজন করাইয়াছে' বলিলে এখন আর কেহ বুঝিবে না যে, আহারে আমার উদঃপূর্ত্তি হয় নাই। আধিক্যতা (স্ত্রীলোকে ইহা সচরাচর 'আদিখ্যেতা' উচ্চারণে ব্যবহার করিয়া থাকেন) ব[ড়াবাড়ি অর্থ হইতে কিঞ্চিৎ ভ্রষ্ট ইইয়া ন্থাকামির সহিত কিঞ্চিৎ নৈকটা স্থাপন করিয়াছে। নাগাল, একঘেরে, ত্যাকা, খুনস্থাট, আবদার প্রভৃতি বছ প্রাদেশিক কথা সমূরে সময়ে লিখিত ভাষায়ও ব্যবহৃত হইয়া থাকে। ইয়পে ক্ষিত ভাষায় চলিত বহু তুষ্ট বাক্য কালে শিষ্ট হইয়া ভাষায় গৃহীত হইভেছে।
- ২। শক্ষামে 😕 শব্দ বিকৃতিতে ভাষার পরিবর্তন। বিংশতি देशांत्र श्राहत उपाहत्रण। विश्मिष्ठ (Latin, Viginti) - विभागिष्ठ

(Dviginte); कामज्ञाम न्यावशात्रिक ভाষाय 'वि' त 'म' क्यारा হইয়াছে এবং 'বি'র পর এক 'ং' অনুসার আগম হইয়া পূর্বার मैम्पूर्व विकृष्ठि लाज कित्रशाह्य এवः তাহার চলিত রূপ হইয়াছে "বিশ"। স্বসর্ পার্স্ত থাহর। (সংস্কৃতের স, পার্স্ত ভাষার হ বা খ হঁয়)। অধ্যাপক ম, মূলর লিখিয়াছেন Hvahar; ष्टे जिनुशानि পाष्र अञ्चालक्षान यूँ जिहा स्वार्वे नक পार्नाम ना ; পরস্ত পারস্তা খাহর মানে ভগা জ্ঞাত আছি। বোধ হয় 'থে'র নোক্তা ( विन्तू ) ত্যাগ করিয়া '(य' স্থানে 'হে' পাঠ করিয়াছেন, কেন না উভয় অকরে একটি নোক্তা (বিন্দু) মাত্র প্রভেদ। (বাঙ্গালার 'র' কে 'ব' পড়া ম্রোত্মক ভ্রম নহে )। এই খাহর পেহেলি ভাষার বিকৃত হইয়া হইয়াছে 'চোহর'; তৎপরে আরো শ্যপ্রাপ্ত হইয়া ক্রমশ 'চোর,' পরে 'চো' মাত্রে পর্য্যবিদিত হইয়াছে। সংস্কৃত '৮০ুরঙ্গ' শব্দেরও এইরূপ বহু পরিবর্ত্তন ঘটিয়াছে (বঙ্গদর্শন, নবপর্য্যায়, অপ্রথম বর্ষ দ্রষ্টব্য)।

এহ দ্বিধি পরিবর্ত্তনে বহু বৈয়াকরণিক শব্দ দ্বারা ভাষা একস্তর হইতে স্তরাস্তরে উন্নত হইয়া উঠে (isolating ২ইতে agglutinative ও তাহা হইতে inflectional ভাষার স্ষ্টি হইয়াছে, বিশেষ বিবরণের Morris' Historical Outlines of English Accidence প্রভৃতি গ্রন্থ দেইবা )।

প্রাদেশিক কথা তাহার ইতর, অসংযত, ব্যক্ত, অব্যক্ত কথা, এবং সমাজ বা পরিবার বা ব্যক্তিগত অনগু সাধারণ বিশেষ বিশেষ বাস্ত্য-ममिश्व रहेग्रा ভाষा গঠনে সাহায্য করিয়া থাকে। প্রাদেশিক ভাষাকে मकल ममम लिथिত ভাষার অপত্রংশ বিবেচনা করা প্রমাদকর। তাহারাও লিখিত ভাষার মত বহু সভন্ত সভন্ত ভাষা হইতে স্বাধীনভাবে मनना मरश्रह कतिया याधीन ভাবেই গঠিত इইতেছে, ও निथिত ভাষাকে श्रुष्ठे कतिराज्यहा विश्विज ज्ञांशा जाहा जारभका एव ट्यांच ज्ञांच ज्ञांचिक

অমুকর- করিয়াছে (যথা—বাঙ্গালা সংস্কৃতের, উর্দু পাসীর, মার্মাটি প্রাক্তর অধিক অনুকারী) কথিত ভাষাও যাদ °সেই শ্রেষ্ঠ ভাষার অমুকরণ কিঞ্চিৎ পরিমাণেও করে তবে দেই কথিত ভাষাও লিখিউ ভাষার কতকটা অনুরূপ হইয়া ভাহারই অপল্রংশ বলিয়া বোধ হইবে। লিখিত ভাষা ও প্রাদেশিক কথায় যে বিশেষ কোন পার্থক্য নাই, তাহার আভাদ পুর্বেই দিয়াছি; এককালে ঢাকাই কথা আদর্শ লিখিত ভাষায় পরিণত হইয়াছিল, এবং তৎকালিক বহু পুঁথি শ্রীযুক্ত দানেশ বাবু দিন দিন বঙ্গীয় পাঠককে উপহার দিতেছেন। "লিখিত ভাষার দক্ষে কথিত ভাষার ব্যবধান দত্ত্বেও সে ব্যবধানের একটা দীমা আছে। দেই দামা অতিক্রম করিলে, লিখিত ভাষা মৃত हरेबा পড़ে ও তৎস্থলে কথিত ভাষা একটু বিশুদ্ধ হইয়া লিখিত ভাষায় পরিণত হয়'' ( বঙ্গভাষা ও সাহিত্য)। সংস্কৃতের পর প্রাকৃতের একাধিপতা ইহার উদাহরণ > প্রথম লিখিত ভাষার সৃষ্টিই কথিত ভাষা হইতে, এবং আজিও সে তাহা ুহইতে অবিয়ত পাল সংগ্ৰহ কার্যা, কিঞ্চিং পরিমার্জিত করিয়া স্ব-সদৃশ করিয়া লংতেছে মাতা।

প্রাদেশিক ভাষার মধ্যে একটা স্বীয় বিশেষত্ব থাকায় ভাহা সকল প্রদেশের আয়ন্তাধীন হয় না। এজন্ত সকল প্রাদেশিকতার সামঞ্জন্তের জন্ত একটা লিখিত ভাষার মধ্যস্থ হওয়া আবশ্রক। চট্টলের অনেক कथा जामत्रा वृत्यि ना, जामामित वङ्कथा छाञामित इर्काधा। निश्वि ভাষার মধ্যস্তায় আমহা পরস্পর মনোভাবের বিনিময় করিয়া থাকি। মুদ্রিত পুস্তকে আজকাল অনেক লদ্ধপ্রতিষ্ঠ লেখক কলিকাভার খাঁটি-নিজস্ব ভাষা ব্যবহার করিতেছেন; পূর্ববঙ্গ ও উত্তরবঙ্গ নিজস্ব পেটারিকা খুলিয়া আসরে অবতীর্ণ হইলে বিরক্ত হইবার কারণ দেখি ना। मठा वर्षे कृतिकां वा वर्णा मकन श्राम्य वस्त्र स्त्र स्त्र स्त्र वस्त्र वस्त्र वस्त्र वस्त्र वस्त्र वस्त्र स्त्र स्ति स्त्र स्त्र स्त्र উঠিলেও তাহার লিখিত ভাষার পরিণত হইনার বিলম্ব আছে। লিখিত

নির্দিষ্ট ভাষার সার্থকতা সম্বন্ধে জ্ঞানবৃদ্ধ শ্রীযুক্ত চক্র নাথ বন্ধ মহাশয় ত্রীহার 'বঙ্গভাষার বর্ত্তমান অবস্থা' অভিধেয় পৃত্তিকায় অনেক সদ্যুক্তি (मथारेषाह्म, भिक्ता भून तात्र विश्वासालन।

ভারতে লিখিত ও প্রাদেশিক ভাষার সৃষ্টি বৈদিক রচনার কাল , হইতেই আরম্ভ হইয়াছে! অধ্যাপক ম, মূলর কতভিলি প্রমাণ দ্বারা দেশাইক্লছেন যে বহু প্রাচীন কালে সংস্কৃতই এদেশের কথিত ভাষা ছিল। প্রধান প্রমাণ এই—

হেকাটিয়ন (৫৪৯-৪৮৬ খৃ: পূ: ) ভারতবর্ষের অভিত্ব জ্ঞাত ছিলেন, এবং তাঁহার সিন্ধুনদ বর্ণনা হইতে বুঝা যায় যে সংস্কৃতই তাৎকালিক কথিত ভাষা ছিল।

. আ্যাগণ পঞ্জাবের নাম রাথিয়াছিলেন 'সপ্ত-সিন্ধবঃ,' তাহা পারস্ত ভাষার হইল হপ্তহিন্দু (জেনাবেস্তা)। (এ সম্বন্ধে ১০০৮ সালের 'ভারতী'তে শ্রীযুক্ত মহাভারতী মহশিয় নানা কথা বলিয়াছেন)। उर्পत्त ७९ था एक अधिवामीत नाम इटेल हिन्सू, এवर यूर्ताप 'रु' लाप्त रहेन 'हेन्दूः' वा 'हेन्दूम्', उत्तरत्र हेख्म् वा हेखिया। (हीत हेशत नाम हरेबाह्नि हेन्जू वा हे खिका, श्रमाण हरब्रु आह ।।

় হেরোডোটস্ Gandariori (গান্ধার) প্রদেশের উল্লেখ করিয়াছেন। **এই गाकात्र** नाम ১। ১२७ १ श्रांक छ দেখিতে পাওয়া যায়। ইহা বর্ত্তমান কালাহার।

Ktesias(৪০০ খৃ: পু:) ইনি Darius I. ও Artaxaraxes Mne-াটাত্যাএর সভাসদ ছিলেন) সংস্কৃতের পরিচয় দিয়াছেন।

ে মেগান্থিনিস্ ( ২৯৫ খৃঃ পুঃ) পালিবোণ্ডা ( পাটালিপ্তা) ও সাজ্র-কোষ্ট্রস (চল্রপ্তের) প্রভৃতির উল্লেখ করিরা সংস্কৃতের অভিত স্থীকার Finalite 1 (For particulars see MaxMuller's Science. of Language.)

যথন লিখন প্রথার স্ষ্টি হইল, তথন কথিত ভাষা লিখিত গুডিব্দ হইয়া একটা স্থায়িত্ব লাভ করিল, কিন্তু কথিত ক্রমসঞ্চরমান সংস্কৃত বিকৃত হইয়া লিখিত (ওপূর্ব্ব. কথিত) সংস্কৃত হইতে পৃথক্ হইয়া পড়িল। তখন ইহার নাম হইল প্রাকৃত, বা প্রকৃতিপুঞ্জ-কথিত। অতএব প্রাচীন ভারতের ভাষাকে ত্ইভাগে ভাগ করা যাইতে পারে।

সংস্কৃত—(ক) বৈদিক সংস্কৃত; ব্রাহ্মণ, স্ত্র প্রভৃতির জটিল অপরিপুষ্ট ভাষা, ১৫০০-১৩০০ থৃঃ পূ:। (বঙ্গভাষা ও সাহিত্য ৩য় পৃষ্ঠা দেখ) য্থন এই ভাষা আদিম অনাৰ্য্যভাষার সহিত সংমিশ্রণে কথিত ভাষার महक रहेमा व्यामिन, जथन जनপেका महत्काष्ठार्या ভाষার আবশ্যক হইল এবং এই আকাজ্জায় গঠিত হইল (থ) পানিনায় সংস্কৃত ৩০০ খৃঃ পू: श्रेट वर्खमान कालित्र मः ऋउ এই শ্রেণীভূজ।

"বোধ হয়, যে ভাষায় আদিম হিন্দুগণ কথা কহিতেন, বেদে ঠিক সেইরূপ ভাষাই রক্ষিত হইয়াছিশ।\* কিন্তু তৎপরে ভাষার শ্রীবৃদ্ধির চেষ্টা ও ব্যাকরণের সৃষ্টি হইতে কথিত ও লিপিত ভাষা স্বভন্ত হইয়া দাঁড়াইয়াছে। তাই রামায়ণ, কালিদাস প্রভৃতির ভাষা ঠিক কথিত ভাষা বলিয়া স্বাকার করা যায় না।" (বঙ্গভাষা ও সাহিত্য)। লিথিতের দঙ্গে কথিত ভাষা পৃথক হইয়া পড়িয়া ফিরূপ আকার ধারণ করিয়াছিল, ভাহার নিদর্শন সংস্কৃত নাটকাদিতে পাওয়া যায়। ক্রমশঃ "मः ऋ তের আদর্শ লোকচকু হইতে অন্তহিত হইল ও তৎ হানে শিথিল প্রাকৃত রাজ সভায় প্রচলিত হইল।" (বঙ্গভাষা)। আবার বুদদেবের অমুক্তাক্রমে পালিভাষা (প্রাক্ত) লিখিত ভাষায় পরিবর্ত্তিত হটুয়া প্রাক্তকেই প্রভাবান্বিত করিয়া তুলিল। প্রাক্তত চুই ভাগে ্রভক্ত হইতে পারে—(ক) অবৈয়াকরণিক প্রাক্ত। ইহার অপর

<sup>\* &</sup>quot;The language and dialect of India begin with the Sanskrith of the Vedas about 1500 B. C. Some are for placing it to an early date." MaxMuller.

नाम जानजः । वाशिकान २६० थः प्ः ---२०० थृष्ठोस । यथन প্রাক্কত প্রথম লিখিত ভাষায় পরিণত হইতে আরম্ভ করিল, ত্থনই তাহার ব্যাকরণ প্রস্তুত হয় নাই, হইতেও পারে না। যুরোপীয় পণ্ডিতগণ এই কথিত প্রাক্বত ভাষা অশোকের শেষ কালের লিপি সকলে ্প্রথম লিখিতরূপে ব্যবহৃত হইতে দেখিয়াছেন (মুখীয় শতাদী)। এই শেষ निशिमकल व्यांकद्राक्त निग्नमाधीन नष्ट, शूर्व निशिमकल বিশুদ্ধ সংস্কৃতে লিখিত। বোধ হয় সর্বজনগোচরীভূত করিবার জন্ম অশোকই প্রাকৃতকে লিখিত রূপ দিয়া, প্রাকৃতের সম্মান বাড়াইয়া দিয়া যান, পরে তদমুকরণে লিখিত প্রাক্তত সাহিত্য জন্মগ্রহণ করিতে থাকে। M Senart তাঁহার Journal Asiatique প্রাকৃত ব্যাকরণের কাল খৃষ্টীয় তৃতীয় শতাকা বঁলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। কিন্তু তাহাতে श्रीमिक वाक्रवन-कात्र वत्रकृष्टित्र काल निर्नार्य किथिः शालयाग घटि। এ বিষয়ে আমাদের বাক্বিতভার আবশুক করে না; বুদের মৃত্যু-সমকালে প্রাক্ত বিশেষ স্বাতন্ত্রা ও প্রাধান্ত লাভ করিয়াছিল; এ সময়ে তাহার যথেষ্ট প্রদার হওয়াতেই ব্যাকরণ প্রস্তুত হওয়াও অনুমান করা যাইতে পারে। ভাত এব তৎপরে আসিল (থ) বৈয়াকরাণক প্রাক্ত— পালি, জৈন, মাধবা, মহারাষ্ট্রী, গৌড়দেনী প্রভৃতি। ২০০ খৃষ্টাক হইতে বর্দ্রমান কাল পর্যান্ত ইহাব ব্যাপকতা। যথন ব্যাকরণ স্পষ্ট হইরা প্রাক্তত নিয়মাধীন হইয়া পড়িল তথন সেঁ আর পূর্কবং কথিত ভাষা রহিল না। "কথিত ভাষা পূর্বাপেকা মৃহভাব অবলম্বন করিল ও 'बाक त्रवाञ्चवायौ প্রাকৃত হইতে বহুদুর হইয়া পড়িল।" (बक्रकाया)। এই কথিত ভাষা হইতেই বোধ হয় বর্ত্তমান গৌড়ীয় ভাষা সকলের উৎপত্তি। "পূর্বে ভারতের কথিত ভাষা মাত্রই বোধ হয় 'প্রাকৃত' मुरकात्र षां छिरि उरेषु। এই रक्षायार ए क्वजन था हीन रायक ( व्राय्वक्क माम ) প্রাকৃত সংজ্ঞ। প্রদান করিয়াছেন"। ( वेक्कांशा )।

সংস্কৃত হইতে বাঙ্গালার ক্রমবিকার্শের প্রক্রিয়া শ্রীযুক্ত দীনেশ বাবু অতি স্থন্দর ভাবে দেখাইয়াছেন, এস্থলে তাহারই কিয়দংশ উদ্ভ कत्रिमाम, "यथन मः ऋष्ठत माम कथिं जायात প্রভেদ ঘটিল, जथन কথিত পালি ভাষা কিঞ্চিৎ বিশুদ্ধ হইয়া লিখিত ভাষা হইয়া দাঁড়াইল। যথন পুনশ্চ প্রাক্তির সঙ্গে কথিত ভাষার প্রভেদ বেশী হইল, তথন বর্ত্তমান গোড়ীয় ভাষাগুলি কিঞ্চিৎ পরিশুদ্ধ হইয়া লিখিত ভাষায় পরিণত হইল"।

এইরূপে বঙ্গভাষার সৃষ্টি সহস্রাধিক বৎসর পূর্বের বা তৎসমকালে इरेग्नाइ मत्मर नारे। এদেশে यथन আর্য্যগণ উপনিবেশ স্থাপন করিলেন তথন তাহাতে অনার্য্য আদিম অধিবাদীর ও পার্শ্বর্তী প্রদেশ সমূহের কত কথা আসিয়া প্রবেশ করিয়াছিল; তৎপরে মুসলমান রাজত্বকালে পার্সীর প্রভাব ও ইংরাজাধিকারে ইংরাজির প্রভাবে সেই ভাষা বহু পরিবর্ত্তন প্রাপ্ত হইয়া-বর্ত্তমান আকারে উপনীত হইয়াছে।

প্রাক্বত বৈয়াকরণেরা প্রাক্তশব্পপুঞ্জের ভিনটী বিভাগ করিয়া-ছেন—(১) তৎসম—যে সমস্ত বাক্য থাটি-সংস্কৃতের অমুরূপ; (২) তত্তব— যে সকল বাক্য সংস্কৃত হইতে গ্রহণ করিয়া প্রাকৃত্ব নিয়মান্স্সারে কিছু পরিবর্ত্তিত হইয়াছে। (৩) দেশী—দেশীয় চলিত কথা যাহা ব্যবহার षात्रा ভाষाय প্রবিষ্ট হইয়াছে।

Beams সাহেব বাঙ্গালাকে 'তদ্ভব' আখ্যা প্রদান করিয়াছেন (Beams' Comparative Grammar), কিন্তু আমি ইহাকে কেবল-মাত্র ভদ্কব না বলিয়া, ইহাতে প্রাক্ততের উক্ত ত্রিবিধ লক্ষণ ভিন্ন আরও একটি চতুর্থ লকণ 'বিদেশী' আরোপ করিতে চাহি। এখনকার वाकामात्र एक ठातिए नक्षण्ये विश्वमान चाहि।

(১) তৎসম—যাহু 'গাঁটি-সংস্কৃত কথা।. (২) তত্তব—যাহা সংস্কৃত हरेक गृशीक रहेमा পরিবর্ত্তিত হইমাছে, यथा—हिन्दी, जिसंबुनि, यातात्री,

উড়িয়া প্রভৃতির বহু কথা বাঙ্গালাগ কিঞ্চিৎ রূপাস্তরিত চইয়া প্রবেশ লাভ করিয়াছে। (৩) দেশী অনায্য আদিয় অধিবাদী হইতে গৃহীত হইয়া যাহা আজিও রফিত হইয়াছে এবং যাহা প্রদেশ বিশেষ, পরিবার বিশেষ বা ব্যক্তি বিশেষের উদ্ভাবনী শক্তিতে স্পষ্ট হইয়া কালক্রমে ख़ाबाब काननाज कतिबाह्य। (8) विष्मी—यथा, वह भार्ती ও ইংরাজি कथा ভाकारं वावशुं इरेटिए । ०

এহেন বঙ্গভাষার ব্যাকরণ খাঁটি সংস্কৃত হইতে পারে না, এবং সংস্কৃত নিরপেক্ষ হইয়া স্বাধীনও এইতে পারে 🔠। এক্ষেত্রে উভয়ের সামঞ্জন্ত রকা করিতে ২ইবে।

প্রত্যেক ভাষাকে প্রত্যেক জাতির প্রকৃতি, তাকা ও চাল চলনের মানচিত্র বলা যাইতে পারে। জাভীয় ভাষা সেই ভাতির বুদ্ধি, বিস্থা, স্বভাব, প্রবৃত্তি এবং এমন কি দেই জাতিকে সমগ্রভাবে জানিবার প্রধান উপায়। প্রত্যেক ব্যক্তির কথা হুইতে তাহার ব্যক্তিগত স্বভাব জ্ঞাত হইতে পারা যায়, যাহার ফেরপ স্বভাব দে দেই অমুযায়ী কথা জাতীয় ভাষা হইতে বাছিয়া লয়, এবং নিজের মনোমত বাকা রচনা করিয়া ব্যবহার করে। এই রচিত বাক্যমুকুররূপে তাহার আন্তর-बाक्तिक वर्षा प्रमाक প্রতিফলিত করে। এক ব্যাক্তর বাক্যের সহিত অপরের যেটুকু সাদ্গু থাকে, তাহা হইতে তাহাদের উভয়ের আন্তর সাদৃশ্র অমুমিত হয়, এবং এইরূপে সমগ্র জাতির বিশেষত্ব জ্ঞাত হওয়া याम् ।

কোন ভাষাই অমিশ্ররূপে পরিগণিত হইতে পারে না ; প্রত্যেক ভাষাতেই অপর ভাষা হইতে গৃহীত শব্দ কিছু না কিছু পাওয়া যাইবেই; बहै উভয়বিধ শব্দের নাম—সহজ ও গৃহীত বা দেশী ও বিদেশী, রাখা যাইতে পারে।

, यथनरे कान जानि कानिय बाजू विभिन्ने एए जिनिदानी एम, या

তাহাদের মধ্যে বিদে নিয়ের প্রচ্র সংমিশ্রণ ঘটে, কিংবা রাজনৈতিক, ধর্ম বা কোন বিশিপ্ত সমাজবিপ্লবদারা নৃতন দ্রব্য, বিষয়, অবস্থা, চিজ্ঞা বা কার্যোর সহিত পরিচয় ঘটে, তখন হ মানসিক ভাব প্রকাশের করা বা প্রাতন ভাষা দ্রহার্গ বোধ হয়, এবং নৃতন নৃতন শব্দ ধার করা বা গঠন করা আবগুরু হহয়া পড়ে; কিংবা কোন প্রাতন কথাকে কিঞ্জিত পরিবর্ত্তিত করিয়া নৃতন অর্থে প্রয়োগ করিতে হয়; এরপস্থলৈ সম্প্র জাতি যদি ঐ অভাব অন্তব করে, তবে অতি শীঘ্রই ঐ সকল শব্দ গ্রাহ্ ও চলিত হইয়া যায়।

যথন বিজ্ঞান, রসায়ণ বা গণিতশাস্ত্রে কোন দ্রব্য বা প্রক্রিয়ার নূতন আবিধার করে, তথন তদাধক কোন নূতন শব্দ স্প্রের আবশ্রক হয়। এই সমস্ত বিশেষ শব্দ ক্রমে শিক্ষিতমগুলীদ্বারা ভাষা-প্রবিষ্ট হইরা বছ বিস্তৃত ও পরিচিত হইয়া পড়ে। দেশক ধাতু হইতে শব্দ গঠন বাঙ্গালার প্রায় বন্ধ হইয়া গিয়াছে; পরিভাষা স্প্রের জন্ম দেশে যে আন্দোলন চলিতেছে তাহার ফলে বঙ্গীয় ধাতু হইতে নূতন শব্দ গঠন প্রণালা প্রজীবিত হইবে আশা করা যায়।

পরিচিত নিতা ব্যবহার্য দ্রব্যেরও নাম যে মধ্যে মধ্যে কেন- নৃত্রন সংজ্ঞা প্রাপ্ত হয়, তাহা সচরাচর স্থির করা সহজ্ঞ নয়। দেখা শ্যায়, আমরা কোনও ব্যক্তি বা বস্তুর সহিত অত্যধিক পরিচিত হইয়া পাড়লে, তাহাদের নাম ত্রস্ত ও অসতর্কভাবে, এবং কথন বা িত করিয়াও উচ্চারণ করিয়া থাকি; পুল, ভূতা প্রভৃতিকে অনেক সময় এইরূপে ডাকা হয়। এই পরিবর্ত্তন ঘারা ক্রমে লিখিত ও ক্থিত ভাষার স্থাতন্ত্রা স্থাতিত হইয়া থাকে, তাহা পূর্বের্ন উক্ত হইয়াছে। বহু ব্যবহার ঘারা অনেক শব্দ ক্রমশঃ তাহাদের রূপ ও অর্থ কিছু কিছু পরিবর্ত্তন করিয়া ভিররূপ ও ভিরার্থক ইইয়া পড়ে; কখন বা অর্থশৃত্র হইয়া নির্থক হইয়া যায়। অর্থের এইরূপ পরিবর্ত্তনে প্রার্থ মনেকর প্রতিই প্রবণতা দৃষ্ট হয়া

व्यव्य अविष्ठ, উक्त्र विवास कर्ष क्रिया नामा जार्थक হইরা পড়িতে দেখা যায়। এই অর্থবিকৃতি জাতীয় আদর্শ বা ভাব वा চারিত্র বিকৃতির ইতিহাসরূপে গণা হইতে পারে। 'ভদ্র' শব্দ ইহার একটি উদাহরণ। ভদ্র = ভন্দ্ +র, অর্থাৎ যাহাকে ছেথিয়া প্রীত হওয়া খায়; প্রাচীন সংস্কৃত সাহিত্যে এই অর্থে ইহার ভূরি প্রয়োগ দেখা यात्र,—ति मकल ईंटल हेहा स्त्रहां म्लात्तत्र প্রতিই অধিক প্রযুক্ত দেখা যায়। তৎপরে সকলের প্রতিই ইহার প্রয়োগ চলিতে লাগিল; এই সময়ে ভারত উন্নতাবস্থায় ছিল, সেইহেতু যাঁহারা সংক্রমী, স্থশীল, গুণশালী তাঁহারাই কেবল ভদ্র অর্থাৎ প্রীতিপ্রদ বলিয়া গ্রাহ্ম হইতে লাগিলেন। তৎপরে গুণ অপেকা অর্থের অধিক আদর হইল, এবং একণে ত' পরিষ্কার পরিচ্ছন হইলেই 'ভদ্র' হওয়া যায়। এককালে এই শব্দ এত শৃত্যার্থক হইয়াছিল যে নাট্কের স্ত্রধার ও নটের সম্বোধনে ব্যবহৃত হইত। এই শূন্ততা কি জাতীয় চরিত্রেয় শূন্ততা জ্ঞাপন করেনা ? 'মাহিনা' অর্থে মাদিক বেজন; কিন্তু অবশেষে যথন ঐ শব্দে সকল প্রকার বেতনই বুঝাইতে লাগিল, তথন শুভঙ্করকে মাসিক বেতন বুঝাইবার জন্ম 'মাস মাহিনা' লিখিতে হইয়াছে।

বিদেশীয় ভাষার গ্রন্থায়বাদ দ্বারা বহু নৃতন শব্দ ভাষায় প্রবেশ লাভ করিয়াছে। প্রত্যেক জাতির ভাষাই যে কেবল পৃথক ভাহা নহে; তাহাদের ভাব, চিস্তা প্রণালী, রুচি ও স্বভাবও স্বতন্ত্র; এবং তাহাদের ভাষাও সেই সকল প্রকাশের উপযোগী হইয়া গঠিত; অপর কোন জাতির কোন নৃতন কথা বা ভাব অমুবাদের সময় অমুবাদককে হয় সেই কথাটিই নিজভাষায় লইতে হয়, আর নয় ত নিজভাষার ধাতুপ্রতায় क्राय नर्स वावश्यां इरेश পড़ে।

मखवा हेशाम व्यक्षिकाः महे विष्णिय ভाषा हहे एक कि छि : कार्य

সামাজিক নৃতন উদ্দেশ্য বা অবস্তা প্রায়ই ভিন্ন ভাতির সংশ্রবে ঘটিরা থাকে, আপনা আপনি হইতে প্রায়ই দেখা যার না, নৃতন কথার প্রচলনে পুরাতনের বিনাশ ঘটে।

বাঙ্গালী চিরকাল অ-তৎপর; তাহার ভাষার কাজেকাজেই
punctuality বাধক কোন শব্দ নাই। 'তৎপরভা' বা 'নিষ্ঠা' শব্দু
দ্বারা punctualityর প্রকৃত অর্থ বা spirit টুকু হৃদরক্ষম •হয় না।
ভারতীয় অন্তান্ত ভাষায় ইহার সমার্থক কোন শব্দ আছে কিনা, তাহা
স্থগীগণের অনুসন্ধাতব্য।

বছ শব্দ পূর্বের ব্যবহৃত হটত না, পরবর্ত্তী কালে প্রচলিত হইয়াছে, এবং বছ শব্দ প্রচলিত ছিল এক্ষণে লোপ পাইয়াছে দেখা যায়। ছারা ঐ ঐ ভাবের বিকাশ ও বিনাশ-কবে, কি করিয়া হইল জানা যায়। এই সকল শব্দ সঙ্কলনে সাহায্য করিতে যদি কেহ অগ্রসর হয়েন, বঙ্কভাষা তাঁহার নিকট কৃতত্ত্ব থাকিবে।

প্রজ্ঞা, নীতি ও ধর্মের উৎকর্ষ্বোধক উপযুক্ত বাকা ভাষার থাকিলে সেই জাতিকেও ঐ ঐ বিষয়ে উৎকৃষ্ট বলিয়া জানিতে হইবে। যে ভাষার উচ্চ ও মহৎ অর্থবাচক শব্দ পাওয়া যায়, সে জাতির মধ্যে ঐ সব গুণ বর্ত্তমান বা অবসরাভাবে হু ছয়াবস্থায় আছে ব্ঝিতে হইবে। ফরাশীগণ বলিতে চাহেন যে, তাঁহানের ভাষার ঘুস অর্থে কোন শব্দ ছিল না, অতএব তাঁহাদের মধ্যে পূর্বে ঐ পাপও অজ্ঞাত ছিল। সংস্কৃত 'উৎকোচ' শব্দ বাঙ্গালার প্রচলিত নহে, 'ঘুষ' প্রচলিত। 'ঘুষ' শব্দের উৎপত্তি কবে, কোণা হইতে হইল তাহার অনুসন্ধান কর্ত্ব্য।

মামুষের প্রকৃতিভেদে ভাষাভেদ ঘটে। এই প্রকৃতিভেদ বহি-র্জগতের ক্রিয়া ও ক্ষমতার উপর অনেকাংশে নির্ভরশীল। সামুষ বেজক্র দেশভেদে রুষ্ণ বা গোর, দীর্ঘ বা থর্বা, বলিষ্ঠ বা ত্র্বল, সাহসী वा जीक, बांठान वा मिलवाक् रम, (मनटिल्स जायाटिन अर्थ त्मरे कात्रत्थ हरेया थाटक।

দেশভেদেরও আবার ক্রমানুযায়ী ভারতমা আছে। এমন কি এক বাড়ীর গুইজনের ভাষাও কথন ঠিক এককপ হুয় না, কিছু না क्रिছू পार्थका वा विष्मयप थाक्टरे थाक । हेरात कात्रण मानविष्ठित বছরূপিত্র

बाब, विराम गमन, धर्मा ও कूमः आत्र अस्तिक ममग्र প্রাদেশিক ভাষাস্ট্রির সহায়তা করে। যেস্থানে সামাজিক শিক্ষিত নেতার সংখ্যা অত্যল্ল হয়, দেখানে নানা প্রাদেশিক ভাষা মাথা তুলিয়া উঠে। বৌদ্ধকালে সর্ব্যাহ্য সংস্কৃত স্থানে পালি প্রভৃতি ভাষার প্রসার হইয়া-ছিল। একই দেশে বিভিন্ন ভাষাধ্র অস্তিত্ব রাজনৈভিক একতা পক্ষে বিশেষ অন্তবায়; ভাষার একতা ধর্ম ব। রাজার একও ২ইতে অধিক কার্য্যকরী। আমরা ভাবতবাসী, এক হংরাজ রাজার প্রজা, অধিকাংশ সমধর্মাবলমী হইয়াও পরস্পর গ্রনিষ্ঠ নহি। অথচ কালকাতাবাসী ও ফরালডাঙ্গাবাসী, বা বাঙ্গালী হিন্দুমুসলম নের মধ্যে যথেষ্ঠ সম্প্রীতি ও এক-প্রাণতা দেখিতে পাওয়া যায়; ইহার একমাত্র কারণ ভাষা। व्यवः वहे ভाষাভেদে कि नामाजिक, कि निष्ठिक, कि नाष्ट्रीय नर्स्थकाब উশ্লাতরই তারতম্য লক্ষিত হয়। বাঙ্গালী, পাঞ্জাবী পাসী, মান্তাজী বিভিন্নক্রমে উন্নত হইতেছে। আমরা আচ কোটি বালালী উন্নতির शर्ष व्यामाप्तत्र প্রতিবাদা উড়িষ্যাকে টানিয়া তুলিতে পারি নাই, मस्या अভाষার প্রতিবন্ধক পড়িয়া তাহাদিগকে অপরদিকে টানিয়া রাধিয়াছে। প্রকৃতিগত সাদৃশ্র না পাদিলে সমভাখা হইতে পারে না। ভারতকে "পৃথিবীর কুদ্র অনুরূপ (miniature world)" বলা र्रेशार्ड, वर्षाए এथान नर्कश्रकात एम ७ जनवर्षा वर्डमान ; अथान প্রবেশ শীভ ও প্রচণ্ড গ্রীষ্, তৃণমাত্রশুক্ত মঙ্গ ও প্রকলা প্রকলা শভ- ভাষণা ভূমি, বন্ধ পাৰ্মতা ও সমতল সামুদ্রিক প্রাণেশ বর্ত্তমান ;
ভাই ভাষারও এত পার্থকা ও প্রাচ্যা। একত্রিত ইংলও, স্কটলও ও
আর্বলওে এক ইংরাজি ভাষাই প্রাদেশিক ভেদে ব্যবহৃত, চীন রাজ্যখণ্ডে চৈন ভাষারই একাধিপতা, কিন্তু ভারতে উনিশ রক্ষ সম্পূর্ণ
বিভিন্ন ভাষার প্রচলন হহাই আমাদের অবনাতর প্রধান কারণ।

এক রাজ্যতন্ত্রের অধীন থাকিয় লিখিত ভাষার উন্নতি হইলে প্রাদেশিকতার বাঁধ শীঘ্র ভাঙ্গিয়া যায়। ইংরাজীর অনুশীলন আমাদিগকে 'নেশন' করিবার পক্ষে যথেষ্ঠ সাহায্য করিতেছে। আমাদের বড় অভাবের সময় ইংরাজকে ঈশ্বর এদেশে লইয়া আসিয়াছিলেন।

বিভিন্ন জাতি প্রত্যেকে জগৎকে বৈরূপভাবে দেথিয়াছে ও বৃঝিয়াছে তাহাদের প্রত্যেকের ভাষাও তজপ হহয়ছে। এই জনাই ভাষা প্রত্যেক জাতির সর্কোত্তম ইতিহাস। চীন সাম্রাজ্যের সমস্ত লিখিত ইতিহাস ধ্বংশ হইয়া যাওয়ার পর, ভাষা হইতে ইতিহাসের কণিকা সংগ্রহ করিয়া ইতিহাস বিরচিত হইয়ছে। প্রাকৃতিক ঘটনা ও তাহাদিগের সহিত জগতের ও নিজেদের সমস্ক বৃঝীইবার জন্ম আদিম মন্ত্র্যা যে রূপকের আশ্রয় লহয়াছিল তাহাই mythology.

প্রত্যেক জাতির বাগ্যন্ত স্থানীয় ক্রলবায়, প্রাকৃতিক অবস্থা, প্রধান থাতা, জাতীয় স্থভাব এবং পুরুষাত্রগত বিশেষত্ব বশে গঠিত হইয়া স্বতন্ত্র স্বতন্ত্র উচ্চারণের স্বষ্টি করিয়া থাকে, যে বাহ্য অবস্থাই বারা একটি সমাজের সমত্ব (unity) বুঝা যায়, সেই বাহ্য অবস্থাই সেই সমাজের উচ্চারণের সমত্ব স্থির করিয়া দেয়; এবং সেই উর্চারিত্ত শক্ষ সকলের সমষ্টিই সেই সমাজের ভাষা। শাক্ষিক উচ্চারণের সর্বাদাই পরিবর্ত্তন হয়, এবং এই পরিবর্ত্তন, অবস্থা ও প্রাকৃতিক নিয়মবশেই হয়, স্বেছ্যার ক্যাচিৎ ঘটে।

্ভাষা মানব মুনের প্রকাশক; মানসিক ভাব সদা পরিবর্তনশীক ও চলিফু; এজন্ম তৎপ্রকাশক ভাষাও পরিবর্তনশীল ও চলিফু! বাক্যন্ত্র, শ্লুতু ও থাপ্তাদির পরিবর্তনে কিংবা মাহুষের সভাবিক আলস্ত প্রবণতা হইতেও ভাষা পরিবর্ত্তিত হইয়া থাকে। ত্মার একটি কারণ অত্নকরণ—বাক্য, শব্দ, এবং এমন কি বাাকরণ পর্যান্ত এক জাতীয় ভাষা হইতে অন্ত জাতীয় ভাষয়ি গৃহীত হইয়া থাকে। সভাজাতির ভাষা অমিশ্ৰ নাই বলিলে অত্যুক্তি হইবে না। এই সমস্ত ঋণপ্ৰাপ্ত শব্দ হইতে জাতির পরস্পর নৈকটা ও অভাবের ইতিহাস পাওয়া যায়। ঋণী ভাষার কোনে অমুরূপ শব্দের সহিত সাদৃশ্য রাথার জন্ম অনেক সময় এই ঋণপ্রাপ্ত শব্দ সকলের বাহ্য আকার এবং এমন কি অর্থেরও যথেষ্ট পরিবর্ত্তন ঘটিয়া থাকে। অসংশ্লিষ্ট জ্ঞাতি অপেক্ষা যে সকল জাতি অপর জাতির সংশ্রবে আদে, তাহাদেরহ ভাষায় শব্দ কয়ের সম্ভাবনা অধিক।

ভিষিপরীত। মুগ অর্থে পূর্বে পশুমাত্রকেই বুঝাইত (ইংরাজি Deer শব্দপ্ত এইরূপ), কিন্তু একণে তাহাতে বিশেষ জন্ত সংজ্ঞিত হুইভেছে। এইরূপ শব্দ ও অর্থের ক্ষয়দারা ভাষার প্রাচীনত কানা যায়। লিখিত অপেকা কথিত ভাষায় শাব্দিক ক্ষয়ের স্ভাবনা অধিক। এ সম্বন্ধে আরও কিঞ্চিৎ আলোচনা পূর্বেক করিয়াছি।

যদি কোন অসভ্যক্তাভি (যথা—গণ, ভাণ্ডাল, শক, হুন প্রভৃতি) কোন সভ্যদেশ জয় করে বা অল্পসংখ্যক বিজেতা বছজিতদিগের মধ্যে বাস করিতে বাধ্য হয়, তাহা হইলে জেতা বিজিতের ভাষা গ্রহণ করিতে বাধ্য হয়। মুদলমানেরা জিতদেশকেই আপনার স্থদেশ করিয়া गरेटिन, এजग डॉश्रा वर्मःथाक स्रेटिन दिनीय ভाষা ও আচার ব্যবহার অনেক পরিমাণে নিজস্ব করিয়া লইতে বাধ্য হইতেন ; এবং অপর পক্ষে বিজিতগণও জেতার ভাষা হইতে বছ শক্ষ চয়ন করিয়া স্বকীয় ভাষার পৃষ্টি করিত। এইরূপে প্রসিদ্ধ উর্জু ভাষার স্বাচ্চ হইয়াছে। উর্জু নামের ইতিহাস প্রসিদ্ধ 'বাগ্ ও বাহার' গ্রন্থে (আমির ধসরুর 'চাহার দঃবেশ' নামক পারভাগল্লের উর্জু অমুবাদ) এইরূপে বর্ণিত হইয়াছে—

মুসলমান বিজ্ঞে হিন্দু মুসলমানের কথার কিঞ্চিৎ সংমিশ্রণ ঘটিয়া-ছিল। আমির তৈমুরের বিজ্ঞারের পর সৈন্তাদিগের বাজার ( যাহাকে উদ্বিজ্ঞার বলিত ) সহরে আসিয়া উপস্থিত হইল, এবং সহরের বাজারেরও নাম 'উদ্বি বাজার' হইল। তৎপরে সম্রাট আকবরের রাজ্যকালে তাঁহার স্থনামে আরুপ্ত হইয়া নানা দিগেদ হইতে নানা জাতীয় লোক রাজ্ধানীতে সমবেত হইয়া ক্রেয় বিক্রয় ও কথোপকথনে এক নৃত্ন মিশ্রভাষার সৃষ্টি করিল, তাহারই নাম হইল 'উদ্বিভাষা+

ইংরাজের আগমনে নৃতন ভাষা সৃষ্টি না হইয়া বরং বিভিন্ন ভাষার একীকরণ হওয়ার সন্তাবনা হইয়াছে। সভ্যতার বিভারে ভাষার অক্লতা ও প্রাদেশিকতার বিনাশ হয়। ইহা হইতে অনেকে অমুমান করেন যে কালে যখন সমস্ত জগতে সভ্যতা সমৌচ্চ পদবীতে আক্লচ্ হইবে তখন সমগ্র জগতের ভাষাও একমাত্র হইবে। কিন্তু দেশ কাল ঘটনা সমান না হইলে প্রত্যেক জাতির উন্নতি ও স্বভাব একেবারে সমান হইতে পারে না; এবং সেই কারণেই সাক্ষাতিক সাধারণ ভাষাও বৃক্ষি অসম্ভব।

### बीठाक्षठख वान्नाभाधाय।

\* ইংরাজ পণ্ডিতেরা গ্রাপেন উর্দ্ধ দাদশ শতাকীতে গঠিত হইয়াছিল। উপত্রের বর্ণনার সহিত সমরের পার্থকা হইতেছে মাত্র। ব্রন্তমান প্রবৃদ্ধে সময় নির্দ্ধারণের শোন আবস্তকতা নাই।

## শীতের পল্লী

### ( চিত্র।)

দেশরর মাস পড়িতে না পড়িতে এবার আমাদের পল্লী অঞ্চলে বড় শীত পড়িয়াছে, কলিকাতায় বান্যা সে শীতের মাধ্যা অহতে করা হরহ। যদি এ সময় কাহারও শীত উপভোগের বাসনা থাকে, তাহা হইলে নগর ছাড়িয়া তাঁহাকে বঙ্গের কোন সভ্যতা-বিরল পল্লীবক্ষে আশ্রয় গ্রহণ করিতে উপদেশ দিই।

ঁ শীতকালের দীর্ঘরাত্রি লেপের কোমল অন্তরালে সর্বাঙ্গ আবৃত कतिया (अश्ययी निर्मापनीत क्लाएं तकनी अভिवाहि रहेन। अভि প্রত্যুষে আমার শির-প্রান্তবতী বাতায়ন খুলিয়া দিলাম, দেখিলাম দ্বুদ্দিক পরিস্থার হইয়াছে, কিন্তু ঘন কুরাসা ভেদ করিয়। দূরের বস্তু ভাল করিয়া দেখা যায় না, কে যেন আক্রাশ হইতে পৃথিবী পর্য্যস্ত প্রকৃতির সর্কাঙ্গে সাদ। থান মুড়িয়া দিয়াছে। এমন সময় শয়ন করিয়া थाका कष्ठकत्र विद्युष्टिना कतिया मत्रका थूलिया वाश्वित व्यानिनाम, वाफ़ीत সশ্বর্থ দিন্দ্রই রাজপথ--পথ জনশ্বতা। প্রাঞ্জনে শেফালিকার একটা গাছ, দেখিলাম টুপ্টাপ করিয়া লোহিত-বৃষ্ট শুল ফুলগুল শাখাল্রষ্ট इहेम्रा यात्रिया পড়িতেছে, বৃক্ষের পাদদেশ ফুলে ফুলে ভরিয়া গিয়াছে, পাড়ার কয়েকটা মেয়ে গায়ে দোলাই জড়াইয়া ফুল কুড়াইভেছে, ফুলের-ভাগ লইয়া কলহ করিতেছে, পরস্পরকে গালাগালি দিতেছে, আবার ভৎক্ষণাৎ পরস্পরে ভাব করিয়া নিজ নিজ ছেলে মেয়ের (মাটির পুতুল) রিবাছ প্রস্তাব পাকা করিতেছে। এই দারুণ শীতে ইহাদের শেফালিকা शूला मः গ্রহে আপত্তি নাই, ইহারা পুলা সংগ্রহ করিভেছে, কারণ (नकानिकात त्रख्णिन চयन कतिता जाशा त्रोटिन एकारेशा, जल्लाता

ইহারা কাপড় রঙ্গ করিবে। এক প্রসার রঙ্গ কিনিলে অনায়াসে যে-কার্য্য সম্পন্ন হইতে পারে, তাহাই করিবার জন্ম ইহারা এত শীতের মধ্যে প্রতিদিন অতি প্রত্যুষে পুষ্প সংগ্রহ করিতে আসে। একথা ভাবিয়া বৈষ্য্ক/ লোকের মুখে হান্তের সঞ্চার হইতে পারে, কিছ প্রতিদিন প্রভাতে পাধী না ডাকিতে, সূর্য্য না উঠিতে, বেত্র-নিশিত্ পাত্রে এইভাবে পুষ্প সঞ্চয় করিয়া, ইহারা—পল্লীগামের এই সকল শ্রমজীবি-তনমা, যে আনন্দ লাভ করে, যে তৃপ্তিতে তাহাদের স্থকোমল শিশুস্দর ঐ প্রস্ফুটিত শেফালিকাদলের স্থায়ই বিকশিত হইয়া উঠে, জ্ঞানবৃদ্ধ সমালোচক সম্প্রদায়ের তাহা লাভ করিবার কোন সম্ভাবনা নাই।

এই সকল দার্শনিক তত্ত্বের সমালোচনা করিতে করিতে প্রাঙ্গন-স্থিত চামেলি কুঞ্জের কাছে আসিয়া দাড়াইলাম, দেখিলাম শুভ্র চামেলি ফুটিয়া গাছ আলো কঁরিয়া রহিয়াছে; সেফালির মুত্রগন্ধের সহিত তাহার গন্ধ মিশিয়া মিশ্রসৌরভরাশি নাসার্ত্তক্র প্রবেশ করিতেছিল, এবং তাহা যেন শীতের জড়তা দেহের প্রতিগ্রন্থি ২ইতে খদাইয়া দিতেছিল। বাগানের দিকে চাহিয়া দেখিলাম স্থ্যমুখী তরুণ স্থ্যের অভিনন্দনের জন্ম পূর্বদিকে চাহিয়া আছে, রাশ্বি রাশি স্থুল স্থলপন্ম ফুটিয়া বাগণনের এক অংশ শোভাময় করিয়াছে, তাহাদের স্থবিস্তীর্ণ পত্র হইতে শিশির বিন্দু অবিরল ধারে ঝরিয়া পড়িতেছে, এক পাশে লাল করবী কুঞ্জ—গুচ্ছ গুচ্ছ করবী ফুটিয়া রহিয়াছে। তাহাদের পদতলে নীলবর্ণ অপরাজিতা সবুজ পাতার ভিতর হইতে আপনার বর্ণ-গৌরব প্রকাশ করিতেছে; বড় বড় লাল গোলাপ রাঙ্গা আঁথি মেলিয়া আকাশের দিকে চাহিয়া আছে এবং বকফুলের গাছে থোকা থোকা वकक्ष कृषिया धवनीव পूष्पश्चित्र निरक रयन वृक्षाकुष्ठ विखाव भूर्वक विनिट्टि । पथ या बाबा के उ कि कून या कुछ क तिया कृ दिशा कि, कुर शंख উर्क्त जूनिया ७ (कर आगानिशक न्लार्भ कत्रिष्ठ शाद्र ना।

এ মহন্দার বৃথি বিধাতার সৃত্ত হল না, দেখিলাম বাচলতি দাদা
নামাবলীতে সর্বান্ধ ঢাকিয়া—অফু টবরে সংস্কৃত প্লোক উচ্চারণ করিছে
করিতে বামহন্তে একটা সাজি ও দক্ষিণহন্তে একটা অনতিদীর্ঘ আঁকুশি
লইয়া সেই বকর্কস্লে সমাগত হইলেন। দেখিছে দেখিতে ফুলে
ভাঁহার সাজি ভরিয়া উঠিল, তথন তিনি বাগান হইতে আঁরও কতকগুলি
অন্ত পুশ্ল সংগ্রহ করিয়া প্রফ্ল মনে গৃহাভিমুখে প্রস্থান করিলেন।

বিহলদেল এতক্ষণ তরুশাখায় কৃজন করিতেছিল, ক্ষুধিত কাকের দল ঘরের চালে বসিয়া কর্কশ কর্পে চীৎকার করিতেছিল, এবং একটা দহিয়াল বাঁশের অগ্রভাগে বসিয়া স্বস্বরে গান করিতেছিল। প্রাতঃ-স্থাের কিরণ কুহেলিকার ঘন যবনিকা ভেদ করিয়া তথনও ধরাতল স্পর্শ করিতে পারে নাই। রাজপথে তথনও লোকের স্থাগম হয় নাই। রাজপথে তথনও লোকের স্থাগম হয় নাই। রাজপথে স্বাভঃ ভ্রমণে বাহির হইয়া পড়িলাম।

অপ্রশন্ত ধ্লাবর্জিত ক্ষ্দ্র গ্রাম্য়েশ, মিউনিসিপালিটীর রাবিসের ভাবে তাহা কোন দিন ভারাক্রাস্ত হয় নাই। পথের ছই পাশে তরু, লতা, গুলা, বাঁশের গাছ, থেজুর গাছ, বন হলুদের জঙ্গল, একটু দ্রে আম কাঁঠালের বাগান। দেখিলাম, এই নিদারণ শীতের মধ্যেও একজন গাছি প্রায় অনারত দেহে থেজুর গাছে উঠিয়া রস সঞ্চয়ার্থ রক্ষক ঠ-সংলয় কলসগুলি পাড়িতেছে। পথের উপর 'বাঁক', বাঁকের ছইদিকে রজ্জ্বদ্ধ আট দশটি কলস; অতি প্রত্যুবে উঠিয়া গাছ হইতে সে এই কলসগুলি পাড়িয়াছে এবং সমস্ত রস ছইটি স্বতন্ত্র কলসে ঢালিয়া ভাহা পূর্ণ করিয়াছে। এই রসে গুড় প্রস্তুত হইবে।

আমার বাম পার্শে পথের উপরই একটা খেজুর গাছ, ভাহার কঠে তথনও কলসি বাঁধা আছে। কলসটি যেখানে বাঁধা আছে সে স্থান মাটি হইতে ছই হাত উচ্চ হইতে পারে, একটা বেজী রসাম্বাদনের লোভে সেই কলসের মুখে উঠিয়াছিল, স্থামাকে দেখিয়া ক্রত নামিয়া ८गण। (मिथिनाम, এकটা मानकहूत्र भाषा कनरमत मूर्थ श्रहतीत साम দপ্তারমান আছে। কলসির ভিতর মানকচ্ থাকিলে সে কলসির রঙ্গ চুরি যাইৰার ভর নাই। রাত্রে যদি কেহ চুরি করিয়া ভাহা পান করে, ভাহা হইলে মুথ পুলকাইয়া তাহাকে তিনদিন ছুটিয়া বেড়াইতে হয়,— এ শাসন পিনলি কোডের শাসন অপেকা গুরুতর,—এ চুরীর দণ্ডের আপাল নাই।

প্রথমেই গোপ পল্লীতে প্রবেশ করা গেল। সঙ্কীর্ণ পথের উভন্ন পার্ষে এই পল্লা অবস্থিত। বৃক্ষাদি পরিবেষ্টিত পর্ণ কুটিরগুলি বৃহৎ না হুইলেও প্রত্যেক গৃহত্বের প্রাঙ্গনটি অপেকাক্বত প্রশস্ত, এই প্রাঙ্গনে অনেকথানি স্থান বাঁশ দিয়া শক্ত করিয়া ঘেরা, ইহাই शৌষাড়, গোষালাদের গরুগুলি এখানেই প্রধানতঃ রাত্রিকালে আবদ থাকে। रथाँबाएज़ পाम् এकथानि ठाला घत्र, व्यक्षिकाः म चत्रहे कि कित रिका बात्रा পরিবেষ্টিত, দেই বেড়া মাটি দিশ্বা লেপা; কোন কোন অট্টালিকার মধ্যে অতি তুর্গম অংশে যেম্ন চোর কুঠুরী থাকে—অথবা সেকালে থাকিত, দেইরূপ এই কঞ্চির বেড়া বেষ্টিত গোয়াল ঘরের মধ্যে আর একটা কুঠুরী, রাত্রে অনাবৃত খোঁয়াড়ে পয়ন্বিনী গভৌগুলিকে রাখিলে এই পৌষের প্রচণ্ড শীতে পাছে তাহাদের হুগ্ধের অল্পতা ঘটে এই ভয়ে ছ্প্তবতী গাভীগুলিকে খোঁয়াড়ের ভিতর না রাথিয়া সেই ঘরের মধ্যে বাধিয়া রাথিয়াছে, তাহাদের বাছুরগুলি সেই কুদ্র কুঠুরিটির মধ্যে আবদ্ধ আছে। প্রভাত হইয়াছে দৈখিয়া বৎসগুলি মাতৃস্তন্ত পানের জন্ম কাতর ভাবে ব্যা ব্যা করিয়া ডাকিতেছে; তাহাদের জননী इक्षडारत उधःकोड कतिया नीन न्या प्रश्ने कुछ कुर्त्री होत्र निष्क চাহিতেছে,—তাহার সন্তান-অদর্শন জনিত বাাকুলতা প্রকাশ করিবার अश्र 'हाश्रा, हाश्रा' क्रिया जिल्डिह ; किश्व वार्खमान क्रिया क्रान क्ल नाई, शायानिनी जात्न এठ मकात्क वाहुत हाफित्न इस क्ष

रहेटब, दिना नम घिकात शूर्व छारात ছध्य र्फेए ছ्र ४ वर्ष रहेरव ना।

এখনও কুয়াশা কাটিয়া রোদ উঠে নাই। গরুগুলা, ছই চারিটাঃ वनम ७ महिष (थैं। याएज मर्था श्वित्र जारव मां ज़िल्ला जारह, कान কোনটা বিসিয়া বিসিয়া রোমস্থন কার্য্যে নিযুক্ত ত্ই একটা শালিক পাখী কোন গরুটার স্বন্ধে উপবেশন করিয়া ভাহার কর্ণমূলের কীট ভক্ষনপূর্বক পরোপকারে প্রবৃত্ত। ঘোষাণী একটা বড় ঝুড়িতে থোঁয়াড়ের গোময় সংগ্রহ করিয়া এক স্থানে স্পাকারে রাখিতেছে, যে স্থানটিতে তাহা রক্ষিত হইতেছে—দেখানে গোময়ের একটা ক্জ गित्रि (गावर्कन रुष्टि इदेशाइ। ग्रक्श बित्क भी जित्र इस इदेख উद्घान করিবার জ্রন্থ ঘোষ থোঁয়াড়ের ভিতর হুই তিন স্থানে 'সাঁজাল' করিয়াছে। কতকগুলি কাঠ, বাঁশ বা ঘুঁটে একত্র করিয়া ভাহাজে वाक्षन ध्वाहेश पियाहि, किथा व व दूर व्यावहि—हेश है मैं कान। ধ্মে চতুদিক অন্ধকার হইয়া গিয়াছে, প্রভাতের গাঢ় কুয়াশাকে शाव्छत्र कतिया जूनियाटह। <ाट्याट्यता शिंटि कत्त्रय ना-काठी <ा ভামাক সাজিয়া তাহাতে সাঁজালের আগুন স্থাপন করিতেছে, এবং সাঁজালের পার্শ্বে বিসয়। বহ্লি-দেবন করিতে করিতে তিন পয়সা দামের ভাবা ছঁকাতে দেই তাম্রকুট ধূম পর্ম পরিভৃপ্তি ভরে উদরস্থ করিতেছে। গাত্রে ময়লা নেকড়া জড়ান চুই তিনটা ছেলে মেয়ে সেই সাঁজাল বেষ্টন করিয়া বসিয়া অগ্নিতে হাত পা শেঁকিতেছে, কেছ ঠকু ঠক্ করিয়া কাঁপিতেছে, কেহ কোঁচড়ে এক কোঁচড় মুড়ী লইয়া এক এক থাবা করিয়া তাহা মুখ-গছবরে নিক্ষেপ করিতেছে। খরের शार्न हारे गानात्र এक हो कूकूत्र कूछ नी शाकारेग्रा खरेत्रा खाएह।

्र व्यान क दिनाम द्रोज डिजिन, कुमाना शीरम शीरम कारिया साईरङ्क भाषश्री हाणारेया वागी भाषात्र अदिम कित्रगाम। अकाश क्रिक्र

গাছ, বৃক্ষতল স্থপরিচ্ছন, বিন বাগদীরা থেজুরে গুড়ের 'বাইন' করিয়াছে। বৃক্ষ ছারার অনেকথানি স্থান থর্জুর পত্রের বেড়া দিয়া ঘেরা, সেথানে বড় বড় ছটি উনন খুঁড়িয়া বাগদীরা প্রকাণ্ড 'থোলায়' থেজুর রদ জাল দিতেছে; যেমন থোলা তেমই উনন, মাটিতে গর্জ কাটিয়া, এই উন্ন প্রস্তুত হইয়াছে, কাল কাসিন্দা, আখ্রাওড়া, ভাঁট • প্রভৃতি আগাছা উননের চতুর্দিকে স্তৃপৃষ্কারে পড়িয়া রহিয়াছে, তাহা मिश्राष्टे উননে জাল দেওয়া হইতেছে। চট্পট্ করিয়া শল উঠিতেছে, খোলায় রস ফুটিতেছে। অনেকে ঘট লইয়া 'তাত রসা'র জন্ম দাঁড়াইয়া আছে। রদ একটু ফুটিয়া উঠিলে তাহাকেই 'তাত রদা' বলে। পল্লী-গ্রামের নিম্বশ্রেণীর অনেক লোক এই উত্তপ্ত থর্জুর রদের পক্ষপৃতী। कि कि कि कि कि कि नित्त के कि विभिन्न कि कि कि कि कि कि कि উভয় বাহু বিস্তার করিয়া বহ্নি দেবন করিতেছে। গলায় দড়িবাঁধা क ठक छिन (ছाট (ছाট कन म ". উননের এদিক ওদিকে গড়াগড়ি যাইতেছে। প্রভাতে তাহারা এই ভাবে 'গড়াগড়ি যায়, এবং সন্ধ্যার সময় থর্জুর বৃক্ষের ক্ষন্ধে আরোহনপূর্বক রদ সঞ্চয় করে।

ছোট ছোট ঘর, মাটির দেওয়াল, উপরে খড়ের চাল, বারান্দায় हान्न खरेया तामस्म कतिराहि। এक हो वाड़ीत आकत्म काँठान গাছের একটা চারা, গাছটিতে বোধ হয় ফল ধরিতে আরম্ভ করিয়াছে, গৃহস্থ গাছে 'ওম' বাঁধিয়া দিয়াছে। শীতকালে কাঁঠাল গাছের ওঁড়ির চতুর্দিকে কতকগুলি জঙ্গল দড়ি বা 'কঞ্চির চটা' দিয়া বাঁধিয়া **(मश्रा रुप्र, ইराइटे नाम 'अम दाँधिया' (मश्रा,—श्रहीवामिश्रापद्र विश्वाम** এরপ করিলে গাছে অধিক ফল ধরে। এ অঞ্চলে বান্দীরাই ভরকারী विक्किछ। हार्छेत रवना इहेन ভाविया कोन त्रमणी এक भवेना पारमत्र ছোট একথানি বঁটু দিয়া গৃহ-প্রাঙ্গনজাত পালঙ্গ শাক কাটিয়া চুপড़ीতে ফেলিতেছে। काश्रत्र । **काश्रत्र । वाश्राक्ष ।** वाश्राद्य । निम किनियार्छ, यामी स्रोटि भिनिया निम जूनिया 'किछि' शूर्ग कति-তেছে। কেহ বাড়ীর সমুখে কাটাথানেক জমিতে বেগুন লাগাইয়াছে, বেগুনের সন্ধানে গৃহস্থ একটা বাঁশের আঁকুশি দিয়া গাছের শাথাগুলি উল্টাইয়া দেখিতেছে, একটা বড় বেগুণ দেখিলেই তাহা তুলিয়া त्याजात्र फिलिट्डि। किर माठात छे तत्र रहेट लाखे পाजिट्ड কেহ বা অনুভাকর্ম হইয়া বেড়ার প্রাপ্তে প্রকাণ্ড একটা গর্ত্ত খুঁ ড়িতেছে; প্রথমে মনে হইল, লোকটা বুঝি কোন গুপ্ত ধনের সন্ধান পাইয়াছে, পরে শুনিলাম দে মাটার আলু "তুলিতেছে। গাছটা লতাইয়া একটা প্রকাও নোনা গাছের উপর উঠিয়াছে, নোনার শাথাগুলিকে প্রেম-वक्रार्न এমনই করিয়া বাঁধিয়াছে ষে নোনার অন্তিত্ব লোপ হয় হয় হইয়া উঠিয়াছে। কে ভাবিয়াছিল—ইতি মধ্যে ভগবানের ইচ্ছায় বাগদী-यूबरकत मिर बानूत উপत पृष्टि পড়িবে ? পাশেই একটা কলাবাগান, কুত কাদি কলা পড়িয়াছে তাহার সংখ্যা নাহ। বাগানস্বামা এক কাদি কাঁচা কলা কাটিয়া থোড় সংগ্রহের প্রত্যাশায় গাছটিকে খণ্ডখণ্ড করিয়া চিরিতেছে, হই তিনটা গরু উর্দ্ধাথে ভূপতিত কলার 'ডেগড়ো' চর্বণ করিতেছে। 'শীতকালে পল্লীগ্রামে প্রকৃতিদেবা তাহার সম্ভান-भगरक शास्त्र शास्त्र क्ष्रभणका करत्रन ना।

গ্রামপ্রান্তবর্ত্তী মাঠে আসিয়া পড়িলাম। দৃশ্র সম্পূর্ণ পরিবর্ত্তিত हिर्देश। ञश्रश्रापत्र माधारे धान काणे। ( अव रहेशाह्यः, त्र ज्वन क्यीर्ड এथन পूनर्कात्र চाय जात्रङ इरेब्राट्स, क्लान क्योर्ड नाक्न हिनिटिंग्स, मात्रि मात्रि कृषक इनमूष्टि धत्रिया इन हानना क्रिटिंग्स, वनमक्ति 'क्षाँमान' काँए नहेमा जिंछ करहे नामन है। निमा नहेमा याहेटलट्ट। नीटलत्र द्रोज मिट्ट नागिटलट्ट वनिया जाहेटनत्र भारम याबानि थ्निया त्राथियारक, इटे এक हो याबारन थिय निभ्रतन्त्र अतिहत्त शांख्या यात्र, जाशांत्मत्र जेशांत्रत्र माखाँ मतुष्य ७ गांग त्रम कता । अम-

जन क्रवक नाजन हाजिया निया, ''পোয়ালের ব দ্রি' আতিনে তামাক শাজিতেছে। মাঠের ধারে উঁচু পথ দিয়া একথানি সোরারির গাড়ী গ্রামের অভিমুথে ু যাইতেছে, গাড়োয়ানের মাথায় ময়লা চাদর জড়ান, শীত নিবারণের অভিপ্রায়ে কানহটিও তদ্বারা ঢাকিয়াছে, গায়ে এক-थानि অপরিষ্ঠার কাঁথা, স্থানেস্থানে নীলাম্বরী কাপড়ের তালি দেওয়া, গাড়োয়ান यथन কোন এক পাশ यूँ किया পড়িয়া, বলদের লেজে মোচড় भिया "5, 5, वावा धन्छा" विनया वनम इंटिक छा गमान वाधा করিতেছে, তথন তাহার সেই কাঁথার ভিতর দিয়া তাহার অঙ্গের একটি ছেঁড়। গঞ্জীফ্রক দেখা যাইতেছে। হিম নিবারণের অভিপ্রায়ে গাড়ীর ছৈয়ের উপর একথানি শতরঞ বিস্তার্ণ করিয়া দড়ি দিয়া বাঁধিয়া দেওয়া হইয়াছে। গাড়ার সমুখভাগ একথানি ময়লা হল্দে আলোয়ানে ঢাক।। একটা বার তের বংসর বয়সের নলকপরা স্থন্দরী বধু সেই আলোয়ান ফাঁক করিয়া এক একবার সভৃষ্ণ দৃষ্টিভে অদূরবন্তী গ্রামের াদকে চাহিয়া—আবার তথনই আলোয়ানের অন্তরালে মুথ লুকাইতেছে,—বোধ করি এই গ্রামে মেয়েটির বাপের বাড়ী। হয়ত সে কত দিন পরে তাহার শ্বশুরবাড়ী ইইতে বাপের বাড়ী আসিতেছে। সেথানে মা আছে, ছোট ভাই আছে, ভগিনী আছে, প্রতিবেশিনী স্থাগণ তাহার জন্ম এতক্ষণ পথ চাহিয়া দাঁড়াইয়া আছে। গাড়ী কতক্ষণে বাড়া পৌছিবে, ভাবিয়া বালিকা সেই মন্থর গামী শকটে কি অধীরতার সহিত সময় কাটাইতেছে, তাহা তাহার অবস্থায় না পড়িলে चार्च किकार वृश्वित !

একটা টাটু ঘোড়ার চড়িরা একটি বাবু আসিতেছেন, কোন নীল কুঠির দেওয়ান বা আমিন হইবেন! বাবুটির পরিচ্ছদ দেখিরা আশহা হয় হয়ত বা তিনি শুভরবাড়ী যাতা করিয়াছেন। হাতে এক গাছি ভোট বেত, তাহার মাধাটা রূপা দিয়া বাঁধান, পরিধানে কালাগেছে ধৃতি, পারে কুল মোজা, বাদামী রঙ্গের জুতা জোড়াটতে হই তিন স্থানে তালি দেওয়া, দেখিয়াই বৃঝিতে পারা যায়,—জুতা জোড়াট অনেক নীলের জমীর উপর পরিভ্রমণ করিয়া অত্যন্ত পরিশ্রান্ত হইয়াছে। বাবুর গরদের কোটের উপর—প্রকাশু হাঁদিয়াদার শাল; দ্বিরদের কোটের কলরের পাশ দিয়া কাঠের মালা একটু বাহির হইয়া রহিয়াছে; পাঁচরঙ্গা উলের গৃহনির্দ্মিত কন্ফর্টারটি মাথার উপর কুগুলী করিয়া জড়ান। পণের ধূলা উড়িয়া বাবুর রুফ্তবর্ণ শাশ্রুজাল ধূসরবর্ণে পরিণক্ত করিয়াছে। তাহার পন্চাতে অশ্বরক্ষক, অথবা ভৃত্য। তাহার মাথায় একটা টিনের পোর্টম্যান্ট, কটিতটে একটি বোঁচকা গামছায় বাঁধা, এই বোঁচকাটি বোধ করি তাহার নিজস্ব। জারু পর্যান্ত ধূলার-ফুলইকিং পরিয়া ভ্ত্য প্রভূর অন্মের পন্চাতে একবার হুটিয়া ঘাইতেছে এক একবার বা ক্লান্তিভরে পিছাইয়া পড়িতেছে।

পথের এক পাশে একথানি ছোলার ক্ষেত, তিন চারিটা স্ত্রীলোক বিষয়া ছোলার শাক তুলিতেছে,—শাকে অঞ্চল পূর্ণ হইলে তাহা ঝোড়ায় ঢালিতেছে, এই ঝোড়া পূর্ণ হইলে শাকগুলি পলীবাসীগণের গৃহে গৃহে বিক্রয় করিয়া কেড়াইবে, গৃহিণীগণ চাউল দিয়া শাক ক্রয় করেন।

পথের অক্স পালে শর্ষপক্ষেত্র, পীতবর্ণ ফ্লেণ তিন চারি বিঘা জিম
পূর্ণ, যেন কে পল্লী জননীর অঙ্গ সোনার ফুলে মৃডিয়া দিয়াছে। শর্ষপ
ফুলের একটা উগ্র মিষ্ট গন্ধ নাসারদ্ধে প্রবেশ করিতেছে, শুল্রপক্ষ
কুল্র ক্ষুদ্র অসংখ্য প্রজাপতি সেই সকল ফুলের উপর ঘুরিয়া ঘুরিয়া
উড়িয়া বেড়াইতেছে, মধ্যে মধ্যে ছই চারিটি মশিনা গাছ, তাহাদের
নীল ফুল গুলি বৈচিত্র্য ভঙ্গ করিতেছে। কোথাও অপেকার্কত অর
পীতবর্ণ তারামণি ফুলের ঝাড়, ছই একটা রমণী তারামণির ফুল সংগ্রহে
বাস্ত। তারামণি ফুলে বেগুন ও বড়ি দিয়া ধেমন চচ্চুড়ী পল্লীবাসিনীগণ
বাধিয়া থাকেন, ভাহার সহিত কপি কড়াইস্ট টসংযুক্ত চিংড়ি মাছের

মাথার তরকারীর তুলনা চলিতে পারে না। যেন একটা নৃতন খেজুরে গুড়ের পায়েদ, অন্তটি কৃষ্ণনগরের সর পুরিয়া।

অদূরে অরহর ক্ষেত্রের নীল শোভা। শ্রামল পত্র, মধ্যে মধ্যে কাঞ্চন-কাস্তি পুপাগুছে। গাছগুলি সরল হইয়া উঠিয়াছে, তাহাদের नश नश का छ, नित्र मतूक ज्नन प्रथा याहेट एह — इहे ना हि इश्व চরিতেছে। গাছের ছায়ায় হুই চামিটি কপোত কম্পিত পক্ষে উড়িয়া আদিয়া ব্য়িতেছে। গাছের শাখায় বদিয়া ঘুঘু গুলা ফুলাইয়া, মাথা দোলাইয়া ঘৃঘৃ শব্দে প্রেমালাপ করিতেছে।

कर्मक শত গজ দূরে नही—नहीट অধিक छन नाई; शामन শস্ত ক্ষেত্ৰ নদীর উপ 4 প্ত পর্যান্ত বিস্তৃত, নদীর মধ্যে স্ক্র জলরেখা — ष्ट्रे পाट्य निविष् देगवाणदायि, • दक्वण आदनद्र घाएँ पि পदिष्ट्रा। তীরে বালুকা রাশি—সুর্য্য কিরণ পড়িরা চিক্ চিক্ করিতেছে—জলের धारत এक्शानि शूल मौर्घ कार्रे ७ পড়িয়া রহিয়াছে, কভকালের কাঠ কেহ বলিতে পার না, আমরা যথন শিও ছিলাম তখনও এ কাঠখানি এই ভাবে পড়িয়া থাকিতে দেখিয়াছি। পুরুষেরা শীতকালের বেশী বেলায় এই ঘাটে স্নান করিতে আসেন। স্থতরাং পল্লীরমণীগণ সকালে এথানেই স্নান সারিয়া লন, ঘাটটি ভাল তাই রমণীগণ এ ঘাটের কিছ भक्तभाष्टिनौ, তবে সকলেই যে এ ঘাটে আসেন তাহা নহে। <u>প্রাম্য</u> বধুরা এ ঘাটে আদিতে সঙ্কোচ বোধ করেন, কিন্তু পল্লীছহিতাদের সে সঙ্কোচ নাই। আজ দেখিলাম এই কাঠের উপর বসিয়া দত্তদের জয়ত্র্বা " वानि निया पड़ा गाकिएएड, — याक मि विथवा, मानाधान मर्काक আবৃত। মুধ ধানি মলিন, কেশ লাবণ্য হীন,—কিন্ত এই অয়হ্বৰ্গা একদিন এই কাঠে বদিয়াই তাহার আগুল্ফ লম্বিত ক্ষ কুম্বলরাশির (वर्गी मूक कत्रिक, सूरकायम পूष्पगर्स वाशुखत मोत्रकाकूम इहेमा उठिक, এবং তাহার স্থাঠিত, স্থশর চরণ প্লান্তের অলক্তরাগ, বালুকারাশির

উপর প্রতিফলিত ভ্ইত, তাহার ফিতেপেড়ে মিহি শান্তিপুরে শাড়ীথানি সর্কাঙ্গে লিপ্ত হইয়া স্থন্দরীর বর্ণগৌরবে আপনাকে নিপ্রভ করিয়া তুলিত, এবং গামছাখানি তাহার স্কন্ধ হইতে সমুথলাগে শ্বিলম্বিত পাকিয়া দেহের একটি ললিতভঙ্গি বিস্তার করিত। তথন জুয়ত্র্গার নবযৌবন, সে তখন সধবা, রসিকা, আমোদিনী এবং পতি-' সোহাগিন্তা ছিল—আর এখন দ্বেগত যৌবনা, ধবিধবা, পরুষভাষিণী, গম্ভীরা এবং নারীর মাতৃত্ব-বঞ্চিত, উভয়ের মধ্যে প্রভেদ্ধরণ করিয়া আমি শিহরিয়া উঠিলাম, কিন্তু সেই কাঠ জচক্তাবে তাহার পদতলে পড়িয়া রহিয়াছে। শীতের ভয়ে স্ত্রীলোকেরা চুই একটা মাত্র ডুব দিয়া তীরে উঠিতেছে এবং আর 'শীতকাল্টা গেলে নেয়ে বাঁচি!' ৰিলিয়া শীত ঋতুর প্রমায়ু হ্রাসের কামনা করিতেছে। সমুথের চুই পা বাঁধা একটা পুকুরে ঘোড়া—ইটের পাঁজার কাছ হইতে লাফাইতে লাফাইতে আসিয়া পাঁকে পড়িল।

ময়রারা রাশি রাশি শৈবাল কাটিয়া গরুর গাড়ীতে বোঝাই দিয়া লইয়া যাইতেছে। গুড়ের 'পেছে'র উপর দিয়া—চিনি প্রস্তুত করিবার জন্ম এগুলির আবশ্বক। একজন জেলে একগলা জলে হাঁড়ি মাথায় ৰাধিয়া ঠেলাজালে মাছ ধরিতেছে, ছোট ছোট ছুই একটা পুটী বা বেলে মাহা পাইতেছে, মস্তকের হাঁড়িতে পুরিতেছে। লোবটির কন্ত সহা করিবার ক্ষমতা দেখিয়া—সেকালের যোগীখাযি— যাঁহারা গ্রীম্মকালে অথিরাশির মধ্যে বসিয়া পঞ্চপা করিতেন—উ হাদের কথা মনে পড়িয়া প্রেল। এত কপ্ট করিয়াও দিনে সে চারি পয়সার মাছ ধরিতে পারেনা, এবং সেই অনির্দিষ্ট উপার্জনের উপর তাহার স্ত্রীপুত্রাদির প্রতিপাদন নির্ভর করিতেছে! এতদ্বিন সে জমিদারের থাজনা, মিউনিসিপালিটার টেকা, প্রভৃতি সরবরাহ করে। দূরস্থ, বাঁশজাল হইতে মাছ ধরিয়া महामक्षत किला इरेशानि जिलाफिक विद्या घाएँ प्रिक वागिरक्र ।

তীর সংলগ্ন একথানি নৌকার দাঁড়ের উপর বসিয়া একটা মাছরাঙ্গা পাখী রোদ পোহাইতেছে।

বেলা অধিক হইয়াছিল, কুরাসার পর রৌদ্র, বেশ তীক্ষ্ন বোধ হইতে লাগিল। লোকে বাজার করিয়া বাড়ী ফিরিতেছে, কাহারও গামছাতে হটো বেগুন ও হুই চারিটা মূলো; কেহ, এক পয়সার চিংডু কিনিয়া কচুর পাতায় জড়াইয়া লইয়া কলিয়াছে।—কুলোর উপর 'সরা-গুড়' রাখিয়া, গামছা কাঁধে বান্দীযুবক তাহা বাজারে বিক্রয় করিতে यार्रेट रह। वाजा दित्र निक्रेवर्डी इरेग्ना नाना नामशी नश्श्र भूर्यक বহু সংখ্যক ক্রেভাকে চলিতে দেখিলাম।

টহাবাজার তরকারীতে পূর্ণ,—বেগুন, মাটির আলু, লাল • আলু, मूला, कठू, लाउ, कूमएा, शाइ, कांठाकला, नाना প্रकांत भाक, বরবটি প্রভৃতি বিক্রয় হইতেছে। কপি, কড়াইশুটি, শালগম, গাজর, বীট প্রভৃতির সহিত আমাদের পল্লীর সংশ্রব পূর্কেছিল না। এখন কিছু কিছু হইয়াছে, কিন্তু সে সংশ্রব কলিকাতার আমদানি। যে গরীব পালঙশাকের ব্যবস্থা করিতে পারেনা, ধার করিয়া দেও আটপয়সা मिया একটা কপি কিনিতে পরাখ্যুথ হইতেছেনা। • চার্কাক্ বলিয়াছেন, 'ঋণং কৃত্বা ঘৃতং পিবেং।'

বাড়ীতে ফিরিয়া দেখি হারা চাকরটা প্রকাণ্ড একটা শজিনার ডাল ভাঞ্চিয়াছে, ছোট ছোট ছেলে মেয়েরা পাকা পাকা ফুলগুলি বাছিয়া बहेट उहि। क्यारक विविधाय—"या बूड़ी, ভোর কর্তামাকে জিজাসা করিয়া আয়, আজ কি রালা হচ্ছে।"

চারি বংসরের বুড়ী তেল ও গামছা লইয়া ফিরিয়া আসিল, একে-वादां आभात्र शिर्छत উপর ঝুঁ কিয়া পড়িয়া বলিল, "বাবা, ভাত হয়েচে, নাওগে। আজত আর মাছ নেই, আজ পালন্তশাক, লাউর ঘাট, পুঁই ডাঁটার চচ্চড়ি, মেটে আলুর ডাল্লা, অরহরের ডাল, বেগ্রণ

ভাজা আর কুল দিয়ে বড়ি দিয়ে শজনে ফুলের অম্বল, আর তুমি থেজুরের রসের পারেস থেতে চেয়েছিলে, ক্ষ্যান্তর মা রস এনে দিয়েছে —থাদা পাষেদ হয়েছে। কর্তামা তোমার জন্মে এক বাটা তুলে त्रित्थहि। वावा नीश्शित न्नान करतारा।"

অতএব আজ আর অগ্রসর হইবার সাধ্য নাই।

श्रीमीरनक्क्यात ताय।

(0)

১৩০৮ সালের জার্গ ও আখিন মাসের ভারতীতে আমি
নানা প্রমাণ উদ্ভ করিয়া দেখাইয়াছি প্রাচীন কালে ভারতবর্ষে ক্ষ-কার একটা স্বতন্ত্র মূল ব্যঞ্জন বর্ণ বলিয়। পরিগণিত হইত। ক্ষ-কারের প্রাচীনতা ও মৌলিকতা কাহারও অত্বীকার ক্রিবার উপায় নাই। আর্য্যজাতির ভারতে আগমনের পূর্বেও ক-कात्र आयाँ। वर्षमालात्र विनस्त हिल। यथन मुक्तं जा वर्ष ममूह ( कर्षाद ট, ঠ, ড, ঢ, ণ, ষ, ৠ, ৠ ) স্প্ত হয় নাই, তথনও ক্ষ-কার বিভামান ছল। ক্ষ-কারের ইতিহাস স্বিশেষ রহস্তজনক। ইউরোপীয় বর্ণমালায় "x" ্ও ভারতীয় বর্ণমালায় "ক্ষ''—উভয়ই এককার্য্য সম্পাদন করিয়া থাকে। সংস্কৃত "দক্ষতর" ও লাটান "dex-ter" একই শক। সংস্কৃত ভাষার "অক" শব্দ ও গ্রীক ভাষার "axōn," লাটীন ভাষার "axis,"

শাক্ষেন ভাষার "eax"—ইহারা মূলত: একই শক। এইরূপ আরও আনক উদাহরণ উদ্ভ করা যাইতে পারে। এই সকল উনাহরণ দৃষ্টে স্পষ্ট জানা যায় যে ইউরোপীয় ভাষার "x" ও সংস্কৃত ভাষার "ক" প্রকৃত প্রতাবে ভিন্ন বর্ণ নহে। বড়ই আশ্চর্য্যের বিষয় পাশ্চান্ত্য আর্য্যগণ "x" কে স্বীয় বর্ণমালায় অবিকৃতভাবে রাখিয়াছেন কিন্তু প্রাচ্য আর্য্যগণ "ক" কে একেবারে বর্ণমালা হইতে বিসর্জন দিয়াছেন। বৈয়াকরণগণ "ক" কে তাড়াইয়াছেন বটে কিন্তু চলিত ব্যবহারে "ক" এখনও বর্ণমালায় বিরাজ করিতেছে।

কোন বৈয়াকরণগণ "ক্ষ"-কারের প্রতি নির্দয় হইলেন তাহার কারণ অনুসন্ধান করিতে যাইয়া আমরা দেখিতে পাই তাঁহারা "ক্ষ"কে "ক"ও "ধ" এতত্ত্ত্যের সংযোগ হইতে সম্পেন্ন বলিয়া মনে করেন। যদি "ক্ষ" যথার্থই সংযুক্ত বর্ণ হয় তাহা হইলে বর্ণমালায় উহার পৃথক্ স্থান প্রদান করা অভ্যায্য তাহাঁতি কোনও সন্দেহ নাই। কিন্তু আমি বলি উহা প্রথমে সংযুক্ত বর্ণ ছিল না। ভারতীয় আর্য্য জাতির এক্ষণে প্রোচারস্থা, বিগত হুই তিন সহস্র বৎসর হইতে ইহাদের উচ্চারণের অনেক বৈকল্য ঘটিয়াছে, এই হেতু "ক্ষ"এর প্রকৃত উচ্চারণ এখন নাই। "ক"ও "ষ" এই হুই বর্ণের উচ্চারণের সহ "ক্ষ"এর উচ্চারণের জনক সাম্য থাকায় "ক্ষ"কে "ক"ও "ষ"এর সংযোগে উৎপন্ন বলিয়া অবধারণ করা হইয়াছে। কিন্তু প্রকৃত প্রস্তাবে "ক্ষ"এর উচ্চারণ

পূর্বকালে ক্ষতার প্রকৃত উচ্চারণ কিরূপ ছিল তাহা নির্ণয় করা একণে ছ:সাধ্য। কালসহকারে উহার উচ্চারণের নানা বৈচিত্র ঘটিরাছে। স্থল বিশেষে "ক্ল," "ক+শ," "ক+ম," "ক+ম," "ক+ম," "ক+ম," "ক+ম," "ক+ম," "ক+ম," "হ+ম," "হ+ম," "হ+ম," "হ+ম," "হ+ম," "হ+ম," "হ+ম," "হ+ম," "হ+ম," "হ-ম," "হ-ম," হত্যাদির তুলা হইয়া পড়িয়াছে। যথা—

Fox = জার্মান্—Fuchs. Ox = জার্মান্—Ochs. Axe = জার্মান্—Achse.

উল্লিখিত স্থলে "x" বা "ক্," "ch + s" এতত্তমেব তুলা।
ভিক্ =পালি ভাষার ভিক্থু।

তু:খ= পালি ভাষার তুক্থ। '

উল্লিখিত হলে "ক্" বা "x," "ক + খ" এতগভয়ের তুল্য।

ক্ষয় = পালি ভাষার "থয়"।

ক্ষান্তি = পালি ভাষার "গান্তি"।

উল্লিখিত স্থলসমূহে "ক্ষ" এই অক্ষর "খ" এর তুকা।

"অক্ষ" এই শক্টী ডেনমার্ক দেশীয় ভাষার "ökse" এই শক্টীর তুল্য। এস্থলে "ক্ষ" ও "ks" পরম্পর অভিন্ন।

সংস্কৃত 'অক্ষ' ও গথিক "auhsa' একই শব্দ। এস্থলে "ক্ষ' ও "hs" কে একই বৰ্ণ বলিতে হুইবে।

'অবংক্ষীং'' পদে ''ক্ষ'' এই অক্ষরটা ''চ'' ও ''ষ'' এতদুভয়ের যোগে উৎপন্ন।

Six এই ইংরাজী শব্দটী সংস্কৃত "ষষ্" এই শব্দের তৃল্য। ইহাতে বোধ হয় "ক্য" রূপাস্তরিত হইয়া "ষ"কারে পরিণত হইয়াছে।

আবার দেখুন চক্ধাতু হইতে অক্সান্ত পদ নিষ্পায় হয়। ওস্থা "ক্ষ" এই বর্ণ "ক্ষ" এই ভাব প্রাপ্ত হইয়াছে।

ইউবেপীয়, পারসীক ও ভারতীয় ভাষা সমূহ হইতে এইরূপ অসংখ্য শব্দ উদ্বিত করা যাইতে পারে এবং এই সকল শব্দ বিশ্লেষণ করিয়া দেখিতে পাওয়া যায় প্রাচীন আর্য্য অক্ষর"ক" কালক্রমে কন্ত প্রকার রূপান্তর লাভ করিয়াছে। ইউরোপীয় ভাষা স্মূহে "ক" বা "শ্লু এই অক্ষর, সংযুক্ত বর্ণরূপে পরিণত হইবার উপক্রম করিতেছে বটে কিন্তু উহা এখনও বর্ণমালার তালিকা হইতে. একেবারে বিভাজিত হয় নাই। গ্রীক্, লাটিন, জার্মান্, শাক্ষেন প্রভৃতি ভাষায় এখনও "x" স্বতন্ত্র বর্ণ রূপে বিভামান রহিয়াছে। অতএব সংস্কৃত ভাষা হইতেই বা কেন "ক্"কে বিদ্ধিত করা হইতেছে?

আর যদি "ক্ল"কে সংযুক্ত বর্ণ বিলিয়াই মনে করা হয়, তাহা হইলে •
উহাতে কোন্ কোন্ বর্ণের সংযোগ • আছে, তাহাও বিচার করিতে
হইবে। আমি পূর্বেই দেখাইয়াছি "ক্ল" যে কেবল "ক + ষ" এই ছই
অক্ষরে বিভক্ত হইয়াছে এরপ নহে। উহা নানা ভাষায় এবং এক
ভাষায় ও ভিন্ন ভিন্ন হলে ভিন্ন ভিন্ন অক্ষরে বিভক্ত হইয়াছে। অতএব
"ক্ল" এইটা যুক্তাক্ষর এবং ইহা "ক" ও ''ব'' এতছভয়ের সংযোগে
উৎপন্ন হইয়াছে, এরপ কণা বলা অসক্ষত। প্রাকৃত কথা "ক্ল"
পূর্বের ক, চ, ইত্যাদির আয় অসংযুক্ত বা মূল অক্ষর ছিল। কালসহকারে উহা নানা ভাবে বিশ্লেষিত হইয়া পড়িতেছে, "ক্ষ" এই
বিশ্লেষণের অভ্যতম।

স্কলি বণ সমূহ অর্থাৎ ট, ঠ, ড, ঢ, ণ, ঝ, ঝা, ব এই সকল বর্ণ
পূর্বকালে আয়া বর্ণমালায় বিজ্ঞমান ছিল না। ইউরোপীয় আর্যাগণ
একই বর্ণ বারা মৃদ্ধিন্ত ও দন্তা বর্ণের কার্যা নিম্পাদন করিয়া থাকেন।
যথা, তাঁহাদের "t" এই বর্ণ আমাদের "ট" ও "ত" এতছভয়ের কার্যা
করে। প্রাচীনতম কালে ভারতীয় আ্যাগণও এরপভাবে একই বর্ণ
ছারা মৃদ্ধিন্ত ও দন্তা বর্ণের বাবহার নিম্পাদন করিতেম। পরে যথন
ভাহারা ভারতের আদিম অধিবাসিগণের সংসর্গে আসিলেন তখন
দেখিলেন দ্রাবিজীয়গণ মৃদ্ধন্ত বর্ণ সমূহের ফুম্পান্ট উচ্চারণ করে
এই দ্রাবিজীয় উচ্চারণের প্রভাবেই আর্যা বর্ণমালায় একই শ্রেণীর
অক্ষর তুই ভাগে বিভক্ত হইয়া মৃদ্ধন্ত ও দন্তা বর্ণের কৃষ্টি করিয়াছিল।
অধিকাংশ মৃদ্ধন্ত ও দন্তা বর্ণের কৃষ্টি প্রণালী এইরপ। এই প্রণালী

অমুসারে বিচার করিলে দেখিতে পাওয়া যায় আর্যাক্ষাতির ভারতে আগমনের পূর্বে "দ" ও "ষ" এতত্ত্তরের ভেদ ছিল না। যথন "দ" ও "ষ" একই বর্ণ ছিল, তথন "ক্ষ" এই অক্ষর অবশু "ক + দ" এবং "ক + ষ" এই উভয়ভাবে এবং পূর্বে যে সকল বিশ্লেষণ প্রকারের কথা বিলয়াছি দেই সকল ভাবে উচ্চারিত হইত। অতএব "ক্ষ" যে "ক + দি" হইতে উৎপন্ন হইয়ার্ছে, এইরূপ কথা বলা নিতান্ত অসলত। বস্তুতঃ "ষ" যথন বর্ণমালান্ন পৃথক্ বর্ণরূপে বিঅমান ছিল না তথনও "ক্ষ" বিঅমান ছিল। "ক্ষ" যথন "ষ"এর পূর্বে বর্তমান ছিল, তাহাতে কি করিয়া বনা যায় "ক + ষ" হইতে "ক্ষ"এর উৎপত্তি হইয়াছে?

মানবজাতির বাক্শক্তির অনেক দৌর্বলা ঘটায় 'ক্ষ"এর মূল অসংযুক্ত উচ্চারণ বিলুপ্ত হইয়াছে। এক্ষণে উহার উচ্চারণ সৌকর্য্যার্থে উহাকে অধিকাংশ স্থলে ছই ভাগে বিভক্ত করিয়া লওয়া হইয়াছে। স্থল বিশেষে 'ক্ষ" যে সকল ভাগে বিভক্ত হইয়াছে 'ক + ষ" উহাদের অগ্রতম।

श्रीमञीन्हतः विम्राष्ट्रम् ।

# नाताश्रगा।

#### একাদশ পরিচ্ছেদ।

বিলম্পাতে চাহিয়া দেখিলেন ছইজন সাহেব। সমুথে •

দেখিলেন, দলে দলে সিপাহী সুকুন্দের, উদ্ধারার্থ ছুটিয়া আসিতেছে; পরিণাম বুঝিতে ব্রাহ্মণের বাকী রহিল না। তিনি মনে মনে
ভাবিলেন "করিলাম কি? নারায়ণীর উপকার করিতে গিয়া, তাহার
আধকতর অনিষ্ট করিয়া বিসলাম!" বুঝিলেন, কার্যা নিম্পন্ন হওয়া
সুদ্র-পরাহত। 'এত লোকের বাধা অতিক্রম করিয়া, আনন্দদেবের
সমীপন্থ হওয়া তাঁহার সাধ্যাতীত। •পরস্ত মুহুর্তমাত্র বিলম্ব করিলে
তাঁহাকে বন্দী হইতে হইবে।

শ্রূপ অবস্থায় আর অধিকদূর্নী অগ্রসর হওয়া কর্ত্তব্য নয় বুঝিয়া রতন মৃকুন্দের হাত ছাড়িয়া দিলেন। প্রভ্রীগুলা কিংকর্ত্তবাবিমৃঢ় হইয়া তথনও পর্যান্ত তাঁহাকে আকর্ষণ করিতেছিল। ব্রাহ্মণ তাহা-দিগকে নিরস্ত হইতে বলিলেন।

কথা শেষ করিতে তাহারা ব্রাহ্মণকে অবকাশ দিল না। প্রভ্পুত্রকে ছাড়িতে দেখিয়াই, ব্রাহ্মণের চপেটাঘাতের মধুরত্ব তাহাদের
অক্সের পক্ষে বিশেষ প্রীতিকর হইবেনা বুঝিয়া, তাহারা মূহুর্ত্তের মধ্যে
দুরে সরিয়া দাঁড়াইল। মুকুন্দও সাহেবদিগের আশ্রয় গ্রহণের অভিলাষে
সেহান হইতে ছুটিয়া পলাইবার উদ্যোগ করিল। ভয়ে য়ুবক মৃতবৎ
হইয়াছিল। তাহার অক্সে শিথিলতা আসিয়াছিল। পদয়য় ঘনয়ন
কম্পিত হইতেছিল। স্বতরাং ইচ্ছা সত্তেও মুকুন্দ একপদও অগ্রসর
হইতে পারিল না। রুতন তাহার অবস্থা ব্ঝিতে পারিলেন। বুঝিয়া
ভাবার তাহাকে ধরিলেন। বলিলেন, "ভয় নাই। আমা হইতে

বিদ্যাত্রও অনিষ্টের আশকা করিও না। তবে আমি যা বলি, শুন। কি নিমিত্ত তোমার পিতার কাছে চলিয়াছি; ভোমাকেই 'বলিতেছি।"

कथा मूकूत्मत्र कात्न (शैष्टिन ना। (म (क्रि) मार्ट्य इटेज्रान्त्र আগমন প্রত্যাশায় তাঁহাদের দিকে চাহিয়াছিল। তাঁহারাও মুকুন্দকে विभन्न विविद्या डांश्व फिटक धानिতिছिलन। त्रज्ञ कथा भिष श्रुं क ना श्रुं कि, श्रां कि कांश्रा प्रभाष्ठ वािम्या देश्रिक श्रुवाहिन। श्राव्तिक मभी পश्र प्रिथियारे, मूकून श्रूनवाय हो एक विकास विना "সাহেব আমাকে রক্ষা কর।" প্রহরীগণ সেলাম করিতে করিতে मित्रियां नार्ट्वरक পथ मिल। त्रञ्च नार्ट्वरक मिथिवात जञ्च পन्हार्ड कितित्वन। किन्न त्यरे मूथ कितारेग्नाहम, जमनि रात्नित विष्मूष्टि দারা নাাদকা দেশে বিষম প্রহাত হইলেন। দেখিতে দোখতে শোণিত-স্রোতে বৃদ্ধ ব্রাহ্মণের মুখ প্লাবিত হহুয়া গেল। বিষম আঘাতে ব্রাহ্মণ চারিদক অন্ধর্ময় দেখিলেন। নাসিকায় হস্ত দিয়া তমাহুতেই তাঁথাকে ভূমির আশ্রম গ্রহণ কারতে হহল।

অবকাশ পাইয়া, মুকুন্দ উপবিষ্ট ও অবনত মন্তক এান্সণের পৃষ্ঠে व्हें ठाति है। मूष्टि প্রহার করিয়া তপমানের শোধ লইল। প্রহরী গুলাও ব্রাহ্মণকে ধরিয়া ফেলিল। কালাবাঁধের অপর পার হইতে অনেক সিপাহীও ইতিমধ্যে সেইস্থানে আদিয়া উপস্থিত হইয়াছে।

शत्नि मूकुमारक वृष्कत পति हम किछान। क्रिलन। मूकुरमान उद्धरत त्विरमन, दक्ष পाशन त्राकात्र मणी। वृक्ष मश्वक त्विरक, ज्थन व्यात्र काँहात्र किছू वाकी त्रिहन ना! इंजिमश्य बाडेन ख्या दें पश्चि ছইলেন। হাসিতে হাসিতে হার্লি সহচরকে তাঁহার প্রিয় দেবলুতের मानिक विकादित कथा विवृত कतिलान। धवः जांशोक 'मिये मृरजद' ছই একটা কথা ওনাইবার জন্ম, ও পাগল রাজার সজীর পাগলামির ুপরিমাণ কত, এবিষয়েরও একটা মীমাংসা করিবার জন্ম, মধুর আত্মায়তাজ্ঞাপক বাক্যবিভাদে, ও মধুরতর পদপ্রহারে বৃদ্ধকে উঠাইবার চেষ্টা করিলেন।

এরুপ সন্ব্যব্যার প্রাউনের প্রীতিকর হইল না। বুদ্ধ পাগল, একথা শুনিয়াও তংপ্রতি তাঁহার প্রীতির হ্রাস হইল না। ব্রাহ্মণের নাসিকাশ ব্রুত রক্তে প্রায় বর্গগজ পরিমিত ভূমি সিক্ত, হইয়াছে। দেখিয়ী ব্রাউন ত্রংথিত হহলেন। হার্লিকে বলিলেন, "আর কেন বৃদ্ধকে প্রহার কর। वृत्कत यथिष्ठे मास्ति हरेब्राष्ट्र।" वार्ष्टिनत कथाय रात्नि वाक्यापकः आत প্রহার কারলেন না। তবে মনে মনে স্থির করিলেন, বুদ্ধের পাগলামীর শান্তি দিতে হইবে। সিপাহীদের ডাকিলেন, ভাহারা निक ए वाजित्व वृक्ष कि वाँ थिए वालि कि वित्वन। विविद्य , "वृक्ष क वैधिया ताँ हि नहेया या छ। आभि यथन भीकात कतिया नमद्र कि त्रिक, তথন বুদ্ধের অপরাধের বিচার কীরব।"

একজন দিপাহী ব্রাহ্মণকে বাঁধিবার জন্ম দড়ীর চেষ্টায় চলিল। অপরে ব্রাহ্মণকে আগুলিয়া রহিল। আর আপনাআপনির ভিতর খে যার পরাক্রমের প্রশংসা আরম্ভ করিল। যে তিনজন প্রথমে ব্রাহ্মণকে বাধা দিতে গিয়া পরাভূত হ্ইয়াছিল, তাহারা কেবল ব্রাহ্মণের ব্রাহ্মণছের উপর দোবারোপ করিতে লাগিল। রতনকে শিক্ষা দিতে যে শক্তির প্রয়োজন, তাহা কোনমতেই তাহারা প্রয়োগ করিতে পারে নাই। রতন ব্রাহ্মণ বলিয়া, বাধ্য হহয়া তাহাদিগকে দে শক্তির চতুর্থাংশ খরচ করিতে হইয়াছে।

ব্রাউন দেশীয় ভাষা বুঝিতেন না। স্কুতরাং দিপাহী গুলার সহিত श्रामा कथा अनिया ठाँशांक जिल्लामा कतिरामन,—"कि विमार्क रू ्र हात्रि। वृक्तत्व त्रांति नहेत्रा याहेत्व चात्रम कतित्वि ।

💯 वाष्ट्रम। (कन १

হার্লি। চকের উপর অপরাধ দেখিলাম। বিচার করিয়া শাস্তি

ব্রাটন। বিনা বিচারে শান্তি দিয়াও কি তৃপ্তি হইল না ? হার্লি। একি শান্তিণ এত শিক্ষা; পাগলের প্রধ।

ু ব্রাউন। স্বদেশে তোমার এরপ ঔষধের প্রয়োগ দেখিলে, আমার বিশাস, স্নসাধারণ বৃদ্ধকে ছাড়িয়া তোমাকে একটা গারদে পুরিয়া বিশিত।

কথা শুনিয়া হার্লির মুখ লাল হইয়া উঠিল। বলিল, অমুগ্রহ করিয়া শাসন ব্যাপারে কোনও কথা কহিও না। এ উষ্ণ প্রধান দেশ,—ইংল্যাণ্ড নয়।

ব্রাউন। তা বোধ হয় আয়িও জানি। কিন্তু উষ্ণ-প্রধান দেশে আসিলে, ইংলও সস্তানের মন্তিষ্ক এত উষ্ণ হয়, তা জানিতাম না।

হার্লি কোন উত্তর দিলেন না১ তবে ব্রাউনের কথায় তাঁহার বৃদ্ধ বিরক্তি হইল। মনে মনে সহচরের উপর তাঁহার ঘুণা জন্মিল। হার্লি ভাবিলেন, এ পুরুষ বেশী স্ত্রীলোকটা হইতে জগতের কি কার্য্য হইতে পারে!

ব্রাউনও আর দাঁড়াইলেন না। এক অসহায় বৃদ্ধের উপর এত অত্যাচার, তাঁহার দেখা সহিল না। ধারে ধীরে তিনি বাংলার, দিকে ফিরিতে লাগিলেন।

রতন এতক্ষণ অধোমুথেই বসিয়া ছিলেন। নাসিকা হইতে তথনও রক্ত ক্রিতেছিল। তিনি যথাসম্ভব সেই রক্তরোধের\*চেষ্টা করিতেছিলেন।

রক্ত পড়া কতক বন্ধ হইলে, পাগণীর থানিকটা থুলিয়া তাহারই জাতভাগ দিয়া মুখ মুছিলেন। প্রান্তভাগ আবার মাথার জড়াইলেন। কাছে দাঁড়াইয়া দিপাহীগুলা তাহার কার্যকল্লাপ দেখিতেছিল। ইভাবসঙ্গে সাহেব ও মুকুর্শে আবার কথা চলিতেছিল। মৃকুল দাহেবকে ব্যাইতেছিল যে, বৃদ্ধ তাহার পিতাকে অমুসন্ধান করিয়া বেড়াইতেছিল। ইংরাজের হস্তে বীরচজের জনীদারীর ভার আদিবার কারণ, একমাত্র তাহার পিতা। এই বৃদ্ধ ব্রাহ্মণ ব্রিয়াছিল, আনন্দদেবই রাজাকে পাগল করিয়াছে তার পর তাঁর হাত হইতে সমস্ত ক্ষমতা কাড়িয়া ইংরাজকে দিয়াছে। সেইজন্ম ব্রাহ্মণ তার পিতাকে হতা৷ করিবার জন্ম প্রতিদিন ক্রিয়া বেড়ায়। প্রতিদিন মুযোগ সন্ধান করে।

মুকুল বলিতেছিল, হার্লি শুনিতেছিলেন। তিনি ভাবিলেন, এরূপ লোককে অনম্বপুর হইতে দূর করা হয় নাই কেন ? রাজার সঙ্গে ব্রাহ্মণের কোনও সম্পর্ক নাই। এখানে তার ঘর নাই, পরিবায় নাই। এরূপ লোকের অনম্বপুরে অবস্থানের উপযোগিতা তিনি কিছু দেখিতে পাইলেন না। তাই তিনি মুকুলকে জিজ্ঞাসা করিলেন,—"এরূপ লোককে অনস্বপুর হইতে দূর করা হয় নাই কেন ?"

মুকুল কৌশলে বুঝাইল, শুধু বড় দ্বাহেবের অসম্ভৃষ্টির ভয়ে কেছ বৃদ্ধকে কিছু বলিতে পারে না। সকলেই তাই নীরবে তাহার অত্যাচার সহ্ করে! রাজার অহুরোধে, বড় সাহেব বৃদ্ধকে অনস্ভপুরে থাকিতে অহুমতি দিয়াছেন। এখন তাঁহার আখাস পাইলেই পিতা ও পুত্রে নিশ্চিস্ত হয়।

হার্লি আখাদ দিলেন। বলিলেন, প্রথম কিছুদিনত বৃদ্ধকে শ্রীঘরে রাখি। তারপর অন্ত ব্যবস্থা।

আনন্দের আবেগ মুকুন্দ চাপিয়া রাখিতে পারিল না। সে সাহেবকে যত পারিল, ধন্তবাদ দিল। এবং এরূপ কার্যো যে একটা মহৎ ফল আছে, আর অনন্তপুরের রাজপ্রতিনিধিরূপী আনন্দদেবের কর্মেই সে ফলের অন্তিম্ব, এটাও সে সাহেবকে বুঝাইতে ছাড়িল না।

সাহেব রতনকে উঠিতে আদেশ করিলেন। রতন আপনিই উঠিতে-

हिलान, ञ्जूताः नारहरवत्र जारमण्यत्र जात्र जालका त्रहिल ना। नवाशक मिপाशैगर्णक मर्था छूडे ठातिकान ठाँश्रांक धतिक। जनत्त्र শাঠী ধরিয়া খেরিয়া রহিল। যে ব্যক্তি দড়ী আনিতে গিয়াছিল, সেও ফিরিয়া আসিল।

, ব্রাহ্মণ মাথা তুলিয়া দেখিলেন সমুখে জয়োল্লসিত সাহেব। পার্শ্বে मुकुन, हा तिधाद निभाशी।

এ কবার ঘাড় ফিরাইয়া, তিনি দিপাহীগুলাকে দেথিয়া লইলেন। হুই একজন পরিচিত দিপাহী মাথা হেঁট করিল। অপরিচিতের মধ্যে কেহ क्रिन, (क्र क्रिन ना। (क्रिन ना, (म क्रिन नार्छ क्रिम) বুক ফুলাইয়া থাড়া হইতে জানে। লাঠি থেলিতে জানেনা। যাহারা থেলোয়াড় তাহারা মাথা তুলিয়া রাখিতে পারিল না। ব্রাহ্মণের প্রথর দৃষ্টিতে তাহরো আপনাদিগকে যথেষ্ট তিরস্কৃত বোধ করিল। দড়ী লইয়া যে বাঁধিতে আসিতেছিল, সে সহসা দাঁড়াইয়া গেল। যাহার। उँ इंट्रिक ध्रियाछिन, তাহারা ব্রাক্ষণের চকু দেখে নাই। দেখিলে কি করিত বলা যায় না।

मुक्लित किन्छ दिनम् महिতिছिन न। बाक्य के कावक मिथि छ भाइत्वह (भ निष्ठिस हम्। पड़ी हाट्ड लाकिटाटक पाँड़ाहरूड (पथिया, তাহাকে সত্তর কার্য্য নিষ্পন্ন করিবার আদেশ করিল। হার্লিও রুথা विशय (प्रथिया वित्रक इटेलन। এवः वृक्षक वनी कत्रिवात अग्र "कुक्यरात्र जातिम क्रिलिन। नक्लिटे वाङ नम्छ इट्सा व्रक्षत्र बस्सन कार्या नियुक्त श्रेम ।

ব্রাহ্মণ আর একবার সাহেবের মুথ পানে চাহিলেন। একটু व्यवकात रात्रि रात्रिया रात्नि विलिलन, वृक्ष भागन ? मूथभारन कि (मिथिटिक ? यत्न यत्न वज्हे त्रांग हहेटिक, ना ?

अञ्च। यिनिरे रुव्न, তাহাতে कि आयात्र अन्ताथ आहि, नारहव ?

राज्ञि। वज़रे रेव्हा र्टेट्डाह, जामाटक कानज तकरम नाजि आ (कमन ?

त्रजन। এक একবার হইতেছে, এক একবার হইতেছে ना।

হার্লি। ইচ্ছা হইলে কি হইবে? আমিত আর চুর্বল ছাতু-থোর নিগার নই।

• রতন। ইচ্ছা হইলে খুবই হয়। এক একবার মনে করিতেছি বিনাপরাধে প্রহার থাইয়া চুপ করিয়া থাকিব ? আবার ভাবিতেছি ष्मृष्टे।

একটা দিপাহী রতনের হাত টানিতে লাগিল, দড়ী দিয়া সে হাত বাঁধিবে। রতন বলিলেন "ক্ণণেক অপেক্ষা কর্!" . তথাপি দৈ হাত টানিতে লাগিল, রতন তাহার হাত ধরিলেন। সিপাহী বুঝিল, অপেকা করাই বুদ্ধিমানের কার্য্য।

রতন বলিতে লাগিলেন,--"ভাবিতেছি অদৃষ্ট। অদৃষ্টে আমার রক্তপাত ছিল। নত্বা চলিয়াছি আনন্দ্রেবের সহিত সাক্ষাৎ করিতে; পথে তোমার মার থাইব কেন ?"

হার্লি। আনন্দদেবের দঙ্গে সাক্ষাৎ করিছে, না তাহাকে হত্যা করিতে গু

রতন। এই ছোকরা তোমাকে বুঝাইয়াছে বুঝি?

রতন ও সাহেবের দৃষ্টি যুগপং মুকুন্দের উপর পড়িল। মুকুন্দের মুথ বিবর্ণ হইয়া গেল। সাহেব বুঝিলেন, মুকুন্দ ভীত হইয়াছে। ব্রাহ্মণ হইতে অনিষ্টের আশক্ষা করিতেছে। তাহাকে অভয় দিবার জন্ম ব্রাহ্মণকে বলিলেন—"যে বুঝাক্, তোমাকে রাঁচি ষাইতে হইবে।"

द्राञ्च। (कन १

हात्रि। অনম্পুরে তোমার আর থাকা চলিবেনা।

রভন। সে অমিও বুঝিয়াছি। অন্তপুর ত্যাগ করিব বলিয়াই

ानित वाहित हरेबाहि। यारेवात शूर्व वाकक्मातीत कन इरेगे इथा विनटि ञानकंपित्व कार्ह हिनमाहिनाम। जात्र कन शाहेमाहि। সার বলিতে ইচ্ছা নাই। সাহেব আমাকে ছাড়িয়া দাও, আমি অনস্তপুর ব্রাড়িয়া চলিয়া যাই।

্ হার্লি। অমনি ছাড়িতে ইচ্ছা নাই। রঁচিতে লইয়া তোমার াঁহিত দিস করেক আমোদ করিব, তারপর ছাড়িয়া দিব।

রতন বুঝিলেন সাহেব রহস্য করিতেছে। রঁচিতে লইয়া শান্তি मिद्य। इय ७ कात्रागाद्र निक्मि कत्रित्य। वृशिया উख्त कत्रिलन, "ब्राहिट्ड ना लहेब्रा ছाড़िट्व नः ?"

शत्लि। এমন প্রিয় বস্তুটী পাইয়াছি, কেমন করিয়া ছাড়ি!

রতন। আমি রাচি যাইব না।

हात्नि। ञ्या अवश्रह याहे एक हहे (व।

রতন। এমন ক্ষমতাবান ত দেখি নাই, যে রতনকে ইচ্ছার विकटक दकान ७ शान लहेगा यात्र।

शत्रावा। এथनि দেখাইতেছি।

্রতন। তুমি ় যে বিনাপরাধে একজন বৃদ্ধের গায় চুরি করিয়া হস্তকেণ করিতে পারে, আমাকে ইচ্ছার বিরুদ্ধে কর্মা করান সে বানরের কর্ম নয়।

मूक्टनत मन्प्रथ, मिপाशीलित मन्प्रथ অপমানিত হইয়া, হার্লি একেবারে অগ্নিশর্মা হইয়া গেলেন। কুটুম্বিতাজ্ঞাপক ত্ই চারিটা মধুর বাক্যে ব্রাহ্মণকে আপ্যায়িত করিয়া, তাঁহার অঙ্গে পদ প্রহার कन्निरमन।

বারস্বার অপমান রতনের সৃহ হইল না। মৃহুর্ত্তে তাঁহার জোধ প্রদীপ্ত হইরা উঠিল। ভগ্ন-লাকুল দিংহের ভাষ ব্রাহ্মণ।এক ভীষ্ণ हकात्र थानान कत्रिरणन। • काहात्रि वाफ़ी ७ त्रांकथानारम थाउँ इ

হইয়া সে হুকার সহস্র প্রতিধ্বনিতে প্রান্তর সমীরণ আলোড়িত করিয়া क्लिन। সকলেই उन्जिन।

হার্লিও চম্কিত। মহুযোর কণ্ঠ হইতে এরূপ ভীম ছঙ্কার আর কথন তিনি শুনেন নাই। এতগুলা সিপাহীর মধ্যেও, তিনি আপনাকে নিঃসহায় বোধ করিলেন। মুকুন্দ একবারে সাহেবের পশ্চাতে আুরিয়া मां का हैन।

হকাবের পরই, ব্রাহ্মণ একবার ভামবেগে অঙ্গ সঞ্চালন করিলেন। म्इर्ड मधा প্রহরী গুলা ভারহান তুলা দমষ্টিবং দূরে নিক্ষিপ্ত হইল। वाािशांत्र (पिथा पाट्य कठको। इठछत्र इहेमा (शलन। व्विलन, পলায়ন ভিন্ন জীবন রক্ষার অহা উপায় নাই। কিন্তু এতগুলা লোকের সমুথে প্রাণ লইয়া পলায়ন, তাঁহার স্থায় শক্তিমান পুরুষের অসম্ভব र्रेया উठिन।

রতনও তাঁহাকে পুনঃ প্রহীরের অবকাশ দিলেন না। সাহেব কর্ত্তব্যস্থির করিবার পূর্ব্বেই তাঁহাকে ধরিগ্না ফেলিলেন। বজ্রমুষ্টিশ্বত হার্লি ভূতলপ্রোথিত দশুবৎ নিশ্চল। তাঁহার হস্তপদ সঞ্চালনেরও শক্তি রহিল না।

সাহেবকে ধৃত দেখিয়া, মুকুন্দ চক্ষের নিমেষে পলাইল। পলাইবার काल এकজন ভৃত্যকে দেখিয়া বলিল "আমার পিতাকে এইবেলা খবর দাও। তার প্রাণ বাঁচাও।"

সাহেবকে বিপন্ন বুঝিয়া, সিপাহীরা প্রাণের মায়া ভ্যাগ করিয়া त्रजनक बाक्रमण कतिन। जिनि উচ্চ চীংকারে তাহাদিগকে নির্ভ হইতে বলিলেন। তাহারা নিষেধ মানিল না। রতন এইবার লাঠীর অভাব অমুভব করিলেন। ভাবিলেন, লাঠী সঙ্গে না আনিয়া ভূল कत्रित्राष्ट्र। ইতিমধ্যে ত্ই চারি ঘা লাঠা তাঁহার পৃষ্ঠে পড়িয়াছে। তখন কাপুরুব সিপাহী গুলাকে কিছু শিক্ষা দিতে তাঁহার ইচ্ছা হইল।

त्रजन मार्ट्यक अख्य मिल्ना। विल्लन, आमा रहेर कीव्यन्त्र কোনও আশঙ্কা করিও না। আমি নরঘাতী 'নই। আমি তোমাকে किছू विनिव। ऋषिक অপেका कदा। आमि এই काशुक्रमखनाक একজন নিরন্ত বৃদ্ধের পৃষ্ঠে যষ্টি প্রহারের ফলটা দেখাইয়া দিই। যদি পুরুষ্ণতের অভিমান রাখ, স্থান ত্যাগ করিও না।"

এই বলিয়া রতন সাহেরকে পরিত্যাগ করিলেন। সাহেবের অঙ্গে আঘাত লাগিবার ভয়ে, সিপাহীরা ভাঁহাকে মনোমত প্রহার করিবার अविधा পाইতেছিল ना। এইবারে পাইল। প্রবলতর বেগে ছই চারি षा লাঠী রতনের পৃষ্ঠে পড়িল। ব্রাহ্মণ উর্দ্ধাদে বটবৃক্ষাভিমুখে ছুটিলেন।

निर्शाशीयां जाविन, वृक्ष প्रानर्खाय भनारे ए ए । ज्यन करमालाम কোলাহল করিতে করিভে, সকলে তাঁহার পশ্চাতে ছুটিল। সকলের আগে, লাঠীহাতে দিপাহী। তৎপশ্চীৎ অপর দিপাহী। সকলের পশ্চাৎ জনতা। হুই চারি জন করিয়া, গ্রামের চতুর্দিক হুইতে পুরুষ, खी, वानक, वानिका घटेनाञ्चल नमत्वि श्हेशाहि। তাহাদের मध्य मकरमरे किन्द तंजनरिक দেখিতে পাইতেছিল না। সকলে ব্যাপারটাও ভাল বৃথিতে পারিতেছিল না। এখন সিপাহীদিগকে ছুটতে দেখিয়া ভাহারাও হৈ হৈ করিতে করিতে ছুটিল।

## षान्न পরिচেছদ।

एकात भन वाউ न्वरं कार्य श्रीहिया हिन। जिनि अन्य हमिक्छ हरेब्राहित्नन। এवः महत्रदक विश्व वृत्रिया छै। इत्र छिकात्रार्थ वानिटङ्कित्वन।

जामित्व जामित्व पिथित्वन वृक्ष भवाहेत्वहः। स्थू छाहे नम्। অসংখ্যালে তাহার অহুসরণ করিতেছে। তিনি অহুমান করিলেন.

व्वि वृक्ष श्वृं विदय श्वा कविया है। अथवा विषय आश्व कविया है। नजूवा এত লোক ব্রুকে ধরিতে ছুটিবে কেন? ব্রুদের বেনিয়ানটাও नामिकात्रक्त तक्षिञ रहेग्राहिल। ञ्चत्राः वाउँ नित्र मन्मरहत्र यथिष्ठे কারণ ছিল।

প্রথমেই তিনি হার্লির কাছে ছুটিয়া চলিলেন।—দেখিলেন, অক্ত দেহে হার্লি দণ্ডায়মান। বৃদ্ধ কর্তৃক আ্ঘাত সম্বন্ধে প্রশ্ন **ক্ষিলেন।** উত্তর পাইলেন না।

তথন ব্রাউনের অন্তরূপ ধারণা হইল। তিনি ব্ঝিলেন, আর কিছু नग्न ; वृक्त ऋर्यात्र পाইग्ना পनाইग्नाष्ट्र। मिপाशैत्रा, शत्नित्र आप्तर्ण, তাহাকে वनो कतिত ছুটিয়াছে। ইহাও ব্ঝিলেন, এহঙ্কত হার্লি उँशित काছে অপমানিত হইয়াছে। তাই কথা কহিল না।

বুদ্ধের পরিণাম দর্শনে কৌতুহলী ব্রাউন তন্মুহুর্ত্তেই স্থানত্যাগ করিলেন।

হার্লি বুদ্ধের চিস্তায় মগ্ন ছিলেন। বুদ্ধের অমাহুষিক বল उँशिक विश्विक कत्रियाहिल। শক্তিমান विलिया शार्तित श्वरित्र এक छ। त्रोत्रव व्याष्ट्र। व्यायाम को भन ७ मूष्टिष्यन अपर्यत्न, जिनि দেশে অনেকবার পুরস্কার পাইয়াছেন। আজ তাঁহার, দেই বলগৌরবে আঘাত লাগিয়াছে।

श्रात्नि ভাবিতেছিলেন, এরূপ বৃদ্ধ পোগল'? যেরূপ বলে বৃদ্ধ তাঁহার হাত ধরিয়াছিল, ইচ্ছা করিলে চক্ষের নিমেষে দে হাতথানি ভাঙ্গিয়া দিতে পারিত। কিন্তু বৃদ্ধ তাহার কোনও অনিষ্ঠ করে নাই। ভাহার চকে ক্রোধের সামাত্ত লকণও দেখিতে পাম নাই। এক্সপ वृक्ष्य भागम ভाविতে হার্লির আর সাহস হইল না। কথোপকথনে वृत्कत मूर्थ हात्नि रय नेव कथा खनित्नन, ভाहा छ कि भागत्नत कथा १ े वित्यव ::, यूक्त्मत्र आं ठत्र जिनि व व व वित्रक व्हेत्रास्म ।

मूक्षरक त्रका कति एउ छाञात मिश्राम आगमन। मूक्ष्मत छितातार्थ है ভিনি বৃদ্ধকে প্রহার করিয়াছেন। বৃদ্ধের মুপের একটা কথা ভনিবারও व्यवकान গ্রহণ করেন নাই। সহচরের নিকট অপমান লাঞ্চনা সমস্তই मूक्त्मत ज्ञा। त्रहे मूक्न डाँहा कि विशन मिश्रा भनाहें !

লজ্জা আসিয়া, অহঙ্কারের স্থান অধিকার করিল। অমুতাপে হার্লির জদয় বিদ্ধ হইতে লাগিল। সুকুন্দের উপর ঘ্ণা, তাহার পিতা 

বুদ্ধের দঙ্গে কথোপকথনে হার্লি বুঝিয়াছেন, রাজকুমারীর কোন অভাব মোচনের জন্ম, বুদ্ধ আনন্দদেবের কাছে আবেদন করিতে চলিয়াছিল। সেই জন্মই মুকুন্দের সহিত তাহার সাক্ষাৎ। কিন্তু দৈবছর্কিপাকে ফল বিপরীত হইয়াছে। বুদ্ধ প্রতীকারের পরিবর্জে প্রহার উপহার পাইয়াছে।

চিন্তার জালায়, হার্লি ক্রমে অস্থিয় হইয়া পড়িলেন ৷ বৃদ্ধ হইতে व्यात्रष्ठ क्रिया – मूकुन, व्यानन, त्राक्रकुमात्री, त्राक्रा, देश्त्राक्र, देश्त्राक्षत्र শাসননীতি প্রভৃতি শত চিন্তার বিভিন্নমূথ প্রথরাবর্তে পড়িয়া তাঁহার মস্তিষ্টা যেন খণ্ডিত হইতে লাগিল।

তিনি অল্পদিন রাঁচি আসিয়াছেন। যদিও ইতিমধ্যে অনম্ভপুরের সংখাদ তাঁহার শ্রুতিগোচর হইয়াছে, তথাপি তিনি সমস্ত বিষয়টা ভালরূপ বুঝিতে পারেন নাই। গুনিয়াছেন, রাজা বিকৃত মস্তিজ। সেইজন্ত वाकामानन ভाর তাঁহাদেরই উপর। আনন্দদেব তাঁহাদেরই মনোনীত দেওয়ান।

ত্ই একবার ইহার পূর্বে তাঁহার অনন্তপুরে আসাও হইয়াছে। व्यानिया वाननपिवदक पिथियाष्ट्रिन, তাহার পুত্র মুকুলকে দেখিয়াছেন। ब्राक्षादक्छ म्हिन नार्टे, ७ ५ मण्यकीय जन्न कार्टादक्छ म्हिन नार्टे। ब्राक्ष वाणि मूत्र श्रेटि मिथा ठिनिया शिवाष्ट्रिन । उछिछ । अधिक अदिन कर्त्रन नार्हे।

ा त्राका, त्राकक्मात्री, এবং त्राक-मुन्नर्कीय ममस्य व्यापात्रकी जास्त्री श्रद्शिकामम (वाथ इरेन। जिनि हिसाट्याटज कामिएक আপনাকে একটা স্থময় কুলের সমীপস্থ অমুভব করিলেন। বৃদ্ধকে দেখিয়াছেন; এক্ষণে বুদ্ধ যাঁর সহচর, সেই রাজাকেও যেন তিনিং দেখিতে পাইলেন। দেখিলেন, সেই কুলে দাড়াইয়া রাজা, রাণী, वाकक्यावी, वाकमश्ठव—मकला शाजअवाधित कविया, उाशक्त धर्म, জ্ঞান, সভ্যতা, প্রিয় চিকীর্যা, সত্যপ্রিয়তা এক একটা ফুটস্ত সৌরভময় कून, निष्ठीवन ने क तिया, आवर्षनामय घनावर्र्छ निरम्भ क तिराह !

দুর হইতে আবার একটা ভীষণ শব্দ আসিয়া হার্লির চিস্তাম্রোভে वाधा मिल। তিনি মাথা তুলিয়া দেখিলেন, ব্রাউন একটা উচ্চভূমির উপর দাঁড়াইয়া কি যেন দেখিতে দেখিতে অতি আনন্দে করতালী मिट्डिइ।

তাঁহারও দেখিবার কৌতুহল ইইল। তিনি সেই উচ্চ স্থান লক্ষ্যে कृषित्नन ।

#### ज्यामन পরिष्टम।

পুর্বেই বলিয়াছি, কঠোর তুর্ভর, চিস্তামগ্ন হার্লিকে পরিত্যাগ করিয়া, ব্রাউন ব্রাহ্মণের পরিণাম দেখিতে ছুটিয়াছেন। কিছুদুর যাইয়াই তিনি বুঝিলেন, বুদ্ধের সমীপস্থ হওয়া এথন তাঁহার পক্ষে অসম্ভব। হার্লির কাছে আসিতে, ও সেথান হইতে ফিরিতে, অনেক বিলম্ব হইয়াছে। তাই তিনি দূর হইতে দেখিবার স্থােগ খুঁজিলেন। कानावार्यात्र वक व्यारम वकी एक व्यक्तिय है एवं शाका हिन। हाभा পড়িয়া, চূণ গুলাদি জনিয়া সেটা একটা ছোট পাহাড়ের মত হইয়াছে। ব্রাউন থড়া বহিয়া তাহার উপরে উঠিলেন।

উঠিয়া তিনি দেখিলেন, বৃদ্ধ এখন পথীন্ত ছুটিতেছে। সিপাহী-

खनां अमजाद भन्हां भन्हां कृष्टिक्ह। এथन, यमिल धत्रिक পারে নাই, তথাপি ব্রাউনের বোধ হইল, বুদ্ধের ধরা পড়িতে আর বড় विलय नारे। वृष्कत वृक्षिशेनजाग्र जांशत मन विलय कष्टे श्रेम। বৃদ্ধ বটবৃক্ষাভিমুখেই বা ছুটিভেছে কেন? সেথানে কে ভাছাকে এত অধিক লোঁকের আক্রমণ হইজে রক্ষা করিবে? কোন লোকালয় উদ্দেশ্যে ছুটিলে, বৃদ্ধের রক্ষা পাইবার অনেক সম্ভাবনা ছিল। তাহা कतिल ना (पिश्रा, वाउन তाहात निर्क् फिलातरे পরিচয় পাইলেন।

यूर्छ छारात मिं পরিবর্তিত হইয়া গেল। ব্রাউন ভাবিলেন, ত বে বোধ হয়, মতিহীন বৃদ্ধ হ।র্লির কোন বিশেষ অমর্যাদা করিয়াছে! श्रात्नि विश्व क्याभीन नम्र विनिमारे वृक्ष ए প্রহার করিয়াছে। श्रात्निम উপর তাহার যতটা ক্রোধ হইমাছিল, বৃদ্ধের এই এক নির্কৃদিতায় ভাহার অর্দ্ধেক প্রশমিত ২ইয়া গেল।

তথাপি बाउन দেখিতে লাগিলেন। इस ध्या পড়ে পড়ে এমন সময়, তিনি দেখিতে পাইলেন, ঘনোৎকীর্ণাবিত্যল্লতার স্থায় যবনিকাম্বরালের কোন অজ্ঞাত প্রদেশ হইতে একটা অপূর্ব স্থলরী বালিকা ব্রের काट्य द्वृतिया जानिया। जानियारे ठारात्र राट এकगाहि गाँठी मिन। বুদ্ধ দাগ্রহে দেই যষ্টি গ্রহণ করিল। বালিকাও দেখিতে দেখিতে দেই ञळाउपार्थ मिनारेन!

वाউनের দৃষ্টি দেই নরপ্রাচীর ভেদ করিয়া, সেই অনিশ্চিভদেশ वालाफिङ कतिया,—मिट अशूर्वपृष्ठ वस्त्रिः मसान कतिन। मसान भिणिन ना। ठक् এकवात वहेत्रकत कनवत्र श ाहारक जिका कतिन। ला कन बाद यदिन न।।

" । এইবারে ঘটনাহলের কথাটা বলিব। রতনের হাতে লাঠী আসিয়াছে। তাহার গতিরও নির্ভি হইয়াছে। রতনকে দাড়াইতে ं माठीयामान এভকণে বুঝিতে পারিল ব্রাক্তর ছুটিভেছিল কেন। व ছোটা পলায়ন নয়। এ ছোটা তাহাদিগকে শিকা দিবার জন্ত। একটু দ্রুত সগ্রগমনু! স্থতরাং অগ্র পশ্চাৎ না ভাবিয়া, কে আর এমন সাক্ষাৎ কুভান্তের মুখে অগ্রসর হইবে! কাজেই সকলেই অগ্র পশ্চাৎ ভাবিবার জন্ম দাঁডাইয়া গেল। বুঁদ্ধকে বন্দি করিবার ফল যথন অভি সামান্ত, তথন সকলের আগে গিয়া প্রাণ্টাকে বিপন্ন করা ক্ষেত্র युक्तियुक्त विद्यह्मा कतिन मा।

রতন উচ্চৈম্বরে তাহাদিগকে সম্বোধন করিয়া বলিলেন,—"এক একজনে লড়িতে চাও, না সকলে এক সঙ্গে লড়িতে চাও।"

এই বলিয়া রতন দীর্ঘদেহ উন্নত করিয়া, দীর্ঘতর যষ্টিতে ভন্ন দিয়া माँ एविता प्रकाल प्र वत्रवश्र नित्रोक्षण कत्रिक लोगिल—क्ष কোনও কথা কহিল না।

'বতন তেমনি উচ্চকণ্ঠে জীর একবার তাহাদিগকে আহ্বান করিলন। এবারেও কেহ উত্তর দিলনা। সকলে এক সঙ্গে ব্রাহ্মণকে আক্রমণ করিলৈও অনেকে মরিবে না, এমন কথা কে বলিভে পারে ? ঘড়বড়িসিং ভাবিল, "ব্রাহ্মণ কট্মট্ কিমিয়া আমার পানে চাহিশাছিল। काष्ट्राहे, আগে দে আমাকে মারিয়া ফেলিবে। ফতুয়া খাঁ মনে করিল, "আমি দড়ীর গামে হাত দিয়াছিলাম, স্থতরাং আমার व्यागिंगेरे जारिंग यारेरिय।" এरेक्ने जार्शन जार्शन जिल्ला कक्नेना করিয়া দিপাহীরা চুপ করিয়া রহিল। তৃতীয় বার, রতন তাঁহাদিগকে यूषा वाखान कतिरलन। निशाशीषत मध्या এकखन माहम कत्रिया অগ্রসর হইল। সে ব্যক্তি রতনের কাছে গিয়া, তাঁহার পাদমূলে লাঠী शाष्ट्री त्रका कतिन এवः छाँशत शानवनना कतिया क्या ठाहिन। विन-"खककी, চরুণে অপরাধ করিয়াছি।"

রতন এতক্ষণ তাহাকে চিনিতে পারেন নাই। কণা গুনিমা

जैनित्वन। विवादनन, "मिनानित्।" मनानिव माथा (दें विविद्या) ं ज़िश्या त्रिन।

সদাশিব ক্ষত্রিয় সস্তান। দশ বৎসর পূর্বে, সে র্তনের কাছে কুস্তি ও লাঠী থেলা শিথিয়াছিল। শিথিয়া সরগুজা, পদ্মা, ধলভূম প্রভৃতি নানা রাজার অধীনে চাকুরি করিয়া অল্পদিন হইল অনন্তপুরে ফিরিয়াছে।

অশ্তপুরে আসিয়াই সদাশিক রাজ্য সম্বন্ধে সমস্ত ব্যাপার বুঝিয়া-ছिল। ञानन्दान्त তাহাকে জমাদারী পদ দিয়াছেন। রুটা মারা যাইবার ভয়ে, দদাশিব গুরুজীর সহিত দেখা করিতে পারে নাই। রুটীর থাতিরে অন্ত দিপাহীদের সঙ্গে তাহাকেও গুরুজীর পশ্চাৎ ছুটিতে হইয়াছে। কিন্তু লজ্জায় সে দলের সম্মুখে আসিতে পারে নাই। বরাবর পিছনেই ছিল। 'ব্রাহ্মণের' বারস্বার আহ্বানে অনুতপ্ত গুরুজীর পদে প্রণত হইল। অপরাধের জন্ম ক্ষমা ভিক্ষা করিল।

গুরুজা কাহারও অপরাধ গ্রহণের লোক নহেন, বিশেষতঃ শিষ্টের। অক্বতদার ব্রাহ্মণ এক একটা শিশ্যকেই পুত্র জ্ঞান করিতেন। ত্রিন জানিতে চাহিলেন দ

मनानित विनन, "शक्कीत नमूर्य नाठी धरत এমন শক্তিমান তাহাদের মধ্যে কেহ নাই। তবে গুরুজীর অভয় পাইলে তাহারী मकल भिनिया छाँ हात मल এक वात्र नाठी (थल।"

ঈষৎ হাসিয়া রভন অভয় দিলেন। সদাশিব ফিরিয়া সঙ্গীদের সংবাদ দিল। প্রাণের আশকা নাই শুনিয়া, সকলেই লাঠী খেলিতে व्याग्रह श्रकाम कतिर् गाशिन। मरशहारम मकरन एक छ। ही क्षेत्र कतिया छेठिन। कनमाधातन वृत्यिन,—এইবারে লড়াই বাধিয়াছে। मकलाई भनाईवात्र भणेंगे ठिक् कतिया त्राथिन। एकमन एकमन प्रिथान, ाजके भाष भगारेत।

এদিকে সিপাহীগণ রতনের আক্রমণ নিবারণের অন্ত প্রস্তুত হইমা দাড়াইল। রতন আক্রমণের প্রারম্ভে, একটা ভীষণ ভ্রমার করিলেন। ত। भन्न প্রতিদ্বন্ধী দিপাখীদিগের বিপরীত দিকে কিছুদুর ছুটিয়া-গেলেন। আব্র বিত্যৎবেগে ফিরিলেন। আবার এক ভীষণ ভ্রমার করিয়া 'হর-হর' শব্দে ভাষণলন্ফে জনতার • মধ্যে পড়িলেন। লাঠার ঠকাঠকু শব্দে প্রান্তরসমীরণ ভরিয়া গেল।

बाउन रेष्ठेकसून रहेरा वह व्यक्तमृश मिथिरा हिलन। वर षा विषय वानत्म शवकानि मिरविष्टिन।

হার্লিও ব্যাপারটী দেখিবার প্রলোভন পরিত্যাগ করিতে পারিলেন না। অলকণ পরে তিনিও সেই পাঁজার উপর উঠিলেন। উঠিয়া যাহা দেখিলেন তাহা জীবনে ভূলিবার नয়। হার্লি দেখিলেন, একদিকে একা বৃদ্ধ,—অন্তদিকে শতাধিক প্রহরী লাঠী লইয়া যুদ্ধ করিতেছে! আর দেখিলেন, ক্ষিপ্রকারিতায় ও প্রক্রেলিকাময় রণকৌশলে সেই বৃদ্ধ যেন दिनव-रियोवनवर्ण मञ्जारन यूग्रभ९ व्याविर्ज् ७ इटेर्डिइ।

দেখিতে দেখিতে সেই শতাধিক প্রহরী পরাস্ত হইয়া রণে ক্ষাস্ত দিল। এবং সকলে নভজাত্ব হইয়া বৃদ্ধকে অভিবাদন করিল। জন-সাধারণ ব্যাপারটা কি ভাল বুঝিতে পারিতেছিল না। তাহারা माठामाठीत वााभात प्रथिया, আগে হইতেই भगायन আরম্ভ করিয়াছিল। এক্ষণে প্রহরীরাও ফিরিতে আরম্ভ করিল।

প্রাণপণে ব্রাহ্মণের দঙ্গে লড়িয়াছিল, তাহারাই স্থানে সামান্ত আঘাত পাইয়াছিল। আঘাত পাইয়াই তারা বুঝিয়াছিল, ব্রাহ্মণ দয়া कत्रिया তाहामिशत्क हजा। कत्रन नाहे। वाकालंब व्यक्त (कहहे कि यष्टिम्मर्ग कतिए भारत नाहे।

অল্লকণ মধ্যেই, প্রান্তর জনশৃতা! বাউন বাক্ষণকেও আর দেখিতে

िनित्निन्। विनित्निन, "मिनािन्त् !" मनािन्य याथा (इँछे कतिया माँ पृथ्या तिल्ल।

\* - সদাশিব ক্ষত্রিয় সস্তান। দশ বৎসর পূর্বে, সে রতনের কাছে কুস্তি ও गाँठी (थंगा निथियाছिन। निथिया मत्र छ।, পদ্মা, धनভূম প্রভৃতি नाना त्राकात यथौरन চाकूति कतिया यद्यमिन श्रेण यनख्रपूर्त कित्रियाहा।

অদন্তপুরে আসিয়াই সদাশিক রাজ্য সম্বন্ধে সমস্ত ব্যাপার বৃঝিয়া-ছिन। ञानमाप्त जाशास्क समामात्री भन नित्राष्ट्रन। कृषी मात्रा যাইবার ভয়ে, সদাশিব গুরুজীর সহিত দেখা করিতে পারে নাই। ক্ষটীর থাতিরে অন্ত দিপাহীদের দক্ষে তাহাকেও শুরুজীর পশ্চাৎ ছুটিতে হইয়াছে। কিন্তু লজ্জায় সে দলের সম্মুখে আসিতে পারে নাই। বরাবর পিছনেই ছিল। বাহ্মণের বারম্বার আহ্বানে অমুতপ্ত গুরুজীর পদে প্রণত হইল। অপরাধের জন্ম কমা ভিক্ষা করিল।

গুরুজা কাহারও অপরাধ গ্রহণের লোক নহেন, বিশেষতঃ শিষ্টের। অক্বতদার ব্রাহ্মণ এক একটা শিশ্যকেই পুত্র জ্ঞান করিতেন। ত্রিন मनाभिवरक वाभीर्कान कतिरामन এवः তাহার मनौरनत অভিপ্রায় कानिए ठाहिएन म

मनानिय विनन, "अक्नीत मन्त्राय नाठी धरत এমন শক্তিমান তাহাদের মধ্যে কেহ নাই। তবে গুরুজীর অভয় পাইলে তাহারা मकल भिलिया छाँशत मल এकवात लाठी (थरल।"

ঐষৎ হাসিয়া রতন অভয় দিলেন। সদাশিব ফিরিয়া সঙ্গীদের भःवाम मिल। প্রাণের আশকা নাই শুনিয়া, সকলেই লাঠা থেলিতে আগ্রহ প্রকাশ করিতে লাগিল। মহোল্লাসে সকলে একটা চীৎকার क्रिया উঠिए। अनुमाधायन वृक्षिण,—এইবারে লড়াই বাধিয়াছে। সকলেই পলাইবার পথটা ঠিক্ করিয়া রাখিল। তেমন তেমন দেখিলে, नमाने भाष भनाहरव।

এদিকে সিপাহীগণ রতনের আক্রমণ নিবারণের জন্ম প্রস্তুত হইয়া मাড়াইল। রতন আক্রমণের প্রারম্ভে, একটা ভীষণ ভ্রমার করিলেন। তারপর প্রতিদ্বন্দা দিপাহীদিগের বিপরীত দিকে কিছুদুর ছুটিয়া গেলেন। আবার বিত্যুৎবেগে ফিরিলেন। আবার এক ভীষণ ছঙ্কার করিয়া 'হ্র-হর' শব্দে ভাষণলন্ফে জনতার মধ্যে পড়িলেন। লাঠার ঠকাঠক্ শব্দে প্রান্তরদমীরণ ভরিয়া গেল।

वाडेन रेष्ठेकसूप रहेरा वह वाष्ट्र मण्ड पिश्टिहिलन। विर षि वानत्म शञ्जानि मिट्जिइत्निन।

হার্লিও ব্যাপারটী দেখিবার প্রলোভন পরিত্যাগ করিতে পারিলেন না। অলকণ পরে তিনিও সেই পাঁজার উপর উঠিলেন। উঠিয়া যাহা राधित्वन তार। জीवत्न जूनिवात नग्र। रात्नि राधित्वन, এकारिक একা বৃদ্ধ,—অন্তদিকৈ শতাধিক প্রহরী লাঠী লইয়া যুদ্ধ করিতেছে! আর (पिथिलन, किथकाति जात्र ७ थ्रद्धिलकामत्र त्रगटकोण्यल एमरे वृक्ष राम দৈব-যৌবনবলে শতস্থানে যুগপৎ আবির্ভূত হুইতেছে।

দেখিতে দেখিতে সেই শতাধিক প্রহরী পরাস্ত হইয়া রণে ক্ষাস্ত मिन। এবং সকলে নতজামু হইয়া বুদ্ধকে অভিবাদন করিল। জন-সাধারণ ব্যাপারটা কি ভাল বুঝিতে পারিতেছিল না। তাহারা नाठानाठीत्र वााभात प्रिया, जाश्य इटेट्टि भनायन जात्र कत्रियाहिन। একণে প্রহরীরাও ফিরিতে আরম্ভ করিল।

যুদ্ধে কেহই আহত হয় নাই। যে হ'একজন ভাল থেলোয়াড় প্রাণপণে ব্রাহ্মণের দঙ্গে লড়িয়াছিল, তাহারাই স্থানে স্থানে সামায় আঘাত পাইয়াছিল। আঘাত পাইয়াই তারা বুঝিয়াছিল, ব্রাহ্মণ দয়া कत्रिया जाशामिशक रूजा कर्त्रन नारे। बाक्य विक कर्क किन যষ্টিম্পর্ল করিতে পারে নাই।

অল্লকণ মধ্যেই, প্রান্তর জনশৃতা! ব্রাদ্ধন ব্রাহ্মণকেও আর দেখিছে

পাইলেন না। তথন ধীরে ধীরে পাঁজা হইতে নামিতে লাগিলেন। नामिवात नमग्र दात्लिक (मिथलन,---এভক্ষণ দেখিতে পান नारे। मिथियां , वार्षेन कान कथा किश्लिन ना। शब्द मूथ किवाहेबा माभिया (गरैनन। रामिरक मिट अपृष्टेश्क वानिकामृहिं। अथम विकिष्ड ्रहेश्राहिल, भूश्रयूवक म्हितिक हिल्लिन।

অস্থার তাঁহার চক্ষে ব্রাহ্মণের দেবমূর্ত্তিনী ফুটিয়া উহিঃছে! এবারে তাঁহার স্থির বিশ্বাদ হইয়াছে, যে দেরপ বিজয়শ্রীদেবিত মহাকায় পুরুষ, 'সেরূপ অনৈসগিকশক্তির অধিকারী বুদ্ধ, কখন 'মামুষ' হইতে পারে না ।

## ठकुर्मम পরিচ্ছেদ।

সহচরের অস্জ্রায় হার্লি মর্মাহত হইলেন। তথাপি ভিান তাঁহার উপর বিরক্ত হইতে পারিলেন না। ব্রাউনের মণা প্রকাংশ অধিকার ্রাছে। কিন্তু ব্রাউনের উপর কোধ-প্রকাশে তাঁহার অধিকার কই ?

शर्मा अत्नक्षण शांकात्र छे भन्न माँ ए। देश , तिहान । तुक कि तिहा তাঁহাকে কি জিজ্ঞাসা করিবে বলিয়া গিয়াছে। তিনি বুদ্ধের প্রতীক্ষা कतिए नाशित्न । बाउँ तित उपत जात पृष्टि पिएन।

अछिन वाश्लाय ना कितिया, वहेत्रक्तित पिटक हिल्याहिन।

হার্লি দেখিলেন, ব্রাউন বটবুক্ষের ভলদেশে উপস্থিত হইয়া, বুক্ষের উপরে, নীচে, চারিদিকে কি যেন সন্ধান করিল। তারপর সেম্থান ত্যাগ করিয়া, স্বর্ণরেখার তীরে উপস্থিত হইল। তিনি বুঝিলেন—ব্রাউন व्यव्यव्यव व अधी श्रृं किया भारे ए ।।

... হার্লি ভাবিলেন, দে বস্তুটী কি ?—সে কে বৃদ্ধ? তাঁহার আচরণে वाषिण रहेमा, बाउन कि डाँरावरे जन वृष्क्र कार्छ क्या धार्थना क्त्रिट हिन्या हि ?

" দেখিতে দেখিতে ব্ৰাউন অদৃশ্ৰ হইলেন। অধৃতপ্ত হার্লি, ভাবি-

लেन, "कि कतिनाम? অকারণ ঔদ্ধতা দেখাইতে গিয়া সহচরের কাছে মাথা হেঁট করিলাম।" তাঁহার আচরণের জন্ম, ব্রাটন হয়ত বৃদ্ধের काष्ट्र क्या ठाहित। विनित्-नकन देश्त्राक 'हात्नि' नम्। देश्त्राक-यूनक वृक्षत्क (कथिता खाका करत्। व्यमहात्र (कथिता, खानभेता स्मात्रक জন্ত অগ্রদর হয়। 'বর্ণে'র প্রশ্ন তথন তার মনে উঠে না। লোলভালে ্বজ্রপাত্তকার স্পর্শস্থ্র অমুভব করাইয়া, প্রাতি সম্ভাষণ করে না। 🐬 🕟

হার্লি মনে মনে স্থির করিলেন, বুদ্ধ ফিরিলে, সর্বাতো তাঁহার কাছে ক্ষমা ভিক্ষা করিবেন। তারপর, তাঁহার অভিপ্রায় বুঝিয়া—যদি • কিছু করিতে হয়—দে কার্য্য নিষ্পন্ন করিবেন। বৃদ্ধ যদি অর্থের, প্রত্যাশা হয়, ত যথেষ্ট অর্থ দিতেও কুণ্ঠিত হইবেন না।

• वृक्ष किन्छ फित्रिम ना। श्रात्नि, চातिमिक ठारिया मिथिलन— কোথাও বৃদ্ধের চিহ্ন দেখিতে পাইলেন না। নীচে আসিলেন। যেথানে বুদ্ধ দাঁড়াইতে বলিয়াছিল, সেইখানে ফ্লিরিলেন। তাহার প্রত্যাগনম প্রত্যাশায়, বহুক্ষণ ধরিয়া, ইতস্ততঃ পাদচারণ করিলেন। कित्रिवात लक्षण (म्था (मल ना।

হতাশ হইয়া হার্লি বাংলায় ফিরিবার উত্যোগ্রকরিতেছেন, এমন সময় দেখিলেন, একজন যুরক তাঁহার দিকে আসিতে2ছ।

यूवक--- ननाभिव। ननाभिव नाष्ट्रवं निक्रे व्यानिया, रननाम, করিয়া বলিল, "সাহেব! তুমিই কি বৃদ্ধ ব্রাহ্মণের অপেক্ষা করিতেছ ?" হার্লি উত্তর করিল, "হা।"

সদাশির। তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ হইবে না।

श्रात्नि। जिनि रि जामार्क जरभका क्रिर्ज विनिधार्छन।

मना। विनयाছिलन। किन्न य अर्याक्र न जिन जाभनात कार् व्यामिटजन, जाहा मिक हरेगारह।

হার্লি। আমি যে একবার তাঁহার সহিত্ত সাক্ষাৎ করিতে চাই।

সদা। তিনি অনম্ভপুর ত্যাগ করিয়াছেন।

श्रात्रि कथा। मण्पूर्व विश्वाम क्रिएल भात्रिलन ना। ভাবিलन, বৃদ্ধ কারাগারে নিক্ষিপ্ত হইবার ভয়ে তাঁহার সহিত দেখা করিতে সাহস क्रिज्ञा ना। তाই, मनानिवरक অভয় দিয়া वांनरनन,—"वृक्षरक আমার কাছে আদিতে বল। আমি প্রতিশ্রত হইতেছি,— তাহার কোনত অনিষ্ট করিব না 1

मनाभिव विनन, "मार्ट्स, আমি মিথ্যা विन नारे। में में में में -ব্রাহ্মণ অনস্তপুর ত্যাগ করিয়াছেন।"

হার্লি। কবে ফিরিবেন?

সদা। ফিরিবার সম্ভাবনা অতি অল। তোমাকে জানাইবার জন্ত, তিনি আমাকে পাঠাইয়াছেন।

श्वात्वि। প্রয়োজনটা কি.ছিল, জানিতে পারি কি?

সদা। বলিতে পারি। কিন্তু তাহাতে আমার অনিষ্ট হইবে।

হার্লি। অনিষ্ট ?—কে করিবে? তুমি মামা হইতে অনিষ্টের কোনও আশহা করিও না।

मन। তোমা হইতে অনিষ্ট না হইতে পারে, — কিন্তু আনন্দদেব कानिएक भाबित्न चनिष्ठे श्रेट्व,—चामात्र ठाक्त्री गारेत्व।

मार्ट्य অভয় দিলেন। मनानिय विनिष्ठ नाशिन। রাজকুমারী मिनोत्र অভাবে कष्टे পाইতেছেন। তাহার অভাব দূর করিবার ইচ্ছাম, वाकान जाननपरिवत काष्ट्र जार्वितन क्रिए यार्टिक्शिन। जान-আবেদনের উত্যোগেই ব্রাহ্মণ যে ফল পাইয়াছেন, তাহা ত সাহেবেরও व्यविषिण नाहे। याहे र'क मि कथा मार्ट्यिक कानाहेर्ड जांत्र हेन्हा ছिन; किन्छ এक । मिननी मिनिया ছে वनिया, छाँ हात्र आत आनिवाद व्यक्तिकन इहेन ना।

श्वात्न। , आरंश कि मिनी हिन ?

मना। আগে দ্বই ত ছিল দাহের! ७५ कि मिलें। - के ज नित्र व ब्रम्भी बाज्ञ यहा প্রতিপ। निত इই য়াছে!

্ হার্লি। এথনু?

ं मना। ञानमान्त मव पूत कतिया नियाछ। य छ्टे 🤐 जन আছে, তাহাতে রাজা ও রাণীর নম্যক্ পরিচর্য্যা হয় না।

হার্লি। সঙ্গিনী রাখিবে,—তার পরচ যোগাইবে কে?

সদা। সঙ্গিনী আমার স্ত্রী। তাহার অন্ত থরচ লাগিবে না। তাহার পিতার যথেষ্ট অর্থ আছে। তবে আমি আনন্দদেবের অধীনে চাকরী অরি। যদি কেহ একথা জানিতে পারে, আমার চাকরিটী যাইবে।

श्रावृति। ভग्न नारे। আমা रहेट একথা প্রকাশ পাইবে না। তবে স্বামী স্ত্রীর সম্বন্ধ;—তোমরা কেমন করিয়া এ সম্বন্ধ গোপন রাখিবে গ

দদা। অনম্ভপুরে থাকিতে আমাদের পর পারে সাক্ষাৎ হইবে না। বিস্মিত হইরা, হার্লি সদাশিবের মুথের পানে চাহিলেন। দেখিলেন, স্থলর যুবক স্থিকনেত্রে তাঁহার পানে চাহিয়া আছে। তাহার কথায় তিনি অবিশ্বাদ করিতে পারিলেন না। বুঝিলেন, রুদ্ধ সম্বন্ধে সক্ল প্রহেলিকাময়।

मनार्भित मार्टित्क (मलांग क्रिया প্রস্থান ক্রিল। হার্লি আনন্দ-(मरवंत्र कार्छ हिन्दिन।

ক্রিমশঃ।]

## ° থিয়েটার-লহরী।

### ( अशूक् তि-को कुक। )\*

র্জ মহা নগরী মাঝে বিরাজিছ সদা কত কলকণ্ঠী কেণ্ডিল ঝঙ্কারে সৌধ অট্রালিকা থিয়েটার ও। গ্রা কত দিন ধরি' এ নগরী মাঝে যেই ক্ষণে হার তেমার প্রতিষ্ঠা অভভেদী চূড়া তুলি ও॥ স্থামুদ্ধ মতন ধ্বলাচলে বিদিয়া স্তিমিত লোচনে ও। वर्षान २'८७ ७ (पर् जामात्रि (महेक्सन २'८४ हा अही वानक হেরিল কত শত ঘটনা ও॥ নীরব ভাষায় কহিছ কি কথ। তোমার পুরাতন কাহিনী ও। শ্বরণে জাগিছে মরমে পরশি' সেইক্ষণ হ'ডে কত পিতা মাতা मज्ञाम छ।वि (म कथा ७॥ মেই হেডু হার ্তব প্রতিষ্ঠা তোমা পানে চাহি সজল নয়নে कना, अकारमाम (काशांत्र ७.। नांशिक मन्न नांधू ভाব দান, আলোকে পুলকে মদিরা মাদকে (मण-शिटें **उर्गा च**र्गन ७॥ তব রঙ্গ মাঝে কত লক্ষ্মীমন্ত এবে সব নীরব ওরে রঙ্গমঞ্ কত লীলা খেল। খেলিল ও।

মহা নগরীর মাঝে ও। সেই ক্ষণ হ'তে ধনী পুত্ৰ-বধু স্বামী-সহবাদে বঞ্চিত ও॥ আক্ষেপে হত।শ প্রাণে 🕫। সেইক্ষণ হ'তে কিশোর নৱক ठर्का कर मना ७॥ দীর্ঘ নিশাস ফেলি'ও শাঁপিছে ভাপিছে ভোষারে ও॥ ममा পরিপূর্ণ ছিলে ও। গভ যভ বৈভব কালে ও॥

#### बीत्रामहत्त्र वस्र।

\* "निर्माल मिलिल विश्व महा किमानियो समात्र प्रमूख ध<sup>°</sup>।" मन्नोष्टत्र Parody.

## আগরতলায় 'ঐপক্ষী।

প্রতিঘাত করিতেছে, এবং তৎ সঙ্গে সংস্ক কত কাহিনা—কতক মানসমোহিনী বেশে, কতক স্থকোমল ঈষদবলোকনে, কতক তড়িৎ চঞ্চল ইন্সিতে মানস-ক্ষেত্র ভাব-বিভোর করিয়া তুলিতেছে, তার ইয়তা নাই!

আমার বেশ শারণ আছে, যথন আমাদের মাষ্টার মহাশয় বৈকালিক স্থলের ছুটি দিবার সময়, সরস্থতা পুজোপলক্ষে আগামী কল্যের বন্ধের স্থার্ কথা আমাদিগকে শুনাইয়াছিলেন, তৎশ্রবণে আমরা, মাষ্টার মহাশয় কর্তৃক অনতিপূর্ব লাঞ্ছিত ভাইজাগনীতে মিলিয়া, আহলাদিকিলাত স্বরে আমাদের ক্ষুত্র পাণিপুট ললাটে স্থাপন করিয়া, অভ্যস্ত "প্রণাম" এই শন্দোভারণ করিইত করিতে স্কুল-গৃহ বিদীর্ণ করিয়াছিলাম এবং সবেগে অস্তঃপুরাভিম্থে দেগিড়তে ছিলাম। তিনি আমাদের পশ্চাৎ হইতে গগুগোল থামাইবার নিমিত্ত নাতিউচ্চ শূপ, চুপ" শন্দ করিয়াছিলেন। কিন্তু আমরা কাঁহার অসম্মাননা করিয়াছিলাম—আমাদের এইরূপ অবাধ্যতার দরুণ, প্রদিনে তাঁথার কাছে উপস্থিত হইয়া প্রায়শ-প্রাপ্ত দণ্ডের কথা সে'দিনও ভুলিয়াছিলাম! এই একটি দিনের ছুটতে, তৎমূহুর্তে, তাঁহার সহিত আমাদের সম্বন্ধ চিরজীবনের ক্ষম্ভ বিচ্যুত হইয়াছিল, মনে করিয়াছিলাম!

যাহা হউক, মাষ্টার মহাশয়ের অধিকার বহিতৃতি হইয়াও আমাদের রক্ষা ছিল না—আমাদিগকে তথনই অভিভাবিকাদের দথলে প্রবেশ করিতে হইল। তাঁহাদের উৎপীড়ন অস্তে নিতাস্ত কষ্টদায়ক হইলেও পরিণামে আমাদের অভীষ্ঠ সিদ্ধ হইত। কিন্তু আমাদের কেবল এক তৃতীয়াংশ দিবসের অধীনতায়, মাষ্টায় বাবুর প্রতি অনির্দারিত সময়ের

নাতি কঠোর শাসন আমাদিগকে সর্বদা সন্ত্রাসিত করিত। তাঁহার নিকট আমাদের অভিলাষ পূর্ণ হইত না।

- সেই দিনও (মাষ্টার বাবুর নিকট বিদায় প্রাপ্ত হইয়া) কিছুক্ষণ থেলার পর সন্ধ্যা আসিল। অভিভাবিকাগণ আমাদিগকে টানিয়া लहेया रालन—जामारात यरकिकिर साधीनजा ममाक ताजित जन् विनुखं रहेन। छाँहाता आमाप्तत्र, धृनि धृमति छ इस्त्रभम्भूथ (धोज कतिया, निर्मिष्ठे स्थात्न वािं वािंने পঠा जात्म वा्रामिश्व निर्प्याक्षि করিলেন। সেই ঘরে আমরা তুই ভাই ও তিন ভগিনী ছিলাম। কিন্তু আমরা বিভিন্ন কুঠরীতে নিবদ্ধ থাকিতাম। অভিভাবিকা মহোদয়াদের নিকট আবার অনুগ্রহ বিদায় না পাওয়া পর্যান্ত আমাদের কাহারও সহিত কাহারও দেখা দাক্ষাৎ করিবার যো ছিল না। তথন व्यामारात्र कार्ष्ट् थाकिত-প्रमीপ, পाथा व्यथवा हिक् मान्नम् ७-इरस অভিভাবিকা ও ৬মদনমোহন ত'র্নালক্ষার মহাশয়ের "শিভুশিক্ষা ভূড়ীয়ভাগ," শ্লেট পেন্সিল ইত্যাদি আরও কতকগুলি পদার্থ। কিন্তু প্রায়ই পাঠাভ্যাদে অমনোধোগিতার দরুণ অভিভাবিকাদের কঠিন চপৈটাঘাত ও চিক্রণ বংশদও আমাদের পৃষ্ঠদেশে আস্ফালন করিত। बना वाह्ना এই সংঘর্ষনের অবশ্রস্তাবিতা তৎক্ষণাৎ আমাদের মুখে প্রকাশ পাইত। কিন্তু অভিভাবিকাদের স্থকোমল স্নেহার্দ্র হৃদয় ইহাতে ব্যথিত হইত—অবশেষে তাঁহারা থেলন৷ বা কিঞ্চিৎ মিষ্ট দ্রব্য প্রদানে আমাদিগকে শাস্ত করিতেন। এবং সেই দিনের জন্ম পড়া বন্ধ রাখিতেন !

অভিভাবিকা মহোদয়াগণ সকলেই আমার পুঞ্জনীয়া; স্থভরাং ভাঁহাদের ষৎসামান্ত অভিভাবকতা দোষের কথা এখানে উল্লেখ कत्रियां हि विनियां व्यामि छाँशामित्र निकृषे क्यां श्रार्थना कत्रिएहि। व्यायात्र मृष् विचान, छांशामित्र वित्र-छेमार्याखन व्यायादिक यार्कना कृतिरव।

তবে এন্তলে ইহাও স্বাকার্য্য থে, কোন কোন দিন অভিভাবিকা মহোদয়াগণ শাদনাস্তে আমাদিগকে সাস্তনা দিতেন না—দে'দিন কেবলই শাসন করিতেন। অবশ্য যদিও তাঁহাদের এরপ নির্দয় ব্যবহার আমরা হুই একবারের অধিক ভোগ করি নাই।

কিন্তু সেই উণ্পঞ্চমী রাত্রে, অভিভাবিকাগণ আমাদিগকে শাসন করিয়াছিলেন কি না, অথবা শাসনাস্তে, তাঁহাদের স্বভাবিক উদারতা বশত: আমাদের অন্ততঃ আমার মনোরথপূর্ণ করিয়াছিলেন কি না, এ সকল বিষয় আমার মনে নাই। তবে উল্লিখিত ভীষণ হর্ঘটনায় দে'দিন আমাকে পড়িতে হয় নাই, ইহা আমার বেশ স্বরণ আছে।

যাহা হউক, রজনী প্রভাত হইলে সরস্বতীপূজার কথা স্মরণ করাইয়া অভিভাবিকাগণ আমাদিগকে পড়িতে নিষেধ করিলেন। বলা বাহুল্য আমরা নিরাপত্তিতে তাহা মানিয়া আমোদ করিতে লাগিলাম। খুল্লতাতপুত্রীগণও এখন আমাদের সহিত একত্রিত হইল। তাহারা প্রায় সমস্ত দিবাভাগ আমাদের স'হত অতিবাহিত করিত। কিন্তু সন্ধ্যাসমাগমে অভিভাবিকাগণ আমাদের সহিত তাহাদের বিচ্ছেদ ঘটাইতেন। কারণ, অন্তঃপুরের অপর প্রান্তে ° অন্ত একটি ঘরে তাহাদিপকেও বন্ধ থাকিতে হইত। স্কুতরাং অভিভাবিকাদের নিকট ছুটি পাইয়াও রাত্রে আমরা তাহাদের কাছে যাইতে পারিতাম না। সমগ্র রাত্রির জন্ম তাহাদের সহিত আমাদের মিলনের আশা ছিল না।

বাস্তবিক এ বিরহটি আমাদের শিশু-হৃদয়ে বড়ই অসহা ছিল। কোন পর্কোপলক্ষ ব্যতীত নিরাপদে আমাদের মিলনের কোন সন্তাবনা থাকিত না। কোন কোন রাত্রে আমাদের—এবং তাহাদের—ধৈর্যাচ্যুতি ঘটিত; আমরা অভিভাবিকাদের চক্ষে ধূলি নিক্ষেপ করিয়া একে অক্তের সহিত সাক্ষাৎ করিবার অভিপ্রায়ে গৃহ হইতে বহির্গত হইতাম। কিন্তু সতর্ক অভিভাবিকাগণ আমাদিগকে প্রায়ই পথিমধ্যে অথবা

আমাদের মিলনের অবাবহিত মুহুর্ত্তেই রস-ভঙ্গ করিয়া দিতেন। আমধা তৎক্ষণাৎ গ্রেফ্তার হইয়া যথাস্থানে নীত হইতাম। পথিমধ্যে অবশু ছুই একটা ঘুদি আমাদের মস্তক চুম্বন করিত।

রাত্রিকালে আমাদিগকে গৃহ-বহির্গত না করিবার কারণ, পাছে দেবতা বা ভূতের কুদৃষ্টিতে আমাদের অমঙ্গল হয়। আমরা কৈশোর শেষ পর্যান্ত নাুনাধিক এই নিয়মের অধীন ছিলাম। স্বাধীনতা প্রাপির পর আমাদের অন্দর্মহল অনেক খণ্ডে বিভক্ত হইয়া গেল।

এথানে আমার একটি কথা বলিবার নিতান্ত অভিলাষ—খুল্লতাত পুলীগণও বড় সুশীলা ছিলেন না। আমাদের স্থায় তাঁহারাও ন্যুনাধিক চঞ্চলা ভিলেন; স্থতরাং অভিভাবিকাগণ তাঁহাদিগকেও আমাদের ন্যায়ই শাসন কহিতেন।

যাহা হটক দেই পঞ্চমী প্রভাতের আমোদে কিছু বিশেষত্ব ছিল। আর আর দিন আমরা লাফাইতাম, দৌড়াইতাম, লুকাচুরি থেলা করিতাম; কিন্তু দে'দিন আমহা কতকটা শান্ত-শিষ্ট। সরস্বতীর অর্চনা গৃহে সমবেত হইয়া পূজাসম্পর্কীয় অভিভাবিকাদের নানা আদেশ আমরা সানন্দে প্রতিপালন করিতে লাগিলাম। আমাদের কোন কোন ভिगिनी (ऋष्टाम्र गृह-প্রদেপন কার্য্যে নিযুক্ত ইইল। আমি বোধ হয় মিশ্রিত বিশ্বপত্র ও আত্রমুকুলের শ্রেণীবিভাগ করিয়াছিলাম।

অভিভাবিকাগণ আমাদিগকে আজ কিছু শীঘ্র শীঘ্র সান করাইলেন। স্বানের পর আমরা স্ব স্ব অভিভাবিকা মহোদয়াদের প্রদত্ত রঙ্গিন কাপড় পরিধান করিলাম। আমার ধুতির রঙ্বসন্তী ও চাদরের রঙ্ কুরুম ফুলের। বোধ হয়, ভগ্নীদের পরিধান বস্তের বর্ণ আমার বস্তের বিশরীত ছিল অর্থাৎ কুস্থম রঙের শাড়ী ও বসন্তী রঙের চাদর। व्यामन्ना भान-প्रविद्ध है का (कह माना त्रहना, (कह धन्तन पर्यंग ७ (कह निवध श्रञ्ज क्रिक्र गांशियाम। অভিভাবিকাপণ আমাদের পাঠা

পুসক, শ্লেট ইত্যাদি ভিন্ন ভিন্ন "বস্তানী" মাবৃত করিয়া ভারতী সমীপে স্থাণন করিলেন। পুস্তকাদি ছাড়া সরস্বতীর বামে ও দক্ষিণে ঢাল, তরবারি, বন্দুক, সেহার, এপ্রাজ, সাইঙ্গ, তানপুরা, করতাল, মৃদঙ্গ, যন্দিরা, বেহালা, বাঁশী ইতাাদি বাতা যন্ত্র ও যুদ্ধ সরঞ্জাম সজ্জিত ছিল। अভिভাবিধাগণ ঐ সমস্ত জিন্সিসের উপর কিঞ্চিৎ চন্দন সিঞ্চন করিলেন।

অতঃপর ব্থাসন্যে য্থানিষ্নে পুরোঞ্চিত ঠাকুর পূজা আরম্ভ করিয়া न्याथ कतिर्वत। এवः जिनि जिन्नि अमानित निमिन्न वायामिनरक আহ্বান করিলেন। অভিভাবিকাদের আদেশ অমুসারে প্রথমতঃ আমর। সরস্বতীকে প্রণাম করিলাম। তৎপর একে একে জামরা সরস্বতার সমুথে দণ্ডায়মান হইলাম। পুরোহিত ঠাকুর আমাদের ক্ষুদ্র অঞ্জলিতে পুষ্প ও বিল্পতা পূর্ণ করিতেছিলেন। আমরা প্রত্যেকে माठ वात कतिया वाणीहत्रण • अक्षांन প্রদান করিলাম। **অঞ্জাল** প্রদানায়ে আবার ইহাকে প্রণাম করিলাম। , এবার বিশেষরূপে ইহার সহিত আমাদের পরিচয় হইল। অভিভাবিকাগণ কেহ সংক্ষেপে কেহ বা দীর্ঘতর বক্তায় ইহার গুণ গরিমার কথা বাক্ত করিলেন— हैनि विकानाजी, विकानाङार्थ हैंहारक माञ्चम आर्थना कत। अग्र ভাই ভগিনার কথা বলিতে পারি না, আমার সরল হাদয় অভিভাবিকা-দের কথায় সম্পূর্ণ বিশ্বাস স্থাপন করিয়াছিল,—আমি মনে মনে সরস্বতী সমীপে বিভার জন্ম কত প্রার্থনা করিয়াছিলাম।

ইহাই আমার শ্রীপঞ্চমীর সহিত প্রথম পরিচয়। ইহার পূর্বে कान छी १ अभी जानिया हिन कि ना, जामात्र काना नारे।

তৎপর আর এক শ্রীপঞ্মীর অভ্যুদয় হইয়াছিল, যাহার মধুর শৃতি আমার হৃদয়ের অস্ততলৈ জাগরিত হইয়া আজ কত কুদ্র-বৃহৎ পুরাতন কাহিনীকে একে একে আকর্ষণ করিতেছে।

मिन विकाल दिलाम वर् काकीमा मालान मःलग्न वाजान्माम ৰসিয়া আছেন; আমরা কয়জন তাঁহার নিকট সমবেত আছি। তিনি সাত-আটজন পরিচারিকাকে ডাকিয়া আগামী-কল্য বন-পরিক্রমণের জন্ম প্রস্তা থাকিতে অমুমতি করিলেন। আরও কয়েকজন ভ্রমণেচ্ছু मानी তথায় উপস্থিত হইয়া স্ব অ অভিলাষ কাকীমার কাছে ব্যক্ত করিল; কিন্তু তাহাদের হুই তিনজন ব্যতাত আর আর আবেদন-कांत्रिगीक नित्राम हरेल हरेल। जन्नाक्षा এक जन कि लाजी अधिकांत्र-বহিভূতা দাদীর তথনকার হ:খব্যঞ্জক মুখথানি বড়ই করণার যোগ্য ছিল। চিরমাশা-শূক্তা অন্তঃপুর-বন্দিনীর এই চঞ্চল বয়দে, এই স্থোগে মনোহর মুক্তদৃণ্ডের অবলোকন-আকাজ্ঞা নিতান্তই স্বাভাবিক। কিন্তু ইহাতে দৈ বাধা প্রাপ্ত হইয়া পরমুখপ্রেক্ষিতার ছঃথ বিশেষরপে অমুভব করিল। তার আশার প্রথমাবস্থার প্রফুলতা কে।থাম চলিয়া গেল। সে আর এক মূহর্তের জন্ম কাহারও পানে চাহিতে পারিল না—তার অশ্রভারাক্রান্ত নয়নযুগল পৃথিবীর উপরে নিপতিত হইল। যেন দে তখন শাস্তিময় ধরণীর ক্রোড়গত হইতে वामना कतिया ছिल।

কিমংকাল পরে তার পূর্বরক্ষিত কাংস্তা থালাটি কইয়া সে ধীরে ধীরে দেই স্থান ত্যাগ করিল। অনতিদুরে যাইয়াই সে অতি মৃত্সরে, গভীর নৈরাখ্যের সহিত গাহিল-

"আমার মনের আশা পুরাও যদি ওহে গৌর হরি।"

কিন্তু হায় অদৃষ্টে যাহার তুর্গতি আছে, সে তাহার ফলভোগ করিতে নিভান্তই বাধা। এন্থলে তাহার শত কাকুতি মিনতি সম্পূর্ণ নির্থক। खर्त मंत्रायय जेत्रद्र वायामगर्भाग कथिक वन ७ माखि भाउया यात्र, हेशहे जागामित भन्नम लाख उ छाहान कक्ना।

"গাতি ঘরের" (রন্ধনশালার) সমুথে ত পীকৃত ইন্ধন ছিল। সে

উন্মনস্বাবস্থায় তাহাতে হোঁচট থাইয়া পড়িয়া গেল। তাহার হস্তস্থিত কাংস্থা থালাটি সমুথে কিছু দূরে ইটের উপর নিক্ষিপ্ত হইয়া ভাঙ্গিয়া গেল। কিন্তু সে, পতনজনিত নিজ শরীরের আঘাতের প্রতি লক্ষ্য করিতে যেন কিছু সময়েরও অবসর পাইল না, খুব শীঘ্র শীঘ্র উঠিয়া ভগ্ন থালাটি ধরিয়া নূতন আর-এক বিপদের আদে কাঁদিয়া ফেলিল। এই করণ দৃখটি তথন সম্যক্ অন্তব করিতে না পারিলেও আ্লাদৈর মনে সহাত্বভূতির একটা ক্ষীণ আভাস জাগিয়াছিল। আমরা কয়জন তাহার কাছে যাইয়া দাঁড়াইলাম। ঐ হানে কুদ্র একটা খর ছিল। তথা হইতে তৎক্ষণাৎ একচক্ষুহীনা একজন বৃদ্ধা ক্ষিপ্রগতিতে আসিয়া এই উপায়বিহীনার এই অসতর্কতার জন্ম যথেচ্ছা উপযুগপরি ,আঘাত করিতে লাগিল। এইরূপে কিছুক্ষণু শাসন করিয়া, বোধ হয় ক্লাস্তি আদিলে বৃদ্ধা তাহাকে ছাড়িয়। বকিতে বকিতে তথায় দাড়াইয়া রহিল, এবং মাঝে মাঝে তাহাকে পুনরাক্ষমণের ভীতি প্রদর্শন করিতে লাগিল। তাহার সকরুণ বিশাপধ্বনি বৃদ্ধার মর্মা স্পর্শ করিতে পারিলনা !

পর দিন অতি প্রত্যুষে গাড়ীতে কাকীমাকে ৩৪ কয়জন ভগীকে লইয়া খুলতাত মহোদয় অনতিদূরবতী এক পুরাতন ভাষামুধ বাগান-বাড়ীতে নামিলেন। অবাশ্প্ত কয়জন ভগ্নীকে গাড়ী আবার আসিয়া তথায় नहेग्रा राम। পরিচারিকাগণ সকলেই পালীতে গিয়াছিল।

এই বাগান-বাড়ী হইতে আমাদের বনভোজনের স্থানটি প্রায় এক মাইল দূরে অবস্থিত। তথায় তাঁহারা সকলেই বন্থ রাস্তার দারা পদব্রজে গিয়াছিলেন। আমি প্রায় ৮॥ • টার সময় ঐ স্থানে তাঁহাদের সহিত মিলিত হইয়া দেখিলাম এথানে রন্ধন কার্য্যের নিমিত্ত একটি নাভিবৃহৎ ঘর প্রস্তুত রহিয়াছে। কাকীমা ও কয়েকজন পরিচারিকা নিবিষ্টমনে তরকারী কুটিতেছিলেন। সমুখেণ্টত্তর দিকে একটি পুরাতন

श्क्रिती। এই श्क्रितिगित्र ठिक भाएएई जामास्त्र উপনিবেশ স্থাপিত। मिकिन मिरक विख्र मिंगा कृति, जर्भत श्रीत क्रमन ७ कृत कृत পাহাড় দৃষ্টি গোচর হয়। পুষরিণীর দক্ষিণ পাড়ে অবস্থিত একটি স্থুবৃহৎ ৰটবুক্ষ হইতে রন্ধনশালা পর্যান্ত একটি পরদা লম্বমান ছিল। অতি প্রত্যুষে "পানি-বেহারা"গণ র ধিবার ও পান করিবার জল এখানে त्राथिक शिशाहिल।

স্থানটি বেশ নীরব ও নির্জ্জন। খুল্লতাত মহোদয় একটা বন্দুক লইয়া এদিক ওদিক বেড়াইতেছিলেন। বন্দুকের আওয়াজ-শ্রবণ-लाए यामि ठाँशत निक्रे भोष्या लानाम। किन्न किहूकान অপেক্ষা করিয়াও বন্দকের আওয়াজ শুনিতে পাইলাম না। স্থতরাং আমাকে নিরাশ হইয়া তথা হইতে ভগাদের দলে লেগদান আরবার নিমিত্ত রওয়ানা হইতে হইল। ভগ্নীরা সেই পুষ্করিণীর পাড়ে পাড়ে নী কুমুদ ও বহা পুষ্পের লোভে ত্মারতেছিল। কিন্তু যে হটি মাত্র নীল সালুক পুষ্করিণীতে ছিল তাহা তুইজন উত্তমশীলা ভগ্নী হস্তগত कतिन। वनक्न आहत्र आशा मकरनत अमुर्छेटे घरिया ছिन।

এইরপে আমরা কিছুক্ষণ এদিক ওদিক কেড়াইয়া, কখন বা বসিরা নানা রক্ষ গল্প করিতে করিতে অনেক সময় অতিবাহিত করিলাম।

পরিচারিকাগণ সকলেই সেই পুরাতন পুকুরে স্থান করিয়াছিল। (वान रुश, काकोगा । पहें शूक्षतिनीए स्नान कित्राि हिलन। आगता কিন্তু আমাদের উপনিবেশের দক্ষিণ দিকস্থিত একটা "সরা"র (কুন্তু त्याङियनी) উদ্দেশে ধাবিত হইলাম। "সরা"টির পরিসর কচিৎ কোন স্থানে সাড়ে-তিন হস্ত নতুবা প্রায় সমুদায় স্থলেই এক হস্ত চইবে, পভীরতাও তদম্যায়ী। এই প্রথম আমরা স্রোতজ্ঞলে স্নান করিয়া ছিলাম। স্নানের পর যথারীতি প্রদাধিত হইয়া আমরা রন্ধন-গৃহের धक बार्टम बार्शादा विमिनाव।

षाश्रात्य किहूक्त विद्याम कतिया, त्वांध इत्र षाष्ट्राहेता जमम পুলতাত মহোদয় প্রভৃতি আমরা সমুদয় বনভ্রমণে বহির্গত হইলামান সর্বাত্যে পাঁচজন চাকর তৎপর আমি এবং মৎতৃল্য ফুর্তিবাঁজ ছইজন খুলতাত-পুল্রী ও আমার একজন ভগ্নী। তারপর খুলতাত মহোদয়, কাকীমা ও পরিচারিকাবর্গ, এইরপি পর্যায়ে আমরা জঙ্গলে প্রবেশু করিলাম। আমার জ্যেষ্ঠ খুল্লতাত-প্রভ্র কথন বা সর্কাত্রে, কখল বা সর্বপশ্চাতে একটি বন্দুক লইয়া ঘুঘু শিকার করিতে করিতে অগ্রসর হইলেন। এইরূপে ছোট একটি পাহাড় অতিক্রম করিয়াই আমাদের স্ফুর্ত্তি ক্রমশঃ বদ্ধিত হইয়া আমাদিগকে চাকরদের অগ্রবর্তী করিয়া হইলে অথবা একাধিক রাস্তায় উপনীত হইলে আমরা তথায় তাঁহাদের অপেক্ষা করিতাম এবং এই অবসরে আমলকী, বহেড়া প্রভৃতি সংগ্রহ করিয়া চর্জন করিতাম। কাটারী ব্যতীত বহেড়া কর্ত্তন কন্ট্রসাধ্য বুঝিয়া আমি উহা পকেটজাত করিলাম, ভগ্নীরা তাহা চাদরে বাঁধিয়া লইল।

কাকীমা প্রভৃতি অন্তঃপুরিকাদের হাঁটিবার অভ্যাস একেবারেই নাই। তহুপরি উচু নাচু পাহাড় সকল অতিক্রম করিয়া তাঁহারা বড় ই ক্লান্ত হইয়া পাড়লেন। ভাতি ধীর পদবিক্ষেপে কিছুদূর অগ্রসর হইয়াই তাঁহারা বিশ্রামের নিমিত্ত দাঁড়াইয়া থাকিতেন। আমার একজন শাস্ত হর্কলা ভগ্নী আমাদের শ্রেণীভুক্ত না হইয়া পূর্কেই কাকীমাদের সহিত ধীরে ধীরে হাঁটিভেছিল। সে একণে এতদুর পরিশ্রান্ত হইয়াছে যে, কাকার হস্ত নির্ভর করিয়া হাঁটিতে লাগিল। স্ইরূপে প্রায় পাঁচটার সময়, ইতিপূর্বে আমরা যে ক্ষীণ সলিলা 'সরা' পার হইয়া আসিয়াছিলাম সেই "সরা"র তিন হস্ত প্রশস্ত আর এক অংশে উপস্থিত হইলাম। কাকা একজন চাকরের পিঠে চড়িয়া ইহার পর পারে উত্তীর্ণ ইইলেন; আমরা হাঁচিয়া পার হইলাম। জল

আমাদের হাঁটুর উপর ছিল। এথানে আসিয়া কাকীমা প্রভৃতি আরও अधिक क्रांख इडेर्नन

"তংপর সন্ধাা চলিয়া গেলে আমরা পূর্কোক্ত বাগানবাড়ীতে পদার্পণ করিলাম। যাহারা পাল্কীতে এথানে আসিয়াছিল তাহারা পাল্কীতে অন্দরে চলিয়া গেল। গাড়ী ছুইবারে আমাদিগকে অন্তঃপুরে (भौड़ाइया मिल।

মানব দর্বদা নৃতনত্বের প্রত্যাশী। দরস্বতী পূজার আমোদ আমা-দের নিকট পুরাতন হইয়া গিয়াছিল। তাই নবাগত বন-পরিক্রমণ-পর্বের মোহে আমরা দে'বার সরক্তীকে ভুলিয়াছিলাম।

याश रुउक, रुख-मूथानि श्रकाननार्छ जामि माँ ए। रेम जाहि; আমার অভিভাবিকা মহোদয়া একটি "রেকাবী"তে করিয়া সরস্বতীর প্রসাদ আমার সম্মুথে ধরিলেন। এবং অভিভাবিকার অনুরোধে আমি উহ। इইতে সর্বাত্যে কিঞ্চিং আম্মুকুল লইয়া চর্বণ করিতে লাগিলাম। এমন সময় ছোট কাকীনার ঘরে হাসির একটা গণ্ডগোল আমার अञ्जित्याहत रहेल। जामि जल्कानार এই কোলাহলের রহস্তভেদ করিবার নিমিত্ত তথায় যাইয়া উপস্থিত হইলাম। কাকীমা প্রভৃতি অনেক লোক বারানায় বসিয়া আছেন—বাহিরে প্রাঙ্গনেও অনেক লোক। ছোট কাকীমা ভাঁহার সমুথস্থিত এক থালা মাজমের দিকে অঙ্গুলি নির্দেশ করিয়া একজন মুখরা পরিচারিকাকে তাহা উদরসাৎ করিবরে নিমিত্ত পীড়াপীড়ি করিতেছেন। মাজম ভক্ষণজনিত তাহার পাগলামী দেখিবার জন্ম এত লোকের সমাগম। সেও নিজকে ইহা হইতে রক্ষ। করিবার অভিপ্রায়ে অসম্মতিজ্ঞাপনছলে বিবিধ রসিকভা कत्रिया लाकरक हामाहेर्डिइन। আমিও এই আমোদ উপভোগ করিবার নিমিত্ত ভগ্নীদের দহিত এক দঙ্গে এক প্রান্তে বসিয়া পড়িলাম। ছোট কাকামা এবার তাহাকে লোভ দেখাইয়া বলিলেন যে, মাজুমগুলি

খাইলে তাহাকে একখানি ভাল ঢাকার শাড়ী দেওয়া হইবে। পরিচারিকা বোধ হয় মনে করিল, এথন যাহা প্রাপ্ত হওয়া যায় তাহাই তাহার লভে। দে কাকামা প্রভৃতিকে প্রণান করিয়া মাজম খাইতে আরম্ভ করিল। একখণ্ড মাজম উদরস্থ হইবা মাত্র সে ক্ষিপ্তের ভাষ নানা কথা কহিতে লাগিল। কাকীমা প্রভৃতি খুব হাসিতে লাগিলেন। এইরপে পাঁচ ছয় টুকরা মাজম নিঃশৈষিত করিতেই দেখা গেল যে, তাহাকে বিলক্ষণ নেশায় ধঙিয়াছে। তথন কাকীমা তাহাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, তোমার নাম কি ?—দে উত্তর করিল, আমি ছোট রাণী। আবার চতুদ্দিকে হাসির কলরব উঠিল। এইরূপে কিছুক্ষণ তাহাকে লইয়া কাকামা প্রভৃতির হাসি ঠাটার পর সে আপনি গাহিয়া উঠিল—

> হেমন্ত অন্তহি ৱসন্ত আওল মনোহর ভূষিত রূপে; ভেল কুতৃহশী সব ব্ৰজ মণ্ডলী ভাগল সুথ রস কুপে ১

দে এইরপ আরো কতকগুলি রাদের ব্রজবুলী গান মনিপুরী রাগিণীতে গাহিল। তৎপর কাকীমা প্রভৃতি তাহাকে বাঙ্গালা গান রাহিতে অনুরোধ করিলেন। দে তৎক্ষণাৎ দাঁড়াইয়া অঙ্গ-ভঙ্গি-সহকারে গাহিয়া উঠিল—

> খ্রামের সরল বাঁশের বাঁণী কি গুণ জানে। र्य खरनष्ट दाँगीत जान, श्रांतर्याह कूनमान, यमूना वर्ष्ट् উक्रांत साहन मूत्रनी छाता।

> > শ্রীনরেন্দ্র কিশোর বর্মা।

## नाङ्गाला श्रुख्यक विवत्नो।

#### \* - माहिত্য (৫) कावा-भाश।

৮। অমৃত-মদিরা। ষ্টার থিয়েটারের মাানেজার শ্রীয়ৃক্ত বাব্ অমৃতলাল বঁলু প্রণীত। কলিকাতা, ১৭, নলকুমার চৌধুরীর দ্বিতীয় লেন, 'কালিকা যত্রে' মুদ্রিত এবং ২০১, কর্ণপ্রয়ালিস্ ষ্ট্রাট, বেঙ্গল মেডিকাল লাইরেরী হইতে শ্রীয়ৃক্ত গুরুদাস চটোপাধ্যায় কর্তৃক প্রকাশিত। সন ১০১০। ডবল ক্রাউন, ১৬ পেজি ফর্মার ২৯০ পৃষ্ঠায় সম্পূর্ণ, মূল্য ১॥০ টাকা। ছাপা, বাধাই, কাগজ প্রভৃতি উৎকৃষ্ট। একটি ফল্মর য়েসমী ফিতা পঠিত স্থান নির্দেশ করিবার জন্ত পুস্তকের সঙ্গে সংলগ্ন আছে। প্রস্থের ভূমিকাটি বেশ সরল, কৌতুহলোদীপক ফল্মর ভাষায় লিখিত হইয়াছে। প্রস্থানি হাতে লইলে বেশ একটা আমাদেও কৌতুহল জালিয়া উঠে, এরূপ চক্চকে মোড়কের ভিতর কি, আছে, তাহা জানিবার ইচছা হওয়া বাভাবিক; বিষয়ের স্তীও বিলক্ষণ লোভ-জনক।

বিশেষ, অমৃত বাবু বঙ্গীয় রঞ্চালয়ের অন্যতম নেতা, তাঁহার প্রহ্মনগুলি বঙ্গের মার্কেত্র হুপরিচিত। হঠাৎ সংস্থতীর কুঞ্জে আসিয়া তিনি কি প্রহ্মনের সৃষ্টি করিবেন, সে বিষয়েও আশকার সহিত একটা কৌতুহলের ভাব জাগিরা উঠা বাভাবিক। তবে আখাসের বিষয়ও ছিল, ভূমিকা পাঠ করিয়া মনে হইয়াছিল, কবির এই পীতি দারণ তঃপের সময়ের লেখা—যাঁহার। দৃষ্টি শক্তিহীন, তাঁহাদের মধ্যে কেহ কেহ বাণীর শ্রেষ্ঠতম কুপা পাইয়াছেন; অমৃতবাবুর কাছে আমরা বাণীর সেই পরম প্রসাদের কণা পাইবার জন্ম উপস্থিত হইয়াছিলাম। তাঁহার গুলু কেশমন্তিত ললাট ভারতীর কোন উজ্জল মহিমার দীপ্ত হইয়াছিলাম। তাঁহার গুলু কেশমন্তিত আশাতুর হইয়াছিলাম। আশা ছিল, দেখিতে পাইব তিনি রঙ্গালয়ের বেশ পরিবর্ত্তন করিয়া অমৃত মদিরায় শুধু অমৃত লইয়া উপস্থিত হইবেন।

অন্ত মদিরায় 'কালিকা' শীর্ষ একটি কবিতা আছে। এই কবিতাটির মধ্যে একটি সৌমারস, একটি স্বগন্তীর স্তর্জার আভাস আছে, তাহা কালিকার মৃত্তি আমানের মনশ্চকে নৃতন করিয়া আঁকিয়া দিল। যথন বিপদ সমূহ নিবিড় ভাবে

ঘিরিয়া আসে, যথন প্রকৃতির করে নির্মাম থড়া ঝলসিত হইয়া উঠে, আমরা মায়ের দ্বারে বলির মত হইয়া পড়ি, যখন পৃথিবীয় বিচিত্র সংগীত ও কল কোলাহল কর্ণে মহাষ্ট্রমীর বাদ্যের ভাগে বাজিয়া মাথের দারে আমাদের মৃত্যুর স্চনা করে, তথন সেই चात्र विभएकाल वार्जित প्राप्त छ ल जाशिया छैठं, गाहात विनाममूर्छि छत्र मिया एह, তাঁহারই ক্রোড়ে 'মা' 'মা' বলিয়। লুকাইতে চাই—তথন পড়া উথিত হইয়া থাকিয়া যায়, নির্মান বর্ত্তবি তাওব নর্ত্তন সহসা স্থাতি হয়, অহুর দলিত হইয়াছে ক্রীন তাঁহার ভীষণরূপ দেখিয়া সন্তান ভন্ন পাইতেছৈ, এই জ্বন্ত সলজভাবে দাঁড়াইয়া তিৰি বরাভয়-প্রদ হন্ত প্রসারণ করেন—পৃথিবী আশ্বন্ত হয়। কবিতাটিতে এতগুলি কথা নাই, কিন্তু এইরূপ নানা কথার স্বস্পষ্ট আভাস আছে, ইহা পড়িয়া মনে হইয়াছিল অমৃতবাবুৰ হাদয়ে বিষাদজাত কল্যাণময়া কবিতা কঠোরভাবে তুফিস্তাবে কণে কণে জা গয়। উঠিয়াছে। তিনি ইচ্ছা করিলে তাঁহার কাব্যে ভৈরব গন্তীর রম্ব ঢালিয়া দিতে পারিতেন। আমরা কবিতার পদু নীতিও ধর্মের স্ত্রে বাঁধিতে চাহিনা, তাহা হইলে কালিদাদের মত কবিকেও খোঁড়ো হইয়া থাকিতে হইত। কাব্য সাহিত্যকে আমরা অধ্যাত্ম দাহিত্যের শ্রেণীভুক্ত করিতে প্রয়াদী নহি। অমৃতবাবু যখন নায়িকাগণের নানারূপ মূর্ত্তি কাবাকলায় পরিশোভিত করিয়া চিত্রিত করিয়াছেন, তথন আমরা একথা ক্রনই বলিব না, আপনি মন্তকে তুহিনশুভ কেশকলাপ লইয়া এরূপ রঙ্গরসের চপলতা কেন প্রদর্শন করিলেন ? যথন তাঁহান্ত্র লেষমধুর দ্রুত প্রারছন্দ নান:রূপ খরবাক্যবাণে সমাজের স্তরে স্তরে আঘাত করিতেছে, তথন কবিকে আমরা গঞ্জনা করিয়া কথনই বলিব না, আপনি এ বয়সে এ সকল বিদ্রুপের কথা ত্যাগ কার্য়া একটু সৌম্য মূর্ত্তিতে উপস্থিত হউন ; ব্যঙ্গরসের রসিক কবিকে যদি ব্যঙ্গের ক্ষেত্রের গণ্ডা অভিক্রম করিতে বলা হয়, তাহ। হইলে তিনি স্বগৃহ-তাড়িত ও তুর্বল হইয়া পড়িবেন; কবি নিজেই বলিয়াছেন সমালোচক-গণ ডাব নারিকেলে কেন এলাচির গন্ধ নাই এবং গোলাপ গাছে কেন ফল হয় না এक्रग्र क्षे रन ; প্রাপ্তবন্ধ উৎকৃষ্ট হইলেও তাহাতে তৃপ্তিলাভ করিবার লোক তাঁহার। নহেন, আসমান্ হইতে অভাবের স্জন করিয়া তাঁহারা নিন্দাবাদ করিংবন।

আমরা তদ্রপ নিন্দাপ্রিয় নহি। তাঁহার দৃষ্টিশক্তিহীনতার তুঃখ-ঘোষক ভূমিকা পড়িয়া আমাদের মনে হইয়াছিল ভিনি বোধ হয় এবার রঙ্গালয়ের বেশ পরিবর্ত্তন কুরিয়া আসিবেন, এবীর বুঝি কবিতা শুল, নির্মালভাবে তাঁহাকে অভিনশক

করিবেন—আমাদের সে আশা বার্থ ছইয়াছে, কিন্তু ভজ্জন্ত আমন জুঃখিত নহি। बाजित চাটनिই मन कि? आभाषित माहिएछा नानाति छे छे करण लहेंग्रा छूति-ভোজনের আয়োজন চলিতেছে, এ সময় আমরা চাট্নি বাদ দিতে পারি ন:; সাহিত্যের পরিবেশনকারী সরস্থ গী অবগ্যই অমৃতবাবুকে ক্ষণকালের জন্মও ত ড কিয়া লইবেন। विष्ठोधिकाई इंडेक व जिल्डिं इंडेक मूथ किताईवात कोल हाऍनित आयोजन অব্সূত্ই হইবে। কবি ছদিনে তাঁহার বাঙ্গশক্তি বজায় রাখিয়াছিলেন, যে সময়ে অন্ত লোক তাঁহার অবস্থা দেখিয়া চক্ষের জল ফেলিত, সেই সময়েও তিনি হাস্যরস-পটুতা দেথাইয়ছেন, ইহাতে তাঁহার বাহাত্রী আছে। ত্রুগ তাঁহাকে বারংবার খা দিয়া দেখিয়াছে, তাঁহার হাসির উৎস শুকাইয়া যায় কিনা, তাঁহার প্রতিভাকে পাথরে আছড়াইয়া পরীক্ষা করিয়া লইয়াছে—ভাহার বাঙ্গরস থাঁটি কি না। এই বিষম পরীক্ষায় তিনি উত্তীর্ণ হইয়াছেন। অমৃত-মদিরায় যে রসিকতার থর বিদ্যুৎ-দীপ্তি বিচ্ছুরিত হইতেছে, তাহা ছুর্দিনের কৃঞ্মেঘ সংঘর্ষে উৎপন্ন—কিন্তু আমরা ব্লসালয়ে বিদিয়া ইতিপূর্বেও যখন উচ্চ হাস্তধ্বনির সহিত অমৃতবাবুর পরিহাস-শক্তির অভিনন্দন করিয়াছি, তখন আমাদের মনে হয় নাই—সেই সকল হাস্ত स्था मान नष्ट, निविष् प्रथाक দোহन कतिया कवि श्रास्त्र नक्ष कतिया हिलन, তাহা তিনি নিজে না বলিলে আমরা জানিতাম না---

"আমিও লিখেছি ব'সে লাতার শ্বশানে।
'ক্রালাপাণি'—হিন্দ্যানি শ্বেষব্যঙ্গগানে॥
শেষ দৃশ্যে হাসি লিখি বাড়াতে উল্লাস।
সাধের কস্তার গণি শেষ কণ্ঠখাস॥
এক মাত্র সহোদরা রাখিয়া চিতায়।
'বাব্' থানি পরদিন করিয়াছি সায়॥
অমুঞ্জার দেহোপরে কাঁদে পড়ি জায়া।
"যাত্রকরী" ধরে' গড়ি মায়াবিনী মায়॥
শুক্পত্নী পিরিশের জায়া ল'য়ে থাটে।
"তাজ্জব ব্যাপার" থানি থাটায়েছি নাটে॥"

বাস্তবিক তাঁহার কবিতায় কত্টুকু বাঙ্গ ও কত্টুকু কালা তাহা অনেক সময় বুঝিয়া উঠা শক্তা

"তাঁতিরে ডিপুটক'রে, বন্ত বুনে ম্যাঞ্চোরে" পড়িয়া পাঠক হাস্তের প্রথম চোট সাম্লাইয়া লইলে শেষে হয় । মনে একটা বিষাদের ভাব জাগিতে পারে। বস্ততঃ তাহার বাজ অনেক সময় সমাজের প্রতি গাঢ় প্রীতির ছদ্মবেশ, তাঁছাল ক্ষাঘাত পীড়ক নহে, উহা পরিশোধক, তাহা বিশ্বেষের শেল নহে, প্রীতির শিক্ষা, অনেকগুলি রচনা ঢাট্নির মত আপতি তরল বোধ হইলেও তাহাতে পুটকর থাদ্যের উপাদান আছে, এজগু কবির প্রতি আমরা মনে মনে অমুরাগী; কিন্তু সাহিত্যের আগারে আমরা মদের বোতলের আমনানী কথনই সহ্য করিব না। ভারত उत्त ও দাশর্থীর দিন এখন নাই; সে সময় ভাল ছেল কি মন্দ ছিল ভাহা আমরা বলিতে চাই না, কিন্তু অমৃত বাবু নিজে তাঁহাদের দোহাই দিয়া লেখনী ধারণ করিলেও এই সভাসমাজে বসিয়া তোটক ছন্দে আদিরসের বর্ণনা করিতে সাহদী হইবেন না। গে যুগ গিয়াছে, তাহার পটোত্তলন পূর্বক পুনঃপ্রতিষ্ঠা করিতে যাওয়া বুখা; ঈশর গুপ্ত মহাশরের সময় রুচি যেরূপ ছিল, এখন তাহাও নাই, বৃদ্ধ বয়দে সেই প্রাচীন ক্রির উপদন। করিতে যাওয়া তাঁহার পকে বিভূষনা মাত্র। আমাদের প্রাচান সাহিত্যে থাহা ভাল ছিল, তাহা নূতন ভাবে পড়িয়া আন। যাইতে পারে কিন্তু প্রাচীন রুচি এখন আর চলে না, আদালত হইতে তদ্বিরুদ্ধে এথন আইন হইয়া গিয়াছে।

অমৃত বাবুর পুস্তক প্রাচীন কবিগণেক ধরণে লিখিত, বলিয়াই যে আদিরস বর্ণায় তিনি পূর্ব্য স্থারগণের স্থায় সত্য সতাই শীলতার বাতায় করিয়াছেন— আমর। তাহা বলি না; কিন্তু পূর্বকবিগণ যাগ করেন নাই, তিন তাহা করিয়া'ছন—ভাঁহারা নিজের কুৎদা নিজেরা প্রচার করেন নাই, ভাঁহাদের **অগ্রীলভা** काम উপাথ্যান বিশেষে সীমাৰজ ছিল, তাঁহার। নিজের মুথে নিজে কালী মাখির। উপস্থিত হন নাই। নিজের অপরাধ প্রকাশভাবে স্বীকার করিতে পারে ছুই अकाद्रित्र लाक; यिनि भन्नमहःम, जिनि मन्भूर्गत्राभ निष्क नश्च इटें जि भारतन, जाब यिनि हेर। পात्रन তाराक कान् অভिधान অভিহিত करा यात्र!

> "আমি আর ওরুদেব যুগল ইয়ার। विनिन्न माज़ीएक यारे थारेएक विद्यात ॥"

रेजानि क्या यिनि निरिष्ठ भारतन, छाहारक मामता यात्र मठावानी यनिया भूका कत्रिय को, डोहाटक निकिक ठक्लाकाण्य विलिश मत्न कत्रिय। डीहार पूर्व कि

নিকট বংশধরগণের সমক্ষে অপরে যদি কেছ এই কবিতাগুলি পাঠ করে তবে হয়ত তাহাদের মধ্যে কোন সাধুবালকের গওলজায় আর্জিম হইয়া উঠিতে পারে, স্বগৃহের প্রতি এতটুকু দমানবোধ আমরা তাঁহার স্থাম ব্যক্তির নিকট অৰুগ্ৰই প্ৰত্যাশ। করিতে পারি, ভদ্র-সাহিত্যের মর্যাদা লন্ধ-প্রতিষ্ঠ সাহিত্যিকগণেরই বিদ্ধে ভাবে রক্ষণীয়। অমৃত্ৰাবু রঙ্গালয়ের সঙ্গে সংশ্লিষ্ট বলিয়া তিনি নিজ मयक योही निथियाष्ट्रन छोटा अनुमान कता अभितिहाया नष्ट, এই পরিচয়ের कि প্রয়োজন ছিল? তুর্নীতি নিলর্জ ও পর্দাশূন্য হইলে তাহা বীভংদ হইয়া উঠে, এই আত্মঘোষনা তাঁহার নিকট কেহ চাহে নাই। বাইবণ চাইল্ড হেরল্ড কি ভন্তমানে নিজ সম্বন্ধে যাহা লিখিয়াছেন, তজ্জ্য তাঁহার প্রতি সমাজ খড়া হস্ত হইরাছিল। আমাদের মধ্যে যাহারা বড় বেশী অল্লীল গাহিয়াছেন, ভাঁহাদের মধ্যেও কেহ নিজের কথা এরপ ভাবে কহিতে সাহসী হয় নাই। আমাদের রঙ্গালয়গুলি তরুণবয়ক্ষ যুবকদের অপকার কঁরিতেছে, এই অভিযোগ সঠিত্র শোনা ষায়। রঙ্গালয়ের কবি তুহাতে মসী লিগু করিয়া পাপপুণ্যের ব্যৰচ্ছেদ খেখাট মুছিয়া ফেলিবেন, এই আবদার সহনীয় নহে। এই দৃষ্টান্তে ভাঁহার মত সত্যভাষীগণ বঙ্গ-সাহিত্যের একাঙ্গ পুতিগন্ধময় কেচছায় পূর্ণ করিতে প্রয়াসী হইতে পারেন। অ্মৃতবাবুর রচনার অনেক স্থল চিত্তাকর্গক ও কোন কোন বিষয়ে তাহার বিশেষ কৃতিত্ব না থাকিলে আমহা এতগুলি কথা বলিতাম না। বটতদা খুঁজিলে আজও এমন সকল রসিকতাপূর্ণ পুন্তক পাওয়া যায়, যাহা শুনিলে কাণে হাত দিয়া উঠিয়া याइटि इश,—मि नकल পুস্তক উপেকা করা যায়, किन्छ नवालाहा পুস্তকথানি **উপেক্ষণী** प्र नरह।

বিদেশে যাঁহারা নিজের কুৎসিৎ কাহিনী সাধারণের নিকট প্রচার করিয়াছিলেন, তাঁহাদের দৃষ্টান্ত এদেশে অনুসংগীর নহে। আমাদের স্বরুৎ একায়ভুক্ত পরিবারের সামাজিক একটা সন্ত্রম ও মধ্যাদা সাধারণের চক্ষে মর্কান রক্ষণীয়, এ বিষয়ে তাঁহাদের ব্যক্তিগত স্বাধীনতা আমাদের নাই, ৰাক্যা সন্তক্ষে শান্তকারগণের অনুশাসনও সেইরূপ। কিন্তু বিদেশেও যাঁহারা শীর পাপের কাহিনী রটনা করিয়াছেন, তাঁহারা পাপের প্রোত হইচ্ছে অনুসন্ধান করিয়া
ক্ষা অনুতন্ত হলরে সেই সক্ল কথা লিশিক্ষ করিয়াছেন—একল তাঁহারা বাজনীয়—ইছাতে বাহাহ্রী কিছুই নাই। অনুতবার অনেকভানি অতীক্ষান

টেত্রের প্রতি যেন লালসার চকু নিশতিত করিয়া কবিতা লিখিয়াছেন, তাহাতে অমুশোচনার ভাব নাই, এইজস্ম উহা আমাদের নীতিবৃদ্ধিকে দ্বিগুণভর আঘাত প্রদান করে।

পূর্কেই উক্ত হইয়াছে সমৃত-মদিরার অনেকগুলি কবিতা হৃন্দর, উজ্জ্ল ও কৌতুকাবহ। পুন্তকের নাম "অমৃ গ-মদিরা"—কবি সত্য সতাই যেন মদিরা পানে টলিতে টলিতে অনেকগুলি কবিতা লিখিয়াছেল — তাহাতে তাঁহার পাদখলনের অভাব নাই, মুখনিঃস্ত রুচির গন্ধ কতক্টা তীব্র, কখনও তিনি ভক্তিতে গদ গদ কণ্ঠ, কথ্যুক্ত বা তিনি বৈঞ্বের স্থায় বিনীত, পবিত্র ও জঘস্ত, স্থানে নির্বিকারে প্রবেশ করিতেছেন—তাঁহার রচনাবলীর স্থানে স্থানে একটা ঘোর মন্ততার ভাব আছে, তাহা কোন সময় আমাদের প্রীতির উদ্রেক করে, কখনও বিরক্তির ভাব আনয়ন করে। তাঁহার "অমৃত-মদিরা" শীর্ষক কবিতাটিই সর্কাপেকা কৌতুকাবহ, উহাতে পূর্কোক্ত দোষ গুণ উভয়েরই প্রাচুর্য। আছে। উহার কোন স্থান পড়িয়া আমরা কবির লজাহীনতা দেখিয়া লজ্জিত হইয়াছি, আবার কোন স্থানে উহাতে শিশুর मिक्मार्या আছে—मिन्नामित्र क्थात्र श्राप्त এक हो मान्न लान **खान छहा**त्र मर्क्ज বিরাজ করিতেছে। বিনোদিনী নামী অভিনেত্রী সম্বন্ধে নিম্নলিখিত ছত্রগুলি পর্যান্ত আমরা কবিতার অনুরোধে পাঠ করিতে পারি, কিন্তু তদপেকা অধিক অসহনীয়—

কল্পনায় আপনারে গড়ে তিলোভ্যা। আরেস। কি স্র্যামুখী কুন্দ মলে রেমা॥ কথন ছাদেতে বসি একাকী বিরলে। याना जूनि' प्रम जूनि'— 'त्रामिख'त श्राम ॥ কভু নেবু তরুতলে যায় এলোচুলে। ওফেলিয়া পাগলিনী সাজে বনফুলে॥ व्यभोका--नीनात्र हिं। ए जीत धन् धत्र'।"

এই দীর্ঘ কবিতাটিতে অমৃতবাবু শ্বধানে যৌবনের অকৃত্রিম বন্ধুত্ব ও বার্দ্ধক্যের সদম্ভীনতার চিত্রটি আঁকিয়াছেন, ভাহার মধ্যে ব্যঙ্গের ছিটাফোঁটা আছে কিন্তু উহাতে কবির সকরণ অশ্রুই প্রাধান্ত লাভ করিয়াছে, তিনি ব্যথিত হিয়ার যাহা অপুভার করিয়াছেন, ভাহা পড়িয়া আমরা ব্যবিত হইয়াছি। বাল্যের দারিজ্য वर्गनािष्ठ मायथान त्वण की वर्ष इट्याट्ट।

উপসংহারে আমাদের বক্তব্য, যে কোন ব্যাপারই হউক ন। কেন, সংযম তাহাঁকে উন্নত ও মহিমাণীল করিয়া তোলে। কবি নিজেই লিখিয়াছেন, "স্নট মর্কট নয়"— চাঞ্ল্য ও জ্ভগতিই নৰ্দ্ৰের্ প্রাণ, কিন্ত তাহার মধ্যে যে নট সংযমা, গতি-প্রক্রিয়া याहात्र आग्रल, रिन्ट (अह ने । किन अभन अक एक लिपिनाएम-"वाग्रीजात পরিচর, ভীষন জিনাদ নর 👸 বে' বাগ্যীর সংযম আছে, ভিনিই শ্রেষ্ঠ বাগ্যী। বাঙ্গ ' । होश्रामात्र माथा याहात्र এक हे मःयान बाजाम श्रादक, जिनि । अर्थ वामकवि इहेरज

পারেন। এই কবিতাগুলির অনেক ছলে সেই সংযমের অভাব বিশেষ ভাবে লক্ষিত হইল; মনে যে তর্ম আসিয়। আঘাত করিল, তাহাতেই ভাসিয়। চলিলে কবিতা দেবী অকুলে হারা হইয়। পড়েন। এই গ্রন্থগানির অনেক স্থলর ভাব ও বিচিত্র করনা আমাদের মনোরপ্পন করিয়াছে কিন্তু কবি তাঁহার উদাম প্রবৃত্তির মুখের রাশ ছাড়িয়া দিয়াছেন। এই বিচিত্র যানারোহন এজস্তু আমরা নিরাপদ মনে করি না ইহা আমাদের স্বাভাবিক লজ্জাশীলতা ও সম্বন্ধ্যর ভাব দলন করিয়া কল্ষিত রাজ্যে লইয়া যে আমাদের বাভাবিক লজ্জাশীলতা ও সম্বন্ধ্যর ভাব দলন করিয়া কল্মিত রাজ্যে লইয়া যে কুমার তাহা কবিতার স্বন্থান বলিয়া কথনই বরণ করিয়া লইব না; বাণী যদি তাহার কোন আত্বর ছেলের স্লেহে তহিকে তত্দুব পর্যান্তও অনুসরণ করেন তথাপি আমরা অনুসমন করিতে সাহসী হইব না। অমৃত্বাবু এবার আমাদিগকে সম্ধিক পরিমাণে মদিরাই উপহার দিয়াছেন। আশা করি তিনি বারান্তরে অমৃত উপহার দিয়া স্থনামের সার্থকতা করিবেন।

"अप्र- माणितात निम्निथि किरिश्शित আছে: — नत्रयठी, अक्षित, निरममून, विद्यनाथ, नान्नी, क्षाज्दात थित. जिल्लीत वान्त्रमञ्जी, मञीठ ममार्जत निमञ्जल, कानी अमन वार्त्र, प्राठत आप्रत, श्रीमा वीत्राजना, कानिका, ह्यां, क्षाकाञी, तवो क्रनाथ गेर्त्र, अिष्टिक प्रवात, माहाशिनी, मनिवादतत्र वात्रदना, काक, नवोनिक मन, लाकनाथ रेमज, मन, हान्नाप लोकि, णालत उद्य, दिक्वकि, श्री मनन्त्राहन, श्री श्री शोतिज्ञानम्, वानिविध्या, कानी रहाज, निमाथ, हित्रपान, यूग्रनमञ्ज, प्रान्तीत कानीकृष श्री कृत, रहमहत्मत्र मूलि, मश्रीत, वर्त्रत्र आत्र वक तक, रकाथा शिला वित्नापिनी, नगदत्र विवाह, ननी, सप्, हाजगर्णत कर्जा, विद्याल अवात्र विवाह, स्त्री, सान, किर्म मन शाह, वाांच एक महाकारा, द्वार-विद्याला, वित्रह, श्री मठोत्र अख्निता, प्राप्तात, क्रियला, क्रियल, श्री क्रियला, प्राप्तात, क्रियला, क्रियला, प्राप्तात, क्रियला, क्रियला, म्यू क्रियल, प्राप्ता, क्रियला, क्रियला, म्यू क्रियल, प्राप्ता, महाताक नरतम्बरूष, अव्याप, म्यू क्रियल, प्राप्ता, महाताक नरतम्बरूष, अव्याप, महाताक नरतम्बर्य, अव्याप, महाताक नरतम्बर्य, अव्याप, महाताक नरतम्बर्य, अव्याप, महाताल, नर्वर्य, हेसी भना, नर्वर्य, हेस्साल, नर्वर्य, हेस्साल, नर्वर्य, हेस्साला, नर्वे, हेस्साला, नर्वर्य, हेस्साला, नर्वर्य, हेस्साला, नर्वर्य, हेस्साला, नर्वर्य, हेस्साला, न्यू हेस्साला, न्यू हेस्साला, हेस

श्रीमीरनमहस् (मन

### আমার লাগিয়া।

তোমরা বাছিয়া নাও,
যাহা কিছু ভাল পাও,
পরস্পর বিভাগ করিয়া;
যাহা কিছু পরিতাপ,
যাহা কিছু অভিশাপ,
রেথে যাও আমার লাগিয়া।

দক্ষিণা মলয় বায়ু,
বাড়ে যাহে শরমায়ু,
লও বুকে তোমরা পাতিয়া;
দক্ষ বায়ু সাহারায়
পরাণ জ্বিয়া যায়
তাই রে'থ আমার লাগিয়া!

নক্ত্ৰ-থচিতাকাশে,
স্বিমল চাঁদ হাসে,
দে'থ তাহা তোমরা চাহিয়া;
আমানিশা অন্ধকার,
মেঘারত চারি ধার,
থাক্ তাহা আমার লাগিয়া!

চর্কা চোষ্ম লেহ্ন পের,
তামরা সকলে থেও,
স্বর্ণ থান্টে থাকিও শুইয়া,
পরিত্যক্ত ভন্ন ছাই,
যাহে কিছু কাজ নাই,
তাই রেখ' আমার লাগিয়া!

স্থ শাস্তি ভালবাসা,
নিতি নব নব আশা,
থাক সব তোমরা লইয়া,
ঘণা কষ্ট অনাদর,
যাহে হঃথ বছতর,
রেখো তাই আমার লাগিয়া!

প্রশংসা তোমরা লও, যেই থানে যাহা পাও, সদা অতি যতন করিয়া; লোক নিন্দা অপবাদ, নাহি যায় কারো সাধ, থাকু তাই আমার লাগিয়া!

অনাদ্রাত স্বকুমার, স্থবাদ কুস্থমহার, পর সবে জীবন ভরিয়া; থাক স্থথে সকলে বাঁচিয়া; অপবিত্র অপকৃষ্ঠ, चार्ट लाग रुप्र नहे, রেখোঁ তাই আমার লাগিয়া।

ना लाश ऑंहफ़ घा, कण्टिक ना फूटि था, পড়ুক অশনি মাথে, ক্ষতি নাহি কা'রো তা'তে, আমি যদি যাই গো মরিয়া ৷

স্বর্গ-প্রয়াণ রচয়িতা---

প্রীভুবনমোহন দাস গুপ্ত।

## (याम्दलय जगढ विखान ठर्छ।

বিগত মাদে আমরা দেখাইয়াছি জ্যোতিবিজ্ঞানে মোদ্লেমগণ কতদূর উন্নতি করিতে পারিয়াছিলেন। এক্ষণে অঞ্জরা দেখাইব, তাঁহারা অভাভ বহুশাস্ত্রেও বহু সভ্যজাতির কতদূর অগ্রনী ছিলেন।

মোসুন পণ্ডিতগণই পদার্থবিদ্যাকে একটী ধারাবাহিক শাস্ত্রে গঠিত
করিয়া তুলিয়াছিলেন, ইহার যংকিঞ্চিত আভাস
বৈজ্ঞানিক পরীক্ষা
প্রেই প্রদন্ত হইয়াছে। বৈজ্ঞানিক পরীক্ষা
প্রণালীর (Experimentation) উদ্ভাবন করিয়া
মোসুনগণই আধুনিক হৈজ্ঞানিক উন্নতির পথ সরল করিয়া রাখিয়াছিলেন। এতদ্ভিন্ন উদ্ভিদ্বিতা, ভূবিন্যা, রেসায়ন, চিকিৎসাশাস্ত্র, প্রাণিবিতা, ইতিহাস প্রভৃতি জনসাধারণের ঐকাস্তিক যত্নেও অনুশীলনে
অসাধারণ উৎকর্যলাভ করিয়াছিল।

প্রাচীন গ্রীকেরা বীজগণিতের যে হুই একটা প্রাথমিক হত্র অবগত ছিলেন, তাহা কথনও উচ্চগণিতের অন্তর্ভুক্ত হয় নাই। কিন্তু ইন্লামের শিশ্বগণ বীজগণিতের উচ্চাঙ্গীয় হত্র রাশি রাশি আবিষ্কার করিয়া উক্ত শাস্ত্রের এত উন্নতি সাধন করিয়াছিলেন যে, তাঁহাদিগকেই উহার আবিষ্কার-প্রশংসা প্রদান করা যাইতে পারে।\* থলিফা মাস্তনের শাসন সময়ে (৮১৩-৩৩) মোণ্ডেম পণ্ডিতগণ দ্বিঘাতি সমীকরণের (Equations of the second

<sup>\*</sup> কার্রের সাধারণ পাঠাগরে ২০ লক্ষের অধিক এন্থ সংগৃহীত ছিল। তন্মধ্যে ৬০০০ এন্থ কেবলমাত্র জ্যোতিষ ও গণিত শাস্ত্র.বিষয়ক।

degree) আবিন্ধার করেন। ইহার কিছুকাল পরে তাঁহারাই আবার চাতুরান্ত্রিকস্মীকরণ (Quadratic Equation) দ্বিঘাতি ও চাতু-ও দ্বিসাংজ্ঞিক সূত্ৰ (Binomial Theorem) রাজ্রিক সমীকরণ, আবিদার করিয়া উক্তশাস্ত্র উচ্চগণিতভুক্ত করিয়। ছিদাংজ্ঞিক সূত্র। তুলেন। আধুনিক পাশ্চাতা বীজগণিতের উৎপত্তি যে আরবজাতির অভার্স্তরে, উহার আরবীয় নামই তাহার প্রমাণ (Algebra)। জ্যামিতি, পাটীগণিত, চক্ষ্'বজ্ঞান (Optics), যন্ত্রবিতা, Mechanies) প্রভৃতি মোসুেম-হন্তেই প্রভূত উন্নতি প্রাপ্ত হইয়াছিল। বার্ত্তালক ত্রিকোণমিতিতে (Spherical Trigonometry) মোপুমজাতি ভিন্ন অপর বার্ত্তলিক ত্রিকোণ-কাহারও আবিষ্কার-সত্মাধিকার নাই। ত্রিকোণ-মিতি। মিতির সাইন, কোসাইন প্রভৃতি সংজ্ঞার জন্মদাতা যে একমাত্র মোসুেম পণ্ডিতগণই, তাহা পূর্কেই প্রদর্শিত হইরাছে। ভুগোলশান্ত্রেও তাঁহারা বড় কম উৎকর্যের পরিচয় প্রদান করেন নাই। কাহারও কাহারও মতে উক্তবিছা ভূগোল। ं अथम भारमुमगर वह आविकात। देव्रम इछकान, মাকরিজি, ইদ্ভাথরী, মদ্টদী, বেরুণী, কুণী, ইদ্রিদী, আবুলফেজা প্রভৃতি শত শত পণ্ডিতের গ্রন্থাবলী ফুইতে আমরা মোদুমজাতির ভৌগলিক জ্ঞানের পরিচয় প্রাপ্ত হই। ইউরোপে যথন "পৃথিবী সমতল" এই বিশ্বাস বদ্ধসূল হইয়া গিয়াছিল, এবং জীবস্ত দগ্ধ হইবার ভয়ে কোন বিজ্ঞ এই বিশ্বাদের বিপরীত কোন অভিমত প্রচারে সাহসী হইত না, তথন মোসেমরাজ্যের বিভালয় সমূহে ভৌগলিক অধ্যাপকগণ ভূগোলক (Globes) লইয়া ছাত্রেন্দকে ভূগোলের পাঠ প্রদান করিতেন।

রদায়ন শান্তের আবিষ্কার ও উচ্চবিজ্ঞানে পরিণতি যে মোদেম

পণ্ডিতগণের দ্বারাই সম্পাদিত হইয়াছিল, এ কথা সর্ববাদিসমত।
আধুনিক রসায়নশাস্ত্রের একমাত্র স্থাপয়িতা যে 'বৈজ্ঞানিক পণ্ডিত
আবুমুসা জাবর, একথাও কাহারও অস্বীকার
রসায়ণ।
করিবার উপায় নাই।

তাহার পর চিকিৎসাবিজ্ঞান। "ভৈষজ্যশাস্ত্র ও অস্ত্রচিকিৎসা প্রণাত্রী বে মোসুমগণের হস্তে কভদূর উন্নতি লাভ করিয়াছিল, তাহার ইয়তা नारे। यिष इंडेनानी চিকিৎসকগণ ভেষজশান্তে যথেষ্ঠ ব্যুৎপন্ন ছিলেন, তথাপি মোদুেমগণ উহাতে যেরূপ উৎকর্ষলাভ করিয়াছিলেন, ভাহার সহিত প্রাচীন শাস্ত্রের তুলনাই হইতে পারে না। চিকিৎসা-বিজ্ঞান। অহিবিতা-সম্বলিত দেহতত্ত্ববিজ্ঞানের (Anatomy and Anatomical Physiology) অভাবে হিন্দুর অঙ্গহীন আয়ুর্বেদ-শাস্ত্র ত তাহার সন্মুথে ভিষ্ঠিতেই পারে না। আধুনিক সভ্যজগতের ঔষধাগার স্থাপন প্রথা (Dispensary) মোদুমগণই প্রথম উদ্ভাবন করেন। রাজ্যের 'যাবতীয় সাধারণ ঔষধাগারের **खेय**धाशात्र । উপর রাজপুরুষেরা স্বয়ং কর্তৃত্ব ক্রিতেন। প্রচলিত ঔষধাদির মূল্যাদিও রাজকীয় নিয়মে নিরাপিত হইত। সাধারণ পরীক্ষা গ্রহণ করিয়া উত্তীর্ণ ছাত্রগণকে চিকিৎসাব্যবসায়াবলম্বনের অমুমতিপত্র প্রদত্ত হইত। এমন কি ঐরপ অমুমতিপত্র ব্যতিরেকে কেহ কম্পাউণ্ডারিও করিতে পাইতেন না। মোসেম চিকিৎসালয় ও ঔষধালয়গুলি "বিমারিস্তান" বা "দার-উশ-শাকা" নামে অভিহিত হইত। অস্থিবিতার তুই একটা মৌলিক তত্ত্ব গ্রীকেরা অবগত ছিল। কিন্তু মোসুেম চিকিৎসকগণ ভৈষজ্যের সঙ্গে সঙ্গে অস্থি-অস্থিদ্যা। বিছাও একটা স্থদম্বদ বিস্তৃত বিজ্ঞানে উন্নীত क्रियाছिलन। भारत्य हिक्टिन्नकान एय नकन टेड्यक्राहिकिट्ना, আন্ত্রচিকিৎসা ও অস্থিবিতা বিষয়ক অসংখ্য বৃহৎ বৃহৎ গ্রন্থ প্রণায়ন

করিয়াগিয়াছেন, এবং যে সকল গ্রন্থ উত্তরকালে ভিন্ন ভিন্ন ইউরোপীয় ভাষায় অমুবাদিত হুইয়া আধুনিক ইউরোপীয় চিকিৎসা প্রণালীর ভিত্তি স্থাপন করিয়াছিল, ভাহার বিস্তৃত বিবরণ প্রদান করিতে গেলে একটী প্রকাণ্ড গ্রন্থ হইয়া পড়ে।

গ্রীকদিগের অসম্পূর্ণ উদ্ভিদবিজ্ঞান মুসলমানেরাই সম্পূর্ণ করিয়াছিলেনু। রগ্ধণ রাণি নৃতন উদ্ভিদের নৃতন ধর্ম
পরীক্ষাদির দ্বারা আবিদ্ধার করিয়া উদ্ভিদ্ধিজ্ঞানে
তাঁহারা নবযুগ উপস্থিত করিয়াছিলেন। ছাত্রগণকে প্রমাণ পরীক্ষাদির
দ্বারা উদ্ভিদ্ধিতা শিক্ষা প্রদানার্থ বোগদাদ, ফেলু,
কায়রো, কর্দভা প্রভৃতি বিজ্ঞান-কেল্লে যে সকল
বন্ধবিস্থৃত উদ্ভিদ্ধ কানন (Botanical Gardens) স্থাপিত ইয়াছিল,
তাহা হইতেই যে উত্তরকালে পাশ্চাত্য পণ্ডিতেরা উদ্ভিদ্বিজ্ঞান শিক্ষা
করিয়াছিলেন, এবং আধুনিক Botanical Garden Systemএর
আদর্শ গ্রহণ করিয়াছিলেন, তিদ্ধিয়ে কোনও সন্দেহ নাই।

পাশ্চাত্য প্রাণিতস্থবিদ্ পণ্ডিত Buffonএর ৭০০ বংসর পূর্বের প্রাণিতস্থ।

ইস্লাম-জগতে মহাত্মা অল্দেমরি আবির্ভূত হয়েন। প্রাণিজগতের এক প্রকাণ্ড ইতিহাস (Zoology) লিখিয়া ইনি অক্ষয়কীর্ত্তি রাশিয়া গিয়াছেন। ভূবিভায় (Geology) মোসুমগণ বিশেষ বুংপত্তিলাভ ক্রিয়াছিলেন। "ইল্মে তশ্রিহ্-উল্-আরজ্ঞ অর্থাৎ "ভূগর্ভের তত্ব" অথবা "পৃথিবীর দেহ-বিজ্ঞান" এই নামে ভূবিভারে অনুশীলন হইত।

মোসুমগণের স্থাপত্য-শিল্প ও প্রস্তর-গৃহ-নির্মাণ-কুশলতা দম্বন্ধে বিস্তারিত আলোচনা নিপ্রাঞ্জন প্রাচ্য ও প্রতীচ্য শিল্প ও স্থাতি। উভয় ক্ষাতে তাহার অনুফুক্রণীয় নিদর্শনসমূহ

জ্ঞাপি অল্লেদী শিরে দণ্ডায়মান রহিয়াছে, এবং **মানবসমাজতে** স্তুত্তিত ও চমৎকৃত করিতেছে।

চিত্রবিতা ও ভাদরবিতার অলোচনা কোরাণে নিষিদ্ধ থাকার

ক্রিলামিক জগতের প্রথমান্নতিকালে তাহাতে

চিত্রবিন্যার নিষেধ।

বিশেষ কিছু উংকর্ষলাভের কথা শ্রুত হওয়া যার
না। তদানীস্তন মানবদমাজে অন্ধ্রুপোত্তলিকতা এতাদৃশ স্থায়ী প্রভাব

বিস্তার করিয়া বিদিয়াছিল যে, ইহুদীয় ও গ্রীপ্রধর্মের কঠোর অনুশাসনে

তাহার চিরনির্বাদন ব্যবস্থা থাকা সম্বেও সে অনায়াসে উক্ত ধর্মাবলম্বীগণের মধোই আপন স্বর ভোগ দখল করিয়া আসিতেছিল।

তাই পৌত্রলিকতার মূলচেহদ মানসে তৎসংশ্লিষ্ট চিত্র ও ভাদরবিভার

অনুশীলনও ইস্লাম একপ্রকার নিধিদ্ধই করিয়া দিয়াছিল।

কিন্তু জ্ঞান ও সভাতাবিকাশের দঙ্গে দঙ্গে উক্ত নিষেধাজ্ঞার
উদারার্থ সমাক্ উপলব্ধ হওয়া মাত্র মোসুেমগণ
চিত্র ও স্থপতি বিভার উৎকর্ষসাধনে যত্রবান
হইয়াছিলেন। ক্রমে থলিফাগণের প্রানাদ, ওমরাহগণের বাসভবন
প্রভৃতি স্থনিপুগ শিল্পাগণ কর্তৃক চিত্রশোভার স্থাচিত্রিত হইতে আরম্ভ
করিল। কিন্তু পূর্বে হইতেই ভাষরবিভার অনুশীলন নিবিদ্ধ থাকায়
মোসেমগণ প্রাকৃতিক লতাপ্রত্র-চিত্রান্ধন বিভায় মনোযোগী হইয়া ক্রমে
যে অসাধারণ স্থভাব-স্থানর অভিনব আদর্শে উপনীত হইয়াছিলেন,
ভাহা পৃথিবীর নিকট এতদিন সম্পূর্ণ অপরিজ্ঞান্ত ছিল। পাশ্চাত্যপণ্ডিতগণ তাহাকে Arabesque নামে অভিহিত্ত করিয়া, তাহার
অত্লনীয়ভার মর্য্যাদা রক্ষা করিয়াছেন। মোসেম-নির্ম্মিত তুর্গ, প্রানাদ,
গৃহ, মস্জিদ্ প্রভৃতির ভয়াবশেষ হইতেও অভাপি যে সকল অভ্তুত কারকার্যের নিদর্শন প্রাপ্ত হওয়া যায়, তাহা হইতেই সে কালের মোসেমগণের স্বাভাবিক সৌন্দর্যাবৃদ্ধির বিশেষ্ত্ কির্থ পরিমাণে উপলব্ধি হয়।

সঙ্গীতশান্তও মুদলমান জগতে কোন ক্রমে উপেক্ষিত হয় নাই।

'বিথ্যাত মুদলমান গায়ক ও বাদকবৃন্দ সঙ্গীত

দঙ্গীত।

বিষয়ক বহু গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন। প্রাচীন
বাভাযন্ত্র সমূহের প্রভূত উন্নতিসাধন ও নূতন নূতন বহুবিধ বাভাযন্ত্র
আবিষ্কৃত হইয়া সঙ্গাতশান্ত্রের অশেষ উৎকর্ষ সাধিত হইয়াছিল।

শারবীয় পণ্ডিতেরা দিঙ্নির্গ যদ্ভের আবিদ্ধার করিয়:\* জ্ঞানাবেষণ এবং বাণিজ্ঞারাপদেশে জলপথে পৃথিবী পরিভ্রমণ করিয়াছিলেন।
তাঁহারা আট্লাণ্টিক মহাসাগরে প্রবেশ করিয়া স্ব্রবর্তী আজার্স দ্বীপপুঞ্জের আবিদ্ধার করেন;
এবং নব-পৃথিবী আমেরিকাও তাঁহাদিগের নিকট অপরিজ্ঞাত ছিল না।† দিগ্দিগন্ত ভ্রমণ করিয়া আরবীয় পরিবাজকরন্দ অসংখ্য ভ্রমণ-বৃত্তান্ত বিষয়ক গ্রন্থ লিথিয়া গিয়াছেন। নানা দেশীয় ইতিহাসও আরবীয়েরা প্রণয়ণ করেন; তাঁহাদিগের ভিতর পৃথিবীর ইতিহাসেরও অভাব ছিলনা। ইতিহাস চর্চ্চায় আরবীয়েরা পৃথিবার মধ্যে সর্ক্রোচ্চ স্থান অধিকার করিয়াছেন।

পরিশেষে শিল্প ও বাণিজ্যের কথা বলিয়া এই প্রবন্ধের উপসংহার করিব।‡ সোসুমগণ সমগ্র রাজ্য স্থদীর্ঘ প্রণালী-শিল্প ও বাণিজ্য। জালে আচ্ছের করিয়া বাণিজ্য ব্যবসায় এবং কৃষি-

<sup>\*</sup> চীন দেশেই বোধ হয় প্রথম আহিষ্কার হয়। See C. R. Markham's History of Persia. ভা. স.

<sup>†</sup> মোসুম নাবিকেরা দশম শতাদীতে আমেরিকা আবিদ্ধার করেন। কিন্তু তথন স্বরাজ্যে নানারূপ গোলযোগ উপস্থিত হওয়ায়, তথায় উপনিবেশ স্থাপনে কেহ মনোযোগী হয়েন নাই।

কিন্তু বৌদ্ধ পরিব্রাজকগণ ৫ম শহাকীতে আমেরিকা আবিদ্ধার করেন। ভা, সা,

<sup>‡</sup> পাঠকবর্গ স্মরণ রাগিবেন যে, মোদ্দেম জগতে যতগুলি বৈজ্ঞানিক পণ্ডিত জন্ম-গ্রহণ করিয়াছিলেন, এবং যতগুলি গ্রন্থ তাঁহাদিপের ছারা রচিত হইছাছিল, ডাহার

ক্রার্য্যের অপরিদীম উৎকর্ষ সাধন করিয়াছিলেন। অধঃপাতিত স্পেনের হানে স্থানে অত্যাপি যে সকল বহুবিস্তৃত প্রান্তর অনুর্বর মরুভূমির দশা প্রাপ্ত হইয়াছে, মোদুেম শাসনাধানে তত্তৎস্থান অসংখ্য কুস্তমকুঞে, দ্রাক্ষানারঙ্গ-কাননে, ধান্ত, চিনি, তুলা প্রভৃতি নিত্য প্রয়োজনীয় ফসলে এবং সহস্র সহস্র বিস্তৃত শিল্পাগারে পরিপূর্ণ ছিল। ভূগর্ভ উদ্ঘাট্টিত করিয়া মোসেমগণ তাম, লোহ, পারদ, গন্ধক প্রভৃতি ধাতু দ্ব্যের বিশাল বিশাল খনির আবিষ্ণার করিয়া লাভবান হইতেন। কর্দভার নিপুণ শিল্পী নির্মিত স্থচিত্রিত বস্ত্র, মার্সিয়ার পশমী শীতবস্ত্র, গ্রাণাড়া, অল্জেরিয়া, সেভিলা প্রভৃতি বিখ্যাত নগরোৎপন্ন বহুমূল্য রেশম, টলেডোর ঐম্পাতিক ও হৈম পদার্থ, সলিবা-উৎপন্ন স্থলর কাগজ, এত छित रेठनमूर পাতा नि, लोर, • ठर्म প্রভৃতি মোসেম শিল্পক লার অতুলনীয় নিদর্শন পৃথিবীর সক্ষানে বিশেষরূপে সমাদৃত হইত। মালাগা, কার্থাজেনা, বার্সিলোনা, ফাদিজ প্রভৃতি প্রসিদ্ধ বন্দর পৃথিবীর বাণিজ্য ব্যবসায়ের কেন্দ্রস্বর্ন ছিল। "পরিশ্রমই সংসারের প্রধানতম কর্ত্তবা," ইদ্লাম প্রচারক মহাপুরুষের এই উপদেশ বাণী জলম্ভ অকরে হৃদয়ের স্তরে স্তরে সফিত করিয়া মোদুেমগণ তীহাদিগের কর্মবহুল জীবন অতিবাহিত করিতেন। তাঁহাদিগের সহস্রাধিক বাণিজ্যপোত পত পত निनाम अर्फाटक विश्विष्ठ পতाका थियो উड़ाइया आहेला छिक ও প্রশান্ত মহাদাগরের বক্ষবিদারণ পূর্বক বাণিজ্যব্যপদেশে অর্দ্ধভূমওল প্রদক্ষিণ করিয়া বেড়াইত। এই সকল বাণিদ্যাপোতে আরোহণ করিয়া ইব্নে বাতুতা প্রামুখ পরিব্রাজকগণ দূর দূর দেশ ভ্রমণ করিয়া

সহস্রাংশের একাংশও আমরা এ প্রবন্ধে উপ স্থত করিতে সক্ষম হই নাই। তদানীস্থন উন্নতি ও সভাতার একটা ক্ষীণ অভাস মাত্র প্রদান করাই আমাদিগের উদ্দেশ্য।

কাররোর সাধারণ পাঠাগারে ২০ লক্ষেরও অধিক গ্রন্থ সংগৃহীত হইয়াছিল। ভন্মধ্যে ৬০০ গ্রন্থ কেবলমাত্র জ্যোতিষ ও গণিতশান্ত বিষয়ক। নব নব নেশের নৃত্নতর আচার বাবহার, রীতিনীতি, শাসন, বাণিজ্ঞা, শিরজ-খনিজ-পদার্থ, জনবায়্, প্রাকৃতিক বিবরণ প্রভৃতি প্রকাশু প্রকাশু গ্রন্থে লিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন। বাণিজ্যে এবং দেশলমণে প্রোৎসাহিত করণার্থ নানাদেশীয় ভৌগলিকতথ্য, সামুদ্রিক বিবরণ, নির্পেদ গন্তব্য পথ, প্রভৃতি বিবয়ক বিশ্বরণ আলোচনা রাজকীয় কর্তৃ-

বা ণঞা বিষয়ক নাময়িক পতা। বাধীনে প্রাণারিত সাময়িক পত্রসমূহে প্রকাশিত হটত। তদানীস্তন মোসুমে সভাতা ও উন্নতির এতদপেকা অধিকতর স্থুপান্ত পরিচায়ক আর কি

#### रुटेटल भारत ?

যোদ্যেমগণতের এহেন মহোনতির সময়ে স্ত্রী-শিক্ষার বিস্তার मश्रक्त पृष्टे এक है। कथा · এ इं । व नि व ल ल ल ज ज ज ज था किया যাইবে। সভ্যতা-গোরবক্ষীতা আধনিক ইউ-ন্ত্ৰীশিক।। রোপীয়া অথবা মার্কিন মহিলা-বুন্দর উচ্চশিক্ষার াবস্থা দেখিয়া কেহ যেন মনে না করেন যে, জগতে বুঝি এরূপ উন্নতি এই প্রথম। আজ সহস্রাধিক বর্ষ পূর্বের মোসুেমর্মণীগণ ইহাদিগের অপেকা কোন বিষয়েই হীন ছিলেন না, বেশীর ভাগ তাঁহাদিগের (Legal Status) অনেক উন্নত ছিল। পুরুষ দিগের সহিত সমভাগে তাঁহারা জ্ঞানামূণীলন করিতেন, এবং পুরুষ্ণিগের সহিত সমান উৎসাহে তাঁহারা উৎসাহিতা হইতেন। তাঁহাদিগের জন্ম ভিন্ন ভিন্ন বিভালয় ও পুস্তকাগার স্থাপিত হইত; সাহিত্য, বিজ্ঞান, দর্শন, স্মৃতি, গণিত,— শর্কবিধশান্তে তাঁহারা যথেচ্ছ পাণ্ডিতা লাভ করিতেন; এবং প্রকাশ্র বক্তাদিও প্রদান করিয়া পুরুষের সহিত এনবোগে তাঁহারা তদানীস্তন অভচ্মিত গোসেম সভাতাশৈলে বিহার করিতেন। মহিধীরা, রাজ-कुशाबोत्रा, अमत्राहगः पत्र धनणालिनो जीपतिष्ठानतः -- मकलाङ व्यापनाणन मिक ज अर्थ श्रका ७ श्रका ७ विद्यालय, श्रुकालय, हिकि एमालय, अर्थालय,

অনাথাত্রাশ্রম প্রভৃতি স্থাপনে উৎসর্গ করিয়া যাইতেন। মোসেম-রমণীরন্দের বিজ্ঞাংসাহের সহিত পৃথিবীর অন্ত কোন জাতীয় রমণীর বিজ্ঞাংসাহের তৃশনা হইতে পারে না।—মোসেমসভ্যতা এতই উচ্চেউথিত হইয়াছিল!

এহেন আধুনিক সভাতার জন্মদাতা মোসুমগণ যদি পূর্বেক্র-ष्टा किताल्य, धवः পश्चित्य खाःम्, এই इहे श्रात বাধা বিল্ল ও তাহার প্রথম উভামে বিফল মনোর্থ হইরা ভগ্নোংসাহ পরিণামা ना रहेएजन, তाहा रहेएल সमश हेह द्वांभ छाहा-দিগের একছত্র শাসনাধীনে আসিতে পারিত; এবং যে অপ্রতিহত-বেগ-উন্নতিস্ৰোত পেেনের মধ্যবুগকে পৃথিবীর ইতিহাসে অভিতীয় বলিয়া চিহ্নিত করিয়া রাখিয়াছে, সমগ্র ইউরোপ সেই স্রোতে বহু শতাকী পুর্বেই পতিত হইয়া জগতের ইতিহাস সম্পূর্ণরূপে পরিবর্ত্তিত করিয়া দিতে সক্ষম হইত। তথাপি, উপযুঁপির এতগুলি শত্রু কর্তৃক নিম্পোষিত, পর্যুদন্ত ও হীনাঙ্গ হওয়া সত্তেও, যথাবশিষ্ঠ মেইসুম সভ্যতার ভগ্নাবশেষ জগতের সমুথে যে স্মহান আদর্শ সংস্থাপিত করিয়া গিয়াছে, সেই টুকু লইয়াই আজ পাশ্চাত্য জগতের এত গৌরর ও এত অহফার !—আর বিধাতা যদি তাঁহার এই সকল কোতুক নিক্ষেপিত ধ্বংসকুশল মহাবজ্ঞ সর্বরণ করিয়া যাইতেন, তাহ্ন হইলে পৃথিবা এতদিনে জ্ঞান ও সভ্যতায়

আজ যদিও কালপ্রভাবে মোসুমেজাতির অবস্থা শোচনীয়, আজ
বদিও মোসুমেগণ আপনাদের উন্নতি পরের হস্তে দিয়া, পরের অবনতি
সমং গ্রহণ করিয়া সহস্তগঠিত শিষ্যজাতির চরণতলে আপনি দলিত
ইইয়াও নিশ্চিস্তমনে কাল্যাপন করিতেছেন, আজ যদিও ইস্লামলক
সভাতা-গৌরবে অন্ধ হইয়া খ্রীষ্টানগণ আপনীদের জ্ঞানগুরু ও উন্নতিঃ

যে কত দূর অগ্রসর হইতে পারিত, কে তাহা কল্পনা বলে স্থির করিতে

भारत ?

পথ-প্রদর্শক মোসেমজাতিকে লাঞ্ডিত ও সেই ইস্লামকে তীব্র উপহাস-বাণে বিদ্ধ করিয়া রঁপ করিবার অবসর পাইয়াছেন, তথাপি, স্থপ্ত সিংহ ষে আবার এক দিন জাগরিত হইয়া তাহার পূর্বপুরুষ-সংস্থাপিত বিশাল জ্ঞানরাজ্যের সিংহাসন চরিত্রবলে পুনর্ধিকার করিতে সক্ষম हरेदि ना, अभन कथा एक विनाउ भदित !\*

बीइँग्मां जुल इक्।

# উত্তরায়ণে গঙ্গান।

র্দ্ধান সহরের পদতল ধৌত করিয়া বাঁকা নদী ক্ষাণকলেবরে নাচিতে নাচিতে যেখানে গ্র্মী সলিলে আত্মসমর্পণ করিরাছে সেই সঙ্গমন্থলের অনতিদূরে নাদাই নামক একটি কুদ্র গ্রাম আছে। গঙ্গাতীরের এই শান্ত ক্ষুদ্র পল্লীগ্রামটি প্রায় বার মাসই নীরবভার মধ্যে थाकिया नगरम नगरम एक आ९ (यन क्रांशिया उट्छ। वांक्नी, यांग, मभर्तः, উত্তরারণ প্রভৃতি উপলক্ষে অসংখ্য যাত্রী এই নাদাইয়ে সমবেত হইগা গ্রামটিকে এক দিনের জন্ম ব্যতিবাস্ত করিয়া তোলে।

আজ উত্তরায়ণে নাদাইয়ে বড় জাক। শত শত যাত্রী শত শত **লোকানে** কলরব কার্য়া ঘুরিয়া বেড়াইতেছে। হানে স্থানে কপি, क्मनात्नव, मन्द्रेस्टित छ्रभ माजारेया वित्क्ला याजीनिश्त हिख আকর্ষণ করিতেছে। কত সনোহারীর দোকান, কাপড়ের দোকান, : थावादतत (माकान, शॅफित (माकान! नमश-मिन-वाभी এकहा

<sup>\*</sup> ध्वक्षि माननीय अष्टिम् रेमग्रम आभीत आंली कृष्ठ The Spirit of Islam ; ভাগৰনে লিখিত।

উত্তেজনা, কলরব, চাৎকার ও বিবাদের মধ্যে আপনাদিগকে স্থাপিজ দেখিয়া পল্লীবাসীরা বড়ই আনন্দ অমুভব করেন। আমাদের যাত্রীগণ মধ্যরাত্রা হইতে চলিতে আরম্ভ করিয়া রাত্রে ৬।৭ জোশ পথ অতি-বাহন করিয়া প্রাতে গঙ্গাতীরে উপস্থিত হইল ও সকলে প্রথমে "গঙ্গা গঙ্গা' বলিয়া ধুলাপায়ে গঙ্গাজল স্পর্শ করিয়া চড়ার উপর একটা পরিষ্কৃত স্থানে সকলের মোট এক স্কার্যায় রাথিয়া হাট করিতে গৈল। অনস্ত ও জয়রাম দেই মোট আগলাইয়া বদিয়া রহিল। 🚟 ীণণ প্রস্থান कतिल জग्न ताम वर् नाभिया छिठिल। অनस्टक वालन 'नामा, मिथ দেখি আম্পদা! আমরা মেয়ে সামুষের মতন বসিয়া রহিলাম আর মেয়ে গুলা পুরুষের মত হাট করিতে গেল।"

অনম্ব হাসিয়া বলিল "ভাই রাগিস কেন ? এই রাত্রে ছয় সাত ক্রেশে পথ হাঁটিয়া আদিলাম পা ব্যথা করিতেছে, কে এখন হাট করিতে গিয়া ঘুরিয়া মরিবে ? আবার হটি করিলেও ওদের পছন্দ হইবে না। মরুগ্রে ওরা ঘুরে ঘুরে, আমরা বদিয়া থানিক জিরুই আয়।"

জয়রাম হাদিয়া বলিল "দাদা, তোমার আচ্ছা বুদ্ধি।" এই বলিয়া "আঃ" বলিয়া একটা মোট মাথায় দিয়া শুইম্মা পড়িল। অনস্তু অগ্রমনম্বে বিদিয়া গঙ্গা দর্শন করিতে লাগিল। এগন সময় রম্প্রীলাক হায় হায় করিতে করিতে ১৪ রক্ষা কাঁদিতে কাঁদিতে ফিরিয়া পু, জীবনেং অনম্ভ চমকিয়া জিজ্ঞাদা করিল "কি হয়েছে ? ব্যাপুর ত্ঃখ দেখিয়া तका काँ मिट काँ मिट विन "পार्वि श शिविष्णाकान स्म गारेल रू ति शिक्ष करत भाषा भाष भाष एक एक एक स्थान के विश्व नारे। व्यमञ्ज विन "विनक्षन, जिन भग्नात्र शहे कित्र विश्व शिव्राष्ट्र (क्रिक याहेटन, जात्र मध्या এक जनक हा दाहे हो। १ हम ! आमाक मधा লোক যাহোক!" এই বলিয়া উঠিয়া দাল যা—" এমন সময় চড়ার উठिया विनम "मिथल मःमा, आमि श्री वाष्ट्रामणमाम कर्छ विनम

यिन यव माफ़ा इंछ, जा इर्ल आंत छावना थोक छना।" এই विनिद्रः হাবুর মার মুথের কাছে গিয়া কহিল "তুই পদ্দার হাট করে থাবার ক্ষ্যামতা নেই তবে কি কত্তে আছ ? কেবল ক্লেমর বেঁধে ঝকড়া করতে আর বয়ের মাথায় ঝাঁটা মারতে ?

্শ্রাদে দেখ় আমি কি কল্লান গ্রামুনঠাকুর আমার সাতে নাগতে এলে কেনে? বাজি হ'তে বেরিয়ে আর এই ঘাট হতে কেবল আমাকে 'মাগি' 'মাগি'; আর আমি যদি মিন্সে বলি তথন তোর মানটা কোথায় থাকেরে বামনা ?"

অনস্ত বাধা দিয়া রক্ষাকে কহিল "অত কাঁদছ কেন ? ভয়কি ? এই থানেই কোথাও আছে।"

রক্ষা সরোদনে বলিল "নাগো, দেবার আমি মানকুগুর রাস দেখতে शिवाছित्य त्रथात वर्मानं कठक खत्या जानिष्ठ हों ज़ जू दे कात्त्र একটা দোমত্ত নেয়েকে তুলে নিয়ে গেল। আর দেবার অমনি মাহেশে রণ দেখতে গিয়ে, হেনা তুই তো জানিদ—একটা মে—" হেমা আর इरेছिन ना कि ? काँत माकारिक कि विलम ?"

मिन कानस मरकार्य कहिल ''यिन कान क তবে এमिছिলে কেন १ रहेश कार वाजात शकाजाल एक लाय, जिया ठल वक वक जन वक जाक कलाज गाई—,"

> "(সই ভাল তাই যাই চল, তা হইলে মোট আগলে । মা বদে থাক।" জররাম বলিল "এই বার । চারটের মধ্যে তিনটে ফিরিবে, আর শেষে যাও শমি যাবনা কিন্তু।"

ু বলিয়া জয়রামের হাত ধরিয়া অনন্ত চলিয়া '—হায়—করিতে করিতে জনতা মধ্যে

व्यदिশ क्रिन। दिवन श्रावूत्र मा এकाकिनी मिट मकन भाषे ख বাজার-ছাট অগলাইয়া দাঁড়াইয়া রহিল।

যেথানে স্নানের জন্ম লোক জন সমবেত হইয়াছে তাহার কিছু উত্তরে গঙ্গার ধারে শ্মশান। গঙ্গার ধারে প্রায় এক মাইল স্থানব্যাপী, এই শাশান। এথানে লোক জন बाই, আনন্দ কোলাইল নাই, বাজার-হাট নাই; ইতস্ততঃ নির্বাপিত চিতাু রক্ত বর্ণ মুথ ব্যাদান করিয়া 'থৈন আহাগ্যের অপেকা করিতেছে। অঙ্গার দগ্ধ ও অর্দ্ধ দগ্ধ কাষ্ঠ, ছিন্ন বস্ত্র, ভগ্ন বংশদণ্ড ইত্যাদি চতুদিকে বিকিপ্ত রহিয়াছে; অদূরে কয়েকটা পত্ৰ-বিরল অশ্বত্থ বুক্ষে এক পাল শকুনি ব্দিয়া আছে কোনটা বা এক একবার উড়িয়া এ গাছ হইতে ওগাছে গিয়া বিদিতেছে। শ্বাশান সকল (मर्बर अभान।

সেই ভাষণ শাশানে, গঙ্গার তীরে একটা আড়ু লির নীচে নরচক্র অগোচরে একজন যুবতী একট> চিতার উপর উপুড় হইয়া পড়িয়া অফুট চীৎকার করিয়া ক্রন্দন করিতেছে। অভাগিনীর বিধবার বেশ। আলুলায়ত রুক্ষ কেশু, বস্তু, মুখমণ্ডল ও দকাঙ্গ চিতাভত্মে আরুত, অভাগিনী যোড় করে বলিল "কোথায় তুমি? আমার আরাধ্য দেবুতু কোথায় তুমি? আমার অন্ধকারময় জাবনের একমাত্র আ ছংথের শাস্তি, যৌবনের স্থা, কোথায় তুমি ? निরাশার আশু, জীবনে? উদ্দেশ্য কোথায় তুমি ? একবার এদ, বুকচিরিয়া আমার তঃখ দেখিয়া याउ। এ इःथ कां मित्न वात्र ना, घूमारेल जूनिना, त्वाकानात्र यारेल, षिखन जिलिया ७८७। উপाच्छ দেব। তুনি ভিন্ন এ রোগের ঔষধ নাই। আমার জীবনের স্থ-স্থ্য চিরকালের জন্ম ক্র গিয়াছ কেন ? आभात कि দোষ দেখিয়া আমাকে ভাগে করিলে ? হয়! আমাকে দেখা तांख, नट्ट बामाटक एडामात्र निक्षेषा स्था—" धमन ममंत्र हड़ात नी नव इहेट अक्जन यूवक ठक् मुडिंग राजा शहरा कर्छ बालान

"পার্বতি! আর কেঁদনা, উঠে এদ—তোমার জন্ত সকলে বড় ব্যস্ত र्याष्ट्—"

পার্বতী শশব্যস্তে উঠিয়া মাথায় কাপড় দিল। অনস্ত আবার সরোদনে বলিল "তুমি কি করিতে আদিয়াছ, আর কি করিতে-ছिলে ?"

পার্বতী কহিল "আমি যা, কুর্ত্তে আসিনা কেন তোমার কি ? তুমি কেন আমাকে বিরক্ত করিতে আসিলে ?"

অনস্ত অপ্রতিভ হইয়া বলিল "ভগ্নি, আমি তোমাকে খুঁজিতে व्यानियाहि, তোমার জন্ম সকলে কাঁদিতেছে ও ভাবিতেছে। সকলেই তোমাকে খুঁজিয়া বেড়াইতেছে, কাহারও আহারাদি হয় নাই।" এই বলিয়া আবার স্নেহ গদগদ স্বরে কহিল পার্কতি! আজ আট মাদ হইল তোমার স্বামীর মৃত্যু হইয়াছে, তার পর এই আট মাদের মধ্যে কত্লোকের মৃত্যু হইয়াছে, ৰত চিতার উপর চিতা জলিয়াছে, তুমি কোন চিতার উপর পড়িয়া কাঁদিতেছিলে ?''

পার্বতী এইবারে লজ্জিত হইল, মনে করিল অনস্ত তাহা হইলে क्ल कथारे खनिग्राष्ट्र—रूप्र शाप्त शिग्ना शह कतित्व।

'র্ব্বতীকে অধোবদন দেখিয়া অনন্ত বলিল ''শীঘ্র এস, আর বিশ্ব

ধীরে ধীরে কহিল "আমি তোমার সহিত যাইবনা, তুমি 'তছি।"

् ' (क्यन कविष्ठा यात्व, शांठे जनाष्ठ व्यत्नक कावृती

'কেরা কাবুলী দেথিয়া বড় ভয় 'পায়। কারণ কাবুলীরা বড় অত্যাচার করে। সেইজপ্ত ভাবিতে লাগিল। তানস্ত তাহার মনো

ভাব বুঝিতে পারিয়া বলিল 'কি করিবে বল ? না হয় আমি যাই, তুমি এর পরে এদ।"

"না অামিও যাছিছ চল।"

পার্বতী উঠিয়া গঙ্গা জলে মুথ ধুইয়া অঞ্চলে মাথা ও মুখ মুছিয়া অনন্তর পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিল।

একগাছা অনতিসুল তৈলপক বংশ্যষ্টি হাতে করিয়া অনস্ত আঁগে মাগে এবং হুর্গানাম করিতে করিতে পার্বতী তাহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ আসিয়া ক্রমে ক্রমে মেলার জনতার মধ্যে প্রবেশ ক্রিল।

মেলা পার হইয়া তাহারা আবার গঙ্গার চড়ায় আসিয়া পড়িল। এইবার পার্কতির বিষম বিপদ উপস্থিত। সম্মুপে পথের ছই ধারে ছूरे कन का त्वो माँ फ़ारेया चाहा. পार्वे जो मज्य कि कि "मामा এইবার কি হবে ?"

**"কি হবে** ?"

''দেখনা কে দাঁড়াইয়া আছে।''

"থাকলেই বা তোমার ভম কি ?"

"य नि किছू वरन ?"

"वना अभिन পড़ে রয়েছে किना ? वनूक्ना मिथि, नार्ठित। हार्षे ভूछ ছাড়ে, এ ত মাহুষ।"

অনম্ভ পথে যাইতে যাইতে হঠাৎ মনে করিল—পার্বভী আসিবার সময় কোনও প্রকার হাস্ত্র পরিহাসে যোগ দেয় নাই কেন, এতক্ষণে তাহার মর্মা বুঝিতে পারা গেল। পার্বতী গঙ্গামান করিতে আইদে নাই, সে মৃতপতির চিতার উপর পড়িয়া, শোকতাপনাশিনী মা জাহুবীর নিকট আপনার শোকের দার উদ্যাটন করিতে আসিয়াছিল। .অনম্ভ পার্বতীকে বড় ক্ষেহ করিত। কারণ তাহার পদ্ধী স্থলকণার সহিত পার্বতীর বড় ভাব। বিশেষতঃ তাহাদের গ্রামে পার্বতীর স্থায় भाख, मज्जाभीमा त्राय (कह हिम ना। जात छे त्र व्यावात शार्वजी এই বালিকা বয়পে বিধবা হইয়াছিল বলিয়া গ্রামের সকলেই ভাহার জন্ম বড় ছঃ থিত ছিল। অনস্তর স্ত্রী স্থলকণা পার্বতীকে প্রাণাণেকাও ভাল বাসিত। পার্বতা নিজের গৃহকার্য্য শেষ করিয়া গিয়া স্থলকণার গৃহ-কার্য্যে কত সাহায্য করিত।

খানিক দূর গিয়া অনস্ত কহিল 'পোর্বতি, তুমি এই বট গাছটার ভলায় বস।"

পাৰ্বতী সভয়ে বুলিল ''কেন ?'' আমি একেলা গাছতলায় বসে थाकिव दकन ? नाना जूगि काथा म गादन ?"

"जामि याव जात्र (काथात्र ? शिष्त्र जामामित मल्वत ल्वारकमित्र সমাদ দি, তাহার। আসিয়া ভোমাকে লইয়া যাক।"

"কেন? বেশত তোমার সঙ্গে ষাইতেছিলাম, তেমনি যাইনা কেন?" ''না, আমার সঙ্গে যাওয়।র অনেফ দোষ আছে।" "माय आवात कि ?"

''দোষ কি তা তোমাকে কি বলব ? যদি ভাল চাও ভাহলে এই খানে বদ, নচেৎ তোমার যা ইচ্ছা কর।"

अग्रा भार्तको मन्द्र धकाको मिर विवृक्षक ल विषय प्रशिव। গঙ্গাতারে কেবল আমাদের পরিচিত যাঞ্জীগণ ভিন্ন আর সকলেই মহাভক্তিপূর্ণ জদয়ে অবগাহন করিতেছে। রক্ষা, হেমা প্রভৃতি সকলে মেলাতলা তল তল করিয়া খুঁজিয়া পার্কভীর সন্ধান না পাইয়া অভিশন্ধ ছঃখিত মনে বিদিয়া আছে। সফলেই বিশেষ উৎস্ক চিত্তে অনশুর আগমন প্রতীকা করিতেছে। রাইপুরের গৃহিণী অর্ধ-'নজিত অর্ধ-' ব্রাগরিত অবস্থায় বলিতেছেন "হে খা গঙ্গে। আমাদের পার্চুকে মিলিয়ে मांख, ट्यांगारक छाव मिव, हिनित्र भाषि मिव, टिनित्र निवा मिव, भाइत्क ज्ञा भा का का का वाहारक भाव भा 🕬 भाइती हैं। চিনির শাড়ী ও চেলির নৈবেদ্য শুনিরা ইটের বউ হাসিয়া বলিল "এত ছংখেও হাসি আসে; আদেইনি জেঠাই মা তুমি চুপ কর—আয় কথার কাজ নাই।".

কেঁদোর বট বলিল "তাইত সই, এত খুঁজে হালাক পালাক হলাম তবু তার সন্ধান পেলাম না!"

তাহার সই বলিল "একটা আশাস এখনও আশা যথন ত্রুনা মরদ এখনও ফিরে এলনা। তাবা না এলে আর রানা বানা হচ্চে না।"

क्या विनन "अनस्र यथन किद्रिन ज्थन मिन्छ्ये निक्ये निक्ये

রক্ষা রাগিয়া কহিল "কেনেলা ? কার লেগে বাড়ী যাব ? কটা বেটা বিটি ঘরে থুয়ে এসেছি লা, তা সকাল করে বাড়ী যাব ? পাচুকে না পাই'ত বাড়ী যাবনা; তোরা শাস আমি ত্যাবনা।"

এমন সময় অনস্ত আসিলে সকলে এক বাক্যে পার্কতীর ধবর জিজ্ঞাসা করিল; অনস্ত চতুরতা করিয়া কহিল "পার্কতী পথ হারাইয়া অনেক কণ্টে বটতলায গিয়াছে। সেথানে আমাব সহিত দেখা হইল, আমি এত ডাকাডাকি করিলাম সে আমার সহিত আসিল না কেবল কাঁদিতেছে—রক্ষা, দিদি তুমি, যাও, ডাকিয়া আন।"

রক্ষা সম্নেহে কহিল "বাছারে আমার কোথা গিয়ে কান্চে গো, আমি ত পথ চিনিনা, অনস্ত তুমিও চল দেখাইয়া দিবে।"

অনস্ত ও রক্ষা উভয়ে গমন করিলে আর সকলে গা আড়া দিরা উঠিল। অনেকেই সানে গেল। একজন হই পরসার এক গাছা ঝাঁটা কিনিয়া আনিয়া গঙ্গার চূড়ায় থানিকটা স্থান পরিষ্ণার করিল। কেহ এক পরসার ছোট একথানি বাঁট কিনিয়া আনিল, যাহা হাট বাজার ইইয়াছিল ডাইা কুটিছে লাগিল। এমন সময় রক্ষা ও পার্কভী কিরিয়া বাসিল। কুট্না দেখিয়া রক্ষা কহিল "আমি ত বুন আজ আর রাঁধিতে গারিব না।"

ইটের বউ বলিল "আমি রাঁধিব এখন কিন্তু জুমি থাবেত আমার ₹াতে ?"

্রক্ষা এক হাত জিব বাহির করিয়া বলিল "বাপরে অমন কথা বলতে নাই—শাস্ত্রে বলে—

'তব জলে করি পাক, অন্ন আদি কিবা শাক,

দেবতা তুর্লভ করি থায়।
 সেই অয় স্থাময়। বেদ ভাষা—"

হেমা বাঁধা দিয়া কহিল "আ মরণ, তোমার সমগ্ কিড়িমিড়ি ঝাড়তে হবেনা, থাম।"

তা বল্লাম তার দোষ কি ঠাকুর দেবতার কথাইত।" তারপর ইটের বয়ের প্রতি কহিল "এস্তিরি মেয়ে তুমি, গঙ্গাজলে রেঁধে দেবে, তাতে কি দোষ আছে বউ, তুমি রাধ।

পার্বতী হেমাকে কহিল "ভাই আমি যে ভয় পেয়েছিলাম।" "কেন দিনের বেলায় ভয় কি ?"

"গোটা পাঁচ ছয় কাবেল রয়েছে। সেই গুলকে দেখে আমার বড় ভয় করে।"

"কেন ওরামনিষ্যিত, আর ত কিছুনয়, তা অত ভয় কেন? আমি উদিকে মত ভয় করিনা।"

এমন সময় পশ্চাৎ হইতে অনস্ত কহিল "আছা দেখা যাবে।" হেমা কহিল "কি দেখবে ?"

"ভোমার সাহস।"

"আমার সাহস তুমি কি দেখবে ? না হয় আমাকে ভয়ই দেখাৰে, কাজি কি ক্লাক

"ভग्न यिन मिथानाम, তবে ना कत्रनाम कि ? यां ७, न्नान कत्र शिष्त्र, আর বক্তে হবে না।"

হেমা ও পার্বভী স্নান করতে গেল। এমন সময় জয়রাম দেখা দিল। অনস্ত কহিল "কিরে, তোকে খুঁজতে আবার কে যাবে? সকলে এল, তোর যে জীর দেখা নাই ? রকম কি ?"

"রকম ভাল। সব এসে জুটেছে।"

"সত্য নাকি তোর সঙ্গে দেখা হল ?"

"(पथा ना श्ल (पथलाम कि करत ?"

"কে কি বল্লে ?"

"তোমার শাশুড়ি কত কাঁদলে, গুথ্যু করলে।"

"তা আমি জানি। গোবিন্দ এয়েছে? সে কি বল্লে?"

"গোবিন্দ বল্লে 'শালা রাত্রে উঠে চোরের মত পালিয়ে এসেছে তারপর আর দেখা নাই কেন বল্তে পার' ?

"তুই কি বলি ?"

"আমি—"विनिश জয়রাম হাসিয়া উঠিল, বলিল "আমি বল্লাম, দাদা **এक** हो निक करत्र हा"

- অনন্ত জয়রামের কান ধরিয়া একপ্রকাণ্ড কিল উঠাইবামাত্র জয় রাম তাহার কান ছাড়াইয়া লইয়া একটু দুরে সরিয়া গিয়া কহিঁল "निक नग्न निक नग्न—(मङ्गा।" अयन मयग्न हैछित वर्षे कहिन "তোমরা মারামারি করো এখন। এখন সবাই মিলে রানার জোগাড় কর, তা না হলে ত রালা হয় না। গঙ্গার চড়ার পেঁতা মাটি, ভিজে कांगे, ঢেলার আকা।" ইটের বয়ের কথায় বাধা দিয়া অনস্ত কহিল "आत्र दाँ डिगिय छन भरड़िन ?"

"তুমি থামু।"

अय त्राम विनन "ज्देव कि कर्छ वन ?"

"याटण त्राज्ञा रह जारे कटर्ड वनि ।"

अत्रत्राम होएकात कतियां कहिल "७ कानत मां, ७ हांबूत मां, हिल्लोबरा मकला येथ करत्र এमে আকাম के माछ। जनसमान जूमि के जिल्दानिक वाकाम कब जा ना हत्न बाट्य भारकिना-"

"ইটের বট কহিল তবে এই রইল, যাইয় তোমরা কর, আফি সাজে পার্বনা—আমি ঠাটা ভামাস বুঝিনা।"

अनस कहिन "ना ना जुमि त्रांम, आमि एक्ना कां जिल कि ।" हाँ छनाम नर्जन ज्वाहे পाश्या याम। অनस् प्रतिष्ठ प्रतिष्ठ দেখিতে পাইল এক স্থানে কওকগুলা কাব্লী দোকান সাজাইয়া বসিয়া আছে। হঠাৎ ভাঙার মাথায় একটা মতলব আসিল আপনা আপনি कर् शिमा किल ''तिन श्व येडकिन यां वी श्रीकर्त उडकन करे कादननी खना ७ थाकित्व।"

হাটের একধারে গিয়া দেখিল একজন সংগলাক কাঠ বিক্রয় করিতেছে। অনস্ত তাহার নিক্ট গিয়া জিজ্ঞাসা কারল 'হাঁগা বাছা, কাট কয় আঁটি প্যসায় ?" \

বুদ্ধা অকসাৎ রাগিয়া উঠিয়া কচিল "থাট ব'রু কি এথানে হয় পূ या अहे यड़ा পোড़ा चाटि या, हिंगड़ी कि काना नाकि?"

অনন্ত বুঝিল বুদ্ধা কালা। তথ্ই চীৎকার করিয়া কহিল "আমি चाटित थों एक व्यामि नारे कार्छत थाँ एक व्यामियाहि; कार्छ क्या व्याहि श्वनात्र ?"

"बाँ। कां के बाँ शियमात्र १ की श्रमात्र बाँ विन्ना (करन; वरनत्र कांग्रे कार्टि एकिया माथात्र करत्र विष्ठ एमिश क जांग्रि পরসায় ? আমি যেন বেগার দিতে এসেছি। এক পরসায় এক আঁটি, लिए इस ल, नहेल एल या। आमि अमन छिंशत्क कारे विषव ना।" जनक ज्यांक रहेशा वृक्षांत्र मूथभारन छाहिया ते हिल, यरन यरन कहिल

"यांति कि वाकषारि ? এकে यम काथाय मिर्षि । कि कारम, চেনা চেনা মনে হচেচ, কিন্তু ঠাওরাতে পার্লাম না মাগী কে 💡

অনন্তকে এক দৃষ্টে চাহিতে দেখিয়া মাগী কহিল "कि males আমার পানে তাকিয়ে ? চেঙ্গড়া বংস ত'নয়।" অনন্তর বড় রাগ रहेन, हेव्हा रहेन मानीन गाम अवहा एए गाउ, क्वन जीक्य বলিয়া সামলাইয়া গেল। প্রকাঞ্জে কহিল ''কাটত আকন্দ আরু ভেরেন্দ', তায় এত গরম কেন মা শ্ন্মী ? যা দেবে তাই দাও' বলিয়া श्रुके विभाग (किंग्रा निना वृक्षा श्रुके छो किंग्रेठ (किंग्रा निमा भन्न) তুলিয়া লইয়া আপন মনে কাঠ সাজাইতে লাগিল। অনন্ত কাঠ লইয়া ফিরিয়া আসিয়া দেখিল রক্ষা, পার্কতি, হেমা, রাই পুবের গিলি, হাবুর মা, ফনের মা, স্নান করিয়া আসিয়া মুড়ি থাইতেছে; ইটের বউ त्राधिष्टिह, व्यात मार्थ नम्रत्न हेनात्न में निर्णिह ; (वीमात म्हें कून्न কুটিতেছে, ও জয়রাম তুইটা দাঁতন লইয়া অনস্তর প্রতীক্ষায় বিসিয়া আছে। কাঠ রাখিয়া দাঁড়াইবা মাত্র রাই পুরের গিলি বলিলেন "এয়েচ বাঁচলাম, বউগুণ ভোমাকে খংচের খাভায় নেকেচে।"

অনন্ত কহিল "এইবার আবার জমা করে নাও। এখন দাও আমাকে একটু তেল দাও মেথে নেয়ে আসি।"

त्रका मूरथ এक मूथ मूष्ट्रि श्रु विद्रा विलल

"তেই বুই আইকে মাইছে আয়ে? আইকে উউ নাইতে হয়।" (তেল বৃষি আজকে মাথতে আছে গু আজকে রুকু নাইতে হয়)। রক্ষার কথা শুনিয়া অনম্ভ হাসিয়া বলিল "কত মটর স্থাটি থেয়েছ ঠাকুরান ?"

वारेश्रवत शिक्षि विनन ' अर्व वाक मू ि तम महेत से हि तथर इस । তোদের শান্তরে আছে আর তোরা জানিসনা ?"

"ठान मिनिय वृथि ब्रानगमनात दै। फ़ित यक माखति। छ इदे दबना। साफा हाका जाटह ?"

"যা বকিসনেক নাগা বেলা হয়েচে।"

অনস্ত ও জয়রাম দাঁতন লইয়া দস্তধাবন করিতে করিতে গঙ্গা গর্ভে নামিল।

হাবুর মা অকন্মাৎ বলিয়া উঠিল "হেই মা, আমি যে দাঁত কটা মাজতে ভুলে গিইছি গা, কি হবে ?"

হেমা বলিল 'আমর আবাগী, দাঁত মাজতে আবার মামুষে ভোলে ? বেরা করে।"

"ঠাক্রোণ, তুমি বড় ভাল ? আজ দাদাঠাকুরের দেখে দাঁত মাজলে তা নইলে রোজ রোজ দাঁত ঘদ নাকি ?"

পাকীত শাস্তভাবে কহিল 'যাও হাবুর মা, আর কোনলে কায नारे, मांठकिं। त्यांक धम।"

"আমি যে মুড়ি থেলাম গা।"

"থেয়েছিদ থেয়েছিদ যা। মুড়িইত, ভাত ত আর নয়, তাতে माय (नरे।"

জয়রাম গঙ্গার জলে পড়িরা সাঁতার দিতেছে। অনস্ত স্থান, মাহ্নিক শেষ করিয়া মাথা মুছিতে মুছিতে কহিল ''জয়রাম উঠে আয় ठां आकत्म तिनी পড़ে थाकिन ना, कोस्थ केंद्रति। উঠে আয়। अय-রাম কহিল "দাদা ওই একথানা জাহাজ আদছে ওর ঢেউ খেয়ে তবে উঠব°

''দেখিস যেন ১০ট খেতে গিয়ে তল গাঁধি থাসনে'' এই বুলিয়া অনস্ত তীরে উঠিয়া দাড়াইল। হোরিশ্বলার কোম্পানির কাটোয়া-গামী ষ্টীমার ধূম উল্গীরণ করিতে করিতে কাচিতে নাচিতে আপন মনে উত্তর মুথে ছুটিয়াছে। নৃতন কাপড়ের জ্বোড়া কাটিবার সময় যেমন ছুরির ফলার পশ্চাতের বস্ত্র দ্বিধা বিভক্ত হইয়া যায়, ষ্টামারের পশ্চাতেও

400

সেইপ্রকার জলরাশি দিধা বিভক্ত হইয়া চুইটা প্রকাণ্ড জলোচ্ছা। পরিণত হইয়া উভয় তীরে আঘাত করিতে করিতে চুটিতে লাগিল।

রাইপুরেরর ঠাকুরাণী বলিয়া উঠিল "হাদে দেখ্লো পাবু, একথানা দাহাজে কত নোক,দেখ্, হেইমা কি হবে?" পার্কতি কহিল "বউ-ঠাকরাণ ঐ রত্তিন দাহাজে অও নোক উঠেছে তা.প'ড়ে যাচেনা ! ওদের কি ভয় নাগবেনা ?"

জয়রাম কহিল "ভয় কিদের ?"

"यनि পড़ে यात्र।"

রক্ষা গম্ভীরভাবে কহিল "ওকি পড়বার যো আছে? ওযে বিশ-ক্ষার নিম্মান। ইষ্টিমবোট, কলের গাড়ি ওসব যে বিশ্বক্ষা নিম্মান করেচে।"

রক্ষার কথা শুনিয়া জয়রাম সক্রোধে বলিল "হঁ। তুমি সব জান, বিশ্বক্ষা নিম্মান কর্ত্তে গেছে।"

"না করে নাই ? গরু নাই, ঘোড়া নাই ত নিজে হেতে চলছে কেনে ? বিশ্বকশার নিমান ভিন্ন নিজে হেতে চলবার যো নাই।"

রক্ষা সামান্ত একটু লেখাপড়া জানিত; একবার শ্রীক্ষেত্রে গিয়াছিল। শ্রীক্ষেত্র হইতে ফিরিয়া অবধি আপনাকে একজন বহু-দর্শিনী সর্বজ্ঞ বলিয়া মনে করিত।

সেইজন্ত সে একটু মুরব্বিয়ানা চালে বলিল "এই দেখনা কেনে ছিক্তেরেও রতের সময় জগন্নাতের রত আপনি চলে বেড়ায়। রাবনের পুষ্পুক রত আপনি চলত। তা বিশুকুমার নিম্মান ভিন্ন কি মনিষ্মির সাদি নিমান করা ?"

জয়রাম। "রাবনের রত তুমি দৈথতে গিয়েছিলে নাকি?"
"না, রামায়ণের প্রতিথানা খুলে দেখিদ্দেখি। সব কথা খুলে তাকা
আছে।"

>00.

রাইপুরের গিন্নি ঢুলিতে ঢুলিতে বলিল "আহা তাই বটে, বাবা 'কি মাহিত্রি।"

রক্ষা কহিল "বাবার মন্দির বাগে তাকিয়ে দেখিস বাবার মন্দির 'কি শিপ্পি। দেখলে চোখের পাপ যায়।"

় অনন্ত এতক্ষণ নারবে বসিয়াছিল। রক্ষার কথা শুনিয়া মনে ম কহিল "দেখলে পাপ যায়, না হয় গু

জয়রাম বলিল "মন্দির বিশ্বকর্মার নির্মাণ,চলে বেড়ায় নাকি ?" , রক্ষা চটিয়া কহিল "দেখ ছোঁড়া, তুই বিশ্বক্সার নিন্দে করিস ন বলছি। ঠাকুর দেবতার কথায় তামাদা ?''

কোঁদার বউ হাসিমা কহিল "কেনে ঠাকুজ্ঝি ভোমার রাগ কেনে বিশ্বকন্মাত আর ঠাকুর জামাই নয় '''

ইটের বউ কহিল "এইবার কাট ফ্রলো আর কাট নইলে রায়: रावना।"

कांठ नारे खनिया नकत्न जावांत जनस्त कांठ किनिए रारेए ' কলিল। অনন্ত বলিল "আমি আর যাবনা, মাগীর মুখ দেখতে ইচ্ছা করেনা।" জয়রাম বলিল "আমি যাই।" অনস্ত তাহার হাত ধরিয়া किश्न माद्र मा, जुडे वाम्—जुडे शिष्ट माद्रामाद्रि करत वर्माव।"

হেমা স-রহসো বলিল 'বে যত সাহসী তা বোঝা গেছে। মাগীত चंटि. मिट्नड नग्न नाও আমাকে পশ্रमा माও, আমি বাচিচ।"

व्यम् किंव "व्यामात्र (कार्षित शरकर्षे शरमा व्याष्ट्र, मिर्ग याष्ट्र হেমা কোটটা হাতে লইয়া অনেকক্ষণ ধরিয়া উল্টাইয়া পাণ্টাইয়। ेचित्रक रहेग्रा कहिल "ভाल खाला, পाकिট রয়েছে পাকিটে পন্নসা রয়েছে—কিন্তু পাকিটের মুখটা কোন দিকে ?"

" अन्छ शिमा विलिल "(कवल वहत्म आह ? थूव वाहान्द्री करहह, माउ चार्यात्र माउ। मर्जिए शाकिएक मूथ दाथएक जूल शिष्ट।"

এই বলিয়া পকেট হইতে চুইটি পয়সা বাহির করিয়া লইয়া হেমার হাতে দিল, হেমাও পয়সা লইয়া সদর্পে প্রস্থান করিল। হেমা প্রস্থান করিবার কিছু পরে অনস্ত অন্তের অলক্ষ্যে তাহাকে অনুসরণ করিল এবং অচির কালমধ্যে জনত্রোতে মিশাইয়া গেল।

रश्या मिटे कार्ष विद्याची वृक्षीत निक्र शिया एक यह कि कि বেহান ভাল আছ ?"

"কেগা তুমি ?' আমি যে চিস্তে নারচি।"

"তা নারবে বই কি! এখন আমি যে তোমাদের দেশে এসেছি তাই চিত্তে নারছ।"

বুদ্ধা অনেকক্ষণ ঠাহর করিয়া দেথিয়া একটু অপ্রতিভ হইয়া কছিল "হাঁ হাঁ, এইবার চিনেছি, তুমিত মেঁগার পিশি ঠাকরোণ ?"

"বেহান তুমি অনেক দিন আমাদের গাঁয়ে যাও নাই কেন ?" "যাব কি দিদি ঠাকরোণ, জামাই আর আমাকে স্থায়না।"

"আহা তাইত। পরও তোমার নাতনির বিয়ে তা ভোমাকে থপর দেয় নি ? মেগার কাজ ভাল হয় নি। তা তুমি আমাদের সঙ্গে 1"

বুদ্ধা প্রথমে কিছুতেই সমত হইল না; অবশেষে হেমার নির্বন্ধ দেখিয়া অগত্যা যাইতে সমত হইল। হেমাদের বাটীর কৃষাণ মেগা ওরফে মেঘনাদ বৃদ্ধার জামাতা। হেমা তাহার নিকট হুইতে কাঠ नहें या कि त्रिवात मगग्र मिथन পথের ধারে একজন কাবুলি অনেক হলা श्रृं हेलि थूलिया त्नाकान माजाहेया विमया ज्यात्ह। नानाविध श्राजवञ्च, গরম কাপড়ের জামা, কন্ফটার ইত্যাদি দর্শকদিগের দৃষ্টি আকর্ষণ করিতেছে।

व्यत्नकछिन भूझीश्रामवात्री कावूनीरक रचित्रम मांडाठमा कायून কেহ একখানা র্যাপার দর করিতেছে; কেহবা ছাতে বহ আছে মাপিয়া দেখিতেছে; কেহ বা একটা কোট গায়ে দিয়া তাহার বোতাম আটিবার চেষ্টা করিতেছে। হেমা সেই স্থলে আসিয়া যেমন উকি মারিয়া ব্যাপার কি দেখিতে গিয়াছে অমনি সেই কাবুলৈ একটা গরম কাপড়ের জ্যাকেট লইয়া তাহাকে সম্বোধন করিয়া বলিল "কেয়া দেখ্তা বিবি ? একঠো কোঠা লেওঁ।"

যেমন বলা হেমাঞ্চিনী, অমনি গেইখানে কাঠের বোঝা ফেলিয়া উর্দ্ধানে দৌড়। অনস্ত পশ্চাতে দাঁড়াইয়া ছিল, সে হেমার সাহস দেখিয়া হাসিতে হাসিতে কাঠ লইয়া চলিয়া গেল।

এদিকে সকলে কাঠের অপেক্ষায় বসিয়া আছে। জয়রাম ক্ষ্ধায় ছটকট কঁরিতেছে ও হেমাকে গালি দিতেছে এমন সময় "ওলাওঠা, বাঁশ বুকো, গাড় ভোগা, জোমরা ভোগা—বাঁকায় যা বাঁকায় যা—" বলিয়া হাঁপাইতে হাঁপাইতে হেমা দৌড়িয়া আসিল। হেমার মূর্ত্তি দেখিয়া সকলে অবাক। সকলে নানা প্রকার প্রশ্ন করিতে লাগিল, কিন্তু হেমা তব্দনও হাঁফাইতেছে, কথার জবাব দিবে কি ? তথন অনস্ত হাসিতে হাসিতে কাঠ রাখিয়া পার্ব্বতিকে সম্বোধন করিয়া কহিল "পার্ব্বতি, তুমি বড় ভীতু, কাব্লি দেখে ভয় পাও ছি:! যাই হোক, হেমা সাহসীয়া বটে।"

হেমার তথন কথা ফুটল; বলিল "অগমার যদি অকুতো সাহস্থাকিত—"

, ष्रमञ्ज किंश "मवरे चाहि (कवन और नोरे।"

জনমান চীৎকার করিয়া কহিল "তোমরা হাসি তামাসা কোরো এখন, আগে আমায় ভাত দাও।"

রাইপুরের গিলি বদিয়া বদিয়া ঘুমাইতে ছিল জয়রামের চীৎকারে ক্রিত হইয়া কহিল তাই বটে ভাদেকি মা, দিনমানটা গ্যালগা, ভাত

#### ভা, ফান্ধন, ১৩১০] উত্তরায়ণে গঙ্গানান।

তথন পার্কতি ও হেমা উঠিল। পার্কতি ঝাঁট দিল, হেমা এক কলসী জল আনিল। স্থান পরিষ্ণার হইলে পার্কতি বলিল "পাতা পাওয়া যাবে না যে যার গামছা পেতে বস। জয়য়াম, অনস্ত দাদার গামছা গঙ্গায় কেচে এনে তাইতে হজনে বস।"

হেম। বলিল "হজন কে? জ্বরাম আর হাবর মা নাকি?" রক্ষা কহিল "তাই বটে। ফনের মা আর হাবর মা একখানা গামছায় বস। ইটের বউ আর কোঁদার বউ একখানায়, আমাতে আর হেমাতে এক খানা গামছায় বসব, বউ ঠাকরোন তিজেল খানায় বস, আর পাবুকে এ সরাখানায় দাও।

জয়রামের সহিত হাবুর মা বসিবে শুনিয়া জয়রাম চটিয়া ল্লাল হইল কিন্তু রাগ প্রকাশ না করিয়া মন্তে মনে ফুলিতে লাগিল। সকলকার ভাত বাড়া হইলে রাইপুরের গৃহিণী সকলের আগে বসিয়া মুখে এক-গ্রাস ভাত দিয়া ডাকিল "অনস্তশ্ভাত খাবি আয়।"

অনস্ত থাইতে বসিয়া বলিল "আয়িরে জয়রাম।" জয়রাম বলিল "আমি থাবনা।"

গৃহিণী "আয় আয় থাবি আয়" বলিয়া দ্বিতীয়-গ্রাস মুথে তুলিলেন। অনস্ত আবার ডাকিল "আয় আয় থেতে বস।"

''আমি থাবনা, তোমুরা কেন থাওনা।''

গৃহিণী পুনরায় ''আয়, আয়, তোরা না থেলে কি আমি থেতে পারি ?" বলিয়া তৃতীয় গ্রাস মুথে তুলিলেন।

গৃহিণীর কাও দেখিয়া অনন্ত হাসিতে হাসিতে কহিল "জয়া আর জলাসনে ভাই, ভূই না খেলে ঠানদিদি বুড় মানুষ খেতে পাবেন না।"

"ना (थएं भारवन ना १ अँतक कारक र रत राम।"

অনস্ত জয়রামকে চোক শিপিয়া বারণ করিল। অনস্তর, জয়রাম আদিয়া অনস্তর পহিত শ্রাহারে উপধেশন করিল। অনস্ত ও জয়রাম खेशरवभन कतिरल त्रका সকলকে বসিতে বলিয়া স্বয়ং উপবেশন করিল। ফনের মা ও হাবুর না একত্রে উপবেশন করিবে। ভাহাদের গামছায় ভাত দেওয়া হইলে ফনের মা বলিল "ঠাকরোন এস গো।"

এবার আবার হাবুর মার পালা। সে জয়রামের ব্যবহারে বড়ই বিরক্ত হইয়াছিল। তাই সে রাগিয়া কহিল—

"আমি থাবুনি।"

ফনের মা বলিল "থাবেনি কেনে ? थाউসে।"

"আমি খাবুনি রে বাবু খাবুনি।"

"কার উব্রোয় রাগ করে থাবেনি ?"

"আমি যাবুনি রে বাবু থাবুনি।"

"তুমি বেমন পাগল হয়েছ উ,ওর কথায়—আবার মান্ধে রাগ করে ? এদ খাউদে, না খেলে তোমারই আঁত কাদবে।" অগত্যা হাবুর মা আসিয়া থাইতে বসিল। আইতে থাইতে জয়রাম্ বলিল "मात्रामिन धरत त्राज्ञाত হল, कि तामिटल ছाই ভন্ম? ই দিয়ে कि शीख्या यात्र ?"

कत्नत्र मा कहिन "তाই वर्षे, माशा हष्ठिष्ठि वर्षा यान।" शबूत्र मा বলিল—"ও বেমন বেঁতে ভরিচি—ও:'' বলিয়া যেমন নাকে হাজ मिश्राष्ट्र अमृति अन्छ कृष्ट्व "माराहे हावुत्र मा आत रामूनिक था अंग्रात मनग वााचाक निरमाना—" व्यग्ना हावूत मा व्यक्षान नामिका मुहिया थाইতে नाशिन ।

স্মাহার শৈষ করিয়া জয়রীম ও অনস্ত হাতমুথ ধুইয়া আসিলে অনন্ত কোটের পকেট হইতে স্থপানি বাহির করিয়া নিজে ছইথানা मुर्थ मिश्रा खत्रतामरक छ्रेथाना मिल এবং कहिल "खत्रताम এकवात्र শ্বনিকে আয়; তোর সঙ্গে তুটা কথা আছে।"

<sup>&</sup>quot;कि कथा ?"

<sup>&</sup>quot;(यरभन्न माथा।"

व्यन ख जात्राम कि नहेमा এका ख उपित्यन कि तिमा विनन, ''मजा कि तेमा वन प्रिंथि, कि कि এप्तिष्ट ?''

''दकाथाय ?''

"এই গঙ্গালোৰে আবার কোথায় ?"

"আাম এদেছি, তুমি এদেছ, পার্বতী এদেছে, রক্ষাদিদি—"

"पूत्र জाम्यात्र, তাদের বাড়ী হোতে।"

"कारमत्र वाफ़ी ?"

"তোর মাথা—আমার শ্বশুরবাড়ী হোতে—"

"ওঃ তাই—তোমার শাশুড়ী, শালা, ঠাকুর জামাই—"

"ठाकूत सामारे क्टात ?"

"না না, তুমি যার ঠাকুর জায়াই হও সে তোমার কে হয়? তোমার শালা গেবিন্দর স্ত্রা? তোমার শালাজ হয় বৃঝি, সেই সে। আর কে এয়েছে আমি সকলকে চিনি না।"

"না তুই চিনিদ, বল তা না হলে মার থাবি।"

"তোমাকে বল্তে নিষেধ করেছে—সত্যি অনন্তদাদা আমি
বৌঠাকুরোন্কে দেখিনি তবে শুন্লেম এদেছে।" অনন্ত অনেককণ
চুপ করিয়া অবশেবে দীর্ঘ নিঃশাস ফেলিয়া কহিল "আমাকৈ বল্তে
নিষেধ কেন? আমি কে থু নিজের ইচ্ছার গঙ্গা স্থান করতে এসেছে
আবার ভয় কাকে ?" বুদ্ধিমতী হেমাঙ্গিনী অনন্ত ও জয়রামকে
একান্তে বিদিয়া কথাবার্তা কহিতে দেখিয়া বুঝিতে পারিল যে অনন্ত
জয়রামের নিকট পত্নীর সন্ধান লইতেছে। অনন্তর শশুর বাটার
জীলোকেরা গঙ্গামানে আদিয়াছিল তাহা হেমা জানিত। সেইজক্র
উংকর্ণ হইয়া উভয়ের কথাবার্তা শুনিতে চেষ্টা করিল, কিন্ত কিছুই
শুনিতে পাইল না।

স্ত্রীলোকদের আছার হইলে হেমাঙ্গিনী অনন্তর নিকট গিয়া জিজ্ঞাসঃ করিল ''জররামের সঙ্গে কি কথা হইতেছিল ?'' "(कन, म् कथांत्र (ভाমার দরকার कि?"

''দরকার আছে বলিয়াই বলিতেছি। আমি সব শুনেছি।''

" खान ह ( तम करत्र ह । कि कर्कि ?"

"যা নয় তাই কৰ্ব।"

''তবে আর কি আমি ভয়ে শালাই—আয় রে জয়া আয় আমর! যাই।"

উভয়কে যাইতে দেখিয়া পাৰ্কতী বলিল "দাদা তোমরা ত্'জনে যাবে এখানে এত কাবেলী রয়েছে—"

অনস্ত বলিল "ভূম কি, সঙ্গে হেমা আছে ও কাবেলিকে ভূম খায়না। আমরা একটু এগিয়ে যাই, মাঠে গিয়া আবার দেখা হবে।" এই বলিয়া জমরামের হাত ধরিয়া প্রস্থান করিল।

উহারা প্রস্থান করিলে হেমা সেই কাট্ওয়ালী বুড়ী মেঘার শাওড়ীকে ডাকিয়া আনিয়া ভাত খাইতে দিল সেও উহাদের সহিত শাসাতা বাড়ীতে দৌহিত্রীর বিবাহে যাইবে।

षाश्तामि ও গামছা काठा শেষ হইলে সকলে দল বাঁধিয়া হাট করিতে গেল। কেহ কপি, কেহ মটরসঁটি, কেহ কমলা লেরু, নারিকেলি কুল, কলাই ভাজা, মুড়কি, তেলেভাজা কচুরি, গুড়ে खिनानी এवः क्टिवा ভान সন্দেশ রসগোলা किनिन। याहारमञ বাটীতে ছোট ছোট ছেলে মেয়ে আছে তাহারা ছোট ছোট মাটিয় শিল লোড়া, জাঁতা, হাঁড়ি, পুতুল, কাঠের ছোট ঢেঁকি ইত্যাদি ক্রয় করিল। गृहिगीत पन ছোট ছোট कनमी किनिन, ভাষতে গঙ্গাজन ভরিয়া नहेन এবং এক এক ভাল গঙ্গা মৃত্তিকা নইতেও ভুলিল না। সকলের কেনা বেচা শেষ হইলে আর একবার গঙ্গাকে প্রণাম করিয়া সকলে গৃহাভি-मूर्थ श्रष्टान कविषा।

भंतर क्यांत्री (पवी।

## শঙ্কর দর্শন ও সাধনতত্ত্ব।

(প্রথম প্রস্তাব।)

#### >। শक्रद्रैत शक्रावली।

স্করের পাঠক অল্ল, ভক্ত অনেক; অভক্তের সংখ্যাও নিতান্ত অল্ল নহে। অনেক স্থলে ভক্ত অভক্ত উভয়েই আচার্য্যের নামে প্রচলিত কুদ্র কুদ্র পুস্তিকা পাঠ করিয়াই সম্ভট। তদীয় মতামত সম্বন্ধে তাঁহাদের ধারণা এরূপ পাঠের উপরই প্রতিষ্ঠিত। তাঁহার य मकल श्राष्ट्र जनीय पर्नन ও माधनज्ञात मक्न पिक् मयाक्राप ব্যাখ্যাত হইয়াছে, এক স্থানের অস্পষ্ট কথা অন্তত্ত্ব স্পষ্টীকৃত হইয়াছে, এক স্থানের দোষ অন্যত্র সংশোধিত হইয়াছে, এই সকল গ্রন্থ উক্ত শ্রেণীর লোক পাঠ করেন না; স্থুওঁরাং তাঁহাদের ভক্তিও অভক্তি উভয়ই মূলবিহীন ও মিরির। যেরপে ধারণা হইতে উক্ত ভক্তি বা অভক্তি উৎপন্ন হয় তাহা বর্ত্তমান প্রবন্ধে কিয়ৎ পরিমাণে সংশোধন করিবার ইচ্ছা আছে। প্রথমত: আচার্য্যের গ্রন্থাবলী সম্বন্ধে বক্তব্য এই যে আধুনিক পুরাতত্ত্বিৎদিগের মতে তাঁহার নামে প্রচলিত অধিকাংশ গ্রন্থই প্রকৃত পক্ষে তাঁহার প্রণীত নহে; অন্তত: তাঁহার প্রণীত কি না এই বিষয়ে যথেষ্ট সন্দেহ আছে। উপনিষদ্, ব্রহ্মস্ত্র ও ভগবদ্গীতা, এই তিন গ্রন্থের ভাষ্য বাতীত আর কোন গ্রন্থকৈই निःमिक्यिक्राण जाश्व अगीज वना यात्र ना। উপनिष्कत मध्य जेना, (कन, कठ, श्रम, मुखक, गाजुका, टेडिखतीय, ঐতরেয়, ছান্দোগা ও बुर्मात्रगाक, এই मण थानित्र ভाষाই निःमिक्षित्रप्त छाँशांत्र त्रिष्ठ । খেতাখতরের ভাষ্য তাঁহার নামে পরিচিত হুইলেও ইহার রচনা প্রণালী

व्यक्ताक जार्यात्र त्राचना व्यनानी इहेर्फ এত जिन्न स्व हेश छाहात्र त्रिक कि ना এই विषय यरथे है नत्मर আছে। স্থতরাং আমরা ঐ দশথানি • উপনিষদের ভাষা, সূত্র-ভাষা এবং গীতা-ভাষা, এই ভাষাত্রয় অবলম্বন कत्रियारे भक्त पर्णानित्र जालाह्ना कत्रिय। উপनिष्म, ब्रक्षास्क अ ভগবদ্গীতা, এই তিন গ্রন্থ বেদান্তের প্রস্থানত্তর বলিয়া প্রসিদ্ধ। উপনিষদ্ 'শুভি-প্রস্থান ;' ইহাই মূল বেদান্ত। এক্ষত্ত্র 'ক্রায়-প্রস্থান ,' ইহাতে উপনিষয়ক্ত দর্শন ভাষে বা ষুক্তির সহিত ব্যাথাতি হইয়াছে। ভগবদ্গীতা 'শ্বতি প্রস্থান;' ইহাতে বৈদান্তিক্ সাধন বিশেষরূপে বিব্রত হইয়াছে। এই গ্রন্থতায়ের একথানিকে ছাড়িলেও বেদান্তমত সম্বন্ধে মহাত্রমে পতিত হইতে হয়। বেদাস্ত মত সম্বন্ধে প্রচলিত ভ্রাস্ত थात्रना नेमृ:इत এक ही विस्मय काक्षन এই গ্রন্থত্তমের এক বা একাধিক গ্রন্থকে ছাড়িয়া বেদাস্তমতের বিচার। শঙ্কর-বেদাস্ত বুঝিতে হইলেও শ্রুর প্রণীত প্রস্থানতমের ভাষ্যই অবলম্বনীয়। তাঁহার প্রণীত অগ্রাক্ত প্রস্থাদি থাকেও, তথাপি তাঁহার ভাষাত্রয়ই ভদীয় মতের নিশ্চিত প্রমাণ। বিশেষতঃ তিনি বেদাস্তমকের নথায়থ ব্যাখ্যা করিয়াছেন किना हेरात्र किरात किवन এই ভাষাত্র অবলম্বনেই হইতে পারে। चुडताः बामता उनीम मञ्जाभाम এই ভाষাত্রের প্রমাণেই আবদ थाकिव।

## २। व्याथ्या-व्यवानी।

महत्त्रत्र अश्वनो वृतिवात्र अवः एमीत्र पर्मनफद्भत्र अज्ञास्तत्र अत्वन ক্রিবার একটা বিশেষ বিশ্ব এই যে তিনি তদীয় মন্তব্যাথার काम विद्यम थागाणी व्यवण्यन करत्रन नाहे, क्वरण बाायाां शह मन्दरत्र विवत्र-विकाम जञ्जादत्र निक यक क्षकान कतित्रा शिवादस्न। मूलस्य व्यवचन कतिया क्रम्भः यूकि ७ पृष्टीएउत्र मश्कि नमक कर्जत

বিকাশ,—প্রত্যেক দার্শনিকের নিকট এই প্রণালীর প্রত্যাশ৷ ক্রা যায়। বিশেষতঃ ঘাঁহারা পাশ্চাত্য বিজ্ঞান ও দর্শন অধ্যয়নে অভ্যক্ত তাঁহারা দেশীয় দর্শন গ্রন্থেও এরূপ অপ্রণালী দেখিবার আশা করেন। কিন্তু দেশীয় অনেক গ্রন্থেই, বিশেষতঃ শঙ্কর-প্রণীত গ্রন্থসমূহে, এই এই প্রণালী অবলম্বিত হয় নাই। যাহা হউক, গভীর অভিনিবেশের সহিত মাচার্য্যের গ্রন্থাবলী পাঠ করিলে তিনি কি প্রণালীতে তদীয় দিদ্ধান্ত দমূহে উপনীত হইয়াছেন তাহা বুঝিতে ৰাকি থাকে না। সেই अंशानी आधुनिक भान्हां अशानी इरें ए मून्डः जिन्न नरह। अञ्चः একজন আধুনিকের পক্ষে তদীয় মত সমূহকে অধুমাতন দার্শনিক প্রণালীতে সন্নিবিষ্ট করা সম্পূর্ণরূপেই সম্ভব। আমরা বর্ত্তমান প্রবন্ধে কিয়ৎ পরিমাণে ভাহাহ করিতে চেষ্টা করিব। আধুনিক পাঠককে শঙ্কর দর্শন বুঝাইবার পক্ষে ইহাই একমাত্র উপযুক্ত প্রণালী বলিয়া বোধ হয়। কিন্তু এই প্রণালী অবলম্বন করিতে যাইয়া আমরা শৃষ্করের মত হইতে কিঞ্চিনাত্রও বিচলিত হইব না, তাঁহার উপর কোন আধুনিক মত আরোপ করিব না; আমাদের ব্যাখ্যার যথার্থভা তদীয় গ্রন্থ ইইতে উদ্ধৃত বাক্য দ্বারা প্রতিপদেই সপ্রমাণ করিব।

#### ৩। শ্রুতি প্রমাণ সম্বন্ধে শঙ্করের মত।

শঙ্কর তদীয় দর্শন ব্যাখ্যায় প্রতিপদেই শ্রুতির দোহাই দেন।
অক্সান্ত দর্শনের ন্থার তাঁহার দর্শন যে কেবল অনুমানসিদ্ধ মন্ত নহে,
ইহা শ্রুতিপ্রতিন্তি ও শ্রুতিসম্মত মত,—ইহা তাঁহার পক্ষে বিশেষ
গোরবের বিষয় বলিয়া মনে করেন। আধুনিক স্বাধীন চিন্তাশীল
পাঠকের নিকট এরূপ পদে পদে শাল্রের দোহাই শ্রুতার কারণ না
হইরা সন্দেহের কারণ হওয়াই সম্ভব। কেই শাল্রের দোহাই দিলেই
দনে হর এই লোক নিজ মতের অনুকৃশ প্রত্যক্ষ বা আনুমানিক কোম

श्रमान मिएल जनमर्न, रक्षन जक्षभारत नत्रमरलत जस्मन्न कतिरहरू छ অক্তকে অনুসরণ করিতে বলিতেছে। ফলত: শান্ত প্রমাণ সম্বন্ধে প্রতিলিত খুষ্টার মত এরপ অন্ধ অমুসরণ বতীত আর কিছুই নহে। খুষ্টীয় মতের সহিত বিশেষ পরিচয় এবং দেশীয় মতের সহিত জন্ম পরিচয় বা অপরিচয় বশতঃ আধুনিক হিন্দুর পক্ষে দেশীয় আচ র্য্যদিগের উপর খুষ্টীয় মতের আরোপ কিছুই বিচিত্র নহে। ি স্ক দেশীয় আচার্য্য-দিগের শান্তের দোহাই এবং খৃষ্ঠীয় প্রচারকের শান্তের দোহাই সম্পূর্ণ , ভिन्न वञ्च। दिन कि व्यर्थ व्यरभोक्षरिय, कि व्यर्थ ও কোন विषय প্রমাণ; ইহা কি পার্নাণে গ্রাহ্ন, কি পরিমাণে অগ্রাহ্ন, এই সকল বিষয়ে জৈমিনি, পানিনি এবং শঙ্কর প্রভৃতি আচার্যাদিগের মত অবগত হইলে ইহার সহিত প্রচলিত খুষ্টীয় মজের ভিন্নতা দেখিয়া বিশ্বিত হুইতে হুম, এবং দেখা যায় আধুনিক স্বাধীন চিস্তার সহিত উক্ত আচার্যাদিগের মতের মৌলিক প্রভেদ নাই। এই বিষয়ে আমি এই শ্রবন্ধে বিস্তৃত ভাবে কিছু বলিব ন। বাঁহার ইচ্ছা হয় আমার "The Vedanta and its Relation to Modern Thought" নামক পুস্তকের দ্বিতীয় বক্তৃতায় এই বিষয়ে একটা বিস্তৃত আলোচনা দেখিতে शास्त्रन। সংক্ষেপে বলিতে গেলে বেদ সম্বন্ধে শঙ্করের মত এই:---(यम भक्तमम्। भक्त निजा। हेरात खेलिक्क जाः में পतिवर्छन ও विनाभ-শীল, কিন্তু ইহার ভাবাংশ অপরিবর্ত্তনীর ও কালাতীত। ইহা পরমাস্থার অংশীভূত। জীবোৎপত্তির সঙ্গে সঙ্গেই শব্দময় বেদের किम्मर्भ की वाचात्र कन्नी ज्ञ रहेमा প্রকাশিত হয়। क्वीवाचात्र উন্নতির मक्ष मक्ष डेक रहेट डेकडब जावाचाक दिन कीरब वृद्धि विक्रिक र्म। ऐक नाथन मन्भन आचात्र निक्षे उकाचक दक श्रंकिष्ठां रूप। ेषञ्जल जाजारक अलिवाकामम्श सार निजा स्टेटल जाजल .करत ध्वर गांगरन थातृत करतः ; किंद धवान बाद्या बनाविका अधित वर्ष सम्मन्त्र

कतिर्ह भारत्वा। नाधरनत উक्त माभारन व्यक्षिक्र इहेरणहे अक्रम শ্রুতির অর্থবোধ হয়। ইন্তির গ্রাহ্ বিষয়ে শ্রুতি প্রমাণ গ্রাহ্ নহে। এরপ বিষয়ে শ্রুতিতে যাহা কিছু আছে তাহা অবাস্তর বলিয়া গ্রহণ করিতেঁ हरेत। वाजो सिम्न विषय्त्रहे अवि श्राण। श्राण वार्ष এই नहा स्व व्याभाव वञ्च पर्यन इटेरव ना, व्यथह व्याभारक व्यक्त व्यक्तिवाका शहर করিতে হইবে। শ্রুতি দাকাৎ বিজ্ঞানোৎপত্তির নিমিত্ত মাতা। তৈতিরীয় উপনিষদের ব্রহ্মানন্দবল্লীর ষষ্ঠ অমুবাকের ভাষ্যে শঙ্কর विवाहिन,—"अञ्चिक नार्जी अव-विद्यानार পढ़ो निमिखम्," वर्षार "শ্রুতি আমাদের অতীন্ত্রিয় বিষয়ক বিজ্ঞান উৎপত্তির নিমিত্ত।" পুনশ্চ, প্রশোপনিষদ্ ষষ্ঠ প্রশ্নের দিতীয় শ্রুতির ভাষ্যে বলিয়াছেন,—"নহি বচনং বস্তুনোহন্তথাকরণে ব্যাপ্রিয়তে, কিন্তুহি যথাভূতার্থাবস্তোতনে," অর্থাৎ "বস্তুর অন্তথাকরণ শ্রুতির কার্য্য নহে, বস্তুকে প্রকৃতরূপে প্রকাশিত করাই ইহার কার্য।" মন্ত্রদুষ্ঠা ঋষিগণ সাধনের যে সোপানে অধিরুঢ় श्रेषा (तमयञ्जनमूश पर्नन कित्रािष्टिलेन, मिशे (माभारन यिनि अधिकार् হইবেন তাঁহারই সমকে ঐ সকল মন্ত্র বা মন্ত্রাত্মিকা অমুভূতি প্রাত্ত্ हरेत। टेडिखरीय উপনিষ্দের শিক্ষাবল্লীর দশম অমুবাকের ভাষ্যে শঙ্কর বলিয়াছেন,—"এবং শ্রোতস্মার্তেয়ু নিত্যেয়ু কর্মস্থ যুক্তস্থ নিদামস্থ পরং ত্রন্সবিবিদিধোরার্ষাণি দর্শনানি প্রাকৃতবন্ত্যাত্মাদিবিষয়ানীতি," অর্থাৎ "যিনি এইরপে শ্রুতি ও স্মৃতিবিহিত নিতা কর্মে নিযুক্ত হইয়া निकां म न এवः পরবৃদ্ধকে कानिए हेक्कू रून, छाँ हात निक्रे वाजा कि বিষয়ে ধাষিদিগের দর্শন সমূহ প্রাত্তুত হয়।" বোধ হয় এখন পাঠক व्विष्ठ পারিলেন শঙ্কর শক্ষপ্রমাণ বলিতে কি ব্বেন। ভাঁহার নিকট শক বা শ্রুতি প্রতাক্ষ আধ্যাত্মিক অমুভূতির নামান্তর মাত্র। প্রচলিত বেপচত্টর ঋষিদিগের অমুভূতির লিপি বা বাহ্যিক আকার মাত্র। এই वाशिक त्वन जागारनेत्र माकार अञ्चलित महात्र वा निमिल मात

बाबुखवाद्यक (वन यथाकारन जकन जाधरक इटे निक्रे जाकार खादां প্রকাশিত হয়। 'এই সাক্ষাৎ অমুভবকে শঙ্কর 'প্রত্যক্ষ' বিশেষণ না দিয়া 'অপরোক্ষ' বিশেষণ দেন। তাহার কারণ এই যে প্রত্যক্ষ কথাটী সাধারণত: ঐক্রিয়ক অমুভবেই প্রযুক্ত হয়। এই ঐক্রিয়ক তমুত্ব ৰা প্ৰত্যক্ষ' হিন্দুদৰ্শনের গৃহাত দিতীয় প্ৰমাণ। তৃতীয় প্ৰমাণ নানা-বিধ অনুমান। যাহা হউক, বেদের নিত্যত্ব ও অপৌরুষেয়ত্ব সম্বন্ধে শঙ্কুরের মত ও বিচার পাঠক বিস্তৃত আকারে তদীয় সূত্র ভাষ্যের প্রথমাধ্যামের তৃতীয় পাদের ২৮ হইতে ৩০ ভাষো পাইবেন। এই ্বিষয়ে জৈমিনি ও পানি ন দর্শনের মত মাধ্বাচাগ্যক্ত "সর্বদর্শন-সংগ্রহেশ পাওয়া যাইবে। সংস্কৃতে অনভিজ্ঞ পাঠক অধ্যাপক গফ্ও ্ কাউয়েল-কৃত এই গ্রন্থের ইংরেজি অমুবাদ পাঠ করিতে পারেন।

#### ৪। আত্মপ্রতায় ও আত্মজ্ঞান।

🖙 শাক্ষরদর্শনের মূলস্ত্র আয়প্রভায়। আয়প্রভায়ের অর্থ আয়ার অন্তিত্বে বিশাদ। শকর বলেন আত্মপ্রতায় মূল প্রতায়, ইহা অন্ত কোন প্রত্যন্ধ রা প্রমাণের উপর নির্ভর করে না; অন্ত সমুদ্র প্রত্যন্ত্র ও প্রমাণের মূলে এই প্রতায় বর্তমান রহিয়াছে। অপর যাহা কিছু আদি ভংশঙ্গে এবং ভদ্বিষয়ক জ্ঞানের ভিত্তিরূপে জ্ঞাতৃরূপী আমি বা প্রাত্মার জ্ঞান নিহিত থাকে; স্ত্র-ভাষ্মের দিতীয়াধ্যায় ভূভীয় পদে শশ্বৰ হত্তের ভাষ্যে শঙ্কর বলিয়াছেন,—''ন হাত্মাগন্তক: কন্সচিৎ স্থাং-ै किहार। न श्राक्षाकानः श्रमान्यरभका निकाछ। ...... न श्राकानापमः नार्थाः श्रमाणनित्रप्रकाः स्रश्निकाः (कर्निविष्णुभग्रम्। व्यक्षाकृ ্রেমুশক্ত নিবাকরণং সম্ভবতি। আগস্ককং হিবস্ত নিরাক্রিয়তে। ন वक्षाम्। य धव नित्रीकर्षा उत्पव एक चन्नभम्।" वर्षार्--"कार्षिक

পক্ষে আত্মা আগন্তক (contingent) নহে, কেননা ইহা সমং সিদ্ধ আত্মা আত্মার প্রমাণ দারা সিদ্ধ হয় না। আকাশাদি পদার্থ প্রমাণ নিরপেক্ষ ও সমং সিদ্ধ এরূপ কেহ মনে কবে না, কিন্তু আত্মা প্রমাণাহি वावशास्त्रत आध्य विषया श्रमांगां वावशास्त्र शृर्करे निक, धकः এরপ আত্মার নিরাকরণও সম্ভব<sup>®</sup>নছে। আগন্তুক বস্তুরই নিরাকর<sup>ৎ</sup> সম্ভব। যাহা নিরাক্রার শ্বরূপ তহোর নিরাকরণ সম্ভব নহে। যিনি আত্মার নিরাকর্তা, আত্মা তাঁহার স্বরপ।" স্থতরাং সমুদয় জ্ঞান ও প্রতামের মূলরূপী আত্মপ্রতায় সকলের বৃদ্ধিতেই নিহিত আছে, ইহা সিদ্ধান্ত হইল। এই আত্মপ্রতায়কে যদি জ্ঞান বলা যায় ভবে আত্মজ্ঞান मकरमद्रहे आह्न हेश विनिष्ठ हहेर्व। किन्न এहे छान अस्निक्द মধ্যেই অতি অফুট। এই অফুট জ্ঞান সমাক্ জ্ঞান হইতে অত্যন্ত ভিন্ন। আত্মার প্রকৃত সরূপ অনেকেরই পক্ষে গভীর কোষ বা আবরণে আছোদিত। বেদান্ত এাং বেদন্তিব্যাথ্যা কার শঙ্করের মতে এই কোষ া বা আবরণ পঞ্চবিধ:—(১) অরময় কোষ, (১) প্রাণময় কোষ, (৩) भारतामम (काष, (8) विद्धानमम (काष ७ (c) जाननमम (काष। रै ठिखितीय डेपिनियम् यानमत्सी ७ ज् खरही वदः वैहे वसी प्रत्र भाक्त-ভাষ্যে পাঠক এই পঞ্চকোষের বিশেষ বিবরণ পাইবেন। আত্মোন্নতির ভিন্ন ভিন্ন সোপানে আক্সাকে ভিন্ন ভিন্ন কোষের সহিত এক কলিয়া বোধ হয়। निम्र छ्य সোপানে বোধ হয় আত্মা অলময় অর্থাৎ জড়ময়,— चामि मतीत, मतीत वरे किहूरे निश् এरे मानात्नत लाक्तारे চার্কাকদর্শন-প্রণেতা। ইহাঁদের মতে শরীরাতিরিক্ত কোন জানা नाहै। এই गত थएन कत्रिट गारेश मकत्र कि विनदाहितन छारा ু আমরা ক্রমশঃ নেথিব। উন্নতির দিতায় নোপানের বিশেষ ব্যাধ্যার अध्योक्त नाहै। ज्ञीत्र (माभारन यत हम जाजा यतायम जाजारी ं छ श्रवाहिंगीन बरनाविकात-भन्नणाता भाजी। ' अई माभारतह रशेकार्भरमञ्

अध्यक्षांश्रक द्वम मधाकादम जकम गांधरकरहे निक्छ जाकार छाद्य व्यक्तामिक इस । धिर्दे माकार व्यक्तस्य वस्य भक्त (श्राक्तभ्य ना িছিয়া 'অপরোক্ষ' বিশেষণ দেন। তাহার কারণ এই যে প্রত্যক্ষ কথাটা স্থারণতঃ ঐক্তিয়ক অমুভবেই প্রযুক্ত হয়। এই ঐক্তিয়ক তমুভব ৰা প্ৰত্যক' হিন্দুদৰ্শনের গৃহীত দিতীয় প্ৰমাণ। তৃতীয় প্ৰমাণ নানা-विश्व अञ्चान। गारा रहेक, (व्हान निजाय ७ অপोक ध्यय नयस শঙ্রের মত ও বিচার পাঠক বিস্তৃত আকারে তদীয় সূত্র ভাষ্যের প্রথমাধ্যায়ের তৃতীয় পাদের ২৮ হইতে ৩০ ভাষো পাইবেন। এই ুবিষয়ে জৈমিনি ও পানি ন দর্শনের মত মাধবাচাগ্যকৃত "সর্বদর্শন-সংগ্ৰহেশ পাওয়া যাইবে। সংস্কৃতে অনভিজ্ঞ পাঠক অধ্যাপক গফ্ ও কাউয়েগ-কৃত এই গ্রন্থের ইংরেজি অমুবাদ পাঠ কবিতে পারেন।

## 8। আত্মপ্রতায়তও আত্মজ্ঞ।

শাক্ষরদর্শনের মূলস্ত্র আয়প্রভাষ। আয়প্রভাষের অর্থ আয়ার আন্তিত্বে বিশ্বাদ। শক্ষর বলেন আত্মপ্রতায় মূল প্রতায়, ইহা অন্ত কোন প্রভার বা প্রমানের উপর নির্ভর করে না; অন্ত সমুদ্র প্রভার ও প্রমাণের মূলে এই প্রতায় বর্ত্তমান রহিয়াছে। অপর যাহা কিছু স্থানি তৎদক্ষে এবং ভদ্বিষয়ক জ্ঞানের ভিত্তিরূপে জ্ঞাত্রূপী আমি বা - আত্মার জ্ঞান নিহিত থাকে; স্ত্র-ভাত্মের দিতীয়াধ্যায় ভূভীয় পদে ৰ সপ্তম হত্তের ভাষ্যে শঙ্কর বলিয়াছেন,—''ন হাত্মাগন্তক: কন্সচিৎ স্বরং-্'সিদ্বতাং। ন হাত্মাত্মনঃ প্রমাণ্মপেকা সিধাতি। ....... ন হাকাশাদয়ঃ निमार्थाः श्रमाणनिवरणकाः स्वर्शनकाः किनविष्णुभगगास्य। आयाकृ श्रमाना मित्रवहा बाध्यकार आर्गव श्रमाना मित्रवहा और निधा कि বেদৃশক্ত নিবাকরণং সভবতি। আগস্তকং হিবস্ত নিরাজিয়তে, ন अक्राम्। य धार निजीकर्छ। उत्तर एक यज्ञ श्रम्।'' ज्यार- कार्यात्र

भटक वाषा वाज्यक (contingent) नटह, टकनना हैशे वहर जिल्ला আত্মা আত্মার প্রমাণ দারা সিদ্ধ হয় না। আকাশাদি পদার্থ প্রয়াশ-নিরপেক ও সমং সিদ্ধ এরূপ কেহ মনে কবে না, কিন্তু আত্মা প্রমাণী वावशास्त्रत वाध्य विद्या श्रमानानि वावशास्त्र शृत्वर निक्क, खेवर এরপ আত্মার নিরাকরণও সম্ভব নৈছে। আগন্তুক বস্তুরই নিরাকরণ সম্ভব। যাহা নিরাকর্তার স্বরূপ তহোর নিরাকরণ সম্ভব নহে। যিনি আত্মার নিরাকর্তা, আত্মা তাঁহার স্বরূপ।" স্বতরাং সমুদয় জ্ঞান ও প্রতায়ের মূলরূপী আত্মপ্রতায় সকলের বুদ্ধিতেই নিহিও আছে, ইহা সিদ্ধান্ত হইল। এই আত্মপ্রতায়কে যদি জ্ঞান বলা যায় ভবে আত্মজান मकरमत्रहे आह्य हेश विभिष्ठ हहेर्द। किन्नु এहे खान अस्मरकत्र মধ্যেই অতি অফুট। এই অফুটজ্ঞান সমাক্ জ্ঞান হইতে অভাস্ত ভিন্ন। আত্মার প্রকৃত স্বরূপ অনেকেরই পক্ষে গভীর কোষ বা আবরণে আছোদিত। বেদাস্ত এশ বেদীগুব্যাখ্যাকার শঙ্করের মতে এই কোষ বা আবরণ পঞ্চবিধ:—(১) অরময় কোষ, (১) প্রাণময় কোষ, (৩) भरनामम (काष, (४) विद्धानमम (काष ७ (৫) ञाननमम (काष। তৈতিরীয় উপনিষদ্ আনন্দবল্লী ও ভৃগুবলী এবং এই বল্লীদ্বের শান্ধর-ভাষ্যে পাঠক এই পঞ্চকোষের বিশেষ বিবরণ পাইবেন। আত্মোল্লভির ভিন্ন ভিন্ন সোপানে অংকাকে ভিন্ন ভিন্ন কোষের সভিত এক ৰাজ্যা বোধ হয়। निম্বতম সোপানে বোধ হয় আত্মা তারময় অর্থাৎ জড়ময়,— जािम नदीत, नदीत वह किहूरे निहा এर সোপানের লোকেরাই চার্কাকদর্শন-প্রণেতা। ইহাঁদের মতে শরীরাতিরিক কোন আত্মা माहै। এই মত খণ্ডন করিতে যাইয়া শকর কি বলিয়াছিলেন ভাছা वामता जनमः तिथत। উन्नजित निजोत्र मानारमञ्जू विरम्भ नामान প্রবোজন নাই। তৃতীয় লোপানে মনে হয় আত্মা মনোময়— অস্থায়ী ः अ शबार्गीन मत्नाविकात-शबन्भता मार्जा। विकेतनाभारतर क्षिक्रमाना উৎশত্তি। শঙ্কর কিরূপে বৌদ্দর্শন থণ্ডন করিরাছেন তাহাও আনস্থা পরে দেখিব। উর্নতির চতুর্থ সোপানে মনে হয় আত্মা বিজ্ঞানমর,— ইহা ভিন্ন ভিন্ন মনোবিকার ও সংস্কারের ত্থারা আধার ও ভোকা; ইহা নানা কার্য্যের কর্তা, বছ, এবং জ্ঞান ও শক্তিতে সীমাবদ্ধ। সাংখ্য-দর্শন এবং অনেক পরিমাণে ভার ও পাতঞ্জলদর্শনও এই সোপানের মন্তর্গত। আত্মাকে বিজ্ঞানের সহিত এক মনে করাঠেই বছ আত্মবাদ উৎপত্র হয়। পঞ্চম সোপানের বিশেষ বর্ণনা অনাবশুক। আত্মাকে যথন পঞ্চ কোষের অতীত, পঞ্চ কোষের অবভাসক বিস্থা দেখা যার, তথন প্রতীত হয় বে ইহা দেশ, কাল ও সংখ্যার অতীত,—ইহা একমাত্র, অথণ্ড, অনন্ত ও অবিতীয়; ইহার অতিরিক্ত কোন বস্তু নাই। তথনই 'অন্নমাত্মা ব্রহ্ম,' 'সর্বাং ধবিদং ব্রহ্ম,' 'অহং ব্রন্ধান্মি,' 'তৎত্বস্বি'—অর্থাৎ 'এই আত্মাই ব্রহ্ম,' 'এই সমুদ্য ব্রহ্ম,' 'আমি ব্রহ্ম,' 'তৃমি তিনি'—এই সকল উপনিষহক্ত মহাবাক্যের প্রক্ত কর্থ বোধ হয়। ইহাই সম্যক্ আত্মজান।

#### ए। চাर्काक्ये थ थवा।

এখন আমরা দেখাইব কিরপে শঙ্র বেদান্তবিরোধী মত সমূহ
শঙ্কপূর্বক নিজ মত স্থাপন করিয়াছেন। পূর্বনিদিন্ত ক্রম অনুসারে
প্রথমেই চার্বাকমতের উল্লেখ করিয়। ত্রশ্বংকা, বিতীয়াঝায়, তৃতীয়
পদে ৩৩ ও ৬ প্রের ভায়ে শঙ্কর এই মত খণ্ডন করিয়াছেন। এই
শঙ্কের প্রধান কথা এই—চার্বাক অস্বীকার করিতে পারিবেন না
বে অড় ও জড়ায় বস্তর অনুভবতেই চৈত্র বলে। চার্বাকের মতে
এই চৈত্র জড়েরই ধর্ম। কিন্তু তাহা কিরপে সম্ভব ! চৈত্র বিষয়ী,
আড় বিষয়; বিষয়া কিরপে বিষয়ধর্মবিশিষ্ট হইবে ! কলভঃ বিষয়বিষয়ার ভেদ স্পট্রপে উপল্লি না ক্রাতেই জ্ডুবাদ আনে; এই
ভেদ বৃত্তিকৈ আন্ধ অভ্নাদ থাকিতে পারে না। ভিতীয় কথা এই,

नामा जन्दा-পরিবর্তনের মধ্যেও খ্যাত্মা একরূপ থাকে । জাগ্রহ, স্বর্ত্ত স্ব্ধি, এই তিন অবস্থাতেই আত্মা নির্কিকার, অপরিবর্তনীয় থাকে विनिदारे স্বৃতি প্রভৃতি সম্ভব হয়। यটনাপ্রবাহ বহিয়া যায়, किছ উপলব্ধিস্বরূপ আত্ম। অপ্রবাহিত থাকে। ইহাতেই প্রমাণ হয় আত্মা निठा, कालाठींड, अए इरेटड घेडाग्र जिल्ला "উপলাক্ষরমেব চ न আত্মা, ইত্যাত্মনো দেহব্যতিরিক্তম্বং নিত্যুত্বং, উপলব্ধেরৈকরুপ্যাৎ। 'अश्म् रेमम् অजाक्रम्' रेजि চावशास्त्रत्याः गश्न्राभनकृष्यन প्रजानि-कानार युजाशाननरहन्छ।" वर्धार—"वामाम्ब वाषा উপन'क्यक्रभ, हेशां व्या यात्र हेश (महवां वित्रक ७ निवा, (कनना उपनि একরপ। আর, অবহা পরিবর্ত্তি হইলেও 'আমি ইহা দেখিয়াছিলাম' এইরপে অত্মকে উপলব্ধুরপে পুনরায় চেনা যায়, আর এক্সপ চেনাতেই স্মৃতিপ্রভৃতি সম্ভব হয়। ইহাতেই আমার দেহব্যতিরিক্তত্ত্ব ও নিত্যত্ব সপ্রমাণ হয়।'' এইরূপে শঙ্কর প্রমাণ করেন আত্মা শরীর नहर, छए नहर, हेश जन्नभन्न कारित जातील। এই প্রণালীকে 'বাতিরেক' প্রণালী বলা যায়। ইউরোপীও দর্শনে ইহাকে Method of Antithesis বলে। দার্শনিক চিন্তার নিম্ন সৌপানে এই প্রণাণীই অবলমনীয়! কিন্তু যথাস্থানে শঙ্কর 'অন্তর্ম' বা Synthesis প্রণালীও व्यवनश्वन कत्रिशास्त्रन। चालिरद्रक প্রণালীতে দেখা গেল হুড় আস্থা इंहेट जिन्न, विषय विषयी इंहेट जिन्न। अवय-ध्यामीट प्रभा याहेर्ब জড়, অথবা ঘাহা উন্নতির নিম সোপানে জড় বলিয়া বোধ হয়, তাহা আত্মার সহিত এক,—বিষয় বিষয়ীর সহিত এক—অথবা বিষয়-বিষয়ীয় (छम भोगिक नरह। किन्छ भक्षत्र व्यञ्चादन छ व्यनमस्य व्यवसर्थनामी व्यवनयत्नत्र विद्राधी, ञ्च्ताः कर्गविकानवानी वोक दर निम त्नालादम माफारेबारे विषय-विषयीत जिन উড़ारेबा मिटल डेखल, ভाराटल नकरत्रे त्यात्र ज्यानित । जयन त्योरकत निर्वेश विकास कि किए स्था यात्र ।

### ৬। বৌদ্ধমত-খণ্ডন।

(वोक्त मार्गनिक भड मान। शकात ; किन्छ आगता (कवन कशविक्रान-वानी (वोत्कत मडहे जात्नाहमा कतिव। এक्राप्त (वोक्क क्षाप्तम ज्यस्य-প্রশালীতে দেখাইতে চেষ্টা করেন যে বাহ্য বা জড়জগৎ বলিয়া কোন জগং নাই; যাহা বাহ্য বা জড় বুলিয়া বোধ হয় তাহা বস্তুত: চৈতগ্ৰ ৰা জ্ঞানেরই অন্তর্গত। তিনি বৈদান্তিকের নিজ কণায়ই তাঁহাকে বুঝাইতে চান যে এই বিষয়ে বেশস্ত ও গৌদ্ধ মতে কোন প্রভেদ सार्छ। পाঠक मिश्रियाद्यात, मक्द वालन আমরা यादा किছू कानि क्रिम्स व्यावारक खाज्याल जानि। এই कथा है हे विषय्त्र प्र मित्रा बिलिल এই ভাবে বলিতে হয় যে আমরা যাহা কিছু জানি তাহাই জেয়, জ্ঞানের বিষয়, জ্ঞানের সহিত অন্বিত বলিয়া জানি, জ্ঞানের সহিত অসুধদ বলিয়া জানিনা। যাহাঁ কিছু জানি তাহাই দৃষ্ট, শ্রুত, আন্ত্ৰাত, আস্বাদিত বা স্পৃষ্ট বলিয়াই জানি; অদৃষ্ট, অশ্রুদ, অনান্তাত, জনামাদিত বা অপ্টু বলিয়া কোন বিষয়ই জানিনা। আর, যাহা জ্ঞানি কেবল তাহাই কল্পনা করিতে পারি, বিপরীত কল্পনা করিতে भाविमा। वर्षाए व्यामता (कान विवयरक व्यवृष्टे, व्यक्तक, व्यनाचाक, আনামাদিত বা অম্পুই বলিয়া কলনা করিতে পারিনা। আর যাহা ক্ষানা করিতে পারি না তাহা বিশাসও করিতে পাবি না। স্তর্গং िवस मकां छ हेरेया चार्ह, त्कान ना त्कान विषयीत खानशाहत नह, केश आयता वियोग कदिएक भाति ना। विषय गाउँ करे जागानित्राहक लात्नित महिल अधिक विनिया विश्वाम कतिएक हर। এशन एक, योहा कारनत महिन बनिन, छात्नत महिन बनम्भिकिन्छार्व संभारक कार्ना यांत्र ना, ভावा यात्र ना, विश्वान कता यात्र ना, छाहा वख्छ: खारमण वार्वात, कान रहेट विकास वार्वात उत्तथ कार्य, व्यवतार वार्वा

হইতে অভিন্ন বলিয়া কিছুই ভাঝ যায় না। রূপ, রস, গন্ধ, শন্ধ, স্পর্শ এই সমুদয় প্রকৃত পক্ষে আ্যার অন্তর্গত, আ্যারই স্বর্গণ। এই সমুদয়কে জানিতে যাইয় আ্যা নিজের অতিরিক্ত কোন বাহ্ বস্তকে জানে না, আপনাকেই জানে, নিজস্বরূপকেই জানে। স্তরাং বিয়য়-বিয়য়ীতে প্রকৃত পক্ষে কোন ভেদ নাই। অসমাক্ জ্ঞানেই ভেদ, সমাক্ জ্ঞানে অভেদই প্রতিভাত হয়। প্রতিভ জ্ঞানক্রিয়াতে একটা অভিন্ন বস্তুই প্রকাশিত হয়; সেই বস্তুতে বিয়য় বিয়য়ার ভেদ নাই। সেই বস্তু আমাদের আ্যা ভিন্ন আর কিছুই নহে।

এই সকল কথায় শঙ্করের আপত্তি থাক। দূরে থাক্, এই সকল কথা তাঁহারই কথা। প্রশ্লোপনিষদ্ দ্বিতীয় প্রশ্লের ষষ্ঠ শ্রুতির ভাষ্যে ভিনি বলিয়াছেন, "বস্তুচ ভবতি পকিঞ্চিন্ন জ্ঞায়তে, ইভি চামুপপন্নম্। রূপঞ্চ দুগুতে ন চাস্তি চকুরিতিয়ে। নহি জ্ঞানেহ্দতি জ্ঞেয়ং নাম ভবতি।" অর্থাৎ "বস্তু আছে অথচ কিছু জানা যাইতেছে না, ইহা व्यमख्य। क्रभ (पथा याहेट छह, अथह हक्सू नाहे, हेश (मक्रभू कथा। ख्यान ना थाकिए (ख्रम थाकिए भारत ना।" भूनक, छिखितीम উপনিষদ্ বক্ষানন্দ বলীর দিতায়া শ্রুতির ভাষ্টে শঙ্কর বলিয়াছেন,— "आजानः अक्षां अधि नं ততো বাতি कि চাতে হতো নিতাৰ তথা পি वुक्तक भाधिन क्ष्मा वा कि क्ष्रां निष्यो विषया का ब्र-भित्रां विषया का ब्रां विषया का ब्र-भित्रां विषया का ब्रां विषया का विषया का ब्रां विषया का विषया का ब्रां विषया का ब्रां विषया का व काताव जामाट जाजाविकान ज विषय् ज्ञा छेर भग्नमा এवाजाविकारन वारिश উপপত্ত । তত্মাদাত্মবিজ্ঞানাবভাসাশ্চ তে বিজ্ঞানশব্দবাবাশ্চ ধাত্বপ্তুতা আত্মন এব ধর্মা বিক্রিয়ারপা ইতাবিবেঞ্জি: পঞ্জি क्झारख।" वर्शए—"बाजात चक्रभ खान। खान इट्ट बाजा कथन ९ विष्ठालिङ इस ना, श्रुज्ञाः छान निज्ञा ज्यापि जाणांत्र छिमाधिक्रमिनी (य वृक्ति, य वृक्ति ठक्क् त्रामि देखिक्ययाण विषेत्राकारत अञ्चित्र हम, त्रहे वृक्तित्र अवाणि विविधान नमूहत्क व्यापारिकारमञ्

বিষয় (স্থভরাং আত্মবিজ্ঞান হইতে স্বতন্ত্র) এবং উৎপদ্মনান বলিয়া বোধ হয়। किন্তু वञ्चलः এই সকল আভাস, যাহারা বিজ্ঞানশব্দ বাচা, এবং ধাত্র্থ ধরিলেও আত্মার ধর্ম, তাহাদিগকে অবিবেকিগণ বিকার विनिया कन्नना करत्र।" এथन कथा এই, জড়জগৎ यमि विজ्ञानक्री है इटेन, তবে শক्ষর সূত্র-ভাষ্যের দ্বিতীয়'।ধ্যায়ের দ্বিতীয়পাদে বিজ্ঞানবাদী বৌদ্ধের সহিত এত বিবাদ করিলেন কেন? তাঁহার ও বৌদ্ধের यङ कि मृत्न এकरे नरह ? जिनि वोष्क्रित्र विक्वानवारमञ्ज श्रीख्वाम করিতে যাইয়া কি প্রচলিত দৈতবাদের প্রশ্রম দেন নাই ? এই প্রশ্নের উত্তর এই যে বৌদ্ধ জগংকে বিজ্ঞানরূপী বলিতে যাইয়া য্দি বিজ্ঞানের প্রকৃত অর্থ গ্রহণ করিতেন, যদি বিজ্ঞানকে স্থায়ী ও এক বলিয়া বুঝিতেন, তবে শঙ্করের সহিত তাঁহার কোন মৌলক প্রভেদ থাকিত না। কিন্তু বৌদ্ধ যে বিজ্ঞানে সমুদয় পরিণত করিলেন मिंहे विकानकिहे जावात्र क्रिक ७ প্রবাহণীল বলিয়া ব্যাখ্যা कत्रिल्म। এथान्टे उांशत महिं भक्षत्तत প্রভেদ। 'विख्वान' बिलाटन दोक अक्री अश्रमी किया वृत्यन अवः त्मरे किया करे विषय विषयीत भिनमक्री अंदछन वस्त वनिया व्याथा करन। मृष्टि किया ७३ ক্রষ্টা এবং দৃষ্ট পর্যাবসিত। এই ক্রিয়া হইয়া গেলে দ্রষ্টাও নাই, পৃষ্টিও নাই। তেমনি ক্ষণস্থায়ী শ্রবণক্রিয়াতেই শ্রোভা ও শ্রুভ প্রাব্দিত, ইত্যাদি। 'বিজ্ঞানের' অর্থ ধদি ইহাই হয়, তবে বিজ্ঞান नारे। ऐक ভাষ্যে मक्षत ठारारे विवाहिन। आयात पृष्ठे भूषक थानि यामात्र पृष्टि कियात्र উপর নির্ভর করে না; বর্ঞ পুস্তকখানি बौकाटि वागात पृष्टि किया मखन इरेमाए। टिमनि पृष्टि कियात উপরে দ্রষ্টার অন্তিত্ব নির্ভর করে না; বরঞ্চ দ্রষ্টা থাকাতেই দৃষ্টি किया मछत हम। किया हरेबा शिराज विषय थारक, विषयी अशिक ।

व्यथवः, मृन कथ। विनिष्ठ গেলে, পেই বস্তু থাকে যাহাতে বিষয়-বিষয়ী একীভূত। দেই বস্ত থাকাতেই পূর্ব্যদৃষ্ট পুস্তক্তক পর্দৃষ্ট পুস্তকের সহিত এক বলিয়া চেনা যায় এবং পূর্বের দ্রষ্টার সহিত পরের দ্রষ্টার একত্ব উপ্লব্ধ হয়। প্রতি জ্ঞানতিয়াতে এমন একটা জ্ঞানবস্ত প্রকাশিত হয় যাহাতে সমুদ্ধ বিষয়-বিষয়ী নিত্যরূপে বর্তমান, যাহা থাকাতে সমুদয় জ্ঞাতৃত্ব ও জ্ঞেয়ুত্ব সম্ভব হয়। জ্ঞান যদি কেবল क्रियाक्रशी श्रेज, (क्वन छाज्य ६ (छ्यय स्रेज एरव क्रियात व्यवमारन কোন বস্তুই ণাকিত না। তাহা হইলে অন্তান্ত অবস্থা ছাড়িয়া দিলেও—সুষুপ্তির সময়ে একেবারে প্রশায় উপস্থিত হইত। সুষুপ্তির मभरत्र छ। हृद (छत्रद উভয়েরই অবসান হয়; তথন জীব জ্ঞানক্রিয়া করে না, বিশ্বপ্ত জ্ঞানক্রিয়ার বিষয়ীভূত হয় না। অথচ তথন যে জ্ঞাতৃ-জ্ঞেয়ের মূলীভূত জ্ঞানবস্ত বর্ত্তমান থাকেন, ভাহার কোন সন্দেহ নাই; কেন না স্বযুপ্তান্তে জ্ঞাতী ও জেয় উভয়ই পুন: প্রকাশিত হইয়া নিজ নিজ একত্বের পরিচয় দেয়। স্বতরাং বৌদ্ধ যে বিজ্ঞানকে ক্রিয়া ও প্রবাহ বলিয়া বর্ণনা করেন, ইহাতে কেবল তাঁহার সুলদর্শিতাই প্রকাশ পায়। বিজ্ঞান অস্থায়ী ও প্রবাহশীল হইলে সাদৃশ্র, একস্ব, স্থৃতি, বুদ্ধি কিছুই সম্ভব হইত না। "নহি কালত্রস্থ-সম্বন্ধিত্তেকস্মিন্ অম্বয়িগ্ৰস ত কুটভেবা ,সৰ্ব্বার্থদিশিনি দেশকালনিমিত্তাপেকবাসনাধীন-স্মৃতি-প্রতি-সন্ধানাদি-ব্যবহার: সম্ভবতি।" অর্থাৎ—"কালত্রম-সম্বন্ধী, क्यां कृष्टि वा नर्कार्थनणी क्षे कन नः याशकात्री ना थाकित तम, কাল, ও নিমিত্ত সাপেক এবং সংস্থারাধীন স্মৃতি ও পরিচয় প্রভৃতি बालात मध्य नंदर।" পূর্বোক্ত বিচার ছাড়া শঙ্কর ঐতরেয় উপনিয়ন্ विजीयाधारमञ्ज जार्या এই विषय्यत विष्ठ जारगाठना क्रियारहम्। मिरे जारगाइनात्र जिनि रेजिय-पिठ जियात्री कान, रय कान विष् विषयीत मरशास्त्र छिर्भन विषया द्यां द्यान अवर अहे स्वात्नत मृतीकु

আত্মগত জ্ঞান, যাহা নিত্য, প্রবাহাতীত, অপরিবর্তনীয়— এই দ্বিবিধ काम्ब প্রভেষ প্রদর্শন করিয়াছেন। আমরা এই বিস্তৃত বিচার हरेट इरे हारिती याज क्या উদ্ধার করিলাম,—"দে দৃষ্টা, हकू-ষোহনিত্যাপৃষ্টিং, নিত্যাচাত্মনঃ। তথা চ দে শ্রুতী, শ্রোত্রন্তাগ্রিত্যা, আত্মস্বরপস্ত চ নিত্যা। তথা মতী কিজ্ঞাতী বাহাবাহো" অর্থাৎ— "ৰিবিধা দৃষ্টি আছে, এক চকুর মনিত্যা দৃষ্টি, আর আত্মার নিত্যা দৃষ্টি। তেমনি শ্রুতি দ্বিবিধা, শ্রোতের অনিত্যাশ্রুতি, আর আত্ম-স্বরূপের নিত্যা শ্রুতি। তেমনি বাহ্য ও আভান্তর ভেদে মতি ও বিজ্ঞানও দ্বিবিধ।"

#### ৭। সাংখ্যমৃত খণ্ডন।

आहा, वोष्क्रत क्रिक विकानवान यन विख्य दहेन, चाशांक माध्या প্রভৃতির স্থায়ী বিজ্ঞানবাদের কি হইল १ বৌদ্ধ 'বিজ্ঞান' কথাটী বাৰ্শ্ছার করিলেও তাঁহার চিন্তা প্রকৃত পক্ষে বিজ্ঞান সোপানের চিন্তা নহে। তিনি 'বিজ্ঞান' বলিতে অহায়ী মনোবিষার বুঝেন, তাই আমরা তাঁহার দর্শনকে নিমু হইতে তৃতীয় সোপানে রাথিয়াছি। কিছ मार्द्यात्र हिन्छ। वज्र उन्हें हर्ज् माशान्त्र। मार्था जाजात्क स्त्री বলিয়া স্বীকার করেন। এমন কি ইহাকে বুদ্ধির অতাত, কাল ও পরিবর্তনের অতীত নিত্য, নিজিয় বলিয়াও অঙ্গীকার করেন। কিছ ভিনি ইহাকে অধিতীয় বলেন না। তিনি ইহাকে ইহার অভিরিক্ত অচেতন প্রকৃতির সহিত সম্পর্কিজ—এমন কি ভোগ সম্বন্ধে তাহার व्यथीन विनिन्ना वार्था करतन। व्याप्त हेशारक मःथार्ड वह मरम करतन। সাংখ্যের মতে আত্মা বহু, এবং বহু আত্মার মিলন স্থান কোন পর্মাত্মার প্রমাণাভাব। এই ছই বিষয়ে আত্মাভিরিক্ত প্রকৃত্তি चीकादत अवर जाणात वस्य कलनात्र—गारत्थात महिक नंबद्दत विद्याधा

সাংখ্যের বিপক্ষে শঙ্করের কি ব্লিবার আছে তাহা এখন গুনিতে হইবে। কিন্তু বোদ্ধের সহিত জড়ের জড়ত্ব অস্বীকার্ম করিতে যাইমা, জড়কে আত্মাতে ডুনাইতে যাইয়াই কি শহর সাংখ্যের প্রকৃতিবাদ थलन कर्द्रन नारे १ এरे প্रश्र जन यिन यात्राविज्ञानवाशि अवर আত্মার ধর্মই হইল, তবে আর-ইহাকে আত্মাতিরিক্ত শক্তিবিশেষের বিকার বলিয়া বণনা করিবার অবকাশ কোথায় ? প্রতি জ্ঞানজিয়াজে यिन विषय विषयीत भिनन सान, विषय विषयी ভেদের অভীত এক অদ্বিতীয় বস্তুই প্রকাশিত হয়, তবে আর সাংখ্যের দ্বৈত্বাদের স্থান কোথার ? সাংখ্য বলিবেন স্থান যথেষ্ঠ আছে। তুমিই নিজেই স্বীকুরে করিতেছ, আত্মা নির্বিকার, নিত্য, নিজ্ঞির, অভেদ। অথচ দেখিতেছ, জগৎ বিকারময়, অনিত্য ক্রিয়াময়, তেদযুক্ত। স্থতরাং তোমার বুঝা উচিত যে এরপ জগতের কারণ কথনও আত্মা হইতে পারেন না। আত্মাকে জগতের কারণ হইতে ইইলে নিজস্বরূপ হইতে বিচ্যুত হইতে হয়। স্থতরাং প্রাপঞ্জগতের কারণরাপে আত্মাতিরিক্ত একটা শক্তি স্বীকার করিতে হয়। আমার কলেতা প্রকৃতি সেই শক্তি। আরু আত্মার বহুত্বের প্রমাণ ত পড়িয়াই আছে। আমাদের ভোগ ভিন্ন িন্ন, উন্নতির পরিমাণ ভিন্ন ভিন্ন; বছ আত্মা স্বীকার না করিলে এই ভিন্নতার কোন ব্যাখ্যাই হ্র না। সাংখ্যের এই সকল কথার উত্তর (১) শঙ্করের মায়াবাদ, (২) তাঁহার বিশুদ্ধাধৈতবাদ। এই ছটা মডের বিশদ ব্যাখ্যার জন্ম একটা বা ততোহধিক স্বভন্ত প্রবিদ্ধের প্রয়োজন ; ञ्च ज्ञाः वर्षमान व्यवक्ष ध्यात्म र (भव कृतिनाम।

শ্ৰীদীতানাথ তত্ত্যণ।

# উজित ञुक़िन।

## 

সাদের থলিফা আমির ছদেনের অভ্যাদ ছিল, তিনি ছন্মবেশে একাকী রাজধানীর সর্ব্বত্র পর্যাটন করিয়া লোকের কথাবার্ত্তা গোপনে শুনিতেন; ইহা কতকট। তাঁহার ভারপরায়ণতার আর্ফুল্য করিত এবং অনেকটা তাঁহার কৌতূহল চরিতার্থ করিত।

একদা অন্ধকার রাত্রে এই অভিপ্রায়ে তিনি তাঁহার প্রিয়পাত্র উলির মুক্দিনের বাড়ীতে যাইয়া উপস্থিত হইলেন। যে গৃহে উলির ও তাঁহার জা শরন করিতেন, সেই গৃহের সনিহিত হইয়া ইহাদের আলাপ শুনিবার জন্ম বিশেষ্ট্র কোতৃহলী হইয়া পড়িলো দেই অন্ধকার রাত্রে একটা পেচকের তীব্রকণ্ঠ যেন তাঁহার এই অমুদ্রি কোতৃহলকে ভৎ সনা করিল। দেয়ালের ছায়া যে স্থানে রাত্রি আঁধারকে নিবিড়তা প্রদান করিয়াছিল, সেই স্থানে অপরাধীর হ বাদসাহ দাঁড়াইয়া উজিরের গবাক্ষে কর্ণ পাতিয়া রহিলেন, উলি বিয়জিনী বলিতেছিলেন—

শ্বার বাচালতা কর্ত্তে হ'বে না, এখন ঘুমিরে পড়, আবার প্রাতে ঘন্টা বাজিয়া উঠিলেই তো দরবারে ছুট্তে হবে। দিনের বেলায় ডে ভোমার বিশ্রামের অংসর নাই, কাল ঢের রা'ত জেগে কি লিখেছ এখন ঘুমাও।"

छिन्त्र।—ना शा, कान ना रम निथ निथ जिल्ल हि, आब जामा इसमूथ मिथ जाग्व; गामिकामित एएक भाषाहे, करनक मिन गा बाजनात हकी रम नारे—आज समूकि ना। উঞ্জির-পত্নী।—আর রসিক্তা কর্ত্তে হবে না—চের হয়েছে, রাজ জেগে জেগে অহুথ হয়ে পড়বে।

উজির।—কাল দরবারে যাব না।

উজির-পত্নী।—বাদসাহ তোমায় বরতরফ কর্বেন।

উজির।—বাদসাহকে আমি ব্রবতরফ কোর্ক।

উজির-পত্নী।—দরবারে না গেলে কৈফিয়ত দিতে হবে না ?

উজির!—সমাট আমির হুদেনের কাছে আমার কৈফিয়ং! তিনি বাদসাহ আমি উজির, এ সম্বন্ধ ভূলে গেছি,—তিনি পিতার চক্ষে আমার দেখেন।

উজির পত্নী।—তা কি আমি জানি না!

এই সময়ে ঈষজ্মুক্ত গবাক্ষের, পার্শ্বে সম্রাট একটু উঁকি মারিয়া দেখিবার চেষ্টা পাইতেছিলেন, প্রথর দীপের আলো তাঁহার মুখের উপর পজিল; উজির-রমণী সঙ্গা মতি মৃত্যুরে স্বামীকে বলিলেন, "একটা কে জানেলা হ'তে দেখুছে!"

উজির শশব্যস্ত হইয়া উঠিলেন ও আস্তে আস্তে দরজা খুলিলেন—
সমাট ভাহা দেখেন নাই। উজির দরজা খুলিয়াই তাঁহার সন্মুখান হইয়া
দেখিলেন,—একটা লোক সন্দেহাত্মকভাবে তাঁহার গৃহের জানেলার
পার্ষে মুখ বাড়াইয়া আছে। উজির "গোলাম চোর, অন্দরমহলে
ঢুকেছিদ্" বলিয়া উন্মুক্ত তর্বারীর আঘাতে একেবারে তাঁহার শিরশ্ছেদ
করিয়া ফেলিলেন। সমাটের বাক্য বাহির হইবার পুর্কেই তাঁহার
প্রাণ বাহির হইয়া গেল।

সেই অন্ধকার রাত্রে সহসা একটা হত্যা করিয়া উজির কতকটা চিস্তিত হইয়া পড়িলেন—উজির-রমণী আতক্ষে দীপহস্তে বাহির হই-লেন—আবার সেই দীপশিখা সম্রাটের মুখের উপর পতিত হইল। বাদসাকে চিনিতে পারিয়া উজির ক্ষজিত হইয়া গেলেন—সকল কথা

यदन रहेन-नाममार स्वादिष्य माटक व्यत्निक स्वादन स्वित्र (वकारेटकन, क्किन केकिन निरम काराम मनी रहेग्रास्न।

নিংশকে স্বামী-স্ত্রী তৎক্ষণাৎ একটা স্থান থনন করিয়া বাদসাহকে স্বাহিত করিলেন। উজির সজলচক্ষে স্ত্রীর প্রতি চাহিয়া বলিলেন—
"এ কথা কাহাকেও বোল না, আমি চলিলাম, এই পাপের প্রায়শ্চিত না করিয়া আমি ফিরিব না, আমি রাজহত্যা—পিতৃহত্যা করেছি।
ভূমি কা'ল রটিয়ে দিও, বাদসাহ উজিরকে লইয়া মৃগয়ায় গেছেন।"

উজির বনে বনে দেশে দেশে ঘুরিতে লাগিল—বাদসাহ-হীন বোগদাদে পুনর্বার যাওয়ার কথা তিনি ভাবিতে পারিতেন না—তাঁহার অন্তর্দাহ হুইড; তিনি বোগাদে যাইয়া কলাই প্রচার করিতে পারিতেন, বাদসাহ শিকার করিতে যাইয়া ব্যাদ্র কর্তৃক নিহত হইয়াছেন—তাহা হইলেই বেগমমহলের কালাকাটি ও প্রজাগণের আজি কয়েক দিন সজাগ থাকিয়া অপনাআপনি থামিয়া যাইত; কিন্তু তিনি আবার কোন্ প্রাণে নৃত্তন এক বাদসাহের পার্শ্বে উজির হহয়া বসিবেন। রাজহত্যা অপরাধের একটা দণ্ডের জন্ম ধেন তাঁহার মন ব্যগ্র হইয়া পড়িত। তিনি তিন দিন—তিন রাত্রি নিরমু উপবাস করিয়া একটা গভীর कक्लाव मधाः यारेमा পिएलिन। उथन मसा। এर माज नामिएएए, चर्छामूथ সূর্য্যের রক্তিমাভা সন্ধারে নীলবসনপ্রান্তে সোহাগের বিদায়-न्मर्न कानारेया निः नय्न गम्यागूथ रुरेया त्रियाह— উक्तित काथाय थाकिरवन- এই निविष জঙ্গলে कि ভাবে রাত্রি যাপন করিবেন-ভাষা ক্ষণতব্বেও ভাবিতেছেন না; তাঁহার প্রাণের ভিতর একটা "কি হইল, कि रहेन अवि श्रिक्षित्व रहेर छिल। जरुमा এर जमम এकि यसुग्रमुर्खि দেখিয়া তিনি স্তম্ভিত হইয়া অশ্বের গতি থামাইলেন।

তাহার বরস ২৪এর কিঞ্চিৎ উর্দ্ধে হইতে পারে। একথানি মাত্র বস্ত্র দেহের নগতা কোনওরূপে, ঢাকিয়া রাণিয়াছে, মুধে মনস্বীভার

প্রভা—কেশ জটাবদ। অপর কেই এই ব্যক্তিকে দেখিলে মনে করিত, সে একজন তরুণ তপস্বা। বিশেষরূপ লক্ষ্য করিবার তাহাতে किहूरे हिन ना ; किन्न डेकिंत जान्हर्या रहेशा (मिथ्रिन-ध यन मृक বাদসাহের একটা প্রতিচ্ছায়া—তাদৃশ গঠন, তাদৃশরূপ, তাদৃশ হাঁটিবার তীন, আমির হুদেনের বয়ক্তম ৫৪ বংসর ছিল: তাঁহাকে দেখিয়া তাঁহার বিংশতি বৎসর পূর্বের মূর্ত্তি যদি কেহ কলনা করিতে চাহিত, তবে অনেকটা এই ফকিরের মতনই একটি মূর্তি মনে গড়িতে হইত। তিনি এই তরুণ তাপদকে দেখিয়া বিশ্বিত হইলেন---প্রীত হইলেন / তিনি কি যেন খুঁজিতেছিলেন—সেই সন্ধানের ফল-স্বরূপ তাঁহার মন এই সৃর্তিটি বরণ করিয়া লইল।

অশ হইতে অবতরণ পূর্বক উদ্ধির ফকিরকে বলিলেন— "তুমি কে, কোথায় যাচ্ছ ?"

कित-यां कि नः नात्र- अत्नकिन नः नात्र (मिथिनि, এकवात्र (मिथ्व। উজির—আছা বেশ, আমি তোমার্ম সংসার ভাল ক'রে দেখাব। শুন ফকির, আমি ভোমাকে বাদগাহ কোর্কা, তুমি রাজতক্তে व'रम त्राकामामन कर्छ भार्ख ?

ফকির—বেশতো, ফকির ছাড়া এ কার্য্যের যোগ্য লোক তুমি আর (পलिना ?

**डिकित—(म मकन विठात (जामात मक्न এशाल कर्छ हरवना। वानमाह** इ'एक हाल आभि या' या' वल्ब, मिरे ब्रक्म मरे कर्छ इरव।

ফকির স্বীকৃত হইল। উজির পথে এক সহর হইতে মূল্যবান পরিচ্ছদ ক্রম করিয়া তাহাকে পরাইলেন, আর একটা আচ্ছাদন প্রস্তুত कत्रिया नहेरनन-ज्यात्रा कित्रदक र्वान्नाम প্रदिर्भन्न नमन् अक्रांस क्षानीर्य जित्रा गरेश (शरणन।

(बाम्नाल जानिश डिजित त्रहेनां कित्रीता नित्नन, वानगार्क अक

কাকর এরপ ঔষধ দিয়াছেন যে তাছাতে িান নব যৌবন লাভ করিবেন—তাঁগর থৌবন ফিরিবে কিন্তু পূর্ব স্মৃতি অনেকটা লুপ্ত হইবে। বাদসাহ একমাস ঔষধ দেবন করিবেন, এই একমাস উজির ভিন্ন কেহ ভাঁহার দক্ষে দেখা করিতে পারিবেন না।

একমাসে উজির ফকিরকে রাজ্য শাসন সম্বন্ধে সকল ব্যাপার বুঝা-हैया मिलान, काहात महिल किक्रभ तावहात कतिएक हहेरन, मिथाहेलन, এবং মাসাত্তে একদিন তাঁহাকে দরবারে আনিয়া উপস্থিত করিলেন; **मकल्य व्याक्ति** रहेश (शय ;— श्वामात क्रिकामर् कि ना हहेर्ज शास्त्र, বলিয়া বড় বড় মোলারা শুষ্ফ ও শাশ্তে তা' দিতে লাগিল, তৃতীয় পক্ষের অধিকারভুক্ত অনেক বুদ্ধ এই ২ হাষ্ধ প্রাাল্যর জন্ম উজির সাহেবের দরবারও করিয়াছিল—উজির তাহাদিগকে হাঁকাইয়া দিলেন।

द्राष्ट्रा এथन উজिद्रहे मर्त्वमर्का। क्रित्र উজिद्र-क मार्टाद्रा শাসনভরণী বেশ দক্ষতার সহিত চালাইতৈ লাগিলেন।

কিন্তু উজির মনে মনে ফকিরকে ঘুণা না করিয়া থাকিতে পারিতেন ना,—তিনি ভাবিতেন, "এটাকে বন হইতে ধরিয়া আনিয়া বাদ্নাহের তক্তে বসাইয়াছি, এটা যে কি' ত।' আমি জানি।" তিনি সর্বাদা একটা উপেক্ষার সহিত দরবারে বাদসাহকে কথা বলেন: বাদসাহের মনোরঞ্জন করা দূরে থাকুক, তাঁহার প্রীতিভঞ্জনের গ্রাহা কিছু অমুষ্ঠান-ক্রম-বর্জিঞ্ স্পর্জায় তিনি তাহার কিছুই করিতে বাকী রাখিলেন না। করায়ন্ত ক্ষমতার কবির ক্রমে একজন পূর্ণাঙ্গ বাদসাহ হইরা উঠিরাছিলেন। প্রথম প্রথম উজিরের কথায় তিনি ততটা বিরক্তি দেখাইতেন না : কিছ শেষে উজিরকে দেখিলেই যেন তিনি একটু আত্ত্বিত হইয়া পড়িছেন; ভাঁহার কথার বাদসাহের মুখে কখন মনঃপীড়ার বিবর্ণতা, কখনও বা क्यार्थत त्रक्तियां । कृषित्रा উठिए। नत्रवाद्य प्रत्निक्ट छेक्दित्रत প্রভূবে নির্মানিত ছিল; বাদসংহের বির্ম্ভির স্কৃত্য অবস্থা লক্ষ্য

कत्रिवात्र জग्र व्यानक भाष्य व्यक्ति । त्रिवात्र व्यापका कत्रिक हिला । তাঁহাদের উত্তেজনায় বাদসাহের ক্রোধ ক্রমশঃ বদ্ধিত হইতে লাগিল এবং একদিন তিনি প্রকাশ্ত দরবারে উজিরকে কার্য্য হইতে জবাব দিলেন এবং দরবারে আগমন তাঁহার নিষিদ্ধ এই আদেশ ঘোষণা করিয়া দিলেন। যে উজির ফকিরের রাজতক্ত প্রাপ্তির স্বপ্ন স্ফল করিয়াছেন ভাবেয়া অহঙ্কারে পর্বতাকারে ক্ষীত হইয়া উঠিয়া-ছিলেন, তিনি এরণ্ডের মত কুদ্র হইয়া মান মুখে স্বীয় গৃহে প্রবেশ করিলেন। রাজকর্মচারীদের ষড়যন্ত্র গৃহ পর্যান্ত তাঁহাকে অনুসরণ করিল; নিকাশের দায়ে তাঁহার সম্পত্তিও গৃহাদি সমস্ত খাসভুক্ত रुरेश (गल। উভিরের পত্নী বলিলেন—"যিনি সিংহাসনে আসীন তাঁহার সঙ্গে এরপ ব্যবহার করিও না. আমি কতদিন বলেছি—থে ভাবেই সিংহাসন পাইয়া থাকুক না কেন—ফকিরকে এথন ফাঁকর জ্ঞানে তুচ্ছ করা তোমার অন্তায় হইয়াছে। তোমার বিরুদ্ধে যথন ষড়যঙ্কের স্ত্রপাত হয়, তথনই আমি তোমাকে জানাইয়াছি—তুমি আমার কথা গ্রাহ্ম কর নাই-এথন গোষ্ঠী শুদ্ধ অনশনে মৃত্যু নিশ্চিত দেখিতেছি।"

উজির এখন মনে মনে অনুতপ্ত হইয়াছেন কিন্তু উপায়ান্তর নাই। একবার বাদদাহের কাছে নির্জ্জনে যাইয়া তাঁহাকে ধরিতে পারিলে, তাঁহার রূপা উদ্রেক করিবার সম্ভাবনা ছিল, কিন্তু তাঁহার বাদসাহকে দেখার কোন স্থবিধা নাই—দরবারে প্রবেশ তাঁহার পক্ষে নিষিদ্ধ।

একদা অমুতাপ-পীড়িত উজির নদীর তীরে বসিয়া স্বীয় অবস্থা স্মরণ করিতেছিলেন, তাঁহার চক্ষের কোণে গুটিকতক অশ্রু এক ৰাক্টি করিয়া গণ্ডে পড়িতেছিল তিনি তাহা মুছিতে ভুলিয়া গিয়াছিলেন। নিতান্ত তঃথিত চিত্তে তিনি নদীর দিকে শুম্ম মনে দৃষ্টিপাত করিতে-ছিলেন, এমন সময়ে তিনি দেখিতে পাইলেন ছইটা অতি স্থলর বুহৎ कन नमीटि जिमिश यारेटिट्ह; जिनि नमी-कंटन नामिश जारा जुनिश

नहेरनन এবং একটির থোসা ছাড়াইয়া তাহা আসাদন করিদেন। लाहे करनत जन्म विष्ठेष ७ स्त्रिक्टि डांहात त्रमना मूक हहेता राम। किनि এक ए किर्देश कि किर्देश जाश्वामन शूर्यक श्रीय निष्ठ मञ्जान खनिरक व्यविष्टाः न नित्नन किन्न वर्ष कलि वानमाइ क एन अयात क्रम नत्रवाद्य गरेशा (शत्मन।

তখন বাদদাহ শ্যা স্ইতে গাতোখান পূর্বক এই মাত্র দরবারে আসিয়া বসিয়াছেন, তাঁহার চোথের ঘুম এখনও ভাঙ্গে নাই। সুযুগ্ডি ও জাগরণ যেন তাঁহার অক্ষিপত্রে তথনও যুদ্ধ করিতেছিল। मोवातिक উक्तित-मञ् कर्नां वहेशा वहः मिनाम পूर्वक छाहात পार्ख রাখিল—তাঁহার ঘুম ঘোর ভাঙ্গিয়া গেল। ভৃত্য বলিল 'জাঁহাপানা क्त्रथा छ छित्र मार्ट्र এই ফলটি জাঁহাপনাকে উপহার দিয়াছেন এবং সাক্ষাতের প্রত্যক্ষায় দ্বারে দাঁড়াইয়া, আছেন। বিপশ্দলের নেতা नव निष्कु डिकित वाधा निया विक्राक्ष कथा विनाट गारेटव, ७९ शूर्क्र ৰাদশাহের ছকুম হইল, বর্থাস্ত উজিরকে লইয়া এস।

বছং কুর্ণিদ করিতে করিতে উজির মুরুদ্দিন দেই দরবারে উপস্থিত হইলেন; তাঁহার শীর্ণ অনশন-ক্লিষ্ট মুথথানি দেখিয়া দরবারে তাঁহার শক্ত পক্ষীয়গণও যেন একটু শিহরিত হইয়া উঠিল। বাদসাহ জাঁহার मिटक नका ना कतिया विनालन—"(তाমার ফল পাইরাছি, বছৎ আছা कन, এইরপ এক শত ফল যদি এক মাস কালের মধ্যে সংগ্রহ করিয়া শা দিতে পার, তবে তোমার গৃহের অবালবৃদ্ধবনিতার সহিত তোমার শির ক্তিত হইবে।" উজিরের নিতাস্ত শক্রও এতটা মনে ভাবে নাই। जक्टो जक्टे जाउएकत यत भिट्ट मछ। गृरहत भर्धा भाकुणि वााक्णि इंद्रिट लाशिन—नवनियुक উজित्र मिनाम कतित्रा विनिलन "बाँश-नैनात्र जात्मन राष्ट्र कठिन इहेशाहि— এवात्र मान कक्रन।"

बामगाह कान छेउन मिल्यन ना, क्विन উक्त कर्ड "बाउ" এই

कथा विनद्या सूक्षणित्वत প্রতি চাহিলেন, ভীত পদে অগ্রসর একখানি শরতের মেঘকে যেরূপ প্রবল কার্তিকের বাত্যা দুর্র করিয়া দেয়, লেই चारिन (वनशूमान सूक्षिनक (महेक्राप मत्रवात हैरेड जाड़िज कतिया मिन।

মুরুদ্দিন আর গৃহে গেলেন আ। এক মাদ পরে সকলকে একত্ত মরিতে হইবে; শিশুগণের হত্যা ত্রিনি দেখিতে পারিবেন না। সেই कल इहें जिथा हहे जि जानिया जानियाहि क काता। এই বেগে । জন্ম কটোইয়াও দেরূপ ফল তিনি চক্ষে দেখেন নাই। এবার নদীগর্ডে তিনি ফল বা মৃত্যুর অমুসন্ধান করিয়া দেখিবেন—যাহা পাইবেন, তাহাই লাভ।

নদীতারে তিনি বসিয়া বসিয়া দেখিতে পাইলেন, আর একটা ফল षष्ट्रकर्ण পরে ভাসিয়া আসিতেছে। নদীর উজানদিকে ভিনি ক্রমে চলিতে লাগিলেন। ঐ ফল नेमौठोत्रवर्डी কোন বৃক্ষ হইতে প**ভিভ** হইতেছে কি না, তাহাই আবিষ্কার করিবার জন্ম তিনি ক্রমাগত অগ্রসর हरेट नागितन। कैय एरे जिनि कि तिया मःगृरोज कत्त्र मःथा वृद्धि পाইতে লাগিল, তাঁহার নিরাশ ক্রমে ক্ষীণ আশার সঞ্চার হইল। ক্ষুধাভৃষ্ণার প্রতি একাস্ত উপেক্ষা করিয়া তিনি দশ বার দিন পর্য্যটন করিল এবং ২৫।৩০টি ফশ্সংগ্রহ করিতে সমর্থ হইলেন। সহসা একদিন निर्मागर्ज इन्टें उपिन এक्षी मम्किम जाँशात्र मृष्टिभाष পতिত इन्हेन। निनेत्र এक जीदि उर्भन्न अकि वृक्ष वक्ष-विश्वात शृक्षक कननीत्र वाह्रत তার শাখাপল্লব দারা সেই মস্জিদটিকে ঘিরিয়া রাখিয়াছে—তাহা চইতে অজ্ঞ স্বর্ণবর্ণা ভ স্বর্রান্ত ফল মন্দিরে ও জলে পতিত হইতেছে। উল্লিব হুট মনে সম্ভরণপূর্বক সেই মদ্জিদে প্রবেশ করিয়া দেখিলেন ভাহার তিনটি দার। ছই দারে ছই জন দরবেশ নিমীলিভনেত্রে ভপক্তা করিতেছেন এবং ভূতীয় বারে একটি অতি সমুন্নত আসন শৃন্ত রহিয়াছে।

উজির সেই স্থান হইতে বুক্ষের ফল সংগ্রহে ব্যস্ত ছইলেন। তথন চুইজন সাধুর তপোভঙ্গ হইয়া গিয়াছে, তাঁহারা উজিরের প্রতি মিড মুখে मुष्टिनिक्कि पूर्विक विनिनिन-"ফল সংগ্রহের জন্ম কন্ত করিতে হইবে ना, আমরাই ফল দিতেছি।" উজির সেই শূন্ত আসনটির উপর পদ क्रका किश्रिया कल পाড़िতেছिलिन, माधूदा विलिलन—"এই আসনে পाप-न्भार्न कति । ना देश जागामत खक्त। "

উজির সম্রমের সহিত সহিয়া দাঁড়াইলেন এবং করজোড়ে জিজাসা করিলেন—"আপনাদের গুরু কোথায়, একজন সাধু উত্তর করিলেন— "শুরুদেবের পাদখলন হইয়াছে। বহু বৎসর তপস্থার পর তাঁহার সহসা পার্থিব ঐশ্বর্যাের কামনা হইয়াছিল, তিনি আমাদিগকে ছাড়িয়া গিয়াছেন। তিনি এখন বোগাদের খলিফা; তুমি এই ফল ও আমাদের লিখিত পত্র তাঁহার নিকট লইয়া যাও।" উজির মনে মনে নিজের· कुछ । এখন অশেষরপে উপলব্ধি করিলেন। এই বিশ্বনিয়ন্তার গজ্যে স্বীর বিরাট কর্মফলের স্তপের উপর দাঁড়াইয়া প্রত্যেকে তাহার ভ'গোর দান লাভ করিতেছে। উজির তপস্থীর কামনা-সিদ্ধির পক্ষে একটা मामाग्र जुप्तत मङ উপলক্ষ হইয়া অহংকারে স্ফীত হইয়া উঠিয়াছিলেন, দেই স্পদ্ধা তাঁহার একবারে নির্দাল হইয়া গেল। তিনি নিজে জগতে কত কুদ্র, ভাহা বুঝিতে পারিলেন।

ফল লইয়া যথন এবার উজির দরবারে উপস্থিত হইলেন, তখন "বাদসাহ নিজে আসিয়া তাঁহাকে সাদরে সভাগৃহে লইয়া গেলেন এবং ছর্কোধ অক্ষরে লিখিত ভাপদ-প্রদত্ত লিপির প্রতি দৃষ্টিপাতপূর্বক উজিরকে আলিজন করিয়া বলিলেন, "এই বোগ্লারের সিংহাসন উজির सूक्रिक्तित প्रापा—चामि ভগবৎ আরাধনার জন্ম বনে চলিলাম।"

#### शिमोदनमहस् तमन।

## (वटम शृथिवोत गि ।

প্রহায়ণের ভারতীতে শ্রীরিধুশেখর শাস্ত্রী পৃথিবীর বৈদিক নাম বিচার করিয়া স্পষ্টই দেখাইয়াছেন পৃথিবীর গতি ঋষিগণের অজ্ঞাত ছিল না।

শুরু যজুর্বেদ-সংহিতার নিম শ্রুতিতে উহা স্পষ্টই উক্ত হইয়াছে, যথা—

সমাববর্ত্তি পৃথিবী সমুধা সমুস্ধ্যঃ। সমুবিশ্বমিদং জগৎ॥ (২০অঃ। ২০)

অর্থাং পৃথিবী সম্যক আবর্ত্তন করিতেছে, উষা বা দিবস, স্থ্য এবং সমস্ত জগংও আবর্ত্তন করিতেছে। যদিচ মহীধর স্বীয় কালের সংস্থার অনুযায়ী পৃথিবীর আবর্ত্তনের অর্ধ বোধ করিতে না পারিয়া সম্যক আবর্ত্তনের ভাবার্থ "নাশ হয়" এইরূপ মনে করিয়াছেন কিন্তু তাহা না করিলে কিছু ক্ষতি হয় না। পৃথিব্যাদি সচল এরূপ করিলেও অর্থের সৃষ্ঠি হয়।

ঐতরেয় আরণাকে স্পৃষ্টই উক্ত হইয়াছে যে স্থোর প্রকৃত উদয় বা অস্ত নাই। ইহাও পৃথিবীর দৈনিক গতিজ্ঞানের পরিচায়ক। Haug's Aitareya Brahman Vol. I. p. 242 note দ্বন্তবা।

খাথেদের অনেক স্থলেই সূর্য্য যে পৃথিবীর ধারক তাহা উল্লিখিত হইরাছে। যদিচ প্রায়শ ধারণ অর্থে তাপাদি দিয়া প্রাণিদের রক্ষা। করা এরূপ অর্থ অনেক স্থলে স্থাসত কিন্তু ১০ মণ্ডলের ১৪৯ স্থক্তের একটী ঋক্ স্পন্তই অন্তর্রপ অর্থের। সেই ঋক্টি এই, সবিতা যদৈ পৃথিবী মরমানা স্কর্থন সবিতা দ্যাম দৃং হওঁ।

অর্থাৎ সাবভা যন্ত্রসকল (সংযমন শক্তি) দ্বারা পৃথিবীকে ধারণ করির স্বহিন্নাছেন, রোধশুস্ত হইয়া সবিতা ছালোককে ধারণ করিয়া রহিন্নাছেন। ইহা কি মাধ্যাকর্ষণের স্তক নহে ? এতদ্বতাত প্রাচীনগণের भात्र करमका व्यमाधात्र भर्यात्वक कथि इहेट हि।

চন্দ্র যে নিজ কক্ষ ভ্রমণকালে একবার আবর্ত্তিত হয় তাহাও তাঁছারা জানিতেন। পিতৃগণ চন্দ্রের অপর দিকে থাকেন; অমাবস্থার সমর তাঁহাদের দিন এবং পূর্ণিমায় তাঁহাদের রাতি। এই সিদ্ধান্ত চল্লের আবর্ত্তন জ্ঞান বাতীত হইতে পারে না।

আধুনিক বৈজ্ঞানিকগণের সর্কবাদিদমত মত এই যে, পৃথিবী - পুর্বে আগ্রময় ছিল, পরে ক্রমশঃ তরল ও পরে এইরূপ কঠিন হইয়াছে, এবং ইহা পূর্বে সূর্যা হইতে বিচ্যুত স্থাাংশ, এই মতও বিজ্ঞানিকগণ প্রায়শ গ্রহণ করিয়াছেন। এবিষয়ে মার্কণ্ডেয় পুরাণে আছে (৭৮ অঃ)

> মুমোচ স্বং তদা তেজ স্তেজ্পাং রাশিরব্যয়ঃ। যক্তম ঋত্মায়ং তেজো ভবিতা তেন মেদিনী॥

অব্যয়, তেজ সকলের রাশিস্করপ (সূর্যা) দেই কালে স্বীয় তেজ ত্যাগ , করিয়াছিলেন। তাঁহার সেই ঋত্ময় তেজ হইতে মেদিনী উৎপন্ন स्हेशारह।

মহাভারত মোক্ষ ধর্মে আছে—

সোহগ্রি-মারুভ সংবোগাৎ ঘনত্বমূদপদাতে॥ তস্তাকাশং নিপততঃ স্নেহ তিষ্ঠতি যোহপর:। স সংঘাতত্বমাপন্ন ভূমিত্বসম্গচ্ছতি॥

অর্থাৎ সেই অগ্নিমারুত সংযোগে ঘনতা প্রাপ্ত হয়। আকাশে া নিপতিত সেই অগ্নির যে অন্ত স্নেহ ভাব বা তরলাবফাঁ হয় তাহা সংখাত া বা কঠিনতা প্রাপ্ত হইয়া ভূমিত্ব প্রাপ্ত হয় ।

গত প্রায় ৩০ বংসর হুইতে যে সৌরকলক লুইয়া মুরোপে এড

অমুশ্রান হইতেছে তাহাও প্রাণীনগণের অজ্ঞাত ছিল না। পুরাণে কথিত মাছে বিশ্বকর্ম। স্থ্যকে নির্মান করিয়া চঁক্রের বারা তাহার অক্সের কতক কতক অংশ কাটিয়া দিয়াছিলেন, তাহাতে স্থ্যের অক্সে 'স্থামকা' হইয়াছে; তাহা যে দেশে দৃষ্ট হয়, তথায় নানা প্রকার স্কর্দেব বটে।

> প্রয়বেক্ষক কাপিলাশ্রম।

# ছোটনাগপুরের উৎসবাবলী।

তিনাগপুরের পার্কনের মধ্যে করমা, জিতিয়া, দশহারা, গোধন, ছট, ফাজ্রা, প্রভৃতি কয়টীই প্রধান। ভাত্রমাসে শুরুপক্ষীয় একাদশী তিথিতে করমা উৎসব অফুষ্ঠিত হয়।—মহিলাগণ সমস্ত দিবস উপবাস করেয়া থাকেন। রজনী সমাগমে যখন স্থাকরের রজতালোকে দশদিক ভিজিয়া উঠে, তথন তাঁহায়া স্নানাম্ভে প্জোপকরণ লইয়া বাহির হন। প্রফুল্ল কুস্থম-শোভিত দীর্ঘ-শাথা-বিস্তারী করম রক্ষতলে তাঁহাদিগের এই য়য়ানীত প্রীতি ও ভক্তির উপহার নীত হয়। তৎপরে প্রোহিত-সাহায়েয় যথাবিহিত পূজার পর তাঁহায়া গৃহে প্রত্যান্বর্জন করেন, সে দিন আর জলস্পর্শ করেন না। পরদিন প্রাতঃ বালির হইয়াছে, এবং গৃহ হইতে গৃহাস্তরে গমন করিতেছে (নিয় শ্রেণীর লোকে)। স্ত্রীলোকেরা মনানন্দে গান গাহিতেছে আর প্রয়ের মানর\* বাজাইতেছে। এই নৃত্য গীত সমাপনের পর তাহারা গৃহহ

<sup>\*</sup> খোলের স্থার এক প্রকার বাদ্যযন্ত্র।

আ্লিয়া আহারাদি করিয়া থাকে, এবং এইরূপে করমার পার্কন শেষ হইয়া যায়। ভাতার মঙ্গলার্থে মহিলা গণ এই ব্রতের অমুষ্ঠান করিয়া থাকেন। শুনিতে পাওয়া যায়, পূর্বে অনার্য্য পার্বভীয় জাতিদিগের মধ্যে এই পর্ব্ব প্রচলিত ছিল, কিন্তু এখন ইহা উচ্চ সমাজেও প্রবেশ লাভ করিয়াছে।

করমার পরই জিতিয়া।, আখিন মাদের শুক্লপক্ষীয় পূর্ণিমা ডিথি এই পূজার দিন। পূজা প্রকরণ প্রায় সমস্তই করমার তায়, করম-বুক্ষের পরিবর্ত্তে এই উৎসবে জিভিয়া দেবী পুজিত হইয়া থাকেন, এইমাত্র প্রভেদ। এই উৎসব উপলক্ষেত্র ছোটনাগপুরী মহিলাগণ দেবতা পুজনোদেশে निশीथ সময়েই বাহির হইয়া থাকেন এবং তৎপর-দিবদ পূর্বোক্ত প্রকারে গীত বাগুও হইয়া থাকে। সন্তানের মঙ্গল কামনাই এই ব্রতের উদ্দেশ্য।

শারদাগমে বঙ্গ থেরূপ উৎসবের আয়োজনে মাতিয়া উঠে, ছোট-নাগপুরে তাহার কিছুই দৃষ্ট হয় না। প্রতিমা পূজা এথানে প্রচলিত নাই। কিন্তু তাহা হইলেও পূজার দশমীর দিন এথানে আনন্দ কোলাহল শ্রুত হইয়া থাকে। ঐ দিবদ তাহারা আত্মীয়, বন্ধু ইত্যাদির সহিত দাক্ষাৎ ও সম্ভাষন করে ও পরস্পরের গ্রীতি উৎপাদনে যথাসাধ্য **टि**ष्टी कित्रिया थाटक। बाक्राभिता यवभीयाभि कहेग्रा शृंद्ध शृंद्ध कि বা শুদ্রদিগকে আশীর্কাদ করিয়া যান, ও তাহারাও তাঁহাদিগের मन्यानार्थि यथामाधा मान कत्रिया थारक। देवकारन मह्रवामीका यार्छ বেড়াইতে যান এবং এইরূপে আমোদ প্রমোদে দিনটা কাটিয়া যায়। রাত্তে প্রতি গৃহেই নানাবিধ থাত সামগ্রীর আয়োজন করা হইয়া থাকে, এবং আহারের পূর্বে সকলেই নিয়মানুসারে সামাক্ত পরিমাণে সিদ্ধি পান করিয়া থাকেন। ছোটনাগপুরবাসীরা এই পার্বনকে দশহারা वर्ण, वणा वाङ्गा वजरमभीय मंभरोत्रात्र महिंछ हेरात्र र्यान मध्यव नाहे।

হিন্দুর গৃহে বার মাসে তের, পার্কন। দশহারার পরই গোধন।
গোধন বঙ্গের ভাতৃদ্বিতীয়ার সমতৃল্য। তথ্যী কার্ত্তিক মাসের শুক্লপক্ষায় দিতীয়ার দিন স্নানাস্তে 'রে দিনীর কাঁটা লইয়া আথরিতে
(চালুনিতে) চোটাইতে থাকে,' অনস্তর সেই কাঁটা টেকিতে কুটিয়া
ফেলিয়া যমের হ্রারে কাঁটা ছিলাম, এই মর্ম্মে মস্ত্রোচ্চারণ করে।
ভাতা জ্যেষ্ঠ হইলে ভগ্নীকে আশীর্কাদ করে এবং তাহার নিকট
পরিতোষরূপে ভোজন করে। এতাত্তর ঐ দিন ভগ্নীকে ভ্রাতার
বিস্তা-কামনায় মসিপাত্র পূজা করাইতে হয়।

শরংকালে ছোটনাগপুরে আর একটা উৎসবের অমুষ্ঠান হয়, তাহার নাম ছট। কাত্তিক মাসের >লা হইতে ৬ই পর্যান্ত এই পার্কান চলিতে থাকে। ছট উপলক্ষ্ণে দলে দলে স্ত্রাঁ ও পুরুষে সমস্ত দিবস উপবাস করিয়া স্থা্যাপাসনা করিয়া থাকে। ক্রমান্তরে ছয় দিবস ব্যাপিয়া এই পূজা চলে। এই ছয়িদনের মধ্যে পাঁচ দিন উপাসনা করিয়া বাটাতে স্নান করে বটে, কিন্তু ষষ্ঠ দিবসে তাহাদিগকে নদীতে স্নান করিতেই হইবে। স্নানান্তে ঠেকুয়া\* দান করিবার প্রথা আছে, এবং ইহা লইতে অস্বাকার করিলে স্থা্দেককে অবমাননা করা মক্রা থাকে। ছোটনাগপুরের একস্থানে স্থা্দেবের একটা মন্দির আছে, এই পার্কান উপলক্ষে তথায় অনেক যাত্রা একত্রিত হইয়া থাকে এবং আপনাদিগের মানসমত পূজাদি করে। এই ব্রতামুষ্ঠানের পর উপাসনাকারীয়া আত্মবন্ধুদিগকে ভোজন করাইয়া থাকে, এবং তত্বপলক্ষে বহুল নৃত্যগীত হয়। এই সকল গান হিন্দিতে রচিত,

<sup>\*</sup> ঠেকুরা—এক প্রকার পিষ্টক বলিলেও চলে। আটা ও গুড় একতা মাধিয়া ছাঁচে ভোলা হয় এবং উহা যুতে ভাজিয়া লওয়া হইয়া থাকে। গুনিয়াছি ইহাদ্দ আবাদন মন্দ নহে।

পাঠকবর্গকে ভাহার নমুনাস্বরূপ যথাস্থানে ফাগুয়ার একটা গান উপহার (मुख्या याहेद्व। এই পর্কে মুসলমানেরাও যোগদান করে। ছোট-কায়স্থ প্রভৃতি সকল জাতির মধ্যেই ইহা প্রচলিত দেখা যায়।

বসস্ত ঋতুর আগমনে ছোটনাগপুরবাসীদিগের হৃদয়ে যেন আনন্দ धदत्र ना। काश्रमा উপলক্ষে वाकानात्र ग्राम তথাম नितानम्बत कूछिङ ছবি নয়নগোচর হয় না, এই দিবস তাহারা প্রাণ খুলিয়া আমোদ প্রমোদ করিয়া থাকে। মাতা, পুজ্র, পিতা, বধূ, সকলে এক নৃতন यानत्क माजिया व्यादित वहेया (थवा) करत्र। तम मृश्र तिथिव मत्न হয় যেন উল্লাদের পূর্ণচিত্র কল্পনার নয়নে প্রতিভাত হইতেছে। কিন্তু কার্ছেরা মাদক দেবন করিয়া এই পবিত্র উৎসবে অপবিত্রতা আনম্বন করে, ইহা অত্যস্ত হঃধের বিষয়। ফাগুয়া উপলক্ষে ধে नाह গान इम्र ভाहात ज्ञात कथार नाहे। स्त्री भूक्ष नकलाहे এই গীতে যোগদান করে। নিমে একটা হোলির গান দেওয়া গেল।

গোপিনীরা বলিতেছেন,—

वत्का कि याना कि काना। श्रम निध (विष्ठ यां व वृन्नावन, ' মারগ হাঁটলানা॥ বরবদ মোকে তোড় মুচকিয়া, লে হি মুথমানা॥

यत्नामा देशत छेखत्र मिटण्डिन,— তোমায়তি গোরা বছত হায় রাধিকা, ट्यत रंगाशां ना माना। (क्या कारन हेरना ब्रिक वाकिया, , জানত থেলত থানা ॥

শ্রীকৃষ্ণ এই অভিযোগ শ্রবণ ক্রিলেন,—

এতনা শুণকৈ আরে মনমোহন,

মরুয়োমে রোদন যানা।

হের মেইয়া হামকে। বহুত থিজানা,

ম্বুরত যেন নিশানা,
উলট মরুদে তোর হানা॥

রাধা ভাহাতে বলিভেছেন,—

মুরগ্রাম ব্রজ বদবো না যাই বদবো কঁছ হানা। করব আমন মন মানা॥

ফাগুরা ব্যতীত আর একটা বস্পোৎসব দৃষ্ট হয়, তাহাকে বসস্ত-পঞ্চমী কহে। এই পার্কন ফাল্কন মানে শুক্রপক্ষীয় পঞ্চমীর দিন পূজা হইয়া থাকে, এবং তত্পলক্ষে বহুল নৃত্যগীত হয়। বাছল্য ভয়ে এফ্লে বসস্ত পঞ্চমীর গান দেওয়া গেল নাং এই উৎসবকালে ছোটনাগপুরে একটা মেলাও হইয়া থাকে। ডালটিনগঞ্জ হইতে ৮৪ মাইল দ্রে দেও নামক স্থানে এই মেলা হয়। হাতি, ঘোড়া, গরু প্রভৃতির দৌড় ও অন্তান্ত নানা প্রকার কৌতুকজনক জীড়ার এখানে আয়োজন হইয়া থাকে। পালওয়ানদিগের কুন্তিও হয় এবং নানাবিধ জ্ব্যসামগ্রী বিক্রয়ার্থ আসিয়া থাকে। এই মেলা বাঙ্গালের নিকট এক অভিনব ব্যাপার।

পূর্বোলিখিত উৎসব ব্যতীত ছোটনাগপুরে আরও কয়েকটি পার্বন আছে, বথা—ছাতুয়ান, দোঠান, তিলপার্বন ইত্যাদি। ছাতুয়ান চৈত্র মাসে, দোঠান কার্ত্তিক মাসে ও তিলপার্বন পোষ মাসে হইয়া থাকে। কিছ সর্বাপেকা আশ্রুয়ের বিষয় এই ছোটনাগপুরবাসী হিন্দুরা হাসেন হোসেন পর্বে যোগদান করিয়া থাকে। "এই হাসেন হোসেন পর্বে

প্রথম দিবস রাত্রিতে গান গাহিত, গাহিতে হিন্দু মুসলমান মিলিয়া নদীতীর হইতে মাটি কাটিয়া আনে। তৎপর দিবস কোন উৎসবের অমুষ্ঠান হয় না। তৎপর দিন রাত্রিকালে সঙ্গীত করিতে করিতে কলাপাতা কাটিয়া আনা হয়। পরদিন প্রাতঃকালে ছোট চৌকি ৰাহির হয়, এবং তৎপর দিবস মহর্ম বাহির হইয়া সহর প্রদক্ষিণ করে। "হোদেন হাদেন ছনো ভেইয়া,

চলে लए। हेशा. " हेला नि।

গাহিতে গাহিতে হিন্দুরাও মুসলমানদিগের অম্বর্তী হয়। বান্ধণেরা এই উৎসবে যোগদান করেন না। হিন্দু মুসলমানের সম্প্রীতির ইহা वकि उच्चल निपर्गन।

পুররিরা, বমাউত, উওরা, প্রভৃতি প্রেত পূজা করার পদ্ধতিও ছোট নাগপুরে প্রচলিত আছে। বারান্তরে তত্পলক্ষে উৎস্বাদির কথা यिनवात्र हेळ्। त्रहिन।

শ্রীস্থরেশ চন্দ্র মুখোপাধ্যায়।

#### প্রাচীন ভারতের বাণিজ্য।

হিলেন না; পূর্ককাল্লে তাঁহারা বাণিজ্য-বাপদেশে বছ দেশদেশাস্তরের লোকের সহিত সৌহাদিসত্ত্রে আবদ্ধ হইতেন। ভারত-বর্ষাগত বাণিজ্যসম্ভার ভূমধ্যসাগরোপকূলবর্ত্তী বন্দরসমূহের পণ্য বীথিকার উচ্চণরে বিক্রীত ও সাদরে ক্রীত হইত। ভারতবাসীর পণ্যতরী স্থানর চীন ও জিপালের (জাপানের) সাগরোপকূলে বাণিজ্যার্থে প্রেরিত হইত। মধ্য এসিয়ার ভীষণ স্বাপদসন্থল প্রান্তর-পথে ভারত-বর্ষায় দ্রবাজাত বাহিত হইয়া কান্দীয় সাগরে ও ক্রশীয় রাজ্যে দেখা দিত। যব ও স্থমাত্রা প্রভৃতি দ্বীপ সকল হিন্দু ও বৌদ্ধদিগেরই আবাসন্থলী হইয়াছিল; তাহাদের সহিত ভারতবর্ষের সর্বস্থানের এক্রপ আদান প্রান্তর হইত। আমেরিকার আবিকর্তার জন্মগ্রহণের বছু শতাক্ষী পূর্বের্ব আমেরিকার পশ্চমকূলে ভারতীয় ক্রর্ববপোতে ধর্ম ব । বাণিজ্য বৈজয়ন্তা উচ্চীন দেখা যাইত।\*

ভগবানের অ্যাচিত পুক্ষপাতিতার ভারতবর্ষের অত্যুর্কর ক্ষেত্রনিচয় অপ্রিন্নিত শস্তাদি প্রসব করিত; ধরাগর্ভও ধাতুরত্বদানে
কাতর ছিল না। এই সকল পণ্য ও ধনিজ বিনিময়ে বহু দেশের
ধনরাশি ভারত ভাগুারে সঞ্চিত হইত। ক্রমক কুটীরেও শস্ত্রবিনিমরে
রৌপ্যের অভাব ছিল না; মধ্যাবস্থ গৃহস্থগণ অনেকে স্বর্ণপাত্তে

<sup>\*</sup> John Fryer, LL. D., Professor of Oriental Languages and Literature, University of California. বহু আবিষ্ণার পরস্পরার ঘারা এই উল্লিয় সভ্যতা প্রতিপল্ল করিয়াছেন।

পানভোজন করিত। নিয়শ্রেণীর স্থীলোকেরাও সঞ্চিত রোপ্য ছারা নানা জাতীয় অলঙ্কার নির্মাণ করিয়া গায়ে পরিত।

মাহার যাহা থাকে, সে তাহারই আদর ও সদ্যবহার করৈ, সময়ে সময়ে কিছু অত্যধিক ব্যবহারও করিয়া থাকে। যাহার তাহা না थाक, म यन यन इःथिङ इय वर्षे, किन्न वाहित्त भरतत कार्या সভাতাবিরোধী বলিয়া ঘুণা করিয়া আত্মশ্লাঘা সম্ভোগ করে। সংসারের ইহাই রীতি। ভারতবর্ষে স্বর্ণ রৌপ্য ছিল; এজন্ম ভারতবাদিগণ আদর করিয়া তাহা গায়ে পরিত, অনেক সময়ে কিছু অধিক পরিমাণ অশকার ধারণ করিত, তাহাও সত্য। এইরূপ যুরোপাঞ্চলেও নানা দেশাগত কার্পাদ ও পশুলোমাদির প্রচুর আমদানী হওয়াতে বস্তের मार्जा ७ जानक नगरम जनावशकर्त्रा वा शाधिक (पिश्व पाउमा याम। যখন যুরোপীয় কোন রাজমহিলার পশ্চাদিলম্বিত গাউন রাশি ছই তিন खन ভূত্যের দারা ৰাহিত হইবার প্রথা দেখিতে পাওয়া যায়, তথন ∗সভাতার মাত্রা বস্ত্রের প্রাচুর্য্যে কিংবা অলফারের প্রাচু≀র্য্য, তাহা নির্ণয় क्यां ज्ञांभा इय। ভातिक्व इट्रेंट मिन्টन गर्गछ यथन नकरन्हें अर्गक अमजामि भनार्थ (barbaric gold) विनया विक्र जन्न वर्षना करबन, ज्यन युद्राभाक्ष्ण ऋर्णद्र य घाडाव ছिन, जाहाहे প्रभागिष रम। \* এবং ভারতবর্ষীর সর্বজাতীয় স্ত্রীলোকের অলফারের বছলত্ব ও শুরুত হইতে এতদেশের ধন প্রাচুর্য্যের স্থুন্দর আভাস পাওয়া যায়।

ঁ এই ধনসঞ্চয়ের আর একটি প্রধান কারণ প্রাচীন হিন্দুদ্বিগের স্বাবলম্বিতা। তাঁহাদের কঠোন ধর্মনীভিই তাঁহাদিগকে স্বাবলম্বী

<sup>\*</sup> ইতালীর কবি ভারজিলই প্রথম barbaric gold কথা বাবঁছার করেন। See Æneid II., 504.

<sup>&</sup>quot;The gorgeous East, with richest hand, Showers on her Kings barbaric pearl and gold." Milton's "Paradise Lost," Bk. II.

করিরাছিল। হিন্দু বণিকেরা সদেশীর দ্রব্য-বিনিমরে পরকীর অর্থ গৃহে আনিতেন; কিন্তু আপনাদের অর্থ দিয়া পরকীর দ্রব্যঞ্জাত ক্রম করিতেন না। তাঁহীদের ধর্মবিধিতে পরদেশীর দ্রব্যের ব্যবহার নিষিদ্ধ ছিল। পরদেশীর দ্রব্য ব্যবহার না করিয়া পরদেশে গিয়া বাণিজ্য করা শুধু হিন্দুদিগেরই নিকট সম্ভবপর হইয়াছিল। ধর্মবিধিদ্বার। কির্মপে ধনর্দ্ধি হইতে পারে, এখানে তাহারও একটি প্রমাণ পাওয়া যায়। আমরা সেই প্রাচান বিধি লঙ্ঘন করিয়াছি বলিয়াই এক্ষণে বিধি আমাদের প্রতি বিমুখ।

প্রাচীন ভারতবাদীগণ জল ও স্থল উভয় পথেই বাণিজ্য করিতেন। ভারতবর্ষের পশ্চিমভাগে দৌরাষ্ট্র (স্থরাট) ও গুর্জ্জরাষ্ট্র (গুজরাট), দক্ষিণ ভাগস্থ পাণ্ডা ও চোলুরাজ্য এবং পূর্বভাগে কলিঙ্গ ও বঙ্গ প্রভৃতি স্থানের লোকেরা নৌবিতা ও বাণিজ্য বলে প্রাধান্ত লাভ করেন। বঙ্গ হইতে সিংহবংশীয় এক বীর নূপতি সিংহলে রাজ্যস্থাপন করেন; তদবধি সিংহল দ্বীপস্থ বন্দর সকল বাণিজ্য প্রভাবে খ্যাতি লাভ করে। আরাকান সীমাবস্থিত চট্টগ্রাম এবং কলিঙ্গ কুলবর্তী তামলিখি (তমলুক) প্রধান বাণিজ্য স্থান ছিল। সুমস্ত বঙ্গ ও বিহারের পণ্য সম্ভার গঙ্গা ও সরস্বতী দিয়া তাম্রলিপ্তিতে নীত ২ইত। আরাকান হইতে বাণিজ্য জাহাজ তমলুকে আসিত। তমলুক হইতে পণ্য ভারাক্রাস্ত তরণী শ্রেণী দক্ষিণপূর্ব ভারতের কুল বাহিয়া পাণ্ডা ও চোল রাজ্যে উপস্থিত হইত; তথায় মথুরা (মাহুরা) ও কাঞ্চী (কাঞ্জিভেরম্) নগরীর দ্রবাভারের সহিত পূর্কদেশাগত -পণ্য মালার বিনিময় চলিত এবং তদ্দেণীয় নাববিত্যাধ্যক বণিকদিগের স্থগঠিত छत्रीममूर পूर्वाक वाणिका-वरदात कल्ववत वृक्षि कत्रित। अरे जक्रन काशक व्यवस्थित कानीयमर, मध्यमर প্রভৃতি নানা "मर" भात रहेगा निःहटन दिया नि । निःहन हहेट वाणिना नाहान नकन इहेच्या

বিভক্ত হইত। বাহারা যব, স্থমাত্র। প্রভৃতি দ্বীপে বা খ্রাম, আনাম, **होन** প্রভৃতি দূরবর্ত্তী প্রদেশে বাণিজ্ঞা করিতে যাইবে, ভাহারা অমুকুল পবন ভরে পূর্ব্যুথে প্রবাহিত হইত; এবং যাহারা যুরৌপীয়দিপের সহিত পণ্য বিনিময়ে কুত্সঙ্কল থাকিত, তাহারা আবার উত্তর মুখে ভারতের পশ্চিম কুল বাহিয়া কাশিকট ও সৌরাষ্ট্র প্রভৃতি বাণিজ্ঞা ৰশারে উপস্থিত হইত। , অবশেষে ঐ সকল স্থান হইতে উহারা ভিশিমালা বিক্ষোভিত আরব সাগরে ভাসমান হইত।

हिन्तू वंगिरकता अवश शिवा यूर्वाभाक्ष्यल मिह्छ वाणिका कविरखन ना, कात्रण रेউরোপে যাইবার অবিচিন্ন জলপথ তথনও আবিষ্কৃত হয় নাই। পুরাকালে প্রশান্ত মহাসাগরের অনেকাংশ হিন্দুদিগের পরিজ্ঞাত ছিল বটে, কিন্তু তাঁহারা আট্লান্টিক্ নহাসাগরের সংবাদ জানিতেন না। আফ্রিকা ঘুরিয়া য়ুরোপে যাইবার পথ অবিদিত থাকাতে, বাণিজ্য পথ প্রথমতঃ লোহিত দাগর দিঃ প্রবর্ত্তি ছিল। ভারতীয় नाविष्कत्रा आत्रव मौत्रत्र পात्र इट्या कृतिर भृतिया वौष्ट \* উপनीज े इहेर्डम ; তথা इहेर्ड क्या आंत्रराष्ट्रभंत किंग मौभा पिया वार्यम মণ্ডপের পথে লোহিত সাগরে প্রবেশ করিতেন। যখন টলেমী বংশীয় পরাক্রান্ত নূপতিগণ মিসরের সিংহাসনে সমাসীন ছিলেন, তথন क्रमधामागदात जीतवर्जी व्यामक्ष्किश्वा नगती व्यक्ष 'मम्बिमानी ছিল। লোহিত সাগরের উত্তর প্রাস্ত চইতে অলেকজেণ্ডি মা অধিক দুরবর্তী নহে; এক্স লোহিত সাগর হইতে আরব ও মিদর দেশীর বিশিক্তাণ ভারতীয় পণ্যরাশি ক্রয় করিয়া অলেক্জেভিয়ার বিশ্ব-

<sup>\*</sup> कृषित्रा भूतित्रा नात्मत्र উৎপত্তি कि, काना यात्र ना। वित्रमान एकमात्र मिक्सार्ट्स क्रिकि म्क्ति नामक এक वीभारण আছে। , উভत्र भक्त এकई वर्षद्वाशक এवर এক जाजीय लाक कर्क गठिंड तिनत्र। ताथ इस, क्कृति स्कृति भारमञ्चल "स्कृत

বিখ্যাত প্রকাণ্ড বন্দরে আমদানী করিতেন। এইরূপে এশিয়া ও যুরোশের যাবতায় বাণিজ্য দ্রব্যের আদান প্রদানের পথে আলেক্-জেণ্ডিরা একমাত্র বাণিজ্য স্থান হইয়া দাঁড়াইয়াছিল।

এই স্মরে রোমরাজ্য উন্নতির চরমসীমা লাভ করিয়াছিল।

মুরোপথণ্ডে গ্রীক ও রোমীয়গণই প্রথম জ্ঞানালাকরশ্মি বিকীর্থ
করেন; গ্রীসের জ্ঞানবল ও রোমের বাহুবল ও বাণিজ্যবল ভূমগুলের

দ্রপ্রান্তেও তাহাদের প্রতিপত্তি সংস্থাপিত করিয়াছিল। লোহিত ও
ভূমধ্যসাগরের বাণিজ্য বিষয়ে রোমীয়গণেরই একাধিপত্য ছিল।

জাহাদের জেনোয়া ও ভিনিস নগরীয়য় প্রধান বন্দর ছিল। ভিনিসীয়
বিণিকের পণ্য জাহাজ জগতের নানা দেশে বাণিজ্যার্থ প্রেরিত হইত। ।

মালেকজেপ্রিয়ার বাণিজ্য এক প্রকার ভিনিসীয়দিগেরই করায়ত্ত
ছিল; তাঁহারাই উক্ত নগরী হইতে ভারতীয় দ্রব্যজ্ঞাত ক্রেয় করিয়া
সমগ্র মুরোপথতে বাণিজ্য করিতেন। কিন্তু উদীয়মান আরবীয়গণের বার্গপ্রতিভা ভিনিসীয়দিগের বাণিজ্যাণ্গারব বিল্পপ্রধার
করিয়াছিল।

খুষ্টীর সপ্তম শতাব্দীর মধ্যভাগে মহম্মদের মৃত্যুর পর যথন ছর্দাক্ত আরবীরগণ বাহুবলে দেশ জয় ও ধর্মপ্রচার জন্ত, রূপাণ করে দর্শভরে বহির্গত হয়, তথন নিকটবর্ছী প্রদেশে তাহাদিগকে বাধা দিবার লোক অতি কমই ছিল। তাহারা "মিশর ও শিরীয় দেশ মহম্মদের মৃত্যুর পর

<sup>\*</sup> এই সময়ে আরব দেশের কোনৈক দেশে এডেন বা আদন নগর স্বর্গজুলা স্থান ছিল। ইহা বাণিজ্যের জস্তু সমধিক খ্যাতিলাভ করিয়াছিল। এখানে রামীয় বার্বায়ীদিগের এতই প্রভাব ছিল যে এডেন সাধারণতঃ "রোমীয় বাজার" (Roman Mart) বলিরা ক থিত হইত। See "Arabia and its Prophet," Page 16.

<sup>†</sup> শেকপীনন Merchant of Venice এছে লিখিয়াছেন:—He hath an argosy put to Tripoli, another to the Indies; \* \* He hath a third at Mexico, a fourth for England." Merchant of Venice, I. iii.

ছন্ন বংসর মধ্যে, পারস্তাদেশ দশ বংসরে, আফ্রিকা ও স্পেন এক এক বংসরে, কাবুল অন্তাদশ বৎসরে, তুর্কহান আট বৎসরে সম্পূর্ণরূপে अधिकुछ करत्र।"\* मङ्ग मङ्ग ভারতীয় বাণিজা অনেকাংশে দি श्रिङ्गी মুসলমানদিগের হস্তগত হইয়া পড়ে। তাঁহারাই লোহিত দাগরের পথ পরিত্যাগ করিয়া পারস্থ উপসাগর-পথে বাণিজ্য প্রচলনের প্রথা প্রবর্ধিত করেন। ভারতীয় বণিকণণ তথন স্বদেশীয় দ্রব্যসম্ভার উক্ত উপ-সাগরের তীরবর্তী অরমাজ প্রভৃতি স্থানে পৌছাইয়া দিয়া আসিতেন। প্রতরাং ভারতীয় সমৃদ্ধিবলে অরমাজের ঐশ্বা্য লক্ষণ্ডণ বর্দ্ধিত হইল। এই জন্মই কবিবর মিল্টন ধনগৌরবদৃপ্ত দেশের আদর্শ দেখাইতে গিয়া অরমাজ ও ভারতবর্ষের নামোল্লেখ করিয়াছেন। । তইম শতাব্দীর শেষভাগে চতুর্কিংশ থলিফা স্থবিখাত হারুণ-উল-রসিদের সময়ে ब्राक्रधानी বোলাদ ও বাণিজ্যস্থান মোজাল অতুলনীয় এশ্বর্যাশালী हरेशा উঠে।‡ नानाविध স্কাবস্ত বজদেশে ঢাকা অঞ্লেই প্রস্তুত হইত; উহা চট্টগ্রাম প্রভৃতি বন্দর দিয়া মোজালে যাইত; মোজাল হইতে আরব্যবণিক কর্ত্তক উহা টুয় প্রভৃতি হালে নীত হইত; তথা হইতে যুরোপীয় বণিকদিগের যত্নে তদেশের নানাস্থানে প্রেরিত হইত। ষুরোপীষেরা ভাবিতেন যে কৃষ্টবন্ত মোজাল হইতেই আইসে; এজন্ত श्कारत्वत्र नाम मन्निन। (मांकान भक् श्रेट्रे मन्निम भर्षत्र উৎপত্তি হইয়াছে। ক্রমে যথন আরবীয়গণ বাণিজ্য বিষয়ে প্রাধান্ত লাভ করিল, তথন রোমীয়গণ ক্রোধপ্রযুক্ত আলেক্জেণ্ডিয়া নগরী ভশ্মসাৎ क्राइन ।

<sup>🔻 🔭 🛊</sup> विक्रियहस्त, विविध ध्यक्त, २)१ १९।

<sup>+ &</sup>quot;The wealth of Ormuz and of Ind," Par. Lost, Bk. II.

<sup>‡</sup> History of Caliphs by Jalálu'ddin-A's-Suyúti translated from the original Arabic by H. S. Jarret.

কিছুদিন পরে বাণিজ্য পথের আবার পরিবর্ত্তন হইল। ভারতপণ্য পাইবার জন্ম যুরোপীয়দিগকে আরব্যবিদকের উপর সম্পূর্ণ নির্জ্ করিতে হইত। আরব দেশের ভীষণ প্রান্তরে ও মক্র-প্রদেশে পথিকের উপর এত অত্যাচার হইত যে ভারতীয় বা যুরোপীয় কোনও বণিক্র সম্প্রায়ই সে পথে গমনাগমন করিতে সাহসী হইত না। অথচ একটি চ্র্লান্ত জাতির মুথাপেক্ষী থাকা কাহারও নিকট সমীচীন বোধ হইল না। এই সময়ে ভারতবর্ষ ও চান প্রভৃতি পূর্বদেশ হইতে বাণিজ্য এবি মধ্য এসিয়ার প্রান্তর মধ্যবর্তী স্থলপথে ক্ষুসাগরের তীরবর্ত্তী ক্রন্তর্গান্তিনোপলে নাত হইতে লাগিল। স্কুতরাং আরবীয়েরা শিরীয় দেশ দিয়া অরমাজ প্রভৃতি স্থানের বাণিজ্য জব্য প্র কনন্তান্তিনোপলেই লইয়া যাইতে লাগিল। স্কুতরাং শুর কনন্তান্তিনোপলেই যুরোপীয় বাণিজ্যের কেন্দ্রন্থান হইয়া দাড়াইল। প্রক্রির্ক্তার বাণিজ্য কর ব্যান্তর মধ্যবর্তী ক্রন্তান্তর সম্পূর্ণ অধিকারী হইল। ভিনিস ও জেনোয়ার ইতালীয় বণিক্ষণ কনন্তান্তিনোপলে আদিয়া বাণিজ্য করিতে লাগিলেন।

অষ্টম শতালীর প্রারম্ভে মুদলমানেরা স্পেনের দক্ষিণভাগ অধিকার করেন। দাত শত বংদরেরও অধিক কাল স্পেনরাজ্যের অধিকাংশ মুদলমানদিগের শাদনাধীন ছিল। এই দময়ে ভূমধ্যসাগর তটবর্ত্তী মালাগা নগরী মুদলমানাধিকত স্পেনের বিখ্যাত বাণিজ্য-বন্দর ছিল। কনন্তান্তিনোপল হইতে মালাগা পর্যান্ত আরবীয় অর্পবপোত বাতায়াত করিত। পথিমধ্যে জেনোয়া ও বার্দের প্রভৃতি সহরে তাছাদের বাণিজ্যতরী লাগিত; এবং তত্ততা বিপণিরাজিতে নানা দিক্দেশাগত

<sup>&</sup>quot;The commerce of Europe centred at Constantinople, in the eighth and ninth centuries, more completely than it has ever done since in any city."

Finlay, Byzantine Empire, 248.

भवामवा विक्रवार्थ मिक्किंड थाकिंछ। এই সময়ে গ্রীকগুণও বাণিজ্য» वावमाध्र (यात्र निमाहित्यन। ज्थन जाँशामित्र रे काहाक मक्य वर्ष भएथ প্রাধান্ত লাভ করিয়াছিল \* কিন্তু প্রকৃত প্রস্তাবে তথন ভূমধ্য-সাগরই ষুরোপীয় তরণীমালার একমাত্র ক্রীড়াক্ষেত্র ছিল। দূর সমুদ্রে वाहैवात्र कहाना ७ ७४न का शत्र ९ मत्निम्या श्रानला क करत नाहे।

অবশেষে কনন্তান্তিনোপুলেরও বাণিজ্য-প্রতিণত্তি বিলুপুপ্রায় र्रेग। मूमगमानि गित्र প্রবল প্রতাপই তাহাদের বাণিজ্যাবনতির প্রধান কারণ হইয়াছিল। মধ্যএসিয়া হইতে স্পেন পর্যান্ত ভাছাদের প্রভূষ স্থাপিত হইয়াছিল; তাহাদের হৃদান্ত শাসনে সমগ্র পশ্চিম **अगिया** वािवाङ रहेया উठियाছिल। विम्भीय विनक সম্প্रদाय পথে ঘাটে বাহির হইতে. পারিত ন।; কার্রণ কাফাদের পণা ও ধনভাণ্ডার পুটিত হইত। আরব্য-দন্মার নৃশংস অত্যাচারে সকলেই থরহরি কাম্পত ছইত। অসির সাহায্যে ধর্ম-প্রচার মুদলমান ধর্মনীতির মূল হত। † একর মুদলমানেরা যাহাকেই পাইত, তাহাকে স্বকীয় ধর্ম্মে প্রবর্তিত \* করিবার জন্ম বল প্রকাশ করিত এবং অভক্ষা ভক্ষণ করাইত। এজন্ম **होन, जिक्दर ७** जात्रजवर्षीय हिन्सू ७ (वोक विशक्ति भर्मानात्मत जा मुणनमान द्रारका शिया वाणिका कदा इट्रेंट मण्पूर्व निवृद्ध इहेग। মধ্য এসিয়ার যে ভূভাগ একদিন রাজবন্ধ-সদৃশ সহজগমা হইয়া উঠিয়াছিলঃ তাহাও পুনরার ত্রতিক্রয় হইরা উঠিল। কিছুদিন মধ্যে

<sup>\*. &</sup>quot;The Greek navy was then the largest in existence." Lyall's British Dominion in India, p. 7.

<sup>†</sup> একথা মুসলমানগণ স্বীকার করেন না। এই বিবদমান মডের অক্ত তাহারা সুষ হইবেন না। এইরূপ আলোচনাডেই কোনও তথ্যের খির মীমাংসা সভব। **5**1. 7.

The Hyrcanian deserts and the vasty wilds Of wide Arabia are as thoroughfares now \* Shakespeare.

রাজ্যবিজিপীয় যবনদেনাদল ভারতবর্ধের পশ্চিম ভোরণে দেখা দিল;
দেই দিন হইতে হিল্কুলের গিরিয়ারে যে ভীর্ষণ পদাঘাত শক্ষে
শাস্তির জ্যোড়ে স্বৃপ্ত ভারতবাসা প্রবৃদ্ধ হইল, সে দারাঘাত শক্ষের
আর বিরাম হয় নাই। তথন পরদেশার্জিত ধনলাভের প্রত্যাশা
পরিত্যাগ করিয়া ভারতবাসীগণ শ্বকীয় ধর্ম ও প্রাণ রক্ষায় অধিকতর
মনোযোগী হইল। বিদেশ গমনোঞ্ভত বাণজ্য জাহাজের উপর মুসলমানেরা অমাক্ষিক অত্যাচার করিত। এজন্ত বাণিজ্য বন্ধ হইল;
"সমুদ্র যাত্রা নিষিদ্ধ" বলিয়া নব বিধি লিপিবদ্ধ হইল; "কালাপাণি"তে
গেলে জাতি যাইবার ভয়ে ধর্মতীক ব্যক্তিগণ স্বদেশের সংকীর্ণ কোশে
আশ্রম লইল।

এই সমর হইতে পারস্ত ও আয়ব সাগের হইতে ভারতবর্ষীর অগণ্য
পণ্যতরী অনতিবিলম্বে বিল্পু হইল। সময়ে সময়ে মুসলমানেরা রাজ্য,
বাণিজ্য বা দাস সংগ্রহ জন্ত সিল্লু ও স্থরাট প্রদেশে আসিত বটে, কিন্তু
ভাহাদের দ্বারা নীত বাণিজ্য জব্যে পারস্তোপদাগরের বন্দর সমূহের
পণ্য ভাগুার পূর্ব হইত না। মধ্য-এসিয়ার স্থলপথ লোকশৃত্য; পশ্চিম শ্
সমুদ্র ভারতীয় তরণীশৃত্য; আরবীয়গণ বাণিজ্য অপেক্ষা রাজ্যের
ক্রন্ত অধিকতর উল্ফোগা। এরপ অবস্থায় ভারতীয় জব্যজাত আর
পূর্ববং কনস্তান্তিনোপক প্রভৃতি স্থানে যাইত না। মুরোপের
সহিত ভারতের বাণিজ্য সংক্রান্ত আদান প্রদান এক প্রকার বন্ধ
হইরা গেল। ক্রমে ভারতবর্ষের কথা মুরোপে উপকথায় পরিণত
হইল। স্বর্ভুমি (El dorado) ভারতবর্ষ যেন অশান্তি ও অরাজকভার।
ভীষণ তমসায় হারাইয়া গেল।

শ্রীস্তীশচন্দ্র মিত্র।

### धत्रशी।

धत्रगो भारत रय मिरक मिर्थ नकिन रङ्गा स्नात्र, नकिन रङ्था नम्न-भन-भारिनी;

ভূধর, তরু, নিঝর, মরু, কোমল শব্দ. কন্ধর; জলধি বেলা, তরঙ্গ ফেন-নাচনি।

হেথায় পিতা, জননী, ভ্রাতা, ভগিনী, স্থা, প্রেয়সী, উদার চিতে ঢালিছে স্নেহ সতত;

রচিছে ওগো আমারি তরে কি এক স্বর্গ শ্রেম্বসী, ধরণী শুধু আমারি স্বতঃ প্রতঃ।

অই দেখ না আমারি তরে কোকিল উঠে কুছরি, উঠিছে ওগো ঝঙ্কারিয়া পাপিয়া,

নানান রঙা বিহগগুলি সদাই ওগো ফুক্মি— আমারি প্রাণে পুলক দেয় মাথিয়া।

আমারি তরে শতেক গাছে সহাস ফুল ফুটিয়া, স্কৃতি মাথা নটীর মত বল্লরী,

প্রজার মত বৃক্ষ শত মধুর ফল বহিয়া মৌন মুখে দাঁড়ায়ে আছে প্রহরী।

আমারি সভায় চক্রভারা দীপক প্রায় উজ্জল, বিশ্ব শোভা দেখাতে রবি ফুটিছে, আমারি পায়ে লুটাতে ছুটে উল্ল। মন্ত চঞ্চল, আমারি তরে বিশ্ব-বাণী বহিছে। আমারি তরে বিভল কায়ু বহিছে স্থা সঙ্গাত,
স্বভি বহে আমারি তরে কত না,
তটিনী ছুটে গাহিয়া গান হারায়ে নিজ সম্বিত,
তাহার তালে বিশ্বে বাজেনা।

পরণী মাঝে যা কিছু দেখি সকলি হেথা স্থানর,
জীবন হ'তে মদির মৃত্যু অবিধি,
গড়েছ বিধি এমনি করে' তুষিতে আমার অস্তর
তুক্ষ অচল হইতে মহাজলধি।

যদিন হেথা থাকিব ধাতা এমনি স্থথে কাটিব,
কিদের বাথা, কিদের হেথা ভাবনা ?

থি আপন হাতে আমার তরে দিয়েছ যাহা ভূঞ্জিব,
বিলাব আমি ভোমারি মাঝে আপনা।

ভৃপ্তি নাহি, নাহি হে স্থা, তোমার শিল্প ভূঞ্জিয়া, অসীম ক্ষ্ধা সদাই মনে জাগ্রত; মৃত্যু তোমার শ্রেষ্ঠ দান, ভৃপ্তি দেয় ভরিয়া, তাই সে মৃত্যু ঘুরিছে বিশ্বে সম্ভত।

যে দিন মৃত্যু আসিবে দথা, তাহারে লব বরিয়া আমারি এই তৃষিত বক্ষ মাঝারে; মৃত্যু তোমার শ্রেষ্ঠদান, লইব তোমায় শ্বরিয়া, তোমারি কোলে লইও তুলে আমারে।

क्री हा कि विकास व

#### नात्राय्यगी।

#### পঞ্দশ পরিচেছদ।

পাহীগণ ও জনতা যে সময় প্রান্তর ছাড়িয়া গেল, তথন রতন প্রতিশ্রুতি পালন করিতে সাহেবের কাছে ফিরিবার ইচ্ছা করিলেন। কিন্তু অবিশ্রান্ত পরিশ্রমে ও অত্যধিক রক্ত শ্রাবে তিনি বড়ই ক্লান্ত হইয়াছিলেন। কিয়ৎ ক্ষণের জন্ম তাঁহার বিশ্রামের প্রয়োজন হইল। তিনি বটর্ক্তলে উপবিষ্ট হইলেন।

বৃক্ষের অনেকগুলি জটা ভূমি স্পূর্শ করিয়া, বছকাল ধরিয়া ভূমির রস গ্রহণে পরিপুষ্ট এক একটা স্তন্তের আকার ধারণ করিয়াছিল। ভাহাদের অন্তর্গালে বসিয়া, রভন ব্রাউধনর দৃষ্টিপথের বাহিরে পড়িয়া ছিলেন।

বিসিয়া ব্রাহ্মণ নারায়ণীর কথা ভাবিতে লাগিলেন। বলা বাছলা, বাউন দ্র হইতে যে বালিকাকে দেখিয়াছিলেন, সে নারায়ণী। নারায়ণীই আঁজ রতনের মর্যাদা রক্ষা করিয়াছে। নিজের লাগিগাছটী পাইতে পলমাত্র বিলম্ব হইলে, আবার ভাঁহাকে লাভিত হইতে হইত।

কিন্ত কেমন করিয়া কোন পথ দিয়া নারায়ণী আসিল ? কে তাছাকে দাদার বিপদের সংবাদ দিল ? আসিল ত এত শীঘ্র ফিরিল কেন ?

রতনের বড় সাধ হইল, পূর্কোক্ত প্রশ্ন গুলার মীয়াংসা করিবেন।
ক্রিন্ত নারায়ণী আসিল না। বটরক্ষের শাল দিয়া ব্রাউন ঘাইতেছিলেন।
রতন দেখিলেন, কিন্ত দেখা দিলেন না। কিয়ৎক্ষণ ক্রেন্তের
ক্রিতে, ব্রাউন স্থবর্ণরেখার দিকে চলিয়া গেলেন।

" नकार इहेटल मनाभित वानिया ए। किन-"शिखक जी!"

त्रजन मूथ फित्रारेटलन, এবং नमानिव्दक फित्रिक प्रिविश जिलाना कत्रित्नन-"পথে আসিতে সাহেবকে দেখিয়াছ ?".

সদা। কোন সাহেব ? যে এইমাত্র চলিয়া গেল, না, তে আপনার অপমান করিয়াছে ?

রতন। আমি তাহারই কথা বলিতেছি।

সদা। সে এখনও দেখানে পায়চারি করিতেছে।

রতন। একটা বালিকাকে দেখিয়াছ ?

সদা। বালিকা অনেক দেখিয়াছি। আপনার লাঞ্নার কথা শুনিয়া, অনন্তপুরের বালক বালিকা পর্যান্ত আপনাকে দেখিতে আদিয়া-ছिল। आপনি বোধ হয় রাজকুমারীর কথা বলিতেছেন।

রতন। তুমি তাহাকে চেনো ?

সদা। দেখিয়া অনুমান করিয়াছি।

রতন। আমাকে লাঠী দিয়া বালিকা কোথায় গেল ? আমি তার জন্ম উৎকন্তিত হইয়াছি।

সদা। উৎকণ্ঠার কারণ নাই,—তিনি ঘরে ফিরিয়াছেন। সাগ্রহে রতন জিজ্ঞাসা করিলেন—"তুমি দেখিয়াছ ?"

সদাশিব বুদ্ধকে আশ্বাস দিয়া বলিল—"আমি তাঁহাকে বাড়ীতে রাথিয়া আদিলাম।"

बाक्राण निम्छि रहेरलन। छाँरात्र आंखि मृत रहेग्राष्ट्र। এইবারে তিনি হারলির কাছে যাইবার উন্তোগ করিলেন।

ममाणिव किन्छ অনেক কথা জানিবার জন্ম ব্যক্ষণের व्यामिश्राह् । প্রাতঃকালে—কোথাও কিছু নাই সহসা নিরীছ ব্রাক্ষরের এ लाखना रहेल (कन ? तांककूमातीरे वा चरत्रत वाहित्र (कन वालि-लम ? मनाभिव, ध ममछ किছूरे वृतिए भातिए हिन मा।

ভটোচিত एम ना विनमा महानित । मकन कथा नामामनी

জিজাদা করে নাই। এখন দে ব্রাহ্মণের কাছে আদিয়া সকল কথা कानिवात क्य अन कतिन। त्रञ्न आरूश्रिक ममख घरेना जाशाक বিবৃত কল্পিলেন। সদাশিব বলিল, সাহেব ব্রাক্সণেরই অপেক্ষায় এক স্থানে পায়চারি করিতেছে। তাই রতনকে উঠিতে দেখিয়া জিজ্ঞাদা করিল—"দে নরাধমের কাছে আবার আপনার যাইবার প্রয়োজন।"

রতন প্রয়োজনের কথাও তাহাকে বলিলেন। শুনিয়া, সদাশিব কিছুক্ষণের জন্ম চুপ করিয়া রহিল। রতন দেখিলেন, যুবকের প্রশস্ত ললাট গলীর চিস্তায় কুঞ্চিত হইয়াছে। জিজ্ঞাসা করিলেন,—"সদাশিব! কি ভাবিতেছ ?"

मनामिरवत हमक ভाঙिन। वनिन-"এ कार्यात ভात नामरक मिल कं जि कि?"

রতন বলিলেন—"ক্ষতি কিছুই নাই। বরং তুমি যদি সাহেবের কাছে यां अवः व्यामात हरेमा इ'कथा वन, जात्रहेटन व्यामि निन्छ हरे।"

" সদাশিব বলিল—"আমিই যাইতেছি। তবে আমার ফিরিবার পূর্বে আপনি অনম্বপুর ত্যাগ করিবেন না "

রতন বুঝাইলেন, অনন্তপুরে আর বেশি ক্ষণ থাকা যুক্তিযুক্ত নয়। ধাকিলে, আরও বিপদ যে না ঘটিবে, তা কে বলিতে পারে ?

তথাপি সদাশিব ত্রাহ্মণকে থাকিতে অমুরোধ করিল। বলিল, कामोभूद्र बामान पश्चानम्। वापनारक जाशात्र निकृ ि निम्ना याहर् হইবে। আমি শ্রপ্তর মহাশয়কে একথানি পত্র দিব। আপনি যদি लत्रा कतिया পতा थानि नहेया याने।"

এরপ অমুরোধে রতন "না" বলিতে পারিলেন না তিনি সেই থানেই विश्वा बहिएनन। ननाभिव नार्ट्यत कार्ट्ड हिन्सा लिन। উভয়ে कि कथा वार्छ। इहेब्राहिन, পूर्व्वहे वनिशाहि।

मार्ट्यत मरण कथा माविया मनानिव ठिठि निश्दिक इंडिन, डिडि

नि थेबारे, बाक्षा न काष्ट्र हूं है बा जानिन। बाक्षन छारात रूख रहे छ পত্র গ্রহণ করিলেন, এবং উষ্ণীশের ভিতর রাখিলের।

সদাশিব অনেকদ্র পর্য্যন্ত ব্রাহ্মণের দঙ্গে গেল। অনন্তপুরের প্রান্তে আসিয়া রতন তুই বিন্দু অশ্রপাত করিলেন। সদাশিব ভূমিষ্ঠ হইয়া গুরুদেবকে প্রণাম করিল। তাহার মস্তকে করম্পর্শ করিয়া ব্রাহ্মণ वागीर्वान कतित्वन। विनायकात्व अक्-िवाया त्कान कथा इहेन ना। त्रञ्न नीत्रत्व मूथ फिताहेल्न। निर्माणिव প্রত্যাশা করিল, ব্রাহ্মণ नावायनी मश्रक्त कान कथ। विनिध्न नक आधवाव जात जब नहेर्ज व्याप्ति कत्रियन। প্রত্যাশায় সদাশিব অনেকক্ষণ দাঁড়াইয়া রহিল। ব্রাহ্মণ আর ফিরিলেন না। স্নাশিবের চকু অল্পণ পরেই ব্রাহ্মণের পবিত্রসূর্ত্তির দর্শনস্থ হইতে বঞ্চিত হইল।

मार्ट्यम्त्र बात भिकार्त्र या ७ या ३ हे न ना। बाउन এ किक ७ किक घू त्रिया वाः नाय कि त्रिंति । • वाक्या कि एक पिर्वे भारे लग, বালিকারও দেখা মিলিল না।

অল্লকণ পরে হার্লিও ফিরিয়া আসিলেন। আনন্দদেবের সঙ্গে তাঁহার দেখা হইয়াছিলমাত্র—কোনও কথা হয় নাই। পালক্ষের তলায় পড়িয়া শারী কৈ যন্ত্রণায় ও প্রাণভয়ে দেওয়ান একরূপ অজ্ঞানই হইয়া পড়েন ভুতোরা আদিয়া তাঁহাকে উদ্ধার করিলেও, সম্পূর্ণ-প্রকৃতিত্ব হইতে তাঁহার অনেক সময় অতিবাহিত হয়। হার্লি, উহিত্তে প্রশ্ন করিয়া যথায়থ উত্তর পাইলেন না। অগত্যা তাঁহাকে कित्रिया व्यानित्व रहेन। তবে व्यानिवात नमय व्याप्तम् कतिरमन, যেন পিতা ও পুত্রে তাঁহার সহিত বাংলায় সাক্ষাৎ করে।

বাংলায় ব্রাউনের সহিত হার্লির পুনঃ মাকাৎ হইল। অপরাধ चीकात्र कतिया, जिनि महत्त्रत्र काष्ट्र क्या প্रार्थना कतिराम। इहे वबुट्ड बाराज मड़ाव स्थि रहेग।

वीत्रध्य मथरम यञ्चून बाना हिन, नमछ बाडेन क विश्वा, श्रान्नि ब्रामात उपकारत अভिकार इट्रामा। वनिरमन, "राज्ञभ क्रिया भाति, वाक পরিবারের কষ্টের লাঘ্ব করিব।"

অপরাহে ত্রাউন ভ্রমণে বহির্গত ২ইলেন। বাণিকার পুনর্দশনের আশা এথনও তিনি ত্যাগ করিতে পারেন নাই। হার্লি আননদেবের আগমন প্রত্যাশায় বাংলাতেই বসিয়া রহিলেন।

তथन काञ्चात्र ("य-वमस्ट्र পूर्वियोवन। वाजवाति मश्मध উষ্ঠানের ৰুক্ষ সকল নবপল্লবশোভিত। আম্রবৃক্ষের কতকগুলি ু মুকুলিত, কতকগুলি তামোদর কিদলয় দমাছে ।

मभौदा ভিহত वृक्ष भाथा केष केष इति ত ছिল। দিগন্ত লম্বী সূর্যোর শিরণ পলবে পলবে প্রতিফলিত হইতেছিল। উত্থানটী দূর হইতে সফেন-তরঙ্গতাড়িত প্রবালদ্বীপের ন্থায় শোভা পাইতেছিল।

দেখিতে দেখিতে ব্রাউন অগ্রসর হৈতেছিলেন। একটা জলমা উত্থানলতার অভাবে সে সৌক্ষা তাহার চক্ষে যেন যেন অসম্পূর্ণ বোধ इरेजिइन। চলিতে চলিতে তিনি সুইণ্টেখাৰ তীয়ে উপস্থিত হইলেন। তাঁহার বামে কিছুদূরে রতনের কুটীর। আরও কিছুদূরে বীরচন্দ্রের প্রাসাদ। দক্ষিণভাগে স্বর্ণরেখা বক্রগতিতে অরণ্যের মধ্যে প্রবেশ করিয়াছে।

প্রাদাদটী দেখিতে ব্রাট্ণের ইচ্ছা হইল। কিয়দ্র অগ্রসর হইয়া जिनि वृक्षित्वन, मिरिक প্রাসাদ প্রবেশের দার নাই। কোন দিকে ধে দ্বার তাহাও তিনি বুঝিতে পারিলেন না। প্রাসাদ প্রাচীর স্থবর্ণ-त्रिथात्र कनम्भर्भ कतिशाहिल। बाउन मिथिलन, এक ही हतिन करनत উপর হাঁটিয়। প্রাচীরের অপর দিক হইতে এদিকে আসিল। তিনি वृत्रित्नन, ननोट्ड অভি অञ्च छन। প্রাচীর প্রান্তদিয়া জলের উগর राँगियारे भात र अता यात्र। "

পার হওয়াই তিনি যুক্তিযুক্ত বিবেচনা করিলেন। প্রাচীমে ছাত রাথিয়া ধীরে ধীরে তার হইতে অবরোহণ করিতে লাগিলেন। হরিণটা डाँशटक प्रिया आवात এक नाटक श्राठीत भारत अपृथ श्रेन।

वाउन जल नामिला। दाँ पर्गाष्ठ जन दहन। धरेशान প্রাচীরের শেষ। তিনি ভিতরে প্রবেশ করিলেন। সে স্থানটা বীর किवया (थे ५ প्रथे ४ दिना भागाना विलो निर्माक एक श्रेष्ट्र १ विष्युत्र-हातिनीत। (मरे घार्ट स्नानामि कार्या निर्वार कत्रिक्न। श्रूक्षमार्कित्ररे म श्रांत প्रतिगाधिकाव छिल ना। बाउन এम्प्लिब व्याहात वावहात्त्र নম্পূর্ণ অপরিচিত; তথানি তিনি বুঝিতে পারিলেন, যে এথানে আদা ঠাহার অন্বিকার প্রবেশ হইয়াছে ৭

দার বন্ধ ছিল। নেখানে জনপ্রাণীর অন্তিত্ব-চিহ্ন ছিল না। পূরী নিস্তর। কেহ দেখিবার পূর্বেই তিনি স্থান পরিত্যাগ করিবেন স্থির কবিলেন। ফিরিবার পূর্বের, সেই স্থান হইতেই তিনি একব'র চারি-मेरक मिथिया नहेलने; व्वित्नन, श्वानी शृर्क अञि मःनात्रम हिन; এখন যত্নের অভাবে তাহার পূর্ব 🖺 ধীরে ধারে লোপ পাইতেছে।

बाउँन ফিরিতেছেন, এমন সময়ে, দারের কবাটে শব্দ হইল। তনি বুঝিলেন, ভিতর হইতে কে দাব খুলিতেছে। মুহূর্টমধ্যে তিনি াচীরা-পারে পূর্বস্থানে ফিরিয়া আসিলেন।

নারায়ণী দার পুলিতেছিল। সে সমস্ত দিন তাহার প্রিয় হরিণটার ংবাদ লইতে পারে নাই। বালিকা সমস্ত দিনটা অতি মনোকষ্টেই যাপন রিয়াছিল। দাদার অপমান দর্শনে, অবশেষে তাঁহার বিচ্ছেদে সে মুর্মা-**उ रहेग्रा**हिल। नमस्रित ति वाकालित विषये छावियाहिल। रुत्रिरलेव -ন্তা করিবার অবকাশ পায় নাই। রাজা ও রাণী তাহারই মতন মর্শ্র-**डाय निन याशन क** विवाहिन। इतिर्पंत कथा काहात्र अपन हिन मा।

এখন মনে পড়িয়াছে, তাই নারায়ণী খাতা লইয়া হরিণটাকে খুঁজিতে चानियाद्ध। वाहिद्ध चानिया नातायनी एक्ल, "नाती"।

"শারী" কোথায় ছিল, ছুটিয়া আদিল। এক বৎসর পূর্বে भातीत महिज পাঠকের সাক্ষাৎ হইশ্লাছে। এই এক বংসরে, সে व्यक्तिक । वर्ष इरेशाष्ट्र। नमञ्ज मिस्टान्त भन्न नात्राय्नी क मिथ्या "भादीत" जानमः উथिवाया উঠিয়াছে। ति नादावनीत मसूर्य जानिया নৃত্য আরম্ভ করিল। নারায়ণী ছই হাতে পাত্রটী ধরিয়া তাহার মুথের काष्ट्र जूनिया तिहन। "गात्री" आशात नियुक्त श्रेल, ভাशात मान কথা আরম্ভ করিল। স্থ্য চ্:থের কথা শুনিতে "শাদী" এখন বালিকার এক মাত্র সঙ্গী।

"শারী" কথা ব্রাউনের কাণে গেল। কি বাণার কোমল ঝফার! मभीत्राय भाषाभाषि इट्या (म भधूमग्र कर्शवत जाभत भारतत निर्देशक जि (यम (थिन या (वड़ाई एक नाशिन।

ত্রাউন প্রাচীর পার্শ্বে জলৈর উপর দাঁড়াইরা। ফিরিতেও পারেন না, অগ্রসর হইয়া দেখিতেও পারেন না! পিছাইতে শক্তি নাই, অগ্রসর হইয়া দেখিতেও সাহস নাই। চুরি করিয়া দেখা অসভ্যতা। ব্রাউন बाई दिनम इटेलन। (कह पिशिल, नब्जात कथा। फितिया जामाहे কর্ত্তবা বোধ করিয়া, তিনি উপরে উঠিতে লাগিলেন।

আবার কণ্ঠস্বর। এবারে স্থধার স্রোত ছুটিল। যুবক তাহাতে নিষয় হইলেন। তাঁহার কর্ত্বাজ্ঞান ভাসিয়া গেল। স্থার প্রশ্বিণী-"डीट्रेक मिथिए डाँशांत वफ्रे हेक्स रहेग। जिन जावित्मन, हुन्नि क्त्रिया (मिथिया, চिलिया याहे।

অভি धीत्र बाउन् जल পদবিকেপ করিলেন পাছে जलের শক্ষে কথার শ্রোত রুদ্ধ হয়।

नात्रामनी "मात्रीत्र" मर्कं कंड क्यारे कहिर्डिल। "मामा जामा

হইতেও তোমাকে অনেক ভাল বাসিত, অধিক যত্ন করিত, আমাকে মাঝে মাঝে ভিরম্বার করিত, কিন্তু তোমাকে করিত না। শারী। দেই দাদা চলিয়া গিয়াছে,—উভয়কেই ভুলিতে চলিয়াছে, **আর বুঝি** আদিবে না, গাছের ডাল নোয়াইয়া, আর তোমাকে আশ্রের মুকুৰ था उग्नारेट ना"-- এर क्रि नाना इः (थत कथा मक्रा गिक खनारेट हिन। "শারী" একবার করিয়া নারায়ণীর ম্থপানে চাহিতেছিল। ধীরে ধীরে মুথ বাড়াইয়া ব্রাউন এই ছবিটি দেখিতে পাইলেন।

বালিকার ঈষন্মিত অঙ্গ্রাষ্ট্র—ছই হাতে ধরা থালা—সন্মুথে মুখ তুলিয়া, চোথের পানে চাহিয়া, চোথে চোথে সাদৃগ্য খুঁজিতে অবস্থিত হরিণ!—চারিদিক বেড়িয়া নিমে, উপরে, অস্তগামী স্থাকিরণে অরুণিম দিগ্বলয়,—স্থন্দর ছাব! ন বয়োবনশ্রী—স্থবর্ণময়ী প্রকৃতির উপহার, চারি-দিক হইতে ভারে ভাবে আদিয়া, বাালকার দেহযষ্টি নোয়াইয়া দিয়াছে।

এক দৃষ্টে ব্রাউন নারায়ণীর মুথ দেখিতে লাগিলেন! হরিণের সঙ্গে কণা কহিতে কহিতে বালিকার মধুময় কণ্ঠস্বর, হৃদয়গত আবেগ-রাশির সঙ্গে সঙ্গে পঙ্গায় পরদায় উঠিতেছিল।

গ্রাটন এরপ মূর্ত্তিত কখন দেখেন নাই, এরপ স্বরও কখন শুনেন নাই। তিনি এদেশের ভাষা জানিতেন না, প্রতরাং নারায়ণীর কথার এক বর্ণ ও বুঝিতে, পারিতুভিলেন না। বুঝিতে পারিতেছিলেন না বলিয়া, সে শ্বর তাঁহার পক্ষে বড়ই মধুব লাগিতেছিল—শ্বর্গচ্যুতা কল্পনাময়ী দেবগীতির স্থায় তাঁহার কর্ণে ধ্বনিত হইতেছিল।

चामित्न, "इम्रामित्न स्नीन-क्रम रेमन-मद्भिवदित जीति विम्रा কতদিন তিনি বাসন্তী সন্ধ্যার অভ্যুদয় দেথিয়াছেন। অকুণিম গগংনর यवनिकासत्राम इटेटं, প্রহেলিকাময়ী 'চাতকীর অজপ্র ব্যবিত শ্বরুশ্বধায়, कंडमिन निष्कत श्रमश्रमिक कत्रियाष्ट्रन। किन्न এमन मन्त्राध कथन रमत्थन नाहे, अयन ज्थिख कथन भान महिन

স্থ্য, অন্ত যাইবার পূর্বে, নারায়ণীর মুখে একবার কিরণ মাথাইয়া দিল। দোনার কমল সহস্র গুণ শোভা ধারণ করিল। আত্মহারা यूवक वित्रा উঠिল—"আহা! कि দেখিলাম!"

वाजेन मञ्जाष्ठ देश्त्राद्यत উত্তরাধিকারী—রূপবান, গুণবান যুবক। এরপ পাত্রে আত্ম-সমর্পণ করিতে পারিলে, বিলাতের বহু স্থব্দরী व्यापनामिग्रक जागावजो वित्वहना कत्रिरजन। विलाटज, बाउँरनत वर् ञ्चल दीत्र नर्गन नाज घिषाहिन। श्वःन भारत अनि अपनक वताश्रना क সন্ধ্যাক্তণে স্থন্দর মুখশ্রী রঞ্জিত করিতে দেখিয়াছেন; কিন্তু কষিত কাঞ্চন-ুগৌরী অরুণ কিরণে প্রতিফলিত হইলে কিরূপ দেখার, তাহা তিনি স্থাপ্ত কথন অমুভব করেন নাই। নারায়ণীর সৌন্দর্য্য, ও চিত্র-निधिত्यः व्यवश्वाद्यम बाउदात्र वाञ्छान विनुष्ठ कतिशाहिन। भूक यूवक विषया উঠिল, "আश कि দেখিলাম।"

একটা কিন্তুত হর্কোধ্য স্বর শুশিয়া নারায়ণী চমকিয়া উঠিল। ्र आठीरतत निरक मूथ फितारेम्रा, यमनि बाडेनरक मिथन, अमनि वानिका मভয়ে চীংকার করিয়া উঠিল। হাত হইতে থালা পড়িয়া গেল। পশाইবার জন্ত যেমন ঘরের দিকে ছুটিবে, অমনি দ্বারের চৌকাঠে মাথা ঠिकिया 'मा' विनिया मुर्किठा इहेया পिएल। "जय नाहे, जय नाहे" विनिया, শারণ নির্দারণের জন্ম, অন্তঃপুর হইতে রাণী ছুটিয়া আদিলেন। আদিয়া দেখিলেন, প্রাণপ্রতিমা নারায়ণী, বিলুপ্তসংজ্ঞায় ভুলুটিতা। রাণী वाषिया फिलिएन। नाडिनीक वूक जूलिया ডाकिएनन, "या जायात!" উত্তর পাইলেন না। তথন কোলে তুলিয়া, রাজাকে ডাকিতে ডাকিতে ं गृह मध्या व्यविष्ठे इटेलन।

· হঙ্বুकि खाउँन, চোরের ক্লার, দেখান হইতে <del>অঙ্</del>ঠিত হইলেন। वानिकात कि चिनि—वैािन कि मतिन, कानिष्ठ छै। होत्र नाहरन कूगारेग ना।

নারাখণীর চাৎকার শুনিয়া, রাজাও ছুটিয়া আসিতেছিলেন। আদিতে আদিতে উপর হইতে তিনি দেখিলেন, একজন সাহেব ञ्चर्वात्रथात्र जीत धतिया ছুটिया চলিयाছ। ইতিমধ্যে রাণী নারায়ণীকে কোলে লইয়া তাঁহার সমুথে উপস্তিত হইলেন। নারায়ণী তথনও मुर्छिछ।। রাজ। জিজ্ঞাদা করিলেন—"হইল কি!" রাণী নারায়ণীর মুচ্ছ রি কথা মত্রে জ্ঞাপন করিলেন। করেণ জানেন না, সাহেবকে তিনি দেখেন নাই, কাজেই আর কিছুই বলিতে পারিলেন না।

পলায়নপর সাহেবকে দেখিয়া, রাজা বুঝিতে পারিয়াছেন, নারায়ণীর মুচ্ছার কারণ কি। তিনি ভাবিলেন, একি অন্যাচার! আর কোন্ কাপুরুষইবা এ অত্যাচার নারবে সহ্য করিতে পারে ? প্রভাতে ব্রাহ্মণের অপমানে তিনি আপনাকেই অপমানিত বোধ করিয়াছিলেন। ব্রাহ্মণের অঙ্গে প্রহার্যাতনা তাঁহার শরীরে বিষের জালা উৎপন্ন করিয়াছিল। এখন আবার একি! তাঁহারই পৌত্রীর উপ্লব্ন অত্যাচারের উত্যোগ! বৃদ্ধ রাজার অবসাদময় নিজ্ঞিয় ধমনীতে উষ্ণ রক্তের স্রোত ছুটিল। একবার ভাবিলেন, ছুটিয়া গিয়া এই মুহুর্ত্তেই এই বিষম অপমানের শোধ লই। কিন্তু ব্রাউন তথন বহুদুরে, দেখিতে দেখিতে দৃষ্টিপথের অন্তরালে। ক্রবীর্য্য সর্পের স্থায়, তিনি অন্তরে অন্তরে দগ্ধ হইতে লাগিলেন।

পিতামহীর কোলে খাকিতেই নারায়ণীর সংজ্ঞা ফিরিল। রাণী তাহাকে ভয়ের কারণ জিজ্ঞাসা করিলেন; রাজা নিষেধ করিলেন, বলিলেন, কারণ আশার কাছে গুনিও; বালিকাকে প্রশ্নে পীড়িড कत्रि अ ना-गृर्ह नहेम्रा स्र्या कत्र । • आत्र मठर्क थाकि अ, नात्राम्नीरक कथन এका গৃহের বাহিরে আর্সিতে দিওনা।

#### , मञ्जनम পরিচেছদ।

ममछ রাত্রি ব্রাউনের নিদ্রা হইল না। নীচ কোতৃহলের বশবভী हहेशा, जिनि य कार्या कतियाहिन, मनर्क कर्मिय প্রবোধ দিয়াও, जिनि

সে কার্য্যের সমর্থন করিতে পারিলেন না। অমুতাপে ভাঁহার হাদয় मक्ष इटें लागिन। वानिकांत कानउ जिन्हे घंढेन किना जानिवात উপায় নাই। দেশীয় ভাষায় অনভিজ্ঞ তিনি কাহাকে কি বলিবেন! কেমন করিয়া নিজের নির্দোষতা প্রতিপন্ন করিবেন! কেই বা ভাঁহার কথায় বিশ্বাস করিবে! সহচরের কীছে মনোভাব প্রকাশ করিতে তাঁহার সাহস হইল না। প্রকাশে কোনও ফল নাই, পরস্তু নিরপরাধ হইয়াও, অপরাধী হার্লির কাছে তাঁহাকে মাথা হেঁট করিয়া থাকিতে হইবে। অমুতাপ-দগ্ধ যুব্ক সমস্ত রাত্রি অনিদ্রায় হাপন করিলেন।

প্রভাতে কাহাকেও কিছু না বলিয়া, পদব্রজেই ব্রাউন রাচি প্রস্থান করিলেন। স্থির করিলেন, "দেশীয় ভাষায়" অভিজ্ঞ হইয়া, আর একবার আমি অনন্তপুরে ফিরিক। বালিকার স্বদয়ে পিশাচ মুর্ত্তির ছবি রাখিয়া জীবন ধারণ করিব না।"

্ হার্লিও বিশেষ কোন কাজ করিতে পারেন নাই। আনন্দদের আসিয়া তাঁহাকে বুঝাইল, রাজ কুমারীর জন্ম অভিরিক্ত ব্যয় কর্তৃপক্ষের অসুমতি সাপেক। সাহেব যদি আদেশ দিতে পারেন, তাহা হইলে **(एउम्रानं ९ त्राक्र क्यांत्रीत क्या य**ण रेक्श पामी नियुक्त कतिर्ज भारत। श्राक्षि (म आफ्न फिल्ड गाइमी इहेलन ना। क्रित क तिलन, "एए श्री किंगनाद्वत मद्भ भवामर्ग कित्रया, व्याप्तम क्थि।"

. আহারের সময় উভয় বন্ধতে একত্রিত হইলেম। নিজ নিজ মনোভাব পরস্পরের কাছে গোপন করিয়া কথাবার্তা কহিলেন।

প্রভাতে উঠিয়া হার্লি সহচ কৈ দেখিতে পাইলেন না। ভূত্যকে জিজাসা করিলেন, সে কিছু বলিতে পারিল না। ভাবিলেন, এ'উন বৈড়াইতে গিয়াছেন; অনন্তপুরের মধ্যেই কোথাও আছেন। প্রাতরাশের সময় পর্যান্ত অপেকা করিয়াও যথন দেখিলেন খ্রাউন आंगिरणन ना, उथन छाहात गत्म मत्मह हहेन, इत्र छाहात्र

मक्तारन लाक नियुक्त कतिरलन। युक्त वानिली জिखामा कतिरलन; দে বলিতে পারিল না। লোক সকল ফিরিয়া আসিনা; তাহারা সাহেবকে নেখিতে পাইল না। একজন কেবল ব্রাউনের রাঁচিগমনের मः वान मिल । क ठक छन। कान भङ्ग वा क विष्ठ घन छ पूर्व আ नि তেছिन, তাহারা সাহেবকে রাঁতির পথে দ্বেথিয়াছে।

তথাপি হার্লি ব্রাউনের অপেকায় দেদিনের মত অনন্তপুরে থাকিবেন স্থির করিলেন। বিকালে রাঁচি হইতে এক পত্র আদিল। ডেপুটী কমিদনর তাঁহাকে অচিরে রাঁচি ফিরিতে আদেশ করিয়াছেন।

পত্র পাঠে হার্লি বিস্মিত হইলেন। তাঁহার এত শীঘ্র রাঁচি ফিরিবার প্রয়োজন ছিল না। অনিচ্ছায় তাঁহাকে অনন্তপুর ত্যাগ করিতে হইল। ত্যাগের অব্যবহিত পুর্বে আনন্দদেব তাঁহাকে বিদায় मिट्ड व्यामिट्नि। व्यक्त व्यक्त सन वहेशा, हात्नि **(म** उशानित कार्ट् বিদায় গ্রহণ করিলেন।

## व्यक्षांनन পরिष्ट्रम्।

কাণীপুর পৌছিতে রতনের তুই দিন লাগিল। গ্রামের বৃহিত্ব প্রান্তরে যথন ব্রাহ্মণ প্রা দিলেন, তথন স্থ্য প্রান্তর সীমায় ঢলিয়া পড়িয়াছে। গ্রামে উপস্থিত হইতে সন্ধ্যা হইল।

कानीभूरत এक जन मम्किनानी जभीनाद्भ वाम। এवः छाँशाक्र উপলক করিয়া বহুলোক এই স্থানে অবস্থিতি করে। অনেকেই বঙ্গতিসম্পন। কেহ রাজার আত্মীয়, কেহবা কর্মচারী। স্থলার ञ्चलत অটালিকায় রাজবাড়ী, কাছারীবাড়ী, দেবালয় প্রভৃতিতে সুসজ্জিত এই কুদ্র গ্রাম, দুর হইতে একথানি ছবির স্থার দেখাইত।

कामीभूरतक भाषा पिथि ए पिथि ए वाका शास उपिष्ठ इरेगान।

. महानिरवत्र चलुरत्तत्र नाम रेननकानन निःश। পত्यतः शृष्टं ५३ नामरे লেখা ছিল। তবে অতবড় নামটা সর্বাদা মুথে আনা স্থানা হয়না विषया, लाक नामठाक थाछ। कतिया भनूरे कतिया नरेयाहिन। क्य 'मनूरे' आथा। है श्रीधा नाज कतिन। धमन कि, इरे हादि खन वाषीय ७ ভদ্রলোক ছাড়া অনেকেই ভাল নামটা ভুলিয়া গিয়াছিল। গ্রামের মধ্যে পশার প্রতিপত্তি থাকিলেও, শৈলজানন্দ বলিলে অনেকেই ভাঁহাকে চিনিতে পারিত না।

রতন একজন আগন্তককে শৈলজানন্দের কথা জিজ্ঞাসা করিলেন। **সে ভাবিয়া চিন্তিয়া বলিল—"শৈলজানন্দ বলিয়া কেহ সে গ্রামে নাই।"** त्रजन यत्न कविरानन, लाकिंग धायवामी इहेलि धायित्र मकनाक চিনে না। দ্বিতীয় ব্যক্তিকে দেখিয়া জিজ্ঞাসা করাতে, সে ৰলিল, "रेमनकानम विनिष्ठा ताकात्र এक हो हा ही हिन ; छ। महो वहत्र थानिक रहेन मतिया गियाट ।"

এইরপ, ব্রাহ্মণ যাহাকে জিজ্ঞাদা করেন, দেই ব্যক্তিই একটা উদ্ভট त्रकरमत উত্তর দেয়। কেহ বলে, "শৈলজানন্দ রাজার পূর্ব পুরুষ। তিনি ত্রীকেত্রে জগন্নাথের অঙ্গে মিশিয়া গিয়াছেন।" কেহ बर्ष, "मে একজন वড़ গোছের জোয়ারী। এক দিন রাজার সঙ্গে প্রেমারা থেলিতে থেলিতে লাথো টাকা জিতিয়া লয়। রাজা তাঁহাকে रिश्ना इट्रेंट निवृद्ध इट्रेंट वर्लन। त्नाकों कि स त्नाज मधर्न कविर्द ना शातिया, व्यात्र अविष्ठ नाशिन। भारत এक एाक अभे छोका হারিয়া গেল। রাজার হাতে ছিল "মাছ," আর তার হাতে ছিল "কাতুর"। লোকটা কাতুর কাতুর করিয়া দম ফাটিয়া মরিয়া গেল। এখন আর শৈলকানন্দ নাই—তাহার ভূত আছে। সে এখনও রাজ-वाफ़ीत कानाट त्राणिकाटन काजूत काजूत विना ही कात करत।" **धरेक्य मामा कथा छनिएड छनिएड ब्र**छन अश्रम् इट्ट माशियन। जिनि विश्विज इहेलन, ভाবिलन, "मनानित कि यणदात्र नाम निशिष्ठ ভুলিয়া গেল।"

পথের ধারে একটা স্থন্দর সরোবর দৃষ্ট হইল। রতন মনে করিলেন, শৈলজানন্দের সংবাদ লইতে আর বৃথা রাত্তি কেন ? এই বেলা সময় থাকিতে থাকিতে ব্লাজার দেবালয়ে অভিথি হই। সমস্ত मिन পথে আহার করিবার স্থবিধা পান নাই। পূর্ব দিন সামাপ্ত আহার জুটিয়াছিল মাত্র। ত্রাহ্মণের হাঁটু পর্যান্ত ধূলা। পদ ধৌত করিতে তিনি সরোবরের দিকে অগ্রসর হইলেন।

দেখানে, সরোবর দোপানে একটা যুবতী একটা বালককে প্রহার করিতে নিযুক্ত ছিল। বালক দৃঢ়রূপে রমণীর অঞ্চল ধরিয়াছিল। রমণী তাহার হস্ত হইতে অঞ্ল চ্যুত করিবার জন্ম প্রাণপণে চেষ্টা করিতেছিল। বালকও অঞ্চল ছাড়ে না, রমণীরও প্রহার কার্য্যের বিরাম নাই।

ঘাটে নামিতে নামিতে রতন্ তাহাদিগকে দেখিতে পাইলেন। দেथिया বুঝিলেন, উভয়েই বিপন্ন। বালক নিজের জেদ কিছুতেই ছাড়িবে না, রমণীরও প্রহার ভিন্ন গত্যন্তর নাই।

বিপন্ন বুঝিয়া তিনি তাহাদের কাছে চলিলেন। -নিকটে গিয়া দেখেন, যুবতীটী যেমন স্থলরী, বালকটাও তেমনি স্থলর। রমণীর বয়স অহুমান পঞ্বিংশতি, বালুকের বয়স দশ। বালক কতৃক আরুষ্ট বসন, व्यक्त इरेट वर्ष विधिन्न क्रियाक्ष्म, वानु थान् क्ष्म भाम, वानु थान् বেশ—পূর্ণ যৌবন-লাবণ্যে ঢলঢল স্থন্দরী, সমুথে জোধরাগরঞ্জি মুখ-थानि नरेया हान निकाषिया गए। পूजून-अशूर्व किनी प्रक्रानक ! যেন পূর্ণ প্রস্টিত কমলের পার্থে নবাবতার কমল-কোরক মুখামুধি দাঁড়াইয়া যে যার ক্লপ কাড়াকাড়ি করিতেছে।

নীরবে প্রহার কার্যা চলিতেছিল। সরোবরের পার্স দিয়া কভ लाक याजायाज कतिन, दक्र मिथिन नी । त्रजन जाशामित निर्मित

क्रेलिअ, जाराता फितिया । जिल्ला त्रा प्राप्त क्रिक एम । जमनी वाल क्रित क्रिक एम । চাপড় মারিতেছিল তেমনই মারিতে লাগিল; বালক যেমন কাপড় थित्रिया টानिতেছिल, তেমনই টানিতে লাগিল।

রতন আর চুপ করিয়া থাকিতে পারিলেন না। যুবতীকে সংগাধন क्रिया विल्लिन,—"क्त कि मा। क्लिक य मात्रा याय!" ज्ञाति जि शूक्षिक मभौপ ए दिशिया, उभगी अन छाकि वात दिहा कतिन, किन्छ বালক কিছুতেই তাহা করিতে দিল না। রতন তথন বুঝিলেন যে, রমণীই অধিকতর বিপন্ন। তিনি আর সময়ক্ষেপ না করিয়া বালকের হাত ধরিলেন, অতি কণ্টে কাপড় হইতে হাত ছাড়াইলেন। বালক কাপড় ছাড়িয়া, রতনকে ধরিল। হাত ছুঁড়িয়া, পা ছুঁড়িয়া, কুদ্র মুষ্টিদ্বারা ন্দাবিরত প্রহার করিয়া রতনকে বার্তবাস্ত করিয়া তুলিল; নথাঘাতে জর্জরিত করিল। বালকের অত্যাচারে রতন বড়ই আনন্দ অমুভর করিলেন। নারায়ণীর পরে, আর কেহ<sup>®</sup>তাঁহাকে এরূপ মধুময় অত্যাগ্যারে उर्ने। इंड करत नारे। वृष्कत नाङ्ना पिथिया त्रभी किस निष्कृत। दिन। नर्बिगाञ भावधारन वाव् ठ कतिया बाँ ठिल कामत वैविया, वा वाशनादक वालदकक्ष मिश्ज यूचिवात छेश्याशी कतिया लहेल। ৰালককে পরিত্যাগ করিকে অমুরোধ করিল। বলিল—"এ ছুই - आभिन द्राविट्ड भादिद्यमं ना, आभाद्य मिन 🔑 -

ं त्र वन विलालन—''वाभि देशांक वामर खानिमाहि। ( वाभाम यारेट रहेरच वल, कारल लहेशा यारे।"

্বস্ততঃ, বালক তথনও পর্যান্ত আয়তে আদে নাই। রভন ইচ্ছা शूर्वक जाहारक व्याप्तरंख व्याप्तिरंज मिन नारे। वालकरक जीहात विक, करका, मस्टिक यर गठ्या প্রহার করিতে অনুমতি দিয়াছেন। এই আনাত্র नेगद्वत मः था ठाँश्व उस्थोन हो मृद्धि भाष्य कत्रिवारक, माथ पूर , हाति ७६६ शक (कम स्वान्त्राष्ट्र हरेशारहः।

যুবতী ব্রাহ্মণের কথার প্রতিবাদ করিল না। বৃদ্ধের উফ্টাশটা भूलात्र याथायाथि श्रेटि ছिल, म्रेटी जूलिया जाशा शास्त्र शास्त्र पिट भिला। উষ্ণীণ তুলিতে দেখিতে পাইল, সেই সঙ্গে একথানি পত্ৰও পড়িয়া तिशाष्ट्र। উखोभात मर्क পত्रशानि वाकालित हारू निर्व शिक्षां, সে দেখিতে পাইল, পতা শিরে "ইশলজানন দিং" নাম লেখা।

যুবতী বুরের মুথ পানে চাহিল। ব্রাহ্মণ তথনও বালকের আক্রমণ হইতে আত্মাকার ব্যস্ত ৷ অবসর পাইয়া,সে শিরোনামটা ভাল করিয়া দেখিতে লাগিল। চারিদিক হইতে অস্ত্রাকার মেদিনাকে আবৃত করিতে আদিতেছিল-; তাহার কিছু অংশ পত্রশিরে পতিত হইল, এবং রমণীর ि পিপাদিত দৃষ্টিকে অভ্প রাখিয়া, অক্ষর গুলির সমীপ হইতে ধীরে ধীরে मतारेमा पिल। वाकार ऐस्कीरनंक मरक পত্रशानि গ্রহণ করিতে গিয়া বুঝিলেন, রমণীর হস্ত ঈধং কম্পিত হইতেছে।

বুক ব্রাহ্মণ তোমার মতনী রুসজ্ঞ হইলে হির করিতেন, অক্ষর কর্টীর গায়ে একটু দোমরদ মাধান ছিল। দৃষ্টির দঙ্গে সঙ্গে মন্তিজে প্রবিষ্ট হইয়া, যুবতার মনে একটু মানকতার সঞ্চার করিয়াছিল। স্বাদয়তরকের একটু অংশ বাছবলীকে ভর করিয়া পত্রপুপাধানিকে ঈষৎ नेषः व्यात्मानिङ कतियाছिन। द्रेमशैन बाक्षण रिवत कतिन, छेरी অতি পরিশ্রমের ফল, বাল্লাকের সঙ্গে দ্ব্যুদ্ধে পরিশ্রান্তা রমণীর হাত্থানি প্রহারপ্রবাত্তে অবদর হইয়াছে।

পত্রথানি পুন্ত্রহণ করিয়া রতন যুবতীকে জিজ্ঞাসা করিলেন-"रेननजाननरक छान ?"

<sup>&</sup>quot;জানি।"

<sup>&</sup>quot;বাঁচাইলে। তাহার অনুসন্ধান করিয়া আমি হতাপ হইয়াছি।"

<sup>&</sup>quot;याপनि कांथा इंटेट जानिट एम ?"

<sup>&</sup>quot;वङ्गुत रहेटैंछ। छूरे मिन ध्रिका श्रेष छिला छि ।"

"আমার সঙ্গে আস্থন।"

রমণী, শৈলজাননৈর ঘর দেথাইতে ব্রাহ্মণকে সঙ্গে লইয়া চলিল। প্রহারে প্রতিপ্রহার না পাইয়া, বৃদ্ধকে দ্বাহ্দি অনভিজ্ঞ জ্ঞানে, বালক দিয়া করিয়া রণে ক্ষান্ত দিল। এবং অনভ্যোপায় হইয়া ব্রাহ্মণের কাধে মাথা রাখিয়া বিশ্রাম গ্রহণ করিল।

[ ক্রমশঃ।]

## वदभत जाभदाष्ट्रम

সনকর্ত্তারা বলিতেছেন, যে বঙ্গদেশটি দ্বিগণ্ডিত করিয়া শাসন করিতে পারিলে তাঁহাদের স্থাবিধা হয়। কিন্তু প্রজা সাধারণ সমন্বরে চাঁৎকার করিয়া বলিতেছে, এমন কার্য্য করিও না; আমাদের বড় অস্থবিধা হইবে। প্রজার সমবেত প্রার্থনা যদি যুক্তি সঙ্গতও না হয়, তাহা হইলেও স্থাধীনদেশে উহা উপেক্ষিত হইতে পারে না। শাসনকর্তাদের স্থাবিধা অস্থবিধা লইয়াই এখানকার সকল বিধি-বাবস্থা; তবে, প্রজার রোলনে বিদি তাঁহাদের হালয় কলাচিৎ আর্দ্র হয়, তাহা হইলে কথঞ্চিং পরিমাণে ঐ ব্যবস্থার পরিবর্ত্তন প্রত্যাশা করা যায়। গ্রন্থনিত অন্ত্রহ করিয়া লোক সাধারণের অভিমতি জানিতে চাহিয়াছিলেন বলিয়াই, লোকে কথা কভিতেছে; অভিপ্রেত ব্যবস্থার কারণ নির্দেশ করিয়াছেন বলিয়াই, তাহার সমালোচনা হইতেছে। বিদি সহসা এই ব্যবস্থাটি হকুম বলিয়া জারি হইত, আমরা তাহা হইলে চির্মিন নীরবে দীর্ঘ্যাস ফেলিয়াই সকল অস্থবিধা মাথা পাতিয়া লইতাম।

যে যুক্তির সংযোজনী শক্তিতে, প্রাচীন ত্রিকলিঙ্গ এক সঙ্গে গ্রথিত হইবে বলিয়া শুনিতেছি, দেই যুক্তিরই ক্রধারে ব্লুদেশের অঙ্গ ছিন্ন হইতে বিষয়িছে। লীশাময়ের হাতের যন্ত্র, কথনও বাঁশী হয়, কথনও व्यिन इय। (नर्भद्र रा व्यः रभद्र नाम्य नम्य वक्रान्भ, वक्र नाम व्याथाण হইয়াছে, তাহা বঙ্গের অঙ্গ হইতে বিচ্ছিন্ন হইবে। কিন্তু এটা প্রাচীন, हे डिहारमत क्या; এটা ভাব প্রধান তার ক্যা; যুক্তিবাদীর দরবারে উহা অগ্রাহ।

একটি প্রাদেশি চ শাদনের অধানে ছিল বলিয়াই, পূর্ব্ব পশ্চিমের বিরোধ বিষেষ তিরোহিত হইত; চাকুরী ওকালতি ও ব্যবসা বাণিজ্যের कग्र नकन (जनात लाकरे विভिন्न (जनाय वान कतिया, विभ्य ভाव সামাজিকতা এবং বন্ধুতায় বুজ হুইতেছিল; এবং পরস্পারের সংঘর্ষণে দূর প্রাদেশিকতা দূরীভূত হইয়া, সাহিত্য এবং কথাবার্তার ভাষা, একটি আদর্শে গঠিত: হইতেছিল। ুশাসন বিভিন্ন হইলে, হুগলি জেলায় আর বিক্রনপুরের ডিপুটির দর্শন পাওয়া যাইবে কি? ভাদামের কজন লোক, বঙ্গদেশে চাকুরী করিতে আদে ? তবুও এখনও আসাম সম্পূর্ণরূপে বঙ্গদেশের বহিভূতি নহে। কলিকাতার সভা সমিতি, मयाज मायाजिक छ।, जूना जात्व भूर्त भिन्द्रियत लाक नहेशा हिन्दिहा। विभिन्न ३ व दाँधन, वुद्करादि हुँछित्रा ना शिला ३, य अजा छ अधिकः পরিমাণে শ্লথ হইয়া পড়িবে, তাহা কি কেহ অস্বীকার করিতে পারেন ? তব্ও কিন্তু ক্ষমতাশীল শাসনকর্তা বিজপের হাসি হাসিয়া ব্লিবেন. स्य व्यामात्मत्र मकन होश्कात्रहे ভाव्यधान जात्र कन। अखाः याहा করিতে হয় কর, কিন্তু কাটা ঘায়ে আর মুণ ছিটাইয়া দিও না।

বেহার চাই, হাজারিবাগ চাই, উড়িয়া চাই; নহিলে ব্যক্তি বিশেবের স্বাহ্য রক্ষা হয় না। কিন্তু এক জনের পৌষ মাসের অঞ্ कि नकल्वत नर्वनाम इहर्त ? इहर्द नाड कि ? 'नकल' विल्

যে ক্লফকায় অসভ্য বর্ষর খুঝায়, ঐ একজন কি তাহাদের সমবেত সংখ্যার উপর একল্ফ অধিক নহেন? তবে হউক; উড়িয়া লইয়া বাঙ্গালাদেশ গঠিত হউক; এবং বঙ্গ, আণ্ডামানে দ্বীপান্তরিত হউক। যে শ্বেতাঙ্গ কমিশনরে, সরকার বাহাদূরের বিরাগভাজন হইবেন, অথচ বাঁহাকে উন্নাত না করিলেও নীচের কোন প্রিয় পাত্রকে উন্নীত করা যায় না, ভাহাকে জলাভূমির মেলেরিয়া নাশ করিবার জন্য পূर्वाक्ष्णत भागन कड़ी कड़ी हिन्दि। এদেশে দिन দिन निह मिविनियानित पन वािष्या উঠিতেছে; मে छनिक्छ ज् जात्रिजन এলেন ডিলনের তত্ত্ববেধানে ঐ প্রদেশে স্থরক্ষিত করা চলিবে। সকল-निक्ट स्विधा हहेरव ; এथन প্राक्तात कन्नन (Mich car ?

महस्य महस्य भंजामिनि इहेर्ज , वर्गगा व्यार्थमन পত প্রেরিভ इरेटिहा जै नकन जात्वनम् यथन युक्ति তर्कत कथा श्रवृत পत्रियान আছে, তথন আর দে সকল কথা লিখিবার কোন প্রয়োজন নাই। যুক্তি তর্কের আদৌ কোন প্রয়োজন নাই; কেন্ না উহা হইতেই व्यक्षिक व्यमक्रम উপश्चित इटेटिছে। গ্ৰহণিনেণ্ট বড় অভিমানী। কেহ যদি তাঁহার যুক্তিগুলির ছিদ্র দেখাইয়া দেয়, তিনি রাগ করিয়া বর্ষরের युक्ति भारम ঠिनिया, গোদের উপর বিষ ফোড়ার ব্যবস্থা করেন। व्यागता विनिनाम, य ঢाका मयमनिः ह विष्टित्र कता চলে ना ; भवर्गमणे व्यान व्यान वाक्षक शांति शांतिया विलितन, य वाक्य शक्ष क्रिक्रभूत अङ्गिकि का ना ना निष्ठ भागा है । अज्ञान द्वा (करन युक्त कर्ज বিনীতস্বরে বলিতে পারি, 'হে প্রভু তোমার রূদ্রসূর্তি সংহার কর।'

गवर्गरमण्डेत অছুত প্রস্তাবটি যে দিন প্রথম পড়িয়াছিলাম, তখন আমাদের মূর্থতার জন্ম, উহা নিতাপ্ত অসম্ভব কথা বলিয়া মনে रहेबाहिन। পড়িबारे ভাবিয়াहिनाम, যে ঢাকা ও নয়बनिमः আদামে

यारेद वनिया लाम जूनिया मिल्न, ठछे शाया नित कथा ठाभा পড़िद ; এবং গবর্ণমেণ্টও তথন কেবল চট্টগ্রামটি লইয়া জ্ঞাসাম ভুক্ত করিয়া मिदिन। **এখন দেখিতেছি, যে গবর্ণমেণ্টের সঙ্গে আমাদের যে গুরুতর** সম্বন্ধ, তাহাতে পরিহাদটা চলে না; গ্রব্মেণ্টও করেন নাই। এখন উপায় কি ?

এদেশের লোকদের মধ্যে যাহাতে রাজনৈতিক আন্দোলন করিবার ক্ষমতা বৃদ্ধি না পায়, ভাহাই নাকি গ্বর্ণমেন্টের পক্ষে বাঞ্নীয়। যদি তাহাই হয়, তবে একটা প্রস্তাব তুলিয়া গ্রামে প্রামে নিরক্ষর ক্ষয়ক-দিগকেও সমবেত আন্দোলন করিতে শিখান, ভাল হইতেছে না। গবর্ণমেণ্ট যে প্রকার প্রত্নতত্ত্বপটু এবং নৃতন ব্যবস্থা-কুশল, তাহাজে এ দিকেও একটু দৃষ্টি থাকিলে ভাল হইত। এই যে দেশব্যাপী व्यात्मानन, ইহাতে कि গবর্ণমেণ্ট বুঝিতে পারিতেছেন না, যে এই ত্র্বণ ও ভীক্ জাজির রোদন্দর অন্তরালে অভিসম্পাত আছে ? স্বাকার করি, যে অভিসম্পাতে বিশ্বাস করা কুসংস্থার। প্রতিদিনের টেলিগ্রামগুলির দিকে দৃষ্টিপাত করিলে, স্বতঃই যেন মনে হয়, ষে व्रथारे गवर्गमणे প্रकाकूलिय काष्ट्र विश्वाम श्रेका ও छक्ति रात्रारे एकि। রাজভক্ত জাতির অন্তঃকরণ হইতে শ্রনা ভক্তি তাড়াইয়া দেওয়া ভাল, না একটু ক্লেশকর হইলেওু, বিস্তৃত রাজ্যশাসন করা ভাল ?

वीविजय्ठल मजूमनात।

## वमछ।

আদিবা মাত্র काञ्चन टिज এস তুমি; কভু না দেখি ভ্রম। এবং সঙ্গে আনগো রঙ্গে वित्रशै क्वनात युक्टो यम। यथा : -ুএবং বকুল, আমের মুকুল, ভাল ফুল আরো পাঁচ রকম, অলিগুঞ্জন, কোকিল কুজন আর পায়রার বক্বকম্; • চাঁদের কিরণ, मृष् ममौत्रग, गगरन माथारना छनोन दर ; অপিচ নব্য হা হুতাশ লাগা বেতর ঢং। আমরা বা হোক্ বুড়স্থড় লোক, ুওগুলো সহিতে পারি বরং; किन्छ (भनारे ध्वात जावात्र অন্ধ আঁথি ও বন্ধ দম্। তাছাড়া আবার আছে ধ্য তোমার গায়ে-পড়া রোগ ভারি বিষম; জগৎ স্থন্ধ व्यावान वृक्ष िटिक मिर्य िं दिक शांदक जथन। কুম্বমে মর্ম— -ভেদন কৰ্ম नास वमछ थाक कि मन्। ভেদিয়া চর্ম ছাপিয়া অঙ্গ উঠোনা মুর্ত্তিলয়ে ভীষণ।

# বঙ্গমাতা।

হে জননি, সপ্তকোটি অক্ষম সম্ভানে
পালন করিছ নিতা স্তন্ত-মধা দানে।
সেহের মধুর স্বন্ধে করিছা, আছ্বান
সকলেরে সমভাবে কোলে দাও স্থান,
নীরৰে বহিছ শিরে শত হঃথ ভার,
সম্ভান কল্যাণ শুধু কামনা তোমার।
নহ তৃমি রাজেন্দ্রাণী—সৌভাগ্য-গর্বিতা
নহ মাতঃ মণিমুঁজা-মাণিক্য-মাণ্ডতা;
তবু সম্ভানের শত অভাব মোচন
করিতেছ, সেহমর্মি, করি' প্রাণপণ।
এ বিশ্ব সমাজে আজি তৃমি অবজ্ঞাতা,
ভিথারিণী—দীনহীন সম্ভানের মাতা।
তা বলে' কি ভূলি' তোমা', ভূলি' আপনার
মা বলিব বিমাতার—অপরের মার ?

শ্রীরমণীমোহন ঘোষ

# ভারতে য়ুরোপীয়।

তথন তাঁহাদের বাণিজ্যও বন্ধ হইয়া আদিল। শাস্ত-শাসনভীক ভারতবাদী সমুদ্র-যাত্রা বন্ধ ক্রিলে য়ুরোপে ভারত-পণ্য আর
যায় না; অগণ্য য়ুরোপীয় বণিকের দৈক্তদশা আর য়ুচে না, অথচ
ভারতবর্ষের ধনৈশ্বর্যার স্থৃতিও জাজ্জল্যমান রহিয়াছে। এদিকে
মার্কো পোলো প্রভৃতি পর্যাটকগণ এশিয়াখণ্ডের বহুত্বল পরিভ্রমণ
করিয়া ভারতবর্ষের সমৃদ্ধি ও স্থলপথের ফুর্গমতার সাক্ষ্য প্রদান
করিলেন। তথন ভারতবর্ষ আদিবার নৃতন পথ আবিদ্ধার করিবার
জন্ত য়ুরোপীয় নারিকেরা ব্যাকুল হইয়া পড়িলেন। ভারতবর্ষ
য়ুরোপ হইতে পূর্বাদিকে অবস্থিত; কিন্তু পূর্বাদিকের হলপথ, নানা
কারণে একেবারেই কন্ধ। স্কুতরাং উত্তর, পশ্চিম বা দক্ষিণ দিক
দিয়া জলপথে ভারতবর্ষে পৌছিবার চেষ্টা হইতে লাগিল।

কেছ কেছ অনুমান করিলেন, যুরোপের উত্তরদিকে সুমেকর সিরিকটবর্ত্তী সমুদ্রপথে চীন সীমায় উপনীত হওয়। যাইবে। অনুমান কার্যো পরিণত করিবার পক্ষে আয়োজনের অভাব হইল না। কিছু সেই চিরতুষারাচ্ছন ত্রধিগম্য মেক প্রদেশে কয়েকটি ত্ঃসাহাসক অভিযানের শোচনীয় পরিণাম হইল। কত লোক অণবপোত সহ বরফ্জোবিত হইয়া মৃত্যুমুথে পভিত হইল; আর কত লোক ভগ্নত্ত্বী ও ভগ্নমনোরথ লইয়া কগ্নদেহে দেশে ফিরিল। উত্তরদিক দিয়া চীন বা ভারতভূমিতে পদার্পণ করা যাইবে না, ইহা এক প্রকার শ্বিরীকৃত হইয়া গেল।

এই সমরে রোম ও গ্রীসের পূর্ব প্রতিভা বিলুপ্ত হইয়াছিল; স্পেন উন্নতিশিধরে সমার্ক ছিল। উপান ও পতুন অগতের

নিয়ম। ষাহার অধিক উন্নতি হয়, তাহার পতনও অধিক হয়। আবার যে পতিত হইয়া উঠিতে পারে, বিধির ক্বপায় তাহার বলের পরিমাণও অধিক। স্পেন বহুদিন মুরীয় বা মুসলমানদিগের পদানত ছিল; বহুদিন পরে যথন স্পেন স্বীয় স্বাধীনতা ফিরিয়া পাইল, তথন স্পেনীয়দিগের নবপ্রতিভা• নানা পথে প্রধাবিত হইল। জ্ঞান ও শিল্পোন্নতি বিষয়ে যে স্পেনীয়ুগণ তাুহাদের মুরীয় স্থলতানগণের নিকট বহু পরিমাণে ঋণী তদ্বিষয়ে সন্দেহ মাত্র নাই 🗯 নববল-দুপ্ত ম্পেন এরূপ নবোভামে কার্য্যক্ষেত্রে অবভার্ণ হইয়াছিল যে, পরবর্ত্তী ক্ষেক শতাকী মধ্যে ভূমগুলের বহু অজ্ঞাত ও অগম্য প্রদেশে স্বীয় বিজয় বৈজয়ন্তী উড়োন করিতে সক্ষম হইয়াছিল। বস্তুতঃ তুঃসাহসিক অভিযানে যুরোপ থতে স্পেন,ও পর্চু গালের লোকেরাই প্রথম হস্তক্ষেপ করেন। পাশ্চাত্য ঐতিহাসিক যুগের ছইটি অদ্ভূত ক্রিয়া এই ছই জাতি দারা অমুষ্ঠিত হয়। স্পেনীয়দিগের দারা আমোরকা আহিষ্কৃত হয়; পর্টুগীজেরা ভারতবর্ষে আসিবার জলপথ বাহির করিয়া সভ্য-জগৎকে চমকিত করেন।

युद्राप्त्र बजाज अफ्रांच (य मकल विष्युर्द बजूनीलराज कार्जाव লক্ষিত হইত, নবোদগতভাগা স্পেন ভদ্বিয়ে উৎসাহ দিতে কাত্র ছিল না। ইতালীয় কলম্বুদ, স্পেনে আদিয়া তত্ত্ত্য নুপতির নিকট ভারতবর্ষে আসিবার পথ আবিষ্কারের জন্ত সাহায্য প্রার্থনা করিলেন। মহাযতি ফর্ডিনাও ও মহারাণী ইসাবেলা তথন স্পেনের সিংহাস্ত্রে সমাসীন ছিলেন। তাঁহারা প্রশান্ত হদমে কলম্বসকে আবশ্রকীয় সাহায্য প্রদান করিলেন। কলম্বন পশ্চিমমুখে সমুদ্র বাহিয়া ভারতবর্ষে यादेवात जञ्च कुञ्मक्त रहेरणन। जिन जिनशानि सुमज्जिज जत्रि

<sup>\* &</sup>quot;The Moors in Spain" by Stanley Lane-Pool.

সমভিব্যাহারে সমুদ্রযাত্র। করিয়া ১৪১২ খুপ্তাব্দে আমেরিকা আবিষার क्रिलिन। আমেয়িকা রাজ্য তথন যুরোপীয়দিগের নিকট সম্পূর্ণ অপরিজ্ঞাত ছিল; বিশেষত: কলম্বস প্রকৃতপক্ষে নৃতন মহাদেশ व्याविकारत्रत व्यक्त विश्वि इन नारे; ভाরতবর্ষই তাঁহার লক্ষ্য ছিল। এজন্ত তিনি যে দ্বীপপুঞ্জে প্রথম অবক্ররণ করেন, তাহারই নাম ভ্রান্তি ৰশত: "ইতিয়া" রাখিলেন। কিছুদিন পরে যথন ভ্রম সংশোধিত हरेग्राहिन, उथन जात्रजर्वर्ष हरेटि विस्थि कत्रिवात क्रम सिर्वे नवाविष्ठ छ बीপপুঞ্জের নাম রাথা হইল—"ওয়েষ্ট ইভিয়া"; আর দেই যুরোপীয় लाखित প্রায়শ্চিত ফলে ভারতবর্ষের নাম হইল—"ইষ্ট ইণ্ডিয়া"।

व्यक्तियान वात्यिका वाविश्व इहेन वर्ष, किन्न जात्रजवर्षत्र १थ बाहित्र रहेन ना; একণে কেবলমাত্র দক্ষিণদিক বাকী রহিল। পর্টি গালের নৃপতি হেন্রী এ বিষয়ে প্রথম মনোযোগী হন। তাঁহার সময়ে व्याक्षिकात्र উপকূল ও निक्रवेदछी সমুদ্রবক্ষ পর্য্যবেক্ষণের জন্ত করেকবার टिडी करा इस्। ১৪১৮ খৃষ্টাকে পিউয়ার্টো স্থান্টো (Puerto Santo) बीপ প্রথম আবিষ্ণত হয়। পর বৎসর মদিরা দ্বীপ পর্টু গীজদিগের করায়ত হয়। পরবর্তী অর্দশতাকী ধরিয়াও সমভাবে চেষ্টা চলিতে-ছিল; কিন্ত তাহা বিশেষ ফলোপধায়ক, হয় নাই। আফ্রিকার यर्ली भक्त शिव्रा भर्षे शिक्ष विश्व क्ष क्ष क्ष काठभाव वा अभनार्थ स्थिलना विनिमस्य यर्थिष्ठे अर्ग मः श्रष्ट कतिन वर्षे, किन अर्गक्ष जात्र जवर्ष व्यानिवात्र नथ व्याविकात्रक्रम अधान উদ্দেশ এখনও व्यन् त्रिन।

व्यवस्थित १५ गाल्य व्यविश्व विक्रीय काल्य प्राक्षकारण वात्रथरणा-মিউ ডিয়াজ্ (Bartholomew Diaz)\* নামক এক উত্তমশীল পর্টু গীজ

<sup>\*</sup> Thomton's British Empire, Vol. I., Page 7.

নাবিক ১৪৮৬ খুষ্টাব্দে আফ্রিকার দক্ষিণ সীমায় উপনীত হন এবং তত্রতা অন্তরীপ অতিক্রম করেন। ঐ স্থানের সমুদ্র বাটিকাসকুল বলিয়া ডিয়াজ্ আবিস্কৃত দক্ষিণ সীমার নাম রাখেন—"ঝটিকাময় অন্তরীপ" (Stormy Cape: \*। ডিয়াজ্ আর অধিকদূর অগ্রসর হন নাই। যথন তিনি সানন্দে স্বদেশে প্রত্যাগত হইয়া, উদ্দীব নৃপতিকে স্থূসংবাদ দিলেন, তথন তাঁহার মনে ভারতবর্ষে যাইবার পথ আবিষ্কারের আশা জাগিল—তথন তিনি আনন্দে উৎফুল্ল হট্য়া ঐ বিপদসঙ্কুল অন্তরীপের নাম রাখিলেন—"উত্তমাশা অন্তরীপ" (Cape of Good Hope)†। অল্লদিন মধ্যে জনের মৃত্যু হইল, এম্যামুয়েল রাজ-সিংহাদনে উপবেশন করিলেন। নৃতন আবিষ্ঠারের সদ্বাবহারের জন্ম পর্টু গালে বিরাট আয়োজন হইতে লাগিল।

कर्यकथानि बाराक समुष्किल बरेग; नानाएमीय नृপতিকে উপঢৌকন দিবার জন্ম বথেষ্ট পরিমাণ হুন্দর স্থুন্দর সংখর দ্রব্য সংগৃহীত इड़ेल; विष्म गम्यात्राया पर्वे शीख नाविकवृत्मत पर्वविध अञ्चिषा पृत्री-করণার্থ রাজভাণ্ডার উন্মুক্ত হইল। ভাস্কো-ডা-গামা নামক এক ভাগ্যবান ্উত্তমশীল সম্রাস্ত য়ুবক এই অভিযানের সর্বাধ্যক্ষ নিয়োজিত হইলেন। জাহাজগুলির অগ্র ও পশ্চাতে পর্টুগাজ রাজপ্তাকা উড্ডীয়মান হইল; ভাস্কো-ডা-গামাকে যাবতীয় বিষয়ে ক্ষমতাপন্ন করিবার জন্ম রাজপ্রদত্ত সনন্দ অর্পিত হইল; নবাবিশ্বত নানা দেশে প্রতিষ্ঠিত করিবার জন্ম খুষ্টধর্মাচ্ছ বছসংথাক ক্রেশ প্রস্তুত হইল; স্পেনের

<sup>\*</sup> ভিয়াজ্ ইহাকে Cabo Tormontoso এই পট্ৰীজ নাম প্ৰদান করেন; উহারই ইংরাজ অমুবাদ করিলে Stormy Cape হয়। See "With our soldiers in the Front," page 4,

<sup>+</sup> जान इशारक Cabo De Bona Esperanza अरे शर्जी नाम आगन করেন; উহারই ইংরাজী অমুবাদে অবিকল Cape of Good Hope হয়।

গর্বগোরব থব্র করিবার জন্ম পর্ট্ গীজগণ উন্মত্ত হইল। জগতের কোনও অভিযান এতদপেকা অধিকতর আশা, আনন্দ ও উৎসাহ जिलीयन कतिएक मक्तम रहेशाहर विविद्या (वाथ रूप ना।

े ভাষো-ডা-গামা ১৪৯৭ খুপ্তাব্দের ১ই জুলাই তারিথে জয়োলাস-भेख खर्कािज्यस्मत्र जानमध्यनित्र मेर्धा निम्बन পরিত্যাগ করিলেন; পরবন্তী ২০শে নভেম্বর তারিখে উত্তমাশা অন্তরী অতিক্রম করিলেন; ध्वर ১৪৯৮ अधारमत य गाम जात्व वर्षत १ ागाश्कृत्व काविक है বন্দরে অবতরণ করিলেন। এই প্রাথম যুরে প্র জাহাজ ভারতীয় বন্দরে দেখা দিল। ইয়ুরোপীয়দিশের পক্ষে এ অভি শুভদিন।

ৰিস্তীর্ণ-বীচিমালা-বিক্ষোভিত বারিধিদার উন্মুক্ত ইইল; পথের সন্ধান পাইয়া ক্রমে ক্রমে হলও, ডেনখার্ক, ইংনও ও খ্রান্স প্রভৃতি দেশের বণিক স্ম্প্রদায় ভারতবর্ষে বাণিজ্য করিতে আসিতে লাগিলেন। বহুদেশের সহিত বাণিজ্য করিয়া অত্যুর্বর ও থনিজ-বহুল ভারভভাণ্ডারে বছ কাল ধরিয়া যে ধনরাশি সঞ্চিত হইতেছিল, মুসলমান শানকের অবিরত আক্রমণ ও অত্যাচারে এবং অজস্র বিলাস স্রোতেও যাহা সন্ন পরিমাণেই নিঃশেষিত হইয়াছিল, ১৪৯৮ থৃষ্টান্দ হইতে ক্রাহা বহু বিদেশীয় পশ্য-বিপণিতে বিক্লিপ্ত হট্য়া পড়িতে লাগিল। ভাটার সময়ে নানা ভোতোপথে থেরাপ চতুদিক হলতৈ জলরাশি সমুদ্রে গিয়া সঞ্চিত হয়, শেইরূপ যথন ইউরোপের সহিত ভারতের বাণিজ্ঞা-সংস্রুণ আরম্ভ হইয়াছে खंधन इंहेट छहे, जत्रक जत्रक मनानानिङ हहेट इहेट जात्र जात्र जात्र जात्र जिन्न मा ्नाना विष्मीय वन्तरत्रत्र जातान्त्री जानिया पिटल्ह।

## वीमजीमहत्त मिखं।

# জাতীয় জীবনের মেরুদণ্ড।

মাথন মাম্য কোন সাধীনজাতির মধ্যে বিচরণ করে, তর্থন তাহার মনে স্বতঃই এই প্রশ্নের উদয় হয় যে, জাতীয় জীবনের মেরুল্ড काथात्र ? य निक्तित्र महिमात्र मानवङ्गात्र উচ্চু निक इहेत्रा **উঠে**, উহার মূল কোথায় ? প্রকৃতির জগতে অমুদন্ধিৎসু, হইয়া ষতই অন্তর হইতে অন্তর্ভম প্রদেশে প্রবেশ করা যায়, তত্ই এই মহিমামর গূঢ়তত্ত্বের জাজলামান লিপি নয়নপথে পতিত হয়; ততই এক অজানিত হ:থ ভরে এই আকাজ্জিত চিরদীন হৃদয় অবনত হইয়া পড়ে। যে নরনারী লইয়া একটি জাতি সংগঠিত, উহাদের উভয়ের আত্মবিকাশের অসম্ভাবে জাতীয় পুতন এবং উহাদের আত্মবিকশিত হৃদয়ের সন্মিলনে জাতীয় উত্থান। আজ যে এই স্কুদুর প্রাচ্যজগতের একমাত্র আশা ও ভরসাম্ভল জাপানের গৌরবকাহিনী, দূর হইতে দুরান্তরে, মেরু হইতে মেরুপ্রান্তরে, প্রতিধ্বনিত.হইতেছে উহার অর্বই নরনারীর সমঞ্জস্রাভূত বিকাশ। এই জাতীয় উন্নতির ইতিহাঁস ঝঞাবাছ বিরহিত নহে। যে জাজীয় বিপ্লব জাতির মূলে নবশক্তি আনয়ন কেছে দে ভীষণ স্রোত জাপাঁদের উপর দিয়া বহুমান হইয়া গিয়াছে। সেই विপ्लदित्र मर्था किया काशानित पूत्रमर्थी मनीयीशण मिश्राष्ट्रिका द ইতরবিশেষ নির্কিশে যে নরনারীর উচ্চশিক্ষা ব্যতীত সাময়িক উন্নছি চিরস্থায়ী হইতে পারে না। তাই, মহা বিপ্লবের শোনিত ধরণী হইটা মুছিয়া যাইতে না যাইতেই জাপানের মাতৃভক্ত কন্মীগণ প্রাণপণে উল শিক্ষা বিস্তারের প্রশ্নাসী হইলেন। তাঁহারা আরও জানিয়াছিলেন, শিক कान एम दिएएभत वित्य मण्यास्ति नरह। रामव साहि भिकारि जीवत्नत्र উপযোগी कत्रिया गरेबार्छ, जारात्रा एकश्वानीय, जारे विनी

গর্মবোরব থব্র করিবার জ্ব্র পর্টুগীজগণ উন্মন্ত হইল। জগতের কোনও অভিযান এতদপেকা অধিকতর আশা, আনন্দ ও উৎসাহ উদ্দীপন করিতে সক্ষম হইয়াছে বলিয়া বোধ হয় না।

ভাস্কো-ডা-গামা ১৪৯৭ খৃষ্টান্দের ১ই জুলাই তারিথে জয়োলাস-মত্ত স্বজাতিবৃদ্দের আনন্ধবনির মধ্যে লিসবন পরিত্যাগ করিলেন; পরবন্তী ২০শে নভেম্বর তারিখে উত্তমাশা অন্তরীপ অতিক্রম করিলেন; এবং ১৪৯৮ পৃষ্টাব্দের মে মাদে ভারতবর্ষের পশ্চিমাপকুলে কালিকট্ট বন্দরে অবতরণ করিলেন। এই প্রথম য়ুরোপীয় জাহাজ ভারতীয় वनरत रमथा मिल। ইयूर्त्राभीय्रमिश्तत পरक ध जा जि खर्जिम।

ৰিস্তীর্ণ-বীচিমালা-বিক্ষোভিত বারিধিদ্বার উন্মুক্ত ইইল; পথের সন্ধান পাইয়া ক্রমে ক্রমে হলও, ডেনমার্ক, ইংলও ও দ্রান্স প্রভৃতি **(मर्**नद विषक मृष्यिमाग्र ভারতবর্ষে বাণিজ্ঞা করিতে আসিতে লাগিলেন। বহুদেশের সহিত বাণিজ্য করিয়া অত্যুর্বর ও থনিজ-বহুল ভারভভাণ্ডারে বছ কাল ধরিয়া যে ধনরাশি সঞ্চিত হইতেছিল, মুসলমান শাসকের অবিরত আক্রমণ ও অত্যাচারে এবং অজন্ত বিলাস স্রোতেও যাহা স্বল্প পরিমাণেই নি:শেষিত হইয়াছিল, ১৪৯৮ খৃষ্টাক হইতে ভাহা বহু বিদেশীয় পগ্ন্য-বিপণিতে বিক্ষিপ্ত হট্য়া পড়িতে লাগিল। ভাটার সময়ে নানা ্লোতোপথে যেরূপ চতুদ্দিক হটতৈ জলরাশি সমুদ্রে গিয়া সঞ্চিত হয়, দেইরূপ যথন ইউরোপের সহিত ভারতের বাণিজ্য-সংস্রব আরম্ভ হইয়াছে াজখন হইতেই, তরজে তরজে মন্দানোলিত হইতে হইতে ভারতৈখ্যারাশি ्नाना विष्निशेष वन्तरत्रत्र ভাগ্যলক্ষী আনিয়া দিতেছে।

## গ্রীসতীশচন্দ্র মিত্ত।

# জাতীয় জীবনের মেরুদণ্ড।

স্থান সাম্য কোন স্বাধীনজাতির মধ্যে বিচরণ করে, তথন তাহার মনে স্বতঃই এই প্রশ্নের উদয় হয় যে, জাতীয় জীবনের মেরুদণ্ড কোথায়? যে শক্তির মহিমায় মানবহুদ্য় উচ্চু সিত হইয়া উঠে, উহার মূল কোথায় ? প্রকৃতির জগতে অমুদন্ধিৎসু, হইয়া যতই অস্তর হইতে অন্তর্ভম প্রদেশে প্রবেশ করা যায়, তত্ই এই মহিমামন্ত্র গূঢ়তত্বের জাজ্ঞলামান লিপি নয়নপথে পতিত হয়; ততই এক অজানিত হ:থ ভরে এই আকাজ্জিত চিরদীন হাদয় অবনত হইয়া পড়ে। যে নরনারী লইয়া একটি জাতি সংগঠিত, উহাদের উভয়ের আত্মবিকাশের অসম্ভাবে জাতীয় পতন এবং উহাদের আত্মবিকশিত হৃদয়ের সন্মিলনে জাতীয় উত্থান। আজ যে এই স্কুদুর প্রাচ্যজগতের একমাত্র আশা ও ভরসাত্তল জাপানের গৌরবকাহিনী, দূর হইতে पूत्राख्रत, भिक् रहेट भिक्न थाख्रत, প্রতিধানিত হইতেছে উহার অর্থই নরনারীর সমঞ্জস্রাভূত বিকাশ। এই জাতীয় উন্নতির ইতিহাঁস ঝঞাবাত বিরহিত নহে। যে জাজীয় বিপ্লব জাতির মূলে নবশক্তি আনম্ন করে দে ভীষণ স্রোত জাপাঁদের উপর দিয়া বহুমান হইয়া গিয়াছে। সেই विপ्लदित यक्षा किया कालात्मत पूत्रमणी यनीयीगण मिश्रमाছिलन स्व ইতরবিশেষ নির্বিশেষে নরনারীর উচ্চশিক্ষা ব্যতীত সাময়িক উন্নতি চিরস্তায়ী হইতে পারে না। তাই, মহা বিপ্লবের শোনিত ধরণী হইতে মুছিয়া যাইতে না যাইতেই জাপানের মাতৃভক্ত কন্মীগণ প্রাণপণে উচ্চ শিক্ষা विखादित अग्रामी इटेलन। डाँशत्रा बात्र कानिशाहितन, भिका कान (मन विकारने विकार विकार मन्निष्ठि नरह। य भव का कि निकारक जीवरनत्र উপযোগी করিয়া লইয়াছে, ভাষারা গুরুস্থানীয়, ভাই বিনীভ

শিষ্যের স্থায় নতশিরে ইউদ্বোপ ও আমেরিকার নিকট শিক্ষার্থি হইয়া উপश्वि इहेलन। य जानर्न ध्रिया हेउँ तो १ ७ जामित्रका जगर्ज चकुननीय मिक्तित ताका मःशाभन कित्रप्राष्ट्र, भिरे भए। প্রাচ্য জগতের विष्ययक्क वकाम माथिया এ काजिक ना ठालारेल रेश मांफ़ारेख পারিবে না। তাঁহারা রাজনীতির এই স্ক্রতন্ত্রটুকু অবগত না হইলেই चाक এই काপानের ইতিহাস বিভিন্ন বর্ণে রঞ্জিত হইত, হয়ত ইউরোপের অ্গ্রদর-নীতির করাণ গ্রাদে পতিত হইয়া জাতীয় জীবনের শেষ আলোকটুকু निर्काि १० इहेम्रा याहेल।

জগতে যে সব জাতি কর্মা হইতে ধর্মাকে বিচ্ছিন্ন করিয়াছে, ভাহারাই কর্মময় জাতির উপপ্লাবনে আপনাদের শেষ সম্পত্তি অমূল্য याधीनठा त्रप्रोकू शतारेया फिलियाँছ । जगरजत रेटिशम উशत সাক্ষ্য প্রদান করে। নব্য জাপান, তাহার নবশক্তির অভ্যুদয়ে বুঝিয়া-ছিল কর্মাই ধর্ম। কর্মা হইতে যে রজোগুণের বিকাশ হয় উহাই মাহ্যকে ধর্মের উচ্চাঙ্গ সত্তগুণের প্রশান্ত অনন্তবিস্তার বিশ্বপ্রেমে আনিয়া ফেলে। ভারতের প্রাচীন আর্য্য ঋষিগণ এই সভ্য যে প্রকার উপশক্ষি ক্রিয়াছিলেন, জগতে এমন আর কেহ তেমন করে নাই। জাপোনের এই কর্মময় জাতীয় জীবন কেবল দেই প্রাচীন ভারতের व्यक्तिमान कृषिया पिया याहेट्य । क्या रहेह्य य व्यापाविश्वाभ वात्रिया উঠে উহা মামুষকে মনুষাত্ব প্রদান করে। মনুষাত্ব বাজীত क्ष्रिक कथन अज्ञार जा जूरक माँ ए। हेर्ड मक्य बहेब्रा हि १ (वथारन यस्यार्यत व्यञाव मिहेशार्निहे नौहर्जा, यार्थभत्रजा, रहत्रवृक्षिमभूरहत्र प्रकार खाला ; मिथानि हे जी श्रक्ष मार्या এक প্रकार वार्याम रहे হইয়াছে। এই স্বার্থপরতার কর্মফল জগতে অনেক জাতিই হাতে शेटल भारेबाट्य।

প্রাভধানত হইয়াছে যে, মাতৃজাতির উন্নতি বাতীত জাতীয় কল্যাণ সম্ভবে না। শৈশব হইতে জননীরা সন্তানের অন্তরে যে বীরত্বের এক অমর তেজ জাগাইয়া দেন, উহারই পরিচয় জগৎ কর্মক্ষেত্রে পাইয়া थारक। এই জননীশক্তির নামই আর্যা ঋষিগণ আত্মাশক্তি নামে অভিহিত করিয়াছেন। যথন ভীষণ ছর্দান্ত অস্তরভয়ে ধরা প্রকশ্পিত হইতে থাকে, তথনই আতাশক্তি রণর্জিণী মূর্ত্তিতে নায়িকা হটয়া অবতীর্ণ হন। জাপানীরা উহার গুঢ়তত্ত অবগত হইয়াছেন বলিয়াই স্ত্রীশক্তিকে এমন ভক্তি ও কতজ্ঞতার সহিত সম্বর্জনা করিতে পারিয়া-ছেন। ষে দেশে, যে জাতিতে একশত জন স্ত্রীলোকের মধ্যে নব্ব ই জন শিক্ষার্থিনী হইয়া স্কুল কলেজ আগমন করিতে পারে, সে দেশ, সে জাতি কি জগতের মধ্যে গর্ক করিতে পারে না ? যেখানে স্ত্রীলোকদের উচ্চশিক্ষার দারু উন্মুক্ত দেখানে কি নৃতন ইতিহাসের शृष्टि इट्रेट्ड भारत ना ? रयथारन जननीता আर्मिन भारावीया-কাহিনা ধমনী মজ্জাতে গাঁথিয়া রাখিতেছে, দেখানে সম্ভানেরা কি মাতৃত্তন পানের সঙ্গে সঙ্গে বারত্বের অমরতেজে অমুপ্রাণিত হইতে পারে না ? এ সব যুরোপীয় মহিলার মত উচ্চ শিক্ষিতা রমণীদের ভারতের জননীদের মত সাংসাহিক কার্য্যে নিরত দেখিলে, উচ্চশিক্ষার মহিমা কি সভ:ই মনে উদিত হয় না ? এক কথায় বলিতে গেলে এই জাতির ভিতর উচ্চচিন্তা ও উচ্চভাবের এক স্থমহান ৰার থুলিয়া গিয়াছে। মাতার চরিতে যদি জাতীয় চরিত্র বিকাশ না হইল, তুবে দে জাভির আশা কোঁথায় ? যে জাভির মাভারা উচ্চ চিন্তা ও উচ্চ শিক্ষা হইতে বঞ্চিতা, সে জাতির সন্তানেরা কর্মকেত্রের ভূষ্য ও চ্ন্সুভিনিনাদ শ্রবণ করিয়া ভীত ও সন্ধৃচিত ১ইবে সে আর আশ্র্যা কি ? মানুষ চিন্তা ও যুক্তির, দারা এই সত্যকে পণ্ডন করিজে भारत, किन्न खेश कार्याकती हरेरवं ना। मठा बाहा छारा हित्रकानहै

मछा। উহা কোন দেশক निशास्त्र विभिन्न मण्यकि नरही याहा এক দেশের পক্ষে সত্য উহা অন্ত দেশের পক্ষেও সত্য। প্রত্যেক কারণের কার্য্য সকল সময়েই ও সকল দেশেই এক প্রকার। জাতীয় উন্নতিকল্পে স্ত্রীলোক দিগের উচ্চ শিক্ষায় যদি কোন মাহাত্ম্য থাকে . উহাকে সকল সময়েই সকল অবস্থাতেই আহ্বান করা উচিত। खौलांकि पिरात উচ্চ শিক্ষার, फूফল श्वामर्भन कतिया आमता य युक्तित অবতরণা করিতেছি, উহা জগতের নিক্ট সামাদের ত্র্বলতার পরিচয় প্রদান করিতেছে। ব্যক্তিগত জীবন দেখিয়া উচ্চশিক্ষার দোষ কীর্ন্তন করা কোন মতেই উচিত নহে। ইতিহাস, দর্শন, সাহিত্য মান্ত্ষের মনে যে কল্পনার জগৎ ফুটাইয়া তোলে, উহারই নাম প্রকৃত कीवन। উহারই অমৃতনিঃসানী উৎদ ইইতে জাতীয় জীবনের প্রবাহ বহির্গত হয়। আমরা মানুষকে যাহা দেখি উহা তাহার চিন্তা ও কল্পনার সমষ্টি মাত্র। যে জাতি এই কল্পনা ও চিস্তাকে উচ্চ আদর্শে ধরিতে পারিয়াছে, সেই জাতিই অনস্তকালের ব্কে অমরকার্তির বিজয়ধবজা উড্টীয়মান করিতে সক্ষম হইয়াছে। এই জাভীয় আদর্শের অভাব যেখানে, সেইখানেই অনন্ত তঃথের প্রস্রব্ণ প্রবাহিত। এই জাতীয় আদর্শের ভিত্তি জননীর জাতীয়-প্রেমভরা উদার প্রশাস্ত खन्य। य क्षीकां कि तरन, वरन, छः तथ, छ मिर्टन शूक्रयरक मारेकः विनम् আখাস প্রদান করিতেছে, সেই রমণীহৃদরের মহাশিক্ষা জাতীয় উন্নতির পক্ষে কথনও বিফল হয় নাই।

व्यत्नक (मर्म (म्नाहात चित्रा वर्षमात्न यादा (म्या याद्र, উহু, পুরাতন সনাতন নীতির ব্যভিচার মাত্র। যাহারা দেশাচারের সেবক বলিয়া শর্তমানের প্রোত্তকে বন্ধ করিতে চান, তাঁহাদের এই স্থায় প্রশাস্ত মহাসাগরস্থিত জাপানের দিকে একবার দৃষ্টিপাত করা উচিত। ষে

বলিয়া সম্মান করিবে ? স্থনীতির পরিবর্দ্ধক বুলিয়া যে স্বাধীনতাকে আমরা পিঞ্জরাবদ্ধ করিয়া রাখিতে শিথিয়াছি, তাহা কি সুনীতির व्यक्तित नरह ? राथान नत्रनात्रीत नमक्षनी कृत विकारनत क्रिक्त वाधा, সেথানে স্বাধীনতার সিংহাসন প্রতিষ্ঠিত হইতে পারে না। স্বাধীন চিম্বা ও স্বাধীন জাবনে নরনারীকে অধংগামী করিয়াছে, এমন ত কথনও अनि नारे। यथान পातिंवातिक अभिन जीवन्तर अमन अम्हात, দেখানে স্বাধীনতার সন্মান মানব হাদয়কে উচ্চু সিত করিতে পারে না। স্ত্রা-স্বাধীনতার দোষ কীর্ত্তন করিয়া যাঁহারা উহা হইতে বিরত হইতে চান, তাঁহাদের স্বার্থ জাতিগত নহে, ব্যক্তিগত। মানবদমাজ চিরকালই व्यानर्लित निरक চলিয়া থাকে, দেইছেতু यनि कथनও किছু जून क्रिंडि দেখিতে পাওয়া যায়, সেজগু হুঃখিত বা নিরাশ হইবার কোন কারণ দেখি না। মানুষ যে পর্যান্ত অপূর্ণ থাকিবে দে পর্যান্ত ভাল মন্দ তাহাকে ঘেঁসিয়া থাকিবেই। যাঁহারা জাতীয় কল্যাণ প্রার্থনা করেন, তাঁহাদের উচিত পারিধারিক স্বাধীনুতার প্রতি সন্মান প্রদর্শন করা। এ কথাতে বুঝিতে হইবে না যে, স্বাধীনতার অপব্যবহার ক্রিতে হইবে। দেশের वर्डमान व्यवः। ও সময়োপযোগী এই স্বাধীনতার সীমা নির্দেশ করিলে, দেশ কথনও নিজ্জীব ও মৃতপ্রায় হইয়া পড়িয়া থাকিতে পারে না।

পরাধীন জাতির স্বাধীনতার সন্মান শিক্ষা করিবার স্থান কোথার ? যেথানে স্বাধানতার অটল সিংহাসন প্রতিষ্ঠিত সেথানে নয় কি ? কিন্তু তাই বলিয়া বলিনা যে, আপনার দেশের মহন্ত ও গৌরব বিশ্বত হইয়া আত্মহারা হইয়া যাইতে হইবে। স্থান্ত অতীতের গৌরবকাহিনী আছে বলিয়াই, মানুষ স্বাধীনতার সন্মান করিতে পারে। অনেক সমরে দেখিতে পাওয়া যায়, অবঙা ও সময়ের গতিতে অনেক উয়জি-শীল জাতির স্থাধীন চিন্তা ও ভাকগুলি শুক্ষপ্রায় হইয়া বিয়াছে। 7784

মুক্ত মাকাশে বিচরণ করা উচিত। আমরা যে 'অতীত অতীত' বলিয়া চীংকার করিয়া থাকি, দে অতীতের সম্মান আমরা কয়জনে দিতে পারি? যাহাতে আত্ম-সন্মান বোধ জন্মে উহারই অনুশীলন मर्क्षर्थय कर्ववा। नजूवा वृथा मास्टिक । स्नाजीय स्नार्य श्रादम कतिरण, উহাতে অমলण वह मञ्जल हहेवात मञ्चावना नाहे। यपि यानरवत्र श्वायकमात्र श्रेटिक 'প্रতिथ्वनि ना উঠে ''ভোমার অভীত পুণাকাহিনীতে পরিপূর্ণ—অগ্রসর হও", তাহা হইলে বাহ্যিক আড়ম্বরে : ও তথু বাক্যবিভাবে মানবকৈ অভঃসারবিহীন করিয়া ফেলে। बाक्तिगंड चार्थित कवार्षे यथन जाघां পড়িতে থাকে, তথন কয়জন আমরা জাতীয় স্বার্থের পায়ে আত্মোৎসর্গ করিতে প্রস্তুত 🤈 স্বাধীন ভাব ও বৃত্তি মানব হৃদয়ের নীরব লিপি। সেই স্বাক্ষর হৃদয়ে যতদিন জাজ্জলামান থাকে, ততদিন মানব অমর তেজে বলীয়ান, মানব ভীক্তা ও কাপুরুষতার বুকে দাঁড়াইয়া বজ্রগন্তীর স্বরে ঘোষণা করে—'জাতীয় প্রত্যেক নরনারীর সমঞ্জসীভূত শিক্ষা ও স্বাধীনতার প্রতি কেহ কুঠারাঘাত করিও না। যাহাতে জাতির মৃত্যু অবশুস্তাবী, সে মৃত্যুকে य-रेष्ट्राय व्यास्तान कत्रिक ना। পরিপ্রান্ত জীবনের আরাম-ভবন स्थारन, এ জাতিকে দেইদিকে যাইতে দাও। জাতীয় উন্নতির स्मिक्ष पृष् ७ ष्यक्ष कतिवात (ठष्टे। कत्र।"

> জাপান-প্রবাদী— ঐীসত্যস্থন্দর দেব।

## ভোরের স্বপনা

খনও ভোর হয় নাই। গৃহিণী বলিল, "যাই ?"

আমি ফিরিয়া শুইলাম। কোনও উত্তর দিয়াছিলাম কিনা
মনে নাই। নিদ্রালস কর্ণে শক্টা প্রবেশ করিয়াছিলাম মাত্র।

কিছুকাল পরে গৃহিণী আসিয়া বলিল, "ওগো, ওঠ; দেখ এসে, বা'র বাড়ীতে কয়েকজন ভদ্রলোক এসেছেন। তাঁরা ভোমার সঙ্গে দেখা কর্তে চাচ্ছেন।"

আমি তাড়াতাড়ি বহির্বাটীতে গমন করিলাম। দেখিলাম তিনজন ভদ্রবেশধারী ব্যক্তি বৈঠকথানা দুরে চেয়ারে উপবিষ্ট রহিয়াছে। আমি প্রবেশ করিবা মাত্রই তাহাদের মধ্যে সর্বাপেক্ষা প্রবীণ ব্যক্তিটী আমাকে সম্বোধন করিয়া বঞ্জিল— •

"আউকা, বউকা। ওরে ও রামদোন, বান্দরের বেটা, মাইচা ছইর্যা দেও; ঐ-থাটের উপর গিয়া বও; তালই মশারকে দেখিতে পাওনা; তানাকে বসতে ক্ষেত্র।"

আমি তো অবাক্; এরা কারা, কোণায় বাড়ী, আমার এথানে এদের কি প্রয়োজন, তা ছাড়া আমি কি ক'রে রামধনের তারৈ হইলাম, কিছু ব্ঝিতে পারিলাম না। ইতিপূর্ব্বে আমি এপ্রকার কথা আর কথনও শুনি নাই। অরপ্রাণ ও মহাপ্রাণ বর্ণের এরূপ অপূর্ব্ব সন্মিলন, এরূপ অভূত কথনভঙ্গী, ইত্যোপূর্ব্বে আমার কর্ণগোচর হয় নাই। আমি বিশ্বরাবিষ্টের স্থায় ট্রচেয়ারে উপবেশন করিয়া, সেই প্রবীণ ব্যক্তিকে জিজ্ঞাসা করিলাম—"আপনাদের নিবাস ? আপনাস্না কি চান ?"

थावीन वर्षका (म क्ला भर्त - अहर्व, (बग्राहे; आर्ग, भाम

ভাষাক আন্তি কউকা; বহুদুর থাকি গামাই আইচি। আমাগরে গর অইচে গিয়া লক্ষীপুর; রামদোন আমার ছাইলা। আর ইনির বাড়ী অইচে কামরূপ, কামাথ্যা; ইনিরা বেরাম্মণ।

আমি অধিকতর বিশ্বয়াবিত হইলাম। হরিচরণকে পান ও জামাক আনিতে বলিয়া জিজ্ঞাসা করিলাম— "মশাই মাপ কর্বেন; আমি আপনাকে চিনতে পার্ছি না। লক্ষাপুরে আমার কোন বেয়াই আছে বলেতো শ্বরণ হয় না। আপনি কি চান ?"

প্রবীণ ব্যক্তি। শুইনাছি আপনকার নাকি বিয়া দিবার যুগ্য এউগ্লা মেয়া আছে। আমাগরে মন্তম ছাইলা বারত চান্দের লগে তার বিয়া অইতে পারে কিনা, তার লাগি আইচি।

এতক্ষণে "বেয়াই" সম্বন্ধের কারণ বুঝিলাম। ধারভাবে বলিলাম—
"মশাই, বরের মূল্য অত্যন্ত বৃদ্ধি হওয়াতে সম্প্রতি আমাদের ঢাকা
অঞ্চলের কেহ কেহ কুমিলা, নোয়াথালী অঞ্চলে কন্তাদান করিতে আরম্ভ
করিয়াছে, সত্য; কিন্তু সেজন্ত এ পর্যন্ত লক্ষাপুরে কেহ কন্তা সম্প্রদান
করিয়াছে বলিয়া তো জানে না। তা অন্তে কল্পে কর্মক্, আমার
এখন এমন কোনও অভাব বা প্রয়োজন হয় নাই, যাহাতে আমি
'লক্ষাপুরে আমার কন্তার বিবাহ দিতে ইচ্ছুক হইতে পারি। মশাই
অক্সত্ত চেষ্টা কর্মন।"

আমার কথা গুনিয়া প্রবীণ ব্যক্তিটার মুখ রাগে লাল হইয়া উঠিল। দে কি একটা উত্তর করিতে যাইতেছিল, এমন সময় ভাষার স্থী ব্রাহ্মণটা তাহাকে নিবৃত্ত করিয়া আমাকে বলিতে লাগিল—

্নশার, ইতান্ কিতা কও ? রাজদানীর সম্নিকটবর্তী গর অইরা আপনকার সাতে কিরা কর্তি আইচে, এই তো আপনাকে বাগ্যিয়ান্ মনে করা উচিত হয়। কেবল আপনকার মেয়া পরম স্কর্মা এর আগি। ভারি মত্তে ইতান কিতা কইবার লাগচেক্ত্র

बाक्धानीत्र मात्रक्षेवली ?--जामि कृष्टि मा। जामात्र व्यक्तरक ध्यम ममंत्र इतिहत्न धक्थानि त्तकारि करत्रकृष्टे पर विकास स्टिन। এक ছिनिम जामाक मिर्द्य शिन। পানের থিনি দেখি। একেবারে হাসিয়া উঠিল, বলিল—'

"श्रां कन् मिकि, व्यापनाशद्ध मराजा। वक्तत्र लाद्य माम्दन थिनि वानारेया निर्वन्। ( এक छी थिनि थूनिया) रा वशमान्! छारकन् পানের মতে শুক্না শুয়া কাটি কুচি কুচি করি দিইবেন্। শুকি, व्याभिः अक्तित्न् नाकि ? शाद्यन्, ध ताक्षानीत त्रीं अन्य। वाखा পান অর্দেক করিয়া ছিড়িয়া, কাঁচা গুয়া অর্দেক করিয়া দেওয়াই অইচে বদ্রগরের নিয়ম। আর রাজদানীর লুকেরা আপেং থায় না।''

রাজধানীর নিয়ম শুনিয়া তো অবাক্। কিছু আর বুঝিতে বাকী त्रिंग ना। थरप्रत व्याफिम स्टेप्नारह। व्यामि विनीज्जारव वालनाम, 'মিশাই, অপরাধ মাপ কর্বেন। ভগমরা আপনাদের সহিত সম্বন্ধ-স্থাপনের যোগ্য নই। যোগাতর লোকের অনুসন্ধান করুন্।"

এবার প্রবীণ কভিটী রুষ্টভাব পরিত্যাগ করিয়া হাসিতে হাসিতে একেবারে আমার গায়ে আসিয়া পড়িল। বলিল, "বেয়াই, এতকুণ আদি দরিয়া রাক্ছিলাম। অথন আর পার্চি না। বেয়াই বুজি कीवत्न ब्राक्रमानी श्रादक्न् नारे। व्यापनकात करा এकरेख वम्म अम्र नारे। ८मरे वाकारेना होन बरेटा। ८मरे "कब्र्यन", "कक्रम"— রাজদানীর কতা একটু-ও শিক্তা অয় নাই।"

व्यामि मरन मरन विनिनाम, "তা इस नाहे वर्षे !"

প্রবীণ ব্যক্তি পুনরায় ধলিল, "তা যাউক্, অথন আসল কভা कडेका।"

वृतिगाम रेरार्निंभटक महत्व विषाय कवा बार्टिव ना। विजनाय, "बाह्या, बाशनात्र (कान् रश्म १"

তাম প্রবীণ ব্যক্তি। শুআমুক্তিকি জালামুকের সাজি বংশ।"
গর সাহা বংশ ! প্রতি আন্তর্জাতিক বিবাহের দেশ, বে কারছের
বাজিলাম—
বিজ্ঞা সাহা বংশে অর্পণ করিব ! আমার আর সহ্ হইল না;

"মশাই, এখনই আমার গৃহ পদিত্যাগ করুন, নতুবা অপমানিত হ'রে যেতে হবে।"

তথন প্রবীণ ব্যক্তিটা অতিশয় রুদ্ধ হইয়া বলিল, "আয় তো রে রামদোন; বেটার ভামাসা দেখাই ছাড়্মু। বজলোকের অপমান! আন বে আমাগরে ডিপ্টা কমিশন সাইবের চাপরাশী অইচে গিয়া আমার বাইপনা, আর আমাগরে কলই থেতে দারোগা বাবুর গোড়ার গাস খায়। রাজদানীতে মামলা কর্চি ফ্ইবা না, তখন দেখাইমু।" বলিয়া ক্রতপদবিক্ষেপে রামধনের সহিত চলিয়া গেল। কেবল ভ্রাহ্মণটা ভখনও বিসিয়া রহিল। আমি ভাহাকে শক্ত জাসা করিলাম—

"এখন আপনার আর কি প্রয়োজন ?" "

তথন ব্ৰাহ্মণ ধীরভাবে বলিতে লাগিল—

"মশার, এত রাপ কর্তি অর না। রাজদানী অঞ্লে কত বদর
গারের মেরা সাজি বংশে বিয়া দেয়। মেয়া বাপ নার সজে থাতি
পারে না বটে, তা অইলেও স্থাধ থাকে। তা যাউক, সাউগরে যথন
আপনকার মেয়া দিতে নারাজ, তথন না কর্লেই অইত। অভ
কোরোদ্ কর্বার উচিত অর নাই। আছো, খাপা অইবেন না,
বেরাশ্বণ বংশে মেয়া দিবার আপ্তি আছে কি ? আময়া অইচি গিয়া
বর্ষাজ।"

কোথে কোভে আমার জানলোপ পাইবার উপক্রম হইল, আমি বলিলাম—

"जाशनि जत्रवाक, जाशनीटक क्य वा माजिशा विधान क्या

উচিত, তা আমি ঠিক করিছে পারিতেছি না। আমার মেরেক व्यापनात्र भिवास क्षेत्र किय, नम् ? व्यापनि क्षेत्र प्रतिकास क्षेत्र । ব্রাহ্মণ ক্রোধে ছাতা বগলে করিয়া প্রস্থান করিলেন।

এমন সময় বাড়ীর ভিতর ক্রন্দনের রোল উঠিল। বিরক্ত ও বাজ रहेबा जिज्ञ ( शिव्रा ( पिथ या या विद्वा अपिक्रा जिटेक: यद व वैपिर जिल्ला । আমার এক কনিষ্ট ভাতা হতবুদ্ধি হইয়া নিকটে দাড়াইয়া আছে। আমার একমাত্র ভগিনীর ফরিদপুর, ইদিলপুরে বিবাহ হইরাছিল। সে তাহার স্বামীর সহিত বর্জমানে থাকিত। বহুদিন পরে বাড়ী आंगग्राष्ट्र। या তाशांक आनिवात अञ्चलदिक भागिश्राहित्य। জিজ্ঞাদা করিয়া জানিলাম তায়ৈ মহাশয় দৌদামিনীকে পাঠাইতে অস্বীক্তত হইয়াছেন। অধিক্ত মাকে লিথিয়া পাঠাইয়াছেন যে জামাতা তো দূরের কথা, মেয়েকে আনিতেও যেন আর কেই কথমও না যায়। আসামী আমাদের সহিত উহারা আর কোনও সম্পর্ক রাখিতে ইচ্ছা করেন না।

মহাবিপদ! মাতক যে কিছুতেই সান্তনা করা যায় না।

সানাহার করিয়া নিভাস্ত বিষয় মনে বাসয়া রহিলাম। কভককণ পরেই ডাক আসিবার কথা। দেখিলাম ভায়া দিভেন্ত ডাকের জন্ত অত্যম্ভ ব্যম্ভ। আমি তাহাকে ব্যম্ভতার কারণ জিজ্ঞানা করিলে সৈ विनन, "আজ চাটগাঁ গেজেট আদিবার কথা। দেখি, কোনও নৃতন थवत्र जाट्य किना। সবে হাইকোর্ট খুলিয়াছে।" ভারা মুক্ষেদীর अञ् अन्द्रांच्छ रहेया विभिन्न वाह्न। काने विभिन्न विभिन्न পাইয়াছেন কি না জানিবার জন্ম ব্যগ্র। বাস্তবিক, কিছুকাল পরে शिव्रम (गटक े **क** कर्यक्थाना शक मित्रा (शन।

গেছেট খুলিয়াই ভায়া একেবারে "Undone" বলিয়া বলিয়া शिक्त । यात्रि किकांगा कत्रिकांग, "वाशांत्र कि ?"

• विष्कुत वाशात्र कि। इवहेरकार्वे नियम कत्रियाह्न, व्यात এ প্রদেশের লোকদিগকে Bengalএর মুন্সেফী দেওয়া হইবে না। এতকাল প্রায় ৫ • টা জেলার কাজে আমাদের অধিকার ছিল। এথন এখন १ (क्रमांत्र यात्र क्रमञ्जन भाक नियुक्त इहेर्ब ? यानारमत यात्र षाना खत्रमा नाहे। वाःलाय अकालकी कविष्ठ पि अया हरेरव कि ना, সে বিষয় এখন বিচারাধীন।

আমি একেবারে হতাশ হইয়া পড়িলাম। বলিলাম, "আর খবর কি ?"

ছিজেন্তা। আর হাইকোর্টের কার্যাভার অত্যন্ত গুরুতর হইয়া পড়িয়াছে। জজ সাহেবেরা আর আমাদের আপীল শুনিতে রাজি নহেন। তজ্জগু অন্থ বন্দোবস্ত করিতে গবর্ণমেণ্টকে অনুরোধ कत्रियारहन।

व्यामि চারিদিক্ অন্ধকার দেখিতে লাগিলাম। আমাদের গতি কি ছইবে ? এতক্ষণ পত্রগুলির কথা ভুলিয়া গিয়াছিলাম। এগন একে একৈ খুলিয়া পাঠ করিতে লাগিলাম। একথানি ভায়া হেমেলের। त्म निश्चित्राह

"দাদা। আপনি ভানেন Executive Engineerএর সঙ্গে একটা সামান্ত বিষয় নিয়া মতান্তর হওয়ায় আমি, নওগাঁতে বদলী হই। चामि उथनरे वृक्षिट পात्रियाहिमाम, चाक रुप्तेक, इतिन भरत रूप्तेक. শীত্রই আমাকে কার্য্য পরিত্যাগ করিতে হইবে। নওগাঁতে এখন कानाब्दत्र बजास প্রাতর্ভাব। এমন বাড়ী নাই যাহাতে অরে ২।১টী लाक ना मतिशाष्ट्र। महत्र एक लाक आन्छात्र भनायन कित-(छट्छ-। গতকলা আমার "আপা" षत्र আমাকে না বলিয়াই কোথার চলিয়া গিয়াছে। মফ:স্বলেও অনেক গ্রাম প্রায় উজাড় হইয়া शिशादहा, अपन दय: कि छादवं माहि, काला लिशान वालाना ने জানেন। কেবল আপনার অনুমতির অপেকায় এখনও কর্মে ইস্তফ (परे नारे।"

माथाय शांक मित्रा विषया পि ज़िलाम। প্रांव थाकित्व (को ठांक त्री १ তৎক্ষণাৎ টেলিগ্রাম করিয়া দিলাম—"Wire resignation. Start at once." বস্ততঃ, যারা Overseer, তাহাদের আর চাকরী ছাড়িতে ভয় কি ? আর কিছু না হউক, কনুট্রাক্টরী করিয়াও বেশ খাইয়া থাকিতে পারে।

আর একথানি ভায়া বীরেন্দ্রের। ভায়া F. A. পাশ করিয়া কলিকাতা Medical Collegeএ ভর্ত্তি হইতে গিয়াছিল। লিখিয়াছে—

"দাদা। এথানে প্রতিবংসর নির্দিষ্ট সংখ্যক ছাত্র নেওয়া হয়। আমার সমান Qualification এর বাঙালী ছাত্রেই সেই সংখ্যা পূর্ণ रहेशा शिवारह। कार्জिट आभारक ভর্ত্তি করা হয় নাই।"

চলিয়া আইস। দেখি কোনও জমিদারীর সরকারে প্রবিষ্ট করা দিতে পারি কি নাঁ।" পত্র সমাপ্ত করিয়াই তুই চক্ষু দারা দেশ হাত্-রাইয়া দেখিলাম। ২০১টা ব্যবীত বড় রাজা জমিদার বা অন্ত সম্ভান্ত लीक (ङ। দেখিতে পाইলাম না।

শেষ চিঠিথানা টাকীর শ্রীযুক্ত দীনেশচন্দ্র গুহ মহাশন্ন লিখিরাছেন। তিনি লিথিয়াছেন—"মহাশয়, ইতোপুর্বে নানা কারণে আপনান্ধ কনিষ্ঠ বিজেন্ত্রের সহিত আমার কন্তার সম্বন্ধ করা স্পৃহণীয় মনে করিয়াছিলাম। কিন্তু সম্প্রতি ক্লোনও বিশেষ কারণে উক্ত অভিলাষ পরিত্যাগ করিতে যাধ্য হইয়াছি। আপনার ভ্রাতা উপযুক্ত, আশা করি আপনারা যোগাতর পাত্রীলাভে সমর্থ হইবেন।" আর উপার नारे! रा जगमीयत!

यत्नत्र जात्र नाथव कतिवात जञ्च नक्षात आकारन त्वलाहरक वाकित

रहेगाय। गएक कामाचा। वावृत महिल हमचा रहेग। रहें।त कलकला अभ পाठा পुञ्जक बाह्य। जिनि बामादक विकामा कवित्नन, "कि रह, वानादवादभन्न न्डन मश्यत्रण दिश्याह ?"

ं आभि। (कन १ कान ७ পরিবর্ত্তন হই সাছে না কি १

कामाशा वाव्। यामृण পরিবর্তন ! (कांन थवंदरे द्राथ ना पिश्हि? मच्छि Director नाकू नात्र, मित्रात्त्व य (शात्रानभाषा वक्षात य ভাষা প্রচলিত, শুধু দেই ভাষার পুস্তকই পাঠ্যতালিকাভুক্ত হইবে। অন্ত পুত্তক নছে। হজুরের মর্জি। আমিও সেই ভাষাই অবলম্বন कित्रशिष्ट्र। (तथ मिथ, दिस्सन इहेश्राष्ट्र १

विषय भरक हे इहे एक এक थाना वाला वाश वाहित्र क तिया आ भात शांख नित्यन। वामि २१५ शृष्टे। शिक्षा निव्या हित्या हित्याम । छेवा Hebrew না Lapland এর ভাষা কিছুই বৃঝিতে পারিলাম না, অথচ ैराई जाशामित वालकिमिशिक भिथिত इट्टिंग मध्य (मर्भन जाया ই হওয়া রাজনৈতিক হিসাবে অত্যস্ত প্রয়োজনীয়। শুনিলাম সেই कलरे धरे वावसा।

রাত্রিতে ভাড়াভাড়ি করেকটা ভাত মুথে দিয়া লেপ গায়ে দিয়া শুইরা পড়িলাম। ঘুম আসিল না। চকু মুদিত করিয়া নানা বিষয় চিন্তা করিতে লাগিলাম। কতক্ষণ পরে প্রহিণীর পদশবে চকু बिनाम। आमात्र मिक् ठाहिमारे गृहिनी এक शान रामिमा किना। व्यक्ति विनिनाम, "व्यममस्य এक दोक (कन ? वाशांत्र कि ?"

शृश्नि। द्वारप्रमद्भ वाफीन ग्लीभ वावू मञ्जीक वाफी अस्मरह, BUTTE COT ?

् जाति। हैं।, एटनहिं।

ं गृहिनी। जांच मिट न्जन विदेक प्रथ्ट जिल्हिन्स। जाः! क्षित्र विकास कार्य वर्ष वर्ष भाग क्षित्र वास यायि। वन कि ? मंजि नाकि %

গৃহিণী। সভিয় না कि মিখা। পভীশ বাবু নিজেও বেশ চাট-गाँदिव क्षा वल्ट भादान। आभारमत ठीक्त्रभाता मकर है वन्छ शारतमा (कर्वन शांत्र मा कृषि। कारक है व्यामिख शांत्रि मा। व्यापि তো আর কথনও চাটগাঁরে যাই নাই?

व्यामि। लाक माकार् •भाति मा वर्षे .लब्बा रवां इत्र। डा व'ल कि এकেवाद्रिशे भाति ना १

গৃহিণী। তবে আজ অবধি আমার দঙ্গে চাটগাঁরের কথা কইতে হবে। त्राञ्चादोत थिक आমি २।२ ही कथा भिथिहि। आह्या এখনই আরম্ভ করা যাক্না কেন? তুমি যেন অনেক বেলা পর্যান্ত শুষে আছ। আমি থেন তোমাকে জাগাচিচ।—

সামি। দুর অন্ত, বজের বৈটা, আমি অথন উঠ্তি পারমু না। ं गृहिनी। उत्ना उठ।

আমি। দুর অ, পুরার মা, দূর অই যা।

গৃহিণী। अर्गा, दिला इरिग्रह, अर्छ। लिग्नन व्यत्नक्कन एएएक **विठि दिल्ल क्रिक्ट क्रिक्ट ।** 

আমি। তোরে খনে নেউক, আবাগীর মা।

गृहिशी। यत्र वात्र कि ? এ वारात्र कान मि छाषा भा ? বুঝেচি, হন্ত সরস্বতী মাথায় চেপেছে। লক্ষীর বাসি ঠাওা কল মাথায় ना পড़्रल नाम्रव ना।

গৃহিণীর তর্জনে নিদ্রা সত্রাদে পলায়ন করিল। সভয়ে গারোশান করিয়া চকু মুছিতে মুছিতে বহির্বাটিতে গেলাম। দেখিলাম একশ্রিয়া िंडि পড়ির। देशिए। श्रीत्रा एएथिनाम जनाय माना छोइ। व ठाका ठावित्री लाठाइत्राट्टन। त्यादेशूनी ७ सरवीत आहा है।

তাগাদার বসিরা রহিয়াছে। তাহাদিগকে বিদার করিয়া দিয়া গত রাত্তের কথা স্বরণ করিতে লাগিলাম। মনে পড়িল অনেক রাত্রি পর্যান্ত কাল রিজলী সাহেবের বঙ্গবিভাগ সম্নীয় পত্রথানা পড়িয়াছিলাম। বোধ হয় োই জন্মই গৃহলক্ষী সরস্বতীর উপর এত চটিয়াছেন! কিন্তু মনে মনে বড় ভয়ও হইল লোঁকে বলে ভোরের স্বপ্ন সত্য হইরা ফলিয়া যায়। এ ছঃস্বপ্নের প্রতিকার গোবিদের সাধ্যায়ত্ত কিনা আমার সংশয়বাদী মন ঠিক করিতে পারিল না।

## <u> শিতৃপেন্দ্র</u> নাথ দাস।

### উনবিংশ পরিচেছদ।

মন স্থলর শ্রতিমধুর "শৈলজানল" নাম, ক্ষয়প্রাপ্ত হইয়া, স্থতীব্র কটকটে "শলুই" হইল কেন? শৈশবের "গুয়ী," কোমারে "(भावत्रा", किकिए दश्वः প্রাপ্ত হইলে অলকারশোভিত "(গাবর্জন" रम। जात्र रेमनकानरमत्र अपृष्टे, এमन अञ्चामश्रक्तिया कान् रेपव-क्रिंशिक विलाम रहेल! व्याज्य विष्टिताल रहेत्र, नाम (वहात्री, কি বোর অপরাধে এমন বিপন্ন হইল! শীল্রই—গ্রামবাসীর পর্যাম্ভ व्यथितिष्ठ, अक्षम त्रम्भीत निर्द्भाष्ट्री, नामग्रीक यनि व्यक्षित त्रका कतिए रत्न, जारा रहेल मि नायत्र मूंना करे! तमनीत पर्मननाज ना ঘটিলে, ত্রাক্ষণকে আজ অতিথিশালায় আশ্রম গ্রহণ করিতে ছইত। िखांत्र कथा। बाद्मानंश्व नथ চলিতে চলিতে, विषय हिन्दान चौकास हरेटनन। शामवानी यात्र नाम कात्मना, त्म दिमन लाक। একবার মনে করিলেন রমণীকে জিজ্ঞাসা করি। আবার ভাবিলেন, একটু পরেইত শৈলজাননের সহিত সাক্ষাৎ হইবে; তথনই সন্দেহটা মিটাইয়া লইব।

त्रमणी पृत्र श्रेटि रेमनकानत्मत्र वाफ़ी (प्रथारेश पिन। विनन, "চণ্ডীমণ্ডপের সম্মুথে যে দ্বার, ভাষা দিয়া বাটীতে প্রবেশ করিবেন না। আরও কিছু আগে, একটা সরু পুথের ধারে একটা ক্ষুদ্র দার আছে। সেই দার দিয়া ভিতরে যাইবেন। নতুবা দিখা হইবেনা।" রতনের ্বিশ্বয় বাড়িয়া গেল।"

জिজ्ঞामा कतिलन—"(कन ?"

রমণী উত্তর দিলনা। বালককে গ্রাহ্মণের কোল হইতে নামিতে আদেশ করিল।

রতন বলিলেন, "মতি পরিশ্রমে ক্লান্ত হইয়া, বালক আমার কাঁধে মাথা রাথিয়া বুমাইয়াছে।"

তথন তাঁহার কোল হইতে বালককে গ্রহণ করিয়া, রম্ণী অঞ্ পথে প্রস্থান করিল<sup>°</sup>।

त्रभगी यिन निरुष्ध ना कत्रिङ, ङाहा इटेल त्वाधरुष्ठ त्रङन ছোট ষারটী দিয়াই বাটীর ভিতরে প্রবেশ করিতেন। রমণীর নিষেধে, রতনের ' को जूरम रहम। जिनि जावितमन, मनत मत्रका मियारे वाजित जिल्दा \* अदिन कतिया (क्थिना (कन ?

দরজার হুই পার্ষে বাঁধান রোয়াক। একটার উপর বসিয়া, একজন লোক সিদ্ধি ঘুঁটিতেছিল। আর চারি পাঁচজন তাহাকে খেরিয়া গল জুড়িগ়াছিল। গল্পের বিষয় অবশু সিদ্ধি। এবং সেই সঙ্গে মিশ্রিত 'সেকাল' ও 'একাল'। 'সেকাল'টা চিরদিন ভদ্রলোক ; কিন্তু ছঃথের 🗀 বিষয় 'একাল' কিছুতেই সেরপটী হইতে পারিলনা। সেকালের সিদ্ধি ष्ट्र हैटनरे तिना रहेल, अकारनर्त्र निकि अक त्मि बाहेरन अनात ः

শামেকটা পর্যান্ত আসে না। বেশি যে আছার করিয়া নেশাটা শুছাইয়া সইবে, তাছারও উপায় নাই। কেননা, একালের উদর কত ভকাং! সেকালের উদর সিভিন্থাপক, অনস্ত আছার্য্যের স্থান ছিল। একালের উদর সংকাচব্যাধিগ্রন্ত—থাদ্য আছে, রাখিবার স্থান নাই। আর থাদ্যই ব দের কে। সেকালের লোক পরকে থাওয়াইতেই তৃথিলাভ করিত, একালের লোক পরের অর কাড়িয়া থায়। তারপর, কে কার কাড়িয়াছে, কেমন করিয়া কাড়িয়াছে, ইত্যাদি নানা কথার ভিতরে শৈলজানল সম্বন্ধে হুই চারিটা কথা অনতিউচ্চস্বরে চলিয়া গেল। এমন সম্বন্ধ রতন তাহাদের কাছে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। গল্পে সন্ধিবিইচিন্ত, তাহারা প্রথমে রতনকে দেখিতে পাইল না, আপনার মনে কথাই কহিতে লাগিল। কথার মধ্যে, হুই চারিটা 'শলুই' শল্প রতনের কাণে গেল। স্থতরাং তাহাদের গল্প রতনের সমাক বোধগম্য হুইল না। তিনি আর অপেক্ষা না করিয়া তাহাদের জিজ্ঞাসা করিলেন—"এই কি শৈণজানল সিংএর বাড়ী গু'

একজন উত্তর দিল—"না।"

ইহাদেও মধ্যে একজনের সঙ্গে রতনের পূর্বে দেখা হইয়াছিল। সে পরিচিত্রর শুনিয়া মাথা তুলিয়া বলিল—"এখনও তুমি খুরিয়া বৈড়াইতেছ ?"

बंडन बिलिनन, "देननकानत्मव्र गृश् व्यक्षिण कविर्छि।"

বাদ্ধনের মুথে বিভীয়বার শৈলজানন্দের নাম গুনিয়া, লোকটা উচ্চহাক্ত করিয়া উঠিল। বলিল—"গাহাকে থুঁজিতে চাও, যমের বাড়া যাও; এথানে কেন? বন্ধুবর্গকে সম্বোধন ক্ষরিয়া বলিল— "শৈলজানন্দ বলিয়া যে ভূতটা রাজার বাড়ীয় কানাচে খুরিয়া বেড়ায়, এ বন্ধ ভাহারই অবেষণ করিতেছে।"

वस्वनं वृत्तव प्रःभार्मिक्छांत्र भविष्य भारता वर्षे विश्विष स्रेम

এবং লোকটাকে উন্মাদ স্থির করিল। তথন সকলেই সেই প্রেতাত্মা সম্বন্ধে হুই একটা গল্প করিল। একজন তাহার সামুনাসিক স্বর শুনিয়াছিল, একজন গাছের ডাল ভাঙ্গিতে দেখিয়াছিল, আর একজন जानवृक्षमम जञ्चावरवत চাপে একট. शंजीक **या**विक्रा क्रिकाल দেখিয়াছে। সকলেই বৃদ্ধকে শৈশজাননের অনুসন্ধানে কান্ত হইতে वश्रुভादि निरम्ध कतिन।

व्रजन, वाजीव मानिक्व नाम जिल्लामा कविल्लान। लाक खना नाम विनिष्ठ इंडेंड इ: क्रिंड नागिन।

একজন জিজ্ঞাসা করিল—"এ বাটার মালিকের সঙ্গে তেশমার কি প্রয়োজন ?"

व्रजन विनित्न,—"প্রয়োজন না থাকিলেও, নাম জানিতে দোৰ 本 ?"

প্রয়োজন নাই শুনিয়া, সে লোকটা নাম বলিল, "শলুই সিং।"

তখন, রতনের বৃঝিতে আর কিছু বাকী রহিল না। "শলুই" নাম এই একটু আগে তিনি গুনিয়াছেন। বুঝিলেন, শলুই শৈলজানন্দের অপত্ৰংশ।

আর কোনও কথা না বলিয়া, ত্রাহ্মণ দারসমীপে উপস্থিত হইয়া कवारि या मात्रिलान। कात्र ভिত्त इटेंटि वक्ष, प्रदे চादिवात्र या पिरलेन, "'ভিতরে কে আছ, তুরার খোল''—বলিয়া বার ছইচার চীৎকার कतिर लग-षात्रमुक रहेवात लक्षण (प्रथा (शल मा। (त्रांत्रोरकत लाक-खना চুপ করিয়া দেখিতে লাগিল। विकलमत्नात्रण इहेश, यथम इदन कित्रिलन, उथन नकल '(का (का 'कित्रित्रा केत्रित्रा केत्रित्रा केत्रित्रा केत्रित्रा केत्रित्रा केत्रित्रा केत्रित्रा केत्रित्रा

त्रक्र कावित्यमः, "क्यामा व्यापम । मात्रामिन केपवामी थाकिया, व काथाय व्यामिनाम!" ठिठिथाना मिट्ड शाजित्मक, निन्दि स्टेट्ड शाहिब ङाविद्या, जिनि क्ष्मिशादात मकारम ठिनाटनन।

### . विश्वा अतिएकम ।

অন্ধবার গাঢ়তর হইয়াছিল। সদরপথ ছাড়িয়া কিয়দ্র অগ্রসর इरेट ना रहेट तंजरनत भम्यमन रहेट मानिम। क्रिम जिनि त्रभगीकि निक्ष निकार्थ उपिछि इहेलान। पथ এত मक, य इहे-জনের পাশাপাশি চলা অসম্ভব। তৃইধারেই ছোট জঙ্গল—ঘন-मितिष्ठे खन्मता कि — अधिकार मैं हे क के कम्रा । यथा ज्यिशृष्ठ यस स्वात পদপ্রহারজাত একটা মাত্র ক্ষীণরেখা, কোন স্থানে দৃশ্র, কোন স্থানে नूश थाय।

সেই সঙ্গীর্ণপথে পদ দিতে বৃদ্ধ ইতস্ততঃ করিতে লাগিলেন। ভাবিলেন, এরপ পথে চলিয়া কি সাপের মুখে প্রাণ দিব। সদাশিবের সনির্বন্ধ অনুরোধ না হুইলে, রতন ফিরিতেন। সমস্তদিন অনাহারে পথ চলিয়া, তিনি বড়ই ক্লান্ত হইয়া পড়িয়াছিলেন। তাঁহার বিশ্রামের वर्ष्ट्रे थिर्प्राक्षन रहेम्राहिन। उथानि त्रञ्ज अश्रमत्र रहेर्निन। किहूमृत यारेटिक, এकस्मानित मद्भ मिथा इरेन। मित्रित्रीक मिक इरेटिक আসিতেছিল। রতনকে দেখিয়াই সে প্রশ্ন করিল "কে তুমি ?" রতন श्राप्त कान उ उद्धन मिलन ना, ठाने क नाशिलन। প्रम्भात नूर्यामूचि रहेलन। ज्थन এक्जनक ११ हा फिया ना नित्न व्यक्ति চলা অসম্ভব। লোকটা উত্তর না পাইয়া পুন: প্রশ্ন করিল, "কে তুমি?"

त्रक्रन এবারেও উত্তর দিলেন না, যথাসম্ভব সরিয়া লোকটাকে याँहरू अथ मिरलन।

े छेखत ना পाইয়া লোকটা বিরক্ত ইইল। কিঞ্ছিং ক্লেন্সরে বলিল, "উखत माखना (कन, চোর নাকি?"

अवाभि विस्नी<sup></sup>।

"পথ ভূলিয়াছ; कित्रिया या ।"

"এ পথে कि काशां वाश्वा यात्र ना १ कोन गृहद्वत वाषी-যেথানে অন্ততঃ একরাত্রের জন্ত বিশ্রাম করিতে পারি 📍

"তোমার কি দৃষ্টিভ্রম হইয়াছে ? এ জঙ্গল দেখিতেছ না ? এখানে বাড়ী কোথা !"

"তুমিও কি জঙ্গলের সামিল १० না গাছের ডালে ডালে বাস কর। वाफ़ी यिन ना थारक, পথ यिन ना थारक, ত তুমি কেমন করিয়া यागिता?

লোকটা এবারে বড়ই রাগিল। তাহার রাগ হইবারই কথা। একটা কোথাকারকে বিদেশী আদিয়া তাহাকে সমান উত্তর • দিতে সাহস করে ! অন্ধকারে সে ব্রাহ্মণের মুথখানা ,একটু কণ্ট করিয়া দেখিয়া लहेल—(मिथल दुक। তथन जिंभ-कर्कभन्नद्र विलल "दुक वर्रम অপবাতে মরিবে কেন ? মানে মানে ফিরিয়া যাও।"

रेष्ट्रा रम यारेष्ठ भात ।''

তাহার যাই গার °উদ্দেশ্য ছিল না; রতনকে ফিরানই উদ্দেশ্য। সে অগ্রসর হইয়া রতনকে ধাক্ষা দিল। রতন তাহার কথার ভাবে পূর্বে হইতেই বুঝিয়াছিলেন; বুঝিয়া 'ধাকা থাইবার জন্ম প্রস্তুত रुरेग्नाहित्वन। त्वाक्टां न्युका मात्रिया निष्ठरे भा मामवारेख भा त्रिव না, পাড়িয়া গেল। পথের পার্শের তিশিরার কাঁটায়, সর্বাঙ্গ কভবিক্ষত श्हेषा भाग। त्रञ्न जाहारक धतिया जूनियन। श्राज्यता ७ जानार्ज्हे म त्राचित्र मिक वृत्तिम। त्राचन वृत्तिमा "(पथारेशा माध, 'क्यान' मंत्रका मित्रा शिर्ण देननकानत्मत्र महन राज्य ह्य।"

लाको देनकानत्मत्ररे ज्ञा, जान्ति कारात,—वनिष्ठ। (य श्वश्वात निम्ना त्रजन व्यातम कतिए या रेटि ছिल्न, भिरे बात त्रका केत्रारे ভাহার কার্যা ছিল। রভনের আদেশ শুনিয়া লোকটা ফাঁফরে পড়িল।

কাতরস্বরে বলিল 'প্পভূ! •সে পণ দিয়া আপনাকে লইয়া গেলে ষে আমার চাকরী ষাইবে ''

"যাহাতে না যায়, তাহার ব্যবস্থা করিব। আমি তার জামাতার নিকট হইতে পত্র আনিয়াছি। তাহাকে দিয়া চলিয়া যাইব।"

"তাহা হইলে, পত্রপাঠ আমার চাকরি যাইবে। শুধু চাকরি— হয়ত প্রাণে মরিব। জামাতার সঙ্গে তার সদ্ভাব নাই।"

"জামাতার সঙ্গে সদ্ভাব নাই !"

"ত্নিয়ার কারও সঙ্গে সম্ভাব নাই।"

"এরপ লোককে দেখিতে রতন ক্বতনিশ্চয় হইলেন। বলিলেন, বাপু! তোমার চাকরি থাক্ আর যাক্, আমি তাকে দেখিব।"

লোকটা কপালে হাত দিল; আর বলিল,—"এতকাল পরে দেখিতেছি," আমার কটী মারা গেল।" রতন বলিলেন, "সহজে মারা যাইতে দিব না। তবে একাস্তই যদি যায়, তোমার ছরদৃষ্ট।"

বাধ্য হইয়া সে ব্যক্তি রতনকে দারটী দেখাইতে অপ্রসর হইল।
রতন পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিলেন। কিছুল্র বাইতে না বাইতে উভয়ের
সম্পুথে একটা পরিথা পড়িল। পরিখা পার হইতে পারিলেই দার।
দারটী দেখাইরা লোকটা স্থানত্যাগের উদ্যোগ করিল। রতন বলিলেন
— "দারত দেখাইলে; এখন পরিথা পারের উপায় বলিয়া দাও।"
সে ব্যক্তি জল দেখাইল, আর বলিয়— "সাঁতারিয়া পার হউন।"
রতন তাহার বন্ত দেখিলেন। দেখিরা বুঝিলেন, এ ব্যক্তি অল্প কোন
উপায়ে পার হইয়া থাকিবে। জিল্লাসা করিলেন, "তুমি কেমন করিয়া
পার হইলে ?" সে চুপ করিয়া রহিল। রতন আর কালকেপ না
করিয়া, তার যাড়টা ধরিয়া ফেলিলেন; এবং বলিলেন, বিদি উপায়
বলিতে ক্ষণমাত্র বিশ্ব কর, ত তোমাকে সাঁকে পুজিরা রাখিব।"

যাড় ধরাতেই তার অর্কেক প্রাণ বাহির হইবার উপক্রম হইয়াছিল।

তथन त्र कत्रकार् विना, "ভূতাকে ছाড়িয়া দিন; পারের ব্যবস্থা कतिराङ्घ।" त्रञ्न পরিত্যাগ করিলে, দে জলের ভিতর হুইতে একথানি ছোট ডোঙা বাহির করিয়া ভাদাইল। রতন ভাহাতে চড়িয়া পার হইলেন; এবং এক ধাকা দিয়া ডোঙাখানাকে পরপারে ভাসাইরা দিলেন। ভূতা সেটাকে আবার জ্বলের ভিতরে ডুবাইয়া রাখিল; আর ব विनन, "रुक्त ! मनिरवत्र काष्ट्र जामात्र नाम कदिरवन ना।" त्रजन আখাদ দিলেন। ভূতা চলিয়া গেল, রতন ও উপরে উঠিলেন।

কিন্তু হইল কি। এথানেও যে দরজা ভিতর হইতে বন্ধ। ব্রাহ্মণ এবারে যথার্থই বিপন্ন। আশ্রয় গ্রহণেরও উপান্ন নাই, ফিরিবারও উপায় নাই। চারিদিকে বন, লতা-গুলামধ্যে দর্পভয়, সমস্ত দিবসের উপবাদে কুধার্ত্ত, পণপর্য্যটনে ক্লাঞ্জ—কিংকর্ত্তব্যবিষ্ট ব্রাহ্মণ নিরাশান্ত্র অবদন্ন হইয়া পড়িলেন। যে পথে আসিয়াছেন, সে পথ দিয়া ফেরা সহজ কথা নম্—বিশেষতঃ হভাশের হৃদয় লইয়া ছারে করাঘাত क्रिलिशे ८१ (क्र थूनिया मित्र, এর প বিশ্বাস তাঁহার ছিল ना।

वाका। (महे वक्षकाव्रम्भ, व्यावर्জनायम, जीय। शादन माँजाहेम निः अत प्रमृष्टे ि छात्र निविष्ठे इहेर नन। यान यान वनितन- "कि कूकर वहे বাড়ীর বাহিরে পা দিয়াছিলাম। বিনাপরাধে একটা কাপুরুষ শ্লেচ্ছ কর্ক লাঞ্ডিত হইলাম। তাহাতেও ত ভোগের শেষ হইল না। অবশেষে, কোন দূরদেশে, কোন অপরিচিত, অনাতিথেয়, চুর্কোধ্য, नदाध्यत्र वाष्ट्रीत घारत नत्रकञ्चा द्वारम প्राण विमर्कन मिटल व्यामिनान !

একমাত্র আশা, ভূত্যটা যদি ফিরিয়া জাদে। তাহারই আগমন প্রত্যাশায়, ব্রাহ্মণ কবাটে পৃষ্ঠ দিয়া দৃঁ।ড়াইয়া রহিলেন। সে স্থানে विमिर्क डाँशांत श्राह्म हरेग ना।

वासन विवादीत यात्र कान नाजिया तरियान; श्रद्दिक वजीक रहेगा राग. रियारन और देव अधिक अधुकुछ इहेम ना। ' लाक छ। । फित्रिया আসিল না।

वाक्रन व्वित्नन, এইভাবে দাঁড়াইয়া রাত্রি যাপন করা অপেকা, পরিথা পার হইয়া কোন বৃক্ষতলে রাত্রি যাপন করাও শ্রেম্বর। व्विलान, यूवजीत कथाम এ व्यत्नाभर्थ श्रविष्ठ श्रेमा जान काज करत्रन कत्रिया তাঁহাকে বিপর্দে ফেলিয়াছে। রমণীর উপর তাঁহার ক্রোধ इरेग। ভাবিলেন, কেন স্থাপনাকে বিপন্ন করিভে ভাহাকে ছুই वानःकत राज रहें ज निकृष्ठि मिनाम। मर्यमानीक मिथि भारेल, আবার তাহাকে তদবস্থায় সরোবরতীরে বালকের হাতে সমর্পণ कत्रियां व्यामि। এमन कामन मोलार्यात जिज्दत अमन निर्वृत्रका ७ অকুজ্ঞতা ৷

मनाभिरवत्र ७ উপর তাঁহার তেনাধ হইল। জানিয়া শুনিয়া, সে মুর্থ এমন নরাধম 'শশুরের কাছে তাঁহাকে প্রেরণ করিল কেন ? আর সেই পাণিষ্ঠ শ্বশুরটার উপর তাঁহার ক্রোধের দমস্ত ভারটা চাপিয়া পড়িল! ব্রাক্ষণের বড়ই আক্ষেপ, এখনও পর্যান্ত তাহাকে কিঞিৎ मिका ब्रिटंड পারিভেছেন না। তৃই একবার শৈলফানদকে শিকা দিবার ব্যগ্রতা আসিল। ব্রাহ্মণ একবার মনে করিলেন, "এই কুদ্র बात्रहे। এक পদাचाতে ভাক্ষিয়া वाहीत मत्था প্রবেশ করি। এবং रेमेगकानत्मत गमराम धित्रमा, मुद्याचारक कात शृष्टरारमत कडकी। म्हान, व्यवदाः म रहेर्ड कि किए पृथकु क दिया मिटे।" व्यादाद जादिरमन, देशनकाननत्क धत्रिटल, यनि ह्कार्ने भवाननत्क धतिया दक्ति। उहे मुद्रेगचां कार्यां विष जाहां तरे शृष्टि निष्णन हहेगा यात्र !"

পরিশা পার হওরাই ত্রাক্ষণ যুক্তিযুক্ত বোধ করিবেন। গৃহ-প্রবেশের আশায় এতকণ পর্যান্ত তিনি সাদ্ধ্যক্তা সমাধী করিতে পারেন नाष्ट्रे। जिनि त्रिश् व्यक्षकात्र द्वार्ष खत्र मित्रा, जीत्र इहेर्ड व्यवत्त्राह्य कत्रिलन। इस्त्रभन श्रकालिक कत्रिया जगवात्नत्र स्नात्न नियुक्त इहेरलन।

ধ্যান করিতে গিয়া, ভগবানের উপর ব্রাহ্মণের অভিমান আসিল। তাঁহার মুদ্রিত অক্ষিপক্ষমধ্যে অশ্রুর রাশি সঞ্চিত হইল। ধ্যানান্তে रिष्ठे बाक्षण हकू रमिलिने, अमीन इंहि गए निया जल विश्वा राजा।

চক্ষু মুছিয়া জলে পদক্ষেপ করিতে রতন দেখিলেন, পরপারে क बालाक नहेम्रा बामिएएहि। बाम्न वृक्षिलन, এইবারে প্রাণ পাইলাম। আশার পুনঃদঞ্চারে হৃদয়নিবদ্ধ বায়ুরাশি নাসিকার্দ্ধ হৈইতে প্রবল বেগে বাহির হইয়া গেল। করজোড়ে তিনি ইষ্ট-দেবের কাছে ভিকা চাহিলেন, "প্রভো! এ হর্দশা হইতে আমাকে त्रका कत्र।"

व्यालाक क्रमभः हे जाँशत मिर्क व्यागत इहे जिला निता सिह সঞ্চারিণীদীপশিথাপুলকিত পরিথাতীরে দাঁড়াইয়া, রতন দীপামান देनमङ्गानरेन्द्र श्रीमार्द्र पिट्क फि्त्रिया ठाहिर्द्यन। पिथिर्द्यन, উक्त প্রাচীরের উপরে •মাথা ত্রালয়া, দেই অতিথিসঙ্গে অনভ্যস্ত নির্ম্মম প্রাসাদচূড়া নীরব অবজ্ঞার হাাসর সহিত তাঁহাকে নিরীক্ষণ করিতেছে। रैमनकानत्मत अर्था (मिथ्रा त्रञ्न विश्विত इटेलन! अक्रे धनौत्र खायां जा, मायां अव्यर्धत खन्न. नत्राध्य जाननः (परवत किना पात्रक कत्रिट्टि! टेममकानमरक प्रिथिट डांशत्र क्षि रहेन। यदन कितिलान, व्यवभानिक लाञ्चिक इदेशां यित श्री व्यविभ कतिएक इत्र, बनाशाद बनिजाय नमस दांजि याश्वन कदिए श्य, उथाशि लाकिराकि मा (मिथ्रा) आमि कामीश्र जाग कैतिव ना।

श्वसकात खुशाकारत भकार्ड वाथिए वाथिए, जारमाक्डा পরিধার পারে রতনের সম্বাধে আসিয়া উপস্থিত হইল। রতন দেখিলেন, व्यात्माधाविनी त्यहे पृष्ठेशूर्क त्रमनी। দেখিয়াই রতন ব্যঙ্গছেলে বলিলেন,—"বৃদ্ধ ব্রাহ্মণ মরিয়াছে কিনা দেখিতে আসিয়াছ।"

রমণী। আমি না বুঝিতে পারিয়া অপরাধ করিয়াছি, আপনি চলিয়া আহ্বন।

রতন। কেমন করিয়া যাই। ডোঙা ওপারে জলের ভিতরে লুকান আছে।

রমণী জলে নামিল; ডোডাটাকে উঠাইবার চেষ্টা করিল,—পারিল না। তথন ব্রাহ্মণকৈ আরও কিয়ৎক্ষণের জন্ম অংশিক্ষা করিতে অলুরোধ করিল। বলিল, "জলে নামিবেন না; কণ্টকাদিতে ঝিল' পরিপূর্ণ, চরণ বিক্ষত হইবে। আমি শীঘ্র ভৃত্যকে লইয়া ফিরিতেছি"— বলিয়াই রমণী স্থান ত্যাগ করিল, রতনের নিকট উত্তরের অপেক্ষা রাখিল না।

রূপেই হউক, কি আলোকেই হউক, কিয়ৎক্ষণের অন্ত সেই প্রাণইনি প্রদেশের জীবন সঞ্চার করিয়া, আবার স্থলরী গাঢ় অন্ধকার
ঢালিয়া গেল। রতন আবার যে তিমিরে সেই কিমিরে। যুবতীকে
কেথিয়াই রতন সাহায্যের প্রত্যাশা করিয়াছিলেন। এখন আবার
ভাতার কথা শুনিয়া আশত হইলেন, তাহার উপকারের চেষ্টা দেখিয়া
মুগ্র হইলেন। তাহার উপর যে এতটুকু অভিমান আসিয়াছিল, ভাহা
কেই তিনিরে বিসর্জন দিলেন। বলিলেন—"আয় মা—শীল্ল ফিরিয়া
আরি, আমাকে কপ্ত বন্ধন হইতে মুক্ত কর্।"

পূট্ করিয়া কবাটে শব্দ হইল। রতন ব্রিলেন, এইবার বোধ হয়
ভিতর হইতে কে দার পুলিতেছে। সুহুর্ভমধ্যে নিঃশব্দ ক্রিপ্রাভিতে
ভিতিন দারের পার্থে আসিয়া দাঁড়াইলেন।

वाहिता वाणिन ; এवः त्रञ्न दाथीत्न मांडाहेत्राहित्नन, क्राहात भाषिका

কি যেন অম্বেষণ করিতে করিতে, কতকটা দূর চলিয়া গেল। অবকাশ পাইয়া তিনি বাতীর মধ্যে প্রবেশ করিলেন।

তাঁহার কথা শুনিয়াই লোকটা বাহিরে আসিয়াছিল। সে অমুচ্চ গন্তীর স্বরে ডাকিল—"ঝম্মন্!" উত্তরের অপেক্ষায় ক্ষণেক দাঁড়াইল। আবার বলিল—"কে কথা কহিলা? ঝম্মন্?"

त्रञ्न खनित्नन ; গ্রাহ্ না ক্রিয়া শৈলজানন্দনের সন্ধানে চলিলেন।

#### একবিংশতিত্য পরিচ্ছেদ।

চলিতে চলিতে রতন শৈলজানন্দের ঐশ্বর্যা দেখিয়া বিশ্বিত হইলেন।
কি বিস্তীর্ণ শিলাবদ্ধ প্রাঙ্গণ । রুষ্ণপক্ষীয়া রজনীর অন্ধকার ভেদ
করিয়া, ব্রাহ্মণের দৃষ্টি প্রাঙ্গণপ্রাস্তে পহঁছিতে সমর্থ হইল না। প্রাঙ্গণ বেড়িয়া উচ্চ প্রাচীর। প্রাচীরগাত্রে সংলগ্ধ শস্তসম্পত্তির নিদর্শনস্বরূপ
অসংখ্য মরাই। মধ্যে স্চিত্তিত স্থনির্দ্ধিত দেবমন্দির। পরিখাতীরে
দাঁড়াইয়া ব্রাহ্মণ তাহারই অগ্রভাগ দেখিতে পাইয়াছিলেন। দেবালয়ের
সন্মুখেই নাটমন্দির। ব্রাহ্মণ প্রথমেই দেবদর্শনোদ্দেশে সেইস্থানে
উপস্থিত হইলেন। দেখিলেন মন্দির্দ্ধার রুদ্ধ। নাটমন্দিরেও জনপ্রাণীর সমাগ্ম নাই। উদ্দেশেই ব্রাহ্মণ, মন্দিরাভান্তরেম্ব অক্তাভ
দেবতাকে প্রণাম করিলেন। আর বলিলেন, "ঠাকুর" তুমি ত নিজেই
এক সময় বলিয়াছ:—

পিতাহমস্য জগতো মাতা ধাতা পিতামহঃ।

ক্সতরাং তোমার মূর্ত্তি লইয়া, তোমার নাম লইয়া কথা নয়। 'ড়ৄয়ি
য় মূর্ত্তিতেই এই মন্দির মধ্যে অবস্থান কর,—পিতাই হও, কি মাতাই
হও—বিফুই হও, শিবই হও, কি অনস্ত-শক্তিধারিণী জগদাত্রীই হও,
অন্ধকারে অপরিচিত পরগৃহে বিপত্তিতীত বৃদ্ধ আজ তোমার শরণাগত।"
বিলয়াই ক্লান্ড, অবসন্ন দেহ ব্রাহ্মণ মন্দির সমূথে চন্তরে বসিয়া পড়িলেন।

স্থির করিলেন, দেবতা উঠাইয়া দেন উঠিব, নতুবা এ রাত্তির মত আর স্থানত্যাগ করিতেছি না।

অজ্ঞাত-দেবতা-সমুথে, দেবতা-প্রীত্যর্থ বারকতক ইপ্তমন্ত্র জপ क्त्रिया, खाष्मण मृगहर्षा थूलिया विद्यारंत्वन। উस्कीयमधास् পত नितिर्देश वर्ष्य वैधिवात अञ्च वाश्ति कतिर्देश अभिज्ञाकत्र, बङ्घाতमर्य পত्रथानिएक वात् छ्रे नाष्ट्रिया विलितन, "हर निश्नि, কোথা হইতে কোথায় আনিয়া, কত প্রকারের অবস্থায় ফেলিয়া, তুমি আমার পক্ষে পরিদৃশ্যমানা বিধিলিপির কার্য্য করিয়াছ। শেষে তোমার কুপায় আমি দেবতার দারে। বলপূর্বক অনাহারে ক্লাথিকা তুমি আমার জন্ত পুণ্যপুঞ্জ সঞ্চিত করিলে। তোমায় আমি পরিত্যাগ করিতে পারি না। তুফি এই দেবতার দমুথে আজই बा इंडेक এक है। व्यमु एडेन भी भारता कि निन्ना (कन।"— এই विनन्ना, পত वः धिया, कानए इत न् पूँगी ही याथाय निया, आकान नयरनय वावका कहिरान । व्यव्य मभन्न मर्थारे वाकापत्र निजा, वामिन। निजात मूर्थ अक्षराष्ट्रात्र প্রেৰশন্বারেই এক মধু-নিস্যন্দিণা বাণী তাঁহার স্বযুপ্ত কর্ণে ধ্বনিত হইল। "ठाकूत्र! आलाक आनियाहि, পারের ব্যবস্থা করিয়াছি, উঠিয়া আস্ত্র।" अत त्यम भतिष्ठि, कथा (यन त्याना, ब्लाक (यन एना; ज्ञान (यन কতদিন হইতে, কত যুগের সম্বন্ধ বহন করিয়া কত ক্লাস্ত অনাহার পীড়িত বিপয়ের আশ্রয় ! রতন স্বপ্ন দেখিতে লাগিলেন।

্প্রথম সত্যের সঙ্গে স্বপ্ররপদীর কতকটা বাগ্বিভণ্ডা চলিল— কতকটা কলহের ভাব ধারণ করিল। সত্য নিশুণ পুরুষ, স্থতরাং कडको त्रमण्छ। कान ७० (मर्, जात्र क्यारम बाधन। क्यमायमा, त्रमभूषी ज्ञाञ्चनती वाजाणित क्था ज्ञाहित्रा, ज्ञा ज्ञाहित्रा क्रिय क्टान्त जक जांशास्क मधुमम बारका गरेमा यारेर्व, नीतम मठाशुक्रमहा जारा किहुए अरिएक भाविन ना।

স্থ বলিল, "ব্রাহ্মণ! চাহিয়া দেখ, কোথায় আসিয়াছ।" সত্য বলিল, "আর চাহিতে হইবে না; তুমি দৈই মন্দির সমুখেই উয়া আছ।"

সপ্ন। দেখিতেছ না, কেমন হিরছায়াদ্রমাকীণ, সর্বর্জু ফলশোভিত,

গুপ্তামল দেশ।
•

সত্য। মিছা কথা—মরুভূমি। তুমি নির্মাম নির্দায় হানয়হীম তের আশ্রায়ে কুৎপিপাসাকাতর, শক্তিহীন।

ব্রাহ্মণ স্থাপ্রলোভনে আরুষ্ট ইইলেন না। তিনি চোথ মেলিয়া ইলেন;—দেখিলেন, সমুথে সেই মন্দির, নিজিত দেবতাকে হৃদ্য নিন শায়িত করিয়া মৃত্তিকা স্তুপের ক্যায় জড় অন্তিত্ব বহন করিতে কাশে মাথা লুকাইয়াছে,। মন্দির সমুথে সেই নাটমান্দির; আর ্রির ভিতরে রাশীকৃত, স্তরের পর স্তরে সজ্জিত, গাঢ় অন্ধকার।

ব্রাহ্মণ আবার চক্ষু মুদিলেন। সেই অবস্থাতেই মনে মনে দেবতাকে লেন—"ঠাকুর। স্বস্থা দাও, আরু আমাকে প্রলোভনে আকৃষ্ট ও না। করণার জীবের অন্তিত্ব। করণার, মরজগৎ সহস্র বিকার আলয় হইলেও জীবযোগ্য স্থেস্থান। করণার পরিবীক্ষণে গৃষ্ট বালয়াই অভ্প্রকৃতি লাবণাম্যী। মৃত্তিকা বৃক্ষলভায় ফল্ছুলো প্রস্বিনা; শিলফ্ডুপ নির্মার সৌন্ধর্যে মুক্তবেণী শিপরিণী। সভামর বৃক্ষ নিজিয়, নিশু ণ—অগণ্য নির্দেশ্যর্গ করে লইয়া কোন নিরালম্ব নিশ্চিত হইয়া বিসয়া থাকিলে, স্বাট্ট জন্মমুহুর্ভেই লয় প্রাপ্ত । করণা, শুধু করণা—করণার ধারাবর্ষণে নিভান্সাত সংসার নির্মাণ শুধু অক্ত অন্তিত্বের ব্যেই অগ্রসর হইতেছে।

গুণবালের করণার প্রাহ্মণ আবার কিরৎকণের জন্ত ক্রেশের হাত নিম্বতি পাইলেন—আবার তাঁহার নিজা আলিল। নিজার সঙ্গে আবার স্বর্ধ। কি স্থের স্বর্থ। মধুনিবিজ্ঞ কুরুন-কেশ্রা কুহেলিকার ন্থার চারিদিক হইতে সপ্নসৌন্দর্য্য ভারে ভারে যেন তাঁহার প্রাণটী আর্ত করিয়া বিলিল।

বান্ধণ দেখিলেন, তিনি একটা ধরস্রোতা নদীতীরে দাঁড়াইয়া। পরপারে শোভাময়ী নগরী, উপরে নীল মেঘ। মেঘ বেড়িয়া, অনারতা উদ্দীপিত লাবণ্যে চিরাবস্থিতা বিহ্যাং। যেন রজতরেথাপ্রান্ত নীল শাড়া হেমাঙ্গিনীর অঙ্গ ঢাকিয়া আছে। নগরী মধ্যে, হেমকিরীট তুল্য স্মিগ্ধোজ্জল কাঞ্চনমন্দির, অজ্ঞাতনামী দেবতাকে হৃদয়ে নিবদ্ধ করিয়া জগতের কাছে লুকাইয়া, আপনার রূপোল্লাদে আপনিই তন্ময়—আপনিই ব্যেগা, আপনিই ভোজা; নিম্পন্দ যোগীর ন্তায় দাঁড়াইয়া আছে।

রান্ধণের বড়ই ইচ্ছা পরপারের কাম্যনগরে কোনও ক্রমে একবার উপস্থিত হন। কেন না দেখানে শুধু নগর আছে, আর দেবতা আছে। দেবতার ঘরে রাশি রাশি প্রসাদ। সোণার থালার সঞ্চিত পঞ্চাশন্ত লোকরণ সন্থত অমৃতোপম' অয়। রান্ধণ দেখিলেন, সে সোণার নগরে সব আছে, কেবল দেবীর প্রসাদ পাইবার লোক নাই। তাঁহার বড় ইচ্ছা কোনও ক্রমে নগরের সেই অভাবটা পূরণ করেন। এমন স্বদৃশু নগরের অকহানি তাঁহার প্রাণে সহিতেছিল না। কিন্তু সন্ধ্রে নদী; তিনি আবার বিক্রতগামিনী তর্লিনী। মাঝে মাঝে ছই একটা হালর ক্ত্তীর জলের উপর মাথা তুলিয়া তীরত্ব ব্রান্ধণকে দেখিয়া যাইতেছে। ব্রান্ধণ ভাবিলেন, ভাল বিপদ! আমার হাত রহিয়াছে, মুথ রহিয়াছে—দেহে অসীম ক্ষতা, ভ্রমণে অতুলনীয় শক্তি—সবই আছে। সন্মুথেও যথেষ্ট ক্রম—দেবসার প্রসাদ; তথাগি কি না আমি খাইতে পাইলাম না!

্হে ভবসাগর পারকর্ত্রী! আমাকে ক্ষুদ্র নদীটা পার করিয়া দাও। ক্ষুদ্রকর্তে ব্রাহ্মণ মন্দিরাধিষ্ঠাত্রী দেবতার আবাহণ করিলেন। দেবতার চরণোদ্দেশে কত অপ্রতিক্র অঞ্জলি দিলেন।

কোণা হইতে কে ষেন বলিল—"ঠাকুর, পারের ব্যবস্থা করিয়াছি;
ঠিয়া আহ্বন।" কাতরপ্রাণে ব্রাহ্মণ অনুশুমানাবয়বা হ্রধান্তোভ্রনীর মূলান্তেষণে চারিদিকে চাহিলেন। দেখিলেন, দেখিতে দেখিতে নাণার মন্দির থেন গলিয়া গেল। চারিদিক হইতে গলিত হ্বর্গন্তোতারায় ধারায় নিবদ্ধ হইয়া, পরস্পরে জড়াজড়ি করিয়া, দেখিতে ধ্বিতে মূর্ত্তিমতী দেবা হইল। তাঁর পৃষ্ঠে ঘুন মেঘের আবরণ, সম্মূর্ঘে বোদিত অরুণ-কিরণ। অলকাবৃত মুখে শতস্থানে প্রতিফলিত হইয়াত স্থির দামিনীরেধায় দিগত্তে রূপ ছড়াইয়া সৌন্দর্যাময়ী কথা কহিল, গাঁকুর। উঠিয়া আহ্বন।"

রতনের ঘুম ভাঙিয়া গেল। তিনি চারিদিক চাহিলেন। দেখিলেন, দতলে উপবিষ্টা অর্দ্ধাবগুণিতা রমণী।

"কে মা তুমি ?"

"উঠিয়া আস্থন, পারের ব্যবস্থা করিয়াছি।"

রতন উঠিয়া বদিলেন; ছই হাতে চক্ষু মুছিলেন। স্বপ্রটা তথনও গ্রিস্ত তাঁর মন্তিস্কের উপর অধিকার ত্যাগ করিতে ইতন্ততঃ করিতেলা। সেই গলিত মন্দিরটা তথনও পর্যান্ত তাঁহার অন্তশ্চক্র চারিধারে রিতেছিল। দেই জলমা শাললতা-পূজা পত্রশোভিনী—তথনও পর্যান্ত নার্ত, ক্ষৃতিন্ত রূপমার্থী লইয়া থাকিয়া থাকিয়া জাগিয়া উঠিতেছিল। তরাং রমণীর পারের ব্যবস্থাটায় তাঁহাকে কিছু গোলে ফেলিল—ভিনি ক্ মুছিতে মুছিতে স্বপ্রটাকে নিজ্পীড়িত করিতে লাগিলেন, আরু লিতে লাগিলেন,—"মন্দির ভার্মিয়া বাহির হইলি; তার সমন্ত পাদান নিজম্ব করিয়া, গারে মাঝিয়া নিজেই নিজের মুর্ত্তি গড়িলি; নান ভাগাবলে বৃদ্ধ বাহ্মণতে দেখা দিলি; এখন কি মা তার ভবপারের বন্থা করিতে আসিয়াছিল্ ? রমণী এ কথার কোন উত্তর দিল না, ক্ষেণ কি বলিল, ব্রিতে পারিল না। সে গলবল্পে ব্রাহ্মণের পদপ্রাত্তে

প্রণতা হইল; আর বলিল—"আমি আপনাকে বড়ই কণ্ঠ দিয়াছি। কন্যার অপরাধ ক্ষমা করিয়া, তার গৃহে পদ্ধূলি প্রদান করুন।"

এতক্ষণে ব্রাহ্মণের সমস্ত ঘুমের ঘোরটা কাটিয়া গিয়াছে। তিনি তথন মনে মনে কিঞ্চিৎ লজ্জিত হইলেন; বুঝিলেন, ভাল ক'রে চোথ না মুছিয়া, এ রমণীর কাছে এ প্রকার বৈদান্ত ব্যাখ্যাটী ভাল হয় নাই। जिनि विमाखिक याथात मूक, पिनाय मिया, महकं क्शाय छेखत मिरणन,— "তোমার ঘর এখান হইতে কতদূর ?"

त्रमणी। आशनि कि পথ खार व व क् हे क्रां स ?

রতন। পথশ্রমে ক্লান্ত, কুধায় জর্জরিত। মনের কথা যদি শানিতে চাও, তা হ'লে বলি, দেবতার পদপ্রান্তে স্থান লইয়াছি, আজ রাত্রের মতন উঠিতে ইচ্ছা নাই।

রমণী। তবে কি হবে প্রভূ! আমিই যে আপনার এই অবস্থার কারণ! আপনি এখানে অনাহারে রাত্রি যাপন করিলে, আমার যে मिरे कुत वानक नित व्यक्नाग रहेत्व ; गृहस्थत व्यक्नाग रहेता !

রতন। তোমার বালকটার কথা বলিলে আমাকে উঠিতে হয়; কিন্ত গৃহত্তের অকল্যানে তোমার কি ? যে পামর অনাহার প্রসীড়িত শভিথির প্রতি বিমুধ—সাধ্বী! তার কল্যাণ ভূমি কামন। কর কেন ?

রমণী। গৃহত্ত আপনার আগ্যন সংবাদ পাইলে, হয়ত প্রত্যাখ্যান क्षिटिन ना।

রভন। গৃহত্তের ভূত্যত সংবাদ পাইয়াছিল। সে ব্যক্তি আথিতের रहेटन, निष्ठत्र ज्ञा जाराद मःवार् मिछ।

ं त्रमणी। लिटो ভृত্যের অপরাধ। আমার বোধ হয়, 'গৃহস্ত এ কথা ভনিলে, সে বাজি তিরম্বত হইবে।

त्रजन। तम या रहेक, द्रशामात्र कार्लिशन्कादत्र श्रहासूत्र कि'। कृति भिषा कविद्य, जिल्लाट शृहत्वत्र कन्नान हहेटन दक्त ह

রমণী। আমি তাঁর কন্যাণ।

রতন। তাঁর কন্যা। তুমিই সদাশিবের স্ত্রী।

রমণী আরও কিঞ্চিং মাথায় কাপড় টানিয়া মুখ অবনভ করিয়া বসিল। ব্রাহ্মণ বলিতে লাগিলেন,—"তুমিই মা লক্ষী; সদাশিবের ন্ত্রী! আর সেই স্থলর বালক্ষ্ণ সেটা কি মা, তোমার পুত্র ?

त्रग्नी मूथ कृलिया मृद् क्किया ढिलिल,—"मिन आभात प्रत्ता। আমার স্বামার বিমাতার গর্ভজাত সম্ভান।"

শুনিয়া ব্রাহ্মণের মুখে হাসি আসিল। সেই সরোবর তীরের ছবিটী শাবার তাঁহার মনে জাগিয়া উঠিল। তিনি বলিলেন, "তবেত দেখিতেছি, তোমাকে রহ্ম করিবার তার সম্পূর্ণ অধিকার আছে।"

রমণী। আমি তাহাকে স্তিকা ঘর হইতে মানুষ করিয়াছি।

রভন। কেন? তার মা ?

রমণী। তিনি পুত্র প্রসব করিয়াই দেহত্যাগ করিয়াছেন।

রতন। তাহা হইলে তুমিই বালকের মা ?

র্মণী। সে আমাকে ভিন জগতের আর কাহাকেও জানে না। আমাকেই মাতৃ সম্বোধন করে। আমার শ্বন্তর জীবিত নাই, স্বামী থাকেন বিদেশে। খণ্ডরের শৃত্যগৃহে সেই বালকই আমার একমাত্র অবলম্বন, একমাত্র সঁজী। যেথানে যাই, তাহাকে সঙ্গে লইয়া যাইতে হয়।

ব্রাহ্মণ এইবার বুঝিলেন, বালক এত হুই হইল কেন। জনমী-স্থানীয়া প্রাতৃজায়ার অত্যধিক আদরে সে অসহনীয় অত্যাচারী ইইয়াছে।

রম্ণী। প্রভ্র কি আমার সীমীর সঙ্গে পরিচয় আছে? রতন। প্রারিচয় আর কি বলিব মা। সদাশিব আমার শিষা।

সদাশিব পদ্মী ভুলুষ্ঠিতা হইরা ব্রাহ্মণের চরণে প্রণতা হইল। यामाग्छ ভाহादक आनीर्वाप करित्वत। आग्न विविद्यान, "आमि ভाহात्रहे 

त्रमणी। भटावत भिरतान्धरम व्यक्ति स्वामीत रखाकत व्यक्तमान করিয়াছিলাম; কিন্তু অসুন্তব বলিয়া আমি জিজ্ঞাসা করিতে সাহসী इहे नाहै।

त्रजन। याक्, ভार्'ल आभारक याहे एउरे रहेरत १

রম্ণী। এখন আর আমি কি°বলিব ? সে বালক্ত এখন षाभनात्र मन्भिष् ।

রতন আর কথা কহিলেন না। বিছানো মুগচর্ম আবার বাঁধিতে व्यात्रञ्च कतिरामा । त्रमणीख उठिया माँ पाइन ।

বন্ধনকার্য্য সমাধা করিয়া রতনও দণ্ডায়মান হইলেন। রমণী विनन, "क्रांवक অপেका कक्रन; वाश्रित আলোক রাথিয়াছি, नरेया जानि।"

রতন কিন্তু এতই ক্লান্ত যে, তাঁহার উঠিতে বিন্দুমাত্রও ইচ্ছা ছিল ना। त्रमनीत আগ্রহে বাধ্য হইয়া তাঁহাকে চলিতে হইতেছিল। পিতার গৃহে আশ্রয় মিলিল না ; কন্তাও অতিথিসংকার কার্য্যে পিতার নাম পর্যান্ত মুথে আনিল না। পিতাপুলীর সমন্ধ, রতনের কেমন ছर्क्साथा इष्ट्रमा উঠिল। তিনি রমণীকে জিজ্ঞাসা না করিয়া থাকিডে পারিলেন না। বলিলেন—"এমন ঐশ্বর্যাবান পিতা তোমার, তুমি थानकीरिक नहेंगा এकः अवसान कत्र ; हेरात्र कार्त्रेगा आधि वृक्षिए পারিলাম না।"

"बामात्र यमुष्टे।"-- এই বলিয়া সদাশিব-পদ্ধী আলোক আনিতে हिनिता। অতৃপ্তকৌতৃহলে ত্রাহ্মণ<sup>6</sup>,সেই অন্ধলারাবৃত চত্ত্রে রমণীর প্রত্যাগমন প্রতীকাষ পুনক পবিষ্ট হইলৈন। দাঁড়াইয়া থাকিতে ভাঁছার क्रिम वाध रहेर छिन। मिश्रान जाश कत्रि छ । छात्र हेन्स् छिन ना। खाँशात्र हेन्हा, त्कान ७ প্রকারে রাত্রিটা যাপন করিতে পারিলে, প্রভাতে टेमेनकानमदक अकवात प्रियो यान। जारात्र मुख्य ना रहेर्नि अ

ভ রতনের কার্যা সিদ্ধি হইল না। সদাশিবপ্রোরত পত্র তিনি रेमनकानम जिन्न यात्र काशाकि । मिर्वन ना। अधु क्यांत्र भीज्ञ ও সদাশিব-পত্নীর আগ্রহেই তিনি সে স্থান ত্যাগ করিতেছিলেন।

একটু পরেই সদাশিব-পত্নী ফিরিয়া আসিল; এবং বলিল ঠাকুর चालाक मिथिए शाहेर छिन। <sup>१</sup>रा

রতন। কেথার রাখিরাছিলে?

त्रभगै। वादात्र काष्ट्र त्राथियाष्ट्रिणाम।

त्रजन। निविद्या (शन नांकि ?

রমণী। নিবিবার ত উপায় নাই! আমি একটা স্থগঠিত লগ্তনের ভিতরে পুরিয়া দীপ আন্দ্রাছি। নিশ্চয় কেহ লইয়াছে।

অন্ধকারে চলিতে পারিব না !

রমণী। আমি যে বালককৈ একা ঘরে রাখিয়া আসিয়াছি।

তুমিই বা এ অন্ধকারে পকেমন করিয়া ফিরিবে ?

त्रभगी। তार'ल कि रू अञ् ! याभि य वज़रे विপদে পড़िलाभ !

রতন। আমি একজন থর্কাকৃতি কৃষ্ণকায় পুরুষকে ধার খুলিয়া बारित्र श्रेटिक (मिथ्रिशिक्षिमा)।

त्रम्भी। द्यान निद्धक प्रिश्चार्ष्ट्रन श्रज् ?

রতন। বার খুলিয়া দে বামদিকের পথ অবলম্বন করিয়াছিল।

किः कर्खवाविमृ हात्र आग्र मनाभिव-পन्नो श्रूनतात्र म श्रान जाा न जिन। त्रक्रम वृक्षित्मन, विधाका काँहात्र कामृष्टि व्याक्षि आत्र काहात्र क्रियन बारे।

পশ্চাৎ হইতে কে তাঁহার গলা চাপিয়া ধরিল। আহ্মণ দেখিলেন, এতক্ষণে বিধাতা তাঁহার আহারের একটা ব্যবস্থা করিয়াছেন। ভবে चार्डेवर्ण चार्रार्ग भ्वाधःकृष्ठ ना रहेशा, भ्वश्रं मश्वश मृत्रित्रि े **डे**मरत्रत्र नम्—অন্তরের! তিলি প্রতি<sup>क</sup> মুহুর্ত্তেই একটা যোরতর হ্র-বস্থার আশক্ষা করিতেছিলেন। স্কুতরাং এরূপ অবস্থায় পড়িয়াও তিনি বিশ্বিভ কিংবা বিচলিত হইলেন না। খাড় ফিরাইয়া লোকটাকে দেথিবার জন্মও তিনি ব্যগ্রতা দেখাইলেন না। কেবল জিজ্ঞাসা করিলেন—"কে বাপু তুমি ?" দোকটা কর্কশন্বরে বলিল— "कुई (क १"

"আমি একজন অভিথি।"

"তুই কেমন করিয়া বাটীর মধ্যে প্রবেশ করিলি ?"

"তা ষেমন করিয়াই এবেশ করি; তোমাদের কি অতিথিদেবার এইরপই ব্যবস্থা ? কুধার্ত হইয়া দেবালয় দ্বামুথে আছারের প্রত্যাশার বসিম্নাছিলাম। বড় বাড়ী, বড় মন্দির দেখিয়া অনেক প্রকার ট্রকাচোধ্যের আশা করিয়াছিলাম। তা বাপু, তোমরা কি দেবতাকে নিত্য এইরূপ গলাধাকার ভোগ দাও ?"

लाको येथि छ इरेग्नारे र्धन गमा इरेड राज एषिया मिन। क्रजन भूथ कि बाहे (नन। (मिथितन, এ वाकि त्रहे मीर्घ यष्टिधाती পর্বকার প্রহরী। সৈ শক্ষকারে বিশেষ করিয়া ব্রাহ্মণের মুখ দেখিবার क्षित्र कविल ; वाकार्णत मूर्यत्र कार्छ मूथ लहेशा राजा।

র তন বলিলেন, "পরিতোষ করিয়াত থাওয়াইলে; এখন কি আবার मू**यक्षित वावश कत्रि**क्ट ?"

" "मूथ कि विशादन मिलिटन ना थानात्र मिलिटन। कृमि এक त्राटक গৃহজ্যের বাড়ী প্রবেশ করিয়াছ। তুসি যে চোর নও, আমি কেমন कतिश वृत्यिव ?"

"किन विश्न वैष्ट्रिण! य ममग्र कृषि णर्छनि চृत्रि कतिश्राक्षः मि नमरबरे ट्लाबाब त्यांचा উচিত ছिल, आणि ट्लाब नरे।"

जिंचन जिंग्ट्यमी जगितिहिए त अत्रग जी वास्ट्र जिंच है। यह है

कुक इरेग। सक्चरत विगि-"मावशान ररेग्ना क्था क'। कानिम् আমি কে ?"

"ठूर्जा जा यात्र, कानिना। जूबि निष्ठ श्रेतिहम्रो जिमा जामारक ভাগ্যবান কর ।''

আত্মমর্য্যাদাব প্রতিষ্ঠা করিতে, ও ব্রাহ্মণকে ভয় দেখাইতে, প্রহরিবর গুরুগন্তীরস্বরে বলিন,—"আঠুমি মুনা।"—নাম বলিয়াই মুনা, রতনের মুথে বিশ্বয়চিহ্ন দেথিবার জন্ত তীব্রদৃষ্টিতে চাহিয়া রহিল।

রতন মুরার নাম গুনিয়াছিলেন। মুরা কোল জাতীয় প্রসিদ্ধ मञ्चा। (ছাটনাগপুরের আবালবৃদ্ধবনিতা তাহার নাম জানিত। সকলেই ভাহাকে ভয় কবিত। প্রস্তি তুরস্তবালককে ঘুম পাড়াইতে মুন্নার নাম গ্রহণ করিত। এখন তাহার বয়স হইয়াছে। ছোটনাগপুর ইংরাজ-হত্তে আসিবার পর, সে দস্থাব্যবসায় পরিত্যাগ করিয়া চাকুরি वृद्धि चवनवन क्रियाहि। भिन्दांनम्ब ग्रंग्ट मि वहकान हरेए श्रश्रीत कार्या नियुक्त।

याशात मन्यू (थहे योगा जात मिना हम। मार्या अहती कारम, রতন মুরার দহিত এতকণ রহস্তের কথা কহিতেছিলেন; এখন নাম শুনিয়া গন্তীর হইলেন; এবং মুনা হইতেও গন্তীরতর স্বরে বলিলেন---"আর, তুই জানিস আমি কে ?"

স্বরের পরিচয় পাইয়াই, মুরা বৃঝিল, সন্মুথের বৃদ্ধটী সহজ লোক मन्। (म किन्नरक्षण निस्न कार्टा माँ पार्टिन । (सन कार्य कार्टाक ভবিশ্বৎ অমঙ্গলের আশক। করিল । কির্ৎেক্ষণ নীরব থাকিয়া, আবলেন্ত্র अञ्चलका किखानिन—"त्क कृषि ?"

"वाभि त्रजन तात्र"-- विनिदार त्रजन मधात्रमान रहेरलन।

त्रज्यात नाम मूर्गात व्यविषिठ ছिन्नना। डांश्रांत मेक्नित कथा, डांश्रांत अन्याम, त्म, जांश्व मञ्जनश्ठतिरिशत मूर्य व्यत्नक यात्र अनिवाद्य । প্রভু-কামাতা সদাশিবও অনুেকবার \*তাহার কাছে রতনের নাম করিয়াছে। কিন্তু তাঁহার সহিত দেখার স্থােগ হয় নাই। আজ সে "यूगवााय्याव्यास्यश्यमः कवाविका পরিণদ্ধকরः" शक्यक्षेत्रशुः वाकानी वाक्यवीत्रक कीव्रत्न ख्राथम मर्मन कत्रिन। प्रिथियारे ठित्रण नुरोहेल। विलल "फिर्छा! ना वृक्षिष्ठा চরণে অপরাধ করিয়াছি, ক্ষা কর।"

রতন মুলার হাত ধরিয়া তুলিলেন; এবং বলিলেন, 'মুলা! তুমি গাত্রোত্থান কর। প্রভুর কার্য্যে নিযুক্ত আছ, তোমার অপরাধ কি? উঠিয়া তোমার প্রভূ-কন্তার সন্ধান কর। তিনি আমার সঙ্গে এখানে আদিয়াছেন। তাঁহার লঠন কে অপহরণ ক্রিয়াছে, সেইজন্ম আমরা স্থানত্যাগ করিতে পারিতেছিনা।" • •

मुन्ना विनन, "नर्थन আমি नर्याहि; আপনি আমার সঙ্গে আস্থন।" রতন মুরার সঙ্গে চলিলেন। পূর্বোক্ত দারসমীপে উপাস্থত হইতেই, সদাশিব-পত্নীর সহিত পুনঃসাঞ্চাৎ ছইল। মুন্না তাঁহাদিগকে দ্বারসমীপে অবস্থিত থাকিতে অমুরোধ করিয়া লঠন আনিতে প্রস্থান করিল। नर्छन्त्र मीभ निर्काभिङ क्तिया (म এक है। यत्राहर्यत्र ङ ल न्याह्या द्राधियाहिन। अझक्षण भद्रदे आला खानिया यूत्रः नर्शनी फिद्राह्या मिन।

क्रेंक्टन वाहित्र व्यानिवामाज मूत्री बात रुक्ष केत्रिन । भनाभिव-भन्नी ও मूत्रा टिक्ट काराटक टक्षांन ও कथा किछाना कतिन ना। त्रजन वज्हे बिब्बिड रहेलन। किंद्ध क्थार्ख खाक्राग व्याधारक मगग्राक्रम कतिएड षां किलावी हरेलन ना, मनां भिक्शकोत महिल नीत्रव शतिथा পার হইলেন।

### बाविःশতিত্য পরিচেছদ।

পরদিবদ অপরাহে মন্দিরপ্রাঙ্গুণে বিচরণ করিতে করিতে বয়ো-ভারাবনত শৈলজানন দেথিতে পাইলেন, একটা দীর্ঘ ছায়া কোথা

হইতে তাঁহার পদপ্রান্তে সম্পুস্তিত হইতে ছুটিয়া আসিতেছে। মাথা তুলিয়া তিনি দেখিলেন, ছায়ামুরূপ উন্নত দেহ এক অদৃষ্টপুর্বে বৃদ্ধ, মন্দিরপার্শ্বস্থারের দিক হইতে তাঁহার দিকে আসিতেছে। তিনি অনিমেষ দৃষ্টিতে তৎপ্রতি চাহিয়া রহিলেন। আগন্তক ধার পাদক্ষেপে তাঁহার সমীপন্থ হইল। আুসিয়া কোনও কথা না কহিয়া, তাঁহার हस्य এकथानि পত দিল। পত দিয়া নীরবে দমুথে দাঁড়াইয়া রহিল। শৈলজানক আগন্তকের আচরণে বিশ্বিত इङ्ग्लिन। निष्कि किय्र क्ष নিষ্পন্দ দাঁড়াইরা, তাহার আপাদ মস্তক নিরীক্ষণ করিতে লাগিলেন।

আগন্তকই কথা কহিয়া, निस्कं को जल कि विन । विनन, ''ভোমার জামাতার নিকট হইতে এই পত্র আনিয়াছি। কল্য রাত্রে তোমার কন্তার সহিত এথানে আসিয়াছিলাম। তোমার দেখা না পাইয়া, कितिया जाहात পর্ণকুটীরেই আশ্রয় লইয়াছিলাম। দেখিলাম, রাজযোগ্য প্রাসাদাধিষ্ঠিত শৈলজানন্দের সমস্ত ঐশ্বর্যা সেই পর্ণকুটীরেই লুকায়িত আছে। তাহার উচ্চপ্রাচীরবেষ্টিত, দেবমন্দিরশোভিত স্থসজ্জিত গৃহ, অসংখ্য রত্নরাজি•গর্ভে ধারণ করিয়াও দরিদ্র,—ক্ষীণ জীবন, কীটাবরণ ञ्दरश्रीन।"

শৈলজানন তথাপি নিশুর। রতন তাহাকে অনেক কথা শুনাইবেন विद्या প্रস্তুত হইয়া , আঙ্গিয়াছিলেন। কিন্তু শৈলজানন্দকে দেখিয়া, जिनि जात्र विभि किছू विनिष्ठ भातित्वन ना। रेमनकानत्मत्र मुर्खि দেখিয়াই ব্রাহ্মণ বুঝিলেন, বৃদ্ধ দারুণভূকম্প-শিথিলিত, অঙ্গসন্ধি कान् भूर्ककाल्य जमः निर्शादी मुक्त्र ज्याविषय। मः मार्युत परेना বৈচিত্যের ঘাতপ্রতিঘাতে, শ্রেকত্ঃখনর্দ্মবেদনার রেখাসম্পাতে, এক সময়ের দেবতুলা কান্তি, আজ নিস্প্রভ, ভূপতিত উদ্ধাপিতের ক্রায় क्विन পূर्वकालित উচ্চসংস্থান স্চিত করিতেছে। ব্রাহ্মণ আর কিছু विनिष्ठ भाविकान नो। टेमनकानमस्क प्रिथिष्ठ प्रिथिष्ठ छात्र मस्न

ত্রংথ উপস্থিত হইল। ক্যার নিক্টে ভিনি পিতৃপরিচয় অবগত হইবার চেপ্তা করিয়াছিলেন, কিন্তু কৃতকার্য্য হন নাই। পথে আদিতে আসিতে, তিনি ক্যাত্যাগী এই কঠোর বৃদ্ধের এক অপ্রীতিকর মূর্ত্তি কল্পনায় আঁকিয়া দেখিবার জন্ম প্রস্তুত হইয়াছিলেন; কিন্তু আাসয়া **जाहा (मिथिट जाहे मिन ना**।

শৈলজানন্দ কোনও কথা না কহিয়া পত্ৰ খুলিতে লাগিলেন। রতন বলিলেন,—"আমার কার্য্যা শেষ হইয়াছে; এখন আমি আসিতে भात्रि

अञ्चि धौत्रजारव रेममङानम विनित्नन, "क्रांगक अर्थका कक्रन।"— এই বলিয়া তিনি ভূত্যকে ডাফিলেন। পূর্বে রাত্রের ঝম্মন আসিয়া উপস্থিত হইল। সে প্রভুর সমুথে ব্রাক্ষুণকে দেখিল। ভয়ে তাহার मूथ ७कारेया जिल। .टेमलकानम डाँशांक पिथियारे विलिलन—''काल जूननी এथान आनिवाहिय ?'' শৈनजानकात कञ्चात नाम जूननी। ভীতিকম্পিত কণ্ঠে ঝম্মন বলিল—"কই প্রভু! আমিত তাহাকে **(मिश्र नारे!"—** 

व्रजन वाथा निया वनिम्न- ''ভৃত্য শুধু आगारक मिश्राहिन, मिश्री वाधा अनिवाहिण ; आिय वाधा मानि नारे। जूननीटक उ वाकि **CREW** नाहे।"

ে শৈ। আপনি—

त्र। उपाण।

लेगानाम रोक जूनिया প्रशाय कतिताम, आंत ज्वारक जानम वानित्व बाराम कतितन। एकः श्राम शहन। म बात प्रद्यान विगम ना कृतियां जामन जानिए पूर्विम ।

त्रजन बिंगिलन, "আমার আর অপেকা করিবার প্রয়োজন कি 🕬 🤍 े त्या । "सामान शत्नाकन काट्स ।"

त्र। आমि তীর্থে যাইবার জন্ম বাটী হইতে বহির্গত হইয়াছি। পথে विषय इहेम्राष्ट्र। এथानि अकिन विषय इहेल।

শৈ। আর একদিন বিলম্ব করুন।

এই বলিয়া বৃদ্ধ কিয়ৎক্ষণের জন্ম নীরবে পত্রপাঠ করিতে লাগিলেন। রতন দেখিলেন, বৃদ্ধের মুখের ভাব দেখিতে দেখিতে পরিবর্ত্তিত হইল; চকু ছল ছল করিতে লাগিল। ইতিমধ্যে **अশ্বন** আসন লইয়া আসিল, रेमनकानत्मत्र अ পত্रপাঠ সমাপ্ত হইन । • অতি কটে মনোভাব গোপন করিয়া তিনি রতনকে বলিলেন, 'আপনি কি একান্তই যাইতে रेष्ट्रा करत्रन ?"

त्रजन। जूमि य कि প্রয়োজনের কথা বলিলে ?

শৈ। তাহা একদিনে নিপান হইবার সন্তাবনা দেখিতেছিনা 🕨 त्रजन। जान, इरेनिन ना रुप्त त्रियारे (गनाम।

শৈলজানন্দ, ঝম্মনকে বৃলিলেন, "আসন আমার হেরে লইয়া যা— व्यात मुक्षा ८काथां य व्यादक, ডाक्षिया (मृ।"

मुन्नारक जात्र काकिर् इहेन न। (म जापना इहेर् हैं वाहार प्रत मिरक आमिर उछिन। ययन ७४ आमन রाथिতে চলিয়া গেল।

मूना निकरि जामिल, मिनजानम वनिलन-"मूना! मन्नूरथ এই रि वृक्ष है। कि (प्रिंट्फ्र), वेनि विश्वानी-वीत त्रजन त्राम। वेनि मून्क ছাড়িয়া চলিয়াছেন। বোধ হয় আর ফিরিবেন না। বাঙ্গালা ভীর্থস্থ रावजात भाष्त्र, এ পুष्ण अक्षिणि निर्क চिनियार ।—— आंत्र भारेरवना।"

একটা গভীর দীর্ঘথাসভরকে শৈলজানন্দের কথা কিয়ৎক্ষণের জন্ম - (यंत्र ज्यात्मानिक रहेशा केठिन। मीर्घयाम मुझात्र। त्मनकामत्मत्र कर्व কম্পিত। রতন বার্কানমিতাক বৃদ্ধের মুখের প্রতি চাহিয়া নির্মাক, निक्रम।

किथिए शक्षिण रहेशा टेममकामम विमय्क मात्रिमम-"त्याम

মুরা ! এ দেশে এরপ দামগ্রী আর মিলিবে না। বাঙ্গালীর এ মূর্ডি জন্মের মত চলিরা যায়। ছই দিন প্রাণ ভরিয়া সেবা করিয়া লও। "— বলিতে বলিতে বৃদ্ধ একবার ব্রাহ্মণের দিকে মূখ ফিরাইলেন। ব্রাহ্মণ দেখিলেন, বৃদ্ধের কঠোর দৃষ্টি, হৃদয়ের আবেগভরে কোমলতা প্রাপ্ত হইয়াছে। যে মূথে তিনি হাম্বির অন্তিত্ব কল্পনারও আনিতে পারিভেন্ন না, তাহা আজ শিলাবিদ্রাবী, নিরাশার তুষারকণসঞ্চয়ে কি মধুর সৌন্ধর্য স্থপ্রসায়।

রতন দে মুথ দেখিয়া বৃদ্ধের মনোভাব সমস্তই যেন বৃঝিতে পারিলেন। তিনিও নীরব থাকিতে পারিলেন না।

- "यथार्थ वत्नह देशनकानमः! आत्र आंत्रित ना।"

শৈ। "আর আসিবে না। রতন রায় এ মূলুকে আর আসিবে না। রা। শৈলজানন্ত আসিবে না, মূলাও আসিবে না।

শৈলজানন আর কথা কহিলেন না। ব্রাহ্মণকে লইয়া যাইতে
মুয়াকে ইঙ্গিত করিলেন। মুয়া ব্রাহ্মণকৈ সঙ্গে চলিতে অমুরোধ
করিল। রতন বলিলেন, "একবার দেবতা দর্শন করিয়া আসি।"

শৈ। কোথায় দেবতা ? আপনি তীর্থদর্শনে চলিয়াছেন, ফিছ তীর্থে দেবতা নিদ্রিত! এই মন্দিরে পূর্ব্বে অন্তভুজার অধিষ্ঠান ছিল, শত্রুহদয়-শোণিতে তাঁহার পিপাসা মিটিত, এখন দেবতা নিদ্রিত।"

, র। আছে ত ?

देन। ছिन छं कानि।

রতন দেবীদর্শনে চলিলেন। শৈলজানন্দ মুন্নাকে বলিলেন—"চাবী আনিয়া মন্দির হার থুলিয়া দে। ব্রাহ্মণকে অইভ্জার কল্পাল দেখাইয়া, আমার গৃহে লইয়া আয়।"

চলিতে চলিতে রতন শৈলজানশৈর কথা কয়টী শুনিলেন। প্রহেলিকাময় শৈলজানশকে তিনি ব্যিয়াও ব্যিতে পারিলেন না।

[क्यमः]

# বাঞ্ছিতার প্রতি।

(5)

আমি ওগো, এক্তাবনে করি নাই আশা कथाना भाउँव प्रवि ! ७व ভानवामा ; জ্মেও অশেকি-তক্ষ সরম-প্রাক্তনে করিনি রোপণ,—তব চরণ তাড়নে मद्रक अन्द्रम्य क्रूय छेच्चारम অঙ্গন করিতে পূর্ণ রক্ত হাস্তরাশে। যে উষায় সুকোমল তব মুথখানি প্রদন্ন ধবল জ্যোতি দিতেছিল আনি আমার বেডসী কুঞ্জে, প্রথম দর্শনে শেষারে দেবতা বলি করেছিমু মনে । অ মার এ পুতিগন্ধ সংকীর্ণ কোটরে স্থা প তৰ দেবমূর্ত্তি—এ ভাৰ অন্তরে নাহি ছিল লেশমাত্র ; তঁপন হইভে তোমার সে দেবরাজ্যে প্রবেশ লভিতে ভেবেছি লাগিবে মোর যুগান্ত সাধনা; नक्यात्र वर्क्टि मार्या भाषित्रा जाशमः যদি যোগা হই, তবে তোমার দুঁরারে व्यक्तम मानिव (पवि ! निनीथ जांधादत्र।

(२)

সে নিবিড় নিশাকালে হবু গু গহন
সহজ কলদ মুখে ধরণী, গগন
দিবে পরিপূর্ণ করি' কিমা শান্তিজলে;
তাহার সাবন্ধত ত্বু কক তলে

সকলি করিবে পূর্ণ; হেমদীপাধার

স্থির, শাস্ত, সমুজ্জল, নীরব সভার
রাজচক্রবভাসম, পূর্ণ মহিমার

বিনিদ্ধে আনন তব স্থর্বপ্রভার

দিবে ধৌত করি; আলেখ্য সকল
বেন স্ব-স্ন্দরীর উপ্ত অস্তক্তল

বিচিত্র নীরব বর্ণে দিবে প্রকাশিরা।
আয়ত দর্পণ থানি নয়ন খুলিয়া
সাক্ত রভস বেগে করিবে আহ্বান
স্বিজনে অরি দেবি! ভোমার বয়ান।
স্বর্ণলতিকার মত তব দেহলতা
হিরণ্যপর্যক্ষ'পরে রহিবে মুদিতা।
স্থা, অনবদ্য তব বৌবন নন্দনে
সকলি' জাগিয়া রবে নীরব স্বপনে!

(0)

ধীরে ধীরে প্রবেশিব অলস চরণে
তব স্পু কক্ষ মাঝে সে অমৃতক্ষণে;
হেরিব কিরুপে রাণি! নিদ্রার অফলে
চঞ্চল সৌন্দর্যালীলা কোন্ পুণাফলে
তিলে অঙ্গ আলিন্দিরা ধ্রব হ'রে বার!
লো নির্ফান শর্বরীর বিজন শুহার
নেহারিব তব বিশ্ববিদ্ধরিনী বেণী
শিধিল শর্মে পড়ি',—অলস রাগিণী
হন্দের উদার কোলে; দীপ্ত হির্গার
মেইলা, নুপুর শ্রেণী, কাক্ষন বলর

চক্রহার, একাবলী, গুর্জরী মৃথরা, তব গৌর দেহতটে, লজ্জার প্রথম। ' মিলায়ে রহিবে স্তব্ধ; চঞ্চল নিয়ত তব নেত্রনীলিমার অধিবাসী কত নরন অঙ্গন ছাড়ি মরমের কোণে শত স্থম্মজাল রচিবে গোপনে। দে শুভ মাহেক্রবোগে লয়ে প্রাণ মম, দেখা দিব ভোমা মাঝে স্থম্ম দিম।

(8)

यथन काशित्व मिवि ! विश्वल छेयात्र, मव भात्र मिश्र श्रीण .यन छेएएं यात्र जव स्थ्य स्था मार्थ ; मृत्रात्र श्रीद्र यन जात्र वक्ष त्रि, छेख्छ मभीद्र তিল ভিল নিতা নিতা মরিনা শুকারে!
তব মনোমন্দিরের স্পবিত্র বারে
শতকোটি রেণ্রূপে সৌরভের মত
সাধ মোর নিতা হয়ে থাকিব সতত।
নিত্রা জাগরণে তব গুপ্ত জ্ঞানরূপে
রক্তব সাথে সাথে অতি চুপে চুপে!
ফ্রোর এই দেহ সনে লয়ে গুরুভার
বেন আর নাহি হই শত লক্ষবার
শ্বলিত চরণ, বার্থ, উপল-বন্ধুর
বিশ্বের জটিল পথে তুর্গম, স্পুর!
হে দেবী! আশিষ কর জন্মজন্মান্তরে,
তপোবলে ছাড়ি' এই দেহের নির্ভর
পীরি শ্বেন একদিন ফলপুপ্রভারে
সাজারে বরণভালা আসিতে তুরারে।

### গ্রীগঙ্গাচরণ দাসগুপ্ত।

## চীন-প্রবাসীর পত্র।

( > )

প্রিবীর যাবতীয় স্বাধীন ও স্থাত্য জাতির সমাষেশ মধ্যে প্রবাস জীবনের দেড় বৎসর কাটিল। ইভিমধ্যে যাহা কিছু প্রত্যক্ষ করিলাম, তাহার প্রায় সক্লফলিই অদৃষ্টপূর্ব ও অভিনব। এ সকল জাতি যে কেন ও কিসে এত উন্নত এবং কোল মহামন্ত্রে স্লোল জলে সমান আধিপত্য করিতেছে, ভাহার একটা অব্যক্ত বিকাশ যেন সর্বার স্থান্ত্রিক্ট

এই वाधीन ममष्टित উৎসাহ, উত্তম, আবিষ্ণার, কর্ত্তব্যবোধ, কার্য্য-कू नगडा, मारम, मञ्जाम, मृद्धाना ও मृत्य मिश्रित विश्वय-विमृत्कृत क्यांब স্তম্ভিত হ্ইতে হয়, এবং চিন্তা করিলে অবসাদ আসিয়া অবিভূত করে। তথন আমাদের নিজ্জীব আম্ফালন গুলা যেন বিপক্ষের তীব্র ব্যক্ষোক্তিতে পরিণত হইয়া লজ্জা ও ধিকার আনিয়া দেয়। কেবল জাপানই সে অব্দন্নতার মধ্যে একটু আনন্দ আনিয়া ক্ষণেকের জন্ত \* আশার আশাস দিয়া থাকে। সম্পর্কটা সম্পূর্ণ ই স্থানুর, কিন্ত "গরজ্ বড় বালাই"! তাই আজ এসিয়ার জাপান,—"আমাদের জাপান"।" তদ্বতীত, ভারতের বুদ্ধদেব যথন জাপানের গুরুদেব তথন জাপানকে আপনার বলিবার ইচ্ছাট। প্রাণ যেন স্বতঃই অযাচিতভাবে পোষণ করে। वारुविकरे, जानान একণে निक উগ্নম ও অধ্যবসায় বলে পৃথিবীর স্থাভা শক্তি সমূহের অগুতম;—কর্মাক্ষেত্রে বা রণক্ষেত্রে, স্থলে বা জলে সম্পাম্থাবান। এত অল্লদিন মধ্যে, তাহাদের এই আকস্মিক অভ্যুত্থান সূত্য সূত্যই সভাজগণকৈ স্তম্ভিত করিয়া দিয়াছে। ভাই বলিতেছিলাম, সমগ্র যুনানী ও মার্কিন শক্তিপুঞ্জের সহিত জাপানকে यथन সমগোরবে একাদনে দেখিতে পাই, তথনই একটু আনন্দ আদিয়া কিছুক্ষণের জন্ম অবদাদটা দূর করিয়া দেয় ।

যেমন প্রকৃতিভেদে ক্রচিভেদ, তেমনি দেশ ও সংসর্গভেদে মানসিক ভাবের ও অল্লাধিক পরিবর্ত্তন ঘটিয়া থাকে; এমন কি, স্বাধীন ও বছপুষ্ট চিন্তাগুলিও অজ্ঞাতে ভিন্নপথে প্রবাহিত হয়। তঃপ-নারিদ্রোর ক্রিন হস্ত হইতে মুক্ষা পাইবার ও উন্নত হইবার চিন্তা ও চেষ্টাঞ্জি দেখিতেছি ভারতের একরপু এবং অন্তত্তে অন্তর্নপ। বাস্তবিশ্বর তাহারা দেশতেদে মনমধ্যে বিভিন্নভাব ধারণ করে। কর্মনেতা, अवभारण, उक्तभा, उक्त हांक्त्री ७ व्यक्तिक जिल्ल প্রভৃতি লাভের জন্ত, ভারতে সহ্পার পুলিতে হইলে, কভক্টা

स्थात्रोम्, बार्यमन, निर्यमन, প्रार्थनां, पूथार्थका, जिका ७ जन्मनरे বিশিষ্ট উপায়রূপে উপস্থিত হয় এবং প্রকৃষ্ট পথ হইয়া দাঁড়ায়; কিন্ত এই স্বাধীন শক্তিসমূহের মধ্যে থাকিলে, তাহা মনমধ্যে উদয় হয় ना,—श्रुष्टा राम जांशा शारीन त्यार्जित वशीन हरेशा পড়ে এবং আश्र-নির্ভন্ন করিতে বলে। এথানে, শিক্ষিতের সম্মান, গুণীর গৌরব এবং উপযুক্তের উপাসনায় কাহারও নিকট জাতিভেদ দেখিলাম না। কিন্তু প্রার্থনা, মুথাপেক্ষা বা ভিক্লার্য র্ণাটা সকলেরই সমান,—কারণ ভাহাদের নিকট মামুষ মাত্রেই সমর্থ জীব, ভিক্ষাটা অমামুষের লক্ষণ, তাই ভিক্ষায় এত উপেকা—তাই তাহাদের নিকট অমানুষ মানুষের সহাত্মভূতির যোগ্য নহে।

এই প্রবন্ধনীর বিষয়ীভূত না হইলেও, প্রদক্ষক্রমে একটা বিষয় উল্লেপ করিতেছি। বাসায় বসিয়া লিখিতেছি (এই শত্র) একটা काशानी यूवक व्यामिया व्यञ्चिमन कानाहेलं। यूवां ि य गत्रोव वा কষ্টে পড়িয়াছে; তাহা তাহার পোষাক পরিচ্ছদই প্রমাণ দিতেছিল। হাতে, সভ্যোচিতভাবে পরিষার রুমালে বাঁধা একটা ক্ষুদ্র বাকা। বেশ বিনয়নভ্রভাবে জিজ্ঞাসা করিল—"আপনি সিগারেট ব্যবহার করেন কি ? ভাহা হইলে আমার কাছে লইলে আমি একটু উপকৃত श्री । जावश्रक ना थाकिरमञ, क्रिष्टित এরপ সঙ্গত আবেদন, কাছার माथा অগ্রাহ্ করে! কারণ, দে আবেদনটি ভিক্লকের আবেদনের अभि, मात्रिमा ও एः थ পরিমুট করত হাদরকে দ্রব করিয়া দান গ্রহণ করে না; কিন্ত তাহার ভাব ও ভাষার এমন একটু মনস্থিতা আছে; পরে দানের প্রতিদান সরূপ যথাযথ মূল্য গ্রহণ করে মাত্র। যাহা र्डेक, जाबि करत्रक भारिक मिशारति नेश्नाम ; रेशारक जामात्र विन् मांख जांगचीकात्र हिन ना-कातृन, निगाद्विष्ठ जामात्र निज्ञादनवा वस्त ।

যুবাটি যথোচিত বিনম্রভাবে কৃতজ্ঞত। জ্ঞাপন করিয়া চলিয়া গেল তাহার অবহা খুবই ধে হীন তাহাতে সন্দেহ মাত্র নাই;-কিছ তাহাতে বিনয় পাইলাম, দীনতা পাইলাম না; আত্মনির্ভর পাইলাম व्यनाथ । व्यनश्रवाव शाहेलाम ना ; मीश्रि शाहेलाम, मोर्बन পাইলাম না। কিছুক্ষণ অবাক হইয়া ব্যাপারটি উপভোগ করিছে হইল। পরে, বন্ধুদিগের সহিত কথায় কুথায় শুনিলাম, কোন ব্যাছি ভিক্ষকের অবস্থাগ্রস্ত হইলে, ইহাদের স্বদেশবাদীর মধ্যে কেহ তাহাহে कान अक्षी प्रवा निया जाश्रत नाजित छे भन्न की विकार्कन अ मक्ष्य পথ দেখাইয়া দেয়,—বীকিটা নিজের হাত। ইহাতে এক কেটে অনেকগুলি শিখিবার জিনিস পাই।(১) ভিক্ষা করিতে নিষেধ ও স্থণ (২) নিশ্চেষ্ট ও অলসভাবের অপ্রশ্রেষ, (৩) আত্মনির্ভর, (৪) অল আমে মধ্যে নির্কাহ ও शक्षेत्र, (c) স্বাধীন ব্যবসার সহিত পরিচয়; ইভ্যাদি জিনিস গুলিও জাপানের, স্থতঁরাং তাহাতেও দেশের জিনিসের প্রচলন কাটতির পক্ষে গৌণভাবে সাহায্য করা হইতেছে। তাই বলিতেছিলা এ সব দেশে কর্ত্তব্যধিচার ও উপায়চিস্তা প্রণালী সম্পূর্ণ বিভিন্ন।

मिथ्छि । अरे त्रव श्राधीन (मर्ग ७ श्राधीन त्रमष्टित गर्धा श्राकिटः) कएड कोवनी मिक्कि जारम; य कथन कान विषय छारव ना তাহাতেও আপনা হটতে ভাবনার সঞ্চার হয়;—এমন কি, জাতির ১ **(मर** ) नावशात कथा । (मरे अपूर्वत मश्विष कि (यन अमर् অঙ্গুরিত করিয়া দেয় ! কাজেই তাঁহাকে সেই অদুপ্ত শক্তির অধীন . वाधा इहेबा ভाहात्रहे अञ्चनत्रग कतिए हत्। क्रां मनग्राधा क्रां इट्रेंड भावछ रुव,—"किम रैंश्वा এত উन्नड रुट्ग ? म अपि প্রারম্ভ কোথার ?" কিন্তু কোভের বিষয়, তাহার স্থানশ্ভিত সূত্র : সোপানটি বাছিয়া বাহির করা কঠিন। এ স্থলে আমাদের চির-প্রচলি "राम यत्न (छाम काना," এই গ্রামা कथांति, शूवरे शाति। ऋष्मन क

মুদ্ধ, কিন্তু যে সকল মূল বিষয় ক্পষ্টতঃ চকুকর্ণের বিবাদ ভঞ্জন করে, ভাহারই একটি লইয়া একটু আলোচনা করিতে ক্ষতি কি ?

আমাদের পুরাণাদিতে শক্তিস্টি নারীতেই কয়িত হইয়াছে; দৈত্যাধিপ মহিষাস্থরের নিধন জন্য সর্বস্থানে প্রভাষার! লোক্তর্ব্বাণী, সর্বদেবতার শরীর হইতে উত্ত সেই অতুল তেজঃ একত্র হইয়া নারী হইল। \* \* \* "। বাইবেলেও দেখিতে পাই, আদিপুরুষ Adam; সহকারী (help-mate) না পাওয়ায়, ঈয়র, পুরুষের অংশ লইয়া নারী স্টি করিলেন। সেই স্ত্রীজাতি লইয়া জগং সম্পূর্ণ ও পৃষ্ঠ, তাহাদের ছাজিয়া দিলে বিশ্বের আশু পরিসমাধি স্হচীত হয়। সকল সমাজেই তাহারা অয়াধিক বিভিন্নতার অস্তরালে, পুরুষের অর্জালিনী সম্পদে বিপদে, স্থাধে ছংথে, সহচরী ও সহধার্মীণী; পুরুষের প্রধান সহায় এবং মানবীতে শক্তি অধিষ্ঠাতীর স্প্রকাশ; স্থতরাং তাহারা কথনই আসহায়া ও অশক্তা হইবার যোগ্য নহে, এবং তাহা হইতেও পারেনা।

শালোচ্য সম্প্রদারগুলির রমণীমগুলী মধ্যে তাহার বছ আভাস পাওয়া যায়। ইহারা কর্মক্রে, কর্ত্রের বা কমণীয়তায়; বীর্য্যে বা বিনালে; সামর্থ্যে বা সৌন্দর্যে; শিক্ষা, শিল্প বা সাহিত্যে—সম-ভেলবিনী। ইহারা কেবল পুরুষের সহকারী নহে—বরং সমকক্ষ সহকারী। এরূপ সহকারী না পাইলে, এ সকল জাতি এত ক্রত উন্নত হইতে পারিত কি না সন্দেহ। স্বভাবতঃ পিতার প্রকৃতি অপেক্ষা মাতার প্রণই সন্তানে অধিকমাত্রায় সংক্রামিত হইতে দেখা যায়। যোগ্য পিতাল উপযুক্ত সন্তান অপেক্ষা, ক্রমাতার সন্তানই অনুপাতে ক্রিক। ধর্মবীর, কর্মবীর, রগবীর ও মহাল্মাগণের জীবন বৃত্তাত্তৈ ইহার বছ নিদর্শন বর্ত্তমান। অতএব, এই সকল রমণীগণের সন্তান সম্বৃত্তিপণ, মাতার তেজনীপ্র প্রকৃতি ও প্রণস্কলের অধিকারী হইয়া সম্বৃত্তিপণ, মাতার তেজনীপ্র প্রকৃতি ও প্রণস্কলের অধিকারী হইয়া সমষ্টিকে পুষ্ঠ, উন্নত্ত ও দৃঢ় করিতে থাকে। বীজ, স্কুকেতেই স্কুকল প্রদান করে; স্কুকেত্র না হইলে ইচ্ছামুরূপ ফলের আশা বিভূষনা যাত্র।

এই সব চিস্তা করিলে কতকটা মনে হয়, এই সকল জাতির রমণীগণ যদি আত্মনির্ভারসক্ষমা না হইত, তাহা হহলে এরপ ডেজ্ববিদী

হইতে পারিত্ত কি না সন্দেই। শক্তি অংশরূপিণী রমণীতে ডেজ্বও
একটি রমণীয়তা,—তাহার উগ্রহাই রমণীতে প্রুষতা। তাই তেজঃদৃপ্তা চাদবিবির প্রতিমৃত্তি দর্শনে কর্ণেল মেডোজ টুনর "a resolute
womanly air" কথাটির ব্যবহার করিয়া গিয়াছেন।

বংশগৌরবটা সাগারণে প্রযোজ্য নহে, স্কুতরাং তাহা উক্স রাথিয়া বলিতে গেলে আত্মনির্ভরতাই রমণীকে ভেজফিনী করিবার একটি প্রধান উপাদান বলিয়া বোধ্র হয়; ক্রমশং তাহা সন্তানাদিক্রমে সংক্রামিত ইয়া প্রকৃতিতে পরিণত করে। এক্ষণে কথা এই বে. সে আত্মনির্ভর আনে কোথা হইতে ? ধনরত্বে ও পরোক্ষ পরম্থাপেক্ষায় যাহা আমে তাহা প্রকৃতপক্ষে আত্মনির্ভরতা নহে, এবং তাহা হইতে উৎপন্ন যে তেক্কঃ তাহা অধন প্রকৃতির;—তাহা তমেরই নামান্তর মাত্র। য়ুনানী ও মার্কিন রমণীগণকে দেখিয়া বোধ হয়, ইহারা শিক্ষা ও শিল্পের সাহায়ে আত্মনির্ভরটি আয়ত্ম করিয়াছে, এবং তাহার অফুরূপ তেজটিও পাইয়াছে। ইহাদের মধ্যে এর্নপ রমণী অতি বিরল যাহার ছই চারিটি অর্থকরী বিদ্যাও শিল্প জানা নাই; স্কুতরাং নিজের অয় বা অফ্রান্য অভাব মোচনের ক্রম আনা নাই; স্কুতরাং নিজের অয় বা অফ্রান্য অভাব মোচনের ক্রম অপরের ম্থাপেক্ষাও নাই; তাই ইহারা স্বতঃই একটি স্বাধীন তেলের প্রকৃত অধিকারিণী। আবশ্রক থাক্ক অথবা না থাকুক, ইহারা সকলেই আত্মনির্ভর সক্ষমা। ইহারাই এই সকল জাতির পুরুষের ষথ্যার্থ বল, এবং এই রলেই পুই হইয়া এই সকল জাতির পুরুষের ষথ্যার্থ বল, এবং এই রলেই পুই হইয়া এই সকল জাতির জাতীর বল।

সর্বাত্র এবং সকল ক্ষেত্রেই ইহাদিগকে পুরুষের সমকক সমস্ক্রী কুণে দেখিতে পাই। কি অশ্বপৃষ্ঠে, কি উত্তুক্ত গিরিশুকে, কি উত্তাক্ত जन्मविका छिछ महाममुखवरक, कि मैसूराममागम्य विकानवरम, कि नद्रद्रक्रभाविक ममद्रक्रिक,—हेशामद्र गिक मर्वक याधीन ও निः भक्ष। चारात्र, मार्डिंग, भिन्न, कनारिया, श्रींप्, (ब्राजिय, विकान, पर्मन, व्यक्षमित्रभा, व्याविकात अञ्जि कान ठक्षात्ररे व्यनाउन, रेरापित मधा (मिथिट शहे ना। अञ्चर—প্रजाकित प्राक्ति वा भाषा । अञ्चर अञ्चरक प्राक्ति । महकात्री পाहेम्। (वा कत्रिया महेमा)—উভয়ের ধনে, এই দকল জাভি এত विकिত रहेश्राष्ट्र धवः रहेए एर्। हेरारे धहे नकल काछित्र निकित्र मूल यस, এवः এইথানেই সাধনার গুপ্তবীক উপ্ত হইয়াছিল বলিয়া বোধ হয়।

मक्न (मत्न ও मक्न म्याष्ट्र विश्वर्गमानी আছেন; অञুপাতে ভাঁহাদের সংখ্যা অধিক নহে; আবার অনেক বিবাহিতা রমণী আছেন, यांशामित निष्कत किहूरे कतिवात व्यक्तिमाक रूप ना, श्रुकताः टाँशामित्र कथा भगनात्र मधारे नरह। किन्ह मधाविन्न ७ माधात्रण मध्यमारमञ्जूमधा चारनक प्रमणीरे वाबाउे भार्कात निर्वत कत्रिया,—नमारमाहिक नवां वार्व शाका, मखानामित भिकाम विष्यां किया वाश्या वाश्या वाश्या खक्र वात वहन, ভাহাদের উচ্চশিক্ষার জন্ম এবং সর্বাংশে পারদর্শী করিবার জন্ম স্থানান্তরে প্রেরণ প্রভৃতি নির্বাহ করিয়া থাকেন। স্বামীর উপার্জন वा रहेल, जी, कान अविधि कर्य चीकात्र कतिया क्थवा गृट्ट विभियारे निज्ञानित्र माहार्या मःमात्रिक मञ्चल कत्रिया त्रार्थन। अत्रथ ना इटेल, সম্ভবত: সেই পরিবার ভদ্রগোকের মত থাকিতে পারিত না, পুত্র-ক্ল্যাগণকে যথোচিত শিক্ষা দিতে পারিত না, এবং অনেক বিষয়ে जाशनारमत्र विभिन्न कतिराज रूडेज । जात्रिकारमाय, जकल खनरक नहे করে, ভাহার উপর ধাণগ্রস্ত হইলে প্রতিভাবানও হীনপ্রভ ও তুচ্ছ হ্ইয়া নষ্ট হয়; ইহজীবনে তাহার আর বিকাশের অবসর হয় না; ब्योगिकडा डाहाटक এकেবারে জ্যাগ কুরে, এবং এরূপ পরিবারের পুত্রকন্তাগণ প্রায়ই অবহেলিত হইয়া দরিদ্যের দলপুষ্টি করে। কিন্ত

धरे नकन काजित कम भित्रवात यथा। नक्ष जारा करेट भाव ना ; कांत्रन, निजा ও মাতা উভয়েই উপার্জনক্ষম এবং উভয়েরই সভাবসত চেষ্টা যাহাতে পুত্রকন্যা স্থশিকা লাভ করিয়া সর্বাগুণে সমুজ্জল হয়।

যে দেশের স্ত্রীক্রাতি এতটা সামর্থ্য ধরে সে জাতির পুরুষের সামর্থ্যটা অমুমানের বস্তু, এবং তাহাদের পুত্রকন্তারা কি আদর্শ লইয়া বদ্ধি ত হয়, তাহাও ভাবিবার জিনিস ়ী যাহারঃ আ্বাত্মনির্ভরে নিজের সংসারকে मम्भूर्ग ও উন্নত করিতে পারিয়াছে তাহাদের হৃদ্দেশকল প্রকার বলই বর্ত্তমান;—হতাশের তপ্তস্থান, অবদন্নের আলস্ত -অধীনতার অবদাদ ভাহাদের স্পর্শ করিতে পারেনা। প্রত্যেক পরিবার সচ্চল ও উন্নত হইয়া—গ্রাম সচ্চল ও উন্নত হইয়াছে; প্রত্যেক গ্রাম সচ্চল ও উন্নত হুইয়া, প্রত্যেক নগরকে সচ্চল ও উন্নত করিয়াছে; প্রত্যেক নগর मछ्ल ७ উन्नज रहेन्रा প্রত্যোক প্রদেশকে অবশেষে দেশকে मछ्ल ও উন্নত করিয়া মহাশক্তিতে পরিণত করিয়াছে ;—অপরাপর উন্নতিগুলি ভাহারই অবশুভাবী ফল।

এই সকল জাতির সহিত কথাবার্ত্তায় এইরূপ অম্পষ্ট আভাস পাওয়া ষায় যে, যে স্ত্রীজাতি গণনায় পুরুষ অপেক্ষা অধিক; তাহারা যদি কেবল শোভার সামগ্রী হইয়া---ভোজন, ভূষণ, বিলাগ ও ব্যসন লইয়াই রহিল, তাহা इङ्ग पिट वर्षाधिक मिक निष्ठ इङ्ग এवः प्रमेख वर्षाधिक উন্নতি হইতে বঞ্চিত হইল। কেবল তাহাই নহে—তাহাতে দেশ ক্রমশঃ अखदा अखदा कोर्न इहेश होन जाहे आश हम ; कात्रन, क्रीकां जि अकिं श्वानिकत्र जामवाव श्रेषा थाकिवात ज्ञा कथनरे एष्टे श्रं नारे ।

তাই, পূর্বেই বলিয়াছি, এ সকল জাতির মহাসাধনার অন্তত্তম মূল-মন্ত্র—শক্তিরূপা তেজদৃপ্তা, জোতির্ম্মরী রমণী।

शिकिमात्रनाथ वल्नाभाषाय ।

## थाजिद्यां क

বিনয় পিউকের প্রথম অংশের নাম পাতিমাক্ষ। মহাবগ্গের

(২-৩) মতে পাতিমোক্ষ শক্ষী পভিমুধ শক্ষ হইতে উৎপন্ন;

সকল ধর্মের প্রতিম্পাল্য অগ্র বলিয়া বিনয় পিটকের প্রারম্ভে উলিধিত
নিরম্ভলিকে পাতিমোক্য বলে। এই মতে পালি ভাষার পাতিমোক্য
ও সংস্কৃত ভাষার প্রাতিম্থা এই ছইটি একই শক্ষ। কিন্তু উদীচা
বৌদ্ধ পাতিমোক্য শক্ষের পরিবর্ত্তে প্রাতিমোক্ষ এই শক্ষ দৃষ্ট
হয়। এই মতে, যে নিরম সমূহের প্রতিপালন দ্বারা পাপ সমূহের
প্রতিমোচন বা উদ্ধার হয় তাহাকে প্রতিমোক্ষ বলে। শেষোক্ত
মতটী অধিকতর সমীচীন বলিয়া, পালিভাষার পাতিমোক্য শক্ষীকে
এখানে আমি প্রাতিমোক্ষ এই নামে প্রকাশিত করিলাম।

ভারতবর্ষে অতি প্রাচীন কাল হইতে অমাবন্তা ও পূর্ণিমা পবিত্র

কিথি বলিয়া পরিগণিত হইয়া আনিতেছে। বেদে দর্শপূর্ণমাস বিধির
প্নঃপ্নঃ উল্লেখ আছে। বৌদ্ধলান্ত্রেও অমাবন্তা পূর্ণিমার ভ্রমী
প্রশংসা দৃষ্ট হয়। বৌদ্ধ ভিক্ষ্গণ এই ছই তিথিতে উপবাস ও
অভিসংঘত ভাবে জীবনযাপন করিতেন। অতীত চতুর্দশ দিনের
অম্তিত কর্ম তাঁহারা এই ছই দিনে শরণ করিতেন। 'যদি জ্ঞানপূর্বাক
বা অজ্ঞান পূর্বাক কোন পাপ করিয়া থাকেন, তাহা হইলে সমবেত
ভিক্ষ্মগুলীর নিকট তাঁহারা উহা দেমাবন্তা ও পূর্ণিমার দিন ব্যক্ত
করিতেন। আর যদি তাঁহারা কোন পাপ না করিয়া থাকেন, ভাহা
হইলে মৌনভাবে বিসমা থাকিতেন। দ্রকল ভিক্ষ্ম মধ্যে বিনি প্রধান
ভিনি সংঘনা মকের পদে অধিষ্ঠিত হইতেন এবং উপস্থিত ভিক্ষ্মগুলীর
অস্ত্র্মনিত বিয়া প্রাতিমোক্ষের নিয়মুগুলি পাঠ করিতেন। প্রাতিমোক্ষ
পাঠির প্রণালী নিয়ে লিখিত হইল।

#### নিদান।

প্রথমে সংঘনায়ক ভিক্ষাগুলীকে সম্বোধন করিয়া বলিতেন— হ ভকুগণ, আপনারা প্রবণ করুন। অদ্য অমাবস্থা (বা পূর্ণিমা)। দি আপনাদের স্থোগ হয়, অষ্ট উপবাদ-ত্রত আচঁরণ ও প্রাতিমোক্ষ মার্ত্তি করুন। হে মাননীয় ভিক্ষুগণ, আপনারা আপনাদের পাপ া নিষ্পাপত্ব থ্যাপন করুন, আমি আপনাদের সমক্ষে প্রাতিমাক্ষ পাঠ করিতেছি।" ভিক্ষুগণ উত্তর করিতেন, "আর্মরা সকলেই সাবধানে ও সানন্দে প্রবণ করিতেছি।" তদনন্তর সংঘনায়ক বলিতেন— 'यिनि क्लान शांश कतिया थाकन, थांशन कक्रन; आंत्र यिन क्लान भाभ ना कतिया थारकन, बीतर विमिया थाकून।" कियरकान भरत শংঘনায়ক পুনরায় বলিতেন, "হে মাননীয় ভিক্ষুগণ, আপনাদের মৌনভাব দেখিয়া জানিলাম আপনারা পরিশুদ্ধ আছেন।" তাহার পর সংঘনায়ক বলিতেন,—"ভিক্ষুগণ, একণে আপনাদের নিকট এক একটা প্রশ্ন ভিনবার জিজ্ঞাসা করিব, আপনারা তিনবার প্রশ্ন শুনিয়াও যদি স্থীয় দোষ খ্যাপন করিতে বিমুথ হন, তাহা হইলে আপনারা জ্ঞানপূর্বক মিথ্যা কথা বলার অপরাধের অপরাধী হইবেন। আপনারা জানেন, ভগবান विषया हिन, खान शूर्वक शिथा कथा विषय निष्य विषय यहा यिन है परि। অতএব, হে মাননীয় ভিক্সগণ, আপনারা যদি কোন পাপ করিয়া থাকেন এवः উহা यमि আপনাদের স্মরণ থাকে, খ্যাপন করুন। ইহা দ্বারা व्याननात्रा विस्माधिक इट्रेंट भातिर्दिन, कांत्रण लांक्त्र निक्षे थानिन । করিলে পাপ লঘু হইয়া যায়" ভদনন্তর সংঘনায়ক পুনরাশ্ব विणिटिन "इ माननीय जिन्नुगण जामि जाभनारतंत्र निकि निमान ज्यारि প্রাভিমোক্ষের ভূমিকা পাঠ করিলায়, একণে আপনাদিগের নিক্ট जिलामा कति 'এ विषय जाभनाता भवित जारून कि ना ?'" विकीय

## ्र अिं जिट्यां मः।

বিন্তু পিটকের প্রথম অংশের নাম পাতিমোক্থ। মহাবগ্গের (২-৩) মতে পাতিমোক্থ শক্ষটী পতিমূথ শক্ষ হইতে উৎপর; সকল ধর্মের প্রতিমূথ বা অগ্র বলিয়া কিনর পিটকের প্রারম্ভে উলিখিত নিরমন্ভলিকে পাতিমোক্থ বলে। এই মতে পালি ভাষার পাতিমোক্থ ও সংস্কৃত ভাষার প্রাতিমুখ্য এই ছইটি একই শক্ষ। কিন্তু উদীচ্য বৌদ্ধ গ্রন্থে পাতিমোক্: শক্ষের পরিবর্ত্তে প্রাতিমোক্ষ এই শক্ষ দৃষ্ট হয়। এই মতে, যে নিরম সমূহের প্রতিপালন হারা পাপ সমূহের প্রতিমোচন বা উদ্ধার হয় তাহাকে প্রাতিমোক্ষ বলে। শেষোক্ত মতটী অধিকতর সমীচীন বলিয়া, পান্ধিভায়ার পাতিমোক্থ শক্ষটীকে এখানে আমি প্রাতিমোক্ষ এই নামে প্রকাশিত করিলাম।

ভারতবর্ষে অতি প্রাচীন কাল হইতে অমাবস্থা ও পূর্ণিমা পবিত্র ভিথি বলিয়া পরিগণিত হইয়া অমিসতেছে। বেদে দর্শপূর্ণমাস বিধির পুন:পুন: উরেথ আছে। বৌদ্ধশান্ত্রেও অমাবস্থা পূর্ণমার ভূয়দী প্রশংসা দৃষ্ট হয়। বৌদ্ধ ভিক্ষুগণ এই ছই তিথিতে উপবাস ও অভিসংযত ভাবে জীবনযাপন করিতেন। অতীত চতুর্দশ দিনের অফুটিত কর্ম তাঁহারা এই ছই দিনে শ্বরণ করিত্বেন। খদি জ্ঞানপূর্বক বা অজ্ঞান পূর্বক কোন পাপ করিয়া থাকেন, তাহা হইলে সমবেত ভিক্ষমগুলীর নিকট তাঁহারা উহা মেমাবুসা ও পূর্ণিমার দিন ব্যক্ত করিতেন। আর যদি তাঁহারা কোন পাপ না করিয়া থাকেন, তাহা হইলে মৌনভাবে বসিয়া থাকিতেন। গ্রকণ ভিক্ষমগুলীর ভিনি সংখনায়কের পদে অধিষ্ঠিত হইতেন এবং উপস্থিত ভিক্ষমগুলীর অমুমতি লইয়া প্রাতিমাক্ষের নিয়মুগুলি পাঠ করিতেন। প্রাতিমোক্ষ পাঠের প্রণালী নিয়ে লিখিত হইল।

#### নিদান।

প্রথমে সংঘনায়ক ভিক্ষাওলীকে সম্বোধন করিয়া বলিভেন—"ছে ভিক্পাণ, আপনারা প্রবণ করুন। অদ্য অমাবস্থা (বা পূর্ণিমা)। यिन जाननामित ऋर्यान इम, जर्छ উপবাস-ত্রত আর্টরণ প প্রাতিমাক আর্ত্তি করুন। হে মাননীয় তিক্ষুগণ, জাপনারা আপনাদের পাপ বা নিষ্পাপত্ব খ্যাপন করুন, আমি আপনাদের সমক্ষে প্রাতিমোক্ষ পাঠ করিতেছি।" ভিক্ষুগণ উত্তর করিতেন, "আর্মরা সকলেই সাবধানে ও সানন্দে প্রবণ করিতেছি।" তদনন্তর সংঘনায়ক বলিতেন— "यिनि क्लान পां कित्रिया थाकिन, थां भन कक्रन; आंत्र यिन कान পাপ ना कतिया थाटकन, बीत्रस्य विमया थाकून।" किय्नदकान 'পরে সংঘনায়ক পুনরায় বলিতেন, "হে মাননীয় ভিক্ষুগণ, আপনাদের মৌনভাব দেথিয়া জানিলাম আপনারা পরিশুদ্ধ আছেন।" তাহার পর সংখনায়ক বলিতেন,—"ভিক্ষুগণ, একণে আপনাদের নিকট এক একটা প্রশ্ন ভিন্রার জিজ্ঞাদা করিব, আপনারা তিনবার প্রশ্ন শুনিয়াও যদি স্থীয় দোষ খ্যাপন করিতে বিমুখ হন, তাহা হইলে আপনারা জ্ঞানপূর্বক মিথ্যা कथा वनात्र व्यथतार्थत व्यथतार्थी इट्रेयन। व्याथनात्रा कारनन, जगवान वित्राष्ट्रि, छानशूर्वक शिथा कथा विलाय निष्क्रत्रहे यह! यनिष्ठे षष्टे। অতএব, হে মাননীয় ভিকুগণ, আপনারা যদি কোন পাপ করিয়া থাকেন এवः উহা यिन व्याननारमञ्ज्ञ अञ्जन शीरक, शानन कक्ना हेश द्वात्रा व्याननात्रा विस्माधिक इहेटक नात्रियन, कात्रन लाटकत्र निक्षे यानन করিলে পাপ লঘু হইয়া যায়" তদনন্তর সংঘনায়ক পুনরায় विवार्डन "हि माननीय जिन्नुगण जामि जाननार्तित्र निक्छ निमान जर्थार श्राहित्यात्कत्र ज्ञिका भाठ कत्रिमाय, এक्टन जानमामिरगत्र जिक्छे किछाना कति 'এ विषय व्यापनाता पविज व्याप्त कि मा ?" विकास

বার জিজ্ঞাসা করি "এ ধিষয়ে আপনারা পবিত্র আছেন কিনা ?" তৃতীয়বার জিজ্ঞাসা করি "এ বিষয়ে আপনারা পবিত্র আছেন কি না ?" তিনবার প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিবার পর সংঘনায়ক পুনরায় বলিতেন "হে याननीय जिक्नान, जाभनाता नीतरव विषया जारहन, रेश दातारे वृक्षिणाम আপনারা এ বিষয়ে পবিত্র আছেন।"

উল্লিখিত প্রশ্ন প্রণাণীর নাম নিদান বা প্রাতিমোক্ষের ভূমিকা।

#### · পারাজিক ধর্ম।

নিদান পাঠের পর সংঘনায়ক পারাজিক ধর্ম্মের নিয়ম পাঠ कतिर्द्धन। পারাজিক ধর্মের চারিটী নিষ্ম বিঅমান আছে, যথা—

- ১। যিনি ভিক্ষুত্রত অবলম্বন করিমাছেন, এবং পরে উহা ভ্যাগ করেন নাই বা ভিক্সুত্রত পালনের অসামর্থ্য প্রকাশ করেন নাই, এরূপ ভিক্ষাত্রই ব্যভিচার হইতে বিরত হইবেন। যে ভিক্ষু ঈষং পরিমাণেও উহাতে রত হইয়াছেন, তির্নি পারাজিক পাপে অপরাধী ও সংঘ ररेट विठ्राउ।
- २। य जिन्नु श्राम वा जात्रवा इहेट जान्छ वञ्च शहन कतिशाहिन, जिनि भाता किक भारभ जभता धी এवः मः घ इट्रें क क्षेत्र। "जम्ह वस्त्र श्रहन" हेहात कर्य होया। य वस গ্रहन कतित्व गृशैजादक देवाका होत्र विनिया शुक्र करत्रन व्यथवा উহাকে वध, वक्षन वा निर्वामन करत्रन, এवः याश श्राह्ण कतित्व लांक छात्र, निर्द्धार्ध, मूर्थ वा अमाधु विनिम्ना निम्नि इम्र ; ध्यमन वस्त्र मार्टित शहराक है "कार्नित वस्त्र शहर" वा रिवारी वना यात्र।
- ०। य जिक्क ज्ञानभूर्वक नईहिजा कर्त्रनं; वा कान वाजित्र विकृष्क निरम्राक्षिण कत्रिवात्र निभिन्न नद्रमाजूरकत्र व्याव्यव करत्न, व्यथवा यिनि "हर वस्का, এই পাপপূর্ব জঃখময় জীবনে ভোমার লাভ कि ?

যুত্যুর প্রশংসা করেন বা আত্মহত্যার প্রলোভন জন্মান; তিনি পারাজিক পাপের অপরাধা এবং সংঘ হইতে এই।

8। (य जिक्रू व्यालोकिक क्रमण लाज नाँ क्रिशां वर्णन चालोकिक क्रमण नाज कतियाह्न; এবং यिनि "আমি এইরপে জানি, এইরপে প্রত্যক্ষ করি" ইত্যাদি প্রকারে আহত জ্ঞান লাভ করিয়াছেন বলিয়া প্রচার করেন; তিনিও পারাজিক পাপে অপরাধী এবং সংঘ হইতে ভ্ৰষ্ট।

উদ্ভ চারিটী পারাজিক ধর্মের উল্লেখ করিয়া সংমনায়ক সমবেত ভিক্ষওলীকে বলিতেন—"মাননীয় ভিক্পাণ! আপনাদিগের নিকট পারাজিক ধর্ম পাঠ করিলাম, যিনি ইহার একটীও উল্লভ্যন করিয়াছেন, তিনি পারাজিক পাপে অপরাধী এবং সংঘ হইতে ভ্রষ্ট। হে ভিক্ষুগণ, উল্লিখিত চারিটী পারাজিক বর্ষা সম্বন্ধে আপনাদিগকে জিজ্ঞাদা করি আপনারা এ বিষয়ে পরিত্র আছেন কি না ? দ্বিতীয়বার আপনাদিগকে জিজ্ঞাদা করি এ বিষয়ে আপনারা পবিত্র আছেন কি না ? ভৃতীয় বার আপনাদিগকে জিজ্ঞাদা করি এ বিষয়ে অপিনারা পবিত্র আছেন কিনা ?

কিয়ৎকাল অপেকা করিয়া থাকিবার পর, সংঘনায়ক বলিয়া উঠিতেন, "হে মাননীয় ভিক্ষুগণ, আপনাদের মৌনভাব দেখিয়া বুঝিলাম আপনার। এ বিষয়ে পবিত্র আছেন।"

উদ্ধৃত প্রশোত্তর প্রণালীর নাম পারাজিক পাঠ।

### **मश्चामिद्धिय ।**

পারাজিক ধর্ম পাঠ করিবার পর সংঘনায়ক সংঘাদিশেষ ধর্ম পাঠ कत्रिका। সংঘাদিশেষ ধর্মের ১৩টা নিয়ুম ছিল, তাহা সংক্ষেপে নিছে উলিখিত হইল-- '

<sup>\*</sup> আমার বোধ হয় সংস্কৃতে ইহাকে সংঘাতিশেব বলে। দ=ত, যেমন গোদম= গোত্ৰ।

- ः । निजावशाम जिल्ल जा जमरम हेन्हा भूक्ति अकार्गाहानि बाम। जिक् मः शामित्यय लात्ल जनताथी रून।
- २। य जिक् पृषिज जलः कद्रांग कान जीलाकित रूखधाद्रण, किमलार्ने वा अञ्च कान अङ्ग ल्लार्न करत्रन, जिनि मः चारित्रभ भारित्र ज्यभवाधी।
- ৩। যে ভিক্ দৃষিত অন্ত:করণে হুষ্টবাক্ প্রয়োগ দারা কোন खीलाकरक मस्याधन क्रिया উহার কামোত্তেজন করেন, তিনি সংঘাদি-(শय भारभ ज्यभराधी।
- ৪। যে ভিক্সু দূষিত অন্তঃকরণে কোন স্ত্রালোককে শুনাইবার निभिष्ठ वाज्ञितात्रत्र कथा উল্লেখ कत्रन, जिनि मःचानि भाष व्यभन्नाधी !
- ে। যে ভিকু জ্রা ও পুরুষের পরস্পর আসক্তি উৎপাদনের সহায়তা करत्रम, जिनि मःचानित्मिष পात्भ जानत्राशी।
- ৬। যে ভিক্ ভিকা করিয়া উপাদান সংগ্রহ করত: নিজের ব্যবহারের নিমিত্ত কুটীর নির্মাণ করিতে চাহেন, তিনি খেন উক্ত कुछीदबब रिष्णा । विखादबब भित्रमान भूट्य निकाबन करबन। উक् কুটীষ্টের দৈর্ঘা ১২ বিভক্তি\* অর্থাৎ ৬ হাত ও বিস্তার ৭ ব্লিভস্তি অর্থাৎ ্ঞা• হাত হওয়া উচিত। যে স্থানে কুটীর নির্মিত হইবে ঐ স্থানের চ্ছুদিকে যথেষ্ঠ পরিষাণে অনাবৃত ভূমি থাকিৰে এবং **ঐ স্থা**নে বর্তমান कारम वा ভविद्यार कारम रकान विश्वस्त्र मखावना আছে कि ना जाश निकायन कतिवाब निभिन्न जिन्नेम् अमीरक जास्वान कतिरक इटेरव। विभि जिक्स अमीरक जास्वान मा कतिया, ह्यू किरक ज्ञानुक जूमि ना

<sup>\*</sup> অধুনা লক্ষ্মীপের ভিক্সণ বলেন এক বিভক্তির পরিমাণ বুলদেবের পাদচিহ্নের जूना। এই ভাবিয়া জাহারা বলেন এক বিতল্পির পরিমার্ণ - চারি ছাত।

वाथिया अथवा উপরি লিখিত পরিমাণের অপেক্ষা বৃহত্তর করিয়া কুটীর निर्माण कतिरवन ; जिनि मःशामिष्णिय পাপে অপরাধী হইবেন।

- ৭। যে ভিকু নিজের ও পরের ব্যবহারের নিমিত্ত কোন স্থানে একটা স্থুরুৎ গৃহ নির্মাণ করিতে চাহেন, তিনি যেন উক্ত গৃহের চতুদ্দিকে যথেষ্ট অনাবৃত ভূমি রাথিয়া দেন এবং উক্ত স্থানটী পূর্কেই ভিক্ষাওলীর অনুমোদিত করিয়া লয়েন। তিনি যদি এই নিশ্মের वािकिय करत्रन, जार। रहेटन मेर्शितिटनैकिशा्त अनतारी रहेटवर्ग।
- ৮। यान कान जिक्न भाक्ष्य, नेर्या वा क्यांक्व वर्षा अभन्न कान ভিক্ষুর বিরুদ্ধে পারাজিক অপরাধের অভিযোগ আনয়ন করেন এবং পরবর্ত্তী কালে প্রকাশ পায় যে উক্ত অভিযোগ ভিত্তিহীন—তাহা হইলে त्मरे जिक् मः चामित्मम भारभ जभवाधी रहेरवन।
- ন। যে ভিক্ষু পারুষ্ট, ঈর্ষ্যা বা ক্রোধ বশতঃ পারাজিক অপরাধের অভিযোগ আনমন করিয়া অনু ভিক্ককে উপক্রত করেন এবং প্রমাণ अक्राप क्रे এक है। अश्राजनीय बिस्ट्यूज উল্লেখ করেন এবং পরবর্তী-কালে প্রকাশিত হুয় যে উক্ত বিষয় গুঁলির সহ উক্ত অভিযোগের কোন मचक नारे, मिरे जिक्रू मःचानित्मिय भार्भ जभदाधी।
- ১০। यमि कान ভিক্ कान मध्यमाय्यत मध्य एकम मः पठेन कतिवात्र निमिख विচরণ করেন, অথবা यद्यात्रा কোন সম্প্রদারের মধ্যে एक मः चिठि इत्र এমন विষয়ের প্রতি লোকের দৃষ্টি আকর্ষণ করেন, তাহা হইলে সমাপত্ত ভিক্ষওলী উক্ত ভিক্তকে বলিবেন "মহাশ্র, माच्धानात्रिक (जन मःघठेन कत्रिया (विकारेटवन ना, यहात्रा (जन मःघठेन इम् अक्रभ विवरम् व श्रिक लाक्ति मृष्टि आकर्षण कतिर्वन नाः , महानम्, উक्त मन्द्रातात्रत প্রতি **मथा द्वांभन क**रून। मन्द्रातात्रत लाकमकल পদ্মপারের প্রতি নিবিরোধে ও বদুভাবে থাকিলে স্থুথে বাস করিতে नादन"। यदि किक्मथनी कर्ड्क जिनदात डेनिनिट स्ट्रेगांच के किक्

माध्यमात्रिक (जम मःघष्टेन इट्रेज निवृञ्ज ना इन, जाहा इट्रेल जिनि मःघामिष्मिय পাপে অপরাধী।

- ১১। যদি কোন ভিক্স সাম্প্রদায়িক ভেদ সংঘটন করিয়া বেড়ান, এবং অপর এক, ছই বা তিনজন ভিক্স উক্ত ভিক্সর সহায়তা করেন, তাহা হইলে এই সহায়কারী ভিক্সগণও সংঘাদিশেষ পাপে অপরাধী হইবেন।
- ১২। যদি কোন ভিক্ সমবেত ভিক্ষ্মগুলীর বাক্যে কর্ণপাত না করেন, এবং বলেন, "হে মহাশয়গণ, আপনারা ভালই হউক মন্দই হউক আমাকে কোন কথা বলিবেন না, আমিও ভালই হউক বা মন্দই হউক আপনাদিগকে কোন কথা বলিব না, হে মহাশয়গণ, আপনারা অফুগ্রহ করিয়া আমার বিষয়ে বাঙ্নিপত্তি করিবেন না"; তাহা হইলে ঐ ভিক্কে সমবেত ভিক্ষগুলী এইরপ ভারে উত্তর দিবেন, "হে মহাশয়, আপনি তুর্বচ হইবেন না। আমরা যাহাতে আপনার সহ কথা বলিতে পারি এইরপ ভাবে অবস্থিত হউন, মহাশয় ভিক্সগণের সহ ধর্মাহসারে কথা বলুন। ভিক্সগণও ধর্মাহসারে আপনার সহ কথা বলিবেন, পরস্পরের কথালাপ ও পরস্পরের সহায়তায়ই তথাগতের ধর্ম-পরিয়দ্ অগতে প্রতিষ্ঠালাভ করিয়াছে, অত এব, মহাশয়, য়াহাতে আমরা আপনার সহ কথা বলিতে পারি এরপ কর্মন"। যদি সেই ভিক্ক ভিক্সগণীয় কর্জ্ক এইরপে তিন বার উপদিষ্ট হইয়াও তাঁহাদের কথায় কর্ণগাছ না করেন, তাহা হইলে তিনি সংঘাদিশেষ পাপে অপরাধী।
- ১৩। যদি কোন ভিক্ কোন জনপদের নিকটে বাস করিয়া পাপময় জীবন যাপন করেন, এবং তাঁহার ছফীর্ত্তি সমূহ লোকের দর্শন ও শ্রবণ গোচর হয়, তাহা হইলে সমীপত্ত ভিক্ষগুলী সেই ভিক্কে রিলিবেন "মহাশয়, আপনার জীবন পাপময়; জাপনার ছফীর্তি কোকের দর্শন ও শ্রবণ গোচর হইরাছে; মুহাশয়, অহুগ্রহ করিয়া, এছান ভ্যাপ

করুন, এথানে আপনি অনেক দিন বাস করিয়াছেন, আর এথানে আপনার বাস করিবার প্রয়োজন নাই"। মদি, ভিকুমণ্ডলীর এই বাক্য শ্রবণ করিয়া সেই ভিক্ষু প্রতিশোধ লইবার জন্ম বলেন, "এখানকার ভিক্ষাওলী রাগ দ্বেষ ও মোহে মগ্ন আছেন, পাছে ইহাঁদের ছফীর্জি প্রকাশ পায় এই ভয়ে ইহাঁরা কাহাকে ও এথান হইতে নিদ্যাশিত করিয়া দিতেছেন, কাহাকেও বা বাধ্য ক্রিয়া রাথিতেছেন; ভাহা হইলে সেই ভিক্ষককে সমবেত ভিক্ষমগুলী এইরূপ ভাবে উত্তর দিবেন—"হে মহাশয়, এথানকার ভিক্ষমণ্ডলী রাগ দ্বেষ ও মোহে মগ্ম আছেন এমন কথা বলিবেন না, তাঁহারা স্বীয় তৃষীতি গোপন করিবার জন্ম আপনাকে নিফাশিত করিতেছেন—এমন কথা বলিবেন না; মহাশয়, আপনার জীবন পাপময়, আপনার হুষীত্তি সমূহ লোকের দর্শন ও প্রবণ গোচর হইয়াছে, অভএব মহাশয় অমুগ্রহ করিয়া এ স্থান ত্যাগ করুন, এথানে আপনি অনেক দিন বাস ক্ররিয়াছেন, আর আপনার এথানে বাস করিবার প্রয়োজন নাই"। যদি দেই ভিক্ সেই সমবেত ভিক্ষভণী কর্ত্ব তিনবার উপদিষ্ট হইয়াও তাঁহাদের কথা জনুসারে কার্য্য না करत्रन, তाহा इहेटन তিনি मः चामिटनय পাপে অপরাধী হইবেন।

উল্লিখিত ত্রেরাদশ সংঘাদিশেষ ধর্ম পাঠ করিয়া সংঘনায়ক ভিকু-ম ওলীকে জিজামা কুরিতেন—"হে মহাশমগণ, আপনারা এ বিষয়ে পবিত্র ভাছেন কি নাঁ?" দ্বিতীয়বার জিজ্ঞাসা করিতেন—"হে মহাশয়গণ এ বিষয়ে আপনারা পরিত্র আছেন কি না ?" ভৃতীয়বার জিজ্ঞায়া করিতেন—"হে মহাশয়গণ এ বিষয়ে আপনারা পবিত্র আছেন কি ন: ?"

किय्र काम व्याप्तका कतियात पत्र मश्चनायक विमया छिटिएका, "मानमोत्र जिक्गाराद स्थोनजार प्रिशा द्वियाम जाहात्रा अ विस्त्र शिवा चाट्याः

#### · অনিয়ত ধর্ম।

সংঘাদিশেষ ধর্ম পাঠের পর সংঘনাত্রক অনিয়ত ধর্ম আবৃত্তি করিতেন। অনিয়ত ধর্ম হইটী; যথা—

- ১। যদি কোন ভিক্সু, বাভিচারের পক্ষে উপযোগী কোন নির্জন স্থানে কোন স্ত্রীলোকের দহিত এক আসনে উপবেশন করেন; এবং বিদি অপর কোন বিশ্বস্ত স্ত্রীলোক তাঁহাকে ঐরপ উপবিষ্ট দেখিতে পাইয়া তাঁহার বির্কদ্যে অভিযোগ আনয়ন করে; এবং সেই ভিক্সু যদি স্বীকার করেন যে তিনি স্ত্রীলোকের সহ এক আসনে উপবেশন করিয়াছিলেন; তাহা হইলে সেই বিশ্বস্ত স্ত্রীলোক তাঁহাকে পারাজিক, সংঘাদিশেষ ও প্রায়শ্চিতীর এই ত্রিবিধ পাপের মধ্যে যে পাপে অপরাধী বিশ্বয়া মনে করিবে, তিনি সেই পাপে অপরাধী সাব্যস্ত হইবেন।
- ই। যদি কোন ভিক্ন ব্যভিচারের পক্ষে অমুপ্যোগী কিন্তু চ্টবাক্ প্রয়োগের পক্ষে উপযোগী কোন অনিভ্ত তানে কোন দ্রীলোকের সহ এক আসনে উপবেশন করেন; এবং যাদ অপর কোন বিশ্বস্ত দ্রীলোক তাঁহাকে ঐরপ উপবিষ্ট দেখিরা তাঁহার বিরুদ্ধে অভিযোগ আনরন করে; এবং যদি ঐ ভিক্ষু স্বীকার করেন যে তিনি স্ত্রীলোকের সহ এক আসনে উপবেশন করিয়াছিলেন; তাহা হইলে সেই বিশ্বস্ত দ্রীলোক তাঁহাকে সংঘাদিশেষ ও প্রায়শিচ্তীয় এই দ্বিষি পাপের মধ্যে যে পাপে অপরাধী বলিয়া মনে ক্রিবে, তিনি সেই পাপে অপরাধী সাব্যস্ত হইবেন।

উল্লিখিত হইটী অনিরত ধর্ম আবৃত্তি করিবার পর সংঘনায়ক সমবেত ভিক্সগুলীকে সম্বোধন করিয়া বলিতেন 'ক্ষেমাননীয় ভিক্সগণ, আপনাদিগের নিকট হইটা অনিয়ত ধর্ম পাত করিলাম, আপনারা এ বিষয়ে পবিত্র আছেন কি নাণ্" দ্বিতীয়বার তিনি ভিক্লাসা করিতেন

"হে মাননীয় ভিক্ষুগণ, আপনারা এ বিষয়ে পবিত্র আছেন কি না ?" তৃতীয়বার জিজ্ঞাদা করিতেন "হে মাননীয় ভিক্ষুগণ আপনারা এ বিষয়ে পবিত্র আছেন কি না ?"

किय़ एकान जरभका कतिया मः घनायक विनया উঠিতেন "याननीय ভিক্ষুগণের মৌনভাবে দেখিয়া বুঝিলাম ইহাঁরা এ বিষয়ে পবিত্র আছেন।"

### নিঃসগীয় প্রায়শ্চিতীয় ধর্ম্ম 4

অনিয়ত ধর্ম পাঠের পরে সংঘনায়ক। নিঃস্গীয় প্রায়শ্চিতীয় ধর্ম পাঠ করিতেন। উহাতে ত্রিশটা নিয়ম বিভ্যমান ছিল; যথা—

- ১। ভিক্সাণ তিনটী চীবর ও কঠিন দুষা\* ব্যতীতও একথানি অতিরেক চীবর বা অতিরিক্ত বস্ত্র দশ দিনের জন্ম রাখিতে পারেন। ষিনি এই অতিরিক্ত • বস্ত্র দশ দ্রিনের অপেকা অধিক দিন রাখেন, তিনি নিঃসর্গীয় প্রায়শ্চিত্তীয় পাপে অপরাধী।
- ২। যে ভিক্ষু ত্রিচীবর ও কঠিন দৃষ্য গ্রহণ করিয়াছেন তিনি যেন এক রাত্রির জন্মও উক্ত ত্রিচীবর পরিত্যাগ না করেন। যে ভিক্ সমবেত ভিকুমণ্ডলীর অমুমতি ব্যতীত ত্রিচীত্র পরিত্যাগ করেন, তিনি निःमगीय প্রায়শ্চিতীয় পাপে অপরাধী।
- ৩। যদি কোন ব্যক্তি কোন ভিক্সকে অসময়ে কয়েক থণ্ড বস্ত্ৰ প্রদান করে তাহা হইলে উক্ত ভিক্সুথেন উক্ত বস্ত্র দারা নির্দিষ্ট পরিমাণ

<sup>\*</sup> जिठीवत-मञ्चारि, असर्वामक ও উर्द्धेतामक এই जिविध वरत्न नाम जिहीबस । ভিকুমাত্রই এই ত্রিচীবর ধারণ করিবেন 🖢

কঠিন দুষ্য-এক দিন ও এক রাত্রির মধ্যে প্রস্তুত অর্থাৎ সদ্যোদিন্দ্রিত কার্শাস वश्राक कठिन पृशा वरण। यणि कोन गृर्ष अकार्श्वक कोन । एक्क अक्षांवि कतिन पूर्वा अपान करत्रन ठाश् इहेरल एक किन्द्र छह। अहन कतिराज भारत्रन । किन्द्र अह দান ও প্রহণ ক্রিয়া অন্ততঃ পাচজন সমবেত ভিকুর সমক্ষে নিপাধ হওয়া আৰম্ভ ।

প্রবিদ্ধন।" যদি তিনবার এইরূপ বলায় সেই পরিচারক তাঁথাকে পরিচ্ছদ দেন, তাহা হইলে উত্তম। কিন্তু যদি তিনবার প্রার্থনা করিয়াও উক্ত ভিক্ষু পরিচ্ছদ না পান—তাহা হইলে তিনি আর তিনবার উক্ত পরিচারকের নিকট বাইতে পারেন, কিন্তু এ সময়ে কিছু না চাহিয়া তিনি যেন উহার নিকট মৌনভাবে দাঁড়াইয়া থাকেন। এইরূপ দাঁড়াইয়া থাকিয়া যদি পরিচ্ছদ পান, উত্তম। কিন্তু যদি ইহাতেও পরিচ্ছদ না পাইয়া'তিনি উক্ত পরিচারককে পীড়াপীড়ি করেন, তাহা হইলে তিনি নিঃসর্গীয় প্রায়শ্চিতীয় পাপে অপরাধী ১ইবেন।

উক্ত ভিক্ষু যদি উক্ত পরিচারকের নিকট হইতে পরিচ্ছদ আদায় করিতে একাস্ত অসমর্থ হন, তাহা হইলে তিনি যেন স্বয়ং যাইয়া বা লোক প্রেরণ করিয়া মূল্যদাতাকে বলেন "মহ্যশন্ন, ভিক্ষুর জন্ম অপনি বে পরিচ্ছদ মূল্য পঠোইয়াছিলেন, সে স্ক্যে উক্ত ভিক্ষুর কোন উপকার হয় নাই, মহাশন্ন সাবধান হউন, আপনার অর্থ যেন বুথা নষ্ট না হয়।"

- ১১। যে ভিক্সু শয়ার অভিরণে রেশম ব্যবহ্রার করেন, তিনি নিঃসর্গীয় প্রায়শ্চিত্তীয় পাপে অপরাধী হইবেন।
- ১২। যে ভিক্ষু শধ্যার আস্তরণে কেবল ছাগকেশ নির্মিত রুষ্ণ পশ্ম ব্যবহার করেন, তিনি নিঃস্গীয় প্রায়শ্চিতীয় পাপে অপ্রাধী হইবেন।
- ১০। ন্তন আন্তরণ নির্মাণকালে ভিরুগণ ছাগকেশ নির্মিত ক্ষা পশম গ্রহভাগ, খেত পশম এক ভাগ এবং ধূদর পশম এক ভাগ ব্যবহার করিবেন। যদি কোন ভি কু ন্তন আন্তরণ নির্মাণ কালে এরপ না করেন, তাহা হইলে, তিনি নিঃস্গাঁয় প্রায়শিজীয় পাপে অপরাধী হইবেন।
- ১৪। নৃতন আন্তরণ নির্মাণ করিয়া উহা ছয় বংসর বাবহার করিতে হইবে। যদি কোন ভিকু নৃতন আন্তরণ নির্মাণ করিবার পর

निर्माण करतन, তारा रूरेल ँगराक निःमगीय आयन्छि । भार অপরাধী হইতে হইবে।

- ১৫। যথন কোন ভিক্ষু উপবেশনের নিমিত্ত নূতন আস্তরণ নির্মাণ করিবেন তথন তিনি যেন পূর্বভন আন্তরণের চতুদিক হইতে এক বিভক্তি পরিমাণ স্ত্র কাটিয়া লয়েন। যিনি ইহা না করিবেন, जिनि निः मर्गीत প্রায় শিচ জীয় শিপে অপর शी इইবেন।
- ১৬। যদি কোন ভিক্ বিদেশে যাত্রাকালে গুখমধ্যে ছাগের **উ**র্ণা (পশম) প্রাপ্ত/হন, তাহা হইলে তিনি ইচ্ছা করিলে উহা গ্রহণ করিতে পারেন; এবং যদি ভাঁহার সঙ্গে কোন বাহক না থাকে ভাহা হইরে তিনি উহা স্বয়ং হস্তে করিয়ং তিন যোজন পথ লইয়া যাহতে পারেন। দঙ্গে বাহক না । থাকিলেও তিনি যদি উহা তিন যোজনের অপেকা অধিক দূর বহন করেন, তাহা হহলে তাঁহাকে নিঃসগীয় প্রায় শিত্তায় পাপে অপরাবী ইইতে হইবে।
- ১৭। যদি কোন ভিক্স ছাগের ইর্ণা (পশম) কোন নিঃসম্পর্কীয় ভিকুণী দারা ধেতি, রঞ্জিত বা মদিত করিয়া লয়েন, ভাহা হইলে তাঁহাকে নিঃসগীয় প্রায়শ্চিত্তীয় পাপে অপরাধী হইতে হইবে।
- ১৮। যদি কোন ভিক্ষু স্বৰ্ণ বা রৌপ্য স্বয়ং গ্রহণ করেন অথবা নিজে গ্রহণ করিবেন বলিয়া অন্তকে উহা লইতে বলেন বা স্বস্থের 'নিকট গচ্ছিত রাথেন, তাহা হুংলে তাঁহাকে নিঃসগাঁর প্রায়শ্চিন্তীয় भार्थ अभवावी इक्ट इहर्व।
- ১.। যে সকল ব্যবসায়ে রোপ্য ব্যবহৃত হয় এরূপ কোন ব্যবসায়ে य'न (कान जिक्क नियुक्त इन जारा इहेल जाहारक निःमगीय आयुन्धिकीय পাপে অপরাধী হইতে হইবে।
- २०। यति कान जिक्न कान श्रकांत्र कात्र विकास नियुक्त इन, जाहा इहेटन छाहारक निःमगीय श्रायिष्डीय भार्ष जभताधी हहेर्छ हहेर्व।

- ২০। দশ দিন পর্যান্ত এ ০টা অতিরিক্ত ভিক্ষাপাত্র রাখা যাইতে পারে; যে ভিক্ষু দশ দিনের অধিক কাল উহা রাথেন তাঁহাকে নিঃসর্গীর প্রামশ্চিত্তীয় পাপে অপরাধী হইতে হইবে।
- ২২। ভিক্ষণ ভিক্ষাপাত্র অস্ততঃ পাঁচ স্থানে ভগ্ন না হইকে ত্যাগ করিবেন না; যে ভিক্ষ্ অস্ততঃ পাঁচ স্থানে ভগ্ন হয় নাই এমন ভিক্ষা-পাত্র বিনিময় করিয়া একটী নৃত্তন ভিক্ষাপাত্র\* গ্রহণ করেন। তাঁহাকে নিঃসগীয় প্রায়শ্চিত্তীয় পাণে অপরাধা হইতে হইবে।
- ২০। ভিক্সগণ প্রীজিতাবস্থায় দ্বত, মাথন, তৈল, মধু ও গুড় ভৈষজারূপে বাবহার করিতে পারেন; এবং সাত দিন পর্যান্ত উহ সঞ্চিত রাথিয়া ভোগ করিতে পারেন; দিনি সাত দিনের অপেক্ষা অধিককাল উহা রাখেন তাঁহাকে নিঃস্গীর্য প্রাদৃশ্চিতীয় পাপে অপরাধী হইতে হইবে।
- বর্ষা পাতৃর জন্ত পরিচ্ছদের উপকরণ সংগ্রহ করিবেন; গ্রীম্ম পাতৃ অতিবাহিত হইবার অক মাদ পূর্বেই তি উপকরণ সংগ্রহ করিবেন; গ্রীম্ম পাতৃ অতিবাহিত হইবার অর্ক মাদ পূর্বেই তা উপকরণ লারা পরিচ্ছদ নির্মাণ করিবেন এবং উক্ত পরিচ্ছদ পরিধান করিবেন; যদি কোন ভিক্ এক মাদের অপেকা অধিক পূর্বে উপকরণ সংগ্রহ অথবা অর্কমাদের অপেকা অধিক পূর্বে বর্ষার উপযোগী পরিচ্ছদ নির্মাণ বা প্রিধান করেন, তাহা হইবে তাহাকে নিংস্গীয় প্রায়শ্চিতীয় পাপে অপরাধী হইতে হইবে ।
- ২৫। যদি কোন ভিক্ অভা কোন ভিক্ককে পরিচ্ছদ প্রদান করেন এবং পরবর্ত্তী কালে ক্রুদ্ধ বা অসম্ভূষ্ট হইয়া উহা স্বয়ং বা অভ্যন্ত্রা

ক বনি দেই ভিক্ বিনিমরে নৃতন ভিকাপাত প্রাপ্ত হন, তাহা হইলে সমবেও ভিক্ষণতা উহা তাহার নিকট চইতে লইয়া, উঠা ভিক্মণতার মধ্যে যে নিক্ট্রতম ভিকাপার আছে ভাষা প্রদান করিবেন এবং বলিবেল "হে ভিকো, এই আপ্রাণমার পাত্র,

का िया निरम्न, তाहा इटेटन छाँहारक, निःमशीय প্রায়শিউ। य অপরাধী হইতে হইবে।

२७। यनि (कान जिक्क काशांत अ निक हे हहेर ज निरक्षत ज्ञा स्वतः স্ত্র চাহিয়া লয়েন এবং পরে তম্ভবায়দারা উক্ত স্ত্তের বস্ত্র বয়ন করেন, তাহা হইলে তাঁহাকে নিঃদর্গীয় প্রায়শ্চিত্তীয় পাপে অপরাধী হইতে इहरव।

২৭। যদি কোন গৃহপতি বা গৃহপত্নী কোন ভিক্ষ্কে একটা পরিচ্ছদ প্রদান করিবার অভিপ্রায়ে কোন তন্তবায়কে বস্ত্র বয়ন করিতে বলেন; এবং উক্ত ভিক্ষু যদি গৃহস্থ কর্তৃক প্রাথিত হইবার পুর্বেই তন্তুবায়ের নিকট যাইয়া বলেন—"ভাই, এই বস্ত্র আমারই জন্ম প্রস্তুত হইতেছে। ভাল করিয়া ইহার দৈর্ঘা ও বিস্তার ঠিক করিও, ইহা ছেন্ মাস্থ হয়, সূত্রগুলি যেন সুরলভাবে বিগ্রস্ত হয়। ভাই ভূমি যদি আগার পরিচ্ছদটি ভাল করিয়া প্রস্তুত কর, কোন সময়ে আমি ভোমার্র কিছু উপকার নিশ্চয় করিব"—এবং সেই ভিক্ষ্ যদি এইরূপ থলিয়া উক্ত ভদ্তবায়কে ভিকাপাত্রে লব্ধ বস্তুমাত্রও প্রদান করেন, ভাছা 'হইলে তাঁচাকে নিঃসগীয় গায়শ্চিতীয় পাপে অপবাধী হইতে হইবে 🕡

२৮। यमि कार्डिको পृश्यात \* >० मिन পूर्वि कान जिक्क कर् অত্যেক+ চীবর প্রদাম কবে তাহা হইলে তিনি উহা ( वर्षा ) পরিচ্ছদ

<sup>»</sup> আষাড় বা শ্রাবণ মাদের পূর্ণিমা হইতে কার্ত্তিক মাদের পূর্ণিমা পধ্যন্ত s মাদ বা ৩ মাসকে প্রবারণা কাল বলে। এই জন্ম কার্তিকী পূর্ণিমাকে কার্ত্তিকী চতুর্ম औ পূৰিমাও বলে।

<sup>+</sup> रिम्मुविकाश कार्यम कारम, विप्रम याजा मगर्य, वाभ क्रेटन, जीरमारकं সস্তান প্রস্বকালে অথবা যথম কোন অশ্রদ্ধাবান্ ব্যক্তির হৃদয়ে ভক্তির উত্তেক হয় তथन, ज्यारा वर्गन आकातान् वाकित्र ममाक मक्रम इस, ज्यान कांच वार्षि কোন ভিক্কে ব্রক্তমন্তলীর সমক্ষে একটা বিসেষ পরিচ্ছেদ প্রদান করে, তাইশ হুইটো সেই পরিচছদকে অভ্যেক বা অভ্যন্তিক পরিচছদ বলে।

পরিত্যাগ কাল পর্যান্ত রাথিতে পারেন। বি তি কু তাহার পরেও উহা রাথেন, তাঁহাকে নিঃসগাঁর প্রায়শ্চিতীয় পাণে অপরাধী হইতে হইবে।

২৯। কার্ত্তিকী পূর্ণিমা প্রয়স্ত চাতুর্মাসিক বর্ষা যাপনকালে যদি কোন ভিক্ অর্ণামধ্যন্তিত স্থীয় আবাসকে ভগ্ন বা বিপদসন্তুল মনে করিয়া নিজের ত্রিচীবরের কোন একটা চীবর নিকটবর্ত্তী জনপদের মধ্যে কোন কুটীরে রাথিয়া আইসেন, তাহা হইলে তিনি ছয় রাত্রি প্রয়স্ত ঐ চীবর বিরহ্তিত হইয়াও বাস করিতে পারেন; কিন্দ ভিক্স্ন মগুলীর অনুমতি বালীত তাহার অপেক্ষা অধিক কাল ঐ চীবরবিহীন হইয়া বাস করিলে উক্ত ভিক্সকে নিঃস্গীয় প্রায়শ্চিত্তীয় পাপে অপরাধী হইতে হইবে।

ুত্। যদি কোন ভিক্ষু সজ্ব বা তিকুন জ্লার উদ্দেশে অপিত বস্তু আত্মসাৎ করিবার প্রয়াস করেন, তাহা হইলৈ তাহাকে নিঃসগীয় প্রারশ্চিতীয় পাপে অপরাধী হইতে হহবে।

উলিখিত তিশটা নিয়ম পাঠ কাবনের পর সংঘনায়ক বালতেন—"কে মাননীয় ভিক্সগণ, আপনাদের নিকট তিংশং নিঃসগীয় প্রায়াশ ভীয় ধর্ম পাঠ করিলাম; আপনাদিগকে জিজ্ঞাসা কাল, আপনারা এ বিষয়ে পবিত্র আছেন কি না ? দ্বিতীয় বার আপনাদিগকে জিজ্ঞাসা কার, আপনারা এ বিষয়ে পবিত্র এ বিষয়ে পবিত্র আছেন কি না ? তৃতায় বার স্থাপনাদিগকে জিজ্ঞাসা করি, আপনারা এ বিষয়ে পবিত্র আছেন কি না ?"

কিরৎকাল পরে সংঘনায়ক বলিয়া উঠিতেন—"মাননীয় ভিষ্কুগণের' মোনভাব দেখিয়া বুঝিলাম ভাঁহারা এ বিষয়ে পবিত্র আছেন।"

( 画 지 씨 : )

श्रीमजी गठस विश्रापृथ्य।

# হরিহর বাইতি।

## ( धर्म्भभन कावा इहै एक गृशेक।)

ক্রির তপংসাধনার পর, লাউদেন হাকও নামক স্থানে ক্র্যাদেবের কপালাভে দমর্থ হইলেন; ক্র্দেদেব পশ্চিমে উদিত হইয়া গোড়-বাসিগণের কাছে লাউদেনের তপংপ্রভাব প্রমাণিত করিবেন, এই বরদান করিরা ভক্তকে আশ্বস্ত করিলেন।

ধর্মঠাকুরের পূজার অপরাধে গৌড়ে অতিবৃষ্টি হইয়াছিল। অধি-বাদিগণ তুর্দশার চরম অবস্থায় উপনীত হইয়াছিল। সহ্দা এক দিন विश्विष्ठ क्रयक नामन इस्ड एविट भारेन,— ऐया भन्ति यत न उद्य স্বর্ণবর্ণমন্তিত করিয়া অপূর্ব্ব স্থলরীর বেশে নিখের দিকে চাহিয়াছেন,---এই অতিন্তিত-পূর্ব প্রাকৃতিক লক্ষণে গৌড়ের ঘরে ঘরে শুভ শুঙ্খ वाजिया উঠिन। পশ্চিমে উদিত ই্যাগোলক দর্শনে গৌড়বাসী হরিহর-वाइंडि यानत्म योश त्कर्व माँ एवंशिया पूर्याप्तरक व्यवाय कतिन। এ দুখ্য-অসম্ভবের সংঘটন,—এ দৃখ্যের ছটায় হরিহর বাইতি মুগ্ধ হইয়া (शम। (य पिक इदेर्ड ऐया প্রতিদিন উদিত হন—আজ সে দিকু.. উধার মন্দীভূত প্রভিফলিত কিরণে মণ্ডিত হইয়াছে, কিন্তু পশ্চিম দিক্-বিভাগ তরণ সূর্যা অক্ষে লইয়া একদিনের অপূর্ব্ধ গৌরবে উদ্ভাষিত হইয়া উঠিয়াছে। সুর্যোর এই পশ্চিমোদরের প্রধান সাক্ষী হরিহর বাইতি। হরিহর ভাল করিয়া এই অতুল্য তপঃপ্রভাবের মহিমা দেখিয়া রাখ, কেহ জিজাসা করিলে এই আশ্চর্য্য কথা জ্ঞাপন করিতে কিছুমাত্র দ্বিধা বোধ করিও না। তুমি প্রতিদিন প্রাতে এক লক্ষ হরিনাম জপ করিয়া থাক, তুমি স্বোড়ের একজন প্রধান মঞ্জ। আজ य भूगा मुश (मिथिल, जाहा जान कत्रिया श्रीज्ञ व्यक्ति क्रिया त्राथ,

बाङ्गर्वाद्र १ कथां व मार्कात ज्ञा जामात जास्तान इटें जारत, उथन পিরধা-কম্পিতস্বরে মার্তিওদেবের এই অসম্ভব কাণ্ডকে চক্ষের ধাঁধা विषया জिহ्वा कमक्षिত कत्रि ।

লাউদেন গৌড়ে প্রত্যাগত হইয়াছেন; উৎকট তপশ্চরণজনিত পুণোর ব্যোতি তাঁহার শুল ললাট হইতে শিথার ভায় বিচ্ছুরিত. হইতেছে; তাঁহাকে দেখিতে লোকে লোকারণা; স্থমহৎ পুণাের প্রভা একটি জোতির্দ্ধ গোলকের সৃষ্টি করিয়া তন্মধ্যত লাউদেনের: বরণীয় মূর্ত্তিতে একটি অখণ্ড স্বর্গীয়শ্রী প্রদান করিয়াছে। গৌড়েশ্বর व्यास्नाम् नाउँम्मरक अভिनम्न कतिया नहेरनम्। यहाशाल याङ्णातः চকে দেই দৃশ্ম অদহা হইল; রাজদকাশে অগ্রদর হইয়া মাহতাঃ निर्वान क तिल--"महाताज, वाल क्रित कथीय कि जंगल्य जलीक शहा বিশাস স্থাপন করিতেছেন? পশ্চিমে স্থা উদয় হন্, একথা কি विशासा । এই वालक यि मकल कथा आपनारिक विलिल ভाहात ममस्डहें রূপকথা। নিজের মুওচ্ছেদন করিয়া তেতায় রাবণ তপস্থা করিয়াছিল, জগতে এরপ তপশ্রার কথা আর শোনা যায় না। এই বালক স্বীয় শিরশ্ছেন পূর্বাক ধর্মের আরধনা করিয়াছে—এরূপ অসম্ভব কণার माको द्र भामूना छोलाक, অভিরঞ্জন ও মিথ্যা রমণীজিহ্বার व्यवसात, व्यापनि दकन अभन मकन कथा विश्वाम क तिरिह्न १ क शिनः পরাশর, মার্কভেয় প্রভৃতি ঋষিগণ যাহা পারেন নাই, এই বালক ভাহাই দিন্ধ করিয়াছে! সুর্গাদেব তো একমাত্র হাকও কিম্বা ময়না-গড়ের নহেন, বিশ্বের সমস্ত লোক তাঁহার উদয়ের সাকী, কে করে मिथिवाट्य एवं प्रयासित भिष्टिय छेनिछ इंदेवाट्य भे नाष्ट्रियरक जिल्लामा करून, जाङ्गत माकी (क ?

नाउँ माउँ मिन शिव भाखीं या महकारव विनित्न आभाव भिथा। चनाव था जोग नाहे--- आयोज माकी हजिहत राहे जि

রাজ। হরিহর বাইতিকে ক্রথনই রাজসভায় উপস্থিত করিতে আদেশ করিলেন। মহাপাত্র মাজ্তা অগ্রসর ইইয়া কলিল—হরিহর অত এক দুর পলীতে কোন বন্ধুর পিতৃশ্রাদ্ধের নিমন্ত্রণ রক্ষা করিতে গিয়াছে, তাহাকে কলা দ্বিপ্রহরে ।হাজির করিয়া দিব। যে পর্যান্ত হরিহরের প্রমাণ গৃহীত না হয়, সে পর্যান্ত লাউদেন এরূপ অসম্ভব গ স্থাষ্ট করার व्यवदार्थ वन्ता थाकिरवन ।

রাজ্পভা ভঙ্গ হইল। গৌড়বাসীর শক্ষিত চক্ষু লাউদেনের জন্ম मूर्य् जन जात्राष्ट्र रहेर्ज लागिल ; किन्ह नाउँ राम अकू हिन्छ ;— দ্রুত্রতপা লাউদেন পার্থিব ছঃখ বিপদকে ভ্রাফ্ষপেও গ্রাহ্য করিলেন না; বন্দীর তৃণশ্যা এবং রাজপ্যাক্ষ তাঁহার চক্ষে তুল্য, ধর্মে অচলা ভক্তি তাঁহার আনন্দের চির উৎস স্বরূপ। তিনি যে কারাগৃহে প্রবেশ कांत्रलन, তথায় তাঁ अत সঙ্গে ধেন নিবিড় চুর্ভেন্ত অন্ধকারে একটি উচ্ছল আনন্দের কিরণ রেশা প্রবেশ করিল!

মাহুদ্যা গৃহে প্রত্যাবর্ত্তন করিয়া হারহর বাইভিকে গোপনে ডাকিয়া আনিল। মাত্তা-বর্ণিত তাঁহার বন্ধুর পিতৃশ্রাদ্ধের নিমন্ত্রণ ব্যাপার মিথাা, হরিহরকে করায়ত্ত করিয়া লওয়ার অবকাশের জন্ম এই কথা মহাপাত্রের উদ্ভাবিত একটা ফলী মাত্র।

হরিহর উপস্থিত হইলে মাছ্তা তাহাকে তই শত টাকা ও হাদশটি মোছর প্রদান করিয়া বলিল, কলা রাজসভায় তাহাকে বলিতে হইবে পশ্চিমে স্থ্য উদিত হয় নাই। এই কথা বলার পর হরিহর বাইডি বিপুল অর্থ পাইবে, অগুকরে এই সামাগু অর্থ তাহার পুরস্কারের সচনা মাতা। হরিহর অসমত হট্ল; কিন্তু মহাপাত্র বলিল—"অর্থ ই স্ক্ ধর্মসার, এই অর্থারা পূজা অর্চনা ও তীর্থ ভ্রমণ করিয়া গৃহস্বগ্ পরলোকে সর্গস্থ ভোগ করিয়া থাকে। অর্থোপার্জনকালে কেহই धकाखन्नात्भ मठाभावन कतिए मगर्थ इस मा- এकाख-मठानिक वाकिन পক্ষে উপার্জন সম্ভবপর নহে, অথচ অর্থোপার্জন না করিলে সমস্ত ভাবী প্ণ্যসঞ্চরের মূলে কুঠারাখাত করা হয়, তুমি ভাবিয়া দেখ, এই অর্থ উপেকা করা তোমার উচিত কি না, তোমার অবস্থা তেমন ভাল নহে।

হরিহর বাইতির মনে একটু একটু কুরিয়া লোভের উদর হইতেছিল। সন্ধার সম্বাধে স্থালোকের শেষ রেখা থেরপ ধরিত্রীর বক্ষ
হইতে একটু একটু করিয়া •মুছিয়া বায়, অর্থের প্রলোভনে তাহার
প্রাের বল ও তেমনই ক্ষাণতা প্রাপ্ত হইতেছিল; এই তুই শত মুদ্রা,
দাদশটি মাহর এবং আরও প্রচুর অর্থ মূহুর্ত্তে তাহার করায়ত হইতে
পারে এবং তাহা হইলে তাহার অবদ্বা কতটা উন্নত ও ক্ষীত হইয়া
উঠিতে পারে, দে অন্নকালের মধ্যে এই স্বুপ্রে বিভার হইয়া পড়িল।
কে থেন তাহার হৃদয় হইতে সরিয়া দাঁড়াইল ছুবং কে যেন তাহার
ক্রিয়ে আসিল—একটা আধারের সন্তায় তাহার হৃদয় পূণ হইয়া গেল।
মাইস্বার বৃক্তির সারবতা সে যত না হৃদয়ক্ষম করিল, সেই নেত্র সম্মুথে
স্থিত অর্থপূর্থ-প্রিয়ার মৌন আমন্ত্রণে সে তদপেক। অধিকতর আরুপ্ত
ইইল।

ভাবিয়া চিস্তিয়া হরিহর বাইতি বলিল—"তবে দিন্ থলিয়াট, আপনার উপদেশ মানিয়া চলাই আফাদের কর্ত্তব্যু, আপনি মুনিব। হাঁ কি না বলা যত সহজ, উপার্জ্জন তত সহজ নহে।" হরিহর বাইতি মাহতার নিকট মিধ্যা বলিতে প্রতিশৃত হইয়া বাড়াতে ফিরিল।

তথন নিজাদেবী শনৈ: শনৈ: গ্রোড়নগর অধিকার করিয়া লইয়া ছেন। মাতৃত্তন মুথে শিশু যেরপ শান্তিহ্নধা উপজ্ঞোগ করে, ব্যাথত ও জাপিত ব্যক্তিগণ নিশীথিনীর ক্রোড়ে সেইরপ বিপ্রাম পাইয়াছে; একমাত্র হরিহর বাইতির চকে নিজা নাই—ভাহার ব্যথা নিবারণের জ্ঞা নিশীথিনী খীয় মন্ত্রপূত কর বুলাইয়া দিভেছেন না—ভাহার

वानित्तत्र नोठि वान्नी याह्त ও विन्छ मूजा পরম পরিতৃথি ও তঃসহ नाथाव अभि उ रहता (व उ ८क व व ८४ एवं) त स्ट्रिक कित्र त्राह्म, जाराइक হারহর জাগ্রত রহিয়াছে। সে কি যেন পাইয়াছে—ভাহা যেমনই व्यानम महकारत आञ्चान कत्रिष्ठ गारेर्व, व्यमने एम कि यम हात्राहेग्रा ফেলিয়াছে, তাহার অম্পণ্ড বেদনাপূর্ণ স্থাতি সেহ আনন্দরসাস্বাদের বিক্ল জনাইতেরে।

পর্দিন প্রাতে রাজার কোটাল হীয়হুর বাইতির বাড়ীতে উপস্থিত হইয়া বলিল, "হরিহর তোমার রাজসভায় ত্রুপ্ পড়িয়াছে—ভুমি শীঘ্ৰ এদ ।"

হরিহর বাইতি একলক্ষবার হরিনাম জব করিয়া থাকে; নামজব পূर्व ध्रेटन यारेटव, रेश कानारंग। त्राकात काठान यमपूर्वत्र ग्राप्त नादत বিদিয়া রহিল।

হরিহর বাহতির স্ত্রী বিমুলা আজ বিমনা; তাহার স্বামী মিথ্যা সাক্ষ্য দিতে যাইবে, বিমলার মুথথানি ছোট হইয়া পড়িয়াছে—সে যেন কি এক গৌরব-স্বর্গেত্রপে ছিল, আজ তাহাকে কে সেই স্থপের স্থান হইতে তাড়াইয়া দিবে! সে কথনও স্বামীর কার্ষ্যের প্রতিবাদ করে নাই,\* किन भाक मानद्र कथा ना विनाल तुक जानिया याहे जिल्ला (म जान পড় मौरापत्र मानु का विद्या शिन् ना, शृष्ट्र विक প্রাপ্ত আঞ্চাল উদাসিনীর মত বসিয়া রহিল; ভাহার কিছু ভাল লাগিল না—অবশেষে কুন্তকক্ষে একাকিনী মন্থর গতিকে সে জয়-সরোবরে স্থান করিতে গেল. তাহার চকুর পক্ষে করেকটি অশ্রুবিন্দু সংলগ্ন ছিল, কোটালের সকে তাহার স্বামী রাজসভায় যাইবে মিথা৷ কথা কহিতে—ভাহার মনে इहेग, भाक भवि थाहेबा कूँ एउँ चरत शाकिया मिला अर्ग सूर्थ किन, त्म बढ़ वाढ़ी, डाल थाउमा এ मकन हाट्स ना। "इ डभवान, जामातः माक नवकी वकाम नाथ, व्यामि कूँछ चरत स्थ माहि, व्यामात स्थ

ভেদ্ধ না" বলিয়া বিমলা ছ:খিত চিত্তে শৃষ্ট কু জ লল ভাসাইয়া একা কিনী জম-সরোবরের জলে নামল। সহসা একটা দ্রাগত করণ আর্ড রে সে চমকিয়া উঠিল, সে দেখিতে পাইল হঠাৎ গগন প্রাপ্তে নিরবলম্ব ভাবে কুল্লাটিকার অল্পষ্ট আচ্ছাদনে আর্ত সাতটি পুরুষ তাহার প্রতি ইঞ্জিত করিতেছে। তাহাদের ব্যাকুল দৃষ্টিও ক্ষীণদেহ বিমলার মর্মান্থল শেলের মত বিদ্ধ করিল। তাহারা ক্ষীণ আর্ডমরে বলিল—"বিমলা, আমরা হরিহরের শিতৃপুরুষ, হরিহরের মিথাচিংগে স্বর্গ-ল্রষ্ট হহব—আমাদের আর দাঁড়াইবার স্থান্থ থাকিবে না! বিমলা তুমি আমাদিগকে রক্ষা কর, আমরা বড় কাতর হহয়া পড়িয়াছি।'' তাহাদের বিবর্ণ মুখ শুক্ষ ও বিলীর্গ, চক্ষু জল-চ্ছায়া বিজড়িত; সপ্তপুরুষ উক্ত কণা বলিয়া শৃষ্ট প্রেণ্ড মিলিয়া গেল। বিমলা অপ্রের মত একি দেখিল। সে কাদিতে কাদিতে শৃষ্ট কুজ ককে লইয়া বাড়ীতে ক্ষিরিয়া আদিল।

তথন হরিহরের লক্ষ নাম জপ শেষ হইয়াছে। কোটালের সঙ্গে ক্ষান্তারে বাইতে হরিহর উত্তত। এমন সময়,—

> "মালয় প্রবেশে রামা আউদর চুলে। পড়িল পতির পায় প্রাণ নাহি বাধে। কি হ'ল কি হ'ল ব'লে উচ্চস্বরে কাঁদে। স্থিবিহিত শুন নাথ স্বিনয়ে বলি। কি ছার ধনের লাগি ধর্ম দিবে"কালী। ধন কড়ি মান মন্তা স্কলি বিফল। সপ্রম প্রুষ আজ বায় রসাতল।"

এলায়িত কুন্তলে, সাশ্রনতে, কোনল ভুজলভায় রামীর পদ বিজড়িত করিয়া আজ পল্লীর অশিক্ষিতী ললনা স্বামীকে সত্য কহিছে উজিক করিতেছে—"বুধিন্তির স্বয়ং জগবানের কথার মিন্তা ব্যামী শাস্তি হইতে তাণ শান নাই। গ্লাজনারে মিন্তা বিশ্ব না ভামি क्षयभू कि विवय- विवया विवया कांत्रिक वाशिय। विशा ना विवरम হরিহর মাহতার কোৰে প্রাণ হারাইবে—এ সকল কথা বিমলার কর্ণে প্রবেশ করিল না---সে কেবল বলিতে লাগিল-- সভ্য পথের সহায় जगबान, एक काराटक मान्निएज भारत !"

হরিহর বাইতি বলিল—"অর্থ ডিল পুরুষের জীবন বিফল—আমি ভোমার স্থলর হতে সোণার চুড়ী পরা<u>ই</u>খ, সোণার হার ভোমার হঠে निव, ञ्रमत्र ও वस्म्मा माज़ी बाता তোबात मतीत माकाहेय"—बहे नमम (काष्ट्रान-"आत्र विनम कत्रिक ना" विनमा हाँकिएक नाशिन-लक रित्रनाम-जनकाती रित्ररत वारेि क्रमीत প্राक्ति अल्लाह्मक्रक वाकागवनी अर्क मगाश ताथित्रारे श्रश्नान कत्रिन।

বিমকার কি এক স্কর্ণ যেন ভাকিয়া চুর্ণ হইক্সা গেল, অসমুভ क्म भारम धूनिन्डि रहें हो तम कैं। पिट नाशिन ।

হরিহর বাইতি স্ত্রীকে প্রবোধ দিড়ে চেষ্টা করিয়াছিল – সে ক্লি নিজের কর্ত্তব্য বুঝিতে পারিয়াছে 🕑 সে হানয়ে একটা শুরুতর ব্যাপা जञ्च क किएक का शिष । जाहा क्र मन প্र जिमूहर्फ भूक भाषि कि विदेश পাইবার জন্ম উন্মুখ হইয়া উঠিল। মহাপাত্র মান্ড্যার সলে কল্য मिथा माम्मा९ इसमात्र भूदर्व जाहात शृंद्ह अ मटन य जन्महा भाष्टित खाक खीवाहिक रहेरक हिन, काराटक सबनारन कतिना मौकन হইবার হইবার জন্ম তাহার মনে একটা নিরতিশয় প্রবল আক্ষাঞ্চ क्षान्जाद्य काश्रिम डिटिंग।

बाजनका लाकश्र्। अकंतिरम क्ली काउटमन केफ़िस्स चाटका एविएक बाहे जि मखान अध्यम क्रमान मनम सनकुक अक्नान विद्याल्य मुहिट्ड डाहान मूर्थन मिट्ट ट्योन खाद्य डाकाहेग। निर्माण खेलह वातः हतिहरतन पाकः काम ध्योकः कविषा गाउँकान अक्यान कामानः क्रिक हास्थिन है त्योत्सरनम जायकाकाका वृष्टि क मान्यकान किन

কটাকে সহসা যেন বিমৃত হরিহ্রের কর্ত্তবা পথ নিরূপিত হইয়। গেল। পশ্চিমের স্থ্যাদয় দেখিয়াছ কি না, এই প্রশ্ন হওয়া মাত্র অপূর্ব উংলাহে হরিহর বাইতি বলিয়া উঠান—"যে পথে স্থাদেব প্রত্যহ অন্ত গমন করেন, আমি সেই পথ হহতে তাঁহার উলয় দেখিয়াছি—দেখিয়াছি প্রশিচ্ম আকাশ তপ্ত অর্ণের আভায় উত্তরল চইয়। উঠিয়াছে, প্রত্যুবে আমার গৃহের পশ্চিমের ক্ষেত্র অর্ণ-ক্ষরেল আর্ত হইয়া উঠিয়াছিল, এমন দৃশ্য আর কথনও দেখি নাই—লাউসেন-বাহাদ্রকে প্রণাম করিতেছি—ইনি তাপঃদির মহাপুরুষ; অক্রগণাদকপ্তে অম্তাপথোত নির্মালয়দরে—বাাকুল দৃষ্টিতে চাহিয়া হরিহর বাইতি ক্লগাজাল হইয়া লাউসেনকে প্রণাম করিল; সেই মৃহত্তে তীব্রতম দণ্ডের জন্ম হরিহর প্রস্তুত হইয়া নির্জয় হইল। সভাস্থলে দমাসটন শত শত মুখ-নিঃস্তে অম্পাট গুজন—মধুকরের সমবেত আনন্দধ্যমির ন্তায় তাহার কর্পে করিয়া যে আনন্দ প্রাপ্ত হয়, হরিহল্প সেই আনন্দ প্রাপ্ত হইল।

কিন্ত এদিকে মাহভার ক্রোধবিবর্ণ মুথ নিবিড় মেঘমণ্ডলের মত হইরা গিরাছিল—সেই ক্রোধোৎপর জাশনি হরিহরের মন্তক বিধা বিদীর্শ করিবে—তাহা হইতে কে তাহাকে রক্ষা করিবে ? লাউসেন অভিনন্দিত হইলেন, মাহভা পরাস্ত হইল, হরিহর, বাইতি গৃহে প্রভ্যাবর্ত্তন করিল।

দেই দিনই রাজ ভাঙারের দ্বিত মুদ্রা ও দাদশটি মোহর চ্রির
অপরাধে হরিহর বাইতি ধৃত হইল ; হরিহর সেই অর্থ ফ্রিরাইরা দিবার
উদ্দেশ্তে যখন মাহতার গৃহাভিমুখে যাতা করিয়াছিল—লেই সময় পথে
কোটাল তাহাকে চোর বলিরা ধরিয়া লইয়া গেল। বিচারে হরিহরের
আনদণ্ডের আদেশ হইল। অষ্ট হতে প্রমাণ ভীক্ষাগ্র শূল ভাহার জন্ত